इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) हिंदी - 2019

The Indian Revised Version Holy Bible in the Hindi language of India

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) हिंदी - 2019
The Indian Revised Version Holy Bible in the Hindi language of India

copyright © 2017, 2018, 2019 Bridge Connectivity Solutions

Language: मानक हिन्दी (Hindi)

Translation by: Bridge Connectivity Solutions

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-04-11

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 11 Apr 2023

38a51cad-1000-51f5-b603-a89990bf4b77

Contents

मत्ती 1
मरकुस 61
लूका 98
यूहन्ना 161
प्रेरितों के काम 209
रोमियों 269
1 कुरिन्थियों 296
2 कुरिन्थियों 322
गलातियों 340
इफिसियों 350
फिलिप्पियों 360
कुलुस्सियों 368
1 थिस्सलुनीकियों . . 375
2 थिस्सलुनीकियों . . 381
1 तीमुथियुस 385
2 तीमुथियुस 393
तीतुस 399
फिलेमोन 403
इब्रानियों 405
याकूब 426
1 पतरस 434
2 पतरस 443
1 यूहन्ना 448
2 यूहन्ना 456
3 यूहन्ना 458
यहूदा 460
प्रकाशितवाक्य 463

मत्ती रचित सुसमाचार

□□□□

इस पुस्तक का लेखक मत्ती, चुंगी लेनेवाला मनुष्य था, जिसने यीशु के अनुसरण हेतु अपना यह व्यवसाय त्याग दिया था (9:9-13)। मरकुस और लूका उसे अपनी पुस्तकों में लेवी नाम से पुकारते हैं। उसके नाम का अर्थ है, “परमेश्वर का वरदान”।

आरम्भिक कलीसिया के प्राचीन, मत्ती को जो बारह शिष्यों में से एक था, इस पुस्तक का एकमत होकर लेखक मानते थे। मत्ती यीशु की सेवा की सब घटनाओं का आँखों देखा गवाह था। अन्य शुभ सन्देश वृत्तान्तों के साथ मत्ती की पुस्तक की तुलना करने पर स्पष्ट प्रकट होता है कि प्रेरितों द्वारा दी गई मसीह की गवाही, अखण्ड एवं सत्य है।

□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□

लगभग ई.स. 50 - 70

मत्ती की पुस्तक का यहूदी स्वरूप देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह पुस्तक पलिश्तीन या सीरिया में लिखी गई थी। परन्तु अनेकों के विचार में इसकी रचना अन्ताकिया में की गई थी।

□□□□□□□

इस पुस्तक की भाषा यूनानी है, इसलिए मत्ती का अभिप्राय सम्भवत: यूनानी भाषा बोलनेवाले यहूदियों के लिए सुसमाचार लिखने का रहा होगा। इस कारण पुस्तक की सामग्री के अधिकांश भाग यहूदी पाठकों की ओर संकेत करते हैं। मत्ती के विषय हैं: पुराने नियम की पूर्ति, यीशु की वंशावली का अब्राहम से आरम्भ (1:1-17), उसके द्वारा यहूदियों की शब्दावली का उपयोग (उदाहरणार्थ, “स्वर्ग का राज्य”, जहाँ स्वर्ग शब्द का उपयोग परमेश्वर के नाम के उपयोग में संकोच को प्रकट करता है और यीशु को “दाऊद का पुत्र” कहना- 1:1, 9:27; 12:23; 15:22; 20:30-31; 21:9,15; 22:41-45) आदि बातों से प्रकट होता है कि मत्ती के ध्यान में यहूदी समुदाय अधिक था।

□□□□□□□□□□

अपनी पुस्तक में शुभ सन्देश लिखने का मत्ती का अभिप्राय यह था कि यहूदी पाठक यीशु को मसीह स्वीकार करें। यहाँ मत्ती का मुख्य उद्देश्य है कि परमेश्वर के राज्य को मानवजाति के मध्य लाने पर बल दिया जाए। वह बल देता है कि यीशु एक राजा है जो पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों और आशाओं को पूरा करता है (मत्ती 1:1; 6:16; 20:28)।

□□□ □□□□□

यीशु—यहूदियों का राजा

रूपरेखा

1. यीशु का जन्म — 1:1-2:23
2. यीशु की गलील क्षेत्र में सेवा — 3:1-18:35
3. यीशु की यहूदिया में सेवा — 19:1-20:34
4. यहूदिया में यीशु के अन्तिम दिन — 21:1-27:66
5. अन्तिम घटनाएँ — 28:1-20

□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□

1 अब्राहम की सन्तान, दाऊद
की सन्तान, *□□□□□ □□□□□** की
□□□□□□□□□†।

* **1:1** *□□□□□ □□□□□:* यीशु शब्द का अर्थ है “प्रभु उद्धारकर्ता” (मसीह, इब्रानी शब्द) है, जिसका अर्थ है “अभिषिक्त” † **1:1** *□□□□□□□□□:* अर्थात् पीढ़ियाँ-वंशजों का पारिवारिक अभिलेख।

2 अब्राहम से इसहाक उत्पन्न हुआ,
इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ, और
याकूब से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न
हुए।
3 यहूदा और तामार से पेरेस व जेरह
उत्पन्न हुए, और पेरेस से हेस्रोन उत्पन्न
हुआ, और हेस्रोन से एराम उत्पन्न
हुआ।
4 एराम से अम्मीनादाब उत्पन्न
हुआ, और अम्मीनादाब से नहशोन,
और नहशोन से सलमोन उत्पन्न हुआ।
([illegible] 4:19,20)
5 सलमोन और राहाब से बोअज
उत्पन्न हुआ, और बोअज और रूत
से ओबेद उत्पन्न हुआ, और ओबेद से
यिशै उत्पन्न हुआ।
6 और यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न
हुआ।

और दाऊद से सुलैमान उस स्त्री से
उत्पन्न हुआ जो पहले ऊरिय्याह की
पत्नी थी। ***(2 [illegible]. 12:24)***
7 सुलैमान से रहबाम उत्पन्न हुआ,
और रहबाम से अबिय्याह उत्पन्न
हुआ, और अबिय्याह से आसा उत्पन्न
हुआ।
8 आसा से यहोशाफात उत्पन्न हुआ,
और यहोशाफात से योराम उत्पन्न
हुआ, और योराम से उज्जियाह उत्पन्न
हुआ।
9 उज्जियाह से योताम उत्पन्न
हुआ, योताम से आहाज उत्पन्न हुआ,
और आहाज से हिजकिय्याह उत्पन्न
हुआ।
10 हिजकिय्याह से मनश्शे उत्पन्न
हुआ, मनश्शे से आमोन उत्पन्न हुआ,
और आमोन से योशिय्याह उत्पन्न
हुआ।
11 और बन्दी होकर बाबेल
जाने के समय में योशिय्याह से
[illegible]‡, और उसके भाई उत्पन्न
हुए। ***([illegible]. 27:20)***
12 बन्दी होकर बाबेल पहुँचाए
जाने के बाद यकुन्याह से शालतीएल
उत्पन्न हुआ, और शालतीएल से
जरुब्बाबेल उत्पन्न हुआ।
13 जरुब्बाबेल से अबीहूद उत्पन्न
हुआ, अबीहूद से एलयाकीम उत्पन्न
हुआ, और एलयाकीम से अजोर
उत्पन्न हुआ।
14 अजोर से सादोक उत्पन्न हुआ,
सादोक से अखीम उत्पन्न हुआ, और
अखीम से एलीहूद उत्पन्न हुआ।
15 एलीहूद से एलीआजर उत्पन्न
हुआ, एलीआजर से मत्तान उत्पन्न
हुआ, और मत्तान से याकूब उत्पन्न
हुआ।
16 याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ,
जो मरियम का पति था, और *[illegible]*
[illegible]§ यीशु उत्पन्न हुआ जो मसीह
कहलाता है।
17 अब्राहम से दाऊद तक सब
चौदह पीढ़ी हुई, और दाऊद से बाबेल
को बन्दी होकर पहुँचाए जाने तक
चौदह पीढ़ी, और बन्दी होकर बाबेल
को पहुँचाए जाने के समय से लेकर
मसीह तक चौदह पीढ़ी हुई।

[illegible]

18 अब यीशु मसीह का जन्म इस
प्रकार से हुआ, कि जब उसकी माता
मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो

‡ **1:11** *[illegible]:* या कोन्याह या यहोयाकीम जो 597 ई. पू. में, यिर्मयाह के समय, यहूदा का राजा था जिसे नबूकदनेस्सर बन्दी बनाकर ले गया था (यिर्म. 22: 24, 28; 37:1) § **1:16** *[illegible] [illegible]:* यह एक स्त्रीलिंग शब्द है, जो स्पष्ट करता है कि यीशु केवल मरियम द्वारा जन्मा था, न कि मरियम और यूसुफ से, यह यीशु का कुँवारी से जन्म का एक स्पष्ट और ठोस सबूत है।

गई, तो उनके इकट्ठे होने के पहले से वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई।

19 अतः उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की।

20 जब वह इन बातों की सोच ही में था तो परमेश्वर का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, "हे यूसुफ! दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहाँ ले आने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है।

21 वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम *[illegible]** रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।"

22 यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो ***([illegible]. 7:14)***

23 "देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा," जिसका अर्थ है - परमेश्वर हमारे साथ।

24 तब यूसुफ नींद से जागकर परमेश्वर के दूत की आज्ञा अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहाँ ले आया।

25 और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया: और उसने उसका नाम यीशु रखा।

2

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के *[illegible]** में यीशु का जन्म हुआ, तब, पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे,

2 "यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहाँ है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको झुककर प्रणाम करने आए हैं।" ***([illegible]. 24:17)***

3 यह सुनकर हेरोदेस राजा और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया।

4 और उसने लोगों के सब प्रधान याजकों और *[illegible]*† को इकट्ठा करके उनसे पूछा, "मसीह का जन्म कहाँ होना चाहिए?"

5 उन्होंने उससे कहा, "यहूदिया के बैतलहम में; क्योंकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा लिखा गया है:

6 "हे बैतलहम, यहूदा के प्रदेश, तू किसी भी रीति से यहूदा के अधिकारियों में सबसे छोटा नहीं; क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल का चरवाहा बनेगा।" ***([illegible] 5:2)***

7 तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाकर उनसे पूछा, कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया था।

8 और उसने यह कहकर उन्हें बैतलहम भेजा, "जाकर उस बालक के विषय में ठीक-ठीक मालूम करो और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो ताकि मैं भी आकर उसको प्रणाम करूँ।"

9 वे राजा की बात सुनकर चले गए, और जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा था, वह उनके आगे-आगे चला; और जहाँ बालक था, उस जगह के ऊपर पहुँचकर ठहर गया।

---

* **1:21** *[illegible]:* उद्धारकर्ता * **2:1** *[illegible]:* एक शहर जो यरूशलेम के दक्षिण से पाँच मील दूर है

† **2:4** *[illegible]:* मुख्य रूप से फरीसियों का एक पंथ समझा जाता था। वे व्यवस्था के रक्षक थे। उन्हें व्यवस्थापक भी कहा जाता था क्योंकि वे महासभा में व्यवस्थापालन का दायित्व निभाते थे।

10 उस तारे को देखकर वे अति
आनन्दित हुए। ([illegible] 2:20)
11 और उस घर में पहुँचकर उस
बालक को उसकी माता मरियम
के साथ देखा, और दण्डवत् होकर
[illegible]‡ की आराधना की, और अपना-
अपना थैला खोलकर उसे सोना, और
लोबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई।
12 और स्वप्न में यह चेतावनी पाकर
कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे
दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को चले
गए।

[illegible]

13 उनके चले जाने के बाद, परमेश्वर
के एक दूत ने स्वप्न में प्रकट होकर
यूसुफ से कहा, “उठ! उस बालक को
और उसकी माता को लेकर मिस्र देश
को भाग जा; और जब तक मैं तुझ से
न कहूँ, तब तक वहीं रहना; क्योंकि
हेरोदेस इस बालक को ढूँढ़ने पर है कि
इसे मरवा डाले।”
14 तब वह रात ही को उठकर बालक
और उसकी माता को लेकर मिस्र को
चल दिया।
15 और हेरोदेस के मरने तक वहीं
रहा। इसलिए कि वह वचन जो प्रभु ने
भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था पूरा हो
“मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया।”
([illegible] 11:1)

[illegible]

16 जब हेरोदेस ने यह देखा, कि
ज्योतिषियों ने उसके साथ धोखा
किया है, तब वह क्रोध से भर गया,
और लोगों को भेजकर ज्योतिषियों से
ठीक-ठीक पूछे हुए समय के अनुसार
बैतलहम और उसके आस-पास के
स्थानों के सब लड़कों को जो दो वर्ष
के या उससे छोटे थे, मरवा डाला।
17 तब जो वचन यिर्मयाह
भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था,
वह पूरा हुआ

18 “रामाह में एक करुण-नाद सुनाई
दिया,
रोना और बड़ा विलाप,
राहेल अपने बालकों के लिये रो रही
थी;
और शान्त होना न चाहती थी, क्योंकि
वे अब नहीं रहे।” ***([illegible]. 31:15)***

[illegible]

19 हेरोदेस के मरने के बाद, प्रभु के
दूत ने मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में
प्रकट होकर कहा,
20 “उठ, बालक और उसकी माता
को लेकर इस्राएल के देश में चला जा;
क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते
थे, वे मर गए।” ***([illegible]. 4:19)***
21 वह उठा, और बालक और उसकी
माता को साथ लेकर इस्राएल के देश
में आया।
22 परन्तु यह सुनकर कि
[illegible]§ अपने पिता हेरोदेस
की जगह यहूदिया पर राज्य कर रहा
है, वहाँ जाने से डरा; और स्वप्न में
परमेश्वर से चेतावनी पाकर गलील
प्रदेश में चला गया।
23 और नासरत नामक नगर में जा
बसा, ताकि वह वचन पूरा हो, जो
भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था:
“वह [illegible]* कहलाएगा।” ***([illegible] 18:7)***

‡ **2:11** *[illegible]:* इसका मतलब “बालक” है न कि एक “शिशु” जैसा लूका 2:16 वर्णन करता है, ज्योतिषियों के आगमन के समय यीशु चरनी में नहीं था, अति सम्भव है कि वह कई महीनों का या एक वर्ष से भी अधिक आयु का हो चुका था। (देखें पद 7, 16) § **2:22** *[illegible]:* हेरोदेस महान का पुत्र- यहूदा और सामरिया का शासक। * **2:23** *[illegible]:* सम्भवत: प्रथम शताब्दी के शास्त्रियों तथा “तिरस्कार या घृणा” को दर्शाने वाला एक शब्द होता था (यूह. 1:46) नासरत से मसीह का आना किसी प्रकार भी एक सम्भावित स्थान नहीं था (तुलना करे यशा.53: 3; भजन 22:6)

3

[illegible]

1 उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा
देनेवाला आकर यहूदिया के [illegible]*
में यह प्रचार करने लगा:
2 "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का
राज्य निकट आ गया है।"
3 यह वही है जिसके बारे में
यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा था:

"जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द
हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग
तैयार करो,
उसकी सड़कें सीधी करो।" ***([illegible]. 40:3)***

4 यह यूहन्ना ऊँट के रोम का वस्त्र
पहने था, और अपनी कमर में चमड़े
का कमरबन्द बाँधे हुए था, और उसका
भोजन टिड्डियाँ और वनमधु था। ***(2 [illegible]. 1:8)***
5 तब यरूशलेम के और सारे
यहूदिया के, और यरदन के आस-पास
के सारे क्षेत्र के लोग उसके पास निकल
आए।
6 और अपने-अपने पापों को
मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा
लिया।
7 जब उसने बहुत से [illegible]†
और [illegible]‡ को बपतिस्मा के
लिये अपने पास आते देखा, तो उनसे
कहा, "हे साँप के बच्चों, तुम्हें किसने
चेतावनी दी कि आनेवाले क्रोध से
भागो?
8 मन फिराव के योग्य फल लाओ;
9 और अपने-अपने मन में यह
न सोचो, कि हमारा पिता अब्राहम
है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि
परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के
लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है।
10 और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़
पर रखा हुआ है, इसलिए जो-जो पेड़
अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और
आग में झोंका जाता है।
11 "मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव
का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो
मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझसे
शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने
के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा
और आग से बपतिस्मा देगा।
12 उसका सूप उसके हाथ में है, और
वह अपना खलिहान अच्छी रीति से
साफ करेगा, और अपने गेहूँ को तो
खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को
उस आग में जलाएगा जो बुझने की
नहीं।"

[illegible]

13 उस समय यीशु गलील से यरदन
के किनारे पर यूहन्ना के पास उससे
बपतिस्मा लेने आया।
14 परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे
रोकने लगा, "मुझे तेरे हाथ से
बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है,
और तू मेरे पास आया है?"
15 यीशु ने उसको यह उत्तर दिया,
**"अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें
इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा
करना उचित है।"** तब उसने उसकी
बात मान ली।
16 [illegible]

---

* **3:1** [illegible]: मृत सागर के पश्चिमी तट तक एक विस्तृत अनुपजाऊ, बंजर भूमि। † **3:7** [illegible]: यीशु के दिनों में सबसे प्रभावशाली यहूदी सम्प्रदाय। मूसा की व्यवस्था यानी रूढ़िवादी दृष्टिकोण अर्थात् मूसा की व्यवस्था का कठोरता से पालन करनेवाले फरीसी। ‡ **3:7** [illegible]: यह भी पुरोहितों और उच्च वर्ग से सम्बंधित एक यहूदी के संप्रदाय था। यीशु के दिनों में वे आत्मिक संसार में विश्वास नहीं करते थे।

[illegible]।
17 *[illegible], “[illegible]।”*§*([illegible]. 2:7)*

4

[illegible]

1 *[illegible]।**
2 वह चालीस दिन, और चालीस
रात, निराहार रहा, तब उसे भूख लगी।
([illegible]. 34:28)
3 तब परखनेवाले ने पास आकर
उससे कहा, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र
है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियाँ बन
जाएँ।”
4 यीशु ने उत्तर दिया, **“लिखा है,**

‘मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं,
परन्तु हर एक वचन से जो
परमेश्वर के मुख से निकलता
है जीवित रहेगा।’ ”

5 तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले
गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा
किया। *([illegible] 4:9)*
6 *[illegible]*†*।’ ” ([illegible]. 91:11,12)*

7 यीशु ने उससे कहा, **“यह भी
लिखा है, ‘तू प्रभु अपने परमेश्वर की
परीक्षा न कर।’ ”***([illegible]. 6:16)*
8 फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे
पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के
राज्य और उसका वैभव दिखाकर
9 उससे कहा, “यदि तू गिरकर मुझे
प्रणाम करे, तो *[illegible]*‡।”
10 तब यीशु ने उससे कहा, **“हे
शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है:
‘तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम
कर, और केवल उसी की उपासना
कर।’ ”***([illegible]. 6:13)*
11 तब शैतान उसके पास से चला
गया, और स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा
करने लगे।

[illegible]

12 जब उसने यह सुना कि यूहन्ना
पकड़वा दिया गया, तो वह गलील को
चला गया।
13 और नासरत को छोड़कर
कफरनहूम में जो झील के किनारे
जबूलून और नप्ताली के क्षेत्र में है
जाकर रहने लगा।
14 ताकि जो यशायाह भविष्यद्वक्ता
के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो।
15 “जबूलून और नप्ताली के क्षेत्र,
झील के मार्ग से यरदन के पास
अन्यजातियों का गलील-
16 जो लोग अंधकार में बैठे थे उन्होंने
बड़ी ज्योति देखी;
और जो मृत्यु के क्षेत्र और छाया में बैठे
थे, उन पर ज्योति चमकी।”
17 उस समय से यीशु ने प्रचार
करना और यह कहना आरम्भ किया,

---

§ **3:17** त्रिएक परमेश्वर की अवधारणा की प्रथम और स्पष्ट अभिव्यक्ति है। * **4:1** यीशु की परीक्षा लेने में शैतान की मंशा थी कि मसीह को विवश करके उससे पाप करवाए जिससे की वह उद्धारकर्ता के रूप में अयोग्य ठहरे और मनुष्य की मुक्ति, परमेश्वर की योजना में नाकाम हो जाए। † **4:6** शैतान भी बाइबल का उदाहरण देता है, लेकिन गलत ढंग से जिसमें वह बाइबल अंश (इस सन्दर्भ में, भजन 91:11-12) छोड़ दिया क्योंकि वह यहाँ उपयुक्त नहीं था। ‡ **4:9** *[illegible]:* शैतान, इस जगत का राजकुमार, अधिकार रखता था कि यीशु के सामने यह प्रस्ताव रखे। (यूह 12: 31)

“मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।”

[illegible]

18 उसने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाइयों अर्थात् शमौन को जो पतरस कहलाता है, और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुए थे।

19 और उनसे कहा, **“मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।”**

20 वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

21 और वहाँ से आगे बढ़कर, उसने और दो भाइयों अर्थात् *[illegible]*§ याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने पिता जब्दी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा; और उन्हें भी बुलाया।

22 वे तुरन्त नाव और अपने पिता को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

[illegible]

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

24 और सारे सीरिया देश में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो विभिन्न प्रकार की बीमारियों और दुःखों में जकड़े हुए थे, और जिनमें दुष्टात्माएँ थीं और मिर्गीवालों और लकवे के रोगियों को उसके पास लाए और उसने उन्हें चंगा किया।

25 और गलील, *[illegible]**, यरूशलेम, यहूदिया और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली।

5

[illegible]

1 वह भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।

2 और वह अपना मुँह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा:

[illegible]

3 **“धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं,**
क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
4 **“धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं,**
क्योंकि वे शान्ति पाएँगे।
5 **“धन्य हैं वे, जो नम्र हैं,**
क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।*(*[illegible]*. 37:11)*
6 **“धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं,**
क्योंकि वे तृप्त किए जाएँगे।
7 **“धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं,**
क्योंकि उन पर दया की जाएगी।
8 **“धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं,**
क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
9 **“धन्य हैं वे, जो मेल करवानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे।**
10 **“धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं,**
क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

11 **“धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें और सताएँ**

---

§ **4:21** *[illegible]*: यह यूहन्ना का भाई प्रेरित याकूब है, जो हेरोदेस अग्रिप्पा के हाथों शहीद हो गया था, (प्रेरि 12:2) * **4:25** *[illegible]*: गलील सागर के दक्षिण में दस शहरों का एक जिला था।

और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध
में सब प्रकार की बुरी बात कहें।
12 आनन्दित और मगन होना
क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा
प्रतिफल है। इसलिए कि उन्होंने उन
भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले
थे इसी रीति से सताया था।

[illegible]

13 "तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु
यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए,
तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन
किया जाएगा? फिर वह किसी काम
का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका
जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा
जाए।
14 तुम जगत की ज्योति हो। जो
नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप
नहीं सकता।
15 और लोग दीया जलाकर पैमाने
के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं,
तब उससे घर के सब लोगों को प्रकाश
पहुँचता है।
16 उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला
मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे
भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता
की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें।

[illegible]

17 "यह न समझो, कि
मैं *[illegible]* [*] या भविष्यद्वक्ताओं
की शिक्षाओं को लोप करने आया
हूँ, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने
आया हूँ। ***([illegible]. 10:4)***
18 क्योंकि मैं तुम से सच कहता
हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी
टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक
मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं
टलेगा।
19 इसलिए जो कोई इन छोटी
से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक
को तोड़े, और वैसा ही लोगों को
सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में
सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो
कोई उनका पालन करेगा और उन्हें
सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में
महान कहलाएगा।
20 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि
यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों
और फरीसियों की धार्मिकता से
बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य
में कभी प्रवेश करने न पाओगे।

[illegible]

21 "तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल
के लोगों से कहा गया था कि 'हत्या
न करना', और 'जो कोई हत्या
करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य
होगा।' ***([illegible]. 20:13)***
22 परन्तु मैं तुम से यह कहता
हूँ, कि जो कोई अपने भाई पर
क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के
योग्य होगा और जो कोई अपने भाई
को *[illegible]* [†] कहेगा वह महासभा
में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई
कहे 'अरे मूर्ख' वह नरक की आग के
दण्ड के योग्य होगा।
23 इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी
पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि
मेरे भाई के मन में मेरी ओर से कुछ
विरोध है,
24 तो अपनी भेंट वहीं वेदी के
सामने छोड़ दे, और जाकर पहले

---

[*] **5:17** *[illegible]*: यह बाइबल की पहली पाँच पुस्तकों के सन्दर्भ में है जिनमें परमेश्वर की आज्ञाओं और नियमों का संकलन किया गया है। व्यवस्था के इस सम्पूर्ण संग्रह को तोराह कहा जाता था, इसमें परमेश्वर प्रदत्त नैतिकता और अनुष्ठान सम्बंधित नियम निहित थे। [†] **5:22** *[illegible]*: इसका मतलब "खाली सिर" है, यह दूसरे व्यक्ति के तिरस्कार के लिए इस्तेमाल में आनेवाला एक अपमान जनक उपनाम था।

अपने भाई से मेल मिलाप कर, और
तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।
25 जब तक तू अपने मुद्दई के
साथ मार्ग में है, उससे झटपट मेल
मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि
मुद्दई तुझे न्यायाधीश को सौंपे, और
न्यायाधीश तुझे सिपाही को सौंप दे
और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए।
26 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब
तक तू पाई-पाई चुका न दे तब तक
वहाँ से छूटने न पाएगा।

▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯

27 "तुम सुन चुके हो कि कहा गया
था, 'व्यभिचार न करना।'*(▯▯▯▯. 5:18, ▯▯▯▯▯. 20:14)*
28 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि
जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले
वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर
चुका।
29 यदि तेरी दाहिनी आँख तुझे
ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर
अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये
यही भला है कि तेरे अंगों में से एक
नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर
नरक में न डाला जाए।
30 और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे
ठोकर खिलाए, तो उसको काटकर
अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिये
यही भला है, कि तेरे अंगों में से एक
नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर
नरक में न डाला जाए।

▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯

31 "यह भी कहा गया था, 'जो कोई
अपनी पत्नी को त्याग दे, तो उसे
त्यागपत्र दे।'*(▯▯▯▯. 24:1-14)*
32 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि
जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के
सिवा किसी और कारण से तलाक दे,
तो वह उससे व्यभिचार करवाता है;
और जो कोई उस त्यागी हुई से विवाह
करे, वह व्यभिचार करता है।

▯▯▯ ▯ ▯▯▯▯

33 "फिर तुम सुन चुके हो, कि
पूर्वकाल के लोगों से कहा गया
था, 'झूठी शपथ न खाना, परन्तु
परमेश्वर के लिये अपनी शपथ को
पूरी करना।'*(▯▯▯▯. 23:21)*
34 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि
कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की,
क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन
है।*(▯▯▯. 66:1)*
35 न धरती की, क्योंकि वह उसके
पाँवों की चौकी है; न यरूशलेम
की, क्योंकि वह महाराजा का नगर
है।*(▯▯▯. 66:1)*
36 अपने सिर की भी शपथ न खाना
क्योंकि तू एक बाल को भी न उजला,
न काला कर सकता है।
37 परन्तु तुम्हारी बात हाँ की हाँ,
या नहीं की नहीं हो; क्योंकि जो कुछ
इससे अधिक होता है वह बुराई से
होता है।

▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯

38 "तुम सुन चुके हो, कि कहा गया
था, कि आँख के बदले आँख, और दाँत
के बदले दाँत।*(▯▯▯▯. 19:21)*
39 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ,
कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो
कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे,
उसकी ओर दूसरा भी फेर दे।

---

‡ **5:40** *▯▯▯▯▯▯:* यह लम्बी बाँह का घुटनों तक का अधोवस्त्र होता था, जैसे आज के समय में पहनी जानेवाली कमीज़। § **5:40** *▯▯▯▯▯▯:* अर्थात् ऊपरी परिधान, एक बड़ा वर्गाकार ऊनी बागा। गरीब लोग केवल कुर्ता पहनते थे। अमीरों में कई लोग ऊपरी परिधान के अलावा दो कुर्ते पहनते थे।

40 और यदि कोई तुझ पर मुकद्दमा
करके तेरा [illegible] ‡लेना चाहे, तो
उसे [illegible]§भी ले लेने दे।
41 और जो कोई तुझे कोस भर
बेगार में ले जाए तो उसके साथ दो
कोस चला जा।
42 जो कोई तुझ से माँगे, उसे दे;
और जो तुझ से उधार लेना चाहे,
उससे मुँह न मोड़।
43 "तुम सुन चुके हो, कि कहा गया
था; कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना,
और अपने बैरी से बैर।*([illegible]. 19:18)*
44 परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ,
कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और
अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना
करो।*([illegible]. 12:14)*
45 जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता
की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों
और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय
करता है, और धर्मी और अधर्मी पर
मेंह बरसाता है।
46 क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम
रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे
लिये क्या लाभ होगा? क्या चुंगी
लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते?
47 "और यदि तुम केवल अपने
भाइयों को ही नमस्कार करो, तो
कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या
अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते?
48 इसलिए चाहिये कि तुम सिद्ध
बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता
सिद्ध है।*([illegible]. 19:2)*

6

[illegible]

1 "सावधान रहो! तुम मनुष्यों को
दिखाने के लिये अपने धार्मिकता के
काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय
पिता से कुछ भी फल न पाओगे।
2 "इसलिए जब तू दान करे,
तो अपना ढिंढोरा न पिटवा,
जैसे [illegible]*, आराधनालयों और
गलियों में करते हैं, ताकि लोग उनकी
बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूँ,
कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।
3 परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा
दाहिना हाथ करता है, उसे तेरा बायाँ
हाथ न जानने पाए।
4 ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब
तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे
प्रतिफल देगा।

[illegible]

5 "और जब तू प्रार्थना करे,
तो कपटियों के समान न हो
क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये
आराधनालयों में और सड़कों के
चौराहों पर खड़े होकर प्रार्थना करना
उनको अच्छा लगता है। मैं तुम से
सच कहता हूँ, कि वे अपना प्रतिफल
पा चुके।
6 परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो
अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द
करके अपने पिता से जो गुप्त में है
प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो
गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।
7 प्रार्थना करते समय अन्यजातियों
के समान बक-बक न करो; क्योंकि वे
समझते हैं कि उनके बार बार बोलने
से उनकी सुनी जाएगी।
8 इसलिए तुम उनके समान न बनो,
क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने
से पहले ही जानता है, कि तुम्हारी
क्या-क्या आवश्यकताएँ है।
9 "अतः तुम इस रीति से प्रार्थना
किया करो:

* **6:2** *[illegible]:* ऐसा व्यक्ति जो नैतिक सद्गुण या धर्म का झूठा दिखावा करता है।

'हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में
है; तेरा नाम [illegible][†]माना
जाए।(*[illegible] 11:2*)
10 '*[illegible] [illegible] [illegible]*[‡]तेरी इच्छा
जैसे स्वर्ग में पूरी होती है,
वैसे पृथ्वी पर भी हो।
11 'हमारी दिन भर की रोटी
आज हमें दे।
12 'और जिस प्रकार हमने अपने
अपराधियों को क्षमा किया
है,
वैसे ही तू भी हमारे
अपराधों को क्षमा कर।
13 'और हमें परीक्षा में न ला,
परन्तु बुराई से बचा; [क्योंकि राज्य
और पराक्रम और महिमा
सदा तेरे ही हैं।' आमीन।]
14 "इसलिए यदि तुम मनुष्य के
अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा
स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा।
15 और यदि तुम मनुष्यों के अपराध
क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी
तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।

[illegible] [illegible] [illegible]

16 "जब तुम उपवास करो, तो
कपटियों के समान तुम्हारे मुँह पर
उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना
मुँह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें
उपवासी जानें। मैं तुम से सच कहता
हूँ, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके।
17 परन्तु जब तू उपवास करे तो
अपने सिर पर तेल मल और मुँह धो।
18 ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा
पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी
जाने। इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त
में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

19 "अपने लिये पृथ्वी पर धन
इकट्ठा न करो; जहाँ कीड़ा और काई
बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर सेंध
लगाते और चुराते हैं।
20 परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन
इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा, और
न काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर न
सेंध लगाते और न चुराते हैं।
21 क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ
तेरा मन भी लगा रहेगा।

[illegible] [illegible] [illegible]

22 "शरीर का दीया आँख है:
इसलिए यदि तेरी आँख अच्छी हो,
तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला
होगा।
23 परन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो,
तो तेरा सारा शरीर भी अंधियारा
होगा; इस कारण वह उजियाला जो
तुझ में है यदि अंधकार हो तो वह
अंधकार कैसा बड़ा होगा!

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

24 "कोई मनुष्य दो स्वामियों की
सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक
से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या
एक से निष्ठावान रहेगा और दूसरे का
तिरस्कार करेगा। तुम परमेश्वर और
धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।
25 इसलिए मैं तुम से कहता हूँ,
कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न
करना कि हम क्या खाएँगे, और क्या
पीएँगे, और न अपने शरीर के लिये कि
क्या पहनेंगे, क्या प्राण भोजन से, और
शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?
26 आकाश के पक्षियों को देखो! वे
न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों

[†] **6:9** *[illegible]:* इसका मतलब सम्मान देने या भय मानने से है परन्तु इसके साथ आराधना और महिमा करना भी हैं [‡] **6:10** *[illegible] [illegible] [illegible]:* यह परमेश्वर के राज्य की अंतिम और सिद्ध स्थापना को व्यक्त करता है।

में बटोरते हैं; तो भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है। क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते?

27 तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपने जीवनकाल में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?

28 "और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो? सोसनों के फूलों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्रम करते हैं, न काटते हैं।

29 तो भी मैं तुम से कहता हूँ, कि सुलैमान भी, अपने सारे वैभव में उनमें से किसी के समान वस्त्र पहने हुए न था।

30 इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहनाता है, तो हे अल्पविश्वासियों, तुम को वह क्यों न पहनाएगा?

31 "इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएँगे, या क्या पीएँगे, या क्या पहनेंगे?

32 क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएँ चाहिए।

33 इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और धार्मिकता की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें मिल जाएँगी।*([illegible] 12:31)*

34 अतः कल के लिये चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुःख बहुत है।

7

[illegible]

1 "दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।

2 क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।

3 "तू क्यों अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है, और अपनी आँख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता?

4 जब तेरी ही आँख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, 'ला मैं तेरी आँख से तिनका निकाल दूँ?'

5 हे कपटी, पहले अपनी आँख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आँख का तिनका भली भाँति देखकर निकाल सकेगा।

6 "पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पाँवों तले रौंदें और पलटकर तुम को फाड़ डालें।

[illegible]

7 "माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।

8 क्योंकि जो कोई माँगता है, उसे मिलता है; और जो ढूँढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।

9 "तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी माँगे, तो वह उसे पत्थर दे?

10 या मछली माँगे, तो उसे साँप दे?

11 अतः जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा?*([illegible] 11:13)*

12 इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है।

[illegible]

13 "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश की ओर ले जाता है; और बहुत सारे लोग हैं जो उससे प्रवेश करते हैं।

14 क्योंकि संकरा है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।

[illegible]

15 "झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़नेवाले भेड़िए हैं।(*[illegible]. 22:27*)

16 उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या लोग झाड़ियों से अंगूर, या ऊँटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं?

17 इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है।

18 अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है।

19 जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है।

20 अतः उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।

21 "जो मुझसे, 'हे प्रभु, हे प्रभु' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।

22 उस दिन बहुत लोग मुझसे कहेंगे; 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए?'

23 तब मैं उनसे खुलकर कह दूँगा, 'मैंने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालों, मेरे पास से चले जाओ।'(*[illegible] 13:27*)

[illegible]

24 "इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।

25 और बारिश और बाढ़ें आईं, और आँधियाँ चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी।

26 परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस मूर्ख मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर रेत पर बनाया।

27 और बारिश, और बाढ़ें आईं, और आँधियाँ चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।"

28 जब यीशु ये बातें कह चुका, तो ऐसा हुआ कि भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई।

29 क्योंकि वह उनके शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी के समान उन्हें उपदेश देता था।

8

[illegible]

1 जब यीशु उस पहाड़ से उतरा, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।

2 और, एक [illegible]* ने पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा, "हे प्रभु यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।"

3 यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ, और कहा, **"मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा"** और वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया।

4 यीशु ने उससे कहा, **"देख, किसी से न कहना, परन्तु जाकर अपने आपको याजक को दिखा और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा, ताकि उनके लिये गवाही हो।"** ***([illegible]. 14:2,32)***

[illegible]

5 और जब वह [illegible]† में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उससे विनती की,

6 "हे प्रभु, मेरा सेवक घर में लकवे का मारा बहुत दुःखी पड़ा है।"

7 उसने उससे कहा, **"मैं आकर उसे चंगा करूँगा।"**

8 सूबेदार ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुँह से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।

9 क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूँ, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक से कहता हूँ, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और अपने दास से कहता हूँ, कि यह कर, तो वह करता है।"

10 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उनसे कहा, **"मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मैंने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।**

11 **और मैं तुम से कहता हूँ, कि बहुत सारे पूर्व और पश्चिम से आकर अब्राहम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे।**

12 **परन्तु [illegible] [illegible] [illegible]‡ बाहर अंधकार में डाल दिए जाएँगे: वहाँ रोना और दाँतों का पीसना होगा।"**

13 और यीशु ने सूबेदार से कहा, **"जा, जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो।"** और उसका सेवक उसी समय चंगा हो गया।

[illegible]

14 और यीशु ने पतरस के घर में आकर उसकी सास को तेज बुखार में पड़ा देखा।

15 उसने उसका हाथ छुआ और उसका ज्वर उतर गया; और वह उठकर उसकी सेवा करने लगी।

16 जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएँ थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया।

17 ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो: "उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।" ***(1 [illegible]. 2:24)***

[illegible]

---

* **8:2** *[illegible]:* कोढ़ एक संक्रामक रोग है जो त्वचा, श्लेष्मा झिल्ली, और तंत्रिकाओं को ग्रसित करता है, इस्राएल में कोढ़ी को समाज से बहिष्कृत और अशुद्ध माना जाता था। † **8:5** *[illegible]:* यह गलील सागर के उत्तरी सिरे पर स्थित एक शहर है। ‡ **8:12** *[illegible] [illegible] [illegible]:* यहूदी सोचते थे कि उनकी परंपरा और धर्म का पालन उन्हें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करवाएगा

18 यीशु ने अपने चारों ओर एक बड़ी भीड़ देखकर झील के उस पार जाने की आज्ञा दी।
19 और एक शास्त्री ने पास आकर उससे कहा, "हे गुरु, जहाँ कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे-पीछे हो लूँगा।"
20 यीशु ने उससे कहा, **"लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु** *[illegible]*§ **के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है।"**
21 एक और चेले ने उससे कहा, "हे प्रभु, मुझे पहले जाने दे, कि अपने पिता को गाड़ दूँ।" ***(1 [illegible]. 19:20,21)***
22 यीशु ने उससे कहा, **"तू मेरे पीछे हो ले; और** *[illegible]*"*

[illegible]

23 जब वह नाव पर चढ़ा, तो उसके चेले उसके पीछे हो लिए।
24 और, झील में एक ऐसा बड़ा तूफान उठा कि नाव लहरों से ढँपने लगी; और वह सो रहा था।
25 तब उन्होंने पास आकर उसे जगाया, और कहा, "हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते हैं।"
26 उसने उनसे कहा, **"हे अल्पविश्वासियों, क्यों डरते हो?"** तब उसने उठकर आँधी और पानी को डाँटा, और सब शान्त हो गया।
27 और वे अचम्भा करके कहने लगे, "यह कैसा मनुष्य है, कि आँधी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं।"

[illegible]

28 जब वह उस पार गदरेनियों के क्षेत्र में पहुँचा, तो दो मनुष्य जिनमें दुष्टात्माएँ थीं कब्रों से निकलते हुए उसे मिले, जो इतने प्रचण्ड थे, कि कोई उस मार्ग से जा नहीं सकता था।
29 और, उन्होंने चिल्लाकर कहा, "हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझ से क्या काम? क्या तू समय से पहले हमें दुःख देने यहाँ आया है?" ***([illegible] 4:34)***
30 उनसे कुछ दूर बहुत से सूअरों का झुण्ड चर रहा था।
31 दुष्टात्माओं ने उससे यह कहकर विनती की, "यदि तू हमें निकालता है, तो सूअरों के झुण्ड में भेज दे।"
32 उसने उनसे कहा, **"जाओ!"** और वे निकलकर सूअरों में घुस गई और सारा झुण्ड टीले पर से झपटकर पानी में जा पड़ा और डूब मरा।
33 और चरवाहे भागे, और नगर में जाकर ये सब बातें और जिनमें दुष्टात्माएँ थीं; उनका सारा हाल कह सुनाया।
34 और सारे नगर के लोग यीशु से भेंट करने को निकल आए और उसे देखकर विनती की, कि हमारे क्षेत्र से बाहर निकल जा।

9

[illegible]

1 फिर वह नाव पर चढ़कर पार गया, और अपने नगर में आया।
2 और कई लोग एक लकवे के मारे हुए को खाट पर रखकर उसके पास लाए। यीशु ने उनका विश्वास देखकर,

§ **8:20** *[illegible]:* मनुष्य का पुत्र यीशु के सन्दर्भ में काम में लिया गया है, वह तो "मनुष्य का पुत्र", इस उक्ति से प्रकट होता है कि यीशु मसीह है और वह तत्व में मनुष्य है। (यूह.1:14; 1यूह.4:2)

* **8:22** *[illegible]:* यहाँ वह शिष्य अपनी आत्मिक जिम्मेदारियों से बचने के लिए एक बहाना खोज रहा था कि वह अपने वृद्ध पिता की मृत्यु तक उनके पास रह पाए परन्तु यीशु की प्रतिक्रिया के अनुसार आत्मिकता की सर्वोच्च बुलाहट को टालना नहीं है क्योंकि सुसमाचार सुनाने से महत्त्वपूर्ण और कुछ नहीं है,

उस लकवे के मारे हुए से कहा, **“हे पुत्र,
धैर्य रख; तेरे पाप क्षमा हुए।”**
3 और कई शास्त्रियों ने सोचा, “यह
तो परमेश्वर की *[illegible]*[*] करता
है।”
4 यीशु ने उनके मन की बातें
जानकर कहा, **“तुम लोग अपने-अपने
मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो?**
5 **सहज क्या है? यह कहना, ‘तेरे
पाप क्षमा हुए’, या यह कहना, ‘उठ
और चल फिर।’**
6 **परन्तु इसलिए कि तुम जान लो
कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप
क्षमा करने का अधिकार है।”** उसने
लकवे के मारे हुए से कहा, **“उठ,
अपनी खाट उठा, और अपने घर चला
जा।”**
7 वह उठकर अपने घर चला गया।
8 लोग यह देखकर डर गए और
परमेश्वर की महिमा करने लगे जिसने
मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है।

[illegible]

9 वहाँ से आगे बढ़कर यीशु ने
[illegible][†] नामक एक मनुष्य को चुंगी
की चौकी पर बैठे देखा, और उससे
कहा, **“मेरे पीछे हो ले।”** वह उठकर
उसके पीछे हो लिया।
10 और जब वह घर में भोजन करने
के लिये बैठा तो बहुत सारे चुंगी
लेनेवाले और पापी आकर यीशु और
उसके चेलों के साथ खाने बैठे।
11 यह देखकर फरीसियों ने उसके
चेलों से कहा, “तुम्हारा गुरु चुंगी
लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों
खाता है?”
12 यह सुनकर यीशु ने उनसे कहा,
**“वैद्य भले चंगों को नहीं परन्तु
बीमारों के लिए आवश्यक है।**
13 **इसलिए तुम जाकर इसका अर्थ
सीख लो, कि मैं बलिदान नहीं परन्तु
दया चाहता हूँ; क्योंकि मैं धर्मियों को
नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया
हूँ।”***([illegible] 6:6)***

[illegible]

14 तब यूहन्ना के चेलों ने उसके पास
आकर कहा, “क्या कारण है कि हम
और फरीसी इतना उपवास करते हैं,
पर तेरे चेले उपवास नहीं करते?”
15 यीशु ने उनसे कहा, **“क्या
बाराती, जब तक दूल्हा उनके साथ है
शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएँगे
कि दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा,
उस समय वे उपवास करेंगे।**
16 **नये कपड़े का पैबन्द पुराने वस्त्र
पर कोई नहीं लगाता, क्योंकि वह
पैबन्द वस्त्र से और कुछ खींच लेता
है, और वह अधिक फट जाता है।**
17 **और लोग नया दाखरस पुरानी
मशकों में नहीं भरते हैं; क्योंकि ऐसा
करने से मशकें फट जाती हैं, और
दाखरस बह जाता है और मशकें नाश
हो जाती हैं, परन्तु नया दाखरस नई
मशकों में भरते हैं और वह दोनों बची
रहती हैं।”**

[illegible]

18 वह उनसे ये बातें कह ही रहा था,
कि एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम
किया और कहा, “मेरी पुत्री अभी मरी
है; परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर
रख, तो वह जीवित हो जाएगी।”

---

[*] **9:3** *[illegible]*: परमेश्वर के प्रति अपमान या अवमानना या श्रद्धा का अभाव (मर 2:7; लूका 5:21)

[†] **9:9** *[illegible]*: मतलब “यहोवा का उपहार”, वह एक लेवी एवं पेशे से चुंगी लेनेवाला था, वह उठा और यीशु के पीछे हो लिया

19 यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया।

20 और देखो, एक स्त्री ने जिसके बारह वर्ष से लहू बहता था, उसके पीछे से आकर उसके वस्त्र के कोने को छू लिया। ***([illegible] 14:36)***

21 क्योंकि वह अपने मन में कहती थी, "यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी तो चंगी हो जाऊँगी।"

22 यीशु ने मुड़कर उसे देखा और कहा, **"पुत्री धैर्य रख; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।"** अतः वह स्त्री उसी समय चंगी हो गई।

23 जब यीशु उस सरदार के घर में पहुँचा और बाँसुरी बजानेवालों और भीड़ को हुल्लड़ मचाते देखा,

24 तब कहा, **"हट जाओ, लड़की मरी नहीं, पर सोती है।"** इस पर वे उसकी हँसी उड़ाने लगे।

25 परन्तु जब भीड़ निकाल दी गई, तो उसने भीतर जाकर लड़की का हाथ पकड़ा, और वह जी उठी।

26 और इस बात की चर्चा उस सारे देश में फैल गई।

[illegible]

27 जब यीशु वहाँ से आगे बढ़ा, तो दो अंधे उसके पीछे यह पुकारते हुए चले, "हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।"

28 जब वह घर में पहुँचा, तो वे अंधे उसके पास आए, और यीशु ने उनसे कहा, **"क्या तुम्हें विश्वास है, कि मैं यह कर सकता हूँ?"** उन्होंने उससे कहा, "हाँ प्रभु।"

29 तब उसने उनकी आँखें छूकर कहा, **"तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो।"**

30 और उनकी आँखें खुल गई और यीशु ने उन्हें सख्ती के साथ सचेत किया और कहा, **"सावधान, कोई इस बात को न जाने।"**

31 पर उन्होंने निकलकर सारे क्षेत्र में उसका यश फैला दिया।

[illegible]

32 जब वे बाहर जा रहे थे, तब, लोग एक गूँगे को जिसमें दुष्टात्मा थी उसके पास लाए।

33 और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूँगा बोलने लगा। और भीड़ ने अचम्भा करके कहा, "इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।"

34 परन्तु फरीसियों ने कहा, "यह तो दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है।"

[illegible]

35 और यीशु सब नगरों और गाँवों में फिरता रहा और उनके *[illegible]*‡ में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

36 जब उसने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों के समान जिनका कोई चरवाहा न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे। ***(1 [illegible]. 22:17)***

37 तब उसने अपने चेलों से कहा, **"फसल तो बहुत है पर मजदूर थोड़े हैं।**

38 **इसलिए फसल के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत में काम करने के लिये मजदूर भेज दे।"**

10

[illegible]

1 फिर उसने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं

‡ **9:35** *[illegible]:* यहूदियों की आराधना या धर्म की शिक्षा के लिए समागम स्थल या भवन।

पर अधिकार दिया, कि उन्हें निकालें
और सब प्रकार की बीमारियों और सब
प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें।

2 इन बारह [illegible]* के
नाम ये हैं: पहला शमौन, जो
पतरस कहलाता है, और उसका भाई
अन्द्रियास; जब्दी का पुत्र याकूब, और
उसका भाई यूहन्ना;
3 फिलिप्पुस और बरतुल्मै, थोमा,
और चुंगी लेनेवाला मत्ती, हलफईस
का पुत्र याकूब और तद्दै।
4 [illegible]†, और यहूदा
इस्करियोती, जिसने उसे पकड़वाया।

[illegible]

5 इन बारहों को यीशु ने यह निर्देश
देकर भेजा, **“अन्यजातियों की ओर न**
जाना, और सामरियों के किसी नगर
में प्रवेश न करना।*([illegible]. 50:6)*
6 परन्तु इस्राएल के घराने ही की
खोई हुई भेड़ों के पास जाना।
7 और चलते-चलते प्रचार करके
कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ
गया है।
8 बीमारों को चंगा करो: मरे हुओं
को जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो,
दुष्टात्माओं को निकालो।तुम ने सेंत-
मेंत पाया है, सेंत-मेंत दो।
9 अपने बटुओं में न तो सोना, और
न रूपा, और न तांबा रखना।
10 मार्ग के लिये न झोली रखो,
न दो कुर्ता, न जूते और न लाठी
लो, क्योंकि मजदूर को उसका भोजन
मिलना चाहिए।
11 “जिस किसी नगर या गाँव में
जाओ तो पता लगाओ कि वहाँ कौन
योग्य है? और जब तक वहाँ से न
निकलो, उसी के यहाँ रहो।
12 और घर में प्रवेश करते हुए उसे
आशीष देना।
13 यदि उस घर के लोग योग्य होंगे
तो तुम्हारा कल्याण उन पर पहुँचेगा
परन्तु यदि वे योग्य न हों तो तुम्हारा
कल्याण तुम्हारे पास लौट आएगा।
14 और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे,
और तुम्हारी बातें न सुने, उस घर या
उस नगर से निकलते हुए अपने पाँवों
की धूल झाड़ डालो।
15 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि
न्याय के दिन उस नगर की दशा से
सदोम और गमोरा के नगरों की दशा
अधिक सहने योग्य होगी।

[illegible]

16 “देखो, मैं तुम्हें भेड़ों की तरह
भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ इसलिए
साँपों की तरह बुद्धिमान और कबूतरों
की तरह भोले बनो।
17 परन्तु लोगों से सावधान रहो,
क्योंकि वे तुम्हें सभाओं में सौंपेंगे,
और अपने आराधनालयों में तुम्हें
कोड़े मारेंगे।
18 तुम मेरे लिये राज्यपालों और
राजाओं के सामने उन पर, और
अन्यजातियों पर गवाह होने के लिये
पेश किए जाओगे।
19 जब वे तुम्हें पकड़वाएँगे तो यह
चिन्ता न करना, कि तुम कैसे बोलोगे
और क्या कहोगे; क्योंकि जो कुछ तुम
को कहना होगा, वह उसी समय तुम्हें
बता दिया जाएगा।

---

* **10:2** *[illegible]:* प्रेरित शब्द यूनानी भाषा “अपोसतोलॉस” शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ, “वह जो भेजा जाता है।” † **10:4** *[illegible]:* वह एक प्राचीन यहूदी समुदाय का सदस्य था, इस समुदाय का लक्ष्य विश्व यहूदी साम्राज्य की स्थापना करना और इसी कारण वे सन 70 तक रोमी साम्राज्य के कट्टर विरोधी थे।

20 क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम्हारे द्वारा बोलेगा।

21 "भाई अपने भाई को और पिता अपने पुत्र को, मरने के लिये सौंपेंगे, और बच्चे माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे।*([illegible] 7:6)*

22 मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरेगा उसी का उद्धार होगा।

23 जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे को भाग जाना। मैं तुम से सच कहता हूँ, तुम मनुष्य के पुत्र के आने से पहले इस्राएल के सब नगरों में से गए भी न होंगे।

[illegible]

24 "चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं; और न ही दास अपने स्वामी से।

25 चेले का गुरु के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है; जब उन्होंने घर के स्वामी को *[illegible]*‡कहा तो उसके घरवालों को क्यों न कहेंगे?

[illegible]?

26 "इसलिए उनसे मत डरना, क्योंकि कुछ ढँका नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा।

27 जो मैं तुम से अंधियारे में कहता हूँ, उसे उजियाले में कहो; और जो कानों कान सुनते हो, उसे छतों पर से प्रचार करो।

28 जो शरीर को मार सकते हैं, पर आत्मा को मार नहीं सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है।

29 क्या एक पैसे में दो गौरैये नहीं बिकती? फिर भी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती।

30 तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं।*([illegible] 12:7)*

31 इसलिए, डरो नहीं; तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर मूल्यवान हो।

[illegible]

32 "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूँगा।

33 पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूँगा।

34 "यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूँ; मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूँ।

35 मैं तो आया हूँ, कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी माँ से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूँ।

36 मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे।

37 "जो माता या पिता को मुझसे अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं और जो बेटा या बेटी को मुझसे अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।*([illegible] 14:26)*

38 और जो *[illegible]*§मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं।

‡ **10:25** *[illegible]:* "दुष्टात्माओं का राजकुमार" (मत्ती 12:24)। उसे बाल-जबूल भी कहा गया है- एक्रोनियों का मक्खी देवता। § **10:38** *[illegible]:* "क्रूस उठाना" एक मुहावरा है जिसका अभिप्राय है, किसी बोझिल काम को करना या उसका यत्न करना या मसीह के अनुसरण में अपमान जनक माना जाता है।

39 जो अपने प्राण बचाता है, वह
उसे खोएगा; और जो मेरे कारण
अपना प्राण खोता है, वह उसे
पाएगा।

[illegible]

40 “जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह
मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे
ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को
ग्रहण करता है।
41 जो भविष्यद्वक्ता को
भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह
भविष्यद्वक्ता का बदला पाएगा; और
जो धर्मी जानकर धर्मी को ग्रहण करे,
वह धर्मी का बदला पाएगा।
42 जो कोई इन छोटों में से एक
को चेला जानकर केवल एक कटोरा
ठंडा पानी पिलाए, मैं तुम से सच
कहता हूँ, वह अपना पुरस्कार कभी
नहीं खोएगा।”

11

[illegible]

1 जब यीशु अपने बारह चेलों को
निर्देश दे चुका, तो वह उनके नगरों में
उपदेश और प्रचार करने को वहाँ से
चला गया।
2 यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के
कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों
को उससे यह पूछने भेजा,
3 “क्या आनेवाला तू ही है, या हम
दूसरे की प्रतीक्षा करें?”
4 यीशु ने उत्तर दिया, “जो कुछ
तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब
जाकर यूहन्ना से कह दो।
5 कि अंधे देखते हैं और लँगड़े चलते
फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं
और बहरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते
हैं, और गरीबों को सुसमाचार सुनाया
जाता है।
6 और धन्य है वह, जो मेरे कारण
ठोकर न खाए।”

[illegible]

7 जब वे वहाँ से चल दिए, तो यीशु
यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने
लगा, “तुम जंगल में क्या देखने गए
थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे
को?
8 फिर तुम क्या देखने गए थे? जो
कोमल वस्त्र पहनते हैं, वे राजभवनों
में रहते हैं।
9 तो फिर क्यों गए थे? क्या किसी
भविष्यद्वक्ता को देखने को? हाँ, मैं
तुम से कहता हूँ, वरन् भविष्यद्वक्ता
से भी बड़े को।
10 यह वही है, जिसके विषय में
लिखा है, कि

‘देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता
हूँ,
जो तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार
करेगा।’ *([illegible]. 3:1)*

11 “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि
जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमें से यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं
हुआ; पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे
से छोटा है *[illegible]*[*] है।
12 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के
दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में
बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है, और
बलवान उसे छीन लेते हैं।
13 यूहन्ना तक सारे भविष्यद्वक्ता
और व्यवस्था भविष्यद्वाणी करते रहे।

---

[*] **11:11** *[illegible]:* स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा इस जगत के सबसे बड़े की तुलना में उससे बड़ा है (मत्ती 18:4) [†] **11:14** *[illegible]:* भविष्यद्वक्ता मलाकी ने (मला 4:5-6) भविष्यद्वाणी की थी कि मसीह के आने से पहले मार्ग तैयार करने के लिए “एलिय्याह” भेजा जाएगा।

14 और चाहो तो मानो, [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible][†] *([illegible]. 4:5)*

15 जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले।

16 "मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से दूँ? वे उन बालकों के समान हैं, जो बाजारों में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं,

17 कि हमने तुम्हारे लिये बाँसुरी बजाई, और तुम न नाचे; हमने विलाप किया, और तुम ने छाती नहीं पीटी।

18 क्योंकि यूहन्ना न खाता आया और न ही पीता, और वे कहते हैं कि उसमें दुष्टात्मा है।

19 मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया, और वे कहते हैं कि देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, चुंगी लेनेवालों और पापियों का मित्र! पर ज्ञान अपने कामों में सच्चा ठहराया गया है।"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

20 तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा, जिनमें उसने बहुत सारे सामर्थ्य के काम किए थे; क्योंकि उन्होंने अपना मन नहीं फिराया था।

21 "हाय, [illegible]![‡] हाय, बैतसैदा! जो सामर्थ्य के काम तुम में किए गए, यदि वे सोर और सीदोन में किए जाते, तो टाट ओढ़कर, और राख में बैठकर, वे कब के मन फिरा लेते।

22 परन्तु मैं तुम से कहता हूँ; कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सोर और सीदोन की दशा अधिक सहने योग्य होगी।

23 और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊँचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा; जो सामर्थ्य के काम तुझ में किए गए है, यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता।

24 पर मैं तुम से कहता हूँ, कि न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के नगर की दशा अधिक सहने योग्य होगी।"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

25 उसी समय यीशु ने कहा, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि तूने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है।

26 हाँ, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा।

27 "मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे।

28 "हे सब [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible][§] लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।

29 मेरा [illegible][*] अपने ऊपर उठा लो; और मुझसे सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।

30 क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।"

12

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

‡ **11:21** *[illegible]:* यह शहर तीन प्रमुख शहरों में से एक के रूप में याद किया जाता है जिसमें यीशु ने अपनी सेवकाई का अधिक समय बिताया था। § **11:28** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* जीवन की चिंताओं, पापों या धार्मिक संस्कारों की अनिवार्यता के कारण थके-हारे हुए। * **11:29** *[illegible]:* उचित रेखा में हल चलाने के लिए बैलों की गर्दन पर रखा जानेवाला लकड़ी का साधन (गिनती 19:2; व्यवस्था 21:3)

1 उस समय यीशु सब्त के दिन खेतों
में से होकर जा रहा था, और उसके
चेलों को भूख लगी, और वे बालें तोड़-
तोड़कर खाने लगे।
2 फरीसियों ने यह देखकर उससे
कहा, "देख, तेरे चेले वह काम कर
रहे हैं, जो सब्त के दिन करना उचित
नहीं।"
3 उसने उनसे कहा, **"क्या तुम ने**
नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने, जब वह और
उसके साथी भूखे हुए तो क्या किया?
4 **वह कैसे परमेश्वर के घर में गया,**
और *[illegible]*[*] **खाई,**
जिन्हें खाना न तो उसे और न उसके
साथियों को, पर केवल याजकों को
उचित था?
5 **या क्या तुम ने व्यवस्था में नहीं**
पढ़ा, कि याजक सब्त के दिन मन्दिर
में सब्त के दिन की विधि को तोड़ने
पर भी निर्दोष ठहरते हैं? *([illegible]. 28:9,10, [illegible]. 7:22,23)*
6 **पर मैं तुम से कहता हूँ, कि यहाँ**
वह है, जो मन्दिर से भी महान है।
7 **यदि तुम इसका अर्थ जानते कि**
मैं दया से प्रसन्न होता हूँ, बलिदान
से नहीं, तो तुम निर्दोष को दोषी न
ठहराते। *([illegible] 6:6)*
8 **मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का**
भी प्रभु है।" *([illegible]. 2:28)*

[illegible]

9 वहाँ से चलकर वह उनके
आराधनालय में आया।
10 वहाँ एक मनुष्य था, जिसका हाथ
सूखा हुआ था; और उन्होंने उस पर
दोष लगाने के लिए उससे पूछा, "क्या
[illegible][†] उचित
है?"
11 उसने उनसे कहा, **"तुम में ऐसा**
कौन है, जिसकी एक भेड़ हो, और वह
सब्त के दिन गड्ढे में गिर जाए, तो वह
उसे पकड़कर न निकाले?
12 **भला, मनुष्य का मूल्य भेड़ से**
कितना बढ़कर है! इसलिए सब्त के
दिन भलाई करना उचित है।"
13 तब यीशु ने उस मनुष्य से कहा,
"अपना हाथ बढ़ा।" उसने बढ़ाया,
और वह फिर दूसरे हाथ के समान
अच्छा हो गया।
14 तब फरीसियों ने बाहर जाकर
उसके विरोध में सम्मति की, कि उसे
किस प्रकार मार डाले?

[illegible]

15 यह जानकर यीशु वहाँ से चला
गया। और बहुत लोग उसके पीछे हो
लिये, और उसने सब को चंगा किया।
16 और उन्हें चेतावनी दी, कि मुझे
प्रगट न करना।
17 कि जो वचन यशायाह
भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था,
वह पूरा हो:
18 "देखो, यह मेरा सेवक है, जिसे मैंने
चुना है;
मेरा प्रिय, जिससे मेरा मन प्रसन्न है:
मैं अपना आत्मा उस पर डालूँगा;
और वह अन्यजातियों को न्याय का
समाचार देगा।
19 वह न झगड़ा करेगा, और न
चिल्लाएगा;
और न बाजारों में कोई उसका शब्द
सुनेगा।
20 वह कुचले हुए सरकण्डे को न
तोड़ेगा;
और धुआँ देती हुई बत्ती को न
बुझाएगा,

---

[*] **12:4** *[illegible]:* अशुद्धता से पृथक समर्पित की गई। [†] **12:10** *[illegible]:* सब्त का दिन यहूदियों के लिए सप्ताह का सातवाँ दिन था उस दिन उन्हें किसी भी प्रकार का काम नहीं करना था केवल विश्राम करना था अत: उनके धर्मगुरुओं और फरीसियों द्वारा उपचार कार्य वर्जित था।

जब तक न्याय को प्रबल न कराए।
21 और अन्यजातियाँ उसके नाम पर
आशा रखेंगी।”

[illegible]

22 तब लोग एक अंधे-गूँगे को
जिसमें दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए;
और उसने उसे अच्छा किया; और वह
गूँगा बोलने और देखने लगा।
23 इस पर सब लोग चकित होकर
कहने लगे, “यह क्या दाऊद की
सन्तान है?”
24 परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर
कहा, “यह तो दुष्टात्माओं के
सरदार शैतान की सहायता के बिना
दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।”
25 उसने उनके मन की बात जानकर
उनसे कहा, “जिस किसी राज्य में फूट
होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई
नगर या घराना जिसमें फूट होती है,
बना न रहेगा।
26 और यदि शैतान ही शैतान को
निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो
गया है; फिर उसका राज्य कैसे बना
रहेगा?
27 भला, यदि मैं शैतान की
सहायता से दुष्टात्माओं को
निकालता हूँ, तो तुम्हारे वंश किसकी
सहायता से निकालते हैं? इसलिए वे
ही तुम्हारा न्याय करेंगे।
28 पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा
की सहायता से दुष्टात्माओं को
निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य
तुम्हारे पास आ पहुँचा है।
29 या कैसे कोई मनुष्य किसी
बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल
लूट सकता है जब तक कि पहले उस
बलवन्त को न बाँध ले? और तब वह
उसका घर लूट लेगा।
30 जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे
विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं
बटोरता, वह बिखेरता है।
31 इसलिए मैं तुम से कहता हूँ,
कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप
और निन्दा क्षमा की जाएगी, पर
पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा न की
जाएगी।
32 जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध
में कोई बात कहेगा, उसका यह
अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु
जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में
कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस
युग में और न ही आनेवाले युग में
क्षमा किया जाएगा।

[illegible]

33 “यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो
उसके फल को भी अच्छा कहो, या
पेड़ को निकम्मा कहो, तो उसके फल
को भी निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़
फल ही से पहचाना जाता है।
34 हे साँप के बच्चों, तुम बुरे होकर
कैसे अच्छी बातें कह सकते हो?
क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुँह पर
आता है।
35 भला मनुष्य मन के भले भण्डार
से भली बातें निकालता है; और
बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें
निकालता है।
36 और मैं तुम से कहता हूँ, कि जो-
जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय
के दिन हर एक बात का लेखा देंगे।
37 क्योंकि तू अपनी बातों के कारण
निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण
दोषी ठहराया जाएगा।”

[illegible]

38 इस पर कुछ शास्त्रियों और
फरीसियों ने उससे कहा, “हे गुरु, हम

तुझ से एक [illegible]‡ देखना चाहते
हैं।”
39 उसने उन्हें उत्तर दिया, “इस युग
के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह
ढूँढ़ते हैं; परन्तु योना भविष्यद्वक्ता के
चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उनको
न दिया जाएगा।
40 योना तीन रात-दिन महा मच्छ
के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र
तीन रात-दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।
41 नीनवे के लोग न्याय के दिन
इस युग के लोगों के साथ उठकर
उन्हें दोषी ठहराएँगे, क्योंकि उन्होंने
योना का प्रचार सुनकर, मन फिराया
और यहाँ वह है जो [illegible]§ है।
42 [illegible]* न्याय के
दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर
उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह
सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिये पृथ्वी
के छोर से आई, और यहाँ वह है जो
सुलैमान से भी बड़ा है।

[illegible]

43 “जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से
निकल जाती है, तो सूखी जगहों में
विश्राम ढूँढ़ती फिरती है, और पाती
नहीं।
44 तब कहती है, कि मैं अपने
उसी घर में जहाँ से निकली थी,
लौट जाऊँगी, और आकर उसे सूना,
झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया
पाती है।
45 तब वह जाकर अपने से और
बुरी सात आत्माओं को अपने साथ
ले आती है, और वे उसमें पैठकर वहाँ
वास करती हैं, और उस मनुष्य की
पिछली दशा पहले से भी बुरी हो
जाती है। इस युग के बुरे लोगों की
दशा भी ऐसी ही होगी।”

[illegible]

46 जब वह भीड़ से बातें कर ही रहा
था, तो उसकी माता और भाई बाहर
खड़े थे, और उससे बातें करना चाहते
थे।
47 किसी ने उससे कहा, “देख तेरी
माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और
तुझ से बातें करना चाहते हैं।”
48 यह सुन उसने कहनेवाले को
उत्तर दिया, “कौन हैं मेरी माता? और
कौन हैं मेरे भाई?”
49 और अपने चेलों की ओर अपना
हाथ बढ़ाकर कहा, “मेरी माता और
मेरे भाई ये हैं।
50 क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय
पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा
भाई, और बहन, और माता है।”

13

[illegible]

1 उसी दिन यीशु घर से निकलकर
झील के किनारे जा बैठा।
2 और उसके पास ऐसी बड़ी भीड़
इकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़ गया,
और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही।

‡ 12:38 [illegible]: किसी अलौकिक शक्ति द्वारा किया गया कार्य या किसी कार्य में अलौकिक शक्ति का साथ होना फरीसियों ने यीशु के अनेक आश्चर्यकर्मों पर विश्वास नहीं किया वे यीशु से और भी अधिक स्वर्गीय चिन्ह की माँग करते थे। § 12:41 [illegible]: योना ने नीनवे जाकर वहाँ के निवासियों को परमेश्वर के आनेवाले दण्ड की चेतावनी दी, परिणामस्वरूप उन्होंने अपने सांसारिक जीवन से मन फिराया और पश्चाताप किया। यहाँ यीशु के कहने का अर्थ है कि क्रूस पर उसकी मृत्यु और तीसरे दिन फिर जी उठने के बाद मनुष्य जानेंगे कि वह वास्तव में मसीह है (यूह 3:5) * 12:42 [illegible]: शिबा की रानी (1 राजा 10:1,2 इतिहास 9:1) * 13:3 [illegible]: मतलब सरल कहानी जो नैतिक या आध्यात्मिक पाठ सिखाता है।

3 और उसने उनसे [illegible]*
में बहुत सी बातें कहीं "एक बोनेवाला
बीज बोने निकला।
4 बोते समय कुछ बीज मार्ग के
किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर
उन्हें चुग लिया।
5 कुछ बीज पत्थरीली भूमि पर
गिरे, जहाँ उन्हें बहुत मिट्टी न मिली
और नरम मिट्टी न मिलने के कारण वे
जल्द उग आए।
6 पर सूरज निकलने पर वे जल गए,
और जड़ न पकड़ने से सूख गए।
7 कुछ बीज झाड़ियों में गिरे, और
झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा डाला।
8 पर कुछ अच्छी भूमि पर गिरे,
और फल लाए, कोई सौ गुना, कोई
साठ गुना, कोई तीस गुना।
9 जिसके कान हों वह सुन ले।"

[illegible]

10 और चेलों ने पास आकर उससे
कहा, "तू उनसे दृष्टान्तों में क्यों बातें
करता है?"
11 उसने उत्तर दिया, "तुम को स्वर्ग
के राज्य के भेदों की समझ दी गई है,
पर उनको नहीं।
12 क्योंकि जिसके पास है, उसे
दिया जाएगा; और उसके पास बहुत
हो जाएगा; पर जिसके पास कुछ नहीं
है, उससे जो कुछ उसके पास है, वह
भी ले लिया जाएगा।
13 मैं उनसे दृष्टान्तों में इसलिए
बातें करता हूँ, कि वे देखते हुए नहीं
देखते; और सुनते हुए नहीं सुनते; और
नहीं समझते।
14 और उनके विषय में यशायाह की
यह भविष्यद्वाणी पूरी होती है:
'तुम कानों से तो सुनोगे, पर समझोगे
नहीं;
और आँखों से तो देखोगे, पर तुम्हें न
सूझेगा।
15 क्योंकि इन लोगों के मन सुस्त हो
गए है,
और वे कानों से ऊँचा सुनते हैं
और उन्होंने अपनी आँखें मूँद लीं हैं;
कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें,
और कानों से सुनें और मन से समझें,
और फिर जाएँ, और मैं उन्हें चंगा
करूँ।'
16 "पर धन्य है तुम्हारी आँखें, कि
वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, कि वे
सुनते हैं।
17 क्योंकि मैं तुम से सच कहता
हूँ, कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और
धर्मियों ने चाहा कि जो बातें तुम
देखते हो, देखें पर न देखीं; और जो
बातें तुम सुनते हो, सुनें, पर न सुनीं।

[illegible]

18 "अब तुम बोनेवाले का दृष्टान्त
सुनो
19 जो कोई राज्य का [illegible]† सुनकर
नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ
बोया गया था, उसे वह दुष्ट आकर
छीन ले जाता है; यह वही है, जो
मार्ग के किनारे बोया गया था।
20 और जो पत्थरीली भूमि पर
बोया गया, यह वह है, जो वचन
सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ मान
लेता है।
21 पर अपने में जड़ न रखने के
कारण वह थोड़े ही दिन रह पाता है,
और जब वचन के कारण क्लेश या
उत्पीड़न होता है, तो तुरन्त ठोकर
खाता है।
22 जो झाड़ियों में बोया गया, यह
वह है, जो वचन को सुनता है, पर इस

† **13:19** [illegible]: का अर्थ है "सुसमाचार या परमेश्वर का वचन" (मर 4:15, लूका 8:12)

संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं लाता।

23 जो अच्छी भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनकर समझता है, और फल लाता है कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।”

▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯

24 यीशु ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया, “स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया।

25 पर जब लोग सो रहे थे तो उसका बैरी आकर गेहूँ के बीच जंगली बीज बोकर चला गया।

26 जब अंकुर निकले और बालें लगी, तो जंगली दाने के पौधे भी दिखाई दिए।

27 इस पर गृहस्थ के दासों ने आकर उससे कहा, ‘हे स्वामी, क्या तूने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? फिर जंगली दाने के पौधे उसमें कहाँ से आए?’

28 उसने उनसे कहा, ‘यह किसी शत्रु का काम है।’ दासों ने उससे कहा, ‘क्या तेरी इच्छा है, कि हम जाकर उनको बटोर लें?’

29 उसने कहा, ‘नहीं, ऐसा न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए तुम उनके साथ गेहूँ भी उखाड़ लो।

30 कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो, और कटनी के समय मैं काटनेवालों से कहूँगा; पहले जंगली दाने के पौधे बटोरकर जलाने के लिये उनके गट्ठे बाँध लो, और गेहूँ को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो।’ ”

▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯

31 उसने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया, “स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया।

32 वह सब बीजों से छोटा तो है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग-पात से बड़ा होता है; और ऐसा पेड़ हो जाता है, कि आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं।”

▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯

33 उसने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया, “स्वर्ग का राज्य ख़मीर के समान है जिसको किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते-होते वह सब ख़मीर हो गया।”

▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯

34 ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं, और बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ न कहता था।

35 कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो: “मैं दृष्टान्त कहने को अपना मुँह खोलूँगा मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रही हैं प्रगट करूँगा।”

▯▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯

36 तब वह भीड़ को छोड़कर घर में आया, और उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, “खेत के जंगली दाने का दृष्टान्त हमें समझा दे।”

37 उसने उनको उत्तर दिया, “अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है।

38 खेत संसार है, अच्छा बीज राज्य के सन्तान, और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं।

39 जिस शत्रु ने उनको बोया वह शैतान है; कटनी जगत का अन्त है: और काटनेवाले स्वर्गदूत हैं।

40 अत: जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते हैं वैसा ही जगत के अन्त में होगा।

41 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से

सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म
करनेवालों को इकट्ठा करेंगे।
42 और उन्हें [illegible]‡में
डालेंगे, वहाँ रोना और दाँत पीसना
होगा।
43 उस समय धर्मी अपने पिता
के राज्य में सूर्य के समान चमकेंगे।
जिसके कान हों वह सुन ले।

[illegible]

44 “स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे
हुए धन के समान है, जिसे किसी
मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और
आनन्द के मारे जाकर अपना सब कुछ
बेचकर उस खेत को मोल लिया।

[illegible]

45 “फिर स्वर्ग का राज्य एक
व्यापारी के समान है जो अच्छे
मोतियों की खोज में था।
46 जब उसे एक बहुमूल्य मोती
मिला तो उसने जाकर अपना सब
कुछ बेच डाला और उसे मोल ले
लिया।

[illegible]

47 “फिर स्वर्ग का राज्य उस बड़े
जाल के समान है, जो समुद्र में डाला
गया, और हर प्रकार की मछलियों को
समेट लाया।
48 और जब जाल भर गया, तो
मछुए किनारे पर खींच लाए, और
बैठकर अच्छी-अच्छी तो बरतनों में
इकट्ठा कीं और बेकार-बेकार फेंक दीं।
49 जगत के अन्त में ऐसा ही होगा;
स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से
अलग करेंगे,
50 और उन्हें आग के कुण्ड में
डालेंगे। वहाँ रोना और दाँत पीसना
होगा।

[illegible]

51 “क्या तुम ये सब बातें समझ
गए?” चेलों ने उत्तर दिया, “हाँ।”
52 फिर यीशु ने उनसे कहा,
“इसलिए हर एक शास्त्री जो स्वर्ग
के राज्य का चेला बना है, उस गृहस्थ
के समान है जो अपने भण्डार से नई
और पुरानी वस्तुएँ निकालता है।”

[illegible]

53 जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह
चुका, तो वहाँ से चला गया।
54 और अपने नगर में आकर उनके
आराधनालय में उन्हें ऐसा उपदेश देने
लगा; कि वे चकित होकर कहने लगे,
“इसको यह ज्ञान और सामर्थ्य के काम
कहाँ से मिले?
55 क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं?
और क्या इसकी माता का नाम
मरियम और इसके भाइयों के नाम
याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा
नहीं?
56 और क्या इसकी सब बहनें हमारे
बीच में नहीं रहती? फिर इसको यह
सब कहाँ से मिला?”
57 इस प्रकार उन्होंने उसके कारण
ठोकर खाई, पर यीशु ने उनसे कहा,
“भविष्यद्वक्ता का अपने नगर और
अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर
नहीं होता।”
58 और उसने वहाँ उनके अविश्वास
के कारण बहुत सामर्थ्य के काम नहीं
किए।

14

[illegible]

‡ **13:42** [illegible]: यह परमेश्वर के प्रकोप को व्यक्त करता है, जो दुष्ट लोगों पर आ पड़ेगा, और अनन्तकाल तक के लिये होगा, यह नरक की आग के रूप में भी जाना जाता है। (मत्ती 8:12; 22:13)

1 उस समय [illegible]* हेरोदेस ने यीशु की चर्चा सुनी।

2 और अपने सेवकों से कहा, "यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है: वह मरे हुओं में से जी उठा है, इसलिए उससे सामर्थ्य के काम प्रगट होते हैं।"

[illegible]

3 क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण, यूहन्ना को पकड़कर बाँधा, और जेलखाने में डाल दिया था।

4 क्योंकि यूहन्ना ने उससे कहा था, कि इसको रखना तुझे उचित नहीं है।

5 और वह उसे मार डालना चाहता था, पर लोगों से डरता था, क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता मानते थे।

6 पर जब हेरोदेस का जन्मदिन आया, तो हेरोदियास की बेटी ने उत्सव में नाच दिखाकर हेरोदेस को खुश किया।

7 इसलिए उसने शपथ खाकर वचन दिया, "जो कुछ तू माँगेगी, मैं तुझे दूँगा।"

8 वह अपनी माता के उकसाने से बोली, "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर थाल में यहीं मुझे मँगवा दे।"

9 राजा दुःखित हुआ, पर अपनी शपथ के, और साथ बैठनेवालों के कारण, आज्ञा दी, कि दे दिया जाए।

10 और उसने जेलखाने में लोगों को भेजकर यूहन्ना का सिर कटवा दिया।

11 और उसका सिर थाल में लाया गया, और लड़की को दिया गया; और वह उसको अपनी माँ के पास ले गई।

12 और उसके चेलों ने आकर उसके शव को ले जाकर गाड़ दिया और जाकर यीशु को समाचार दिया।

[illegible]

13 जब यीशु ने यह सुना, तो नाव पर चढ़कर वहाँ से किसी सुनसान जगह को, एकान्त में चला गया; और लोग यह सुनकर नगर-नगर से पैदल उसके पीछे हो लिए।

14 उसने निकलकर एक बड़ी भीड़ देखी, और उन पर तरस खाया, और उसने उनके बीमारों को चंगा किया।

15 जब साँझ हुई, तो उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, "यह तो सुनसान जगह है और देर हो रही है, लोगों को विदा किया जाए कि वे बस्तियों में जाकर अपने लिये भोजन मोल लें।"

16 यीशु ने उनसे कहा, **"उनका जाना आवश्यक नहीं! तुम ही इन्हें खाने को दो।"**

17 उन्होंने उससे कहा, "यहाँ हमारे पास पाँच रोटी और दो मछलियों को छोड़ और कुछ नहीं है।"

18 उसने कहा, **"उनको यहाँ मेरे पास ले आओ।"**

19 तब उसने लोगों को घास पर बैठने को कहा, और उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को लिया; और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियाँ तोड़-तोड़कर चेलों को दीं, और चेलों ने लोगों को।

20 और सब खाकर तृप्त हो गए, और उन्होंने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियाँ उठाई।

* **14:1** [illegible]: का अर्थ है एक राजकुमार या शासक जो एक प्रदेश या राज्य के एक चौथाई भाग को नियंत्रित करता है। † **14:21** [illegible]: यहूदी संस्कृति के अनुसार पुरुष और महिला सार्वजनिक रूप से अलग-अलग खाया करते थे और बच्चे महिलाओं के साथ खाया करते थे यही कारण है कि मत्ती ने पुरुषों की संख्या के बारे में उल्लेख किया है।

21 और खानेवाले [illegible] [illegible] [illegible] [illegible][†] पाँच
हजार पुरुषों के लगभग थे।

[illegible]

22 और उसने तुरन्त अपने चेलों को
नाव पर चढ़ाया, कि वे उससे पहले पार
चले जाएँ, जब तक कि वह लोगों को
विदा करे।
23 वह लोगों को विदा करके,
प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चढ़
गया; और साँझ को वह वहाँ अकेला
था।
24 उस समय नाव झील के बीच
लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा
सामने की थी।
25 और वह रात के [illegible][‡]
झील पर चलते हुए उनके पास आया।
26 चेले उसको झील पर चलते हुए
देखकर घबरा गए, और कहने लगे,
“वह भूत है,” और डर के मारे चिल्ला
उठे।
27 यीशु ने तुरन्त उनसे बातें की,
और कहा, **“धैर्य रखो, मैं हूँ; डरो
मत।”**
28 पतरस ने उसको उत्तर दिया, “हे
प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास
पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।”
29 उसने कहा, **“आ!”** तब पतरस
नाव पर से उतरकर यीशु के पास जाने
को पानी पर चलने लगा।
30 पर हवा को देखकर डर गया, और
जब डूबने लगा तो चिल्लाकर कहा,
“हे प्रभु, मुझे बचा।”
31 यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे
थाम लिया, और उससे कहा, **“हे अल्प
विश्वासी, तूने क्यों सन्देह किया?”**
32 जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा
थम गई।
33 इस पर जो नाव पर थे, उन्होंने
उसकी आराधना करके कहा, “सचमुच,
तू परमेश्वर का पुत्र है।”

[illegible]

34 वे पार उतरकर गन्नेसरत प्रदेश में
पहुँचे।
35 और वहाँ के लोगों ने उसे
पहचानकर आस-पास के सारे क्षेत्र में
कहला भेजा, और सब बीमारों को
उसके पास लाए।
36 और उससे विनती करने लगे कि
वह उन्हें अपने वस्त्र के कोने ही को
छूने दे; और जितनों ने उसे छुआ, वे
चंगे हो गए।

15

[illegible]

1 तब यरूशलेम से कुछ फरीसी और
शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे,
2 “तेरे चेले [illegible][*] को क्यों टालते हैं, कि
बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं?”
3 उसने उनको उत्तर दिया, **“तुम
भी अपनी परम्पराओं के कारण क्यों
परमेश्वर की आज्ञा टालते हो?**
4 **क्योंकि परमेश्वर ने कहा, ‘अपने
पिता और अपनी माता का आदर
करना’, और ‘जो कोई पिता या माता
को बुरा कहे, वह मार डाला जाए।’**
5 **पर तुम कहते हो, कि यदि कोई
अपने पिता या माता से कहे, ‘जो कुछ
तुझे मुझसे लाभ पहुँच सकता था, वह
परमेश्वर को भेंट चढ़ाया जा चुका’**

‡ **14:25** *[illegible]*: यहूदी, साथ ही साथ रोमी, आमतौर पर रात को चार पहर में प्रत्येक पहर को तीन घंटे में विभाजित करते है पहला पहर शाम छः बजे से शुरू होता है और चौथा पहर रात तीन बजे से शुरू होता है। * **15:2** *[illegible]*: परम्परा सामान्य तौर पर पूर्वजों द्वारा दी गई विधियों को सिखाते हैं। परम्पराओं के साथ परमेश्वर के वचन (पत्र और उसकी भावना) के सही अर्थ को बदलने के लिए वहाँ एक वास्तविक खतरा है।

6 **तो वह अपने पिता का आदर न
करे, इस प्रकार तुम ने अपनी परम्परा
के कारण परमेश्वर का वचन टाल
दिया।**
7 **हे कपटियों, यशायाह ने तुम्हारे
विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक ही की
है:**
8 **‘ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते
हैं,
पर उनका मन मुझसे दूर रहता है।**
9 **और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं,
क्योंकि मनुष्य की विधियों को
धर्मोपदेश करके सिखाते
हैं।’ ”**

[illegible]

10 और उसने लोगों को अपने
पास बुलाकर उनसे कहा, **“सुनो, और
समझो।**
11 **जो मुँह में जाता है, वह मनुष्य
को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मुँह से
निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध
करता है।”**
12 तब चेलों ने आकर उससे कहा,
“क्या तू जानता है कि फरीसियों ने यह
वचन सुनकर ठोकर खाई?”
13 उसने उत्तर दिया, **“हर पौधा जो
मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया,
उखाड़ा जाएगा।**
14 **उनको जाने दो; वे अंधे मार्ग
दिखानेवाले हैं और अंधा यदि अंधे
को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड्ढे में गिर
पड़ेंगे।”**
15 यह सुनकर पतरस ने उससे कहा,
“यह दृष्टान्त हमें समझा दे।”
16 उसने कहा, **“क्या तुम भी अब
तक नासमझ हो?**
17 **क्या तुम नहीं समझते, कि जो
कुछ मुँह में जाता, वह पेट में पड़ता
है, और शौच से निकल जाता है?**
18 **पर जो कुछ मुँह से निकलता
है, वह मन से निकलता है, और वही
मनुष्य को अशुद्ध करता है।**
19 **क्योंकि बुरे विचार, हत्या,
परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी,
झूठी गवाही और निन्दा मन ही से
निकलती है।**
20 **यही हैं जो मनुष्य को अशुद्ध
करती हैं, परन्तु हाथ बिना धोए
भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं
करता।”**

[illegible]

21 यीशु वहाँ से निकलकर, [illegible][†]
और सीदोन के देशों की ओर चला
गया।
22 और देखो, उस प्रदेश से
एक [illegible][‡] स्त्री निकली, और
चिल्लाकर कहने लगी, “हे प्रभु!
दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर,
मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा
है।”
23 पर उसने उसे कुछ उत्तर न
दिया, और उसके चेलों ने आकर उससे
विनती करके कहा, “इसे विदा कर;
क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती
आती है।”
24 उसने उत्तर दिया, **“इस्राएल के
घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं
किसी के पास नहीं भेजा गया।”**
25 पर वह आई, और उसे प्रणाम
करके कहने लगी, “हे प्रभु, मेरी
सहायता कर।”

[†] **15:21** *[illegible]:* यह यूनानी/लैटिन नाम है प्रसिद्ध सुरूफिनीकी शहर के लिये अक्सर सीदोन के साथ उल्लेख हैं। (यहोशू 10:29) यह आज भी, लबानोन के दक्षिण तट पर, ठीक इस्राएल के उत्तरी दिशा में मौजूद हैं। [‡] **15:22** *[illegible]:* का अर्थ हैं सामी लोगों के एक समूह का सदस्य जो प्रागैतिहासिक काल से कनान में निवास करते हैं इसमें इस्राएली और सुरूफिनीकी भी शामिल हैं। [§] **15:26** *[illegible]:* इस्राएलियों से संदर्भित

26 उसने उत्तर दिया, “**[illegible] [illegible]§रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं।**”

27 उसने कहा, “सत्य है प्रभु, पर कुत्ते भी वह चूर चार खाते हैं, जो उनके स्वामियों की मेज से गिरते हैं।”

28 इस पर यीशु ने उसको उत्तर देकर कहा, “**हे स्त्री, तेरा विश्वास बड़ा है; जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो**” और उसकी बेटी उसी समय चंगी हो गई।

[illegible]

29 यीशु वहाँ से चलकर, गलील की झील के पास आया, और पहाड़ पर चढ़कर वहाँ बैठ गया।

30 और भीड़ पर भीड़ उसके पास आई, वे अपने साथ लँगड़ों, अंधों, गूँगों, टुण्डों, और बहुतों को लेकर उसके पास आए; और उन्हें उसके पाँवों पर डाल दिया, और उसने उन्हें चंगा किया।

31 अतः जब लोगों ने देखा, कि गूँगे बोलते और टुण्डे चंगे होते और लँगड़े चलते और अंधे देखते हैं, तो अचम्भा करके इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की।

[illegible]

32 यीशु ने अपने चेलों को बुलाकर कहा, “**मुझे इस भीड़ पर तरस आता है; क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उनके पास कुछ खाने को नहीं; और मैं उन्हें भूखा विदा करना नहीं चाहता; कहीं ऐसा न हो कि मार्ग में थककर गिर जाएँ।**”

33 चेलों ने उससे कहा, “हमें इस निर्जन स्थान में कहाँ से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें?”

34 यीशु ने उनसे पूछा, “**तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?**” उन्होंने कहा, “सात और थोड़ी सी छोटी मछलियाँ।”

35 तब उसने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी।

36 और उन सात रोटियों और मछलियों को ले धन्यवाद करके तोड़ा और अपने चेलों को देता गया, और चेले लोगों को।

37 इस प्रकार सब खाकर तृप्त हो गए और बचे हुए टुकड़ों से भरे हुए सात टोकरे उठाए।

38 और खानेवाले स्त्रियों और बालकों को छोड़ चार हजार पुरुष थे।

39 तब वह भीड़ को विदा करके नाव पर चढ़ गया, और *[illegible]** क्षेत्र में आया।

16

[illegible]

1 और फरीसियों और *[illegible]** ने यीशु के पास आकर उसे परखने के लिये उससे कहा, “हमें स्वर्ग का कोई चिन्ह दिखा।”

2 उसने उनको उत्तर दिया, “**साँझ को तुम कहते हो, कि मौसम अच्छा रहेगा, क्योंकि आकाश लाल है।**

3 **और भोर को कहते हो, कि आज आँधी आएगी क्योंकि आकाश लाल और धुमला है; तुम आकाश का लक्षण देखकर भेद बता सकते हो, पर समय के चिन्हों का भेद क्यों नहीं बता सकते?**

4 **इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूँढ़ते हैं पर योना के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन्हें**

---

* **15:39** *[illegible]:* एक मीनार, मगदला संशोधित किया गया एक नाम हैं। * **16:1** *[illegible]:* अध्याय 3:7 में टिप्पणी का उल्लेख देखें

न दिया जाएगा।” और वह उन्हें
छोड़कर चला गया।

[illegible]

5 और चेले झील के उस पार जाते
समय रोटी लेना भूल गए थे।
6 यीशु ने उनसे कहा, **“देखो,
फरीसियों और सदूकियों के ख़मीर से
सावधान रहना।”**
7 वे आपस में विचार करने लगे,
“हम तो रोटी नहीं लाए। इसलिए वह
ऐसा कहता है।”
8 यह जानकर, यीशु ने उनसे कहा,
**“हे अल्पविश्वासियों, तुम आपस में
क्यों विचार करते हो कि हमारे पास
रोटी नहीं?**
9 **क्या तुम अब तक नहीं समझे?
और उन पाँच हजार की पाँच रोटी
स्मरण नहीं करते, और न यह कि
कितनी टोकरियाँ उठाई थीं?**
10 **और न उन चार हजार की सात
रोटियाँ, और न यह कि कितने टोकरे
उठाए गए थे?**
11 **तुम क्यों नहीं समझते कि मैंने
तुम से रोटियों के विषय में नहीं कहा?
परन्तु फरीसियों और सदूकियों के
ख़मीर से सावधान रहना।”**
12 तब उनको समझ में आया, कि
उसने रोटी के ख़मीर से नहीं, पर
फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से
सावधान रहने को कहा था।

[illegible]

13 यीशु *[illegible]*†
के प्रदेश में आकर अपने चेलों से पूछने
लगा, **“लोग मनुष्य के पुत्र को क्या
कहते हैं?”**
14 उन्होंने कहा, “कुछ तो यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं और कुछ
एलिय्याह, और कुछ यिर्मयाह या
भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते
हैं।”
15 उसने उनसे कहा, **“परन्तु तुम
मुझे क्या कहते हो?”**
16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, “तू
जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है।”
17 यीशु ने उसको उत्तर दिया, **“हे
शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है;
क्योंकि माँस और लहू ने नहीं, परन्तु
मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात
तुझ पर प्रगट की है।**
18 **और मैं भी तुझ से कहता हूँ,
कि तू** *[illegible]* ‡**है, और मैं इस पत्थर
पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और
अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न
होंगे।**
19 **मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की
कुंजियाँ दूँगा: और जो कुछ तू पृथ्वी
पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बँधेगा; और
जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह
स्वर्ग में खुलेगा।”**
20 तब उसने चेलों को चेतावनी दी,
**“किसी से न कहना! कि मैं मसीह
हूँ।”**

[illegible]

21 उस समय से यीशु अपने चेलों
को बताने लगा, **“मुझे अवश्य है, कि
यरूशलेम को जाऊँ, और प्राचीनों
और प्रधान याजकों और शास्त्रियों
के हाथ से बहुत दुःख उठाऊँ; और
मार डाला जाऊँ; और तीसरे दिन जी
उठूँ।”**

† **16:13** *[illegible]:* गलील के सागर के उत्तर में 25 मील और हेर्मोन पर्वत के आधार पर स्थित। ‡ **16:18** *[illegible]:* यूनानी में, चट्टान के एक टुकड़े के लिये पेत्रोस शब्द का इस्तेमाल होता हैं। पतरस 12 प्रेरितों में प्रमुख था।

22 इस पर पतरस उसे अलग ले
जाकर डाँटने लगा, "हे प्रभु, परमेश्वर
न करे! तुझ पर ऐसा कभी न होगा।"
23 उसने फिरकर पतरस से कहा, **"हे
शैतान, मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे
लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू
परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की
बातों पर मन लगाता है।"**

[illegible]

24 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा,
**"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो
अपने आपका इन्कार करे और अपना
क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।**
25 **क्योंकि जो कोई अपना प्राण
बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और
जो कोई मेरे लिये अपना प्राण
खोएगा, वह उसे पाएगा।**
26 **यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त
करे, और अपने प्राण की हानि उठाए,
तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य
अपने प्राण के बदले में क्या देगा?**
27 **मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों
के साथ अपने पिता की महिमा में
आएगा, और उस समय 'वह हर एक
को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल
देगा।'**
28 **मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो
यहाँ खड़े हैं, उनमें से कितने ऐसे हैं, कि
जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य
में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु
का स्वाद कभी न चखेंगे।"**

17

[illegible]

1 छः दिन के बाद यीशु ने पतरस
और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को
साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी
ऊँचे पहाड़ पर ले गया।
2 और वहाँ उनके सामने उसका
रूपान्तरण हुआ और उसका मुँह सूर्य
के समान चमका और उसका वस्त्र
ज्योति के समान उजला हो गया।
3 और *[illegible]**
उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई
दिए।
4 इस पर पतरस ने यीशु से कहा, "हे
प्रभु, हमारा यहाँ रहना अच्छा है; यदि
तेरी इच्छा हो तो मैं यहाँ तीन तम्बू
बनाऊँ; एक तेरे लिये, एक मूसा के
लिये, और एक एलिय्याह के लिये।"
5 वह बोल ही रहा था, कि एक उजले
बादल ने उन्हें छा लिया, और उस
बादल में से यह शब्द निकला, "यह
मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ:
इसकी सुनो।"
6 चेले यह सुनकर मुँह के बल गिर
गए और अत्यन्त डर गए।
7 यीशु ने पास आकर उन्हें छुआ,
और कहा, **"उठो, डरो मत।"**
8 तब उन्होंने अपनी आँखें उठाकर
यीशु को छोड़ और किसी को न देखा।
9 जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब
यीशु ने उन्हें यह निर्देश दिया, **"जब
तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न
जी उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा
है किसी से न कहना।"**
10 और उसके चेलों ने उससे पूछा,
"फिर शास्त्री क्यों कहते हैं, कि
एलिय्याह का पहले आना अवश्य
है?"
11 उसने उत्तर दिया, **"एलिय्याह
तो अवश्य आएगा और सब कुछ
सुधारेगा।**

* **17:3** *[illegible]*: मूसा इस्राएल के महान अगुओं में से एक था जिसने इस्राएलियों को मिस्र देश से बाहर निकालने की अगुआई की थी। एलिय्याह पुराने नियम में एक भविष्यद्वक्ता था जिसने मूर्तियों की पूजा का विरोध किया।

12 **परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, कि[illegible];[†]और उन्होंने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया।[illegible][‡]मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथ से दुःख उठाएगा।"**

13 तब चेलों ने समझा कि उसने हम से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कहा है।

[illegible]

14 जब वे भीड़ के पास पहुँचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया, और घुटने टेककर कहने लगा।

15 "हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर! क्योंकि उसको मिर्गी आती है, और वह बहुत दुःख उठाता है; और बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है।

16 और मैं उसको तेरे चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके।"

17 यीशु ने उत्तर दिया, **"हे अविश्वासी और हठीले लोगों, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक तुम्हारी सहूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।"**

18 तब यीशु ने उसे डाँटा, और दुष्टात्मा उसमें से निकला; और लड़का उसी समय अच्छा हो गया।

19 तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा, "हम इसे क्यों नहीं निकाल सके?"

20 उसने उनसे कहा, **"अपने विश्वास की कमी के कारण: क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम्हारा विश्वास[illegible][§]भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, 'यहाँ से सरककर वहाँ चला जा', तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिये अनहोनी न होगी।**

21 **[पर यह जाति बिना प्रार्थना और उपवास के नहीं निकलती।]"**

[illegible]

22 जब वे गलील में थे, तो यीशु ने उनसे कहा, **"मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा।**

23 **और वे उसे मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा।"** इस पर वे बहुत उदास हुए।

[illegible]

24 जब वे कफरनहूम में पहुँचे, तो मन्दिर के लिये कर लेनेवालों ने पतरस के पास आकर पूछा, "क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता?"

25 उसने कहा, "हाँ, देता है।" जब वह घर में आया, तो यीशु ने उसके पूछने से पहले उससे कहा, **"हे शमौन तू क्या समझता है? पृथ्वी के राजा चुंगी या कर किन से लेते हैं? अपने पुत्रों से या परायों से?"**

26 पतरस ने उनसे कहा, "परायों से।" यीशु ने उससे कहा, **"तो पुत्र बच गए।**

27 **फिर भी हम उन्हें ठोकर न खिलाएँ, तू झील के किनारे जाकर बंसी डाल, और जो मछली पहले निकले, उसे ले; तो तुझे उसका मुँह खोलने पर एक सिक्का मिलेगा, उसी**

[†] **17:12** *[illegible]:* यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बारे में चर्चा करते हुए जो एलिय्याह की आत्मा और शक्ति में आया था [‡] **17:12** *[illegible]:* जिस तरह से वे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को अस्वीकार और अन्त में मार डालने के द्वारा उसके साथ व्यवहार किया, उसी रीति से मसीह भी अस्वीकार और मार डाला जाएगा [§] **17:20** *[illegible]:* उनका कहने का मतलब है कि यदि आपको वास्तविक छोटे से छोटा या मन्द विश्वास हैं तो आप सब कुछ कर सकते हैं। सभी जड़ी बूटियों से सबसे बड़ा सरसों का बीज उत्पादन करता हैं।

को लेकर मेरे और अपने बदले उन्हें दे
देना।"

18

[illegible]?

1 उसी समय चेले यीशु के पास
आकर पूछने लगे, "स्वर्ग के राज्य में
बड़ा कौन है?"
2 इस पर उसने एक बालक को पास
बुलाकर उनके बीच में खड़ा किया,
3 और कहा, **"मैं तुम से सच कहता
हूँ, यदि तुम न फिरो और बालकों के
समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में
प्रवेश नहीं कर पाओगे।
4 जो कोई अपने आपको इस बालक
के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के
राज्य में बड़ा होगा।
5 और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे
बालक को ग्रहण करता है वह मुझे
ग्रहण करता है।**

[illegible]

**6 "पर जो कोई इन छोटों में से
जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक
को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला
होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके
गले में लटकाया जाता, और वह गहरे
समुद्र में डुबाया जाता।
7 ठोकरों के कारण संसार पर हाय!
ठोकरों का लगना अवश्य है; पर हाय
उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर
लगती है।
8 "यदि तेरा हाथ या तेरा पाँव
तुझे ठोकर खिलाए, तो काटकर फेंक
दे; टुण्डा या लँगड़ा होकर जीवन में
प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है,
कि दो हाथ या दो पाँव रहते हुए तू
अनन्त आग में डाला जाए।
9 और यदि तेरी आँख तुझे ठोकर
खिलाए, तो उसे निकालकर फेंक दे।
काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे
लिये इससे भला है, कि दो आँख रहते
हुए तू नरक की आग में डाला जाए।**

[illegible]

**10 "देखो, तुम इन छोटों में से
किसी को तुच्छ न जानना; क्योंकि
मैं तुम से कहता हूँ, कि स्वर्ग में उनके
स्वर्गदूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुँह
सदा देखते हैं।
11 [क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए
हुओं को बचाने आया है।]
12 "तुम क्या समझते हो? यदि
किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और
उनमें से एक भटक जाए, तो क्या
निन्यानवे को छोड़कर, और पहाड़ों
पर जाकर, उस भटकी हुई को न
ढूँढ़ेगा?
13 और यदि ऐसा हो कि उसे पाए,
तो मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वह
उन निन्यानवे भेड़ों के लिये जो भटकी
नहीं थीं इतना आनन्द नहीं करेगा,
जितना कि इस भेड़ के लिये करेगा।
14 ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो
स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं, कि इन
छोटों में से एक भी नाश हो।**

[illegible]

**15 "यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध
अपराध करे, तो जा और अकेले में
बातचीत करके उसे समझा; यदि वह
तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा
लिया।
16 और यदि वह न सुने, तो और एक
दो जन को अपने साथ ले जा, कि हर
एक बात दो या तीन गवाहों के मुँह से
ठहराई जाए।
17 यदि वह उनकी भी न माने,
तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि
वह कलीसिया की भी न माने, तो तू**

उसे अन्यजाति और चुंगी लेनेवाले के
जैसा जान।

[illegible]

18 “मैं तुम से सच कहता हूँ, जो
कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे, वह स्वर्ग
पर बँधेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर
खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।
19 फिर मैं तुम से कहता हूँ, यदि
तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात
के लिये जिसे वे माँगें, एक मन के हों,
तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग
में है उनके लिये हो जाएगी।
20 क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे
नाम पर इकट्ठे होते हैं वहाँ मैं उनके
बीच में होता हूँ।”

[illegible]

21 तब पतरस ने पास आकर, उससे
कहा, “हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध
करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा
करूँ, क्या सात बार तक?”
22 यीशु ने उससे कहा, “मैं
तुझ से यह नहीं कहता, कि सात
बार, वरन् [illegible][*] तक।
23 “इसलिए स्वर्ग का राज्य उस
राजा के समान है, जिसने अपने दासों
से लेखा लेना चाहा।
24 जब वह लेखा लेने लगा, तो एक
जन उसके सामने लाया गया जो दस
हजार तोड़े का कर्जदार था।
25 जबकि चुकाने को उसके पास
कुछ न था, तो उसके स्वामी ने कहा,
कि यह और इसकी पत्नी और बाल-
बच्चे और जो कुछ इसका है सब बेचा
जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए।
26 इस पर उस दास ने गिरकर उसे
प्रणाम किया, और कहा, ‘हे स्वामी,
धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूँगा।’
27 तब उस दास के स्वामी ने तरस
खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका
कर्ज क्षमा किया।
28 “परन्तु जब वह दास बाहर
निकला, तो उसके संगी दासों में
से एक उसको मिला, जो उसके [illegible][†] का कर्जदार था; उसने उसे
पकड़कर उसका गला घोंटा और कहा,
‘जो कुछ तुझ पर कर्ज है भर दे।’
29 इस पर उसका संगी दास
गिरकर, उससे विनती करने लगा; कि
धीरज धर मैं सब भर दूँगा।
30 उसने न माना, परन्तु जाकर उसे
बन्दीगृह में डाल दिया; कि जब तक
कर्ज को भर न दे, तब तक वहीं रहे।
31 उसके संगी दास यह जो हुआ
था देखकर बहुत उदास हुए, और
जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल
बता दिया।
32 तब उसके स्वामी ने उसको
बुलाकर उससे कहा, ‘हे दुष्ट दास, तूने
जो मुझसे विनती की, तो मैंने तो तेरा
वह पूरा कर्ज क्षमा किया।
33 इसलिए जैसा मैंने तुझ पर दया
की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी
दास पर दया करना नहीं चाहिए था?’
34 और उसके स्वामी ने क्रोध में
आकर उसे दण्ड देनेवालों के हाथ में
सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्जा
भर न दे, तब तक उनके हाथ में रहे।
35 “इसी प्रकार यदि तुम में से हर
एक अपने भाई को मन से क्षमा न
करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है,
तुम से भी वैसा ही करेगा।”

---

[*] **18:22** *[illegible]:* अर्थात् जब तक क्षमा माँगने की आवश्यकता हो, आपको ऐसी स्थिति में कभी नहीं होना है कि सत्यनिष्ठा में जो क्षमा माँगी जा रही है उससे विमुख हों। (लूका. 17:3, 4) [†] **18:28** *[illegible]:* एक दीनार (या “पैसा”) जो कि एक कृषि कार्यकर्ता को आमतौर पर एक दिन के श्रम के लिए भुगतान किया गया था।

19

[illegible]

1 जब यीशु ये बातें कह चुका, तो
गलील से चला गया; और यहूदिया के
प्रदेश में यरदन के पार आया।
2 और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली,
और उसने उन्हें वहाँ चंगा किया।

3 तब फरीसी उसकी परीक्षा करने के
लिये पास आकर कहने लगे, “क्या हर
एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना
उचित है?”
4 उसने उत्तर दिया, **“क्या तुम ने
नहीं पढ़ा, कि जिसने उन्हें बनाया,
उसने आरम्भ से नर और नारी बनाकर
कहा,**

5 **‘इस कारण मनुष्य अपने माता
पिता से अलग होकर अपनी पत्नी
के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन
होंगे?’**
6 **अतः वे अब दो नहीं, परन्तु
एक तन हैं इसलिए जिसे परमेश्वर ने
जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।”**
7 उन्होंने यीशु से कहा, “फिर मूसा
ने क्यों यह ठहराया, कि त्यागपत्र
देकर उसे छोड़ दे?”
8 उसने उनसे कहा, **“मूसा ने तुम्हारे
मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी
पत्नी को छोड़ देने की अनुमति दी,
परन्तु आरम्भ में ऐसा नहीं था।**
9 **और मैं तुम से कहता हूँ, कि जो
कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी
कारण से अपनी पत्नी को त्याग कर,
दूसरी से विवाह करे, वह व्यभिचार
करता है: और जो उस छोड़ी हुई से
विवाह करे, वह भी व्यभिचार करता
है।”**

10 चेलों ने उससे कहा, “यदि पुरुष
का स्त्री के साथ ऐसा सम्बंध है, तो
विवाह करना अच्छा नहीं।”
11 उसने उनसे कहा, **“सब यह
वचन ग्रहण नहीं कर सकते, केवल वे
जिनको यह दान दिया गया है।**
12 **क्योंकि कुछ नपुंसक ऐसे हैं जो
माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे; और
कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य ने
नपुंसक बनाया: और कुछ नपुंसक
ऐसे हैं, जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के
लिये अपने आपको नपुंसक बनाया है,
जो इसको ग्रहण कर सकता है, वह
ग्रहण करे।”**

[illegible]

13 तब लोग बालकों को उसके पास
लाए, कि वह उन पर हाथ रखे और
प्रार्थना करे; पर चेलों ने उन्हें डाँटा।
14 यीशु ने कहा, **“बालकों को मेरे
पास आने दो, और उन्हें मना न करो,
क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का
है।”**
15 और वह उन पर हाथ रखकर, वहाँ
से चला गया।

[illegible]

16 और एक मनुष्य ने पास आकर
उससे कहा, “हे गुरु, मैं कौन सा भला
काम करूँ, कि अनन्त जीवन पाऊँ?”
17 उसने उससे कहा, **“तू मुझसे
भलाई के विषय में क्यों पूछता है?
भला तो एक ही है; पर यदि तू जीवन
में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं
को माना कर।”**
18 उसने उससे कहा, “कौन सी
आज्ञाएँ?” यीशु ने कहा,

* **19:19** *[illegible]:* इसका मतलब सभी व्यक्तियों से प्रेम रखना, हर जगह न कि सिर्फ हमारे नजदीकी लोगों से, जिसमें हमारे दुश्मन भी शामिल है।

“यह कि हत्या न करना, व्यभिचार
न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही
न देना;
19 अपने पिता और अपनी माता
का आदर करना, और अपने [illegible]
[illegible]”*
20 उस जवान ने उससे कहा, “इन
सब को तो मैंने माना है अब मुझ में
किस बात की कमी है?”
21 यीशु ने उससे कहा, “यदि
तू [illegible]† होना चाहता है; तो जा,
अपना सब कुछ बेचकर गरीबों को
बाँट दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा;
और आकर मेरे पीछे हो ले।”
22 परन्तु वह जवान यह बात सुन
उदास होकर चला गया, क्योंकि वह
बहुत धनी था।
23 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा,
“मैं तुम से सच कहता हूँ, कि धनवान
का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना
कठिन है।
24 फिर तुम से कहता हूँ, कि
परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश
करने से ऊँट का सूई के नाके में से
निकल जाना सहज है।”
25 यह सुनकर, चेलों ने बहुत चकित
होकर कहा, “फिर किसका उद्धार हो
सकता है?”
26 यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा,
“मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता,
परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता
है।”
27 इस पर पतरस ने उससे कहा,
“देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे
पीछे हो लिये हैं तो हमें क्या मिलेगा?”
28 यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम
से सच कहता हूँ, कि नई उत्पत्ति में
जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा
के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी
जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह
सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के
बारह गोत्रों का न्याय करोगे।
29 और जिस किसी ने घरों या
भाइयों या बहनों या पिता या माता
या बाल-बच्चों या खेतों को मेरे नाम
के लिये छोड़ दिया है, उसको सौ गुना
मिलेगा, और वह अनन्त जीवन का
अधिकारी होगा।
30 परन्तु बहुत सारे जो पहले हैं,
पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहले
होंगे।

20

[illegible]

1 “स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ
के समान है, जो सवेरे निकला, कि
अपनी दाख की बारी में मजदूरों को
लगाए।
2 और उसने मजदूरों से एक दीनार
रोज पर ठहराकर, उन्हें अपने दाख की
बारी में भेजा।
3 [illegible]* एक दिन चढ़े,
निकलकर, अन्य लोगों को बाजार
में बेकार खड़े देखा,
4 और उनसे कहा, ‘तुम भी दाख की
बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है,
तुम्हें दूँगा।’ तब वे भी गए।
5 फिर उसने दूसरे और तीसरे पहर
के निकट निकलकर वैसा ही किया।
6 और एक घंटा दिन रहे फिर
निकलकर दूसरों को खड़े पाया, और
उनसे कहा ‘तुम क्यों यहाँ दिन भर
बेकार खड़े रहे?’ उन्होंने उससे कहा,
‘इसलिए, कि किसी ने हमें मजदूरी पर
नहीं लगाया।’

† 19:21 [illegible]: “सिद्ध” शब्द का अर्थ सभी भागो में पूर्ण, सम्पूर्ण, लेशमात्र भी कमी न रह जाए।
* 20:3 [illegible]: सुबह 9 बजे के रूप में।

7 **उसने उनसे कहा, 'तुम भी दाख की बारी में जाओ।'**

8 **"साँझ को दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, 'मजदूरों को बुलाकर पिछले से लेकर पहले तक उन्हें मजदूरी दे दे।'**

9 **जब वे आए, जो घंटा भर दिन रहे लगाए गए थे, तो उन्हें एक-एक दीनार मिला।**

10 **जो पहले आए, उन्होंने यह समझा, कि हमें अधिक मिलेगा; परन्तु उन्हें भी एक ही एक दीनार मिला।**

11 **जब मिला, तो वह गृह स्वामी पर कुड़कुड़ा के कहने लगे,**

12 **'इन पिछलों ने एक ही घंटा काम किया, और तूने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जिन्होंने दिन भर का भार उठाया और धूप सही?'**

13 **उसने उनमें से एक को उत्तर दिया, 'हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तूने मुझसे एक दीनार न ठहराया?**

14 **जो तेरा है, उठा ले, और चला जा; मेरी इच्छा यह है कि जितना तुझे, उतना ही इस पिछले को भी दूँ।**

15 **क्या यह उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूँ वैसा करूँ? क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है?'**

16 **इस प्रकार[illegible][†]और जो प्रथम हैं वे अन्तिम हो जाएँगे।"**

[illegible]

17 यीशु यरूशलेम को जाते हुए बारह चेलों को एकान्त में ले गया, और मार्ग में उनसे कहने लगा।

18 **"देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं; और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा और वे उसको घात के योग्य ठहराएँगे।**

19 **और उसको अन्यजातियों के हाथ सौंपेंगे, कि वे उसे उपहास में उड़ाएँ, और कोड़े मारें, और क्रूस पर चढ़ाएँ, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा।"**

[illegible]

20 तब जब्दी के पुत्रों की माता ने अपने पुत्रों के साथ उसके पास आकर प्रणाम किया, और उससे कुछ माँगने लगी।

21 उसने उससे कहा, **"तू क्या चाहती है?"** वह उससे बोली, "यह कह, कि मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दाहिने और एक तेरे बाएँ बैठे।"

22 यीशु ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो। जो [illegible][‡] पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो?" उन्होंने उससे कहा, "पी सकते हैं।"

23 उसने उनसे कहा, **"तुम मेरा कटोरा तो पीओगे पर अपने दाहिने बाएँ किसी को बैठाना मेरा काम नहीं, पर जिनके लिये मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया, उन्हीं के लिये है।"**

24 यह सुनकर, दसों चेले उन दोनों भाइयों पर क्रुद्ध हुए।

25 यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, **"तुम जानते हो, कि अन्यजातियों के**

[†] **20:16** *[illegible]:* यह इस दृष्टान्त की नैतिक या व्यापकता है। बहुत से लोग समय के क्रमा अनुसार, स्वर्ग राज्य में अन्त में लाए गये, पुरस्कार में प्रथम होंगे। दूसरों की तुलना में उन्हें उच्चतम आनुपातिक पुरस्कार दिया जाएगा [‡] **20:22** *[illegible]:* मसीह की पीड़ा का उल्लेख करता हैं (यिर्म. 25:15, यहेजकेल 23: 31-32)

अधिपति उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं।

26 **परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने;**

27 **और जो तुम में प्रधान होना चाहे वह तुम्हारा दास बने;**

28 **जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि अपनी सेवा करवाए, परन्तु इसलिए आया कि सेवा करे और बहुतों के छुटकारे के लिये अपने प्राण दे।"**

[illegible]

29 जब वे [illegible]§ से निकल रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।

30 और दो अंधे, जो सड़क के किनारे बैठे थे, यह सुनकर कि यीशु जा रहा है, पुकारकर कहने लगे, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।"

31 लोगों ने उन्हें डाँटा, कि चुप रहें, पर वे और भी चिल्लाकर बोले, "हे प्रभु, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।"

32 तब यीशु ने खड़े होकर, उन्हें बुलाया, और कहा, **"तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूँ?"**

33 उन्होंने उससे कहा, "हे प्रभु, यह कि हमारी आँखें खुल जाएँ।"

34 यीशु ने तरस खाकर उनकी आँखें छूई, और वे तुरन्त देखने लगे; और उसके पीछे हो लिए।

21

[illegible]

1 जब वे यरूशलेम के निकट पहुँचे और जैतून पहाड़ पर बैतफगे के पास आए, तो यीशु ने दो चेलों को यह कहकर भेजा,

2 **"अपने सामने के गाँव में जाओ, वहाँ पहुँचते ही एक गदही बंधी हुई, और उसके साथ बच्चा तुम्हें मिलेगा; उन्हें खोलकर, मेरे पास ले आओ।**

3 **यदि तुम से कोई कुछ कहे, तो कहो, कि प्रभु को इनका प्रयोजन है: तब वह तुरन्त उन्हें भेज देगा।"**

4 यह इसलिए हुआ, कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो:

5 "सिय्योन की बेटी से कहो,
'देख, तेरा राजा तेरे पास आता है;
वह नम्र है और गदहे पर बैठा है;
वरन् लादू के बच्चे पर।' "

6 चेलों ने जाकर, जैसा यीशु ने उनसे कहा था, वैसा ही किया।

7 और गदही और बच्चे को लाकर, उन पर अपने कपड़े डाले, और वह उन पर बैठ गया।

8 और बहुत सारे लोगों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए, और लोगों ने पेड़ों से डालियाँ काटकर मार्ग में बिछाई।

9 और जो भीड़ आगे-आगे जाती और पीछे-पीछे चली आती थी, पुकार पुकारकर कहती थी, "दाऊद के सन्तान को होशाना; धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है, आकाश में होशाना।"

10 जब उसने यरूशलेम में प्रवेश किया, तो सारे नगर में हलचल मच गई; और लोग कहने लगे, "यह कौन है?"

11 लोगों ने कहा, "यह गलील के नासरत का भविष्यद्वक्ता यीशु है।"

[illegible]

§ **20:29** [illegible]: पश्चिमी तट पर यरदन नदी के निकट स्थित एक शहर है

12 यीशु ने [illegible] [illegible]
[illegible]* में जाकर, उन सब को, जो
मन्दिर में लेन-देन कर रहे थे, निकाल
दिया; और सर्राफों के मेजें और
कबूतरों के बेचनेवालों की चौकियाँ
उलट दीं।
13 और उनसे कहा, **“लिखा है, ‘मेरा
घर प्रार्थना का घर कहलाएगा’; परन्तु
तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो।”**
14 और अंधे और लँगड़े, मन्दिर में
उसके पास आए, और उसने उन्हें चंगा
किया।
15 परन्तु जब प्रधान याजकों और
शास्त्रियों ने इन अद्भुत कामों को,
जो उसने किए, और लड़कों को मन्दिर
में दाऊद की सन्तान को होशाना
पुकारते हुए देखा, तो क्रोधित हुए,
16 और उससे कहने लगे, “क्या तू
सुनता है कि ये क्या कहते हैं?” यीशु
ने उनसे कहा, **“हाँ;**

क्या तुम ने यह कभी नहीं पढ़ा:

‘बालकों और दूध पीते बच्चों के मुँह
से तूने स्तुति सिद्ध कराई?’ ”

17 तब वह उन्हें छोड़कर नगर के बाहर
[illegible]† को गया, और वहाँ
रात बिताई।

[illegible]

18 भोर को जब वह नगर को लौट
रहा था, तो उसे भूख लगी।
19 और अंजीर के पेड़ को सड़क के
किनारे देखकर वह उसके पास गया,
और पत्तों को छोड़ उसमें और कुछ न
पाकर उससे कहा, **“अब से तुझ में फिर
कभी फल न लगे।”** और अंजीर का
पेड़ तुरन्त सूख गया।
20 यह देखकर चेलों ने अचम्भा
किया, और कहा, “यह अंजीर का पेड़
तुरन्त कैसे सूख गया?”
21 यीशु ने उनको उत्तर दिया, **“मैं
तुम से सच कहता हूँ; यदि तुम
विश्वास रखो, और सन्देह न करो; तो
न केवल यह करोगे, जो इस अंजीर
के पेड़ से किया गया है; परन्तु यदि
इस पहाड़ से भी कहोगे, कि उखड़
जा, और समुद्र में जा पड़, तो यह हो
जाएगा।**
22 **और जो कुछ तुम प्रार्थना में
विश्वास से माँगोगे वह सब तुम को
मिलेगा।”**

[illegible]

23 वह मन्दिर में जाकर उपदेश कर
रहा था, कि प्रधान याजकों और लोगों
के प्राचीनों ने उसके पास आकर पूछा,
“तू ये काम किसके अधिकार से करता
है? और तुझे यह अधिकार किसने
दिया है?”
24 यीशु ने उनको उत्तर दिया, **“मैं
भी तुम से एक बात पूछता हूँ; यदि
वह मुझे बताओगे, तो मैं भी तुम्हें
बताऊँगा कि ये काम किस अधिकार
से करता हूँ।**
25 **यूहन्ना का बपतिस्मा कहाँ से
था? स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की
ओर से था?”** तब वे आपस में विवाद
करने लगे, “यदि हम कहें ‘स्वर्ग की
ओर से’, तो वह हम से कहेगा, ‘फिर
तुम ने उसका विश्वास क्यों न किया?’
26 और यदि कहें ‘मनुष्यों की ओर
से’, तो हमें भीड़ का डर है, क्योंकि

---

* **21:12** [illegible]: मन्दिर के प्रांगण में व्यापार को चलते हुए देखकर यीशु ने यह कहा, “परमेश्वर का मन्दिर,” जो कि यह मन्दिर परमेश्वर की सेवा के लिये, समर्पित और अर्पित हैं।
† **21:17** [illegible]: बैतनिय्याह इब्रानी (बेत-ते-एनाह) से लिया गया हैं जिसका अर्थ हैं “अंजीर का घर” बैतनिय्याह के नगर में लाज़र और उसकी बहन मरियम और मार्था का घर था।

वे सब यूहन्ना को भविष्यद्वक्ता मानते
हैं।”
27 अत: उन्होंने यीशु को उत्तर
दिया, “हम नहीं जानते।” उसने भी
उनसे कहा, **“तो मैं भी तुम्हें नहीं
बताता, कि ये काम किस अधिकार से
करता हूँ।**

[illegible]

28 **“तुम क्या समझते हो? किसी
मनुष्य के दो पुत्र थे; उसने पहले के
पास जाकर कहा, ‘हे पुत्र, आज दाख
की बारी में काम कर।’**
29 **उसने उत्तर दिया, ‘मैं नहीं
जाऊँगा’, परन्तु बाद में उसने अपना
मन बदल दिया और चला गया।**
30 **फिर दूसरे के पास जाकर ऐसा
ही कहा, उसने उत्तर दिया, ‘जी हाँ
जाता हूँ’, परन्तु नहीं गया।**
31 **इन दोनों में से किसने पिता की
इच्छा पूरी की?”** उन्होंने कहा, “पहले
ने।” यीशु ने उनसे कहा, **“मैं तुम से
सच कहता हूँ, कि चुंगी लेनेवाले और
वेश्या तुम से पहले परमेश्वर के राज्य
में प्रवेश करते हैं।**
32 **क्योंकि यूहन्ना धार्मिकता के
मार्ग से तुम्हारे पास आया, और
तुम ने उस पर विश्वास नहीं किया:
पर चुंगी लेनेवालों और वेश्याओं ने
उसका विश्वास किया: और तुम यह
देखकर बाद में भी न पछताए कि
उसका विश्वास कर लेते।**

[illegible]

33 **“एक और दृष्टान्त सुनो एक
गृहस्थ था, जिसने दाख की बारी
लगाई; और उसके चारों ओर बाड़ा
बाँधा; और उसमें रस का कुण्ड खोदा;
और गुम्मट बनाया; और किसानों को
उसका ठेका देकर परदेश चला गया।**
34 **जब फल का समय निकट आया,
तो उसने अपने दासों को उसका फल
लेने के लिये किसानों के पास भेजा।**
35 **पर किसानों ने उसके दासों को
पकड़ के, किसी को पीटा, और किसी
को मार डाला; और किसी को पथराव
किया।**
36 **फिर उसने और दासों को भेजा,
जो पहले से अधिक थे; और उन्होंने
उनसे भी वैसा ही किया।**
37 **अन्त में उसने अपने पुत्र को
उनके पास यह कहकर भेजा, कि वे मेरे
पुत्र का आदर करेंगे।**
38 **परन्तु किसानों ने पुत्र को देखकर
आपस में कहा, ‘यह तो वारिस है,
आओ, उसे मार डालें: और उसकी
विरासत ले लें।’**
39 **और उन्होंने उसे पकड़ा और
दाख की बारी से बाहर निकालकर
मार डाला।**
40 **“इसलिए जब दाख की बारी का
स्वामी आएगा, तो उन किसानों के
साथ क्या करेगा?”**
41 उन्होंने उससे कहा, “वह उन बुरे
लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा;
और दाख की बारी का ठेका और
किसानों को देगा, जो समय पर उसे
फल दिया करेंगे।”
42 यीशु ने उनसे कहा, **“क्या तुम ने
कभी पवित्रशास्त्र में यह नहीं पढ़ा:
‘जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने
बेकार समझा था,
वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया
यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारे
देखने में अद्भुत है।?’**
43 **“इसलिए मैं तुम से कहता हूँ,
कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले
लिया जाएगा; और ऐसी जाति को
जो उसका फल लाए, दिया जाएगा।**
44 **जो इस पत्थर पर गिरेगा, वह
चकनाचूर हो जाएगा: और जिस पर
वह गिरेगा, उसको पीस डालेगा।”**

45 प्रधान याजक और फरीसी उसके दृष्टान्तों को सुनकर समझ गए, कि वह हमारे विषय में कहता है।

46 और उन्होंने उसे पकड़ना चाहा, परन्तु लोगों से डर गए क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता मानते थे।

22

[illegible]

1 इस पर यीशु फिर उनसे दृष्टान्तों में कहने लगा।

2 **“स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिसने अपने पुत्र का विवाह किया।**

3 **और उसने अपने दासों को भेजा, कि निमंत्रित लोगों को विवाह के भोज में बुलाएँ; परन्तु उन्होंने आना न चाहा।**

4 **फिर उसने और दासों को यह कहकर भेजा, ‘निमंत्रित लोगों से कहो: देखो, मैं भोज तैयार कर चुका हूँ, और मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए हैं और सब कुछ तैयार है; विवाह के भोज में आओ।’**

5 **परन्तु वे उपेक्षा करके चल दिए: कोई अपने खेत को, कोई अपने व्यापार को।**

6 **अन्य लोगों ने जो बच रहे थे उसके दासों को पकड़कर उनका अनादर किया और मार डाला।**

7 **तब राजा को क्रोध आया, और उसने अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों को नाश किया, और उनके नगर को फूँक दिया।**

8 **तब उसने अपने दासों से कहा, ‘विवाह का भोज तो तैयार है, परन्तु निमंत्रित लोग योग्य न ठहरे।**

9 **इसलिए चौराहों में जाओ, और जितने लोग तुम्हें मिलें, सब को विवाह के भोज में बुला लाओ।’**

10 **अतः उन दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे, क्या भले, जितने मिले, सब को इकट्ठा किया; और विवाह का घर अतिथियों से भर गया।**

11 **“जब राजा अतिथियों को देखने को भीतर आया; तो उसने वहाँ एक मनुष्य को देखा, जो** [illegible]*

12 **उसने उससे पूछा, ‘हे मित्र; तू विवाह का वस्त्र पहने बिना यहाँ क्यों आ गया?’ और वह मनुष्य चुप हो गया।**

13 **तब राजा ने सेवकों से कहा, ‘इसके हाथ-पाँव बाँधकर उसे बाहर अंधियारे में डाल दो, वहाँ रोना, और दाँत पीसना होगा।’**

14 **क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।”**

[illegible]

15 तब फरीसियों ने जाकर आपस में विचार किया, कि उसको किस प्रकार बातों में फँसाएँ।

16 अतः उन्होंने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उसके पास यह कहने को भेजा, “हे गुरु, हम जानते हैं, कि तू सच्चा है, और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है, और किसी की परवाह नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुँह देखकर बातें नहीं करता।

17 इसलिए हमें बता तू क्या समझता है? कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं।”

18 यीशु ने उनकी दुष्टता जानकर कहा, **“हे कपटियों, मुझे क्यों परखते हो?**

---

* **22:11** *[illegible]:* विवाह का वस्त्र देना यह मेजबान अतिथियों के लिये एक रिवाज था और विवाह का वस्त्र नहीं पहने हुए अतिथि मेजबान के लिये एक अपमान के रूप में माना जाता था।

19 **कर का सिक्का मुझे दिखाओ।"**
तब वे उसके पास एक दीनार ले आए।
20 उसने, उनसे पूछा, **"यह आकृति
और नाम किसका है?"**
21 उन्होंने उससे कहा, "कैसर का।"
तब उसने उनसे कहा, **"जो कैसर का है,
वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है,
वह परमेश्वर को दो।"**
22 यह सुनकर उन्होंने अचम्भा
किया, और उसे छोड़कर चले गए।

[illegible]

23 उसी दिन सदूकी जो कहते हैं
कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं
उसके पास आए, और उससे पूछा,
24 "हे गुरु, मूसा ने कहा था, कि
यदि कोई बिना सन्तान मर जाए, तो
उसका भाई उसकी पत्नी को विवाह
करके अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न
करे।
25 अब हमारे यहाँ सात भाई थे;
पहला विवाह करके मर गया; और
सन्तान न होने के कारण अपनी पत्नी
को अपने भाई के लिये छोड़ गया।
26 इसी प्रकार दूसरे और तीसरे ने भी
किया, और सातों तक यही हुआ।
27 सब के बाद वह स्त्री भी मर गई।
28 अत: जी उठने पर वह उन सातों
में से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वह
सब की पत्नी हो चुकी थी।"
29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया,
**"तुम पवित्रशास्त्र और परमेश्वर की
सामर्थ्य नहीं जानते; इस कारण भूल
में पड़ गए हो।**
30 **क्योंकि जी उठने पर विवाह-
शादी न होगी; परन्तु वे स्वर्ग में दूतों
के समान होंगे।**
31 **परन्तु मरे हुओं के जी उठने के
विषय में क्या तुम ने यह वचन नहीं
पढ़ा जो परमेश्वर ने तुम से कहा:**
32 **'मैं अब्राहम का परमेश्वर, और
इसहाक का परमेश्वर, और याकूब
का परमेश्वर हूँ?' वह तो मरे हुओं
का नहीं, परन्तु जीवितों का परमेश्वर
है।"**
33 यह सुनकर लोग उसके उपदेश
से चकित हुए।

[illegible]

34 जब फरीसियों ने सुना कि यीशु
ने सदूकियों का मुँह बन्द कर दिया; तो
वे इकट्ठे हुए।
35 और उनमें से एक व्यवस्थापक ने
परखने के लिये, उससे पूछा,
36 "हे गुरु, व्यवस्था में कौन सी
आज्ञा बड़ी है?"
37 उसने उससे कहा, "*[illegible]*"†
38 **बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही
है।**
39 **और उसी के समान यह दूसरी
भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने
समान प्रेम रख।**
40 **ये ही दो आज्ञाएँ सारी *[illegible]*‡ का
आधार हैं।"**

[illegible]?

41 जब फरीसी इकट्ठे थे, तो यीशु ने
उनसे पूछा,
42 **"मसीह के विषय में तुम क्या
समझते हो? वह किसकी सन्तान**

---

† **22:37** *[illegible] .... [illegible]:* यहाँ यीशु यह कहते हैं कि हमें अपने परमेश्वर से सब कुछ से बढ़कर प्रेम करना चाहिए और उसे हमें अपने जीवन में प्रथम स्थान देना चाहिए, अपने सर्वस्व एवं अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व से प्रेम करना चाहिए (व्य 6:5) ‡ **22:40** *[illegible]:* पूरा पुराना नियम के लिए संदर्भित

है?” उन्होंने उससे कहा, “दाऊद की।”

43 उसने उनसे पूछा, **“तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है?**

44 **‘प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा,**
मेरे दाहिने बैठ,
जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों के नीचे की चौकी न कर दूँ।’
45 **भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र कैसे ठहरा?”**

46 उसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका। परन्तु उस दिन से किसी को फिर उससे कुछ पूछने का साहस न हुआ।

23

[illegible]

1 तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा,

2 **“शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं;**

3 **इसलिए वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और मानना, परन्तु उनके जैसा काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं।**

4 **वे एक ऐसे** *[illegible]*;* **परन्तु आप उन्हें अपनी उँगली से भी सरकाना नहीं चाहते।**

5 **वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये करते हैं वे अपने** *[illegible]*† **को चौड़े करते, और अपने वस्त्रों की झालरों को बढ़ाते हैं।**

6 **भोज में मुख्य-मुख्य जगहें, और आराधनालयों में मुख्य-मुख्य आसन,**

7 **और बाजारों में नमस्कार और मनुष्य में रब्बी कहलाना उन्हें भाता है।**

8 **परन्तु तुम रब्बी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है: और तुम सब भाई हो।**

9 **और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।**

10 **और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही स्वामी है, अर्थात् मसीह।**

11 **जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने।**

12 **जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।**

13 **“हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों तुम पर हाय! तुम मनुष्यों के विरोध में स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो, न तो आप ही उसमें प्रवेश करते हो और न उसमें प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते हो।**

14 **[हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम विधवाओं के घरों को खा जाते हो, और दिखाने के लिए बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हो: इसलिए तुम्हें अधिक दण्ड मिलेगा।]**

15 **“हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों तुम पर हाय! तुम एक जन**

* **23:4** *[illegible] .... [illegible]:* धार्मिक अगुए लोगों से इतना अधिक माँग करते थे कि उनके लिए सभी धार्मिक अनुष्ठान करना भारी पड़ गया। † **23:5** *[illegible]:* चर्मपत्र पर इब्रानी ग्रंथों से युक्त एक छोटे चमड़े का डिब्बा, सुबह की प्रार्थना में व्यवस्था को चेतावनी के रूप में यहूदी पुरुषों द्वारा पहना जानेवाला। 23:7 रब्बी: एक यहूदी विद्वान या शिक्षक, विशेष रूप से जो यहूदी व्यवस्था की पढ़ाई करते या सिखाते है।

को अपने मत में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है, तो उसे अपने से दुगना नारकीय बना देते हो।

16 “हे अंधे अगुओं, तुम पर हाय, जो कहते हो कि यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की सौगन्ध खाए तो उससे बन्ध जाएगा।

17 हे मूर्खों, और अंधों, कौन बड़ा है, सोना या वह मन्दिर जिससे सोना पवित्र होता है?

18 फिर कहते हो कि यदि कोई वेदी की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु जो भेंट उस पर है, यदि कोई उसकी शपथ खाए तो बन्ध जाएगा।

19 हे अंधों, कौन बड़ा है, भेंट या वेदी जिससे भेंट पवित्र होती है?

20 इसलिए जो वेदी की शपथ खाता है, वह उसकी, और जो कुछ उस पर है, उसकी भी शपथ खाता है।

21 और जो मन्दिर की शपथ खाता है, वह उसकी और उसमें रहनेवालों की भी शपथ खाता है।

22 और जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन की और उस पर बैठनेवाले की भी शपथ खाता है।

23 “हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवाँ अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है; चाहिये था कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते।

24 हे अंधे अगुओं, तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊँट को निगल जाते हो।

25 “हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम कटोरे और थाली को ऊपर-ऊपर से तो माँजते हो परन्तु वे भीतर अंधेर असंयम से भरे हुए हैं।

26 हे अंधे फरीसी, पहले कटोरे और थाली को *???? ?? ???? ?? ?? ???? ?? ?? ?????? ????*‡

27 “हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम *???? ???? ???? ??????*§ के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं।

28 इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो।

29 “हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें संवारते और धर्मियों की कब्रें बनाते हो।

30 और कहते हो, ‘यदि हम अपने पूर्वजों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्ताओं की हत्या में उनके सहभागी न होते।’

31 इससे तो तुम अपने पर आप ही गवाही देते हो, कि तुम भविष्यद्वक्ताओं के हत्यारों की सन्तान हो।

32 अतः तुम अपने पूर्वजों के पाप का घड़ा भर दो।

33 हे साँपों, हे करैतों के बच्चों, तुम नरक के दण्ड से कैसे बचोगे?

---

‡ **23:26** *???? ?? .... ??????? ???:* यीशु ने उन्हें यह सिखाया कि पहले हृदय को साफ करना आवश्यक हैं, जिससे कि बाहरी आचरण वास्तव में शुद्ध और पवित्र हो सकता है। § **23:27** *???? ???? ???? ???????:* कब्र को एकदम साफ और बर्फ के समान सफेद रखा जाता था, व्यवस्था के अनुसार अगर कोई व्यक्ति मरे हुए व्यक्ति से सम्बंधित कोई भी सामान छूता हैं तो वह अशुद्ध हो जाता हैं, कब्र को चूने से पोता जाता था ताकि उसे अलग से देखा जा सके।

34 इसलिए देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूँ; और तुम उनमें से कुछ को मार डालोगे, और क्रूस पर चढ़ाओगे; और कुछ को अपने आराधनालयों में कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे।

35 जिससे धर्मी हाबिल से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकर्याह तक, जिसे तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला था, जितने धर्मियों का लहू पृथ्वी पर बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा।

36 मैं तुम से सच कहता हूँ, ये सब बातें इस पीढ़ी के लोगों पर आ पड़ेंगी।

[illegible]

37 "हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पथराव करता है, कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूँ, परन्तु तुम ने न चाहा।

38 देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है।

39 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अब से जब तक तुम न कहोगे, 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है' तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे।"

24

[illegible]

1 जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था, तो उसके चेले उसको मन्दिर की रचना दिखाने के लिये उसके पास आए।

2 उसने उनसे कहा, "क्या तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूँ, यहाँ पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।"

[illegible]

3 और जब वह *[illegible]** पर बैठा था, तो चेलों ने अलग उसके पास आकर कहा, "हम से कह कि ये बातें कब होंगी? और तेरे आने का, और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?"

4 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "सावधान रहो! कोई तुम्हें न बहकाने पाए।

5 क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं मसीह हूँ', और बहुतों को बहका देंगे।

6 तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जाना क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।

7 क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह-जगह अकाल पड़ेंगे, और भूकम्प होंगे।

8 ये सब बातें *[illegible]*† होंगी।

9 तब वे क्लेश दिलाने के लिये तुम्हें पकड़वाएँगे, और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे।

---

* **24:3** *[illegible]*: यरूशलेम के पुराने शहर के पूर्व में इस पहाड़ की चोटी हैं। इसे जैतून के पेड़ो के लिये नामित किया गया कि जैतून के पेड़ो से एक बार उसकी ढलानों को ढक दिया था। † **24:8** *[illegible]*: महान दु:ख की शुरुआत

10 तब बहुत सारे ठोकर खाएँगे,
और एक दूसरे को पकड़वाएँगे और
एक दूसरे से बैर रखेंगे।
11 बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ
खड़े होंगे, और बहुतों को बहकाएँगे।
12 और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का
प्रेम ठंडा हो जाएगा।
13 परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे
रहेगा, उसी का उद्धार होगा।
14 और राज्य का यह
सुसमाचार[illegible]‡किया जाएगा, कि सब
जातियों पर गवाही हो, तब अन्त
आ जाएगा।

[illegible]

15 "इसलिए जब तुम उस
उजाड़नेवाली घृणित वस्तु
को जिसकी चर्चा दानिय्येल
भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी,
पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखो, (जो
पढ़े, वह समझे)।
16 तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों
पर भाग जाएँ।
17 जो छत पर हो, वह अपने घर में
से सामान लेने को न उतरे।
18 और जो खेत में हो, वह अपना
कपड़ा लेने को पीछे न लौटे।
19 "उन दिनों में जो गर्भवती और
दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय,
हाय।
20 और प्रार्थना करो; कि तुम्हें जाड़े
में या सब्त के दिन भागना न पड़े।
21 क्योंकि उस समय ऐसा भारी
क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से
न अब तक हुआ, और न कभी होगा।
22 और यदि वे दिन घटाए न जाते,
तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने
हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएँगे।
23 उस समय यदि कोई तुम से कहे,
कि देखो, मसीह यहाँ हैं! या वहाँ है!
तो विश्वास न करना।
24 "क्योंकि झूठे मसीह और झूठे
भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े
चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएँगे,
कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी
बहका दें।
25 देखो, मैंने पहले से तुम से यह
सब कुछ कह दिया है।
26 इसलिए यदि वे तुम से कहें,
'देखो, वह जंगल में है', तो बाहर न
निकल जाना; 'देखो, वह कोठरियों में
है', तो विश्वास न करना।
27 "क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से
निकलकर पश्चिम तक चमकती
जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का
भी आना होगा।
28 जहाँ लाश हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे
होंगे।

[illegible]

29 "उन दिनों के क्लेश के बाद
तुरन्त सूर्य अंधियारा हो जाएगा,
और चाँद का प्रकाश जाता रहेगा,
और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे
और आकाश की शक्तियाँ हिलाई
जाएँगी।
30 तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह
आकाश में दिखाई देगा, और तब
पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती
पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी
सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश
के बादलों पर आते देखेंगे।
31 और वह तुरही के बड़े शब्द के
साथ, अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा,
और वे आकाश के इस छोर से उस
छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने
हुओं को इकट्ठा करेंगे।

‡ **24:14** *[illegible]:* सभी (यहूदियों और अन्यजातियों दोनों) के साथ सुसमाचार बाँटना

[illegible]

32 “अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त
सीखो जब उसकी डाली कोमल हो
जाती और पत्ते निकलने लगते हैं,
तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल
निकट है।
33 इसी रीति से जब तुम इन सब
बातों को देखो, तो जान लो, कि वह
निकट है, वरन् द्वार पर है।
34 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब
तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक
इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा।
35 आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे,
परन्तु मेरे शब्द कभी न टलेंगे।

[illegible]

36 “उस दिन और उस घड़ी के विषय
में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत,
और न पुत्र, परन्तु केवल पिता।
37 जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही
मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
38 क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहले
के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह
जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग
खाते-पीते थे, और उनमें विवाह-शादी
होती थी।
39 और जब तक जल-प्रलय आकर
उन सब को बहा न ले गया, तब तक
उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही
मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
40 उस समय दो जन खेत में होंगे,
एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़
दिया जाएगा।
41 दो स्त्रियाँ चक्की पीसती रहेंगी,
एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़
दी जाएगी।
42 इसलिए जागते रहो, क्योंकि
तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस
दिन आएगा।
43 परन्तु यह जान लो कि यदि
घर का स्वामी जानता होता कि चोर
किस पहर आएगा, तो जागता रहता;
और अपने घर में चोरी नहीं होने देता।
44 इसलिए तुम भी [illegible]§,
क्योंकि जिस समय के विषय में तुम
सोचते भी नहीं हो, उसी समय मनुष्य
का पुत्र आ जाएगा।

[illegible]

45 “अतः वह विश्‍वासयोग्य और
बुद्धिमान दास कौन है, जिसे स्वामी
ने अपने नौकर-चाकरों पर सरदार
ठहराया, कि समय पर उन्हें भोजन दे?
46 धन्य है, वह दास, जिसे उसका
स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए।
47 मैं तुम से सच कहता हूँ; वह उसे
अपनी सारी सम्पत्ति पर अधिकारी
ठहराएगा।
48 परन्तु यदि वह दुष्ट दास सोचने
लगे, कि मेरे स्वामी के आने में देर है।
49 और अपने साथी दासों को
पीटने लगे, और पियक्कड़ों के साथ
खाए-पीए।
50 तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन
आएगा, जब वह उसकी प्रतीक्षा नहीं
कर रहा होगा, और ऐसी घड़ी कि
जिसे वह न जानता हो,
51 और उसे कठोर दण्ड देकर,
उसका भाग कपटियों के साथ
ठहराएगा: वहाँ रोना और दाँत
पीसना होगा।

25

[illegible]

1 “तब स्वर्ग का राज्य उन दस
कुँवारियों के समान होगा जो अपनी

§ **24:44** [illegible]: इसका मतलब हर समय तैयार रहना क्योंकि मसीह किसी भी समय वापस आ सकता है।

मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को
निकलीं।
2 उनमें पाँच मूर्ख और पाँच
समझदार थीं।
3 मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं,
परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया।
4 परन्तु समझदारों ने अपनी
मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में
तेल भी भर लिया।
5 जब दुल्हे के आने में देर हुई, तो वे
सब उँघने लगीं, और सो गई।
6 "आधी रात को धूम मची, कि
देखो, दूल्हा आ रहा है, उससे भेंट
करने के लिये चलो।
7 तब वे सब कुँवारियाँ उठकर
अपनी मशालें ठीक करने लगीं।
8 और मूर्खों ने समझदारों से कहा,
'अपने तेल में से कुछ हमें भी दो,
क्योंकि हमारी मशालें बुझ रही हैं।'
9 परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया
कि कहीं हमारे और तुम्हारे लिये पूरा
न हो; भला तो यह है, कि तुम
बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिये
मोल ले लो।
10 जब वे मोल लेने को जा रही थीं,
तो दूल्हा आ पहुँचा, और जो तैयार
थीं, वे उसके साथ विवाह के घर में
चलीं गई और द्वार बन्द किया गया।
11 इसके बाद वे दूसरी कुँवारियाँ
भी आकर कहने लगीं, 'हे स्वामी, हे
स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल दे।'
12 उसने उत्तर दिया, कि मैं तुम से
सच कहता हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता।
13 इसलिए जागते रहो, क्योंकि
तुम न उस दिन को जानते हो, न उस
समय को।

[illegible]

14 "क्योंकि यह उस मनुष्य के
समान दशा है जिसने परदेश को जाते
समय अपने दासों को बुलाकर अपनी
सम्पत्ति उनको सौंप दी।
15 उसने एक को पाँच तोड़े, दूसरे
को दो, और तीसरे को एक; अर्थात्
हर एक को उसकी सामर्थ्य के अनुसार
दिया, और तब परदेश चला गया।
16 तब, जिसको पाँच तोड़े मिले
थे, उसने तुरन्त जाकर उनसे लेन-देन
किया, और पाँच तोड़े और कमाए।
17 इसी रीति से जिसको दो मिले
थे, उसने भी दो और कमाए।
18 परन्तु जिसको एक मिला था,
उसने जाकर मिट्टी खोदी, और अपने
स्वामी का धन छिपा दिया।
19 "बहुत दिनों के बाद उन दासों
का स्वामी आकर उनसे लेखा लेने
लगा।
20 जिसको पाँच तोड़े मिले थे,
उसने पाँच तोड़े और लाकर कहा, 'हे
स्वामी, तूने मुझे पाँच तोड़े सौंपे थे,
देख मैंने पाँच तोड़े और कमाए हैं।'
21 उसके स्वामी ने उससे कहा,
'धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य
दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा;
मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी
बनाऊँगा। अपने स्वामी के आनन्द में
सहभागी हो।'
22 "और जिसको दो तोड़े मिले थे,
उसने भी आकर कहा, 'हे स्वामी तूने
मुझे दो तोड़े सौंपे थे, देख, मैंने दो
तोड़े और कमाए।'
23 उसके स्वामी ने उससे कहा,
'धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य
दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा,
मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी
बनाऊँगा अपने स्वामी के आनन्द में
सहभागी हो।'
24 "तब जिसको एक तोड़ा मिला
था, उसने आकर कहा, 'हे स्वामी, मैं
तुझे जानता था, कि तू कठोर मनुष्य

है: तू जहाँ कहीं नहीं बोता वहाँ
काटता है, और जहाँ नहीं छींटता
वहाँ से बटोरता है।’
25 इसलिए मैं डर गया और जाकर
तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया; देख,
‘जो तेरा है, वह यह है।’
26 उसके स्वामी ने उसे उत्तर दिया,
कि हे दुष्ट और आलसी दास; जब तू
यह जानता था, कि जहाँ मैंने नहीं
बोया वहाँ से काटता हूँ; और जहाँ मैंने
नहीं छींटा वहाँ से बटोरता हूँ।
27 तो तुझे चाहिए था, कि मेरा
धन सर्राफों को दे देता, तब मैं आकर
अपना धन ब्याज समेत ले लेता।
28 इसलिए वह तोड़ा उससे ले लो,
और जिसके पास दस तोड़े हैं, उसको
दे दो।
29 क्योंकि जिस किसी के पास है,
उसे और दिया जाएगा; और उसके
पास बहुत हो जाएगा: परन्तु जिसके
पास नहीं है, उससे वह भी जो उसके
पास है, ले लिया जाएगा।
30 और इस निकम्मे दास को बाहर
के अंधेरे में डाल दो, जहाँ रोना और
दाँत पीसना होगा।

[illegible]

31 “जब मनुष्य का पुत्र अपनी
महिमा में आएगा, और सब स्वर्गदूत
उसके साथ आएँगे तो वह अपनी
महिमा के सिंहासन पर विराजमान
होगा।
32 और सब जातियाँ उसके सामने
इकट्ठी की जाएँगी; और जैसा
चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग
कर देता है, वैसा ही वह उन्हें एक दूसरे
से अलग करेगा।
33 और वह [illegible]* ।
34 तब राजा अपनी दाहिनी ओर
वालों से कहेगा, ‘हे मेरे पिता के
धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के
अधिकारी हो जाओ, जो जगत के
आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया
हुआ है।
35 क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने
मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था,
और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं
परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में
ठहराया;
36 मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े
पहनाए; मैं बीमार था, तुम ने मेरी
सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम
मुझसे मिलने आए।’
37 “तब धर्मी उसको उत्तर देंगे, ‘हे
प्रभु, हमने कब तुझे भूखा देखा और
खिलाया? या प्यासा देखा, और
पानी पिलाया?
38 हमने कब तुझे परदेशी देखा और
अपने घर में ठहराया या नंगा देखा,
और कपड़े पहनाए?
39 हमने कब तुझे बीमार या
बन्दीगृह में देखा और तुझ से मिलने
आए?’
40 तब राजा उन्हें उत्तर देगा, ‘मैं
तुम से सच कहता हूँ, कि तुम ने जो
मेरे इन [illegible]† किसी एक के साथ किया,
वह मेरे ही साथ किया।’
41 “तब वह बाईं ओर वालों से

---

* **25:33** [illegible] .... [illegible]: यहाँ “भेड़” को धर्मी के रूप में चिन्हित किया गया हैं। यह नाम उन्हें इसलिए दिया गया क्योंकि भेड़ मासूमियत और हानिहीनता का प्रतीक हैं। (भज. 23:1-6, यूहन्ना. 10:7, 14-16) † **25:40** [illegible]: छोटे से छोटा सबसे गरीब, तुच्छ और पीड़ित जाना जाता है। ‡ **25:41** [illegible]: यहाँ पर आग को दण्ड के रूप में प्रयोग किया गया है। इस छवि को अत्यधिक पीड़ा व्यक्त करने के लिए काम में लिया गया है।

कहेगा, 'हे श्रापित लोगों, मेरे सामने
से उस [illegible] [illegible]‡ में चले जाओ, जो
शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार
की गई है।
42 **क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने**
मुझे खाने को नहीं दिया, मैं प्यासा
था, और तुम ने मुझे पानी नहीं
पिलाया;
43 **मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे**
अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था,
और तुम ने मुझे कपड़े नहीं पहनाए;
बीमार और बन्दीगृह में था, और तुम
ने मेरी सुधि न ली।'
44 **"तब वे उत्तर देंगे, 'हे प्रभु,**
हमने तुझे कब भूखा, या प्यासा, या
परदेशी, या नंगा, या बीमार, या
बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल
न की?'
45 **तब वह उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुम**
से सच कहता हूँ कि तुम ने जो इन
छोटे से छोटों में से किसी एक के
साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं
किया।'
46 **और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे**
परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश
करेंगे।"

26

[illegible]

1 जब यीशु ये सब बातें कह चुका,
तो अपने चेलों से कहने लगा।
2 **"तुम जानते हो, कि दो दिन के**
बाद [illegible]* का पर्व होगा; और मनुष्य
का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये
पकड़वाया जाएगा।"
3 तब प्रधान याजक और प्रजा के
पुरनिए कैफा नामक महायाजक के
आँगन में इकट्ठे हुए।
4 और आपस में विचार करने लगे
कि यीशु को छल से पकड़कर मार
डालें।
5 परन्तु वे कहते थे, "पर्व के समय
नहीं; कहीं ऐसा न हो कि लोगों में दंगा
मच जाए।"

[illegible]

6 जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन
कोढ़ी के घर में था।
7 तो [illegible] [illegible]† संगमरमर के
पात्र में बहुमूल्य इत्र लेकर उसके पास
आई, और जब वह भोजन करने बैठा
था, तो उसके सिर पर उण्डेल दिया।
8 यह देखकर, उसके चेले झुँझला
उठे और कहने लगे, "इसका क्यों
सत्यानाश किया गया?
9 यह तो अच्छे दाम पर बेचकर
गरीबों को बाँटा जा सकता था।"
10 यह जानकर यीशु ने उनसे कहा,
"स्त्री को क्यों सताते हो? उसने मेरे
साथ भलाई की है।
11 **गरीब तुम्हारे साथ सदा रहते हैं,**
परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदैव न रहूँगा।
12 **उसने मेरी देह पर जो यह इत्र**
उण्डेला है, वह मेरे गाड़े जाने के लिये
किया है।
13 **मैं तुम से सच कहता हूँ, कि सारे**
जगत में जहाँ कहीं यह सुसमाचार
प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस
काम का वर्णन भी उसके स्मरण में
किया जाएगा।"

[illegible]

---

* **26:2** *[illegible]:* फसह का पर्व यहूदियों के बीच मिस्र की दासता से उनकी मुक्ति की स्मृति बनाए रखने के लिए मनाया गया था, और उस रात में उनके पहलौठे जन्मे की सुरक्षा के लिये जब मिस्र के पहलौठे को नाश किया गया था, (निर्गमन. 12) † **26:7** *[illegible] [illegible]:* यह स्त्री लाज़र और मार्था की बहन, मरियम थी (यूह. 12:3)

14 तब यहूदा इस्करियोती ने, जो बारह चेलों में से एक था, प्रधान याजकों के पास जाकर कहा,

15 "यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूँ, तो मुझे क्या दोगे?" उन्होंने उसे तीस चाँदी के सिक्के तौलकर दे दिए।

16 और वह उसी समय से उसे पकड़वाने का अवसर ढूँढ़ने लगा।

[illegible]

17 अख़मीरी रोटी के पर्व के पहले दिन, चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, "तू कहाँ चाहता है कि हम तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?"

18 उसने कहा, **"नगर में फलाने के पास जाकर उससे कहो, कि गुरु कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहाँ फसह मनाऊँगा।"**

19 अतः चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया।

20 जब साँझ हुई, तो वह बारह चेलों के साथ भोजन करने के लिये बैठा।

21 जब वे खा रहे थे, तो उसने कहा, **"मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।"**

22 इस पर वे बहुत उदास हुए, और हर एक उससे पूछने लगा, "हे गुरु, क्या वह मैं हूँ?"

23 उसने उत्तर दिया, **"जिसने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा।**

24 **मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य के लिये शोक है जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है: यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिये भला होता।"**

25 तब उसके पकड़वानेवाले यहूदा ने कहा, "हे रब्बी, क्या वह मैं हूँ?" उसने उससे कहा, **"तू कह चुका।"**

[illegible]

26 जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष माँगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, **"लो, खाओ; यह मेरी देह है।"**

27 फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, **"तुम सब इसमें से पीओ,**

28 **क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के लिए बहाया जाता है।**

29 **मैं तुम से कहता हूँ, कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊँगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊँ।"**

30 फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए।

[illegible]

31 तब यीशु ने उनसे कहा, **"तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे; क्योंकि लिखा है,**
'मैं चरवाहे को मारूँगा;
और झुण्ड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।'

32 **"परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा।"**

33 इस पर पतरस ने उससे कहा, "यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएँ तो खाएँ, परन्तु मैं कभी भी ठोकर न खाऊँगा।"

34 यीशु ने उससे कहा, **"मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज ही रात को मुर्गे के बाँग देने से पहले, तू तीन बार मुझसे मुकर जाएगा।"**

35 पतरस ने उससे कहा, "यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तो भी, मैं तुझ

से कभी न मुकरूँगा।" और ऐसा ही
सब चेलों ने भी कहा।

[illegible]

36 तब यीशु ने अपने चेलों के साथ
[illegible]‡ नामक एक स्थान में आया
और अपने चेलों से कहने लगा **"यहीं
बैठे रहना, जब तक कि मैं वहाँ जाकर
प्रार्थना करूँ।"**
37 और वह पतरस और जब्दी के
दोनों पुत्रों को साथ ले गया, और
उदास और व्याकुल होने लगा।
38 तब उसने उनसे कहा, **"मेरा मन
बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरा प्राण
निकला जा रहा है। तुम यहीं ठहरो,
और मेरे साथ जागते रहो।"**
39 फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर
मुँह के बल गिरा, और यह प्रार्थना
करने लगा, **"हे मेरे पिता, यदि
हो सके, तो यह [illegible]§ मुझसे टल
जाए, फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा
नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही
हो।"**
40 फिर चेलों के पास आकर उन्हें
सोते पाया, और पतरस से कहा, **"क्या
तुम मेरे साथ एक घण्टे भर न जाग
सके?**
41 **जागते रहो, और प्रार्थना करते
रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो!
आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर
दुर्बल है।"**
42 फिर उसने दूसरी बार जाकर यह
प्रार्थना की, **"हे मेरे पिता, यदि यह
मेरे पीए बिना नहीं हट सकता तो तेरी
इच्छा पूरी हो।"**
43 तब उसने आकर उन्हें फिर सोते
पाया, क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी
थीं।
44 और उन्हें छोड़कर फिर चला
गया, और वही बात फिर कहकर,
तीसरी बार प्रार्थना की।
45 तब उसने चेलों के पास आकर
उनसे कहा, **"अब सोते रहो, और
विश्राम करो: देखो, समय आ पहुँचा
है, और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ
पकड़वाया जाता है।**
46 **उठो, चलें; देखो, मेरा
पकड़वानेवाला निकट आ पहुँचा है।"**

[illegible]

47 वह यह कह ही रहा था, कि
यहूदा जो बारहों में से एक था, आया,
और उसके साथ प्रधान याजकों और
लोगों के प्राचीनों की ओर से बड़ी भीड़,
तलवारें और लाठियाँ लिए हुए आई।
48 उसके पकड़वानेवाले ने उन्हें यह
पता दिया था: "जिसको मैं चूम लूँ वही
है; उसे पकड़ लेना।"
49 और तुरन्त यीशु के पास आकर
कहा, "हे रब्बी, नमस्कार!" और
उसको बहुत चूमा।
50 यीशु ने उससे कहा, **"हे मित्र,
जिस काम के लिये तू आया है, उसे कर
ले।"** तब उन्होंने पास आकर यीशु पर
हाथ डाले और उसे पकड़ लिया।
51 तब यीशु के साथियों में से एक ने
हाथ बढ़ाकर अपनी तलवार खींच ली
और महायाजक के दास पर चलाकर
उसका कान काट दिया।
52 तब यीशु ने उससे कहा, **"अपनी
तलवार म्यान में रख ले क्योंकि जो
तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से
नाश किए जाएँगे।**
53 **क्या तू नहीं समझता, कि मैं
अपने पिता से विनती कर सकता हूँ,
और वह स्वर्गदूतों की बारह सैन्य-दल**

‡ **26:36** [illegible]: इब्रानी में गतसमनी का मतलब एक जैतून से दबाया हुआ है। वह जगह जहाँ यीशु ने अपनी कलवरी क्रूस की परीक्षा से पहले प्रार्थना की थी § **26:39** [illegible]: परिक्षण के नजदीक, कठिन दु:ख के रूप में संदर्भित।

से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर
देगा?
54 **परन्तु पवित्रशास्त्र की वे बातें**
कि ऐसा ही होना अवश्य है, कैसे पूरी
होंगी?”
55 उसी समय यीशु ने भीड़ से कहा,
“क्या तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर
मुझे डाकू के समान पकड़ने के लिये
निकले हो? मैं हर दिन मन्दिर में
बैठकर उपदेश दिया करता था, और
तुम ने मुझे नहीं पकड़ा।
56 **परन्तु यह सब इसलिए हुआ है,**
कि भविष्यद्वक्ताओं के वचन पूरे हों।”
तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए।

[illegible]

57 और यीशु के पकड़नेवाले उसको
कैफा नामक महायाजक के पास ले
गए, जहाँ शास्त्री और पुरनिए इकट्ठे
हुए थे।
58 और पतरस दूर से उसके पीछे-
पीछे महायाजक के आँगन तक गया,
और भीतर जाकर अन्त देखने को
सेवकों के साथ बैठ गया।
59 प्रधान याजक और सारी
[illegible]* यीशु को मार डालने के
लिये उसके विरोध में झूठी गवाही की
खोज में थे।
60 परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के
आने पर भी न पाई। अन्त में दो जन
आए,
61 और कहा, “इसने कहा कि मैं
परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूँ
और उसे तीन दिन में बना सकता हूँ।”
62 तब महायाजक ने खड़े होकर
उससे कहा, “क्या तू कोई उत्तर नहीं
देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या
गवाही देते हैं?”
63 परन्तु यीशु चुप रहा। तब
महायाजक ने उससे कहा “[illegible]†, कि यदि तू
परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम
से कह दे।”
64 यीशु ने उससे कहा, **“तूने आप**
ही कह दिया; वरन् मैं तुम से यह
भी कहता हूँ, कि अब से तुम मनुष्य
के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी
ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर
आते देखोगे।”
65 तब महायाजक ने अपने वस्त्र
फाड़कर कहा, “इसने परमेश्वर की
निन्दा की है, अब हमें गवाहों का क्या
प्रयोजन? देखो, तुम ने अभी यह
निन्दा सुनी है!
66 तुम क्या समझते हो?” उन्होंने
उत्तर दिया, “यह मृत्युदण्ड के योग्य
है।”
67 तब उन्होंने उसके मुँह पर थूका
और उसे घूँसे मारे, दूसरों ने थप्पड़ मार
के कहा,
68 “हे मसीह, हम से भविष्यद्वाणी
करके कह कि किसने तुझे मारा?”

[illegible]

69 पतरस बाहर आँगन में बैठा हुआ
था कि एक दासी ने उसके पास आकर
कहा, “तू भी यीशु गलीली के साथ
था।”
70 उसने सब के सामने यह कहकर
इन्कार किया और कहा, “मैं नहीं
जानता तू क्या कह रही है।”
71 जब वह बाहर द्वार में चला गया,
तो दूसरी दासी ने उसे देखकर उनसे जो

* **26:59** [illegible]: परिभाषा: महासभा प्राचीन इस्राएल में उच्च परिषद या अदालत थी। महासभा में महायाजक 70 पुरुषों को शामिल करते थे जो अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवा किया करते थे (मर 14:55)।
† **26:63** [illegible].... [illegible]: यह यहूदियों के बीच एक शपथ खाने का सामान्य रूप था। इसका तात्पर्य यह है कि जो कहा है परमेश्वर उसका साक्षी है।

वहाँ थे कहा, “यह भी तो यीशु नासरी के साथ था।”

72 उसने शपथ खाकर फिर इन्कार किया, “मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।”

73 थोड़ी देर के बाद, जो वहाँ खड़े थे, उन्होंने पतरस के पास आकर उससे कहा, “सचमुच तू भी उनमें से एक है; क्योंकि तेरी बोली तेरा भेद खोल देती है।”

74 तब वह कोसने और शपथ खाने लगा, “मैं उस मनुष्य को नहीं जानता।” और तुरन्त मुर्गे ने बाँग दी।

75 तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई, **“मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।”** और वह बाहर जाकर फूट फूटकर रोने लगा।

27

[illegible]

1 जब भोर हुई, तो सब प्रधान याजकों और लोगों के प्राचीनों ने यीशु के मार डालने की सम्मति की।

2 और उन्होंने उसे बाँधा और ले जाकर पिलातुस राज्यपाल के हाथ में सौंप दिया।

[illegible]

3 जब उसके पकड़वानेवाले यहूदा ने देखा कि वह दोषी ठहराया गया है तो वह पछताया और वे तीस चाँदी के सिक्के प्रधान याजकों और प्राचीनों के पास फेर लाया।

4 और कहा, “मैंने निर्दोषी को मृत्यु के लिये पकड़वाकर पाप किया है?” उन्होंने कहा, “हमें क्या? तू ही जाने।”

5 तब वह उन सिक्कों को मन्दिर में फेंककर चला गया, और जाकर अपने आपको फांसी दी।

6 प्रधान याजकों ने उन सिक्कों को लेकर कहा, “इन्हें, भण्डार में रखना उचित नहीं, क्योंकि यह लहू का दाम है।”

7 अतः उन्होंने सम्मति करके उन सिक्कों से परदेशियों के गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल ले लिया।

8 इस कारण वह खेत आज तक *[illegible]** कहलाता है।

9 तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ “उन्होंने वे तीस सिक्के अर्थात् उस ठहराए हुए मूल्य को (जिसे इस्राएल की सन्तान में से कितनों ने ठहराया था) ले लिया।

10 और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी वैसे ही उन्हें कुम्हार के खेत के मूल्य में दे दिया।”

[illegible]

11 जब यीशु राज्यपाल के सामने खड़ा था, तो राज्यपाल ने उससे पूछा, “क्या तू यहूदियों का राजा है?” यीशु ने उससे कहा, “तू आप ही कह रहा है।”

12 जब प्रधान याजक और पुरनिए उस पर दोष लगा रहे थे, तो उसने कुछ उत्तर नहीं दिया।

13 इस पर पिलातुस ने उससे कहा, “क्या तू नहीं सुनता, कि ये तेरे विरोध में कितनी गवाहियाँ दे रहे हैं?”

14 परन्तु उसने उसको एक बात का भी उत्तर नहीं दिया, यहाँ तक कि राज्यपाल को बड़ा आश्चर्य हुआ।

[illegible]

15 और राज्यपाल की यह रीति थी, कि उस पर्व में लोगों के लिये किसी एक

---

* **27:8** *[illegible]*: खून की कीमत द्वारा खरीदा गया खेत

बन्दी को जिसे वे चाहते थे, छोड़ देता था।

16 उस समय बरअब्बा नामक उन्हीं में का, एक नामी बन्धुआ था।

17 अतः जब वे इकट्ठा हुए, तो पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम किसको चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूँ? बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है?"

18 क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने उसे डाह से पकड़वाया है।

19 जब वह न्याय की गद्दी पर बैठा हुआ था तो उसकी पत्नी ने उसे कहला भेजा, "तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना; क्योंकि मैंने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुःख उठाया है।"

20 प्रधान याजकों और प्राचीनों ने लोगों को उभारा, कि वे बरअब्बा को माँग लें, और यीशु को नाश कराएँ।

21 राज्यपाल ने उनसे पूछा, "इन दोनों में से किसको चाहते हो, कि तुम्हारे लिये छोड़ दूँ?" उन्होंने कहा, "बरअब्बा को।"

22 पिलातुस ने उनसे पूछा, "फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूँ?" सब ने उससे कहा, "वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।"

23 राज्यपाल ने कहा, "क्यों उसने क्या बुराई की है?" परन्तु वे और भी चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे, "वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।"

24 जब पिलातुस ने देखा, कि कुछ बन नहीं पड़ता परन्तु इसके विपरीत उपद्रव होता जाता है, तो उसने पानी लेकर भीड़ के सामने अपने हाथ धोए, और कहा, "मैं इस धर्मी के लहू से निर्दोष हूँ; तुम ही जानो।"

25 सब लोगों ने उत्तर दिया, "इसका लहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो!"

[illegible]

26 इस पर उसने बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।

[illegible]

27 तब राज्यपाल के सिपाहियों ने यीशु को किले में ले जाकर सारे सैनिक उसके चारों ओर इकट्ठा किए।

28 और उसके कपड़े उतारकर उसे लाल चोगा पहनाया।

29 और काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा; और उसके दाहिने हाथ में सरकण्डा दिया और उसके आगे घुटने टेककर उसे उपहास में उड़ाने लगे, "हे यहूदियों के राजा नमस्कार!"

30 और उस पर थूका; और वही सरकण्डा लेकर उसके सिर पर मारने लगे।

31 जब वे उसका उपहास कर चुके, तो वह चोगा उस पर से उतारकर फिर उसी के कपड़े उसे पहनाए, और क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले।

[illegible]

32 बाहर जाते हुए उन्हें शमौन नामक एक कुरेनी मनुष्य मिला, उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले।

33 और उस स्थान पर जो गुलगुता नाम की जगह अर्थात् खोपड़ी का स्थान कहलाता है पहुँचकर

34 उन्होंने पित्त मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परन्तु उसने चखकर पीना न चाहा।

35 तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया; और चिट्ठियाँ डालकर उसके कपड़े बाँट लिए।

36 और वहाँ बैठकर उसका पहरा देने लगे।

37 और उसका दोषपत्र, उसके सिर के ऊपर लगाया, कि “यह यहूदियों का राजा यीशु है।”

38 तब उसके साथ दो डाकू एक दाहिने और एक बाएँ क्रूसों पर चढ़ाए गए।

39 और आने-जानेवाले सिर हिला-हिलाकर उसकी निन्दा करते थे।

40 और यह कहते थे, “हे मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले, अपने आपको तो बचा! यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ।”

41 इसी रीति से प्रधान याजक भी शास्त्रियों और प्राचीनों समेत उपहास कर करके कहते थे,

42 “इसने दूसरों को बचाया, और अपने आपको नहीं बचा सकता। यह तो ‘इस्राएल का राजा’ है। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें।

43 उसने परमेश्वर का भरोसा रखा है, यदि वह इसको चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इसने कहा था, कि ‘मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।’ ”

44 इसी प्रकार डाकू भी जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे उसकी निन्दा करते थे।

[illegible]

45 दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अंधेरा छाया रहा।

46 तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, “*[illegible], [illegible], [illegible] [illegible]*†?” अर्थात् “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?”

47 जो वहाँ खड़े थे, उनमें से कितनों ने यह सुनकर कहा, “वह तो एलिय्याह को पुकारता है।”

48 उनमें से एक तुरन्त दौड़ा, और पनसोख्ता लेकर सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया।

49 औरों ने कहा, “रह जाओ, देखें, एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं।”

50 तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए।

51 तब, मन्दिर का *[illegible]*‡ ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चट्टानें फट गईं।

52 और कब्रें खुल गईं, और सोए हुए पवित्र लोगों के बहुत शव जी उठे।

53 और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए।

54 तब सूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भूकम्प और जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यन्त डर गए, और कहा, “सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था!”

55 वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई उसके साथ आई थीं, दूर से देख रही थीं।

56 उनमें मरियम मगदलीनी और याकूब और योसेस की माता मरियम और जब्दी के पुत्रों की माता थीं।

[illegible]

57 जब साँझ हुई तो यूसुफ नामक अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला था, आया।

---

† **27:46** *[illegible], [illegible], [illegible] [illegible]:* इसका अर्थ है “हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया” ‡ **27:51** *[illegible]:* मन्दिर में जो पवित्रस्थान को महापवित्र स्थान से अलग करता है, मन्दिर को दो भागों में बाँटता हैं (निर्गमन. 26:31-33)।

58 उसने पिलातुस के पास जाकर
यीशु का शव माँगा। इस पर पिलातुस
ने दे देने की आज्ञा दी।
59 यूसुफ ने शव को लेकर उसे साफ
चादर में लपेटा।
60 और उसे अपनी नई कब्र में रखा,
जो उसने चट्टान में खुदवाई थी, और
कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर
चला गया।
61 और मरियम मगदलीनी और
दूसरी मरियम वहाँ कब्र के सामने बैठी
थीं।

[illegible]

62 दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के
बाद का दिन था, प्रधान याजकों और
फरीसियों ने पिलातुस के पास इकट्ठे
होकर कहा।
63 "हे स्वामी, हमें स्मरण है, कि उस
भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा
था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूँगा।
64 अत: आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक
कब्र की रखवाली की जाए, ऐसा न हो
कि उसके चेले आकर उसे चुरा ले जाएँ,
और लोगों से कहने लगें, कि वह मरे
हुओं में से जी उठा है: तब पिछला
धोखा पहले से भी बुरा होगा।"
65 पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम्हारे
पास पहरेदार तो हैं जाओ, अपनी
समझ के अनुसार रखवाली करो।"
66 अत: वे पहरेदारों को साथ लेकर
गए, और पत्थर पर मुहर लगाकर कब्र
की रखवाली की।

28

[illegible]

1 सब्त के दिन के बाद सप्ताह
के पहले दिन पौ फटते ही मरियम
मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को
देखने आईं।
2 तब एक बड़ा भूकम्प हुआ, क्योंकि
परमेश्वर का एक दूत स्वर्ग से उतरा,
और पास आकर उसने पत्थर को
लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया।
3 उसका रूप बिजली के समान और
उसका वस्त्र हिम के समान उज्ज्वल
था।
4 उसके भय से पहरेदार काँप उठे,
और मृतक समान हो गए।
5 स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, "मत
डरो, मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को जो
क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूँढ़ती हो।
6 वह यहाँ नहीं है, परन्तु *[illegible]**
जी उठा है;
आओ, यह स्थान देखो, जहाँ प्रभु रखा
गया था।
7 और शीघ्र जाकर उसके चेलों से
कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है;
और देखो वह तुम से पहले गलील को
जाता है, वहाँ उसका दर्शन पाओगे,
देखो, मैंने तुम से कह दिया।"
8 और वे भय और बड़े आनन्द के
साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों
को समाचार देने के लिये दौड़ गईं।

[illegible]

9 तब, यीशु उन्हें मिला और
कहा; **"सुखी रहो"** और उन्होंने पास
आकर और उसके पाँव पकड़कर उसको
दण्डवत् किया।
10 तब यीशु ने उनसे कहा, **"मत
डरो; मेरे भाइयों से जाकर कहो,
कि गलील को चले जाएँ वहाँ मुझे
देखेंगे।"**

[illegible]

11 वे जा ही रही थीं, कि पहरेदारों में
से कितनों ने नगर में आकर पूरा हाल
प्रधान याजकों से कह सुनाया।

---

* **28:6** *[illegible]:* यीशु अक्सर यह भविष्यद्वाणी करते थे कि वह जी उठेंगे, परन्तु उनके शिष्य नहीं समझे (मत्ती16:21;20:19)

12 तब उन्होंने प्राचीनों के साथ
इकट्ठे होकर सम्मति की, और
सिपाहियों को बहुत चाँदी देकर कहा।
13 “यह कहना कि रात को जब हम
सो रहे थे, तो उसके चेले आकर उसे
चुरा ले गए।
14 और यदि यह बात राज्यपाल के
कान तक पहुँचेगी, तो हम उसे समझा
लेंगे और तुम्हें जोखिम से बचा लेंगे।”
15 अतः उन्होंने रुपये लेकर जैसा
सिखाए गए थे, वैसा ही किया;
और यह बात आज तक यहूदियों में
प्रचलित है।

[illegible]

16 और ग्यारह चेले गलील में उस
पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें
बताया था।
17 और उन्होंने उसके दर्शन पाकर
उसे प्रणाम किया, पर *[illegible]*[†]
को सन्देह हुआ।
18 यीशु ने उनके पास आकर कहा,
**“स्वर्ग और पृथ्वी का सारा *[illegible]*
[‡]मुझे दिया गया है।**
19 **इसलिए तुम जाकर सब
जातियों के लोगों को चेला बनाओ;
और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र
आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,**
20 **और उन्हें सब बातें जो मैंने
तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ
और देखो, मैं जगत के अन्त तक
सदैव *[illegible]*[§]हूँ।”**

[†] **28:17** *[illegible]:* चेले उसके जी उठने की उम्मीद नहीं करते थे; वे इसलिए कि विश्वास करने में कमज़ोर थे, उदाहरण के लिए थोमा। (यूह 20:25) [‡] **28:18** *[illegible]:* स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार यीशु को दिया गया है, “परमेश्वर का पुत्र” “सृष्टिकर्ता” के रूप में, उन्हें सब कुछ को नियंत्रण और समाप्त करने का मूल अधिकार है। देखिए योना 1:3; कुलुस्सियों 1:16-17; इब्रानियों 1:8 [§] **28:20** *[illegible]:* यीशु हम से प्रतिज्ञा करते है कि वह हमें मजबूत बनाने, सहायता करने, और हमारी अगुआई करने के लिये, हमारे संग हर समय रहेंगे।

मरकुस रचित सुसमाचार

[illegible]

आरम्भिक कलीसिया के प्राचीनों का एकमत होकर मानना था कि, इस पुस्तक का लेखक यूहन्ना मरकुस था। नये नियम में यूहन्ना मरकुस का नाम दस बार आया है (प्रेरि. 12:12, 25; 13:5,13; 15:37, 39, कुलु. 4:10; 2 तीमु. 4:11; फिले. 24; 1 पत. 5:13) इन संदर्भों से विदित होता है कि मरकुस बरनबास का चचेरा भाई था (कुलु. 4:10)। मरकुस की माता का नाम मरियम था। वह यरूशलेम में एक धनवान एवं पदप्रतिष्ठित स्त्री मानी जाती थी और उनका घर आरम्भिक विश्वासियों के लिए आराधना स्थल था। यूहन्ना मरकुस पौलुस और बरनबास के साथ उनकी प्रचार-यात्रा में गया था (प्रेरि. 12:25; 13:5)। बाइबल के प्रमाण और आरम्भिक कलीसिया के प्राचीन भी पतरस और मरकुस के घनिष्ठ सम्बंध को दर्शाते हैं (1 पत. 5:13)। वह पतरस का अनुवादक भी था और सर्व सम्भावना में पतरस का प्रचार और साक्षात् गवाही मरकुस के लिए प्रभु यीशु के शुभ सन्देश का वृत्तान्त लिखने में मूल स्रोत रही होगी।

[illegible]

लगभग ई.स. 50 - 60

कलीसिया के प्राचीनों के लेख (आइरेनियस, सिकन्दरिया का क्लेमेंस तथा अन्य) पुष्टि करते हैं कि मरकुस द्वारा मसीह का शुभ सन्देश रोम में लिखा गया था। आरम्भिक कलीसियाई स्रोतों का कहना है कि यह शुभ सन्देश वृत्तान्त पतरस की मृत्यु के बाद लिखा गया था।

[illegible]

अभिलेखों से प्राप्त प्रमाणों से संकेत मिलता है कि मरकुस ने अन्यजाति पाठकों के लिए मसीह के शुभ सन्देश का वृत्तान्त लिखा था जिनमें रोमी विशेष थे। यही कारण था कि यीशु की वंशावली उसने नहीं दर्शाई है क्योंकि विजातीय संसार के लिए उसका महत्त्व लगभग नहीं के बराबर ही था।

[illegible]

मरकुस के पाठक जो मुख्यतः रोम के मसीही विश्वासी थे, सन् 67-68 में घोर सताव में थे, रोमी सम्राट नीरो के राज्यकाल में मसीही विश्वासियों को उत्पीड़ित करके मार डाला जाता था। ऐसी परिस्थिति में मरकुस ने मसीह के शुभ सन्देश का वृत्तान्त लिखा कि मसीही विश्वासियों का ढाढ़स बंधाया जाए क्योंकि वे ऐसी विनाशकारी परिस्थितियों में थे। यही कारण है कि उसने यीशु को "दु:खी दास" के रूप में दर्शाया है (यशा. 53)।

[illegible]

यीशु - दु:खी दास

रूपरेखा

1. सेवाकार्य के लिए यीशु की तैयारी- जंगल में — 1:1-13
2. गलील और उसके परिवेश में यीशु की सेवा — 1:14-8:30
3. 3. यीशु का दूतकार्य, कष्ट वहन एवं मृत्यु — 8:31-10:52
4. यरूशलेम में यीशु की सेवा — 11:1-13:37
5. यीशु के क्रूसीकरण का वृत्तान्त — 14:1-15:47
6. यीशु का पुनरूत्थान एवं प्रकटीकरण — 16:1-20

[illegible]

1 परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के
सुसमाचार का आरम्भ।
2 जैसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की
पुस्तक में लिखा है:
“देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता
हूँ,
जो तेरे लिये मार्ग सुधारेगा। *([illegible] 11:10, [illegible]. 3:1)*
3 जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द
हो रहा है कि
प्रभु का मार्ग तैयार करो, और उसकी
सड़कें सीधी करो।” *([illegible]. 40:3)*
4 यूहन्ना आया, जो जंगल में
बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा
के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का
प्रचार करता था।
5 सारे यहूदिया के, और यरूशलेम
के सब रहनेवाले निकलकर उसके पास
गए, और अपने पापों को मानकर
*[illegible]** में उससे बपतिस्मा
लिया।
6 यूहन्ना ऊँट के रोम का वस्त्र
पहने और अपनी कमर में चमड़े का
कमरबन्द बाँधे रहता था और टिड्डियाँ
और वनमधु खाया करता था। *(2 [illegible]. 1:8, [illegible] 3:4)*
7 और यह प्रचार करता था, “मेरे
बाद वह आनेवाला है, जो मुझसे
शक्तिशाली है; मैं इस योग्य नहीं कि
झुककर उसके जूतों का फीता खोलूँ।
8 मैंने तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा
दिया है पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से
बपतिस्मा देगा।”

[illegible]

9 उन दिनों में यीशु ने गलील के
नासरत से आकर, यरदन में यूहन्ना से
बपतिस्मा लिया।
10 और जब वह पानी से निकलकर
ऊपर आया, तो तुरन्त उसने आकाश
को खुलते और आत्मा को कबूतर के
रूप में अपने ऊपर उतरते देखा।
11 और यह आकाशवाणी हुई, “तू
मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूँ।”

[illegible]

12 तब आत्मा ने तुरन्त उसको
जंगल की ओर भेजा।
13 और जंगल में चालीस दिन तक
शैतान ने उसकी परीक्षा की; और वह
वन-पशुओं के साथ रहा; और स्वर्गदूत
उसकी सेवा करते रहे।

[illegible]

14 यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद
यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के
राज्य का सुसमाचार प्रचार किया।
15 और कहा, **“समय पूरा हुआ है,
और परमेश्वर का राज्य *[illegible]*†; मन फिराओ और सुसमाचार पर
विश्वास करो।”**

[illegible]

16 *[illegible]*‡ के किनारे-
किनारे जाते हुए, उसने शमौन और
उसके भाई अन्द्रियास को झील में
जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुए
थे।
17 और यीशु ने उनसे कहा, **“मेरे
पीछे चले आओ; मैं तुम को मनुष्यों
के पकड़नेवाले बनाऊँगा।”**
18 वे तुरन्त जालों को छोड़कर
उसके पीछे हो लिए।
19 और कुछ आगे बढ़कर, उसने
जब्दी के पुत्र याकूब, और उसके भाई
यूहन्ना को, नाव पर जालों को सुधारते
देखा।

---

* **1:5** *[illegible]:* पश्चिम आसिया में मृत सागर की ओर बहती हुई 251 किलोमीटर (156 मील) लम्बी नदी है। † **1:15** *[illegible]:* सुसमाचार प्रचार के लिये और परमेश्वर के राज्य को प्रकट करने लिए नियुक्त समय आ गया हैं। ‡ **1:16** *[illegible]:* यह झील इस्राएल के उत्तर-पूर्व में यरदन घाटी की दरार में स्थित हैं।

20 उसने तुरन्त उन्हें बुलाया; और
वे अपने पिता जब्दी को मजदूरों के
साथ नाव पर छोड़कर, उसके पीछे हो
लिए।

[illegible]

21 और वे कफरनहूम में आए, और
वह तुरन्त सब्त के दिन आराधनालय
में जाकर उपदेश करने लगा।
22 और लोग उसके उपदेश
से चकित हुए; क्योंकि वह उन्हें
शास्त्रियों की तरह नहीं, परन्तु
अधिकार के साथ उपदेश देता था।
23 और उसी समय, उनके
आराधनालय में एक मनुष्य था,
जिसमें एक अशुद्ध आत्मा थी।
24 उसने चिल्लाकर कहा, "हे यीशु
नासरी, हमें तुझ से क्या काम? क्या
तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे
जानता हूँ, तू कौन है? परमेश्वर का
पवित्र जन!"
25 यीशु ने उसे डाँटकर कहा, **"चुप
रह; और उसमें से बाहर निकल जा।"**
26 तब अशुद्ध आत्मा उसको
मरोड़कर, और बड़े शब्द से चिल्लाकर
उसमें से निकल गई।
27 इस पर सब लोग आश्चर्य करते
हुए आपस में वाद-विवाद करने लगे
"यह क्या बात है? यह तो कोई नया
उपदेश है! वह अधिकार के साथ
अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है,
और वे उसकी आज्ञा मानती हैं।"
28 और उसका नाम तुरन्त गलील
के आस-पास के सारे प्रदेश में फैल
गया।

[illegible]

29 और वह तुरन्त आराधनालय में
से निकलकर, याकूब और यूहन्ना के
साथ शमौन और अन्द्रियास के घर
आया।
30 और शमौन की सास तेज बुखार
से पीड़ित थी, और उन्होंने तुरन्त
उसके विषय में उससे कहा।
31 तब उसने पास जाकर उसका
हाथ पकड़ के उसे उठाया; और उसका
बुखार उस पर से उतर गया, और वह
उनकी सेवा-टहल करने लगी।
32 संध्या के समय जब सूर्य डूब
गया तो लोग सब बीमारों को और
उन्हें, जिनमें दुष्टात्माएँ थीं, उसके
पास लाए।
33 और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा
हुआ।
34 और उसने बहुतों को जो नाना
प्रकार की बीमारियों से दुःखी थे, चंगा
किया; और बहुत से दुष्टात्माओं को
निकाला; और दुष्टात्माओं को बोलने
न दिया, क्योंकि वे उसे पहचानती थीं।

[illegible]

35 और भोर को दिन निकलने से
बहुत पहले, वह उठकर निकला, और
एक जंगली स्थान में गया और वहाँ
प्रार्थना करने लगा।
36 तब शमौन और उसके साथी
उसकी खोज में गए।
37 जब वह मिला, तो उससे कहा;
"सब लोग तुझे ढूँढ़ रहे हैं।"
38 यीशु ने उनसे कहा, **"आओ; हम
और कहीं आस-पास की बस्तियों में
जाएँ, कि मैं वहाँ भी प्रचार करूँ,
क्योंकि मैं इसलिए निकला हूँ।"**
39 और वह सारे गलील में उनके
आराधनालयों में जा जाकर प्रचार
करता और दुष्टात्माओं को निकालता
रहा।

[illegible]

40 एक कोढ़ी ने उसके पास आकर,
उससे विनती की, और उसके सामने

घुटने टेककर, उससे कहा, “यदि तू
चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।”
41 उसने उस पर तरस खाकर हाथ
बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, **“मैं
चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा।”**
42 और तुरन्त उसका कोढ़ जाता
रहा, और वह शुद्ध हो गया।
43 तब उसने उसे कड़ी चेतावनी
देकर तुरन्त विदा किया,
44 और उससे कहा, **“देख, किसी से
कुछ मत कहना, परन्तु जाकर अपने
आपको याजक को दिखा, और अपने
शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने
ठहराया है उसे भेंट चढ़ा, कि उन पर
गवाही हो।”** ***([illegible]. 14:1-32)***
45 परन्तु वह बाहर जाकर इस
बात को बहुत प्रचार करने और यहाँ
तक फैलाने लगा, कि यीशु फिर
खुल्लमखुल्ला नगर में न जा सका,
परन्तु बाहर जंगली स्थानों में रहा;
और चारों ओर से लोग उसके पास
आते रहे।

2

[illegible]

1 कई दिन के बाद यीशु फिर
कफरनहूम में आया और सुना गया, कि
वह घर में है।
2 फिर इतने लोग इकट्ठे हुए, कि द्वार
के पास भी जगह नहीं मिली; और वह
उन्हें वचन सुना रहा था।
3 और लोग एक लकवे के मारे हुए
को चार मनुष्यों से उठवाकर उसके
पास ले आए।
4 परन्तु जब वे भीड़ के कारण उसके
निकट न पहुँच सके, तो उन्होंने उस
छत को जिसके नीचे वह था, खोल
दिया और जब उसे उधेड़ चुके, तो उस
खाट को जिस पर लकवे का मारा हुआ
पड़ा था, लटका दिया।
5 यीशु ने, उनका विश्वास देखकर,
उस लकवे के मारे हुए से कहा, **“हे पुत्र,
तेरे पाप क्षमा हुए।”**
6 तब कई एक शास्त्री जो वहाँ बैठे
थे, अपने-अपने मन में विचार करने
लगे,
7 “यह मनुष्य क्यों ऐसा कहता है?
यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है!
परमेश्वर को छोड़ और कौन पाप क्षमा
कर सकता है?” ***([illegible]. 43:25)***
8 यीशु ने तुरन्त अपनी आत्मा में
जान लिया, कि वे अपने-अपने मन में
ऐसा विचार कर रहे हैं, और उनसे कहा,
**“तुम अपने-अपने मन में यह विचार
क्यों कर रहे हो?**
9 **सहज क्या है? क्या लकवे के मारे
से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए,
या यह कहना, कि उठ अपनी खाट
उठाकर चल फिर?**
10 परन्तु जिससे तुम जान लो कि
मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा
करने का भी अधिकार है।” उसने उस
लकवे के मारे हुए से कहा,
11 **“मैं तुझ से कहता हूँ, उठ, अपनी
खाट उठाकर अपने घर चला जा।”**
12 वह उठा, और तुरन्त खाट
उठाकर सब के सामने से निकलकर
चला गया; इस पर सब चकित हुए,
और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने
लगे, “हमने ऐसा कभी नहीं देखा।”

[illegible]

13 वह फिर निकलकर झील के
किनारे गया, और सारी भीड़ उसके
पास आई, और वह उन्हें उपदेश देने
लगा।
14 जाते हुए यीशु ने हलफईस के
पुत्र लेवी को चुंगी की चौकी पर बैठे
देखा, और उससे कहा, **“मेरे पीछे हो**

ले।" और वह उठकर, उसके पीछे हो लिया।

15 और वह उसके घर में भोजन करने बैठा; और बहुत से चुंगी लेनेवाले और पापी भी उसके और चेलों के साथ भोजन करने बैठे, क्योंकि वे बहुत से थे, और उसके पीछे हो लिये थे।

16 और शास्त्रियों और फरीसियों ने यह देखकर, कि वह तो पापियों और चुंगी लेनेवालों के साथ भोजन कर रहा है, उसके चेलों से कहा, "वह तो चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ खाता पीता है!"

17 यीशु ने यह सुनकर, उनसे कहा, **"भले चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है:** *[illegible]** ।"

[illegible]

18 यूहन्ना के चेले, और फरीसी उपवास करते थे; अतः उन्होंने आकर उससे यह कहा; "यूहन्ना के चेले और फरीसियों के चेले क्यों उपवास रखते हैं, परन्तु तेरे चेले उपवास नहीं रखते?"

19 यीशु ने उनसे कहा, **"जब तक दूल्हा बारातियों के साथ रहता है क्या वे उपवास कर सकते हैं? अतः जब तक दूल्हा उनके साथ है, तब तक वे उपवास नहीं कर सकते।**

20 **परन्तु वे दिन आएँगे, कि** *[illegible]*† **; उस समय वे उपवास करेंगे।**

21 **"नये कपड़े का पैबन्द पुराने वस्त्र पर कोई नहीं लगाता; नहीं तो वह पैबन्द उसमें से कुछ खींच लेगा, अर्थात् नया, पुराने से, और अधिक फट जाएगा।**

22 **नये दाखरस को पुरानी मशकों में कोई नहीं रखता, नहीं तो दाखरस मशकों को फाड़ देगा, और दाखरस और मशकें दोनों नष्ट हो जाएँगी; परन्तु दाख का नया रस नई मशकों में भरा जाता है।"**

[illegible]

23 और ऐसा हुआ कि वह सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था; और उसके चेले चलते हुए बालें तोड़ने लगे। ***([illegible]. 23:25)***

24 तब फरीसियों ने उससे कहा, "देख, ये सब्त के दिन वह काम क्यों करते हैं जो उचित नहीं?"

25 उसने उनसे कहा, **"क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा, कि जब दाऊद को आवश्यकता हुई और जब वह और उसके साथी भूखे हुए, तब उसने क्या किया था?**

26 **उसने क्यों अबियातार महायाजक के समय, परमेश्वर के भवन में जाकर, भेंट की रोटियाँ खाईं, जिसका खाना याजकों को छोड़ और किसी को भी उचित नहीं, और अपने साथियों को भी दीं?"**

27 **और उसने उनसे कहा, "सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य** *[illegible]*‡ **।**

28 **इसलिए मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी है।"**

3

[illegible]

* **2:17** *[illegible], ... [illegible]:* यहाँ पर यीशु अपने आने के उद्देश्य को दर्शाता है, वह पापियों, बीमारों और नाश होती हुई दुनिया को बचाने के लिए आया था। † **2:20** *[illegible]:* यीशु अपने आपके बारे में बात कर रहा था ‡ **2:27** *[illegible]:* कठिन परिश्रम से, देख-भाल और चिंताओं से विश्राम करने के लिये बनाया गया था इस तरह का मनुष्यों के लिये प्रावधान था कि वह अपने शरीर को ताजा कर सके।

1 और वह फिर आराधनालय में गया; और वहाँ एक मनुष्य था, जिसका हाथ सूख गया था।

2 और वे उस पर दोष लगाने के लिये उसकी घात में लगे हुए थे, कि देखें, वह सब्त के दिन में उसे चंगा करता है कि नहीं।

3 उसने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा, **“बीच में खड़ा हो।”**

4 और उनसे कहा, **“क्या सब्त के दिन भला करना उचित है या बुरा करना, प्राण को बचाना या मारना?”** पर वे चुप रहे।

5 और उसने उनके मन की कठोरता से उदास होकर, उनको क्रोध से चारों ओर देखा, और उस मनुष्य से कहा, **“अपना हाथ बढ़ा।”** उसने बढ़ाया, और उसका हाथ अच्छा हो गया।

6 तब फरीसी बाहर जाकर तुरन्त हेरोदियों के साथ उसके विरोध में सम्मति करने लगे, कि उसे किस प्रकार नाश करें।

[illegible]

7 और यीशु अपने चेलों के साथ झील की ओर चला गया: और गलील से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।

8 और यहूदिया, और यरूशलेम और इदूमिया से, और यरदन के पार, और सोर और सीदोन के आस-पास से एक बड़ी भीड़ यह सुनकर, कि वह कैसे अचम्भे के काम करता है, उसके पास आई।

9 और उसने अपने चेलों से कहा, “भीड़ के कारण एक छोटी नाव मेरे लिये तैयार रहे ताकि वे मुझे दबा न सकें।”

10 क्योंकि उसने बहुतों को चंगा किया था; इसलिए जितने लोग रोग से ग्रसित थे, उसे छूने के लिये उस पर गिरे पड़ते थे।

11 और अशुद्ध आत्माएँ भी, जब उसे देखतीं थीं, तो उसके आगे गिर पड़ती थीं, और चिल्लाकर कहती थीं कि तू परमेश्वर का पुत्र है।

12 और उसने उन्हें कड़ी चेतावनी दी कि, मुझे प्रगट न करना।

[illegible]

13 फिर वह पहाड़ पर चढ़ गया, और जिन्हें वह चाहता था उन्हें अपने पास बुलाया; और वे उसके पास चले आए।

14 तब उसने बारह को नियुक्त किया, कि वे उसके साथ-साथ रहें, और वह उन्हें भेजे, कि प्रचार करें।

15 और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार रखें।

16 और वे ये हैं शमौन जिसका नाम उसने पतरस रखा।

17 और जब्दी का पुत्र याकूब, और याकूब का भाई यूहन्ना, जिनका नाम उसने *[illegible]**, अर्थात् गर्जन के पुत्र रखा।

18 और अन्द्रियास, और फिलिप्पुस, और बरतुल्मै, और मत्ती, और थोमा, और हलफईस का पुत्र याकूब; और तद्दै, और शमौन कनानी।

19 और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे पकड़वा भी दिया।

[illegible]

20 और वह घर में आया और ऐसी भीड़ इकट्ठी हो गई, कि वे रोटी भी न खा सके।

21 जब उसके कुटुम्बियों ने यह सुना, तो उसे पकड़ने के लिये निकले; क्योंकि कहते थे, कि उसकी सुध-बुध ठिकाने पर नहीं है।

22 और शास्त्री जो यरूशलेम से आए थे, यह कहते थे, “उसमें शैतान

---

* **3:17** *[illegible]*: यह शब्द दो इब्रानी शब्दों से बना है जो “गर्जन के पुत्र” को दर्शाता है।

है," और यह भी, "वह दुष्टात्माओं के
सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं
को निकालता है।"
23 और वह उन्हें पास बुलाकर,
उनसे [illegible]† में कहने
लगा, **"शैतान कैसे शैतान को निकाल
सकता है?**
24 **और यदि किसी राज्य में फूट
पड़े, तो वह राज्य कैसे स्थिर रह
सकता है?**
25 **और यदि किसी घर में फूट पड़े,
तो वह घर क्या स्थिर रह सकेगा?**
26 **और यदि शैतान अपना ही
विरोधी होकर अपने में फूट डाले, तो
वह क्या बना रह सकता है? उसका
तो अन्त ही हो जाता है।**
27 **"किन्तु कोई मनुष्य किसी
बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल
लूट नहीं सकता, जब तक कि वह
पहले उस बलवन्त को न बाँध ले; और
तब उसके घर को लूट लेगा।**
28 **"मैं तुम से सच कहता हूँ, कि
मनुष्यों के सब पाप और निन्दा जो वे
करते हैं, क्षमा की जाएगी।**
29 **परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के
विरुद्ध निन्दा करे, वह कभी भी क्षमा
न किया जाएगा: वरन् वह अनन्त
पाप का अपराधी ठहरता है।"**
30 क्योंकि वे यह कहते थे, कि उसमें
अशुद्ध आत्मा है।

[illegible]

31 और उसकी माता और उसके भाई
आए, और बाहर खड़े होकर उसे बुलवा
भेजा।
32 और भीड़ उसके आस-पास बैठी
थी, और उन्होंने उससे कहा, "देख,
तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे
ढूँढ़ते हैं।"
33 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, **"मेरी
माता और मेरे भाई कौन हैं?"**
34 और उन पर जो उसके आस-पास
बैठे थे, दृष्टि करके कहा, **"देखो, मेरी
माता और मेरे भाई यह हैं।**
35 **क्योंकि जो [illegible]‡, वही मेरा
भाई, और बहन और माता है।"**

4

[illegible]

1 यीशु फिर झील के किनारे उपदेश
देने लगा: और ऐसी बड़ी भीड़ उसके
पास इकट्ठी हो गई, कि वह झील में
एक नाव पर चढ़कर बैठ गया, और
सारी भीड़ भूमि पर झील के किनारे
खड़ी रही।
2 और वह उन्हें दृष्टान्तों में बहुत
सारी बातें सिखाने लगा, और अपने
उपदेश में उनसे कहा,
3 **"सुनो! देखो, एक बोनेवाला,
बीज बोने के लिये निकला।**
4 **और बोते समय कुछ तो मार्ग के
किनारे गिरा और पक्षियों ने आकर
उसे चुग लिया।**
5 **और कुछ पत्थरीली भूमि पर
गिरा जहाँ उसको बहुत मिट्टी न
मिली, और नरम मिट्टी मिलने के
कारण जल्द उग आया।**
6 **और जब सूर्य निकला, तो जल
गया, और जड़ न पकड़ने के कारण
सूख गया।**
7 **और कुछ तो झाड़ियों में गिरा,
और झाड़ियों ने बढ़कर उसे दबा
दिया, और वह फल न लाया।**

† **3:23** [illegible]: मत्ती 13:3 की टिप्पणी देखिए ‡ **3:35** [illegible]: यीशु सम्बंधों के क्रम में परिवर्तन करता हैं और दिखाता है कि सच्ची रिश्तेदारी सिर्फ माँस और रक्त का मामला नहीं है। जो कोई भी परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है वह परमेश्वर का एक दोस्त और उसके परिवार का एक सदस्य है।

8 परन्तु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा; और वह उगा, और बढ़कर फलवन्त हुआ; और कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा और कोई सौ गुणा फल लाया।”

9 और उसने कहा, “जिसके पास सुनने के लिये कान हों वह सुन ले।”

[illegible] [illegible] [illegible]

10 जब वह अकेला रह गया, तो उसके साथियों ने उन बारह समेत उससे इन दृष्टान्तों के विषय में पूछा।

11 उसने उनसे कहा, “तुम को तो परमेश्वर के राज्य के भेद की समझ दी गई है, परन्तु बाहरवालों के लिये सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं।

12 इसलिए कि

वे देखते हुए देखें और उन्हें दिखाई न
पड़े
और सुनते हुए सुनें भी और न समझें;
ऐसा न हो कि वे फिरें, और क्षमा किए
जाएँ।”*([illegible]. 6:9,10, [illegible]. 5:21)*

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

13 फिर उसने उनसे कहा, “क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते? तो फिर और सब दृष्टान्तों को कैसे समझोगे?

14 बोनेवाला *[illegible]** बोता है।

15 जो मार्ग के किनारे के हैं जहाँ वचन बोया जाता है, ये वे हैं, कि जब उन्होंने सुना, तो शैतान तुरन्त आकर वचन को जो उनमें बोया गया था, उठा ले जाता है।

16 और वैसे ही जो पत्थरीली भूमि पर बोए जाते हैं, ये वे हैं, कि जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं।

17 परन्तु अपने भीतर जड़ न रखने के कारण वे थोड़े ही दिनों के लिये रहते हैं; इसके बाद जब वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खाते हैं।

18 और जो झाड़ियों में बोए गए ये वे हैं जिन्होंने वचन सुना,

19 और संसार की चिन्ता, और धन का धोखा, और वस्तुओं का लोभ उनमें समाकर वचन को दबा देता है और वह निष्फल रह जाता है।

20 और जो अच्छी भूमि में बोए गए, ये वे हैं, जो वचन सुनकर ग्रहण करते और फल लाते हैं, कोई तीस गुणा, कोई साठ गुणा, और कोई सौ गुणा।”

[illegible] [illegible] [illegible]

21 और उसने उनसे कहा, “क्या दीये को इसलिए लाते हैं कि पैमाने या खाट के नीचे रखा जाए? क्या इसलिए नहीं, कि दीवट पर रखा जाए?

22 क्योंकि कोई वस्तु छिपी नहीं, परन्तु इसलिए कि प्रगट हो जाए; और न कुछ गुप्त है, पर इसलिए कि प्रगट हो जाए।

23 यदि किसी के सुनने के कान हों, तो सुन ले।”

24 फिर उसने उनसे कहा, “चौकस रहो, कि क्या सुनते हो? जिस नाप से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा, और तुम को अधिक दिया जाएगा।

25 क्योंकि जिसके पास है, उसको दिया जाएगा; परन्तु जिसके पास नहीं है उससे वह भी जो उसके पास है; ले लिया जाएगा।”

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

---

* **4:14** *[illegible]:* परमेश्वर के वचन को दर्शाता है। जिस तरह से परमेश्वर अपने वचन का उपयोग करता है वह मनुष्य के प्रयासों से पूरी तरह से स्वतंत्र है।

26 फिर उसने कहा, **“परमेश्वर का
राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि
पर बीज छींटे,**
27 **और रात को सोए, और दिन को
जागे और वह बीज ऐसे उगें और बढ़े
कि वह न जाने।**
28 **पृथ्वी आप से आप फल लाती है
पहले अंकुर, तब बालें, और तब बालों
में तैयार दाना।**
29 **परन्तु जब दाना पक जाता है,
तब वह तुरन्त हँसिया लगाता है,
क्योंकि कटनी आ पहुँची है।”***([illegible]. 3:13)*

[illegible]

30 फिर उसने कहा, **“हम परमेश्वर
के राज्य की उपमा किस से दें, और
किस दृष्टान्त से उसका वर्णन करें?**
31 **वह राई के दाने के समान हैं; कि
जब भूमि में बोया जाता है तो भूमि के
सब बीजों से छोटा होता है।**
32 **परन्तु जब बोया गया, तो
उगकर सब साग-पात से बड़ा हो
जाता है, और उसकी ऐसी बड़ी
डालियाँ निकलती हैं, कि आकाश के
पक्षी उसकी छाया में बसेरा कर सकते
हैं।”**
33 और वह उन्हें इस प्रकार के बहुत
से दृष्टान्त दे देकर उनकी समझ के
अनुसार वचन सुनाता था।
34 और बिना दृष्टान्त कहे उनसे
कुछ भी नहीं कहता था; परन्तु एकान्त
में वह अपने निज चेलों को सब बातों
का अर्थ बताता था।

[illegible]

35 उसी दिन जब साँझ हुई, तो उसने
चेलों से कहा, **“आओ, हम पार चलें।”**
36 और वे भीड़ को छोड़कर जैसा
वह था, वैसा ही उसे नाव पर साथ ले
चले; और उसके साथ, और भी नावें
थीं।
37 तब बड़ी आँधी आई, और लहरें
नाव पर यहाँ तक लगीं, कि वह अब
पानी से भरी जाती थी।
38 और वह आप पिछले भाग में
गद्दी पर सो रहा था; तब उन्होंने उसे
जगाकर उससे कहा, “हे गुरु, क्या तुझे
चिन्ता नहीं, कि हम नाश हुए जाते
हैं?”
39 तब उसने उठकर आँधी को डाँटा,
और पानी से कहा, **“शान्त रह, थम
जा!”** और आँधी थम गई और बड़ा
चैन हो गया।
40 और उनसे कहा, **“तुम क्यों डरते
हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास
नहीं?”***([illegible]. 107:29)*
41 और वे बहुत ही डर गए और
आपस में बोले, “यह कौन है, कि आँधी
और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं?”

5

[illegible]

1 वे झील के पार गिरासेनियों के देश
में पहुँचे,
2 और जब वह नाव पर से उतरा
तो तुरन्त एक मनुष्य जिसमें अशुद्ध
आत्मा थी, कब्रों से निकलकर उसे
मिला।
3 वह कब्रों में रहा करता था और
कोई उसे जंजीरों से भी न बाँध सकता
था,
4 क्योंकि वह बार बार बेड़ियों और
जंजीरों से बाँधा गया था, पर उसने
जंजीरों को तोड़ दिया, और बेड़ियों के
टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे, और कोई उसे
वश में नहीं कर सकता था।
5 वह लगातार रात-दिन कब्रों और
पहाड़ों में चिल्लाता, और अपने को
पत्थरों से घायल करता था।

6 वह यीशु को दूर ही से देखकर
दौड़ा, और उसे प्रणाम किया।
7 और ऊँचे शब्द से चिल्लाकर
कहा, "हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर
के पुत्र, मुझे तुझ से क्या काम? मैं
तुझे परमेश्वर की शपथ देता हूँ, कि
मुझे पीड़ा न दे।" ***(▯▯▯▯▯ 8:29, 1 ▯▯▯▯. 17:18)***
8 क्योंकि उसने उससे कहा था,
**"हे अशुद्ध आत्मा, इस मनुष्य में से
निकल आ।"**
9 यीशु ने उससे पूछा, **"तेरा क्या
नाम है?"** उसने उससे कहा, "*▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯*[*]; क्योंकि हम बहुत
हैं।"
10 और उसने उससे बहुत विनती
की, "हमें इस देश से बाहर न भेज।"
11 वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक
बड़ा झुण्ड चर रहा था।
12 और उन्होंने उससे विनती करके
कहा, "हमें उन सूअरों में भेज दे, कि
हम उनके भीतर जाएँ।"
13 अतः उसने उन्हें आज्ञा दी और
अशुद्ध आत्मा निकलकर सूअरों के
भीतर घुस गई और झुण्ड, जो कोई दो
हजार का था, कड़ाड़े पर से झपटकर
झील में जा पड़ा, और डूब मरा।
14 और उनके चरवाहों ने भागकर
नगर और गाँवों में समाचार सुनाया,
और जो हुआ था, लोग उसे देखने
आए।
15 यीशु के पास आकर, वे उसको
जिसमें दुष्टात्माएँ समाई थीं, कपड़े
पहने और सचेत बैठे देखकर, डर गए।
16 और देखनेवालों ने उसका जिसमें
दुष्टात्माएँ थीं, और सूअरों का पूरा
हाल, उनको कह सुनाया।
17 और वे उससे विनती करके कहने
लगे, कि हमारी सीमा से चला जा।
18 और जब वह नाव पर चढ़ने
लगा, तो वह जिसमें पहले दुष्टात्माएँ
थीं, उससे विनती करने लगा, "मुझे
अपने साथ रहने दे।"
19 परन्तु उसने उसे आज्ञा न दी,
और उससे कहा, **"अपने घर जाकर
अपने लोगों को बता, कि तुझ पर दया
करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम
किए हैं।"**
20 वह जाकर दिकापुलिस में इस
बात का प्रचार करने लगा, कि यीशु ने
मेरे लिये कैसे बड़े काम किए; और सब
अचम्भा करते थे।

▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯

21 जब यीशु फिर नाव से पार गया,
तो एक बड़ी भीड़ उसके पास इकट्ठी हो
गई; और वह झील के किनारे था।
22 और याईर नामक *▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯*[†] में से एक आया, और
उसे देखकर, उसके पाँवों पर गिरा।
23 और उसने यह कहकर बहुत
विनती की, "मेरी छोटी बेटी मरने पर
है: तू आकर उस पर हाथ रख, कि वह
चंगी होकर जीवित रहे।"
24 तब वह उसके साथ चला; और
बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, यहाँ तक
कि लोग उस पर गिरे पड़ते थे।
25 और एक स्त्री, जिसको बारह वर्ष
से लहू बहने का रोग था।
26 और जिसने बहुत वैद्यों से बड़ा
दुःख उठाया और अपना सब माल
व्यय करने पर भी कुछ लाभ न उठाया
था, परन्तु और भी रोगी हो गई थी।

---

* **5:9** *▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯:* सेना का अर्थ "गिनती में बहुत अधिक" † **5:22** *▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯:* प्राचीनों में से एक जो आराधनालय की देख-भाल करने में प्रतिबद्ध था, आराधनालय का अर्थ है एक यहूदी आराधना घर, जिसमें अक्सर धार्मिक निर्देश के लिए सुविधाएँ होती हैं।।

27 यीशु की चर्चा सुनकर, भीड़ में उसके पीछे से आई, और उसके वस्त्र को छू लिया,

28 क्योंकि वह कहती थी, “यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूँगी, तो चंगी हो जाऊँगी।”

29 और तुरन्त उसका लहू बहना बन्द हो गया; और उसने अपनी देह में जान लिया, कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई हूँ।

30 यीशु ने तुरन्त अपने में जान लिया, कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]‡, और भीड़ में पीछे फिरकर पूछा, **“मेरा वस्त्र किसने छुआ?”**

31 उसके चेलों ने उससे कहा, “तू देखता है, कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है, और तू कहता है; कि**किसने मुझे छुआ?”**

32 तब उसने उसे देखने के लिये जिसने यह काम किया था, चारों ओर दृष्टि की।

33 तब वह स्त्री यह जानकर, कि उसके साथ क्या हुआ है, डरती और काँपती हुई आई, और उसके पाँवों पर गिरकर, उससे सब हाल सच-सच कह दिया।

34 उसने उससे कहा, **“पुत्री, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है: कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह।”*(***[illegible]** ***8:48)***

35 वह यह कह ही रहा था, कि आराधनालय के सरदार के घर से लोगों ने आकर कहा, “तेरी बेटी तो मर गई; अब गुरु को क्यों दुःख देता है?”

36 जो बात वे कह रहे थे, उसको यीशु ने अनसुनी करके, आराधनालय के सरदार से कहा, **“मत डर; केवल विश्वास रख।”**

37 और उसने पतरस और याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़, और किसी को अपने साथ आने न दिया।

38 और आराधनालय के सरदार के घर में पहुँचकर, उसने लोगों को बहुत रोते और चिल्लाते देखा।

39 तब उसने भीतर जाकर उनसे कहा, **“तुम क्यों हल्ला मचाते और रोते हो? लड़की मरी नहीं, परन्तु सो रही है।”**

40 वे उसकी हँसी करने लगे, परन्तु उसने सब को निकालकर लड़की के माता-पिता और अपने साथियों को लेकर, भीतर जहाँ लड़की पड़ी थी, गया।

41 और लड़की का हाथ पकड़कर उससे कहा, “[illegible] [illegible]§”; जिसका अर्थ यह है **“हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ।”**

42 और लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी; क्योंकि वह बारह वर्ष की थी। और इस पर लोग बहुत चकित हो गए।

43 फिर उसने उन्हें चेतावनी के साथ आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए और कहा; “इसे कुछ खाने को दो।”

6

[illegible]

1 वहाँ से निकलकर वह अपने देश में आया, और उसके चेले उसके पीछे हो लिए।

2 सब्त के दिन वह आराधनालय में उपदेश करने लगा; और बहुत लोग सुनकर चकित हुए और कहने लगे, “इसको ये बातें कहाँ से आ गई? और यह कौन सा ज्ञान है जो उसको दिया

---

‡ **5:30** *[illegible]:* चंगाई करने की सामर्थ्य। § **5:41** *[illegible]:* का अर्थ है, लड़की उठ, या छोटी लड़की उठ।

गया है? और कैसे सामर्थ्य के काम
इसके हाथों से प्रगट होते हैं?
3 क्या यह वही बढ़ई नहीं, जो
मरियम का पुत्र, और याकूब और
योसेस और यहूदा और शमौन का भाई
है? और क्या उसकी बहनें यहाँ हमारे
बीच में नहीं रहतीं?" इसलिए उन्होंने
उसके विषय में ठोकर खाई।
4 यीशु ने उनसे कहा,
**"भविष्यद्वक्ता का अपने देश और
अपने कुटुम्ब और अपने घर को छोड़
और कहीं भी निरादर नहीं होता।"**
5 और वह वहाँ कोई सामर्थ्य का
काम न कर सका, केवल थोड़े बीमारों
पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।
6 और उसने उनके अविश्वास पर
आश्चर्य किया और चारों ओर से गाँवों
में उपदेश करता फिरा।

[illegible]

7 और वह बारहों को अपने पास
बुलाकर उन्हें दो-दो करके भेजने
लगा; और उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर
अधिकार दिया।
8 और उसने उन्हें आज्ञा दी, कि
**"मार्ग के लिये लाठी छोड़ और कुछ
न लो; न तो रोटी, न झोली, न पटुके
में पैसे।**
9 **परन्तु जूतियाँ पहनो और दो-दो
कुर्ते न पहनो।"**
10 और उसने उनसे कहा, **"जहाँ
कहीं तुम किसी घर में उतरो, तो जब
तक वहाँ से विदा न हो, तब तक उसी
घर में ठहरे रहो।**
11 **जिस स्थान के लोग तुम्हें ग्रहण
न करें, और तुम्हारी न सुनें, वहाँ से
चलते ही अपने तलवों की धूल झाड़
डालो, कि उन पर गवाही हो।"**
12 और उन्होंने जाकर प्रचार किया,
कि मन फिराओ,
13 और बहुत सी दुष्टात्माओं को
निकाला, और बहुत [illegible][*] उन्हें चंगा किया।

[illegible]

14 और हेरोदेस राजा ने उसकी
चर्चा सुनी, क्योंकि उसका नाम फैल
गया था, और उसने कहा, कि "यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाला मरे हुओं में से जी
उठा है, इसलिए उससे ये सामर्थ्य के
काम प्रगट होते हैं।"
15 और औरों ने कहा, "[illegible][†]", परन्तु औरों
ने कहा, "भविष्यद्वक्ता या
भविष्यद्वक्ताओं में से किसी एक के
समान है।"
16 हेरोदेस ने यह सुनकर कहा,
"जिस यूहन्ना का सिर मैंने कटवाया
था, वही जी उठा है।"
17 क्योंकि हेरोदेस ने आप अपने
भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास
के कारण, जिससे उसने विवाह किया
था, लोगों को भेजकर यूहन्ना को
पकड़वाकर बन्दीगृह में डाल दिया
था।
18 क्योंकि यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा
था, "अपने भाई की पत्नी को रखना
तुझे उचित नहीं।" ***([illegible]. 18:16, [illegible]. 20:21)***
19 इसलिए हेरोदियास उससे बैर
रखती थी और यह चाहती थी, कि उसे
मरवा डाले, परन्तु ऐसा न हो सका,
20 क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना को धर्मी
और पवित्र पुरुष जानकर उससे डरता
था, और उसे बचाए रखता था, और

---

* **6:13** *[illegible]:* बीमारी के मामलों में तेल से अभिषेक यहूदियों के बीच में यह आम उपयोग था। † **6:15** *[illegible]:* मत्ती 11:14 की टिप्पणी देखिए।

उसकी सुनकर बहुत घबराता था, पर
आनन्द से सुनता था।
21 और ठीक अवसर पर जब हेरोदेस
ने अपने जन्मदिन में अपने प्रधानों
और सेनापतियों, और गलील के बड़े
लोगों के लिये भोज किया।
22 और उसी हेरोदियास की बेटी
भीतर आई, और नाचकर हेरोदेस को
और उसके साथ बैठनेवालों को प्रसन्न
किया; तब राजा ने लड़की से कहा, "तू
जो चाहे मुझसे माँग मैं तुझे दूँगा।"
23 और उसने शपथ खाई, "मैं अपने
आधे राज्य तक जो कुछ तू मुझसे
माँगेगी मैं तुझे दूँगा।" ***([illegible].***
5:3,6, [illegible]. 7:2)
24 उसने बाहर जाकर अपनी माता
से पूछा, "मैं क्या माँगू?" वह बोली,
"यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर।"
25 वह तुरन्त राजा के पास भीतर
आई, और उससे विनती की, "मैं
चाहती हूँ, कि तू अभी यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाले का सिर एक थाल
में मुझे मँगवा दे।"
26 तब राजा बहुत उदास हुआ,
परन्तु अपनी शपथ के कारण और साथ
बैठनेवालों के कारण उसे टालना न
चाहा।
27 और राजा ने तुरन्त एक सिपाही
को आज्ञा देकर भेजा, कि उसका सिर
काट लाए।
28 उसने जेलखाने में जाकर उसका
सिर काटा, और एक थाल में रखकर
लाया और लड़की को दिया, और
लड़की ने अपनी माँ को दिया।
29 यह सुनकर उसके चेले आए, और
उसके शव को उठाकर कब्र में रखा।

[illegible]

30 प्रेरितों ने यीशु के पास इकट्ठे
होकर, जो कुछ उन्होंने किया, और
सिखाया था, सब उसको बता दिया।
31 उसने उनसे कहा, **"तुम आप
अलग किसी एकान्त स्थान में आकर
थोड़ा विश्राम करो।"** क्योंकि बहुत
लोग आते-जाते थे, और उन्हें खाने का
अवसर भी नहीं मिलता था।
32 इसलिए वे नाव पर चढ़कर,
सुनसान जगह में अलग चले गए।
33 और बहुतों ने उन्हें जाते देखकर
पहचान लिया, और सब नगरों से इकट्ठे
होकर वहाँ पैदल दौड़े और उनसे पहले
जा पहुँचे।
34 उसने उतरकर बड़ी भीड़ देखी,
और उन पर तरस खाया, क्योंकि वे
उन भेड़ों के समान थे, जिनका कोई
रखवाला न हो; और वह उन्हें बहुत सी
बातें सिखाने लगा। ***(2 [illegible]. 18:16,***
1 [illegible]. 22:17)
35 जब दिन बहुत ढल गया, तो
उसके चेले उसके पास आकर कहने
लगे, "यह सुनसान जगह है, और दिन
बहुत ढल गया है।
36 उन्हें विदा कर, कि चारों ओर के
गाँवों और बस्तियों में जाकर, अपने
लिये कुछ खाने को मोल लें।"
37 उसने उन्हें उत्तर दिया, **"तुम
ही उन्हें खाने को दो।"** उन्होंने उससे
कहा, "क्या हम दो सौ दीनार की
रोटियाँ मोल लें, और उन्हें खिलाएँ?"
38 उसने उनसे कहा, **"जाकर देखो
तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?"**
उन्होंने मालूम करके कहा, "पाँच रोटी
और दो मछली भी।"
39 तब उसने उन्हें आज्ञा दी, कि सब
को हरी घास पर समूह में बैठा दो।
40 वे सौ-सौ और पचास-पचास
करके समूह में बैठ गए।
41 और उसने उन पाँच रोटियों को
और दो मछलियों को लिया, और स्वर्ग
की ओर देखकर धन्यवाद किया और
रोटियाँ तोड़-तोड़कर चेलों को देता

गया, कि वे लोगों को परोसें, और वे
दो मछलियाँ भी उन सब में बाँट दीं।
42 और सब खाकर तृप्त हो गए,
43 और उन्होंने टुकड़ों से बारह
टोकरियाँ भरकर उठाई, और कुछ
मछलियों से भी।
44 जिन्होंने रोटियाँ खाईं, वे पाँच
हजार पुरुष थे।

[illegible]

45 तब उसने तुरन्त अपने चेलों को
विवश किया कि वे नाव पर चढ़कर
उससे पहले उस पार बैतसैदा को चले
जाएँ, जब तक कि वह लोगों को विदा
करे।
46 और उन्हें विदा करके पहाड़ पर
प्रार्थना करने को गया।
47 और जब साँझ हुई, तो नाव झील
के बीच में थी, और वह अकेला भूमि
पर था।
48 और जब उसने देखा, कि वे खेते-
खेते घबरा गए हैं, क्योंकि हवा उनके
विरुद्ध थी, तो रात के चौथे पहर के
निकट वह झील पर चलते हुए उनके
पास आया; और उनसे आगे निकल
जाना चाहता था।
49 परन्तु उन्होंने उसे झील पर
चलते देखकर समझा, कि भूत है, और
चिल्ला उठे,
50 क्योंकि सब उसे देखकर घबरा
गए थे। पर उसने तुरन्त उनसे बातें
की और कहा, **"धैर्य रखो: मैं हूँ; डरो
मत।"**
51 तब वह उनके पास नाव पर
आया, और हवा थम गई: वे बहुत ही
आश्चर्य करने लगे।
52 क्योंकि वे उन रोटियों के विषय
में न समझे थे परन्तु उनके मन कठोर
हो गए थे।

[illegible]

53 और वे पार उतरकर गन्नेसरत में
पहुँचे, और नाव घाट पर लगाई।
54 और जब वे नाव पर से उतरे, तो
लोग तुरन्त उसको पहचानकर,
55 आस-पास के सारे देश में दौड़े,
और बीमारों को खाटों पर डालकर,
जहाँ-जहाँ समाचार पाया कि वह है,
वहाँ-वहाँ लिए फिरे।
56 और जहाँ कहीं वह गाँवों, नगरों,
या बस्तियों में जाता था, तो लोग
बीमारों को बाजारों में रखकर उससे
विनती करते थे, कि वह उन्हें अपने
वस्त्र के आँचल ही को छू लेने दे: और
जितने उसे छूते थे, सब चंगे हो जाते
थे।

7

[illegible]

1 तब फरीसी और कुछ शास्त्री जो
यरूशलेम से आए थे, उसके पास इकट्ठे
हुए,
2 और उन्होंने उसके कई चेलों को
अशुद्ध अर्थात् बिना हाथ धोए रोटी
खाते देखा।
3 (क्योंकि फरीसी और सब यहूदी,
प्राचीन परम्परा का पालन करते हैं और
जब तक भली भाँति हाथ नहीं धो लेते
तब तक नहीं खाते;
4 और बाजार से आकर, जब तक
स्नान नहीं कर लेते, तब तक नहीं
खाते; और बहुत सी अन्य बातें हैं, जो
उनके पास मानने के लिये पहुँचाई गई
हैं, जैसे कटोरों, और लोटों, और तांबे
के बरतनों को धोना-माँजना।)
5 इसलिए उन फरीसियों और
शास्त्रियों ने उससे पूछा, "तेरे चेले
क्यों पूर्वजों की परम्पराओं पर नहीं
चलते, और बिना हाथ धोए रोटी खाते
हैं?"
6 उसने उनसे कहा, **"यशायाह ने
तुम कपटियों के विषय में बहुत ठीक
भविष्यद्वाणी की; जैसा लिखा है:**

‘ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते
हैं,
पर उनका मन मुझसे दूर रहता
है।(*[illegible]. 29:13)*
7 **और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं,**
क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को
धर्मोपदेश करके सिखाते
हैं।’(*[illegible]. 29:13)*
8 **क्योंकि तुम परमेश्‍वर की आज्ञा**
को टालकर मनुष्यों की रीतियों को
मानते हो।”
9 और उसने उनसे कहा, **“तुम**
अपनी परम्पराओं को मानने के लिये
परमेश्‍वर की आज्ञा कैसी अच्छी तरह
टाल देते हो!
10 **क्योंकि मूसा ने कहा है, ‘अपने**
पिता और अपनी माता का आदर
कर;’ और ‘जो कोई पिता या माता
को बुरा कहे, वह अवश्य मार डाला
जाए।’(*[illegible]. 20:12, [illegible]. 5:16)*
11 **परन्तु तुम कहते हो कि यदि**
कोई अपने पिता या माता से कहे,
‘जो कुछ तुझे मुझसे लाभ पहुँच
सकता था, वह[illegible] *अर्थात्
संकल्प हो चुका।’
12 **“तो तुम उसको उसके पिता या**
उसकी माता की कुछ सेवा करने नहीं
देते।
13 **इस प्रकार तुम अपनी**
परम्पराओं से, जिन्हें तुम ने ठहराया
है, परमेश्‍वर का वचन टाल देते हो;
और ऐसे-ऐसे बहुत से काम करते हो।”

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

14 और उसने लोगों को अपने पास
बुलाकर उनसे कहा, **“तुम सब मेरी**
सुनो, और समझो।
15 **ऐसी तो कोई वस्तु नहीं जो**
मनुष्य में बाहर से समाकर उसे अशुद्ध
करे; परन्तु जो वस्तुएँ मनुष्य के भीतर
से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध करती
हैं।
16 **यदि किसी के सुनने के कान हों**
तो सुन ले।”
17 जब वह भीड़ के पास से घर में
गया, तो उसके चेलों ने इस दृष्टान्त
के विषय में उससे पूछा।
18 उसने उनसे कहा, **“क्या तुम भी**
ऐसे नासमझ हो? क्या तुम नहीं
समझते, कि जो वस्तु बाहर से मनुष्य
के भीतर जाती है, वह उसे अशुद्ध नहीं
कर सकती?
19 **क्योंकि वह उसके मन में नहीं,**
परन्तु पेट में जाती है, और शौच में
निकल जाती है?” यह कहकर उसने
सब भोजनवस्तुओं को शुद्ध ठहराया।
20 फिर उसने कहा, **“जो मनुष्य में**
से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध
करता है।
21 **क्योंकि भीतर से, अर्थात् मनुष्य**
के मन से, बुरे-बुरे विचार, व्यभिचार,
चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन,
22 **लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन,**
कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान, और
मूर्खता निकलती हैं।
23 **ये सब बुरी बातें भीतर ही से**
निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध
करती हैं।”

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

24 फिर वह वहाँ से उठकर सोर और
सीदोन के देशों में आया; और एक घर
में गया, और चाहता था, कि कोई न
जाने; परन्तु वह छिप न सका।

* **7:11** *[illegible]:* यह इब्रानी शब्द हैं, जिसका अर्थ “वह जो पास लाया गया” “परमेश्‍वर के लिए एक उपहार या भेंट।”

25 और तुरन्त एक स्त्री जिसकी
छोटी बेटी में अशुद्ध आत्मा थी,
उसकी चर्चा सुनकर आई, और उसके
पाँवों पर गिरी।
26 यह यूनानी और सुरूफिनीकी
जाति की थी; और उसने उससे विनती
की, कि मेरी बेटी में से दुष्टात्मा
निकाल दे।
27 उसने उससे कहा, **“पहले लड़कों
को तृप्त होने दे, क्योंकि लड़कों की
रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना
उचित नहीं है।”**
28 उसने उसको उत्तर दिया; “सच है
प्रभु; फिर भी कुत्ते भी तो मेज के नीचे
बालकों की रोटी के चूर चार खा लेते
हैं।”
29 उसने उससे कहा, **“इस बात के
कारण चली जा; दुष्टात्मा तेरी बेटी
में से निकल गई है।”**
30 और उसने अपने घर आकर देखा
कि लड़की खाट पर पड़ी है, और
दुष्टात्मा निकल गई है।

[illegible]

31 फिर वह सोर और सीदोन के देशों
से निकलकर दिकापुलिस देश से होता
हुआ गलील की झील पर पहुँचा।
32 और लोगों ने एक बहरे को जो
हक्ला भी था, उसके पास लाकर उससे
विनती की, कि अपना हाथ उस पर
रखे।
33 तब वह उसको भीड़ से अलग
ले गया, और अपनी उँगलियाँ उसके
कानों में डाली, और थूककर उसकी
जीभ को छुआ।
34 और स्वर्ग की ओर देखकर आह
भरी, और उससे कहा, **“इप्फत्तह!”**
अर्थात् **“खुल जा!”**
35 और उसके कान खुल गए, और
उसकी जीभ की गाँठ भी खुल गई, और
वह साफ-साफ बोलने लगा।
36 तब उसने उन्हें चेतावनी दी कि
किसी से न कहना; परन्तु जितना उसने
उन्हें चिताया उतना ही वे और प्रचार
करने लगे।
37 और वे बहुत ही आश्चर्य में होकर
कहने लगे, “उसने जो कुछ किया सब
अच्छा किया है; वह बहरों को सुनने
की, और गूँगों को बोलने की शक्ति
देता है।”

8

[illegible]

1 उन दिनों में, जब फिर बड़ी भीड़
इकट्ठी हुई, और उनके पास कुछ खाने
को न था, तो उसने अपने चेलों को
पास बुलाकर उनसे कहा,
2 **“मुझे इस भीड़ पर तरस आता है,
क्योंकि यह तीन दिन से बराबर मेरे
साथ हैं, और उनके पास कुछ भी खाने
को नहीं।**
3 **यदि मैं उन्हें भूखा घर भेज दूँ, तो
मार्ग में थककर रह जाएँगे; क्योंकि
इनमें से कोई-कोई दूर से आए हैं।”**
4 उसके चेलों ने उसको उत्तर दिया,
**“यहाँ जंगल में इतनी रोटी कोई कहाँ
से लाए कि ये तृप्त हों?”**
5 उसने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास
कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा,
“सात।”
6 तब उसने लोगों को भूमि पर बैठने
की आज्ञा दी, और वे सात रोटियाँ लीं,
और धन्यवाद करके तोड़ीं, और अपने
चेलों को देता गया कि उनके आगे
रखें, और उन्होंने लोगों के आगे परोस
दिया।
7 उनके पास थोड़ी सी छोटी
मछलियाँ भी थीं; और उसने धन्यवाद
करके उन्हें भी लोगों के आगे रखने की
आज्ञा दी।

8 अत: वे खाकर तृप्त हो गए और
शेष टुकड़ों के सात टोकरे भरकर
उठाए।
9 और लोग चार हजार के लगभग
थे, और उसने उनको विदा किया।
10 और वह तुरन्त अपने चेलों के
साथ नाव पर चढ़कर दलमनूता देश
को चला गया।

[illegible]

11 फिर फरीसी आकर उससे वाद-
विवाद करने लगे, और उसे जाँचने के
लिये उससे कोई स्वर्गीय चिन्ह माँगा।
12 उसने अपनी आत्मा में भरकर
कहा, **“इस समय के लोग क्यों चिन्ह
ढूँढ़ते हैं? मैं तुम से सच कहता हूँ,
कि इस समय के लोगों को कोई चिन्ह
नहीं दिया जाएगा।”**
13 और वह उन्हें छोड़कर फिर नाव
पर चढ़ गया, और पार चला गया।

[illegible]

14 और वे रोटी लेना भूल गए थे,
और नाव में उनके पास एक ही रोटी
थी।
15 और उसने उन्हें चेतावनी दी,
**“देखो, फरीसियों के ख़मीर और
हेरोदेस के ख़मीर से सावधान रहो।”**
16 वे आपस में विचार करके कहने
लगे, “हमारे पास तो रोटी नहीं है।”
17 यह जानकर यीशु ने उनसे कहा,
**“तुम क्यों आपस में विचार कर रहे हो
कि हमारे पास रोटी नहीं? क्या अब
तक नहीं जानते और नहीं समझते?
क्या तुम्हारा मन कठोर हो गया है?**
18 **क्या आँखें रखते हुए भी नहीं
देखते, और कान रखते हुए भी नहीं
सुनते? और तुम्हें स्मरण नहीं?**
19 **कि जब मैंने पाँच हजार के लिये
पाँच रोटी तोड़ी थीं तो तुम ने टुकड़ों
की कितनी टोकरियाँ भरकर उठाईं?”**
उन्होंने उससे कहा, “बारह टोकरियाँ।”
20 उसने उनसे कहा, **“और जब चार
हजार के लिए सात रोटियाँ थीं तो
तुम ने टुकड़ों के कितने टोकरे भरकर
उठाए थे?”** उन्होंने उससे कहा, “सात
टोकरे।”
21 उसने उनसे कहा, **“क्या तुम अब
तक नहीं समझते?”**

[illegible]

22 और वे बैतसैदा में आए; और
लोग एक अंधे को उसके पास ले आए
और उससे विनती की कि उसको छूए।
23 वह उस अंधे का हाथ पकड़कर
उसे गाँव के बाहर ले गया। और उसकी
आँखों में थूककर उस पर हाथ रखे, और
उससे पूछा, **“क्या तू कुछ देखता है?”**
24 उसने आँख उठाकर कहा, “मैं
मनुष्यों को देखता हूँ; क्योंकि वे मुझे
चलते हुए दिखाई देते हैं, जैसे पेड़।”
25 तब उसने फिर दोबारा उसकी
आँखों पर हाथ रखे, और उसने ध्यान
से देखा। और चंगा हो गया, और सब
कुछ साफ-साफ देखने लगा।
26 और उसने उसे यह कहकर घर
भेजा, **“इस गाँव के भीतर पाँव भी न
रखना।”**

[illegible]

27 यीशु और उसके चेले कैसरिया
फिलिप्पी के गाँवों में चले गए; और
मार्ग में उसने अपने चेलों से पूछा,
“लोग मुझे क्या कहते हैं?”
28 उन्होंने उत्तर दिया, “यूहन्ना
बपतिस्मा देनेवाला; पर कोई-
कोई, एलिय्याह; और कोई-कोई,
भविष्यद्वक्ताओं में से एक भी कहते
हैं।”
29 उसने उनसे पूछा, **“परन्तु तुम
मुझे क्या कहते हो?”** पतरस ने उसको
उत्तर दिया, “तू मसीह है।”

30 तब उसने उन्हें चिताकर कहा कि “**मेरे विषय में यह किसी से न कहना।**”

[illegible]

31 और वह उन्हें सिखाने लगा, कि मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुःख उठाए, और पुरनिए और प्रधान याजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें और वह तीन दिन के बाद जी उठे।

32 उसने यह बात उनसे साफ-साफ कह दी। इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर डाँटने लगा।

33 परन्तु उसने फिरकर, और अपने चेलों की ओर देखकर पतरस को डाँटकर कहा, “**हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्य की बातों पर मन लगाता है।**”

[illegible]

34 उसने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर उनसे कहा, “**जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले।**

35 **क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा।**

36 **यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?**

37 **और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?**

38 ***[illegible]****, **मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तब उससे भी लजाएगा।**”

9

[illegible]

1 और उसने उनसे कहा, “**मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य सहित आता हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे।**”

2 छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और यूहन्ना को साथ लिया, और एकान्त में किसी ऊँचे पहाड़ पर ले गया; और उनके सामने उसका रूप बदल गया।

3 और उसका वस्त्र ऐसा चमकने लगा और यहाँ तक अति उज्ज्वल हुआ, कि पृथ्वी पर कोई धोबी भी वैसा उज्ज्वल नहीं कर सकता।

4 और उन्हें *[illegible]** दिखाई दिया; और वे यीशु के साथ बातें करते थे।

5 इस पर पतरस ने यीशु से कहा, “हे रब्बी, हमारा यहाँ रहना अच्छा है: इसलिए हम तीन मण्डप बनाएँ; एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।”

6 क्योंकि वह न जानता था कि क्या उत्तर दे, इसलिए कि वे बहुत डर गए थे।

7 तब एक बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला, “यह मेरा प्रिय पुत्र है; इसकी सुनो।” ***(2 [illegible]. 1:17, [illegible]. 2:7)***

---

* **8:38** *[illegible] .... [illegible]*: परमेश्वर से अपनी निजी उपस्थिति और कमी के कारण और उनके वचनों, सिद्धान्तों और निर्देशों से लजाना। * **9:4** *[illegible]*: मत्ती 17: 3 की टिप्पणी देखें।

8 तब उन्होंने एकाएक चारों ओर
दृष्टि की, और यीशु को छोड़ अपने
साथ और किसी को न देखा।
9 पहाड़ से उतरते हुए, उसने उन्हें
आज्ञा दी, कि जब तक मनुष्य का पुत्र
मरे हुओं में से जी न उठे, तब तक जो
कुछ तुम ने देखा है वह किसी से न
कहना।
10 उन्होंने इस बात को स्मरण रखा;
और आपस में वाद-विवाद करने लगे,
“मरे हुओं में से जी उठने का क्या अर्थ
है?”
11 और उन्होंने उससे पूछा,
“शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलिय्याह
का पहले आना अवश्य है?”
12 उसने उन्हें उत्तर दिया,
**“एलिय्याह सचमुच पहले आकर सब
कुछ सुधारेगा, परन्तु मनुष्य के पुत्र
के विषय में यह क्यों लिखा है, कि वह
बहुत दुःख उठाएगा, और तुच्छ गिना
जाएगा?**
13 **परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, कि
एलिय्याह तो आ चुका, और जैसा
उसके विषय में लिखा है, उन्होंने जो
कुछ चाहा उसके साथ किया।”**

[illegible]

14 और जब वह चेलों के पास आया,
तो देखा कि उनके चारों ओर बड़ी भीड़
लगी है और शास्त्री उनके साथ विवाद
कर रहे हैं।
15 और उसे देखते ही सब बहुत ही
आश्चर्य करने लगे, और उसकी ओर
दौड़कर उसे नमस्कार किया।
16 उसने उनसे पूछा, **“तुम इनसे
क्या विवाद कर रहे हो?”**
17 भीड़ में से एक ने उसे उत्तर दिया,
“हे गुरु, मैं अपने पुत्र को, जिसमें गूँगी
आत्मा समाई है, तेरे पास लाया था।
18 जहाँ कहीं वह उसे पकड़ती है,
वहीं पटक देती है; और वह मुँह में
फेन भर लाता, और दाँत पीसता, और
सूखता जाता है। और मैंने तेरे चेलों से
कहा, कि वे उसे निकाल दें, परन्तु वे
निकाल न सके।”
19 यह सुनकर उसने उनसे उत्तर देके
कहा, **“हे अविश्वासी लोगों, मैं कब
तक तुम्हारे साथ रहूँगा? और कब
तक तुम्हारी सहूँगा? उसे मेरे पास
लाओ।”**
20 तब वे उसे उसके पास ले आए।
और जब उसने उसे देखा, तो उस
आत्मा ने तुरन्त उसे मरोड़ा, और वह
भूमि पर गिरा, और मुँह से फेन बहाते
हुए लोटने लगा।
21 उसने उसके पिता से पूछा,
“इसकी यह दशा कब से है?” और
उसने कहा, “बचपन से।
22 उसने इसे नाश करने के लिये
कभी आग और कभी पानी में गिराया;
परन्तु यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर
तरस खाकर हमारा उपकार कर।”
23 यीशु ने उससे कहा, **“यदि तू कर
सकता है! यह क्या बात है? विश्वास
करनेवाले के लिये सब कुछ हो सकता
है।”**
24 बालक के पिता ने तुरन्त
पुकारकर कहा, “हे प्रभु, मैं विश्वास
करता हूँ; मेरे अविश्वास का उपाय
कर।”
25 जब यीशु ने देखा, कि लोग
दौड़कर भीड़ लगा रहे हैं, तो उसने
अशुद्ध आत्मा को यह कहकर डाँटा,
कि **“हे गूँगी और बहरी आत्मा, मैं तुझे
आज्ञा देता हूँ, उसमें से निकल आ,
और उसमें फिर कभी प्रवेश न करना।”**
26 तब वह चिल्लाकर, और उसे
बहुत मरोड़कर, निकल आई; और
बालक मरा हुआ सा हो गया, यहाँ तक
कि बहुत लोग कहने लगे, कि वह मर
गया।

27 परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़
के उसे उठाया, और वह खड़ा हो गया।
28 जब वह घर में आया, तो उसके
चेलों ने एकान्त में उससे पूछा, "हम
उसे क्यों न निकाल सके?"
29 उसने उनसे कहा, **"यह जाति
बिना प्रार्थना किसी और उपाय से
निकल नहीं सकती।"**

[illegible]

30 फिर वे वहाँ से चले, और गलील
में होकर जा रहे थे, वह नहीं चाहता
था कि कोई जाने,
31 क्योंकि वह अपने चेलों को
उपदेश देता और उनसे कहता था,
**"मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों के हाथ में
पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार
डालेंगे; और वह मरने के तीन दिन
बाद जी उठेगा।"**
32 पर यह बात उनकी समझ में नहीं
आई, और वे उससे पूछने से डरते थे।

[illegible]?

33 फिर वे कफरनहूम में आए; और
घर में आकर उसने उनसे पूछा, **"रास्ते
में तुम किस बात पर विवाद कर रहे
थे?"**
34 वे चुप रहे क्योंकि, मार्ग में
उन्होंने आपस में यह वाद-विवाद
किया था, कि हम में से बड़ा कौन है?
35 तब उसने बैठकर बारहों को
बुलाया, और उनसे कहा, **"यदि कोई
बड़ा होना चाहे, तो सबसे छोटा और
सब का सेवक बने।"**
36 और उसने एक बालक को लेकर
उनके बीच में खड़ा किया, और उसको
गोद में लेकर उनसे कहा,
37 **"जो कोई मेरे नाम से ऐसे
बालकों में से किसी एक को भी ग्रहण
करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और
जो कोई मुझे ग्रहण करता, वह मुझे
नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले को ग्रहण
करता है।"**
38 तब यूहन्ना ने उससे कहा, "हे
गुरु, हमने एक मनुष्य को तेरे नाम से
दुष्टात्माओं को निकालते देखा और
हम उसे मना करने लगे, क्योंकि वह
हमारे पीछे नहीं हो लेता था।"
39 यीशु ने कहा, **"उसको मना मत
करो; क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे
नाम से सामर्थ्य का काम करे, और
आगे मेरी निन्दा करे,**
40 **क्योंकि जो हमारे विरोध में
नहीं, वह हमारी ओर है।**
41 **जो कोई एक कटोरा पानी तुम्हें
इसलिए पिलाए कि तुम मसीह के
हो तो मैं तुम से सच कहता हूँ कि
वह अपना प्रतिफल किसी तरह से न
खोएगा।"**

[illegible]

42 **"जो कोई इन छोटों में से जो
मुझ पर विश्वास करते हैं, किसी को
ठोकर खिलाए तो उसके लिये भला
यह है कि एक बड़ी चक्की का पाट
उसके गले में लटकाया जाए और वह
समुद्र में डाल दिया जाए।**
43 **यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर
खिलाए तो उसे काट डाल टुण्डा
होकर जीवन में प्रवेश करना, तेरे लिये
इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए
नरक के बीच उस आग में डाला जाए
जो कभी बुझने की नहीं।**
44 **जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता
और आग नहीं बुझती।**
45 **और यदि तेरा पाँव तुझे ठोकर
खिलाए तो उसे काट डाल। लँगड़ा
होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये
इससे भला है, कि दो पाँव रहते हुए
नरक में डाला जाए।**

46 **जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती**

47 **और यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल, काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है, कि दो आँख रहते हुए तू नरक में डाला जाए।**

48 **जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।**(*[illegible]. 66:24*)

49 **क्योंकि हर एक जन आग से नमकीन किया जाएगा।**

50 **नमक अच्छा है, पर यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो उसे किस से नमकीन करोगे? अपने में नमक रखो, और आपस में मेल मिलाप से रहो।"**

10

[illegible]

1 फिर वह वहाँ से उठकर यहूदिया के सीमा-क्षेत्र और यरदन के पार आया, और भीड़ उसके पास फिर इकट्ठी हो गई, और वह अपनी रीति के अनुसार उन्हें फिर उपदेश देने लगा।

2 तब *[illegible]** ने उसके पास आकर उसकी परीक्षा करने को उससे पूछा, "क्या यह उचित है, कि पुरुष अपनी पत्नी को त्यागे?"

3 उसने उनको उत्तर दिया, **"मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है?"**

4 उन्होंने कहा, "मूसा ने त्याग-पत्र लिखने और त्यागने की आज्ञा दी है।" (*[illegible]. 24:1-3*)

5 यीशु ने उनसे कहा, **"तुम्हारे मन की कठोरता के कारण उसने तुम्हारे लिये यह आज्ञा लिखी।**

6 **पर सृष्टि के आरम्भ से, परमेश्वर ने नर और नारी करके उनको बनाया है।**(*[illegible]. 1:27, [illegible]. 5:2*)

7 **इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा,**

8 **और वे दोनों एक तन होंगे; इसलिए वे अब दो नहीं, पर एक तन हैं।**(*[illegible]. 2:24*)

9 **इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।"**

10 और घर में चेलों ने इसके विषय में उससे फिर पूछा।

11 उसने उनसे कहा, **"जो कोई अपनी पत्नी को त्याग कर दूसरी से विवाह करे तो वह उस पहली के विरोध में व्यभिचार करता है।**

12 **और यदि पत्नी अपने पति को छोड़कर दूसरे से विवाह करे, तो वह व्यभिचार करती है।"**

[illegible]

13 फिर लोग बालकों को उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे; पर चेलों ने उनको डाँटा।

14 यीशु ने यह देख क्रुद्ध होकर उनसे कहा, **"बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।**

15 **मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की तरह ग्रहण न करे, वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।"**

16 और उसने उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी।

[illegible]

17 और जब वह निकलकर मार्ग में जाता था, तो एक मनुष्य उसके पास दौड़ता हुआ आया, और उसके आगे घुटने टेककर उससे पूछा, "हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?"

* **10:2** *[illegible]:* मत्ती 3:7 की टिप्पणी देखें।

18 यीशु ने उससे कहा, **“तू मुझे**
उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम
नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर।
19 **तू आज्ञाओं को तो जानता**
है: ‘हत्या न करना, व्यभिचार
न करना, चोरी न करना, झूठी
गवाही न देना, ***□□ □ □□□□,*** † **अपने**
पिता और अपनी माता का आदर
करना।’ ”*(□□□□□. 20:12-16,*
□□□. 13:9)
20 उसने उससे कहा, “हे गुरु, इन
सब को मैं लड़कपन से मानता आया
हूँ।”
21 यीशु ने उस पर दृष्टि करके उससे
प्रेम किया, और उससे कहा, **“तुझ में**
एक बात की घटी है; जा, जो कुछ
तेरा है, उसे बेचकर गरीबों को दे, और
तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर
मेरे पीछे हो ले।”
22 इस बात से उसके चेहरे पर
उदासी छा गई, और वह शोक करता
हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी
था।
23 यीशु ने चारों ओर देखकर अपने
चेलों से कहा, **“धनवानों को परमेश्वर**
के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन
है!”
24 चेले उसकी बातों से अचम्भित
हुए। इस पर यीशु ने फिर उनसे कहा,
“हे बालकों, जो धन पर भरोसा रखते
हैं, उनके लिए परमेश्वर के राज्य में
प्रवेश करना कैसा कठिन है!
25 **परमेश्वर के राज्य में धनवान के**
प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में
से निकल जाना सहज है!”
26 वे बहुत ही चकित होकर आपस
में कहने लगे, “तो फिर किसका उद्धार
हो सकता है?”
27 यीशु ने उनकी ओर देखकर
कहा, **“मनुष्यों से तो यह नहीं हो**
सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता
है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो
सकता है।”*(□□□□□. 42:2, □□□□*
1:37)
28 पतरस उससे कहने लगा, “देख,
हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो
लिये हैं।”
29 यीशु ने कहा, **“मैं तुम से सच**
कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं, जिसने
मेरे और सुसमाचार के लिये घर या
भाइयों या बहनों या माता या पिता
या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़
दिया हो,
30 **और अब** ***□□ □□□*** ‡ **सौ गुणा न**
पाए, घरों और भाइयों और बहनों और
माताओं और बाल-बच्चों और खेतों
को, पर सताव के साथ और परलोक
में अनन्त जीवन।
31 **पर बहुत सारे जो पहले हैं,**
पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, वे
पहले होंगे।”

□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□

32 और वे यरूशलेम को जाते हुए
मार्ग में थे, और यीशु उनके आगे-आगे
जा रहा था: और चेले अचम्भा करने
लगे और जो उसके पीछे-पीछे चलते
थे वे डरे हुए थे, तब वह फिर उन बारहों
को लेकर उनसे वे बातें कहने लगा, जो
उस पर आनेवाली थीं।
33 **“देखो, हम यरूशलेम को जाते**
हैं, और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों
और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया
जाएगा, और वे उसको मृत्यु के योग्य
ठहराएँगे, और अन्यजातियों के हाथ
में सौंपेंगे।
34 **और वे उसका उपहास करेंगे, उस**
पर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे, और उसे

† **10:19** *□□ □ □□□□:* “धोखा देना”, जैसे पड़ोसी की सम्पत्ति का लालच करना। ‡ **10:30** *□□ □□□:* इस जीवन में। समय के भीतर।

मार डालेंगे, और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।"

[illegible]

35 तब जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर कहा, "हे गुरु, हम चाहते हैं, कि जो कुछ हम तुझ से माँगे, वही तू हमारे लिये करे।"

36 उसने उनसे कहा, **"तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूँ?"**

37 उन्होंने उससे कहा, "हमें यह दे, कि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दाहिने और दूसरा तेरे बाएँ बैठे।"

38 यीशु ने उनसे कहा, **"तुम नहीं जानते, कि क्या माँगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, क्या तुम ले सकते हो?"**

39 उन्होंने उससे कहा, "हम से हो सकता है।" यीशु ने उनसे कहा, **"जो कटोरा मैं पीने पर हूँ, तुम पीओगे; और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूँ, उसे लोगे।**

40 **पर जिनके लिये तैयार किया गया है, उन्हें छोड़ और किसी को अपने दाहिने और अपने बाएँ बैठाना मेरा काम नहीं।"**

41 यह सुनकर दसों याकूब और यूहन्ना पर रिसियाने लगे।

42 तो यीशु ने उनको पास बुलाकर उनसे कहा, **"तुम जानते हो, कि जो अन्यजातियों के अधिपति समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं।**

43 **पर तुम में ऐसा नहीं है, वरन् जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने;**

44 **और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने।**

45 **क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों के छुटकारे के लिये अपना प्राण दे।"**

[illegible]

46 वे यरीहो में आए, और जब वह और उसके चेले, और एक बड़ी भीड़ यरीहो से निकलती थी, तब तिमाई का पुत्र बरतिमाई एक अंधा भिखारी, सड़क के किनारे बैठा था।

47 वह यह सुनकर कि यीशु नासरी है, पुकार पुकारकर कहने लगा "हे दाऊद की सन्तान, यीशु मुझ पर दया कर।"

48 बहुतों ने उसे डाँटा कि चुप रहे, पर वह और भी पुकारने लगा, "हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।"

49 तब यीशु ने ठहरकर कहा, **"उसे बुलाओ।"** और लोगों ने उस अंधे को बुलाकर उससे कहा, "धैर्य रख, उठ, वह तुझे बुलाता है।"

50 वह अपना बाहरी वस्त्र फेंककर शीघ्र उठा, और यीशु के पास आया।

51 इस पर यीशु ने उससे कहा, **"तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?"** अंधे ने उससे कहा, "हे रब्बी, यह कि मैं देखने लगूँ।"

52 यीशु ने उससे कहा, **"चला जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।"** और वह तुरन्त देखने लगा, और मार्ग में उसके पीछे हो लिया।

11

[illegible]

* **11:1** *[illegible]:* वह स्थान जहाँ से यीशु ने अपने चेलों को वह गदही और उसका बच्चा लाने के लिए कहा था।

1 जब वे यरूशलेम के निकट, जैतून पहाड़ पर [illegible]* और बैतनिय्याह के पास आए, तो उसने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा,

2 **“सामने के गाँव में जाओ, और उसमें पहुँचते ही एक गदही का बच्चा, जिस पर कभी कोई नहीं चढ़ा, बंधा हुआ तुम्हें मिलेगा, उसे खोल लाओ।**

3 **यदि तुम से कोई पूछे, ‘यह क्यों करते हो?’ तो कहना, ‘प्रभु को इसका प्रयोजन है,’ और वह शीघ्र उसे यहाँ भेज देगा।”**

4 उन्होंने जाकर उस बच्चे को बाहर द्वार के पास चौक में बंधा हुआ पाया, और खोलने लगे।

5 उनमें से जो वहाँ खड़े थे, कोई-कोई कहने लगे “यह क्या करते हो, गदही के बच्चे को क्यों खोलते हो?”

6 चेलों ने जैसा यीशु ने कहा था, वैसा ही उनसे कह दिया; तब उन्होंने उन्हें जाने दिया।

7 और उन्होंने बच्चे को यीशु के पास लाकर उस पर अपने कपड़े डाले और वह उस पर बैठ गया।

8 और बहुतों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए और औरों ने खेतों में से डालियाँ काट-काटकर कर फैला दीं।

9 और जो उसके आगे-आगे जाते और पीछे-पीछे चले आते थे, पुकार पुकारकर कहते जाते थे, “[illegible]†; धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है। *([illegible]. 118:26)*

10 हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है; धन्य है! आकाश में होशाना।” *([illegible] 23:39)*

11 और वह यरूशलेम पहुँचकर मन्दिर में आया, और चारों ओर सब वस्तुओं को देखकर बारहों के साथ बैतनिय्याह गया, क्योंकि साँझ हो गई थी।

[illegible]

12 दूसरे दिन जब वे बैतनिय्याह से निकले तो उसको भूख लगी।

13 और वह दूर से अंजीर का एक हरा पेड़ देखकर निकट गया, कि क्या जाने उसमें कुछ पाए: पर पत्तों को छोड़ कुछ न पाया; क्योंकि फल का समय न था।

14 इस पर उसने उससे कहा, **“अब से कोई तेरा फल कभी न खाए।”** और उसके चेले सुन रहे थे।

[illegible]

15 फिर वे यरूशलेम में आए, और वह मन्दिर में गया; और वहाँ जो लेन-देन कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा, और सर्राफों की मेजें और कबूतर के बेचनेवालों की चौकियाँ उलट दीं।

16 और मन्दिर में से होकर किसी को बर्तन लेकर आने-जाने न दिया।

17 और उपदेश करके उनसे कहा,

“क्या यह नहीं लिखा है, कि मेरा घर
सब जातियों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा?
पर तुम ने इसे डाकुओं की खोह
बना दी है।” *([illegible] 19:46, [illegible]. 7:11)*

18 यह सुनकर प्रधान याजक और शास्त्री उसके नाश करने का अवसर ढूँढ़ने लगे; क्योंकि उससे डरते थे, इसलिए कि सब लोग उसके उपदेश से चकित होते थे।

19 और साँझ होते ही वे नगर से बाहर चले गए।

[illegible]

† **11:9** *[illegible]:* जिसका अर्थ है “बचाना, छुटकारा देना, उद्धारकर्ता” ‡ **11:21** *[illegible]:* मत्ती 23:7 की टिप्पणी देखें।

20 फिर भोर को जब वे उधर से जाते
थे तो उन्होंने उस अंजीर के पेड़ को
जड़ तक सूखा हुआ देखा।
21 पतरस को वह बात स्मरण आई,
और उसने उससे कहा, “हे [illegible]‡,
देख! यह अंजीर का पेड़ जिसे तूने
श्राप दिया था सूख गया है।”
22 यीशु ने उसको उत्तर दिया,
“परमेश्वर पर विश्वास रखो।
23 **मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो**
कोई इस पहाड़ से कहे, ‘तू उखड़ जा,
और समुद्र में जा पड़,’ और अपने मन
में सन्देह न करे, वरन् विश्वास करे,
कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो
उसके लिये वही होगा।
24 **इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, कि**
जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो तो
विश्वास कर लो कि तुम्हें मिल गया,
और तुम्हारे लिये हो जाएगा।
25 **और जब कभी तुम खड़े हुए**
प्रार्थना करते हो, तो यदि तुम्हारे मन
में किसी की ओर से कुछ विरोध हो,
तो क्षमा करो: इसलिए कि तुम्हारा
स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध
क्षमा करे।
26 **परन्तु यदि तुम क्षमा न करो**
तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है,
तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा।”

[illegible]

27 वे फिर यरूशलेम में आए, और
जब वह मन्दिर में टहल रहा था
तो प्रधान याजक और शास्त्री और
पुरनिए उसके पास आकर पूछने लगे।
28 “तू ये काम किस अधिकार से
करता है? और यह अधिकार तुझे
किसने दिया है कि तू ये काम करे?”
29 यीशु ने उनसे कहा, **“मैं भी तुम**
से एक बात पूछता हूँ; मुझे उत्तर दो,
तो मैं तुम्हें बताऊँगा कि ये काम किस
अधिकार से करता हूँ।
30 **यूहन्ना का बपतिस्मा क्या स्वर्ग**
की ओर से था या मनुष्यों की ओर से
था? मुझे उत्तर दो।”
31 तब वे आपस में विवाद करने लगे
कि यदि हम कहें ‘स्वर्ग की ओर से,’
तो वह कहेगा, ‘फिर तुम ने उसका
विश्वास क्यों नहीं किया?’
32 और यदि हम कहें, ‘मनुष्यों की
ओर से,’ तो लोगों का डर है, क्योंकि
सब जानते हैं कि यूहन्ना सचमुच
भविष्यद्वक्ता था।
33 तब उन्होंने यीशु को उत्तर दिया,
“हम नहीं जानते।” यीशु ने उनसे कहा,
“मैं भी तुम को नहीं बताता, कि ये
काम किस अधिकार से करता हूँ।”

12

[illegible]

1 फिर वह दृष्टान्तों में उनसे बातें
करने लगा: **“किसी मनुष्य ने दाख**
की बारी लगाई, और उसके चारों ओर
बाड़ा बाँधा, और रस का कुण्ड खोदा,
और गुम्मट बनाया; और किसानों को
उसका ठेका देकर परदेश चला गया।
2 **फिर फल के मौसम में उसने**
किसानों के पास एक दास को भेजा
कि किसानों से दाख की बारी के फलों
का भाग ले।
3 **पर उन्होंने उसे पकड़कर पीटा**
और खाली हाथ लौटा दिया।
4 **फिर उसने एक और दास को**
उनके पास भेजा और उन्होंने उसका
सिर फोड़ डाला और उसका अपमान
किया।
5 **फिर उसने एक और को भेजा,**
और उन्होंने उसे मार डाला; तब उसने
और बहुतों को भेजा, उनमें से उन्होंने

कितनों को पीटा, और कितनों को मार डाला।
6 **अब एक ही रह गया था, जो उसका प्रिय पुत्र था; अन्त में उसने उसे भी उनके पास यह सोचकर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे।**
7 **पर उन किसानों ने आपस में कहा; 'यही तो वारिस है; आओ, हम उसे मार डालें, तब विरासत हमारी हो जाएगी।'**
8 **और उन्होंने उसे पकड़कर मार डाला, और दाख की बारी के बाहर फेंक दिया।**
9 **"इसलिए दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा? वह आकर उन किसानों का नाश करेगा, और दाख की बारी औरों को दे देगा।**
10 **क्या तुम ने पवित्रशास्त्र में यह वचन नहीं पढ़ा:**
'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने
निकम्मा ठहराया था,
वही *[illegible] [illegible] [illegible]*[*] **हो गया;**
11 **यह प्रभु की ओर से हुआ,**
और हमारी दृष्टि में अद्भुत है'!" ***([illegible]. 118:23)***
12 तब उन्होंने उसे पकड़ना चाहा; क्योंकि समझ गए थे, कि उसने हमारे विरोध में यह दृष्टान्त कहा है: पर वे लोगों से डरे; और उसे छोड़कर चले गए।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

13 तब उन्होंने उसे बातों में फँसाने के लिये कुछ फरीसियों और हेरोदियों को उसके पास भेजा।
14 और उन्होंने आकर उससे कहा, "हे गुरु, हम जानते हैं, कि तू सच्चा है, और किसी की परवाह नहीं करता; क्योंकि तू मनुष्यों का मुँह देखकर बातें नहीं करता, परन्तु परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है। तो क्या कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं?
15 हम दें, या न दें?" उसने उनका कपट जानकर उनसे कहा, **"मुझे क्यों परखते हो? एक दीनार मेरे पास लाओ, कि मैं देखूँ।"**
16 वे ले आए, और उसने उनसे कहा, **"यह मूर्ति और नाम किसका है?"** उन्होंने कहा, "कैसर का।"
17 यीशु ने उनसे कहा, **"जो कैसर का है वह कैसर को, और जो परमेश्वर का है परमेश्वर को दो।"** तब वे उस पर बहुत अचम्भा करने लगे।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

18 फिर *[illegible]*[†] ने भी, जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं, उसके पास आकर उससे पूछा,
19 "हे गुरु, मूसा ने हमारे लिये लिखा है, कि यदि किसी का भाई बिना सन्तान मर जाए, और उसकी पत्नी रह जाए, तो उसका भाई उसकी पत्नी से विवाह कर ले और अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे। ***([illegible]. 38:8, [illegible]. 25:5)***
20 सात भाई थे। पहला भाई विवाह करके बिना सन्तान मर गया।
21 तब दूसरे भाई ने उस स्त्री से विवाह कर लिया और बिना सन्तान मर गया; और वैसे ही तीसरे ने भी।
22 और सातों से सन्तान न हुई। सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई।
23 अत: जी उठने पर वह उनमें से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि वह सातों की पत्नी हो चुकी थी।"
24 यीशु ने उनसे कहा, **"क्या तुम इस कारण से भूल में नहीं पड़े हो कि**

---
* **12:10** *[illegible] [illegible] [illegible]:* इसे वास्तव में "कोने का सिरा" कहते है और यह "प्रमुख आधारशिला" के रूप में भी जाना जाता हैं। † **12:18** *[illegible]:* मत्ती 16:1 की टिप्पणी देखें

तुम न तो पवित्रशास्त्र ही को जानते हो, और न परमेश्वर की सामर्थ्य को?

25 **क्योंकि जब वे मरे हुओं में से जी उठेंगे, तो उनमें विवाह-शादी न होगी; पर स्वर्ग में दूतों के समान होंगे।**

26 **मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने** *[illegible]*‡ **में झाड़ी की कथा में नहीं पढ़ा कि परमेश्वर ने उससे कहा: 'मैं अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूँ?'**

27 **परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, वरन् जीवितों का परमेश्वर है, तुम बड़ी भूल में पड़े हो।"**

[illegible]

28 और शास्त्रियों में से एक ने आकर उन्हें विवाद करते सुना, और यह जानकर कि उसने उन्हें अच्छी रीति से उत्तर दिया, उससे पूछा, "सबसे मुख्य आज्ञा कौन सी है?"

29 यीशु ने उसे उत्तर दिया, **"सब आज्ञाओं में से यह मुख्य है: 'हे इस्राएल सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है।**

30 **और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना।'**

31 **और दूसरी यह है, 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।' इससे बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।"**

32 शास्त्री ने उससे कहा, "हे गुरु, बहुत ठीक! तूने सच कहा कि वह एक ही है, और उसे छोड़ और कोई नहीं। ***([illegible]. 45:18, [illegible]. 4:35)***

33 "और उससे सारे मन, और सारी बुद्धि, और सारे प्राण, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना; और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमबलियों और बलिदानों से बढ़कर है।" ***([illegible]. 6:4,5, [illegible]. 19:18, [illegible] 6:6)***

34 जब यीशु ने देखा कि उसने समझ से उत्तर दिया, तो उससे कहा, **"तू परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं।"** और किसी को फिर उससे कुछ पूछने का साहस न हुआ।

[illegible]

35 फिर यीशु ने मन्दिर में उपदेश करते हुए यह कहा, **"शास्त्री क्यों कहते हैं, कि मसीह दाऊद का पुत्र है?**

36 **दाऊद ने आप ही पवित्र आत्मा में होकर कहा है:**
'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, "मेरे दाहिने बैठ,
जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों की चौकी न कर दूँ।" ' ***([illegible]. 110:1)***

37 **"दाऊद तो आप ही उसे प्रभु कहता है, फिर वह उसका पुत्र कहाँ से ठहरा?"** और भीड़ के लोग उसकी आनन्द से सुनते थे।

[illegible]

38 उसने अपने उपदेश में उनसे कहा, **"शास्त्रियों से सावधान रहो, जो लम्बे वस्त्र पहने हुए फिरना और बाजारों में नमस्कार,**

39 **और आराधनालयों में मुख्य-मुख्य आसन और भोज में मुख्य-मुख्य स्थान भी चाहते हैं।**

40 **वे विधवाओं के घरों को खा जाते हैं, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं, ये अधिक दण्ड पाएँगे।"**

‡ **12:26** *[illegible]*: पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तक पंचग्रंथ के रूप में जानी जाती हैं।

[illegible]

41 और वह मन्दिर के भण्डार के
सामने बैठकर देख रहा था कि लोग
मन्दिर के भण्डार में किस प्रकार पैसे
डालते हैं, और बहुत धनवानों ने बहुत
कुछ डाला।
42 इतने में एक गरीब विधवा ने
आकर दो दमड़ियाँ, जो एक अधेले के
बराबर होती है, डाली।
43 तब उसने अपने चेलों को पास
बुलाकर उनसे कहा, **“मैं तुम से सच
कहता हूँ कि मन्दिर के भण्डार में
डालने वालों में से इस गरीब विधवा
ने सबसे बढ़कर डाला है;**
44 **क्योंकि सब ने अपने धन की
बढ़ती में से डाला है, परन्तु इसने
अपनी घटी में से जो कुछ उसका था,
अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी
है।”**

13

[illegible]

1 जब वह मन्दिर से निकल रहा
था, तो उसके चेलों में से एक ने उससे
कहा, “हे गुरु, देख, कैसे-कैसे पत्थर
और कैसे-कैसे भवन हैं!”
2 यीशु ने उससे कहा, **“क्या तुम ये
बड़े-बड़े भवन देखते हो: यहाँ पत्थर
पर पत्थर भी बचा न रहेगा जो ढाया
न जाएगा।”**

[illegible]

3 जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर
के सामने बैठा था, तो पतरस और
याकूब और यूहन्ना और अन्द्रियास ने
अलग जाकर उससे पूछा,
4 “हमें बता कि ये बातें कब होंगी?
और जब ये सब बातें पूरी होने पर होंगी
उस समय का क्या चिन्ह होगा?”
5 यीशु उनसे कहने लगा,
“*[illegible] कि कोई तुम्हें न
भरमाए।**
6 **बहुत सारे मेरे नाम से आकर
कहेंगे, ‘मैं वही हूँ’ और बहुतों को
भरमाएँगे।**
7 **और जब तुम लड़ाइयाँ, और
लड़ाइयों की चर्चा सुनो, तो न
घबराना; क्योंकि इनका होना अवश्य
है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।**
8 **क्योंकि जाति पर जाति, और
राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। और
हर कहीं भूकम्प होंगे, और अकाल
पड़ेंगे। यह तो पीड़ाओं का आरम्भ ही
होगा।*([illegible]. 6:24)***
9 **“परन्तु तुम अपने विषय
में सावधान रहो, क्योंकि लोग
तुम्हें सभाओं में सौंपेंगे और तुम
आराधनालयों में पीटे जाओगे, और
मेरे कारण राज्यपालों और राजाओं
के आगे खड़े किए जाओगे, ताकि
उनके लिये गवाही हो।**
10 **पर अवश्य है कि पहले
सुसमाचार सब जातियों में प्रचार
किया जाए।**
11 **जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे, तो
पहले से चिन्ता न करना, कि हम क्या
कहेंगे। पर जो कुछ तुम्हें उसी समय
बताया जाए, वही कहना; क्योंकि
बोलनेवाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र
आत्मा है।**
12 **और भाई को भाई, और पिता को
पुत्र मरने के लिये सौंपेंगे, और बच्चे
माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें
मरवा डालेंगे।*([illegible] 21:16, [illegible]
7:6)***
13 **और मेरे नाम के कारण सब
लोग तुम से बैर करेंगे; पर जो अन्त
तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार**

* **13:5** *[illegible]*: मतलब चौकसी करना या सावधान रहना।

होगा।

[illegible]

14 “अतः जब तुम उस [illegible][†] को जहाँ उचित नहीं वहाँ खड़ी देखो, (पढ़नेवाला समझ ले) तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएँ। *([illegible]. 9:27, [illegible]. 12:11)*

15 जो छत पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने को नीचे न उतरे और न भीतर जाए।

16 और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने के लिये पीछे न लौटे।

17 उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय! हाय!

18 और प्रार्थना किया करो कि यह जाड़े में न हो।

19 क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे, कि सृष्टि के आरम्भ से जो परमेश्वर ने रची है अब तक न तो हुए, और न कभी फिर होंगे। *([illegible] 24:21)*

20 और यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता, तो कोई प्राणी भी न बचता; परन्तु उन चुने हुओं के कारण जिनको उसने चुना है, उन दिनों को घटाया।

21 उस समय यदि कोई तुम से कहे, ‘देखो, मसीह यहाँ है!’ या ‘देखो, वहाँ है!’ तो विश्वास न करना।

22 क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएँगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। *([illegible] 24:24)*

23 पर तुम सावधान रहो देखो, मैंने तुम्हें सब बातें पहले ही से कह दी हैं।

[illegible]

24 “उन दिनों में, उस क्लेश के बाद
सूरज अंधेरा हो जाएगा,
और चाँद प्रकाश न देगा;
25 और आकाश से तारागण गिरने लगेंगे,
और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी। *([illegible]. 6:13, [illegible]. 34:4)*

26 “तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और महिमा के साथ बादलों में आते देखेंगे। *([illegible]. 7:13, [illegible]. 1:17)*

27 उस समय वह अपने [illegible][‡] को भेजकर, पृथ्वी के इस छोर से आकाश के उस छोर तक चारों दिशाओं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करेगा। *([illegible]. 30:4, [illegible] 24:31)*

[illegible]

28 “अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो जब उसकी डाली कोमल हो जाती; और पत्ते निकलने लगते हैं; तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल निकट है।

29 इसी रीति से जब तुम इन बातों को होते देखो, तो जान लो, कि वह निकट है वरन् द्वार ही पर है।

30 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें न हो लेंगी, तब तक यह लोग जाते न रहेंगे।

31 आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। *([illegible]. 40:8, [illegible] 21:33)*

[illegible]

[†] **13:14** *[illegible]:* यूनानी में “घृणा” शब्द का अर्थ है कोई बात जो घिनौनी है और “उजाड़” शब्द का अर्थ है इस हालत में निर्जन और तबाह हो जाना। [‡] **13:27** *[illegible]:* दैविक या स्वर्गीय प्राणी जो परमेश्वर के दूत के रूप में कार्य करते है।

32 **“उस दिन या उस समय के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता।**

33 **देखो, जागते और प्रार्थना करते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आएगा।**

34 **यह उस मनुष्य के समान दशा है, जो परदेश जाते समय अपना घर छोड़ जाए, और अपने दासों को अधिकार दे: और हर एक को उसका काम जता दे, और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा दे।**

35 **इसलिए जागते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा, साँझ को या आधी रात को, या मुर्गे के बाँग देने के समय या भोर को।**

36 **ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुम्हें सोते पाए।**

37 **और जो मैं तुम से कहता हूँ, वही सबसे कहता हूँ: जागते रहो।”**

14

[illegible]

1 दो दिन के बाद *[illegible]** और अख़मीरी रोटी का पर्व होनेवाला था। और प्रधान याजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि उसे कैसे छल से पकड़कर मार डालें।

2 परन्तु कहते थे, “पर्व के दिन नहीं, कहीं ऐसा न हो कि लोगों में दंगा मचे।”

[illegible]

3 जब वह *[illegible]*† में शमौन कोढ़ी के घर भोजन करने बैठा हुआ था तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामासी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आई; और पात्र तोड़कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेला।

4 परन्तु कुछ लोग अपने मन में झुँझलाकर कहने लगे, “इस इत्र का क्यों सत्यानाश किया गया?

5 क्योंकि यह इत्र तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचकर गरीबों को बाँटा जा सकता था।” और वे उसको झिड़कने लगे।

6 यीशु ने कहा, **“उसे छोड़ दो; उसे क्यों सताते हो? उसने तो मेरे साथ भलाई की है।**

7 **गरीब तुम्हारे साथ सदा रहते हैं और तुम जब चाहो तब उनसे भलाई कर सकते हो; पर मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूँगा।*(*[illegible]*. 15:11)***

8 **जो कुछ वह कर सकी, उसने किया; उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहले से मेरी देह पर इत्र मला है।**

9 **मैं तुम से सच कहता हूँ, कि सारे जगत में जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।”**

[illegible]

10 तब यहूदा इस्करियोती जो बारह में से एक था, प्रधान याजकों के पास गया, कि उसे उनके हाथ पकड़वा दे।

11 वे यह सुनकर आनन्दित हुए, और उसको रुपये देना स्वीकार किया, और यह अवसर ढूँढ़ने लगा कि उसे किसी प्रकार पकड़वा दे।

[illegible]

12 अख़मीरी रोटी के पर्व के पहले दिन, जिसमें वे फसह का बलिदान करते थे, उसके चेलों ने उससे पूछा, “तू कहाँ चाहता है, कि हम जाकर तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें?” ***(*[illegible]*. 12:6, *[illegible]*. 12:15)***

---

* **14:1** *[illegible]*: मत्ती 26:2 की टिप्पणी देखें। † **14:3** *[illegible]*: मत्ती 21:17 की टिप्पणी देखें।

13 उसने अपने चेलों में से दो को यह
कहकर भेजा, “नगर में जाओ, और
एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए
तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लेना।
14 और वह जिस घर में जाए उस घर
के स्वामी से कहना: ‘गुरु कहता है,
कि मेरी पाहुनशाला जिसमें मैं अपने
चेलों के साथ फसह खाऊँ कहाँ है?’
15 वह तुम्हें एक सजी-सजाई, और
तैयार की हुई बड़ी अटारी दिखा देगा,
वहाँ हमारे लिये तैयारी करो।”
16 तब चेले निकलकर नगर में आए
और जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा
ही पाया, और फसह तैयार किया।

17 जब साँझ हुई, तो वह बारहों के
साथ आया।
18 और जब वे बैठे भोजन कर रहे
थे, तो यीशु ने कहा, “मैं तुम से सच
कहता हूँ, कि तुम में से एक, जो
मेरे साथ भोजन कर रहा है, मुझे
पकड़वाएगा।”(□□. 41:9)
19 उन पर उदासी छा गई और वे
एक-एक करके उससे कहने लगे, “क्या
वह मैं हूँ?”
20 उसने उनसे कहा, “वह बारहों में
से एक है, जो मेरे साथ थाली में हाथ
डालता है।
21 क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो, जैसा
उसके विषय में लिखा है, जाता ही
है; परन्तु उस मनुष्य पर हाय जिसके
द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता
है! यदि उस मनुष्य का जन्म ही न
होता तो उसके लिये भला होता।”

□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□

22 और जब वे खा ही रहे थे तो उसने
रोटी ली, और आशीष माँगकर तोड़ी,
और उन्हें दी, और कहा, “लो, यह मेरी
देह है।”
23 फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद
किया, और उन्हें दिया; और उन सब ने
उसमें से पीया।
24 और उसने उनसे कहा, “यह
वाचा का मेरा वह लहू है, जो बहुतों
के लिये बहाया जाता है।(□□□□□.
24:8, □□. 9:11)
25 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि दाख
का रस उस दिन तक फिर कभी न
पीऊँगा, जब तक परमेश्वर के राज्य
में नया न पीऊँ।”
26 फिर वे भजन गाकर बाहर जैतून
के पहाड़ पर गए।

□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□

27 तब यीशु ने उनसे कहा, “तुम सब
ठोकर खाओगे, क्योंकि लिखा है:
‘मैं चरवाहे को मारूँगा,
और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।’
28 “परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद
तुम से पहले गलील को जाऊँगा।”
29 पतरस ने उससे कहा, “यदि सब
ठोकर खाएँ तो खाएँ, पर मैं ठोकर नहीं
खाऊँगा।”
30 यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझ से
सच कहता हूँ, कि आज ही इसी रात
को मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले,
तू तीन बार मुझसे मुकर जाएगा।”
31 पर उसने और भी जोर देकर कहा,
“यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े फिर
भी तेरा इन्कार कभी न करूँगा।” इसी
प्रकार और सब ने भी कहा।

□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□

32 फिर वे गतसमनी नामक एक
जगह में आए; और उसने अपने चेलों
से कहा, “यहाँ बैठे रहो, जब तक मैं
प्रार्थना करूँ।”
33 और वह पतरस और याकूब और
यूहन्ना को अपने साथ ले गया; और

बहुत ही अधीर और व्याकुल होने
लगा,
34 और उनसे कहा, **"मेरा मन बहुत
उदास है, यहाँ तक कि मैं मरने
पर हूँ: तुम यहाँ ठहरो और जागते
रहो।"** ***([illegible]. 42:5)***
35 और वह थोड़ा आगे बढ़ा, और
भूमि पर गिरकर प्रार्थना करने लगा,
कि यदि हो सके तो यह समय मुझ पर
से टल जाए।
36 और कहा, **"*[illegible] [illegible], [illegible]
[illegible]*,‡ तुझ से सब कुछ हो सकता
है; इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले:
फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं,
पर जो तू चाहता है वही हो।"**
37 फिर वह आया और उन्हें सोते
पाकर पतरस से कहा, **"हे शमौन, तू
सो रहा है? क्या तू एक घंटे भी न
जाग सका?**
38 **जागते और प्रार्थना करते रहो
कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो
तैयार है, पर शरीर दुर्बल है।"**
39 और वह फिर चला गया, और
वही बात कहकर प्रार्थना की।
40 और फिर आकर उन्हें सोते पाया,
क्योंकि उनकी आँखें नींद से भरी थीं;
और नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर
दें।
41 फिर तीसरी बार आकर उनसे
कहा, **"अब सोते रहो और विश्राम
करो, बस, घड़ी आ पहुँची; देखो
मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ
पकड़वाया जाता है।**
42 **उठो, चलें! देखो, मेरा
पकड़वानेवाला निकट आ पहुँचा है!"**

[illegible]

43 वह यह कह ही रहा था, कि
यहूदा जो बारहों में से था, अपने
साथ प्रधान याजकों और शास्त्रियों
और प्राचीनों की ओर से एक बड़ी भीड़
तलवारें और लाठियाँ लिए हुए तुरन्त
आ पहुँची।
44 और उसके पकड़वानेवाले ने उन्हें
यह पता दिया था, कि जिसको मैं चूमूं
वही है, उसे पकड़कर सावधानी से ले
जाना।
45 और वह आया, और तुरन्त उसके
पास जाकर कहा, "हे रब्बी!" और
उसको बहुत चूमा।
46 तब उन्होंने उस पर हाथ डालकर
उसे पकड़ लिया।
47 उनमें से जो पास खड़े थे, एक ने
तलवार खींचकर महायाजक के दास
पर चलाई, और उसका कान उड़ा
दिया।
48 यीशु ने उनसे कहा, **"क्या तुम
डाकू जानकर मुझे पकड़ने के लिये
तलवारें और लाठियाँ लेकर निकले
हो?**
49 **मैं तो हर दिन मन्दिर में तुम्हारे
साथ रहकर उपदेश दिया करता था,
और तब तुम ने मुझे न पकड़ा: परन्तु
यह इसलिए हुआ है कि पवित्रशास्त्र
की बातें पूरी हों।"**
50 इस पर सब चेले उसे छोड़कर
भाग गए। ***([illegible]. 88:18)***
51 और एक जवान अपनी नंगी देह
पर चादर ओढ़े हुए उसके पीछे हो
लिया; और लोगों ने उसे पकड़ा।
52 पर वह चादर छोड़कर नंगा भाग
गया।

[illegible]

53 फिर वे यीशु को महायाजक के
पास ले गए; और सब प्रधान याजक
और पुरनिए और शास्त्री उसके यहाँ
इकट्ठे हो गए।
54 पतरस दूर ही दूर से उसके पीछे-
पीछे महायाजक के आँगन के भीतर

‡ **14:36** *[illegible]*: सीरिया की भाषा में इस शब्द, "अब्बा" का अर्थ है पिता।

तक गया, और प्यादों के साथ बैठकर
आग तापने लगा।
55 प्रधान याजक और सारी
महासभा यीशु को मार डालने के लिये
उसके विरोध में गवाही की खोज में थे,
पर न मिली।
56 क्योंकि बहुत से उसके विरोध
में झूठी गवाही दे रहे थे, पर उनकी
गवाही एक सी न थी।
57 तब कितनों ने उठकर उस पर यह
झूठी गवाही दी,
58 "हमने इसे यह कहते सुना है
'मैं इस हाथ के बनाए हुए मन्दिर
को ढा दूँगा, और तीन दिन में दूसरा
बनाऊँगा, जो हाथ से न बना हो।' "
59 इस पर भी उनकी गवाही एक सी
न निकली।
60 तब महायाजक ने बीच में खड़े
होकर यीशु से पूछा; "तू कोई उत्तर
नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या
गवाही देते हैं?"
61 परन्तु वह मौन साधे रहा,
और कुछ उत्तर न दिया। महायाजक
ने उससे फिर पूछा, "क्या तू उस
परमधन्य का पुत्र मसीह है?"
62 यीशु ने कहा, **"हाँ मैं हूँ:**

और तुम मनुष्य के पुत्र को
सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर
बैठे,
और आकाश के बादलों के
साथ आते देखोगे।"*([illegible]. 7:13, [illegible]. 110:1)*

63 तब महायाजक ने अपने वस्त्र
फाड़कर कहा, "अब हमें गवाहों का
क्या प्रयोजन है? ***([illegible] 26:65)***
64 तुम ने यह निन्दा सुनी। तुम्हारी
क्या राय है?" उन सब ने कहा
यह मृत्युदण्ड के योग्य है। ***([illegible]. 24:16)***
65 तब कोई तो उस पर थूकने,
और कोई उसका मुँह ढाँपने और उसे
घूँसे मारने, और उससे कहने लगे,
"भविष्यद्वाणी कर!" और पहरेदारों ने
उसे पकड़कर थप्पड़ मारे।

[illegible]

66 जब पतरस नीचे आँगन में था,
तो महायाजक की दासियों में से एक
वहाँ आई।
67 और पतरस को आग तापते
देखकर उस पर टकटकी लगाकर देखा
और कहने लगी, "तू भी तो उस नासरी
यीशु के साथ था।"
68 वह मुकर गया, और कहा, "मैं
तो नहीं जानता और नहीं समझता कि
तू क्या कह रही है।" फिर वह बाहर
डेवढ़ी में गया; और मुर्गे ने बाँग दी।
69 वह दासी उसे देखकर उनसे जो
पास खड़े थे, फिर कहने लगी, कि "यह
उनमें से एक है।"
70 परन्तु वह फिर मुकर गया। और
थोड़ी देर बाद उन्होंने जो पास खड़े थे
फिर पतरस से कहा, "निश्चय तू उनमें
से एक है; क्योंकि तू गलीली भी है।"
71 तब वह स्वयं को कोसने और
शपथ खाने लगा, "मैं उस मनुष्य
को, जिसकी तुम चर्चा करते हो, नहीं
जानता।"
72 तब तुरन्त दूसरी बार मुर्गे ने बाँग
दी पतरस को यह बात जो यीशु ने
उससे कही थी याद आई, **"मुर्गे के दो**
बार बाँग देने से पहले तू तीन बार
मेरा इन्कार करेगा।" वह इस बात को
सोचकर फूट फूटकर रोने लगा।

15

[illegible]

1 और भोर होते ही तुरन्त प्रधान
याजकों, प्राचीनों, और शास्त्रियों ने
वरन् सारी महासभा ने सलाह करके
यीशु को बन्धवाया, और उसे ले जाकर
पिलातुस के हाथ सौंप दिया।

2 और पिलातुस ने उससे पूछा, “क्या तू यहूदियों का राजा है?” उसने उसको उत्तर दिया, **“तू स्वयं ही कह रहा है।”**

3 और प्रधान याजक उस पर बहुत बातों का दोष लगा रहे थे।

4 पिलातुस ने उससे फिर पूछा, “क्या तू कुछ उत्तर नहीं देता, देख ये तुझ पर कितनी बातों का दोष लगाते हैं?”

5 यीशु ने फिर कुछ उत्तर नहीं दिया; यहाँ तक कि पिलातुस को बड़ा आश्चर्य हुआ।

[illegible]

6 वह उस पर्व में किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, उनके लिये छोड़ दिया करता था।

7 और बरअब्बा नाम का एक मनुष्य उन बलवाइयों के साथ बन्धुआ था, जिन्होंने बलवे में हत्या की थी।

8 और भीड़ ऊपर जाकर उससे विनती करने लगी, कि जैसा तू हमारे लिये करता आया है वैसा ही कर।

9 पिलातुस ने उनको यह उत्तर दिया, “क्या तुम चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?”

10 क्योंकि वह जानता था, कि प्रधान याजकों ने उसे डाह से पकड़वाया था।

11 परन्तु प्रधान याजकों ने लोगों को उभारा, कि वह बरअब्बा ही को उनके लिये छोड़ दे।

12 यह सुन पिलातुस ने उनसे फिर पूछा, “तो जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसको मैं क्या करूँ?”

13 वे फिर चिल्लाए, “उसे क्रूस पर चढ़ा दे!”

14 पिलातुस ने उनसे कहा, “क्यों, इसने क्या बुराई की है?” परन्तु वे और भी चिल्लाए, “उसे क्रूस पर चढ़ा दे।”

15 तब पिलातुस ने भीड़ को प्रसन्न करने की इच्छा से, बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।

[illegible]

16 सिपाही उसे किले के भीतर आँगन में ले गए जो प्रीटोरियुम कहलाता है, और सारे सैनिक दल को बुला लाए।

17 और उन्होंने उसे बैंगनी वस्त्र पहनाया और काँटों का मुकुट गूँथकर उसके सिर पर रखा,

18 और यह कहकर उसे नमस्कार करने लगे, “हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!”

19 वे उसके सिर पर सरकण्डे मारते, और उस पर थूकते, और घुटने टेककर उसे प्रणाम करते रहे।

20 जब वे उसका उपहास कर चुके, तो उस पर से बैंगनी वस्त्र उतारकर उसी के कपड़े पहनाए; और तब उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिये बाहर ले गए।

[illegible]

21 सिकन्दर और रूफुस का पिता शमौन नामक एक कुरेनी मनुष्य, जो गाँव से आ रहा था उधर से निकला; उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले।

22 और वे उसे *[illegible]** नामक जगह पर, जिसका अर्थ खोपड़ी का स्थान है, लाए।

23 और उसे गन्धरस मिला हुआ दाखरस देने लगे, परन्तु उसने नहीं लिया।

---

* **15:22** *[illegible]*: मत्ती 27:33 की टिप्पणी को देखें।

24 तब उन्होंने उसको *[illegible] [illegible] [illegible]*†, और उसके कपड़ों
पर चिट्ठियाँ डालकर, कि किसको
क्या मिले, उन्हें बाँट लिया। ***([illegible]. 22:18)***
25 और एक पहर दिन चढ़ा था, जब
उन्होंने उसको क्रूस पर चढ़ाया।
26 और उसका दोषपत्र लिखकर
उसके ऊपर लगा दिया गया कि
“यहूदियों का राजा।”
27 उन्होंने उसके साथ दो डाकू, एक
उसकी दाहिनी और एक उसकी बाईं
ओर क्रूस पर चढ़ाए।
28 तब पवित्रशास्त्र का वह वचन
कि वह अपराधियों के संग गिना गया,
पूरा हुआ। ***([illegible]. 53:12)***
29 और मार्ग में जानेवाले सिर
हिला-हिलाकर और यह कहकर उसकी
निन्दा करते थे, “वाह! मन्दिर
के ढानेवाले, और तीन दिन में
बनानेवाले! ***([illegible]. 22:7, [illegible]. 109:25)***
30 क्रूस पर से उतरकर अपने आपको
बचा ले।”
31 इसी तरह से प्रधान याजक भी,
शास्त्रियों समेत, आपस में उपहास
करके कहते थे; “इसने औरों को
बचाया, पर अपने को नहीं बचा
सकता।
32 इस्राएल का राजा, मसीह, अब
क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर
विश्वास करें।” और जो उसके साथ
क्रूसों पर चढ़ाए गए थे, वे भी उसकी
निन्दा करते थे।

[illegible] [illegible] [illegible]

33 और दोपहर होने पर सारे देश में
अंधियारा छा गया, और तीसरे पहर
तक रहा।
34 तीसरे पहर यीशु ने बड़े शब्द से
पुकारकर कहा, **“इलोई, इलोई, लमा
शबक्तनी?”** जिसका अर्थ है, **“हे मेरे
परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे
क्यों छोड़ दिया?”**
35 जो पास खड़े थे, उनमें से कितनों
ने यह सुनकर कहा, “देखो, यह
एलिय्याह को पुकारता है।”
36 और एक ने दौड़कर पनसोख्ता
को सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर
रखकर उसे चुसाया, और कहा, “ठहर
जाओ; देखें, एलिय्याह उसे उतारने
के लिये आता है कि नहीं।” ***([illegible]. 69:21)***
37 तब यीशु ने बड़े शब्द से
चिल्लाकर प्राण छोड़ दिये।
38 और मन्दिर का परदा ऊपर से
नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया।
39 जो सूबेदार उसके सामने खड़ा
था, जब उसे यूँ चिल्लाकर प्राण छोड़ते
हुए देखा, तो उसने कहा, “सचमुच यह
मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था!”
40 कई स्त्रियाँ भी दूर से देख रही
थीं: उनमें मरियम मगदलीनी, और
छोटे याकूब और योसेस की माता
मरियम, और सलोमी थीं।
41 जब वह गलील में था तो ये
उसके पीछे हो लेती थीं और उसकी
सेवा-टहल किया करती थीं; और भी
बहुत सी स्त्रियाँ थीं, जो उसके साथ
यरूशलेम में आई थीं।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

42 और जब संध्या हो गई, क्योंकि
तैयारी का दिन था, जो सब्त के एक
दिन पहले होता है,
43 अरिमतियाह का रहनेवाला
[illegible]‡ आया, जो प्रतिष्ठित मंत्री

† **15:24** *[illegible] [illegible] [illegible]:* कील ठोक कर या बाँधकर किसी को मृत्यु के लिये क्रूस पर चढ़ाया जाना, विशेष रूप से प्राचीनकाल में सजा के रूप में दिया जाता था। ‡ **15:43** *[illegible]:* एक प्रतिष्ठित व्यक्ति, जो सम्भवतः यहूदियों के बीच एक उच्च पद पर, उनके महान परिषद में से एक, या एक यहूदी प्रवक्ता के रूप में था।

और आप भी परमेश्वर के राज्य की
प्रतीक्षा में था। वह साहस करके
पिलातुस के पास गया और यीशु का
शव माँगा।
44 पिलातुस ने आश्चर्य किया, कि
वह इतना शीघ्र मर गया; और उसने
सूबेदार को बुलाकर पूछा, कि “क्या
उसको मरे हुए देर हुई?”
45 जब उसने सूबेदार के द्वारा हाल
जान लिया, तो शव यूसुफ को दिला
दिया।
46 तब उसने एक मलमल की चादर
मोल ली, और शव को उतारकर उस
चादर में लपेटा, और एक कब्र में जो
चट्टान में खोदी गई थी रखा, और कब्र
के द्वार पर एक पत्थर लुढ़का दिया।
47 और मरियम मगदलीनी और
योसेस की माता मरियम देख रही थीं
कि वह कहाँ रखा गया है।

16

[illegible]

1 जब सब्त का दिन बीत गया,
तो मरियम मगदलीनी, और याकूब
की माता मरियम, और सलोमी ने
सुगन्धित वस्तुएँ मोल लीं, कि आकर
उस पर मलें।
2 सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर,
जब सूरज निकला ही था, वे कब्र पर
आईं,
3 और आपस में कहती थीं, “हमारे
लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन
लुढ़काएगा?”
4 जब उन्होंने आँख उठाई, तो देखा
कि पत्थर लुढ़का हुआ है! वह बहुत
ही बड़ा था।
5 और कब्र के भीतर जाकर, उन्होंने
एक जवान को श्वेत वस्त्र पहने हुए
दाहिनी ओर बैठे देखा, और बहुत
चकित हुई।
6 उसने उनसे कहा, “चकित मत
हो, तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर
चढ़ाया गया था, ढूँढ़ती हो। वह जी
उठा है, यहाँ नहीं है; देखो, यही वह
स्थान है, जहाँ उन्होंने उसे रखा था।
7 परन्तु तुम जाओ, और उसके चेलों
और पतरस से कहो, कि वह तुम से
पहले गलील को जाएगा; जैसा उसने
तुम से कहा था, तुम वहीं उसे देखोगे।”
8 और वे निकलकर कब्र से भाग गईं;
क्योंकि कँपकँपी और घबराहट उन पर
छा गई थी। और उन्होंने किसी से कुछ
न कहा, क्योंकि डरती थीं।

[illegible]

9 सप्ताह के पहले दिन भोर होते
ही वह जी उठकर पहले-पहल मरियम
मगदलीनी को जिसमें से उसने सात
दुष्टात्माएँ निकाली थीं, दिखाई
दिया।
10 उसने जाकर उसके साथियों को
जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे,
समाचार दिया।
11 और उन्होंने यह सुनकर कि वह
जीवित है और उसने उसे देखा है,
विश्वास नहीं किया।

[illegible]

12 इसके बाद वह दूसरे रूप में उनमें
से दो को जब वे गाँव की ओर जा रहे
थे, दिखाई दिया।
13 उन्होंने भी जाकर औरों को
समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उनका
भी विश्वास न किया।

[illegible]

14 पीछे वह उन ग्यारह चेलों को
भी, जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई
दिया, और उनके अविश्वास और
मन की कठोरता पर उलाहना दिया,
क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के
बाद उसे देखा था, इन्होंने उसका
विश्वास न किया था।

15 और उसने उनसे कहा, “**तुम सारे
जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों
को सुसमाचार प्रचार करो।**

16 *[illegible] [illegible] [illegible]*[*]**और
बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा,
परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी
ठहराया जाएगा।**

17 **और विश्वास करनेवालों में
ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से
दुष्टात्माओं को निकालेंगे; नई-नई
भाषा बोलेंगे;**

18 **साँपों को उठा लेंगे, और यदि
वे प्राणनाशक वस्तु भी पी जाएँ तो
भी उनकी कुछ हानि न होगी; वे
बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो
जाएँगे।**”

[illegible] [illegible] [illegible]

19 तब प्रभु यीशु उनसे बातें करने के
बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और
परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया।
(1 [illegible]. 3:22)

20 और उन्होंने निकलकर हर जगह
प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम
करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो
साथ-साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता
रहा। आमीन।

---

[*] **16:16** *[illegible] [illegible] [illegible]:* जो उसे सत्य मानता है और ऐसा व्यवहार करता है कि वो सत्य ही है।

लूका रचित सुसमाचार

□□□□□

प्राचीन लेखकों का एकमत से मानना है कि, इस पुस्तक का लेखक वैद्य लूका है, और अपनी इस पुस्तक के आधार पर वह द्वितीय पीढ़ी का मसीही विश्वासी प्रतीत होता है। परम्परा के अनुसार वह एक अन्यजाति विश्वासी था। मुख्यतः वह एक सुसमाचार प्रचारक था। उसने मसीह के शुभ सन्देश का वृत्तान्त एवं प्रेरितों के काम की पुस्तकें लिखी थीं। वह मसीही प्रचार कार्य में पौलुस का सहकर्मी भी रहा था (कुलु. 4:14, 2 तीमु. 4:11; 11:1)।

□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□

लगभग ई.स. 60 - 80

लूका ने इस पुस्तक को कैसरिया में लिखना आरम्भ किया और रोम में आकर उसे पूरा किया। लिखने के मुख्य स्थान बैतलहम, गलील, यहूदिया और यरूशलेम रहे होंगे।

□□□□□□□

लूका द्वारा मसीह के शुभ सन्देश की यह पुस्तक थियुफिलुस को समर्पित है। थियुफिलुस का अर्थ है “परमेश्वर से प्रेम करनेवाला”। यह स्पष्ट नहीं है कि वह मसीही विश्वासी था या विश्वासी बनना चाहता था। यह तथ्य कि लूका उसे “अत्युत्तम” कहकर संबोधित करता है 1:3, यह सुझाव देता है कि वह एक रोमी उच्च पद का अधिकारी रहा होगा। अनेक प्रमाण अन्यजाति पाठकों की ओर संकेत करते हैं। उसकी प्रमुख अभिव्यक्तियाँ थीं, “मनुष्य का पुत्र” और “परमेश्वर का राज्य” (लूका 5:24; 19:10; 17:20-21; 13:18)।

□□□□□□□□□□

यीशु के जीवन का वृत्तान्त लिखते हुए, लूका यीशु को “मनुष्य का पुत्र” कहता है। उसने थियुफिलुस को लिखा कि, जिन बातों की शिक्षा उसे दी गई है उनकी उचित समझ उसे प्राप्त हो (लूका 1:4)। लूका सताव के समय अपने लेखों द्वारा मसीही विश्वास की रक्षा कर रहा था कि थियुफिलुस को समझ प्राप्त हो कि यीशु के अनुयायियों में अनिष्ट या बुराई वाली कोई बात नहीं है।

□□□ □□□□

यीशु- एक उत्तम व्यक्ति

रूपरेखा

1. यीशु का जन्म एवं आरम्भिक जीवन — 1:5-2:52
2. यीशु की सेवा का आरम्भ — 3:1 - 4:13
3. उद्धार का कर्ता यीशु — 4:14-9:50
4. यीशु का क्रूस की ओर बढ़ना — 9:51-19:27
5. यरूशलेम में यीशु का विजय प्रवेश, क्रूसीकरण और पुनरूत्थान — 19:28-24:53

□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

1 बहुतों ने उन बातों का जो हमारे
बीच में बीती हैं, इतिहास लिखने में
हाथ लगाया है।
2 जैसा कि उन्होंने जो पहले ही से
इन बातों के देखनेवाले और वचन के
सेवक थे हम तक पहुँचाया।
3 इसलिए हे श्रीमान थियुफिलुस
मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन
सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से
ठीक-ठीक जाँच करके उन्हें तेरे लिये
क्रमानुसार लिखूँ,

[4] कि तू यह जान ले, कि वे बातें जिनकी तूने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं।

[illegible] [illegible] [illegible]

[5] यहूदिया के राजा हेरोदेस के समय अबिय्याह के दल में जकर्याह नाम का एक याजक था, और उसकी पत्नी हारून के वंश की थी, जिसका नाम एलीशिबा था।

[6] और वे दोनों परमेश्वर के सामने धर्मी थे, और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलनेवाले थे।

[7] उनके कोई सन्तान न थी, क्योंकि एलीशिबा बाँझ थी, और वे दोनों बूढ़े थे।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[8] जब वह अपने दल की पारी पर परमेश्वर के सामने याजक का काम करता था।

[9] तो याजकों की रीति के अनुसार उसके नाम पर चिट्ठी निकली, कि प्रभु के मन्दिर में जाकर धूप जलाए। ***([illegible]. 30:7)***

[10] और धूप जलाने के समय लोगों की सारी मण्डली बाहर प्रार्थना कर रही थी।

[11] कि प्रभु का एक स्वर्गदूत धूप की वेदी की दाहिनी ओर खड़ा हुआ उसको दिखाई दिया।

[12] और जकर्याह देखकर घबराया और उस पर बड़ा भय छा गया।

[13] परन्तु स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे जकर्याह, भयभीत न हो क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरी पत्नी एलीशिबा से तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना।

[14] और तुझे आनन्द और हर्ष होगा और बहुत लोग उसके जन्म के कारण आनन्दित होंगे।

[15] क्योंकि वह प्रभु के सामने महान होगा; और दाखरस और मदिरा कभी न पीएगा; और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा। ***([illegible]. 5:18, [illegible]. 13:4,5)***

[16] और इस्राएलियों में से बहुतों को उनके प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा।

[17] वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य में होकर उसके आगे-आगे चलेगा, कि पिताओं का मन बाल-बच्चों की ओर फेर दे; और आज्ञा न माननेवालों को धर्मियों की समझ पर लाए; और प्रभु के लिये एक योग्य प्रजा तैयार करे।" ***([illegible]. 4:5,6)***

[18] जकर्याह ने स्वर्गदूत से पूछा, "यह मैं कैसे जानूँ? क्योंकि मैं तो बूढ़ा हूँ; और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो गई है।"

[19] स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, "मैं *[illegible]** हूँ, जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता हूँ; और मैं तुझ से बातें करने और तुझे यह सुसमाचार सुनाने को भेजा गया हूँ। ***([illegible]. 8:16, [illegible]. 9:21)***

[20] और देख, जिस दिन तक ये बातें पूरी न हो लें, उस दिन तक तू मौन रहेगा, और बोल न सकेगा, इसलिए कि तूने मेरी बातों की जो अपने समय पर पूरी होंगी, विश्वास न किया।"

[21] लोग जकर्याह की प्रतीक्षा करते रहे और अचम्भा करने लगे कि उसे मन्दिर में ऐसी देर क्यों लगी?

[22] जब वह बाहर आया, तो उनसे बोल न सका अतः वे जान गए, कि उसने मन्दिर में कोई दर्शन पाया है;

---

* **1:19** *[illegible]:* गब्रिएल नाम का अर्थ "परमेश्वर का एक शक्तिशाली", यह सुसमाचार का खास सन्देशवाहक है।

और वह उनसे संकेत करता रहा, और
गूँगा रह गया।
23 जब उसकी सेवा के दिन पूरे हुए,
तो वह अपने घर चला गया।
24 इन दिनों के बाद उसकी पत्नी
एलीशिबा गर्भवती हुई; और पाँच
महीने तक अपने आपको यह कह के
छिपाए रखा।
25 "मनुष्यों में मेरा अपमान दूर
करने के लिये प्रभु ने इन दिनों में
कृपादृष्टि करके मेरे लिये ऐसा किया
है।" ***([illegible]. 30:23)***

[illegible]

26 छठवें महीने में परमेश्वर की ओर
से गब्रिएल स्वर्गदूत गलील के नासरत
नगर में,
27 एक कुँवारी के पास भेजा गया।
जिसकी मंगनी यूसुफ नाम दाऊद के
घराने के एक पुरुष से हुई थी: उस
कुँवारी का नाम मरियम था।
28 और स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर
आकर कहा, "आनन्द और जय तेरी
हो, जिस पर परमेश्वर का अनुग्रह
हुआ है! प्रभु तेरे साथ है!"
29 वह उस वचन से बहुत घबरा गई,
और सोचने लगी कि यह किस प्रकार
का अभिवादन है?
30 स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे
मरियम; भयभीत न हो, क्योंकि
परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है।
31 और देख, तू गर्भवती होगी, और
तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका
नाम यीशु रखना। ***([illegible]. 7:14)***
32 वह महान होगा; और परमप्रधान
का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर
उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको
देगा। ***([illegible]. 132:11, [illegible]. 9:6-7)***
33 और वह याकूब के घराने पर सदा
राज्य करेगा; और उसके राज्य का
अन्त न होगा।" ***(2 [illegible]. 7:12,16,
[illegible]. 1:8, [illegible]. 2:44)***
34 मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह
कैसे होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही
नहीं।"
35 स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया,
"पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और
परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया
करेगी; इसलिए *[illegible]*† जो
उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र
कहलाएगा।
36 और देख, और तेरी कुटुम्बिनी
एलीशिबा के भी बुढ़ापे में पुत्र
होनेवाला है, यह उसका, जो बाँझ
कहलाती थी छठवाँ महीना है।
37 परमेश्वर के लिए कुछ भी
असम्भव नहीं है।" ***([illegible] 19:26,
[illegible]. 32:27)***
38 मरियम ने कहा, "देख, मैं प्रभु की
दासी हूँ, तेरे वचन के अनुसार मेरे साथ
ऐसा हो।" तब स्वर्गदूत उसके पास से
चला गया।

[illegible]

39 उन दिनों में मरियम उठकर शीघ्र
ही पहाड़ी देश में यहूदा के एक नगर
को गई।
40 और जकर्याह के घर में जाकर
एलीशिबा को नमस्कार किया।
41 जैसे ही एलीशिबा ने मरियम का
नमस्कार सुना, वैसे ही बच्चा उसके
पेट में उछला, और एलीशिबा पवित्र
आत्मा से परिपूर्ण हो गई।
42 और उसने बड़े शब्द से पुकारकर
कहा, "तू स्त्रियों में धन्य है, और तेरे
पेट का फल धन्य है!

† **1:35** *[illegible]:* यीशु एक स्त्री द्वारा पैदा हुआ था और इसलिए वह एक वास्तविक मनुष्य था। उसका पिता परमेश्वर है और वह परमेश्वर का पुत्र है।

43 और यह अनुग्रह मुझे कहाँ से हुआ, कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आई?

44 और देख जैसे ही तेरे नमस्कार का शब्द मेरे कानों में पड़ा वैसे ही बच्चा मेरे पेट में आनन्द से उछल पड़ा।

45 और धन्य है, वह जिसने विश्वास किया कि जो बातें प्रभु की ओर से उससे कही गई, वे पूरी होंगी।”

[illegible]

46 तब मरियम ने कहा,
“मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है।
47 और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करनेवाले
परमेश्वर से आनन्दित हुई। ***(1 [illegible]. 2:1)***
48 क्योंकि उसने अपनी दासी की दीनता पर
दृष्टि की है;
इसलिए देखो, अब से सब युग-युग
के लोग मुझे धन्य कहेंगे। ***(1 [illegible]. 1:11, [illegible] 1:42, [illegible]. 3:12)***
49 क्योंकि उस शक्तिमान ने मेरे लिये बड़े-
बड़े काम किए हैं, और उसका नाम पवित्र है।
50 और उसकी दया उन पर,
जो उससे डरते हैं,
पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है। ***([illegible]. 103:17)***
51 उसने अपना भुजबल दिखाया,
और जो अपने मन में घमण्ड करते थे,
उन्हें तितर-बितर किया। ***(2 [illegible]. 22:28, [illegible]. 89:10)***
52 उसने शासकों को सिंहासनों से
गिरा दिया;
और दीनों को ऊँचा किया। ***(1 [illegible]. 2:7, [illegible]. 5:11, [illegible]. 113:7,8)***
53 उसने भूखों को अच्छी वस्तुओं से
तृप्त किया,
और धनवानों को खाली हाथ निकाल दिया। ***(1 [illegible]. 2:5, [illegible]. 107:9)***
54 उसने अपने सेवक इस्राएल को सम्भाल
लिया कि अपनी उस दया को स्मरण करे, ***([illegible]. 98:3, [illegible]. 41:8,9)***
55 जो अब्राहम और उसके वंश पर सदा रहेगी,
जैसा उसने हमारे पूर्वजों से कहा था।” ***([illegible]. 22:17, [illegible] 7:20)***

56 मरियम लगभग तीन महीने उसके साथ रहकर अपने घर लौट गई।

[illegible]

57 तब एलीशिबा के जनने का समय पूरा हुआ, और वह पुत्र जनी।

58 उसके पड़ोसियों और कुटुम्बियों ने यह सुनकर, कि प्रभु ने उस पर बड़ी दया की है, उसके साथ आनन्दित हुए।

59 और ऐसा हुआ कि आठवें दिन वे बालक का खतना करने आए और उसका नाम उसके पिता के नाम पर जकर्याह रखने लगे। ***([illegible]. 17:12, [illegible]. 12:3)***

60 और उसकी माता ने उत्तर दिया, “नहीं; वरन् उसका नाम यूहन्ना रखा जाए।”

61 और उन्होंने उससे कहा, “तेरे कुटुम्ब में किसी का यह नाम नहीं।”

62 तब उन्होंने उसके पिता से संकेत करके पूछा कि तू उसका नाम क्या रखना चाहता है?

63 और उसने लिखने की पट्टी मँगवाकर लिख दिया, “उसका नाम यूहन्ना है,” और सभी ने अचम्भा किया।

64 तब उसका मुँह और जीभ तुरन्त खुल गई; और वह बोलने और परमेश्वर की स्तुति करने लगा।
65 और उसके आस-पास के सब रहनेवालों पर भय छा गया; और उन सब बातों की चर्चा यहूदिया के सारे पहाड़ी देश में फैल गई।
66 और सब सुननेवालों ने अपने-अपने मन में विचार करके कहा, "यह बालक कैसा होगा?" क्योंकि प्रभु का हाथ उसके साथ था।

[illegible] [illegible] [illegible]

67 और उसका पिता जकर्याह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया, और भविष्यद्वाणी करने लगा।
68 "प्रभु इस्राएल का परमेश्वर धन्य हो,
कि उसने अपने लोगों पर दृष्टि की
और उनका छुटकारा किया है, ***([illegible]. 111:9, [illegible]. 41:13)***
69 और अपने सेवक दाऊद के घराने में
हमारे लिये एक उद्धार का *[illegible]*‡
निकाला, ***([illegible]. 132:17, [illegible]. 30:9)***
70 जैसे उसने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं
के द्वारा जो जगत के आदि से होते
आए हैं, कहा था,
71 अर्थात् हमारे शत्रुओं से, और हमारे सब
बैरियों के हाथ से हमारा उद्धार किया है; ***([illegible]. 106:10)***
72 कि हमारे पूर्वजों पर दया करके अपनी
पवित्र वाचा का स्मरण करे,
73 और वह शपथ जो उसने हमारे पिता
अब्राहम से खाई थी, ***([illegible]. 17:7, [illegible]. 105:8,9)***
74 कि वह हमें यह देगा, कि हम अपने
शत्रुओं के हाथ से छूटकर,
75 उसके सामने पवित्रता और धार्मिकता
से जीवन भर निडर रहकर उसकी सेवा करते रहें।
76 और तू हे बालक, *[illegible] [illegible]*
[illegible] [illegible]§,
क्योंकि तू प्रभु के मार्ग तैयार करने
के लिये उसके आगे-आगे चलेगा, ***([illegible]. 3:1, [illegible]. 40:3)***
77 कि उसके लोगों को उद्धार का ज्ञान दे,
जो उनके पापों की क्षमा से प्राप्त होता है।
78 यह हमारे परमेश्वर की उसी बड़ी करुणा से होगा;
जिसके कारण ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश उदय होगा।
79 कि अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठनेवालों को ज्योति दे,
और हमारे पाँवों को कुशल के मार्ग में सीधे चलाए।" ***([illegible]. 58:8, [illegible]. 60:1,2, [illegible]. 9:2)***
80 और वह बालक यूहन्ना, बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया और इस्राएल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों में रहा।

2

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 उन दिनों में औगुस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे रोमी साम्राज्य के लोगों के नाम लिखे जाएँ।
2 यह पहली नाम लिखाई उस समय हुई, जब *[illegible]** सीरिया का राज्यपाल था।
3 और सब लोग नाम लिखवाने के लिये अपने-अपने नगर को गए।

‡ **1:69** *[illegible]:* सींग सामर्थ्य, महिमा, और शक्ति का एक प्रतीक है। § **1:76** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* वह मसीह और सुसमाचार का प्रचारक ही नहीं था, उसने मसीह के आने की भविष्यद्वाणी भी की थी * **2:2** *[illegible]:* वह सीरिया का राज्यपाल था।

4 अतः यूसुफ भी इसलिए कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया।

5 कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए।

6 उनके वहाँ रहते हुए उसके जनने के दिन पूरे हुए।

7 और वह अपना पहलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा; क्योंकि उनके लिये सराय में जगह न थी।

[illegible]

8 और उस देश में कितने गड़ेरिये थे, जो रात को मैदानों में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे।

9 और परमेश्वर का एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ; और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका, और वे बहुत डर गए।

10 तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "मत डरो; क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ; जो सब लोगों के लिये होगा,

11 कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और वही मसीह प्रभु है।

12 और इसका तुम्हारे लिये यह चिन्ह है, कि तुम एक बालक को कपड़े में लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा पाओगे।"

13 तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया,

14 "आकाश में परमेश्वर की महिमा
और
पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह
प्रसन्न है शान्ति हो।"

[illegible]

15 जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को चले गए, तो गड़ेरियों ने आपस में कहा, "आओ, हम बैतलहम जाकर यह बात जो हुई है, और जिसे प्रभु ने हमें बताया है, देखें।"

16 और उन्होंने तुरन्त जाकर मरियम और यूसुफ को और चरनी में उस बालक को पड़ा देखा।

17 इन्हें देखकर उन्होंने वह बात जो इस बालक के विषय में उनसे कही गई थी, प्रगट की।

18 और सब सुननेवालों ने उन बातों से जो गड़ेरियों ने उनसे कहीं आश्चर्य किया।

19 परन्तु मरियम ये सब बातें अपने मन में रखकर सोचती रही।

20 और गड़ेरिये जैसा उनसे कहा गया था, वैसा ही सब सुनकर और देखकर परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए लौट गए।

[illegible]

21 जब आठ दिन पूरे हुए, और उसके खतने का समय आया, तो उसका नाम यीशु रखा गया, यह नाम स्वर्गदूत द्वारा, उसके गर्भ में आने से पहले दिया गया था। ***([illegible]. 17:12, [illegible]. 12:3)***

22 और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार मरियम के शुद्ध होने के दिन पूरे हुए तो यूसुफ और मरियम उसे यरूशलेम में ले गए, कि प्रभु के सामने लाएँ। ***([illegible]. 12:6)***

23 जैसा कि प्रभु की व्यवस्था में लिखा है: "हर एक पहलौठा प्रभु के लिये पवित्र ठहरेगा।" ***([illegible]. 13:2,12)***

24 और प्रभु की व्यवस्था के वचन के अनुसार, "पण्डुकों का एक जोड़ा,

या कबूतर के दो बच्चे लाकर बलिदान
करें।” ***([illegible]. 12:8)***

[illegible]

25 उस समय यरूशलेम में शमौन
नामक एक मनुष्य था, और वह मनुष्य
धर्मी और भक्त था; और इस्राएल की
शान्ति की प्रतीक्षा कर रहा था, और
पवित्र आत्मा उस पर था।
26 और पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकट
हुआ, कि जब तक तू प्रभु के मसीह
को देख न लेगा, तब तक मृत्यु को न
देखेगा।
27 और वह आत्मा के सिखाने से
मन्दिर में आया; और जब माता-
पिता उस बालक यीशु को भीतर लाए,
कि उसके लिये व्यवस्था की रीति के
अनुसार करें,
28 तो उसने उसे अपनी गोद में
लिया और परमेश्वर का धन्यवाद
करके कहा:

29 “हे प्रभु, अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शान्ति से विदा कर दे;
30 क्योंकि मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है।
31 जिसे तूने सब देशों के लोगों के सामने तैयार किया है। ***([illegible]. 40:5)***
32 कि वह अन्यजातियों को सत्य प्रकट करने के लिए एक ज्योति होगा,
और तेरे निज लोग इस्राएल की महिमा हो।” ***([illegible]. 42:6, [illegible]. 49:6)***

33 और उसका पिता और उसकी
माता इन बातों से जो उसके विषय में
कही जाती थीं, आश्चर्य करते थे।
34 तब शमौन ने उनको आशीष
देकर, उसकी माता मरियम से कहा,
“देख, वह तो इस्राएल में बहुतों के
गिरने, और उठने के लिये, और एक
ऐसा चिन्ह होने के लिये ठहराया गया
है, जिसके विरोध में बातें की जाएँगी
([illegible]. 8:14-15)
35 (वरन् तेरा प्राण भी तलवार से
आर-पार छिद जाएगा) इससे बहुत
हृदयों के विचार प्रगट होंगे।”

[illegible]

36 और आशेर के गोत्र में से
हन्नाह नामक फनूएल की बेटी एक
[illegible]† थी: वह
बहुत बूढ़ी थी, और विवाह होने के
बाद सात वर्ष अपने पति के साथ रह
पाई थी।
37 वह चौरासी वर्ष की विधवा थी:
और मन्दिर को नहीं छोड़ती थी पर
उपवास और प्रार्थना कर करके रात-
दिन उपासना किया करती थी।
38 और वह उस घड़ी वहाँ आकर
परमेश्वर का धन्यवाद करने लगी,
और उन सभी से, जो यरूशलेम के
छुटकारे की प्रतीक्षा कर रहे थे, उसके
विषय में बातें करने लगी। ***([illegible].
52:9)***

[illegible]

39 और जब वे प्रभु की व्यवस्था
के अनुसार सब कुछ निपटा चुके तो
गलील में अपने नगर नासरत को फिर
चले गए।
40 और बालक बढ़ता, और बलवन्त
होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया;
और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।

[illegible]

41 उसके माता-पिता प्रतिवर्ष फसह
के पर्व में यरूशलेम को जाया करते
थे। ***([illegible]. 12:24-27, [illegible].
16:1-8)***

---

† **2:36** *[illegible]:* स्त्री भविष्यद्वक्ता को दर्शाता हैं।

42 जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो
वे पर्व की रीति के अनुसार यरूशलेम
को गए।
43 और जब वे उन दिनों को पूरा
करके लौटने लगे, तो वह बालक यीशु
यरूशलेम में रह गया; और यह उसके
माता-पिता नहीं जानते थे।
44 वे यह समझकर, कि वह और
यात्रियों के साथ होगा, एक दिन का
पड़ाव निकल गए: और उसे अपने
कुटुम्बियों और जान-पहचानवालों में
ढूँढ़ने लगे।
45 पर जब नहीं मिला, तो ढूँढ़ते-
ढूँढ़ते यरूशलेम को फिर लौट गए।
46 और तीन दिन के बाद उन्होंने उसे
मन्दिर में उपदेशकों के बीच में बैठे,
उनकी सुनते और उनसे प्रश्न करते हुए
पाया।
47 और जितने उसकी सुन रहे थे, वे
सब उसकी समझ और उसके उत्तरों से
चकित थे।
48 तब वे उसे देखकर चकित हुए
और उसकी माता ने उससे कहा, "हे
पुत्र, तूने हम से क्यों ऐसा व्यवहार
किया? देख, तेरा पिता और मैं कुढ़ते
हुए तुझे ढूँढ़ते थे।"
49 उसने उनसे कहा, **"तुम मुझे
क्यों ढूँढ़ते थे? क्या नहीं जानते
थे, कि** *[illegible]*‡ **होना अवश्य है?"**
50 परन्तु जो बात उसने उनसे कही,
उन्होंने उसे नहीं समझा।
51 तब वह उनके साथ गया, और
नासरत में आया, और उनके वश में
रहा; और उसकी माता ने ये सब बातें
अपने मन में रखीं।
52 और यीशु बुद्धि और डील-डौल
में और परमेश्वर और मनुष्यों के
अनुग्रह में बढ़ता गया। ***(1 [illegible]. 2:26, [illegible]. 3:4)***

3

[illegible]

1 तिबिरियुस कैसर के राज्य
के पन्द्रहवें वर्ष में जब पुन्तियुस
पिलातुस यहूदिया का राज्यपाल
था, और गलील में हेरोदेस इतूरैया,
और त्रखोनीतिस में, उसका भाई
फिलिप्पुस, और अबिलेने में
लिसानियास चौथाई के राजा थे।
2 और जब *[illegible]** थे, उस समय परमेश्वर
का वचन जंगल में जकर्याह के पुत्र
यूहन्ना के पास पहुँचा।
3 और वह यरदन के आस-पास के
सारे प्रदेश में आकर, पापों की क्षमा
के लिये मन फिराव के बपतिस्मा का
प्रचार करने लगा।
4 जैसे यशायाह भविष्यद्वक्ता के
कहे हुए वचनों की पुस्तक में लिखा है:
"जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द
हो रहा है कि,
'प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें
सीधी करो।
5 हर एक घाटी भर दी जाएगी, और
हर एक
पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा;
और जो टेढ़ा है सीधा, और जो ऊँचा
नीचा
है वह चौरस मार्ग बनेगा।
6 और हर प्राणी परमेश्वर के उद्धार को
देखेगा।' " ***([illegible]. 40:3-5)***
7 जो बड़ी भीड़ उससे बपतिस्मा
लेने को निकलकर आती थी, उनसे वह
कहता था, "हे साँप के बच्चों, तुम्हें

‡ **2:49** *[illegible]:* यीशु यहाँ पर उन लोगों को यह याद दिलाता है कि वह स्वर्ग से नीचे आया; और उसके सांसारिक माता-पिता से, एक उच्चतम पिता है। * **3:2** *[illegible]:* कैफा, हन्ना या हनन्याह का दामाद था और यह माना जाता है कि वे बारी-बारी से महायाजकीय कार्यभार को देखते थे।

किसने चेतावनी दी, कि आनेवाले
क्रोध से भागो?
8 अतः मन फिराव के योग्य फल
लाओः और अपने-अपने मन में यह
न सोचो, कि हमारा पिता अब्राहम
है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि
परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के
लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है।
9 और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़
पर रखा हुआ है, इसलिए जो-जो पेड़
अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और
आग में झोंका जाता है।"
10 और लोगों ने उससे पूछा, "तो
हम क्या करें?"
11 उसने उन्हें उतर दिया, "जिसके
पास दो कुर्ते हों? वह उसके साथ
जिसके पास नहीं हैं बाँट ले और जिसके
पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही करे।"
12 और चुंगी लेनेवाले भी बपतिस्मा
लेने आए, और उससे पूछा, "हे गुरु,
हम क्या करें?"
13 उसने उनसे कहा, "जो तुम्हारे
लिये ठहराया गया है, उससे अधिक न
लेना।"
14 और सिपाहियों ने भी उससे यह
पूछा, "हम क्या करें?" उसने उनसे
कहा, "किसी पर उपद्रव न करना, और
न झूठा दोष लगाना, और अपनी
मजदूरी पर सन्तोष करना।"

15 जब लोग आस लगाए हुए थे,
और सब अपने-अपने मन में यूहन्ना के
विषय में विचार कर रहे थे, कि क्या
यही मसीह तो नहीं है।
16 तो यूहन्ना ने उन सब के उत्तर में
कहा, "मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा
देता हूँ, परन्तु वह आनेवाला है, जो
मुझसे शक्तिशाली है; मैं तो इस योग्य
भी नहीं, कि उसके जूतों का फीता
खोल सकूँ, वह तुम्हें पवित्र आत्मा
और आग से बपतिस्मा देगा।
17 उसका सूप, उसके हाथ में है; और
वह अपना खलिहान अच्छी तरह से
साफ करेगा; और गेहूँ को अपने खत्ते में
इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग
में जो बुझने की नहीं जला देगा।"
18 अतः वह बहुत सी शिक्षा दे देकर
लोगों को सुसमाचार सुनाता रहा।

[illegible]

19 परन्तु उसने चौथाई देश के राजा
हेरोदेस को उसके भाई फिलिप्पुस की
पत्नी हेरोदियास के विषय, और सब
कुकर्मों के विषय में जो उसने किए थे,
उलाहना दिया।
20 इसलिए हेरोदेस ने उन सबसे
बढ़कर यह कुकर्म भी किया, कि यूहन्ना
को बन्दीगृह में डाल दिया।

[illegible]

21 जब सब लोगों ने बपतिस्मा
लिया, और यीशु भी बपतिस्मा लेकर
प्रार्थना कर रहा था, तो आकाश खुल
गया।
22 और पवित्र आत्मा *[illegible]*†
कबूतर के समान उस पर
उतरा, और यह आकाशवाणी हुई "तू
मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से प्रसन्न हूँ।"

[illegible]

23 जब यीशु आप उपदेश करने
लगा, तो लगभग तीस वर्ष की आयु
का था और (जैसा समझा जाता था)
यूसुफ का पुत्र था; और वह एली का,
24 और वह मत्तात का, और वह
लेवी का, और वह मलकी का, और वह
यन्ना का, और वह यूसुफ का,
25 और वह मत्तित्याह का, और वह
आमोस का, और वह नहूम का, और

† **3:22** *[illegible]*: यह एक वास्तविक दिखाई देनेवाली उपस्थिति थी, और निःसंदेह लोगों द्वारा देखा गया था।

वह असल्याह का, और वह नग्गई का,
26 और वह मात का, और वह
मत्तित्याह का, और वह शिमी का,
और वह योसेख का, और वह योदाह का,
27 और वह यूहन्ना का, और वह
रेसा का, और वह जरुब्बाबेल का, और
वह शालतीएल का, और वह नेरी का,
([illegible] 3:2, [illegible]. 12:1)
28 और वह मलकी का, और वह
अद्दी का, और वह कोसाम का, और वह
एल्मदाम का, और वह एर का,
29 और वह येशू का, और वह
एलीएजेर का, और वह योरीम का,
और वह मत्तात का, और वह लेवी का,
30 और वह शमौन का, और वह
यहूदा का, और वह यूसुफ का, और वह
योनान का, और वह एलयाकीम का,
31 और वह मलेआह का, और वह
मिन्नाह का, और वह मत्तता का, और
वह नातान का, और वह दाऊद का, ***(2 [illegible]. 5:14)***
32 और वह यिशै का, और वह ओबेद
का, और वह बोअज का, और वह
सलमोन का, और वह नहशोन का,
([illegible] 4:20-22)
33 और वह अम्मीनादाब का, और
वह अरनी का, और वह हेस्रोन का, और
वह पेरेस का, और वह यहूदा का, ***(1 [illegible]. 2:1-14)***
34 और वह याकूब का, और वह
इसहाक का, और वह अब्राहम का,
और वह तेरह का, और वह नाहोर का,
([illegible]. 21:3, [illegible]. 25:26, 1 [illegible]. 1:28,34)
35 और वह सरूग का, और वह रऊ
का, और वह पेलेग का, और वह एबेर
का, और वह शिलह का,
36 और वह केनान का, वह अरफक्षद
का, और वह शेम का, वह नूह का, वह
लेमेक का, ***([illegible]. 11:10-26, 1 [illegible]. 1:24-27)***
37 और वह मथूशिलह का, और वह
हनोक का, और वह यिरिद का, और वह
महललेल का, और वह केनान का,
38 और वह एनोश का, और वह
शेत का, और वह आदम का, और वह
परमेश्वर का पुत्र था। ***([illegible]. 4:25-5:32)***

4

[illegible]

1 फिर यीशु पवित्र आत्मा से भरा
हुआ, यरदन से लौटा; और आत्मा की
अगुआई से जंगल में फिरता रहा;
2 और चालीस दिन तक शैतान
[illegible][*]। उन
दिनों में उसने कुछ न खाया और जब
वे दिन पूरे हो गए, तो उसे भूख लगी।
3 और शैतान ने उससे कहा, "यदि तू
परमेश्वर का पुत्र है, तो इस पत्थर से
कह, कि रोटी बन जाए।"
4 यीशु ने उसे उत्तर दिया, **"लिखा
है: 'मनुष्य केवल रोटी से जीवित न
रहेगा।' "*([illegible]. 8:3)***
5 तब शैतान उसे ले गया और
उसको पल भर में जगत के सारे राज्य
दिखाए।
6 और उससे कहा, "मैं यह सब
अधिकार, और इनका वैभव तुझे दूँगा,
क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है, और
जिसे चाहता हूँ, उसे दे सकता हूँ।
7 इसलिए, यदि तू मुझे प्रणाम करे,
तो यह सब तेरा हो जाएगा।"
8 यीशु ने उसे उत्तर दिया, **"लिखा
है: 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम
कर; और केवल उसी की उपासना
कर।' "*([illegible]. 6:13,14)***

---

[*] **4:2** *[illegible]*: चालीस दिन तक शैतान ने तरह तरह से उसकी परिक्षाएँ ली थीं।

9 तब उसने उसे यरूशलेम में ले
जाकर मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया,
और उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का
पुत्र है, तो अपने आपको यहाँ से नीचे
गिरा दे।
10 क्योंकि लिखा है, 'वह तेरे विषय
में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, कि
वे तेरी रक्षा करें'
11 और 'वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे
ऐसा न हो कि तेरे पाँव में पत्थर से ठेस
लगे।' " ***([illegible]. 91:11,12)***
12 यीशु ने उसको उत्तर दिया,
**"यह भी कहा गया है: 'तू प्रभु
अपने परमेश्वर की परीक्षा न
करना।' "*([illegible]. 6:16)***
13 जब शैतान सब परीक्षा कर चुका,
[illegible][†]।

[illegible]

14 फिर यीशु पवित्र आत्मा की
सामर्थ्य से भरा हुआ, गलील को
लौटा, और उसकी चर्चा आस-पास के
सारे देश में फैल गई।
15 और वह उन ही आराधनालयों
में उपदेश करता रहा, और सब उसकी
बड़ाई करते थे।

[illegible]

16 और वह नासरत में आया; जहाँ
उसका पालन-पोषण हुआ था; और
अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन
आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिये
खड़ा हुआ।
17 *[illegible]*[‡] उसे दी गई, और उसने
पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली
जहाँ यह लिखा था:
18 **"प्रभु का आत्मा मुझ पर है,
इसलिए कि उसने कंगालों को
सुसमाचार
सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है,
और मुझे इसलिए भेजा है, कि
बन्दियों को छुटकारे का
और अंधों को दृष्टि पाने का
सुसमाचार प्रचार करूँ और
कुचले हुओं को छुड़ाऊँ,*([illegible]. 58:6, [illegible]. 61:1,2)***
19 **और *[illegible]*[§]का प्रचार
करूँ।"**
20 तब उसने पुस्तक बन्द करके
सेवक के हाथ में दे दी, और बैठ गया:
और आराधनालय के सब लोगों की
आँखें उस पर लगी थी।
21 तब वह उनसे कहने लगा, **"आज
ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ
है।"**
22 और सब ने उसे सराहा, और
जो अनुग्रह की बातें उसके मुँह से
निकलती थीं, उनसे अचम्भित हुए;
और कहने लगे, "क्या यह यूसुफ का
पुत्र नहीं?" ***([illegible] 2:42, [illegible]. 45:2)***
23 उसने उनसे कहा, **"तुम मुझ पर
यह कहावत अवश्य कहोगे, 'कि हे
वैद्य, अपने आपको अच्छा कर! जो
कुछ हमने सुना है कि कफरनहूम में
तूने किया है उसे यहाँ अपने देश में भी
कर।' "**
24 और उसने कहा, **"मैं तुम से सच
कहता हूँ, कोई भविष्यद्वक्ता अपने
देश में मान-सम्मान नहीं पाता।**
25 **मैं तुम से सच कहता हूँ, कि
एलिय्याह के दिनों में जब साढ़े तीन
वर्ष तक आकाश बन्द रहा, यहाँ तक**

---

† **4:13** *[illegible]:* एक बार के लिए। इससे यह प्रतीत होता है कि यीशु को "उसके बाद" शैतान के द्वारा प्रलोभन दिया गया। ‡ **4:17** *[illegible]:* यशायाह के भाग सम्मिलित थे। § **4:19** *[illegible]:* बन्दी दास और दासी की; भूमि और सम्पत्ति की; ऋण और दायित्वों से सामान्य छुटकारे का वर्ष; (लैव्य 25: 8)।

कि सारे देश में बड़ा आकाल पड़ा, तो
इस्राएल में बहुत सी विधवाएँ थीं।*(1*
[illegible]. 17:1, 1 [illegible]. 18:1)
26 **पर एलिय्याह को उनमें से किसी**
के पास नहीं भेजा गया, केवल सीदोन
के सारफत में एक विधवा के पास।*(1*
[illegible]. 17:9)
27 **और एलीशा भविष्यद्वक्ता के**
समय इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, पर
सीरिया वासी नामान को छोड़ उनमें
से कोई शुद्ध नहीं किया गया।”*(2*
[illegible]. 5:1-14)
28 ये बातें सुनते ही जितने
आराधनालय में थे, सब क्रोध से भर
गए।
29 और उठकर उसे नगर से बाहर
निकाला, और जिस पहाड़ पर उनका
नगर बसा हुआ था, उसकी चोटी पर
ले चले, कि उसे वहाँ से नीचे गिरा दें।
30 पर वह उनके बीच में से
निकलकर चला गया।

[illegible]

31 फिर वह गलील के कफरनहूम
नगर में गया, और सब्त के दिन लोगों
को उपदेश दे रहा था।
32 वे उसके उपदेश से चकित हो गए
क्योंकि उसका वचन अधिकार सहित
था।
33 आराधनालय में एक मनुष्य था,
जिसमें अशुद्ध आत्मा थी। वह ऊँचे
शब्द से चिल्ला उठा,
34 “हे यीशु नासरी, हमें तुझ से क्या
काम? क्या तू हमें नाश करने आया
है? मैं तुझे जानता हूँ तू कौन है? तू
परमेश्वर का पवित्र जन है!”
35 यीशु ने उसे डाँटकर कहा, **“चुप**
रह और उसमें से निकल जा!” तब
दुष्टात्मा उसे बीच में पटककर बिना
हानि पहुँचाए उसमें से निकल गई।
36 इस पर सब को अचम्भा हुआ,
और वे आपस में बातें करके कहने लगे,
“यह कैसा वचन है? कि वह अधिकार
और सामर्थ्य के साथ अशुद्ध आत्माओं
को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती
हैं।”
37 अतः चारों ओर हर जगह उसकी
चर्चा होने लगी।

[illegible]

38 वह आराधनालय में से उठकर
शमौन के घर में गया और शमौन की
सास को तेज बुखार था, और उन्होंने
उसके लिये उससे विनती की।
39 उसने उसके निकट खड़े होकर
ज्वर को डाँटा और ज्वर उतर गया और
वह तुरन्त उठकर उनकी सेवा-टहल
करने लगी।
40 सूरज डूबते समय जिन-जिनके
यहाँ लोग नाना प्रकार की बीमारियों
में पड़े हुए थे, वे सब उन्हें उसके पास
ले आएँ, और उसने एक-एक पर हाथ
रखकर उन्हें चंगा किया।
41 और दुष्टात्मा चिल्लाती और
यह कहती हुई, “तू परमेश्वर का पुत्र
है,” बहुतों में से निकल गई पर वह
उन्हें डाँटता और बोलने नहीं देता था,
क्योंकि वे जानती थी, कि यह मसीह
है।

[illegible]

42 जब दिन हुआ तो वह निकलकर
एक एकांत स्थान में गया, और बड़ी
भीड़ उसे ढूँढ़ती हुई उसके पास आई,
और उसे रोकने लगी, कि हमारे पास
से न जा।
43 परन्तु उसने उनसे कहा, **“मुझे**
और नगरों में भी परमेश्वर के राज्य
का सुसमाचार सुनाना अवश्य है,
क्योंकि मैं इसलिए भेजा गया हूँ।”
44 और वह गलील के
आराधनालयों में प्रचार करता रहा।

5

[illegible]

1 जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी, और परमेश्वर का वचन सुनती थी, और वह [illegible]* के किनारे पर खड़ा था, तो ऐसा हुआ।

2 कि उसने झील के किनारे दो नावें लगी हुई देखीं, और मछुए उन पर से उतरकर जाल धो रहे थे।

3 उन नावों में से एक पर, जो शमौन की थी, चढ़कर, उसने उससे विनती की, कि किनारे से थोड़ा हटा ले चले, तब वह बैठकर लोगों को नाव पर से उपदेश देने लगा।

4 जब वह बातें कर चुका, तो शमौन से कहा, **“गहरे में ले चल, और मछलियाँ पकड़ने के लिये अपने जाल डालो।”**

5 शमौन ने उसको उत्तर दिया, “हे स्वामी, हमने सारी रात मेहनत की और कुछ न पकड़ा; तो भी तेरे कहने से जाल डालूँगा।”

6 जब उन्होंने ऐसा किया, तो बहुत मछलियाँ घेर लाए, और उनके जाल फटने लगे।

7 इस पर उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे, संकेत किया, कि आकर हमारी सहायता करो: और उन्होंने आकर, दोनों नाव यहाँ तक भर लीं कि वे डूबने लगीं।

8 यह देखकर शमौन पतरस यीशु के पाँवों पर गिरा, और कहा, “हे प्रभु, मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूँ!”

9 क्योंकि इतनी मछलियों के पकड़े जाने से उसे और उसके साथियों को बहुत अचम्भा हुआ;

10 और वैसे ही जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को भी, जो शमौन के सहभागी थे, अचम्भा हुआ तब यीशु ने शमौन से कहा, **“मत डर, अब से तू मनुष्यों को जीविता पकड़ा करेगा।”**

11 और वे नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

[illegible]

12 जब वह किसी नगर में था, तो वहाँ कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य आया, और वह यीशु को देखकर मुँह के बल गिरा, और विनती की, “हे प्रभु यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।”

13 उसने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, **“मैं चाहता हूँ, तू शुद्ध हो जा।”** और उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा।

14 तब उसने उसे चिताया, **“किसी से न कह, परन्तु जा के अपने आपको याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने चढ़ावा ठहराया है उसे चढ़ा कि उन पर गवाही हो।”** *([illegible]. 14:2-32)*

15 परन्तु उसकी चर्चा और भी फैलती गई, और बड़ी भीड़ उसकी सुनने के लिये और अपनी बीमारियों से चंगे होने के लिये इकट्ठी हुई।

16 परन्तु वह निर्जन स्थानों में अलग जाकर प्रार्थना किया करता था।

[illegible]

17 और एक दिन ऐसा हुआ कि वह उपदेश दे रहा था, और फरीसी और व्यवस्थापक वहाँ बैठे हुए थे, जो गलील और यहूदिया के हर एक गाँव से, और यरूशलेम से आए थे; और चंगा करने के लिये प्रभु की सामर्थ्य उसके साथ थी।

---

* **5:1** *[illegible]:* इसे गलील की झील, और तिबिरियास की झील भी कहा जाता है।

18 और देखो कई लोग एक मनुष्य
को जो लकवे का रोगी था, खाट पर
लाए, और वे उसे भीतर ले जाने और
यीशु के सामने रखने का उपाय ढूँढ़ रहे
थे।
19 और जब भीड़ के कारण उसे
भीतर न ले जा सके तो उन्होंने छत पर
चढ़कर और खपरैल हटाकर, उसे खाट
समेत बीच में यीशु के सामने उतार
दिया।
20 उसने उनका विश्वास देखकर
उससे कहा, **“हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा**
हुए।”
21 तब शास्त्री और फरीसी विवाद
करने लगे, “यह कौन है, जो परमेश्वर
की निन्दा करता है? परमेश्वर को
छोड़ कौन पापों की क्षमा कर सकता
है?”
22 यीशु ने उनके मन की बातें
जानकर, उनसे कहा, **“तुम अपने मनों**
में क्या विवाद कर रहे हो?
23 **सहज क्या है? क्या यह कहना,**
कि ‘तेरे पाप क्षमा हुए,’ या यह कहना
कि ‘उठ और चल फिर?’
24 **परन्तु इसलिए कि तुम जानो**
कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप
क्षमा करने का भी अधिकार है।” उसने
उस लकवे के रोगी से कहा, **“मैं तुझ**
से कहता हूँ, उठ और अपनी खाट
उठाकर अपने घर चला जा।”
25 वह तुरन्त उनके सामने उठा,
और जिस पर वह पड़ा था उसे उठाकर,
परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ अपने
घर चला गया।
26 तब सब चकित हुए और
परमेश्वर की बड़ाई करने लगे, और
बहुत डरकर कहने लगे, “आज हमने
अनोखी बातें देखी हैं।”

[illegible]

27 और इसके बाद वह बाहर गया,
और लेवी नाम एक चुंगी लेनेवाले को
चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और
उससे कहा, **“मेरे पीछे हो ले।”**
28 तब वह सब कुछ छोड़कर उठा,
और उसके पीछे हो लिया।

[illegible]

29 और लेवी ने अपने घर में उसके
लिये एक *[illegible]*† दिया; और
चुंगी लेनेवालों की और अन्य लोगों
की जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे
एक बड़ी भीड़ थी।
30 और फरीसी और उनके शास्त्री
उसके चेलों से यह कहकर कुड़कुड़ाने
लगे, “तुम चुंगी लेनेवालों और
पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?”

[illegible]

31 यीशु ने उनको उत्तर दिया, **“वैद्य**
भले चंगों के लिये नहीं, परन्तु बीमारों
के लिये अवश्य है।
32 **मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु**
पापियों को मन फिराने के लिये
बुलाने आया हूँ।”
33 और उन्होंने उससे कहा, “यूहन्ना
के चेले तो बराबर उपवास रखते और
प्रार्थना किया करते हैं, और वैसे ही
फरीसियों के भी, परन्तु तेरे चेले तो
खाते-पीते हैं।”
34 यीशु ने उनसे कहा, **“क्या तुम**
बारातियों से जब तक दूल्हा उनके
साथ रहे, उपवास करवा सकते हो?
35 **परन्तु वे दिन आएँगे, जिनमें**
दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, तब
वे उन दिनों में उपवास करेंगे।”
36 उसने एक और *[illegible]*‡
भी उनसे कहा: **“कोई मनुष्य नये**
वस्त्र में से फाड़कर पुराने वस्त्र में

---

† **5:29** *[illegible]*: स्पष्ट रूप से यह भोज यीशु के लिए किया गया था और बहुत से कर वसूल करनेवालों के द्वारा भाग लिया गया था, मत्ती उन्हें प्रभु के साथ मिलाने और उन्हें अच्छा करने के उद्देश्य से एक साथ लाया था। ‡ **5:36** *[illegible]*: मत्ती 13:3 की टिप्पणी देखें।

पैबन्द नहीं लगाता, नहीं तो नया फट जाएगा और वह पैबन्द पुराने में मेल भी नहीं खाएगा।

37 **और कोई नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरता, नहीं तो नया दाखरस मशकों को फाड़कर बह जाएगा, और मशकें भी नाश हो जाएँगी।**

38 **परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरना चाहिये।**

39 **कोई मनुष्य पुराना दाखरस पीकर नया नहीं चाहता क्योंकि वह कहता है, कि पुराना ही अच्छा है।"**

6

[illegible]

1 फिर सब्त के दिन वह खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेले बालें तोड़-तोड़कर, और *[illegible]*[*] खाते जाते थे। ***([illegible]. 23:25)***

2 तब फरीसियों में से कुछ कहने लगे, "तुम वह काम क्यों करते हो जो सब्त के दिन करना उचित नहीं?"

3 यीशु ने उनको उत्तर दिया, "**क्या तुम ने यह नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने जब वह और उसके साथी भूखे थे तो क्या किया?**

4 **वह कैसे परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की रोटियाँ लेकर खाई, जिन्हें खाना याजकों को छोड़ और किसी को उचित नहीं, और अपने साथियों को भी दी?"** ***([illegible]. 24:5-9, 1 [illegible]. 21:6)***

5 और उसने उनसे कहा, "**मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी प्रभु है।"**

[illegible]

6 और ऐसा हुआ कि किसी और सब्त के दिन को वह आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा; और वहाँ एक मनुष्य था, जिसका दाहिना हाथ सूखा था।

7 शास्त्री और फरीसी उस पर दोष लगाने का अवसर पाने के लिये उसकी ताक में थे, कि देखें कि वह सब्त के दिन चंगा करता है कि नहीं।

8 परन्तु वह उनके विचार जानता था; इसलिए उसने सूखे हाथवाले मनुष्य से कहा, "**उठ, बीच में खड़ा हो।"** वह उठ खड़ा हुआ।

9 यीशु ने उनसे कहा, "**मैं तुम से यह पूछता हूँ कि सब्त के दिन क्या उचित है, भला करना या बुरा करना; प्राण को बचाना या नाश करना?"**

10 और उसने चारों ओर उन सभी को देखकर उस मनुष्य से कहा, "**अपना हाथ बढ़ा।"** उसने ऐसा ही किया, और उसका हाथ फिर चंगा हो गया।

11 परन्तु वे आपे से बाहर होकर आपस में विवाद करने लगे कि हम यीशु के साथ क्या करें?

[illegible]

12 और उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने को निकला, और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई।

13 जब दिन हुआ, तो उसने अपने चेलों को बुलाकर उनमें से बारह चुन लिए, और उनको प्रेरित कहा।

14 और वे ये हैं: शमौन जिसका नाम उसने पतरस भी रखा; और उसका भाई अन्द्रियास, और याकूब, और यूहन्ना, और फिलिप्पुस, और बरतुल्मै,

15 और मत्ती, और थोमा, और हलफईस का पुत्र याकूब, और शमौन जो जेलोतेस कहलाता है,

[*] **6:1** *[illegible]*; वे भूसी से अनाज को अलग करने के लिए इसे अपने हाथों से मलते थे।

16 और याकूब का बेटा यहूदा,
और यहूदा इस्करियोती, जो उसका
पकड़वानेवाला बना।

[illegible]

17 तब वह उनके साथ उतरकर
चौरस जगह में खड़ा हुआ, और उसके
चेलों की बड़ी भीड़, और सारे यहूदिया,
और यरूशलेम, और सोर और सीदोन
के समुद्र के किनारे से बहुत लोग,
18 जो उसकी सुनने और अपनी
बीमारियों से चंगा होने के लिये उसके
पास आए थे, वहाँ थे। और अशुद्ध
आत्माओं के सताए हुए लोग भी
अच्छे किए जाते थे।
19 और सब उसे छूना चाहते थे,
क्योंकि उसमें से सामर्थ्य निकलकर
सब को चंगा करती थी।

[illegible]

20 तब उसने अपने चेलों की ओर
देखकर कहा,
"धन्य हो तुम, जो दीन हो,
क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है।
21 **"धन्य हो तुम, जो अब भूखे हो;**
क्योंकि तृप्त किए जाओगे।
"धन्य हो तुम, जो अब रोते हो,
क्योंकि हँसोगे।*([illegible] 5:4,5, [illegible]. 126:5,6)*
22 **"धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के**
कारण लोग तुम से बैर करेंगे,
और तुम्हें निकाल देंगे, और तुम्हारी निन्दा करेंगे,
और तुम्हारा नाम बुरा जानकर काट देंगे।
23 **"उस दिन आनन्दित होकर**
उछलना, क्योंकि देखो, तुम्हारे लिये
स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है। उनके पूर्वज
भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी वैसा ही
किया करते थे।

[illegible]

24 **"परन्तु हाय तुम पर जो धनवान हो,**
क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके।
25 **"हाय तुम पर जो अब तृप्त हो,**
क्योंकि भूखे होंगे।
"हाय, तुम पर; जो अब हँसते हो,
क्योंकि शोक करोगे और रोओगे।
26 **"हाय, तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें,**
क्योंकि उनके पूर्वज झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया करते थे।

[illegible]

27 **"परन्तु मैं तुम सुननेवालों से**
कहता हूँ, कि*[illegible]*
[illegible]; [illegible]
[illegible], [illegible]† ।
28 **जो तुम्हें श्राप दें, उनको आशीष**
दो; जो तुम्हारा अपमान करें, उनके
लिये प्रार्थना करो।
29 **जो तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़**
मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे; और
जो तेरी दोहर छीन ले, उसको कुर्ता
लेने से भी न रोक।
30 **जो कोई तुझ से माँगे, उसे दे;**
और जो तेरी वस्तु छीन ले, उससे न
माँग।
31 **और जैसा तुम चाहते हो कि**
लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके
साथ वैसा ही करो।
32 **"यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों**
के साथ प्रेम रखो, तो तुम्हारी क्या
बड़ाई? क्योंकि पापी भी अपने प्रेम
रखनेवालों के साथ प्रेम रखते हैं।

---

† **6:27** *[illegible]; .... [illegible]:* जो लोग तुम से नफरत करते है, उनसे नफरत नहीं लेकिन इसके विपरीत हमें उनसे सब प्रकार की भलाई करनी चाहिए।

33 और यदि तुम अपने भलाई
करनेवालों ही के साथ भलाई करते
हो, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि
पापी भी ऐसा ही करते हैं।
34 और यदि तुम उसे उधार दो,
जिनसे फिर पाने की आशा रखते हो,
तो तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि पापी
पापियों को उधार देते हैं, कि उतना ही
फिर पाएँ।
35 वरन् अपने शत्रुओं से प्रेम रखो,
और भलाई करो, और फिर पाने
की आस न रखकर उधार दो; और
तुम्हारे लिये बड़ा फल होगा; और
तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे,
क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद
नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु
है।*([illegible]. 25:35,36, [illegible] 5:44,45)*
36 जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है,
वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो।

[illegible]

37 "दोष मत लगाओ; तो तुम पर
भी दोष नहीं लगाया जाएगा: दोषी
न ठहराओ, तो तुम भी दोषी नहीं
ठहराए जाओगे: क्षमा करो, तो तुम्हें
भी क्षमा किया जाएगा।
38 दिया करो, तो तुम्हें भी दिया
जाएगा: लोग पूरा नाप दबा-दबाकर
और हिला-हिलाकर और उभरता हुआ
तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस
नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे
लिये भी नापा जाएगा।"

39 फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त
कहा: "क्या अंधा, अंधे को मार्ग बता
सकता है? क्या दोनों गड्ढे में नहीं
गिरेंगे?
40 चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं,
परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने
गुरु के समान होगा।
41 तू अपने भाई की आँख के तिनके
को क्यों देखता है, और अपनी ही
आँख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता?
42 और जब तू अपनी ही आँख का
लट्ठा नहीं देखता, तो अपने भाई से
कैसे कह सकता है, 'हे भाई, ठहर जा
तेरी आँख से तिनके को निकाल दूँ?'
हे*[illegible]*,‡पहले अपनी आँख से लट्ठा
निकाल, तब जो तिनका तेरे भाई की
आँख में है, भली भाँति देखकर निकाल
सकेगा।

[illegible]

43 "कोई अच्छा पेड़ नहीं, जो
निकम्मा फल लाए, और न तो कोई
निकम्मा पेड़ है, जो अच्छा फल
लाए।
44 हर एक पेड़ अपने फल से
पहचाना जाता है; क्योंकि लोग
झाड़ियों से अंजीर नहीं तोड़ते, और
न झड़बेरी से अंगूर।
45 भला मनुष्य अपने मन के भले
भण्डार से भली बातें निकालता है;
और बुरा मनुष्य अपने मन के बुरे
भण्डार से बुरी बातें निकालता है;
क्योंकि जो मन में भरा है वही उसके
मुँह पर आता है।

[illegible]

46 "जब तुम मेरा कहना नहीं
मानते, तो क्यों मुझे 'हे प्रभु, हे प्रभु,'
कहते हो?*([illegible]. 1:6)*
47 जो कोई मेरे पास आता है, और
मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता है, मैं
तुम्हें बताता हूँ कि वह किसके समान
है?

‡ **6:42** *[illegible]*: मत्ती 6:2 की टिप्पणी देखें

48 **वह उस मनुष्य के समान है,
जिसने घर बनाते समय भूमि गहरी
खोदकर चट्टान में नींव डाली, और
जब बाढ़ आई तो धारा उस घर
पर लगी, परन्तु उसे हिला न सकी;
क्योंकि वह पक्का बना था।**
49 **परन्तु जो सुनकर नहीं मानता,
वह उस मनुष्य के समान है, जिसने
मिट्टी पर बिना नींव का घर बनाया।
जब उस पर धारा लगी, तो वह तुरन्त
गिर पड़ा, और वह गिरकर सत्यानाश
हो गया।"**

7

[illegible]

1 जब वह लोगों को अपनी सारी
बातें सुना चुका, तो कफरनहूम में
आया।
2 और किसी सूबेदार का एक दास
जो उसका प्रिय था, बीमारी से मरने
पर था।
3 उसने यीशु की चर्चा सुनकर
यहूदियों के कई प्राचीनों को उससे यह
विनती करने को उसके पास भेजा, कि
आकर मेरे दास को चंगा कर।
4 वे यीशु के पास आकर उससे बड़ी
विनती करके कहने लगे, "वह इस
योग्य है, कि तू उसके लिये यह करे,
5 क्योंकि वह हमारी जाति से
प्रेम रखता है, और उसी ने हमारे
आराधनालय को बनाया है।"
6 यीशु उनके साथ-साथ चला, पर
जब वह घर से दूर न था, तो सूबेदार ने
उसके पास कई मित्रों के द्वारा कहला
भेजा, "हे प्रभु दुःख न उठा, क्योंकि मैं
इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले
आए।
7 इसी कारण मैंने अपने आपको इस
योग्य भी न समझा, कि तेरे पास आऊँ,
पर वचन ही कह दे तो मेरा सेवक चंगा
हो जाएगा।
8 मैं भी पराधीन मनुष्य हूँ; और
सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक
को कहता हूँ, 'जा,' तो वह जाता है,
और दूसरे से कहता हूँ कि 'आ,' तो
आता है; और अपने किसी दास को कि
'यह कर,' तो वह उसे करता है।"
9 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा
किया, और उसने मुँह फेरकर उस भीड़
से जो उसके पीछे आ रही थी कहा, **"मैं
तुम से कहता हूँ, कि मैंने इस्राएल में
भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।"**
10 और भेजे हुए लोगों ने घर
लौटकर, उस दास को चंगा पाया।

[illegible]

11 थोड़े दिन के बाद वह *[illegible]**
नाम के एक नगर को गया, और उसके
चेले, और बड़ी भीड़ उसके साथ जा
रही थी।
12 जब वह नगर के फाटक के पास
पहुँचा, तो देखो, लोग एक मुर्दे को
बाहर लिए जा रहे थे; जो अपनी माँ
का एकलौता पुत्र था, और वह विधवा
थी: और नगर के बहुत से लोग उसके
साथ थे।
13 उसे देखकर प्रभु को तरस आया,
और उसने कहा, **"मत रो।"**
14 तब उसने पास आकर अर्थी को
छुआ; और उठानेवाले ठहर गए, तब
उसने कहा, **"हे जवान, मैं तुझ से
कहता हूँ, उठ!"**
15 तब वह मुर्दा उठ बैठा, और
बोलने लगा: और उसने उसे उसकी माँ
को सौंप दिया।

* **7:11** *[illegible]:* यह नगर गलील में था, यह ताबोर पहाड़ी की दक्षिण से लगभग दो मील की दूरी पर, और कफरनहूम से ज्यादा दूर नहीं था। † **7:16** *[illegible]:* एक "भय" या गंभीरता उसकी उपस्थिति से जिसे मरे हुओं को जीवित करने की सामर्थ्य थी।

16 *[illegible]*;
और वे परमेश्वर की बड़ाई करके
कहने लगे, “हमारे बीच में एक बड़ा
भविष्यद्वक्ता उठा है, और परमेश्वर ने
अपने लोगों पर कृपादृष्टि की है।”
17 और उसके विषय में यह बात सारे
यहूदिया और आस-पास के सारे देश में
फैल गई।

[illegible]

18 और यूहन्ना को उसके चेलों ने इन
सब बातों का समाचार दिया।
19 तब यूहन्ना ने अपने चेलों में से
दो को बुलाकर प्रभु के पास यह पूछने
के लिये भेजा, “क्या आनेवाला तू ही
है, या हम किसी और दूसरे की प्रतीक्षा
करे?”
20 उन्होंने उसके पास आकर कहा,
“यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे
पास यह पूछने को भेजा है, कि क्या
आनेवाला तू ही है, या हम दूसरे की
प्रतीक्षा करे?”
21 उसी घड़ी उसने बहुतों को
बीमारियों और पीड़ाओं, और
दुष्टात्माओं से छुड़ाया; और बहुत
से अंधों को आँखें दी।
22 और उसने उनसे कहा, **“जो कुछ
तुम ने देखा और सुना है, जाकर
यूहन्ना से कह दो; कि अंधे देखते
हैं, लँगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध
किए जाते हैं, बहरे सुनते है, और
मुर्दे जिलाए जाते है, और कंगालों को
सुसमाचार सुनाया जाता है।*([illegible].
35:5,6, [illegible]. 61:1)***
23 **धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर
न खाए।”**
24 जब यूहन्ना के भेजे हुए लोग
चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के विषय में
लोगों से कहने लगा, **“तुम जंगल में
क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते
हुए सरकण्डे को?**
25 **तो तुम फिर क्या देखने गए
थे? क्या कोमल वस्त्र पहने हुए
मनुष्य को? देखो, जो भड़कीला वस्त्र
पहनते, और सुख-विलास से रहते हैं,
वे राजभवनों में रहते हैं।**
26 **तो फिर क्या देखने गए थे? क्या
किसी भविष्यद्वक्ता को? हाँ, मैं तुम
से कहता हूँ, वरन् भविष्यद्वक्ता से भी
बड़े को।**
27 **यह वही है, जिसके विषय में
लिखा है:**

**‘देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे-आगे
भेजता हूँ,**
**जो तेरे आगे मार्ग सीधा
करेगा।’*([illegible]. 3:1, [illegible].
40:3)***

28 **“मैं तुम से कहता हूँ, कि जो
स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमें से यूहन्ना
से बड़ा कोई नहीं पर जो परमेश्वर के
राज्य में छोटे से छोटा है, वह उससे
भी बड़ा है।”**
29 और सब साधारण लोगों ने
सुनकर और चुंगी लेनेवालों ने भी
यूहन्ना का बपतिस्मा लेकर परमेश्वर
को सच्चा मान लिया।
30 पर फरीसियों और व्यवस्थापकों
ने उससे बपतिस्मा न लेकर परमेश्वर
की मनसा को अपने विषय में टाल
दिया।
31 **“अतः मैं इस युग के लोगों की
उपमा किस से दूँ कि वे किसके समान
हैं?**
32 **वे उन बालकों के समान हैं
जो बाजार में बैठे हुए एक दूसरे से
पुकारकर कहते हैं, ‘हमने तुम्हारे लिये
बाँसुरी बजाई, और तुम न नाचे, हमने
विलाप किया, और तुम न रोए!’**

33 **क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला न रोटी खाता आया, न दाखरस पीता आया, और तुम कहते हो, उसमें दुष्टात्मा है।**

34 **मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया है; और तुम कहते हो, 'देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, चुंगी लेनेवालों का और पापियों का मित्र।'**

35 **पर ज्ञान अपनी सब सन्तानों से सच्चा ठहराया गया है।"**

□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□

36 फिर किसी फरीसी ने उससे विनती की, कि मेरे साथ भोजन कर; अतः वह उस फरीसी के घर में जाकर भोजन करने बैठा।

37 वहाँ उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई।

38 और उसके पाँवों के पास, पीछे खड़ी होकर, रोती हुई, उसके पाँवों को आँसुओं से भिगाने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी और उसके पाँव बार बार चूमकर उन पर इत्र मला।

39 यह देखकर, वह फरीसी जिसने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचने लगा, "यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान जाता, कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है? क्योंकि वह तो पापिन है।"

40 यह सुन यीशु ने उसके उत्तर में कहा, **"हे शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है।"** वह बोला, "हे गुरु, कह।"

41 **"किसी महाजन के दो देनदार थे, एक पाँच सौ, और दूसरा पचास दीनार देनदार था।**

42 **जबकि उनके पास वापस लौटाने को कुछ न रहा, तो उसने दोनों को क्षमा कर दिया। अतः उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम रखेगा?"**

43 शमौन ने उत्तर दिया, "मेरी समझ में वह, जिसका उसने अधिक छोड़ दिया।" उसने उससे कहा, "तूने ठीक विचार किया है।"

44 और उस स्त्री की ओर फिरकर उसने शमौन से कहा, **"क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया परन्तु तूने मेरे पाँव धोने के लिये पानी न दिया, पर इसने मेरे पाँव आँसुओं से भिगाए, और अपने बालों से पोंछा।"*(□□□□. 18:4)***

45 **तूने मुझे चूमा न दिया, पर जब से मैं आया हूँ तब से इसने मेरे पाँवों का चूमना न छोड़ा।**

46 **तूने मेरे सिर पर तेल नहीं मला; पर इसने मेरे पाँवों पर इत्र मला है।*(□□. 23:5)***

47 **"इसलिए मैं तुझ से कहता हूँ; कि इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया; पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।"**

48 और उसने स्त्री से कहा, **"तेरे पाप क्षमा हुए।"**

49 तब जो लोग उसके साथ भोजन करने बैठे थे, वे अपने-अपने मन में सोचने लगे, "यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?"

50 पर उसने स्त्री से कहा, **"तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा।"**

8

□□□□ □□ □□□□□□□□□

1 इसके बाद वह नगर-नगर और गाँव-गाँव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ, फिरने लगा, और वे बारह उसके साथ थे,

2 और कुछ स्त्रियाँ भी जो
दुष्टात्माओं से और बीमारियों से
छुड़ाई गई थीं, और वे यह हैं [illegible]
[illegible]*,
जिसमें से सात दुष्टात्माएँ निकली
थीं,
3 और हेरोदेस के भण्डारी खुज़ा
की पत्नी योअन्ना और सूसन्नाह और
बहुत सी और स्त्रियाँ, ये तो अपनी
सम्पत्ति से उसकी सेवा करती थीं।

[illegible]

4 जब बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई, और
नगर-नगर के लोग उसके पास चले
आते थे, तो उसने दृष्टान्त में कहा:
5 **"एक बोनेवाला बीज बोने
निकला: बोते हुए कुछ मार्ग के
किनारे गिरा, और रौंदा गया, और
आकाश के पक्षियों ने उसे चुग लिया।**
6 **और कुछ चट्टान पर गिरा, और
उपजा, परन्तु नमी न मिलने से सूख
गया।**
7 **कुछ झाड़ियों के बीच में गिरा,
और झाड़ियों ने साथ-साथ बढ़कर
उसे दबा लिया।**
8 **और कुछ अच्छी भूमि पर गिरा,
और उगकर सौ गुणा फल लाया।"**
यह कहकर उसने ऊँचे शब्द से कहा,
**"जिसके सुनने के कान हों वह सुन
लें।"**

[illegible]

9 उसके चेलों ने उससे पूछा, "इस
दृष्टान्त का अर्थ क्या है?"
10 उसने कहा, **"तुम को परमेश्वर के
राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर
औरों को दृष्टान्तों में सुनाया जाता
है, इसलिए कि
'वे देखते हुए भी न देखें,
और सुनते हुए भी न समझें।'** *([illegible]
4:11, [illegible]. 6:9,10)*

[illegible]

11 **"दृष्टान्त का अर्थ यह है: बीज
तो परमेश्वर का वचन है।**
12 **मार्ग के किनारे के वे हैं, जिन्होंने
सुना; तब शैतान आकर उनके मन में
से वचन उठा ले जाता है, कि कहीं
ऐसा न हो कि वे विश्वास करके उद्धार
पाएँ।**
13 **चट्टान पर के वे हैं, कि जब सुनते
हैं, तो आनन्द से वचन को ग्रहण तो
करते हैं, परन्तु जड़ न पकड़ने से वे
थोड़ी देर तक विश्वास रखते हैं, और
परीक्षा के समय बहक जाते हैं।**
14 **जो झाड़ियों में गिरा, यह वे हैं,
जो सुनते हैं, पर आगे चलकर चिन्ता
और धन और जीवन के सुख-विलास
में फँस जाते हैं, और उनका फल नहीं
पकता।**
15 **पर अच्छी भूमि में के वे हैं, जो
वचन सुनकर भले और उत्तम मन में
सम्भाले रहते हैं, और धीरज से फल
लाते हैं।**

[illegible]

16 **"कोई** *[illegible]*† **बर्तन से
नहीं ढाँकता, और न खाट के नीचे
रखता है, परन्तु दीवट पर रखता है,
कि भीतर आनेवाले प्रकाश पाएँ।**
17 **कुछ छिपा नहीं, जो प्रगट न
हो; और न कुछ गुप्त है, जो जाना न
जाए, और प्रगट न हो।**
18 **इसलिए सावधान रहो, कि तुम
किस रीति से सुनते हो? क्योंकि
जिसके पास है, उसे दिया जाएगा;**

---

* **8:2** *[illegible]:* उसके निवास के स्थान "मगदुला" के कारण ऐसे बुलाया जाता था। यह दक्षिण कफरनहूम के, गलील की झील पर स्थित था। † **8:16** *[illegible]:* यीशु ने लोगों को यह समझाने के लिए बताया; मेरा दृष्टान्त सच्चाई को छिपाने के लिए नहीं है, लेकिन यह और सही से प्रकट करने के लिए है।

और जिसके पास नहीं है, उससे वह
भी ले लिया जाएगा, जिसे वह अपना
समझता है।"

[illegible]

19 उसकी माता और उसके भाई
पास आए, पर भीड़ के कारण उससे भेंट
न कर सके।
20 और उससे कहा गया, "तेरी माता
और तेरे भाई बाहर खड़े हुए तुझ से
मिलना चाहते हैं।"
21 उसने उसके उत्तर में उनसे कहा,
"मेरी माता और मेरे भाई ये ही है, जो
परमेश्वर का वचन सुनते और मानते
हैं।"

[illegible]

22 फिर एक दिन वह और उसके चेले
नाव पर चढ़े, और उसने उनसे कहा,
"आओ, झील के पार चलें।" अतः
उन्होंने नाव खोल दी।
23 पर जब नाव चल रही थी, तो वह
सो गया: और झील पर आँधी आई,
और नाव पानी से भरने लगी और वे
जोखिम में थे।
24 तब उन्होंने पास आकर उसे
जगाया, और कहा, "स्वामी! स्वामी!
हम नाश हुए जाते हैं।" तब उसने
उठकर आँधी को और पानी की लहरों
को डाँटा और वे थम गए, और शान्त
हो गया।
25 और उसने उनसे कहा, **"तुम्हारा**
विश्वास कहाँ था?" पर वे डर गए,
और अचम्भित होकर आपस में कहने
लगे, "यह कौन है, जो आँधी और पानी
को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी
मानते हैं?"

[illegible]

26 फिर वे गिरासेनियों के देश में
पहुँचे, जो उस पार गलील के सामने
है।
27 जब वह किनारे पर उतरा, तो उस
नगर का एक मनुष्य उसे मिला, जिसमें
दुष्टात्माएँ थीं। और बहुत दिनों से न
कपड़े पहनता था और न घर में रहता
था वरन् कब्रों में रहा करता था।
28 वह यीशु को देखकर चिल्लाया,
और उसके सामने गिरकर ऊँचे शब्द से
कहा, "हे परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र
यीशु! मुझे तुझ से क्या काम? मैं तुझ
से विनती करता हूँ, मुझे पीड़ा न दे।"
29 क्योंकि वह उस अशुद्ध आत्मा
को उस मनुष्य में से निकलने की आज्ञा
दे रहा था, इसलिए कि वह उस पर बार
बार प्रबल होती थी। और यद्यपि लोग
उसे जंजीरों और बेड़ियों से बाँधते थे,
तो भी वह बन्धनों को तोड़ डालता
था, और दुष्टात्मा उसे जंगल में भगाए
फिरती थी।
30 यीशु ने उससे पूछा, **"तेरा क्या**
नाम है?" उसने कहा, "सेना," क्योंकि
बहुत दुष्टात्माएँ उसमें समा गई थीं।
31 और उन्होंने उससे विनती की,
"हमें अथाह गड्ढे में जाने की आज्ञा न
दे।"
32 वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक
बड़ा झुण्ड चर रहा था, अतः उन्होंने
उससे विनती की, "हमें उनमें समाने
दे।" अतः उसने उन्हें जाने दिया।
33 तब दुष्टात्माएँ उस मनुष्य से
निकलकर सूअरों में समा गई और वह
झुण्ड कड़ाड़े पर से झपटकर झील में
जा गिरा और डूब मरा।
34 चरवाहे यह जो हुआ था देखकर
भागे, और नगर में, और गाँवों में
जाकर उसका समाचार कहा।
35 और लोग यह जो हुआ था
उसको देखने को निकले, और यीशु के
पास आकर जिस मनुष्य से दुष्टात्माएँ
निकली थीं, उसे यीशु के पाँवों के पास
कपड़े पहने और सचेत बैठे हुए पाकर

डर गए।
36 और देखनेवालों ने उनको
बताया, कि वह दुष्टात्मा का सताया
हुआ मनुष्य किस प्रकार अच्छा हुआ।
37 तब गिरासेनियों के आस-पास के
सब लोगों ने यीशु से विनती की, कि
हमारे यहाँ से चला जा; क्योंकि उन पर
बड़ा भय छा गया था। अतः वह नाव
पर चढ़कर लौट गया।
38 जिस मनुष्य से दुष्टात्माएँ
निकली थीं वह उससे विनती करने
लगा, कि मुझे अपने साथ रहने दे,
परन्तु यीशु ने उसे विदा करके कहा।
39 **“अपने घर में लौट जा और
लोगों से कह दे, कि परमेश्वर ने तेरे
लिये कैसे बड़े-बड़े काम किए हैं।”** वह
जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा,
कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े-बड़े काम
किए।

[illegible]

40 जब यीशु लौट रहा था, तो लोग
उससे आनन्द के साथ मिले; क्योंकि वे
सब उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।
41 और देखो, याईर नाम एक
मनुष्य जो आराधनालय का सरदार
था, आया, और यीशु के पाँवों पर
गिरकर उससे विनती करने लगा, “मेरे
घर चल।”
42 क्योंकि उसके बारह वर्ष की
एकलौती बेटी थी, और वह मरने पर
थी। जब वह जा रहा था, तब लोग उस
पर गिरे पड़ते थे।
43 और एक स्त्री ने जिसको बारह
वर्ष से लहू बहने का रोग था, और जो
अपनी सारी जीविका वैद्यों के पीछे
व्यय कर चुकी थी और फिर भी किसी
के हाथ से चंगी न हो सकी थी,
44 पीछे से आकर उसके वस्त्र के
आँचल को छुआ, और तुरन्त उसका
लहू बहना थम गया।
45 इस पर यीशु ने कहा, **“मुझे
किसने छुआ?”** जब सब मुकरने लगे,
तो पतरस और उसके साथियों ने कहा,
“हे स्वामी, तुझे तो भीड़ दबा रही है
और तुझ पर गिरी पड़ती है।”
46 परन्तु यीशु ने कहा, **“किसी ने
मुझे छुआ है क्योंकि मैंने जान लिया
है कि मुझ में से सामर्थ्य निकली है।”**
47 जब स्त्री ने देखा, कि मैं छिप
नहीं सकती, तब काँपती हुई आई, और
उसके पाँवों पर गिरकर सब लोगों के
सामने बताया, कि मैंने किस कारण से
तुझे छुआ, और कैसे तुरन्त चंगी हो
गई।
48 उसने उससे कहा, **“पुत्री तेरे
विश्वास ने तुझे चंगा किया है, कुशल
से चली जा।”**
49 वह यह कह ही रहा था, कि किसी
ने आराधनालय के सरदार के यहाँ से
आकर कहा, “तेरी बेटी मर गई: गुरु
को दुःख न दे।”
50 यीशु ने सुनकर उसे उत्तर दिया,
**“मत डर; केवल विश्वास रख; तो
वह** *[illegible]*”‡
51 घर में आकर उसने पतरस, और
यूहन्ना, और याकूब, और लड़की के
माता-पिता को छोड़ और किसी को
अपने साथ भीतर आने न दिया।
52 और सब उसके लिये रो पीट रहे
थे, परन्तु उसने कहा, **“रोओ मत; वह
मरी नहीं परन्तु सो रही है।”**
53 वे यह जानकर, कि मर गई है,
उसकी हँसी करने लगे।
54 परन्तु उसने उसका हाथ पकड़ा,
और पुकारकर कहा, **“हे लड़की उठ!”**

‡ **8:50** *[illegible]:* वह पहले से ही चंगी हो गई थी: लेकिन उसे प्रोत्साहन के लिये एक आवश्यक वादा, शामिल है कि उनके उपद्रव से उसे और अधिक दुःख नहीं होना चाहिए।

55 तब उसके प्राण लौट आए और
वह तुरन्त उठी; फिर उसने आज्ञा दी,
कि उसे कुछ खाने को दिया जाए।
56 उसके माता-पिता चकित हुए,
परन्तु उसने उन्हें चेतावनी दी, कि यह
जो हुआ है, किसी से न कहना।

9

[illegible]

1 फिर उसने बारहों को बुलाकर उन्हें
सब दुष्टात्माओं और बीमारियों को
दूर करने की सामर्थ्य और अधिकार
दिया।
2 और उन्हें परमेश्वर के राज्य का
प्रचार करने, और बीमारों को अच्छा
करने के लिये भेजा।
3 और उसने उनसे कहा, **“मार्ग के
लिये कुछ न लेना: न तो लाठी, न
झोली, न रोटी, न रुपये और न दो-दो
कुर्ते।**
4 **और जिस किसी घर में तुम उतरो,
वहीं रहो; और वहीं से विदा हो।**
5 **जो कोई तुम्हें ग्रहण न करेगा उस
नगर से निकलते हुए अपने पाँवों की
धूल झाड़ डालो, कि उन पर गवाही
हो।”**
6 अत: वे निकलकर गाँव-गाँव
सुसमाचार सुनाते, और हर कहीं लोगों
को चंगा करते हुए फिरते रहे।

[illegible]

7 और देश की चौथाई का राजा
हेरोदेस यह सब सुनकर घबरा गया,
क्योंकि कितनों ने कहा, कि यूहन्ना मरे
हुओं में से जी उठा है।
8 और कितनों ने यह, कि एलिय्याह
दिखाई दिया है: औरों ने यह, कि पुराने
भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा है।
9 परन्तु हेरोदेस ने कहा, “यूहन्ना का
तो मैंने सिर कटवाया अब यह कौन है,
जिसके विषय में ऐसी बातें सुनता हूँ?”
और उसने उसे देखने की इच्छा की।

[illegible]

10 फिर प्रेरितों ने लौटकर जो
कुछ उन्होंने किया था, उसको बता
दिया, और वह उन्हें अलग करके
[illegible]* नामक एक नगर को ले
गया।
11 यह जानकर भीड़ उसके पीछे हो
ली, और वह आनन्द के साथ उनसे
मिला, और उनसे परमेश्वर के राज्य
की बातें करने लगा, और जो चंगे होना
चाहते थे, उन्हें चंगा किया।
12 जब दिन ढलने लगा, तो बारहों
ने आकर उससे कहा, “भीड़ को विदा
कर, कि चारों ओर के गाँवों और
बस्तियों में जाकर अपने लिए रहने
को स्थान, और भोजन का उपाय करें,
क्योंकि हम यहाँ सुनसान जगह में हैं।”
13 उसने उनसे कहा, **“तुम ही उन्हें
खाने को दो।”** उन्होंने कहा, “हमारे
पास पाँच रोटियाँ और दो मछली को
छोड़ और कुछ नहीं; परन्तु हाँ, यदि
हम जाकर इन सब लोगों के लिये
भोजन मोल लें, तो हो सकता है।”
14 (क्योंकि वहाँ पर लगभग पाँच
हजार पुरुष थे।) और उसने अपने चेलों
से कहा, **“उन्हें पचास-पचास करके
पाँति में बैठा दो।”**
15 उन्होंने ऐसा ही किया, और सब
को बैठा दिया।
16 तब उसने वे पाँच रोटियाँ और
दो मछलियाँ लीं, और स्वर्ग की ओर
देखकर धन्यवाद किया, और तोड़-
तोड़कर चेलों को देता गया कि लोगों
को परोसें।

---
* **9:10** [illegible]: यरदन नदी के पूर्वी तट पर एक नगर, जहाँ से नदी तिबिरियास के झील में प्रवेश करती है।

17 अतः सब खाकर तृप्त हुए, और बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरकर उठाई। ***(2 [illegible]. 4:44)***

[illegible]

18 जब वह एकान्त में प्रार्थना कर रहा था, और चेले उसके साथ थे, तो उसने उनसे पूछा, **"लोग मुझे क्या कहते हैं?"**

19 उन्होंने उत्तर दिया, "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, और कोई-कोई एलिय्याह, और कोई यह कि पुराने भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा है।"

20 उसने उनसे पूछा, **"परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?"** पतरस ने उत्तर दिया, "*[illegible]*[†]।"

21 तब उसने उन्हें चेतावनी देकर कहा, **"यह किसी से न कहना।"**

[illegible]

22 और उसने कहा, **"मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुःख उठाए, और पुरनिए और प्रधान याजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे।"**

[illegible]

23 उसने सबसे कहा, **"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।**

24 **क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा।**

25 **यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपना प्राण खो दे, या उसकी हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?**

26 **जो कोई मुझसे और मेरी बातों से लजाएगा; मनुष्य का पुत्र भी जब अपनी, और अपने पिता की, और पवित्र स्वर्गदूतों की, महिमा सहित आएगा, तो उससे लजाएगा।**

27 **मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कोई-कोई ऐसे हैं कि जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।"**

[illegible]

28 इन बातों के कोई आठ दिन बाद वह पतरस, और यूहन्ना, और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना करने के लिये पहाड़ पर गया।

29 जब वह प्रार्थना कर ही रहा था, तो उसके चेहरे का रूप बदल गया, और उसका वस्त्र श्वेत होकर चमकने लगा।

30 तब, मूसा और *[illegible]*[‡], ये दो पुरुष उसके साथ बातें कर रहे थे।

31 ये महिमा सहित दिखाई दिए, और उसके मरने की चर्चा कर रहे थे, जो यरूशलेम में होनेवाला था।

32 पतरस और उसके साथी नींद से भरे थे, और जब अच्छी तरह सचेत हुए, तो उसकी महिमा; और उन दो पुरुषों को, जो उसके साथ खड़े थे, देखा।

33 जब वे उसके पास से जाने लगे, तो पतरस ने यीशु से कहा, "हे स्वामी, हमारा यहाँ रहना भला है: अतः हम तीन मण्डप बनाएँ, एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।" वह जानता न था, कि क्या कह रहा है।

† **9:20** *[illegible]*: परमेश्वर का "अभिषिक्त"। परमेश्वर की ओर से नियुक्त "मसीह"।
‡ **9:30** *[illegible]*: मत्ती 17:3 की टिप्पणी देखें।

34 वह यह कह ही रहा था, कि एक
बादल ने आकर उन्हें छा लिया, और
जब वे उस बादल से घिरने लगे, तो डर
गए।
35 और उस बादल में से यह शब्द
निकला, "यह मेरा पुत्र और मेरा चुना
हुआ है, इसकी सुनो।" *([illegible]. 42:1)*
36 यह शब्द होते ही यीशु अकेला
पाया गया; और वे चुप रहे, और जो
कुछ देखा था, उसकी कोई बात उन
दिनों में किसी से न कही।

[illegible]

37 और दूसरे दिन जब वे पहाड़
से उतरे, तो एक बड़ी भीड़ उससे आ
मिली।
38 तब, भीड़ में से एक मनुष्य
ने चिल्लाकर कहा, "हे गुरु, मैं तुझ
से विनती करता हूँ, कि मेरे पुत्र
पर कृपादृष्टि कर; क्योंकि वह मेरा
एकलौता है।
39 और देख, एक दुष्टात्मा उसे
पकड़ती है, और वह एकाएक चिल्ला
उठता है; और वह उसे ऐसा मरोड़ती
है, कि वह मुँह में फेन भर लाता है; और
उसे कुचलकर कठिनाई से छोड़ती है।
40 और मैंने तेरे चेलों से विनती की,
कि उसे निकालें; परन्तु वे न निकाल
सके।"
41 यीशु ने उत्तर दिया, **"हे
अविश्वासी और हठीले लोगों, मैं कब
तक तुम्हारे साथ रहूँगा, और तुम्हारी
सहूँगा? अपने पुत्र को यहाँ ले आ।"**
42 वह आ ही रहा था कि दुष्टात्मा
ने उसे पटककर मरोड़ा, परन्तु यीशु
ने अशुद्ध आत्मा को डाँटा और लड़के
को अच्छा करके उसके पिता को सौंप
दिया।
43 तब सब लोग परमेश्वर के
महासामर्थ्य से चकित हुए। परन्तु जब
सब लोग उन सब कामों से जो वह
करता था, अचम्भा कर रहे थे, तो
उसने अपने चेलों से कहा,
44 **"ये बातें तुम्हारे कानों में पड़ी
रहें, क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के
हाथ में पकड़वाया जाने को है।"**
45 **परन्तु वे इस बात को न समझते
थे, और यह उनसे छिपी रही; कि वे
उसे जानने न पाएँ, और वे इस बात
के विषय में उससे पूछने से डरते थे।**

[illegible]?

46 फिर उनमें यह विवाद होने लगा,
कि हम में से बड़ा कौन है?
47 पर यीशु ने उनके मन का विचार
जान लिया, और एक बालक को लेकर
अपने पास खड़ा किया,
48 और उनसे कहा, **"जो कोई मेरे
नाम से इस बालक को ग्रहण करता
है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो
कोई मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे
भेजनेवाले को ग्रहण करता है, क्योंकि
जो तुम में सबसे छोटे से छोटा है,
वही बड़ा है।"**

[illegible]

49 तब यूहन्ना ने कहा, "हे स्वामी,
हमने एक मनुष्य को तेरे नाम से
दुष्टात्माओं को निकालते देखा, और
हमने उसे मना किया, क्योंकि वह
हमारे साथ होकर तेरे पीछे नहीं हो
लेता।"
50 यीशु ने उससे कहा, **"उसे मना
मत करो; क्योंकि जो तुम्हारे विरोध
में नहीं, वह तुम्हारी ओर है।"**

[illegible]

51 जब उसके ऊपर उठाए जाने
के दिन पूरे होने पर थे, तो उसने
यरूशलेम को जाने का विचार दृढ़
किया।

52 और उसने अपने आगे दूत भेजे:
वे सामरियों के एक गाँव में गए, कि
उसके लिये जगह तैयार करें।
53 परन्तु *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*
[illegible] [illegible] [illegible]§, क्योंकि वह
यरूशलेम को जा रहा था।
54 यह देखकर उसके चेले याकूब
और यूहन्ना ने कहा, "हे प्रभु; क्या
तू चाहता है, कि हम आज्ञा दें, कि
आकाश से आग गिरकर उन्हें भस्म कर
दे?"
55 परन्तु उसने फिरकर उन्हें डाँटा
[और कहा, "तुम नहीं जानते कि तुम
कैसी आत्मा के हो। क्योंकि मनुष्य का
पुत्र लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं
वरन् बचाने के लिये आया है।"]
56 और वे किसी और गाँव में चले
गए।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

57 जब वे मार्ग में चले जाते थे, तो
किसी ने उससे कहा, "जहाँ-जहाँ तू
जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूँगा।"
58 यीशु ने उससे कहा, **"लोमड़ियों
के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे
होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर
रखने की भी जगह नहीं।"**
59 उसने दूसरे से कहा, **"मेरे पीछे
हो ले।"** उसने कहा, "हे प्रभु, मुझे
पहले जाने दे कि अपने पिता को गाड़
दूँ।"
60 उसने उससे कहा, **"मरे हुओं को
अपने मुर्दे गाड़ने दे, पर तू जाकर
परमेश्वर के राज्य की कथा सुना।"**
61 एक और ने भी कहा, "हे प्रभु, मैं
तेरे पीछे हो लूँगा; पर पहले मुझे जाने
दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो
आऊँ।" ***(1 [illegible]. 19:20)***
62 यीशु ने उससे कहा, **"जो कोई
अपना हाथ हल पर रखकर पीछे
देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के
योग्य नहीं।"**

10

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 और इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर
और मनुष्य नियुक्त किए और जिस-
जिस नगर और जगह को वह आप
जाने पर था, वहाँ उन्हें दो-दो करके
अपने आगे भेजा।
2 और उसने उनसे कहा, **"पके
खेत बहुत हैं; परन्तु मजदूर थोड़े हैं
इसलिए खेत के स्वामी से विनती
करो, कि वह अपने खेत काटने को
मजदूर भेज दे।**
3 **जाओ; देखों मैं तुम्हें भेड़ों के
समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ।**
4 **इसलिए न बटुआ, न झोली,
न जूते लो; और न मार्ग में किसी
को नमस्कार करो।*(*** *[illegible]* ***10:9, 2
[illegible]. 4:29)***
5 **जिस किसी घर में जाओ, पहले
कहो, 'इस घर पर कल्याण हो।'**
6 **यदि वहाँ कोई कल्याण के योग्य
होगा; तो तुम्हारा कल्याण उस पर
ठहरेगा, नहीं तो तुम्हारे पास लौट
आएगा।**
7 **उसी घर में रहो, और जो
कुछ उनसे मिले, वही खाओ-पीओ,
क्योंकि मजदूर को अपनी मजदूरी
मिलनी चाहिए; घर-घर न फिरना।**
8 **और जिस नगर में जाओ, और
वहाँ के लोग तुम्हें उतारें, तो जो कुछ
तुम्हारे सामने रखा जाए वही खाओ।**

§ **9:53** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*: उन्होंने उसका स्वागत नहीं किया–उसके सत्कार करने पर विचार नहीं किया, या दयालुता के साथ उससे नहीं मिले।

9 वहाँ के बीमारों को चंगा करो:
और उनसे कहो, 'परमेश्वर का राज्य
तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।'
10 परन्तु जिस नगर में जाओ, और
वहाँ के लोग तुम्हें ग्रहण न करें, तो
उसके बाजारों में जाकर कहो,
11 'तुम्हारे नगर की धूल भी, जो
हमारे पाँवों में लगी है, हम तुम्हारे
सामने झाड़ देते हैं, फिर भी यह जान
लो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे
निकट आ पहुँचा है।'
12 मैं तुम से कहता हूँ, कि उस दिन
उस नगर की दशा से सदोम की दशा
अधिक सहने योग्य होगी।*([illegible]. 19:24,25)*

[illegible]

13 "हाय खुराजीन! हाय बैतसैदा!
जो सामर्थ्य के काम तुम में किए गए,
यदि वे सोर और सीदोन में किए
जाते, तो टाट ओढ़कर और राख में
बैठकर वे कब के मन फिराते।
14 परन्तु न्याय के दिन तुम्हारी
दशा से सोर और सीदोन की दशा
अधिक सहने योग्य होगी।*([illegible]. 3:4-8, [illegible]. 9:2-4)*
15 और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग
तक ऊँचा किया जाएगा? तू तो
अधोलोक तक नीचे जाएगा।*([illegible]. 14:13,15)*
16 "जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी
सुनता है, और जो तुम्हें तुच्छ जानता
है, वह मुझे तुच्छ जानता है; और
जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे
भेजनेवाले को तुच्छ जानता है।"

[illegible]

17 वे सत्तर आनन्द से फिर आकर
कहने लगे, "हे प्रभु, तेरे नाम से
दुष्टात्मा भी हमारे वश में है।"
18 उसने उनसे कहा, "मैं शैतान
को बिजली के समान स्वर्ग से गिरा
हुआ देख रहा था।*([illegible]. 12:7-9, [illegible]. 14:12)*
19 मैंने तुम्हें *[illegible]*[*] का, और
शत्रु की सारी सामर्थ्य पर अधिकार
दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ
हानि न होगी।*([illegible]. 91:13)*
20 तो भी इससे आनन्दित मत हो,
कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु
इससे आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम
स्वर्ग पर लिखे हैं।"

[illegible]

21 उसी घड़ी वह पवित्र आत्मा में
होकर आनन्द से भर गया, और कहा,
"हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु,
मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि तूने
इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों
से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट
किया, हाँ, हे पिता, क्योंकि तुझे यही
अच्छा लगा।
22 मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंप
दिया है; और कोई नहीं जानता कि
पुत्र कौन है, केवल पिता और पिता
कौन है यह भी कोई नहीं जानता,
केवल पुत्र के और वह जिस पर पुत्र उसे
प्रकट करना चाहे।"
23 और चेलों की ओर मुड़कर अकेले
में कहा, "धन्य हैं वे आँखें, जो ये बातें
जो तुम देखते हो देखती हैं,
24 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ,
कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और
राजाओं ने चाहा, कि जो बातें तुम

---

[*] **10:19** *[illegible]:* खतरे से परिरक्षण। यदि हम जहरीले साँपों पर पाँव रखते है कि हम घायल हो जाए, तो परमेश्वर हमें खतरे से बचाने का वादा करता है।

देखते हो देखें; पर न देखीं और जो
बातें तुम सुनते हो सुनें, पर न सुनीं।"

⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰

25 तब एक व्यवस्थापक उठा; और
यह कहकर, उसकी परीक्षा करने लगा,
"हे गुरु, अनन्त जीवन का वारिस होने
के लिये मैं क्या करूँ?"
26 उसने उससे कहा, **"व्यवस्था में**
क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है?"
27 उसने उत्तर दिया, "तू प्रभु अपने
परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने
सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और
अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख;
और अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्रेम
रख।" ***(⍰⍰⍰⍰⍰ 22:37-40, ⍰⍰⍰⍰.***
6:5, ⍰⍰⍰⍰. 10:12, ⍰⍰⍰. 22:5)
28 उसने उससे कहा, "तूने ठीक
उत्तर दिया, यही कर तो तू जीवित
रहेगा।" ***(⍰⍰⍰⍰⍰. 18:5)***
29 परन्तु उसने *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰*
⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰[†] की इच्छा से यीशु
से पूछा, "तो मेरा पड़ोसी कौन है?"
30 यीशु ने उत्तर दिया **"एक मनुष्य**
यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था,
कि डाकुओं ने घेरकर उसके कपड़े
उतार लिए, और मारपीट कर उसे
अधमरा छोड़कर चले गए।
31 **और ऐसा हुआ कि उसी मार्ग से**
एक याजक जा रहा था, परन्तु उसे
देखकर कतराकर चला गया।
32 **इसी रीति से** *⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰*[‡] **उस**
जगह पर आया, वह भी उसे देखकर
कतराकर चला गया।
33 **परन्तु** *⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰*[§] **यात्री वहाँ**
आ निकला, और उसे देखकर तरस
खाया।
34 **और उसके पास आकर**
और *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰*
⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰[*] **पट्टियाँ बाँधी, और**
अपनी सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले
गया, और उसकी सेवा टहल की।
35 **दूसरे दिन उसने दो दीनार**
निकालकर सराय के मालिक को दिए,
और कहा, 'इसकी सेवा टहल करना,
और जो कुछ तेरा और लगेगा, वह मैं
लौटने पर तुझे दे दूँगा।'
36 **अब तेरी समझ में जो डाकुओं में**
घिर गया था, इन तीनों में से उसका
पड़ोसी कौन ठहरा?"
37 उसने कहा, "वही जिसने उस
पर तरस खाया।" यीशु ने उससे कहा,
"जा, तू भी ऐसा ही कर।"

⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰

38 फिर जब वे जा रहे थे, तो वह एक
गाँव में गया, और मार्था नाम एक स्त्री
ने उसे अपने घर में स्वागत किया।
39 और मरियम नामक उसकी एक
बहन थी; वह प्रभु के पाँवों के पास
बैठकर उसका वचन सुनती थी।
40 परन्तु मार्था सेवा करते-करते
घबरा गई और उसके पास आकर कहने
लगी, "हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी
चिन्ता नहीं कि मेरी बहन ने मुझे सेवा
करने के लिये अकेली ही छोड़ दिया
है? इसलिए उससे कह, मेरी सहायता
करे।"
41 प्रभु ने उसे उत्तर दिया, **"मार्था,**
हे मार्था; तू बहुत बातों के लिये चिन्ता
करती और घबराती है।
42 **परन्तु एक बात अवश्य है,**
और उस उत्तम भाग को मरियम ने
चुन लिया है: जो उससे छीना न
जाएगा।"

[†] **10:29** *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰:* निर्दोष प्रकट होने का इच्छुक [‡] **10:32** *⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰:* लेवी, साथ ही याजक भी, लेवी के गोत्र के थे [§] **10:33** *⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰:* सामरी यहूदियों के सबसे कट्टर शत्रु थे। वे एक दूसरे के साथ कोई व्यवहार नहीं रखते थे [*] **10:34** *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰:* ये अक्सर घावों को चंगा करने के लिए दवा के रूप में इस्तेमाल किया जाता था

11

[illegible]

1 फिर वह किसी जगह प्रार्थना कर
रहा था। और जब वह प्रार्थना कर
चुका, तो उसके चेलों में से एक ने
उससे कहा, “हे प्रभु, जैसे यूहन्ना ने
अपने चेलों को [illegible]*।”
2 उसने उनसे कहा, “जब तुम
प्रार्थना करो, तो कहो:
‘हे पिता,
तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा
राज्य आए।
3 ‘हमारी दिन भर की रोटी हर दिन
हमें दिया कर।
4 ‘और हमारे पापों को क्षमा कर,
क्योंकि[illegible]†,
और हमें परीक्षा में न ला।’ ”

[illegible]

5 और उसने उनसे कहा, “तुम में से
कौन है कि उसका एक मित्र हो, और
वह आधी रात को उसके पास जाकर
उससे कहे, ‘हे मित्र; मुझे तीन रोटियाँ
दे।
6 क्योंकि एक यात्री मित्र मेरे पास
आया है, और उसके आगे रखने के
लिये मेरे पास कुछ नहीं है।’
7 और वह भीतर से उत्तर देता, कि
मुझे दुःख न दे; अब तो द्वार बन्द
है, और मेरे बालक मेरे पास बिछौने
पर हैं, इसलिए मैं उठकर तुझे दे नहीं
सकता।
8 मैं तुम से कहता हूँ, यदि उसका
मित्र होने पर भी उसे उठकर न दे,
फिर भी उसके लज्जा छोड़कर माँगने
के कारण उसे जितनी आवश्यकता हो
उतनी उठकर देगा।
9 और मैं तुम से कहता हूँ; कि
माँगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो
तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो
तुम्हारे लिये खोला जाएगा।
10 क्योंकि जो कोई माँगता है, उसे
मिलता है; और जो ढूँढ़ता है, वह
पाता है; और जो खटखटाता है, उसके
लिये खोला जाएगा।
11 तुम में से ऐसा कौन पिता होगा,
कि जब उसका पुत्र रोटी माँगे, तो उसे
पत्थर दे: या मछली माँगे, तो मछली
के बदले उसे साँप दे?
12 या अण्डा माँगे तो उसे बिच्छू
दे?
13 अतः जब तुम बुरे होकर अपने
बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते
हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने
माँगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न
देगा।”

[illegible]

14 फिर उसने एक गूँगी दुष्टात्मा को
निकाला; जब दुष्टात्मा निकल गई,
तो गूँगा बोलने लगा; और लोगों ने
अचम्भा किया।
15 परन्तु उनमें से कितनों ने कहा,
“यह तो दुष्टात्माओं के प्रधान शैतान
की सहायता से दुष्टात्माओं को
निकालता है।”
16 औरों ने उसकी परीक्षा करने के
लिये उससे आकाश का एक चिन्ह
माँगा।
17 परन्तु उसने, उनके मन की
बातें जानकर, उनसे कहा, “जिस-जिस
राज्य में फूट होती है, वह राज्य उजड़

---

* **11:1** [illegible] .... [illegible]: हमें प्रार्थना करना सिखा – सम्भवतः चेले यीशु की प्रार्थना की उत्कृष्टता और उत्साह के साथ भरे थे। † **11:4** [illegible] .... [illegible]: जब तक हम दूसरों को क्षमा नहीं करेंगे, तब तक परमेश्वर हमें भी क्षमा नहीं करेगा।

जाता है; और जिस घर में फूट होती
है, वह नाश हो जाता है।
18 और यदि शैतान अपना ही
विरोधी हो जाए, तो उसका राज्य
कैसे बना रहेगा? क्योंकि तुम मेरे
विषय में तो कहते हो, कि यह शैतान
की सहायता से दुष्टात्मा निकालता
है।
19 भला यदि मैं शैतान की
सहायता से दुष्टात्माओं को
निकालता हूँ, तो तुम्हारी सन्तान
किसकी सहायता से निकालते
हैं? इसलिए वे ही तुम्हारा न्याय
चुकाएँगे।
20 परन्तु यदि मैं परमेश्वर की
सामर्थ्य से दुष्टात्माओं को निकालता
हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास
आ पहुँचा।
21 जब बलवन्त मनुष्य हथियार
बाँधे हुए अपने घर की रखवाली करता
है, तो उसकी सम्पत्ति बची रहती है।
22 पर जब उससे बढ़कर कोई और
बलवन्त चढ़ाई करके उसे जीत लेता
है, तो उसके वे हथियार जिन पर
उसका भरोसा था, छीन लेता है और
उसकी सम्पत्ति लूटकर बाँट देता है।
23 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे विरोध
में है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता
वह बिखेरता है।

[illegible]

24 "जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में
से निकल जाती है तो सूखी जगहों
में विश्राम ढूँढ़ती फिरती है, और जब
नहीं पाती तो कहती है, कि मैं अपने
उसी घर में जहाँ से निकली थी लौट
जाऊँगी।
25 और आकर उसे झाड़ा-बुहारा
और सजा-सजाया पाती है।
26 तब वह आकर अपने से और
बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले
आती है, और वे उसमें समाकर वास
करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली
दशा पहले से भी बुरी हो जाती है।"
27 जब वह ये बातें कह ही रहा था
तो भीड़ में से किसी स्त्री ने ऊँचे शब्द
से कहा, "धन्य है वह गर्भ जिसमें तू
रहा और वे स्तन, जो तूने चूसे।"
28 उसने कहा, "**हाँ; परन्तु धन्य वे
हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और
मानते हैं।**"

[illegible]

29 जब बड़ी भीड़ इकट्ठी होती जाती
थी तो वह कहने लगा, "**इस युग के
लोग बुरे हैं; वे चिन्ह ढूँढ़ते हैं; पर
योना के चिन्ह को छोड़ कोई और
चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा।**
30 **जैसा योना नीनवे के लोगों के
लिये चिन्ह ठहरा, वैसा ही मनुष्य का
पुत्र भी इस युग के लोगों के लिये
ठहरेगा।**
31 **दक्षिण की रानी न्याय के दिन
इस समय के मनुष्यों के साथ उठकर,
उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह
सुलैमान का ज्ञान सुनने को पृथ्वी की
छोर से आई, और देखो यहाँ वह है
जो सुलैमान से भी बड़ा है।***(1 [illegible].
10:1-10, 2 [illegible]. 9:1)*
32 **नीनवे के लोग न्याय के दिन इस
समय के लोगों के साथ खड़े होकर,
उन्हें दोषी ठहराएँगे; क्योंकि उन्होंने
योना का प्रचार सुनकर मन फिराया
और देखो, यहाँ वह है, जो योना से
भी बड़ा है।***([illegible] 3:5-10)*

[illegible]

33 "**कोई मनुष्य दीया जला के
तलघर में, या पैमाने के नीचे नहीं**

रखता, परन्तु दीवट पर रखता है कि भीतर आनेवाले उजियाला पाएँ।

34 तेरे शरीर का दीया तेरी आँख है, इसलिए जब तेरी आँख निर्मल है, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला है; परन्तु जब वह बुरी है, तो तेरा शरीर भी अंधेरा है।

35 इसलिए सावधान रहना, कि जो उजियाला तुझ में है वह अंधेरा न हो जाए।

36 इसलिए यदि तेरा सारा शरीर उजियाला हो, और उसका कोई भाग अंधेरा न रहे, तो सब का सब ऐसा उजियाला होगा, जैसा उस समय होता है, जब दीया अपनी चमक से तुझे उजाला देता है।"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

37 जब वह बातें कर रहा था, तो किसी फरीसी ने उससे विनती की, कि मेरे यहाँ भोजन कर; और वह भीतर जाकर भोजन करने बैठा।

38 फरीसी ने यह देखकर अचम्भा किया कि उसने भोजन करने से पहले हाथ-पैर नहीं धोये।

39 प्रभु ने उससे कहा, "हे फरीसियों, तुम कटोरे और थाली को ऊपर-ऊपर तो माँजते हो, परन्तु तुम्हारे भीतर अंधेर और दुष्टता भरी है।

40 हे निर्बुद्धियों, जिसने बाहर का भाग बनाया, *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*‡?

41 परन्तु हाँ, भीतरवाली वस्तुओं को दान कर दो, तब सब कुछ तुम्हारे लिये शुद्ध हो जाएगा।

42 "पर हे फरीसियों, तुम पर हाय! तुम पोदीने और सुदाब का, और सब भाँति के साग-पात का दसवाँ अंश देते हो, परन्तु न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को टाल देते हो; चाहिए तो था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते। *([illegible] 23:23, [illegible] 6:8, [illegible]. 27:30)*

43 हे फरीसियों, तुम पर हाय! तुम आराधनालयों में मुख्य-मुख्य आसन और बाजारों में नमस्कार चाहते हो।

44 हाय तुम पर! क्योंकि तुम उन छिपी कब्रों के समान हो, जिन पर लोग चलते हैं, परन्तु नहीं जानते।"

45 तब एक व्यवस्थापक ने उसको उत्तर दिया, "हे गुरु, इन बातों के कहने से तू हमारी निन्दा करता है।"

46 उसने कहा, "हे व्यवस्थापकों, तुम पर भी हाय! तुम ऐसे बोझ जिनको उठाना कठिन है, मनुष्यों पर लादते हो परन्तु तुम आप उन बोझों को अपनी एक उँगली से भी नहीं छूते।

47 हाय तुम पर! तुम उन भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें बनाते हो, जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने मार डाला था।

48 अतः तुम गवाह हो, और अपने पूर्वजों के कामों से सहमत हो; क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मार डाला और तुम उनकी कब्रें बनाते हो।

49 इसलिए परमेश्वर की बुद्धि ने भी कहा है, कि मैं उनके पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूँगी, और वे उनमें से कितनों को मार डालेंगे, और कितनों को सताएँगे।

50 ताकि जितने भविष्यद्वक्ताओं का लहू जगत की उत्पत्ति से बहाया गया है, सब का लेखा, इस युग के लोगों से लिया जाए,

51 हाबिल की हत्या से लेकर

‡ **11:40** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* कहने का मतलब परमेश्वर, जिसने "शरीर" बनाया उसी ने "आत्मा" भी बनाया

जकर्याह की हत्या तक जो वेदी और मन्दिर के बीच में मारा गया: मैं तुम से सच कहता हूँ; उसका लेखा इसी समय के लोगों से लिया जाएगा।*([illegible]. 4:8, 2 [illegible]. 24:20,21)*

52 **हाय तुम व्यवस्थापकों पर! कि तुम ने***[illegible]*§**ले तो ली, परन्तु तुम ने आप ही प्रवेश नहीं किया, और प्रवेश करनेवालों को भी रोक दिया।"**

53 जब वह वहाँ से निकला, तो शास्त्री और फरीसी बहुत पीछे पड़ गए और छेड़ने लगे, कि वह बहुत सी बातों की चर्चा करे,

54 और उसकी घात में लगे रहे, कि उसके मुँह की कोई बात पकड़ें।

12

[illegible]

1 इतने में जब हजारों की भीड़ लग गई, यहाँ तक कि एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे, तो वह सबसे पहले अपने चेलों से कहने लगा, **"फरीसियों के कपटरूपी ख़मीर से सावधान रहना।**

2 **कुछ ढँपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा।**

3 **इसलिए जो कुछ तुम ने अंधेरे में कहा है, वह उजाले में सुना जाएगा; और जो तुम ने भीतर के कमरों में कानों कान कहा है, वह छतों पर प्रचार किया जाएगा।**

[illegible]

4 **"परन्तु मैं तुम से जो मेरे मित्र हो कहता हूँ, कि जो शरीर को मार सकते हैं और उससे ज्यादा और कुछ नहीं कर सकते, उनसे मत डरो।**

5 **मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि तुम्हें किस से डरना चाहिए, मारने के बाद जिसको नरक में डालने का अधिकार है, उसी से डरो; वरन् मैं तुम से कहता हूँ उसी से डरो।**

6 **क्या दो पैसे की पाँच गौरैयाँ नहीं बिकती? फिर भी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलता।**

7 **वरन् तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं, अतः डरो नहीं, तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो।**

[illegible]

8 **"मैं तुम से कहता हूँ जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा उसे मनुष्य का पुत्र भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने मान लेगा।**

9 **परन्तु जो मनुष्यों के सामने मुझे इन्कार करे उसका परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने इन्कार किया जाएगा।**

10 **"जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहे, उसका वह अपराध क्षमा किया जाएगा। परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करें, उसका अपराध क्षमा नहीं किया जाएगा।**

11 **"जब लोग तुम्हें आराधनालयों और अधिपतियों और अधिकारियों के सामने ले जाएँ, तो चिन्ता न करना कि हम किस रीति से या क्या उत्तर दें, या क्या कहें।**

12 **क्योंकि पवित्र आत्मा उसी घड़ी तुम्हें सीखा देगा, कि क्या कहना चाहिए।"**

[illegible]

§ **11:52** *[illegible]:* एक कुँजी ताला या दरवाजा खोलने के लिए बनाई जाती है। पुराने नियम की गलत व्याख्या करके वे सच्चाई की कुँजी या समझने की विधि को दूर ले गया।

13 फिर भीड़ में से एक ने उससे कहा, “हे गुरु, मेरे भाई से कह, कि पिता की [illegible]* ।”

14 उसने उससे कहा, “हे मनुष्य, किसने मुझे तुम्हारा न्यायी या बाँटनेवाला नियुक्त किया है?”*([illegible]. 2:14)*

15 और उसने उनसे कहा, “सावधान रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो; क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता।”

16 उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा, “किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई।

17 तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूँ, क्योंकि मेरे यहाँ जगह नहीं, जहाँ अपनी उपज इत्यादि रखूँ।

18 और उसने कहा, ‘मैं यह करूँगा: मैं अपनी बखारियाँ तोड़कर उनसे बड़ी बनाऊँगा; और वहाँ अपना सब अन्न और सम्पत्ति रखूँगा;

19 और अपने प्राण से कहूँगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह।’

20 परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, ‘हे मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा?’

21 ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।”

[illegible]

22 फिर उसने अपने चेलों से कहा, “इसलिए मैं तुम से कहता हूँ, अपने जीवन की चिन्ता न करो, कि हम क्या खाएँगे; न अपने शरीर की, कि क्या पहनेंगे।

23 क्योंकि भोजन से प्राण, और वस्त्र से शरीर बढ़कर है।

24 कौवों पर ध्यान दो; वे न बोते हैं, न काटते; न उनके भण्डार और न खत्ता होता है; फिर भी परमेश्वर उन्हें खिलाता है। तुम्हारा मूल्य पक्षियों से कहीं अधिक है*([illegible]. 147:9)*

25 तुम में से ऐसा कौन है, जो चिन्ता करने से अपने जीवनकाल में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?

26 इसलिए यदि तुम सबसे छोटा काम भी नहीं कर सकते, तो और बातों के लिये क्यों चिन्ता करते हो?

27 सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न परिश्रम करते, न काटते हैं; फिर भी मैं तुम से कहता हूँ, कि सुलैमान भी अपने सारे वैभव में, उनमें से किसी एक के समान वस्त्र पहने हुए न था।

28 इसलिए यदि परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल भट्ठी में झोंकी जाएगी, ऐसा पहनाता है; तो हे अल्पविश्वासियों, वह तुम्हें अधिक क्यों न पहनाएगा?

29 और तुम इस बात की खोज में न रहो, कि क्या खाएँगे और क्या पीएँगे, और न सन्देह करो।

30 क्योंकि संसार की जातियाँ इन सब वस्तुओं की खोज में रहती हैं और तुम्हारा पिता जानता है, कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है।

31 परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, तो ये वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।

[illegible]?

* **12:13** *[illegible]:* एक पिता के द्वारा अपने बच्चों के लिये छोड़ दिया गया एक भाग सम्पत्ति है।

32 “हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।

33 *[illegible]*†दान कर दो; और अपने लिये ऐसे बटुए बनाओ, जो पुराने नहीं होते, अर्थात् स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं, जिसके निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नाश नहीं करता।

34 क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

[illegible]

35 “तुम्हारी कमर बंधी रहें, और तुम्हारे दीये जलते रहें।*([illegible]. 12:11, 2 [illegible]. 4:29, [illegible]. 6:14, [illegible] 5:16)*

36 और तुम उन मनुष्यों के समान बनो, जो अपने स्वामी की प्रतीक्षा कर रहे हों, कि वह विवाह से कब लौटेगा; कि जब वह आकर द्वार खटखटाएँ तो तुरन्त उसके लिए खोल दें।

37 धन्य हैं वे दास, जिन्हें स्वामी आकर जागते पाए; मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वह कमर बाँधकर उन्हें भोजन करने को बैठाएगा, और पास आकर उनकी सेवा करेगा।

38 यदि वह रात के दूसरे पहर या तीसरे पहर में आकर उन्हें जागते पाए, तो वे दास धन्य हैं।

39 परन्तु तुम यह जान रखो, कि यदि घर का स्वामी जानता, कि चोर किस घड़ी आएगा, तो जागता रहता, और अपने घर में सेंध लगने न देता।

40 तुम भी तैयार रहो; क्योंकि जिस घड़ी तुम सोचते भी नहीं, उस घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।”

[illegible]?

41 तब पतरस ने कहा, “हे प्रभु, क्या यह दृष्टान्त तू हम ही से या सबसे कहता है।”

42 प्रभु ने कहा, “वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिसका स्वामी उसे नौकर-चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर भोजन सामग्री दे।

43 धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए।

44 मैं तुम से सच कहता हूँ; वह उसे अपनी सब सम्पत्ति पर अधिकारी ठहराएगा।

45 परन्तु यदि वह दास सोचने लगे, कि मेरा स्वामी आने में देर कर रहा है, और दासों और दासियों को मारने-पीटने और खाने-पीने और पियक्कड़ होने लगे।

46 तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन, जब वह उसकी प्रतीक्षा न कर रहा हो, और ऐसी घड़ी जिसे वह जानता न हो, आएगा और उसे भारी ताड़ना देकर उसका भाग विश्वासघाती के साथ ठहराएगा।

47 और*[illegible]*‡, और तैयार न रहा और न उसकी इच्छा के अनुसार चला, बहुत मार खाएगा।

48 परन्तु जो नहीं जानकर मार खाने के योग्य काम करे वह थोड़ी मार खाएगा, इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत लिया जाएगा।

[illegible]

† **12:33** *[illegible]:* अपनी सम्पत्ति बेचकर ऐसी वस्तु में बदल लें, जो दान वितरण में इस्तेमाल किया जा सके। ‡ **12:47** *[illegible]:* वह परमेश्वर की आज्ञाओं और आवश्यकताओं को जानता है कि क्या हैं, को संदर्भित करता है

49 **“मैं पृथ्वी पर*[illegible]*§लगाने आया**
हूँ; और क्या चाहता हूँ केवल यह कि
अभी सुलग जाती!
50 **मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है;**
और जब तक वह न हो ले तब तक मैं
कैसी व्यथा में रहूँगा!
51 **क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी**
पर मिलाप कराने आया हूँ? मैं तुम
से कहता हूँ; नहीं, वरन् अलग कराने
आया हूँ।
52 **क्योंकि अब से एक घर में पाँच**
जन आपस में विरोध रखेंगे, तीन दो
से दो तीन से।
53 **पिता पुत्र से, और पुत्र पिता से**
विरोध रखेगा; माँ बेटी से, और बेटी
माँ से, सास बहू से, और बहू सास से
विरोध रखेगी।”*(*[illegible]* 7:6)*

[illegible]

54 और उसने भीड़ से भी कहा, **“जब**
बादल को पश्चिम से उठते देखते हो,
तो तुरन्त कहते हो, कि वर्षा होगी;
और ऐसा ही होता है।
55 **और जब दक्षिणी हवा चलती**
देखते हो तो कहते हो, कि लूह
चलेगी, और ऐसा ही होता है।
56 **हे कपटियों, तुम धरती और**
आकाश के रूप में भेद कर सकते हो,
परन्तु इस युग के विषय में क्यों भेद
करना नहीं जानते?

[illegible]

57 **“तुम आप ही निर्णय क्यों नहीं**
कर लेते, कि उचित क्या है?
58 **जब तू अपने मुद्दई के साथ**
न्यायाधीश के पास जा रहा है, तो
मार्ग ही में उससे छूटने का यत्न कर
ले ऐसा न हो, कि वह तुझे न्यायी के
पास खींच ले जाए, और न्यायी तुझे
सिपाही को सौंपे और सिपाही तुझे
बन्दीगृह में डाल दे।
59 **मैं तुम से कहता हूँ, कि जब तक**
तू पाई-पाई न चुका देगा तब तक वहाँ
से छूटने न पाएगा।”

13

[illegible]

1 उस समय कुछ लोग आ पहुँचे,
और यीशु से उन गलीलियों की चर्चा
करने लगे, जिनका लहू पिलातुस ने
उन ही के बलिदानों के साथ मिलाया
था।
2 यह सुनकर यीशु ने उनको उत्तर में
यह कहा, **“क्या तुम समझते हो, कि ये**
गलीली बाकी गलीलियों से पापी थे
कि उन पर ऐसी विपत्ति पड़ी?
3 **मैं तुम से कहता हूँ, कि**
नहीं; परन्तु *[illegible]तो तुम सब भी इसी**
रीति से नाश होंगे।
4 **या क्या तुम समझते हो, कि वे**
अठारह जन जिन पर शीलोह का
गुम्मट गिरा, और वे दबकर मर गए:
यरूशलेम के और सब रहनेवालों से
अधिक अपराधी थे?
5 **मैं तुम से कहता हूँ, कि नहीं;**
परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो
तुम भी सब इसी रीति से नाश होंगे।”

[illegible]

6 फिर उसने यह दृष्टान्त भी कहा,
“किसी की*[illegible]*†में
एक अंजीर का पेड़ लगा हुआ था:
वह उसमें फल ढूँढ़ने आया, परन्तु

---

§ **12:49** *[illegible]*: आग, परिणामतः यहाँ पर कलह और विवाद, और आपदाओं का प्रतीक है। * **13:3** *[illegible]*: हमें अवश्य मन फिराना चाहिए या हम नष्ट हो जाएँगे। † **13:6** *[illegible]*: एक स्थान जहाँ पर अंगूर की बारी लगाई जाती थी।

न पाया।(*[illegible] 21:19,20, [illegible]. 11:12-14)*
7 तब उसने बारी के रखवाले से
कहा, 'देख तीन वर्ष से मैं इस अंजीर
के पेड़ में फल ढूँढ़ने आता हूँ, परन्तु
नहीं पाता, इसे काट डाल कि यह
भूमि को भी क्यों रोके रहे?'
8 उसने उसको उत्तर दिया, कि हे
स्वामी, इसे इस वर्ष तो और रहने दे;
कि मैं इसके चारों ओर खोदकर खाद
डालूँ।
9 अतः आगे को फले तो भला, नहीं
तो उसे काट डालना।"

[illegible]

10 सब्त के दिन वह एक
आराधनालय में उपदेश दे रहा था।
11 वहाँ एक स्त्री थी, जिसे अठारह
वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा
लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी,
और किसी रीति से सीधी नहीं हो
सकती थी।
12 यीशु ने उसे देखकर बुलाया, और
कहा, "हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से
छूट गई।"
13 तब उसने उस पर हाथ रखे, और
वह तुरन्त सीधी हो गई, और परमेश्वर
की बड़ाई करने लगी।
14 इसलिए कि यीशु ने *[illegible]*[‡],
आराधनालय का सरदार रिसियाकर
लोगों से कहने लगा, "छः दिन हैं,
जिनमें काम करना चाहिए, अतः उन
ही दिनों में आकर चंगे हो; परन्तु
सब्त के दिन में नहीं।" (*[illegible]. 20:9,10, [illegible]. 5:13,14)*
15 यह सुनकर प्रभु ने उत्तर देकर
कहा, "हे कपटियों, क्या सब्त के दिन
तुम में से हर एक अपने बैल या गदहे
को थान से खोलकर पानी पिलाने
नहीं ले जाता?
16 और क्या उचित न था, कि यह
स्त्री जो अब्राहम की बेटी है, जिसे
शैतान ने अठारह वर्ष से बाँध रखा
था, सब्त के दिन इस बन्धन से छुड़ाई
जाती?"
17 जब उसने ये बातें कहीं, तो उसके
सब विरोधी लज्जित हो गए, और
सारी भीड़ उन महिमा के कामों से जो
वह करता था, आनन्दित हुई।

[illegible]

18 फिर उसने कहा, "परमेश्वर का
राज्य किसके समान है? और मैं
उसकी उपमा किस से दूँ?
19 वह राई के एक दाने के समान
है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर
अपनी बारी में बोया: और वह
बढ़कर पेड़ हो गया; और आकाश के
पक्षियों ने उसकी डालियों पर बसेरा
किया।"(*[illegible] 13:31,32, [illegible]. 31:6, [illegible]. 4:21)*
20 उसने फिर कहा, "मैं परमेश्वर के
राज्य कि उपमा किस से दूँ?
21 वह ख़मीर के समान है, जिसको
किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे
में मिलाया, और होते-होते सब आटा
ख़मीर हो गया।"

[illegible]

22 वह नगर-नगर, और गाँव-गाँव
होकर उपदेश देता हुआ यरूशलेम की
ओर जा रहा था।
23 और किसी ने उससे पूछा, "हे
प्रभु, क्या उद्धार पानेवाले थोड़े हैं?"
उसने उनसे कहा,
24 "सकेत द्वार से प्रवेश करने का
यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ,

‡ **13:14** *[illegible]:* चौथी आज्ञा के विपरीत काम करना, यहूदी इसे सब्त का उल्लंघन समझते थे।

कि बहुत से प्रवेश करना चाहेंगे, और
न कर सकेंगे।
25 जब घर का स्वामी उठकर द्वार
बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े
हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, 'हे
प्रभु, हमारे लिये खोल दे,' और वह
उत्तर दे कि मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम
कहाँ के हो?
26 तब तुम कहने लगोगे, 'कि
हमने तेरे सामने खाया-पीया और तूने
हमारे बजारों में उपदेश दिया।'
27 परन्तु वह कहेगा, मैं तुम से
कहता हूँ, 'मैं नहीं जानता तुम कहाँ
से हो। हे कुकर्म करनेवालों, तुम सब
मुझसे दूर हो।'*([illegible]. 6:8)*
28 वहाँ रोना और दाँत पीसना
होगा, जब तुम अब्राहम और इसहाक
और याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं
को परमेश्वर के राज्य में बैठे, और
अपने आपको बाहर निकाले हुए
देखोगे।
29 और पूर्व और पश्चिम; उत्तर और
दक्षिण से लोग आकर परमेश्वर के
राज्य के भोज में भागी होंगे।*([illegible].
66:18, [illegible]. 7:9, [illegible]. 107:3,
[illegible]. 1:11)*
30 यह जान लो, कितने पिछले हैं
वे प्रथम होंगे, और कितने जो प्रथम
हैं, वे पिछले होंगे।"

[illegible]

31 उसी घड़ी कितने फरीसियों ने
आकर उससे कहा, "यहाँ से निकलकर
चला जा; क्योंकि हेरोदेस तुझे मार
डालना चाहता है।"
32 उसने उनसे कहा, "जाकर उस
लोमड़ी से कह दो, कि देख मैं आज
और कल दुष्टात्माओं को निकालता
और बीमारों को चंगा करता हूँ और
तीसरे दिन अपना कार्य पूरा करूँगा।
33 तो भी मुझे आज और कल और
परसों चलना अवश्य है, क्योंकि हो
नहीं सकता कि कोई भविष्यद्वक्ता
यरूशलेम के बाहर मारा जाए।

[illegible]

34 "हे यरूशलेम! हे यरूशलेम! तू
जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता
है, और जो तेरे पास भेजे गए उन्हें
पथराव करता है; कितनी ही बार मैंने
यह चाहा, कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों
को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती
है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे
करूँ, पर तुम ने यह न चाहा।
35 देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये
उजाड़ छोड़ा जाता है, और मैं तुम
से कहता हूँ; जब तक तुम न कहोगे,
'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता
है,' तब तक तुम मुझे फिर कभी न
देखोगे।"*([illegible]. 118:26, [illegible].
12:7)*

14

[illegible]

1 फिर वह सब्त के दिन फरीसियों
के सरदारों में से किसी के घर में रोटी
खाने गया: और वे उसकी घात में थे।
2 वहाँ एक मनुष्य उसके सामने था,
जिसे *[illegible]** था।
3 इस पर यीशु ने व्यवस्थापकों और
फरीसियों से कहा, "क्या सब्त के दिन
अच्छा करना उचित है, कि नहीं?"
4 परन्तु वे चुपचाप रहे। तब उसने
उसे हाथ लगाकर चंगा किया, और
जाने दिया।
5 और उनसे कहा, "तुम में से ऐसा
कौन है, जिसका पुत्र या बैल कुएँ में

* **14:2** *[illegible]:* शरीर के विभिन्न भागों में पानी के संचय के द्वारा उत्पादित एक रोग; बहुत ही चिंताजनक, और आमतौर पर असाध्य है।

गिर जाए और वह सब्त के दिन उसे
तुरन्त बाहर न निकाल ले?"
6 वे इन बातों का कुछ उत्तर न दे
सके।

[illegible] [illegible] [illegible]

7 जब उसने देखा, कि आमन्त्रित
लोग कैसे मुख्य-मुख्य जगह चुन लेते
हैं तो एक दृष्टान्त देकर उनसे कहा,
8 **"जब कोई तुझे विवाह में बुलाए,**
तो मुख्य जगह में न बैठना, कहीं ऐसा
न हो, कि उसने तुझ से भी किसी बड़े
को नेवता दिया हो।
9 **और जिसने तुझे और उसे दोनों**
को नेवता दिया है, आकर तुझ से
कहे, 'इसको जगह दे,' और तब तुझे
लज्जित होकर सबसे नीची जगह में
बैठना पड़े।
10 **पर जब तू बुलाया जाए, तो**
सबसे नीची जगह जा बैठ, कि जब
वह, जिसने तुझे नेवता दिया है
आए, तो तुझ से कहे 'हे मित्र, आगे
बढ़कर बैठ,' तब तेरे साथ बैठनेवालों
के सामने तेरी बड़ाई होगी।*(*[illegible]*. 25:6,7)*
11 **क्योंकि जो कोई अपने आपको**
बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया
जाएगा; और जो कोई अपने आपको
छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया
जाएगा।"

[illegible]

12 तब उसने अपने नेवता देनेवाले
से भी कहा, **"जब तू दिन का या**
रात का भोज करे, तो अपने मित्रों
या भाइयों या कुटुम्बियों या धनवान
पड़ोसियों को न बुला, कहीं ऐसा न
हो, कि वे भी तुझे नेवता दें, और तेरा
बदला हो जाए।
13 **परन्तु जब तू भोज करे, तो**
कंगालों, टुण्डों, लँगड़ों और अंधों को
बुला।
14 **तब तू धन्य होगा, क्योंकि**
उनके पास तुझे बदला देने को कुछ
नहीं, परन्तु तुझे *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*† **पर इसका प्रतिफल मिलेगा।"**

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

15 उसके साथ भोजन करनेवालों में
से एक ने ये बातें सुनकर उससे कहा,
"धन्य है वह, जो परमेश्वर के राज्य में
रोटी खाएगा।"
16 उसने उससे कहा, **"किसी मनुष्य**
ने बड़ा भोज दिया और बहुतों को
बुलाया।
17 **जब भोजन तैयार हो गया, तो**
उसने अपने दास के हाथ आमन्त्रित
लोगों को कहला भेजा, 'आओ; अब
भोजन तैयार है।'
18 **पर वे सब के सब क्षमा माँगने**
लगे, पहले ने उससे कहा, 'मैंने खेत
मोल लिया है, और अवश्य है कि उसे
देखूँ; मैं तुझ से विनती करता हूँ, मुझे
क्षमा कर दे।'
19 **दूसरे ने कहा, 'मैंने पाँच जोड़े**
बैल मोल लिए हैं, और उन्हें परखने
जा रहा हूँ; मैं तुझ से विनती करता
हूँ, मुझे क्षमा कर दे।'
20 **एक और ने कहा, 'मैंने विवाह**
किया है, इसलिए मैं नहीं आ सकता।'
21 **उस दास ने आकर अपने स्वामी**
को ये बातें कह सुनाईं। तब घर
के स्वामी ने क्रोध में आकर अपने
दास से कहा, 'नगर के बाजारों और
गलियों में तुरन्त जाकर कंगालों,
टुण्डों, लँगड़ों और अंधों को यहाँ ले
आओ।'

---

† **14:14** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* जब धर्मी या पवित्र मरे हुओं में से जी उठाया जाएगा।

22 **दास ने फिर कहा, 'हे स्वामी, जैसे तूने कहा था, वैसे ही किया गया है; फिर भी जगह है।'**

23 **स्वामी ने दास से कहा, 'सड़कों पर और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को बरबस ले ही आ ताकि मेरा घर भर जाए।**

24 **क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि** *[illegible]*‡**।' "**

[illegible]?

25 और जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तो उसने पीछे फिरकर उनसे कहा।

26 **"यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता;*([illegible] 10:37, [illegible]. 12:25, [illegible]. 33:9)***

27 **और जो कोई अपना क्रूस न उठाए; और मेरे पीछे न आए; वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।**

28 **"तुम में से कौन है कि गढ़ बनाना चाहता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े, कि पूरा करने की सामर्थ्य मेरे पास है कि नहीं?**

29 **कहीं ऐसा न हो, कि जब नींव डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखनेवाले यह कहकर उसका उपहास करेंगे,**

30 **'यह मनुष्य बनाने तो लगा, पर तैयार न कर सका?'**

31 **या कौन ऐसा राजा है, कि दूसरे राजा से युद्ध करने जाता हो, और पहले बैठकर विचार न कर ले कि जो बीस हजार लेकर मुझ पर चढ़ा आता है, क्या मैं दस हजार लेकर उसका सामना कर सकता हूँ, कि नहीं?**

32 **नहीं तो उसके दूर रहते ही, वह दूत को भेजकर मिलाप करना चाहेगा।**

33 **इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।**

[illegible]

34 **"नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा।**

35 **वह न तो भूमि के और न खाद के लिये काम में आता है: उसे तो लोग बाहर फेंक देते हैं। जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले।"**

15

[illegible]

1 सब चुंगी लेनेवाले और पापी उसके पास आया करते थे ताकि उसकी सुनें।

2 और फरीसी और शास्त्री कुड़कुड़ाकर कहने लगे, "यह तो पापियों से मिलता है और उनके साथ खाता भी है।"

3 तब उसने उनसे यह दृष्टान्त कहा:

4 **"तुम में से कौन है जिसकी सौ भेड़ें हों, और उनमें से एक खो जाए तो निन्यानवे को मैदान में छोड़कर, उस खोई हुई को जब तक मिल न जाए खोजता न रहे?*([illegible]. 34:11,12,16)***

5 **और जब मिल जाती है, तब वह बड़े आनन्द से उसे काँधे पर उठा लेता है।**

6 **और घर में आकर मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठे करके कहता है,**

‡ **14:24** *[illegible]:* जिसने जान बूझकर सुसमाचार को अस्वीकार किया उनमें से कोई भी उद्धार नहीं पाएगा।

‘मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है।’

7 मैं तुम से कहता हूँ; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्यानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं।

[illegible]

8 “या कौन ऐसी स्त्री होगी, जिसके पास दस चाँदी के सिक्के हों, और उनमें से एक खो जाए; तो वह दीया जलाकर और घर झाड़-बुहारकर जब तक मिल न जाए, जी लगाकर खोजती न रहे?

9 और जब मिल जाता है, तो वह अपने सखियों और पड़ोसिनों को इकट्ठा करके कहती है, कि ‘मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरा खोया हुआ सिक्का मिल गया है।’

10 मैं तुम से कहता हूँ; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने आनन्द होता है।”

[illegible]

11 फिर उसने कहा, “किसी मनुष्य के दो पुत्र थे।

12 उनमें से छोटे ने पिता से कहा ‘हे पिता, सम्पत्ति में से जो भाग मेरा हो, वह मुझे दे दीजिए।’ उसने उनको अपनी सम्पत्ति बाँट दी।

13 और बहुत दिन न बीते थे कि छोटा पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके एक दूर देश को चला गया और वहाँ कुकर्म में अपनी सम्पत्ति उड़ा दी।*([illegible]. 29:3)*

14 जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया।

15 और वह उस देश के निवासियों में से एक के यहाँ गया, उसने उसे अपने खेतों में *[illegible]*[*] भेजा।

16 और वह चाहता था, कि उन फलियों से जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरे; क्योंकि उसे कोई कुछ नहीं देता था।

17 जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, ‘मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ।

18 मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा कि पिता जी मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है।*([illegible]. 51:4)*

19 अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ, मुझे अपने एक मजदूर के समान रख ले।’

[illegible]

20 “तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला: वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।

21 पुत्र ने उससे कहा, ‘पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत्र कहलाऊँ।’

22 परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, ‘झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पाँवों में जूतियाँ पहनाओ,

---

* **15:15** *[illegible]:* विशेष रूप से “यहूदी” के लिये, यह एक बहुत ही छोटा काम था।

23 और बड़ा भोज तैयार करो ताकि
हम खाएँ और आनन्द मनाएँ।
24 क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया
था, फिर जी गया है: [illegible][†],
अब मिल गया है।' और वे आनन्द
करने लगे।

[illegible]

25 "परन्तु उसका जेठा पुत्र खेत में
था। और जब वह आते हुए घर के
निकट पहुँचा, तो उसने गाने-बजाने
और नाचने का शब्द सुना।
26 और उसने एक दास को बुलाकर
पूछा, 'यह क्या हो रहा है?'
27 उसने उससे कहा, 'तेरा भाई
आया है, और तेरे पिता ने बड़ा भोज
तैयार कराया है, क्योंकि उसे भला
चंगा पाया है।'
28 "यह सुनकर वह क्रोध से भर
गया और भीतर जाना न चाहा: परन्तु
उसका पिता बाहर आकर उसे मनाने
लगा।
29 उसने पिता को उत्तर दिया,
'देख; मैं इतने वर्ष से तेरी सेवा कर
रहा हूँ, और कभी भी तेरी आज्ञा नहीं
टाली, फिर भी तूने मुझे कभी एक
बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं
अपने मित्रों के साथ आनन्द करता।
30 परन्तु जब तेरा यह पुत्र, जिसने
तेरी सम्पत्ति वेश्याओं में उड़ा दी है,
आया, तो उसके लिये तूने बड़ा भोज
तैयार कराया।'
31 उसने उससे कहा, 'पुत्र, तू सर्वदा
मेरे साथ है; और [illegible][‡]।
32 परन्तु अब आनन्द करना और
मगन होना चाहिए क्योंकि यह तेरा
भाई मर गया था फिर जी गया है; खो
गया था, अब मिल गया है।' "

16

[illegible]

1 फिर उसने चेलों से भी कहा,
"किसी धनवान का एक भण्डारी था,
और लोगों ने उसके सामने भण्डारी
पर यह दोष लगाया कि यह तेरी सब
सम्पत्ति उड़ाए देता है।
2 अतः धनवान ने उसे बुलाकर
कहा, 'यह क्या है जो मैं तेरे विषय
में सुन रहा हूँ? अपने भण्डारीपन का
लेखा दे; क्योंकि तू आगे को भण्डारी
नहीं रह सकता।'
3 तब भण्डारी सोचने लगा, 'अब मैं
क्या करूँ? क्योंकि मेरा स्वामी अब
भण्डारी का काम मुझसे छीन रहा
है: मिट्टी तो मुझसे खोदी नहीं जाती;
और भीख माँगने से मुझे लज्जा आती
है।
4 मैं समझ गया, कि क्या करूँगा:
ताकि जब मैं भण्डारी के काम से
छुड़ाया जाऊँ तो लोग मुझे अपने
घरों में ले लें।'
5 और उसने अपने स्वामी के
देनदारों में से एक-एक को बुलाकर
पहले से पूछा, कि तुझ पर मेरे स्वामी
का कितना कर्ज है?
6 उसने कहा, 'सौ मन जैतून का
तेल,' तब उसने उससे कहा, कि अपनी
खाता-बही ले और बैठकर तुरन्त
पचास लिख दे।
7 फिर दूसरे से पूछा, 'तुझ पर
कितना कर्ज है?' उसने कहा, 'सौ मन
गेहूँ,' तब उसने उससे कहा, 'अपनी
खाता-बही लेकर अस्सी लिख दे।'
8 "स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी
को सराहा, कि उसने चतुराई से काम
किया है; क्योंकि इस संसार के लोग

† **15:24** *[illegible]:* घर से दूर भटका हुआ था, और हम नहीं जानते कि वह कहाँ था। ‡ **15:31** *[illegible]:* सम्पत्ति का बँटवारा किया गया था, बड़े बेटे के लिये क्या वास्तविकता थी, वह सब कुछ का वारिस था और उसे इस्तेमाल करने का अधिकार था।

अपने समय के लोगों के साथ रीति-व्यवहारों में [illegible][*]से अधिक चतुर हैं।
9 **और मैं तुम से कहता हूँ, कि अधर्म के धन से अपने लिये मित्र बना लो; ताकि जब वह जाता रहे, तो वे तुम्हें अनन्त निवासों में ले लें।**
10 **जो थोड़े से थोड़े में विश्वासयोग्य है, वह बहुत में भी विश्वासयोग्य है: और जो थोड़े से थोड़े में अधर्मी है, वह बहुत में भी अधर्मी है।**
11 **इसलिए जब तुम सांसारिक धन में विश्वासयोग्य न ठहरे, तो सच्चा धन तुम्हें कौन सौंपेगा?**
12 **और यदि तुम पराए धन में विश्वासयोग्य न ठहरे, तो जो तुम्हारा है, उसे तुम्हें कौन देगा?**
13 **“कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा: तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।”**

[illegible]

14 फरीसी जो लोभी थे, ये सब बातें सुनकर उसका उपहास करने लगे।
15 उसने उनसे कहा, **“तुम तो मनुष्यों के सामने अपने आपको धर्मी ठहराते हो, परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है, क्योंकि जो वस्तु मनुष्यों की दृष्टि में महान है, वह परमेश्वर के निकट घृणित है।**
16 **“जब तक यूहन्ना आया, तब तक व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता प्रभाव में थे। उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और हर कोई उसमें प्रबलता से प्रवेश करता है।**
17 **आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है।**
18 **“जो कोई अपनी पत्नी को त्याग कर दूसरी से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है, और जो कोई ऐसी त्यागी हुई स्त्री से विवाह करता है, वह भी व्यभिचार करता है।**

[illegible]

19 **“एक धनवान मनुष्य था जो बैंगनी कपड़े और मलमल पहनता और प्रतिदिन सुख-विलास और धूम-धाम के साथ रहता था।**
20 **और [illegible][†]नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ उसकी डेवढ़ी पर छोड़ दिया जाता था।**
21 **और वह चाहता था, कि धनवान की मेज पर की जूठन से अपना पेट भरे; वरन् कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे।**
22 **और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर अब्राहम की गोद में पहुँचाया। और वह धनवान भी मरा; और गाड़ा गया,**
23 **और [illegible][‡]में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आँखें उठाई, और दूर से अब्राहम की गोद में लाज़र को देखा।**
24 **और उसने पुकारकर कहा, ‘हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी उँगली का सिरा पानी में भिगोकर**

[*] **16:8** *[illegible]:* वे लोग जिन्हें स्वर्ग से ज्ञान प्रकाशन प्रदान किया गया है। [†] **16:20** *[illegible]:* लाज़र इब्रानी शब्द है, और इसका मतलब मदद के लिये बेसहारा आदमी, एक जरुरतमन्द, गरीब आदमी से हैं। [‡] **16:23** *[illegible]:* यहाँ अधोलोक का मतलब है अंधेरा, अस्पष्ट, और दुःखी जगह, स्वर्ग से बहुत दूर, जहाँ पर दुष्ट को हमेशा हमेशा के लिये दण्ड दिया जाएगा।

मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस
ज्वाला में तड़प रहा हूँ।'
25 परन्तु अब्राहम ने कहा, 'हे पुत्र
स्मरण कर, कि तू अपने जीवनकाल
में अच्छी वस्तुएँ पा चुका है, और वैसे
ही लाज़र बुरी वस्तुएँ परन्तु अब वह
यहाँ शान्ति पा रहा है, और तू तड़प
रहा है।
26 और इन सब बातों को छोड़
हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई
ठहराई गई है कि जो यहाँ से उस पार
तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा
सके, और न कोई वहाँ से इस पार
हमारे पास आ सके।'
27 उसने कहा, 'तो हे पिता, मैं तुझ
से विनती करता हूँ, कि तू उसे मेरे
पिता के घर भेज,
28 क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं; वह
उनके सामने इन बातों की चेतावनी
दे, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा की
जगह में आएँ।'
29 अब्राहम ने उससे कहा, 'उनके
पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं
की पुस्तकें हैं, वे उनकी सुनें।'
30 उसने कहा, 'नहीं, हे पिता
अब्राहम; पर यदि कोई मरे हुओं में से
उनके पास जाए, तो वे मन फिराएँगे।'
31 उसने उससे कहा, 'जब वे मूसा
और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते,
तो यदि मरे हुओं में से कोई भी जी उठे
तो भी उसकी नहीं मानेंगे।' "

17

[illegible]

1 फिर उसने अपने चेलों से कहा,
"यह निश्चित है कि वे बातें जो पाप
का कारण है, आएँगे परन्तु हाय, उस
मनुष्य पर जिसके कारण वे आती है!
2 जो इन छोटों में से किसी एक
को ठोकर खिलाता है, उसके लिये
यह भला होता कि चक्की का पाट
उसके गले में लटकाया जाता, और
वह समुद्र में डाल दिया जाता।
3 सचेत रहो; यदि तेरा भाई
अपराध करे तो उसे डाँट, और यदि
पछताए तो उसे क्षमा कर।
4 यदि दिन भर में वह सात बार तेरा
अपराध करे और सातों बार तेरे पास
फिर आकर कहे, कि मैं पछताता हूँ,
तो उसे क्षमा कर।"

[illegible]

5 तब प्रेरितों ने प्रभु से कहा, "हमारा
विश्वास बढ़ा।"
6 प्रभु ने कहा, "यदि तुम को राई के
दाने के बराबर भी विश्वास होता, तो
तुम इस शहतूत के पेड़ से कहते कि
जड़ से उखड़कर समुद्र में लग जा, तो
वह तुम्हारी मान लेता।

[illegible]

7 "पर तुम में से ऐसा कौन है,
जिसका दास हल जोतता, या भेड़ें
चराता हो, और जब वह खेत से आए,
तो उससे कहे, 'तुरन्त आकर भोजन
करने बैठ'?
8 क्या वह उनसे न कहेगा, कि
मेरा खाना तैयार कर: और जब तक
मैं खाऊँ-पीऊँ तब तक कमर बाँधकर
मेरी सेवा कर; इसके बाद तू भी खा
पी लेना?
9 क्या वह उस दास का एहसान
मानेगा, कि उसने वे ही काम किए
जिसकी आज्ञा दी गई थी?
10 इसी रीति से तुम भी, जब उन
सब कामों को कर चुके हो जिसकी
आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, 'हम
निकम्मे दास हैं; कि जो हमें करना
चाहिए था वही किया है।' "

[illegible]

11 और ऐसा हुआ कि वह यरूशलेम
को जाते हुए सामरिया और गलील
प्रदेश की सीमा से होकर जा रहा था।
12 और किसी गाँव में प्रवेश करते
समय उसे दस कोढ़ी मिले। ***(⍰⍰⍰⍰⍰. 13:46)***
13 और उन्होंने दूर खड़े होकर, ऊँचे
शब्द से कहा, "हे यीशु, हे स्वामी, हम
पर दया कर!"
14 उसने उन्हें देखकर कहा, **"जाओ;
और अपने आपको याजकों को
दिखाओ।"** और जाते ही जाते वे शुद्ध
हो गए। ***(⍰⍰⍰⍰⍰. 14:2,3)***
15 तब उनमें से एक यह देखकर
कि मैं चंगा हो गया हूँ, ऊँचे शब्द से
परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ लौटा;
16 और यीशु के पाँवों पर मुँह के बल
गिरकर उसका धन्यवाद करने लगा;
और वह सामरी था।
17 इस पर यीशु ने कहा, **"क्या दसों
शुद्ध न हुए, तो फिर वे नौ कहाँ हैं?**
18 **क्या इस परदेशी को छोड़ कोई
और न निकला, जो परमेश्वर की
बड़ाई करता?"**
19 तब उसने उससे कहा, **"उठकर
चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा
किया है।"**

⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰

20 जब फरीसियों ने उससे पूछा, कि
परमेश्वर का राज्य कब आएगा? तो
उसने उनको उत्तर दिया, **"परमेश्वर
का राज्य प्रगट रूप में नहीं आता।**
21 **और लोग यह न कहेंगे, कि
देखो, यहाँ है, या वहाँ है। क्योंकि,
परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में
है।"**
22 और उसने चेलों से कहा, **"वे
दिन आएँगे, जिनमें तुम मनुष्य के पुत्र
के दिनों में से एक दिन को देखना
चाहोगे, और नहीं देखने पाओगे।**
23 **लोग तुम से कहेंगे, 'देखो, वहाँ
है!' या 'देखो यहाँ है!' परन्तु तुम चले
न जाना और न उनके पीछे हो लेना।**
24 **क्योंकि जैसे बिजली आकाश
की एक छोर से कौंधकर आकाश की
दूसरी छोर तक चमकती है, वैसे ही
मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में प्रगट
होगा।**
25 **परन्तु पहले अवश्य है, कि वह
बहुत दुःख उठाए, और इस युग के
लोग उसे तुच्छ ठहराएँ।**
26 **जैसा नूह के दिनों में हुआ था,
वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में
भी होगा।*(⍰⍰⍰⍰⍰. 4:7, ⍰⍰⍰⍰⍰ 24:37-39, ⍰⍰⍰⍰. 6:5-12)***
27 **जिस दिन तक नूह जहाज पर न
चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते
थे, और उनमें विवाह-शादी होती थी;
तब जल-प्रलय ने आकर उन सब को
नाश किया।**
28 **और जैसा लूत के दिनों में
हुआ था, कि लोग खाते-पीते लेन-देन
करते, पेड़ लगाते और घर बनाते थे;**
29 **परन्तु जिस दिन लूत सदोम से
निकला, उस दिन आग और गन्धक
आकाश से बरसी और सब को नाश
कर दिया।*(2 ⍰⍰. 2:6, ⍰⍰⍰. 1:7, ⍰⍰⍰⍰. 19:24)***
30 **मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के
दिन भी ऐसा ही होगा।**
31 **"उस दिन जो छत पर हो; और
उसका सामान घर में हो, वह उसे लेने
को न उतरे, और वैसे ही जो खेत में हो
वह पीछे न लौटे।**
32 **लूत की पत्नी को स्मरण
रखो!*(⍰⍰⍰⍰. 19:26, ⍰⍰⍰⍰. 19:17)***
33 **जो कोई अपना प्राण बचाना
चाहे वह उसे खोएगा, और जो कोई
उसे खोए वह उसे बचाएगा।**
34 **मैं तुम से कहता हूँ, उस रात**

दो मनुष्य एक खाट पर होंगे, एक ले
लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया
जाएगा।
35 दो स्त्रियाँ एक साथ चक्की
पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी,
और दूसरी छोड़ दी जाएगी।
36 [दो जन खेत में होंगे एक
ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ा
जाएगा।]”
37 यह सुन उन्होंने उससे पूछा, “हे
प्रभु यह कहाँ होगा?” उसने उनसे
कहा, “जहाँ लाश हैं, वहाँ गिद्ध इकट्ठे
होंगे।”*([illegible]. 39:30)*

18

[illegible]

1 फिर उसने इसके विषय में कि
नित्य प्रार्थना करना और साहस नहीं
छोड़ना चाहिए उनसे यह दृष्टान्त
कहा:
2 “किसी नगर में एक न्यायी रहता
था; जो न परमेश्वर से डरता था और
न किसी मनुष्य की परवाह करता था।
3 और उसी नगर में एक विधवा भी
रहती थी: जो उसके पास आ आकर
कहा करती थी, ‘मेरा न्याय चुकाकर
मुझे मुद्दई से बचा।’
4 उसने कितने समय तक तो न
माना परन्तु अन्त में मन में विचार कर
कहा, ‘यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता,
और न मनुष्यों की कुछ परवाह करता
हूँ;
5 फिर भी यह विधवा मुझे सताती
रहती है, इसलिए मैं उसका न्याय
चुकाऊँगा, कहीं ऐसा न हो कि घड़ी-
घड़ी आकर अन्त को मेरी नाक में दम
करे।’ ”
6 प्रभु ने कहा, “सुनो, कि यह
अधर्मी न्यायी क्या कहता है?
7 अतः क्या परमेश्वर अपने चुने
हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात-
दिन उसकी दुहाई देते रहते; और क्या
वह उनके विषय में देर करेगा?
8 मैं तुम से कहता हूँ; वह तुरन्त
उनका न्याय चुकाएगा; पर मनुष्य का
पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी
पर विश्वास पाएगा?”

[illegible]?

9 और उसने उनसे जो अपने ऊपर
भरोसा रखते थे, कि हम धर्मी हैं, और
दूसरों को तुच्छ जानते थे, यह दृष्टान्त
कहा:
10 “दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना
करने के लिये गए; एक फरीसी था और
दूसरा चुंगी लेनेवाला।
11 फरीसी खड़ा होकर अपने मन में
यह प्रार्थना करने लगा, ‘हे परमेश्वर,
मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि मैं और
मनुष्यों के समान दुष्टता करनेवाला,
अन्यायी और व्यभिचारी नहीं, और न
इस चुंगी लेनेवाले के समान हूँ।
12 मैं सप्ताह में दो बार उपवास
करता हूँ; मैं अपनी सब कमाई का
दसवाँ अंश भी देता हूँ।’
13 “परन्तु चुंगी लेनेवाले ने दूर खड़े
होकर, स्वर्ग की ओर आँख उठाना
भी न चाहा, वरन् अपनी *[illegible]*-
[illegible][*] कहा, ‘हे परमेश्वर मुझ
पापी पर दया कर!’*([illegible]. 51:1)*
14 मैं तुम से कहता हूँ, कि वह दूसरा
नहीं; परन्तु यही मनुष्य *[illegible]*
[illegible][†] और अपने घर गया; क्योंकि
जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा,

---

[*] **18:13** *[illegible]-[illegible]:* अपने पापों को ध्यान में रखते हुए दुःख और पीड़ा की अभिव्यक्ति।
[†] **18:14** *[illegible]:* परमेश्वर द्वारा स्वीकृत या अनुमोदित। “धर्मी ठहराया जाना” शब्द का अर्थ है धर्मी के रूप में माना जाना या धर्मी घोषित करना।

वह छोटा किया जाएगा; और जो अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।"

[illegible]

15 फिर लोग अपने बच्चों को भी उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे; और चेलों ने देखकर उन्हें डाँटा।
16 यीशु ने बच्चों को पास बुलाकर कहा, **"बालकों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मना न करो: क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।**
17 **मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करेगा वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।"**

[illegible]

18 किसी सरदार ने उससे पूछा, "हे उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?"
19 यीशु ने उससे कहा, **"तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक, अर्थात् परमेश्वर।**
20 **तू आज्ञाओं को तो जानता है: 'व्यभिचार न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।' "**
21 उसने कहा, "मैं तो इन सब को लड़कपन ही से मानता आया हूँ।"
22 यह सुन, "यीशु ने उससे कहा, **तुझ में अब भी एक बात की घटी है, अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को बाँट दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।"**
23 वह यह सुनकर बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनी था।
24 यीशु ने उसे देखकर कहा, **"धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!**
25 **परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।"**
26 और सुननेवालों ने कहा, "तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?"
27 उसने कहा, **"जो मनुष्य से नहीं हो सकता, वह परमेश्वर से हो सकता है।"**
28 पतरस ने कहा, "देख, हम तो घर-बार छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं।"
29 उसने उनसे कहा, **"मैं तुम से सच कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं जिसने परमेश्वर के राज्य के लिये घर, या पत्नी, या भाइयों, या माता-पिता, या बाल-बच्चों को छोड़ दिया हो।**
30 **और इस समय कई गुणा अधिक न पाए; और परलोक में अनन्त जीवन।"**

[illegible]

31 फिर उसने बारहों को साथ लेकर उनसे कहा, **"हम यरूशलेम को जाते हैं, और** [illegible]‡ **वे सब पूरी होंगी।**
32 **क्योंकि वह अन्यजातियों के हाथ में सौंपा जाएगा, और वे उसका उपहास करेंगे; और उसका अपमान करेंगे, और उस पर थूकेंगे।**
33 **और उसे कोड़े मारेंगे, और मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा।"**

‡ **18:31** [illegible] .... [illegible]: वह लोग जिन्होंने मसीह के आने के विषय पहले से कहा, और जिसकी भविष्यद्वाणी पुराने नियम में दर्ज की गई हैं।

34 और उन्होंने इन बातों में से कोई
बात न समझी और यह बात उनसे
छिपी रही, और जो कहा गया था वह
उनकी समझ में न आया।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

35 जब वह यरीहो के निकट पहुँचा,
तो एक अंधा सड़क के किनारे बैठा
हुआ भीख माँग रहा था।
36 और वह भीड़ के चलने की आहट
सुनकर पूछने लगा, "यह क्या हो रहा
है?"
37 उन्होंने उसको बताया, "यीशु
नासरी जा रहा है।"
38 तब उसने पुकारके कहा, "हे
यीशु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया
कर!"
39 जो आगे-आगे जा रहे थे, वे
उसे डाँटने लगे कि चुप रहे परन्तु वह
और भी चिल्लाने लगा, "हे दाऊद की
सन्तान, मुझ पर दया कर!"
40 तब यीशु ने खड़े होकर आज्ञा
दी कि उसे मेरे पास लाओ, और जब
वह निकट आया, तो उसने उससे यह
पूछा,
41 तू क्या चाहता है, **"मैं तेरे लिये
करूँ?"** उसने कहा, "हे प्रभु, यह कि मैं
देखने लगूँ।"
42 यीशु ने उससे कहा, **"देखने लग,
तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया
है।"**
43 और वह तुरन्त देखने लगा; और
परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ, उसके
पीछे हो लिया, और सब लोगों ने
देखकर परमेश्वर की स्तुति की।

19

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा
था।
2 वहाँ *[illegible]*[*] नामक एक मनुष्य
था, जो चुंगी लेनेवालों का सरदार और
धनी था।
3 वह यीशु को देखना चाहता था कि
वह कौन सा है? परन्तु भीड़ के कारण
देख न सकता था। क्योंकि वह नाटा
था।
4 तब उसको देखने के लिये वह आगे
दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया,
क्योंकि यीशु उसी मार्ग से जानेवाला
था।
5 जब यीशु उस जगह पहुँचा, तो
ऊपर दृष्टि करके उससे कहा, **"हे
जक्कई, झट उतर आ; क्योंकि आज
मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।"**
6 वह तुरन्त उतरकर आनन्द से उसे
अपने घर को ले गया।
7 यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाकर
कहने लगे, "वह तो एक पापी मनुष्य
के यहाँ गया है।"
8 जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा,
"हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति
कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का
कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो
उसे चौगुना फेर देता हूँ।" ***([illegible]. 22:1)***
9 तब यीशु ने उससे कहा, **"आज
इस घर में उद्धार आया है, इसलिए
कि यह भी *[illegible] [illegible] [illegible]*[†] है।**
10 **क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए
हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने
आया है।"** ***([illegible] 15:24, [illegible]. 34:16)***

[illegible] [illegible]

11 जब वे ये बातें सुन रहे थे, तो
उसने एक दृष्टान्त कहा, इसलिए कि
वह यरूशलेम के निकट था, और वे

---

[*] **19:2** *[illegible]:* यह इब्रानी नाम है और इसका अर्थ "शुद्ध" है। [†] **19:9** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* यद्यपि एक यहूदी, अभी तक वह एक पापी है वह अब्राहम का पुत्र कहलाने के योग्य नहीं था

समझते थे, कि परमेश्वर का राज्य
अभी प्रगट होनेवाला है।
12 अतः उसने कहा, "एक धनी
मनुष्य दूर देश को चला ताकि राजपद
पाकर लौट आए।
13 और उसने अपने दासों में से दस
को बुलाकर उन्हें दस मुहरें दीं, और
उनसे कहा, 'मेरे लौट आने तक लेन-
देन करना।'
14 परन्तु उसके नगर के रहनेवाले
उससे बैर रखते थे, और उसके पीछे
दूतों के द्वारा कहला भेजा, कि हम
नहीं चाहते, कि यह हम पर राज्य
करे।
15 "जब वह राजपद पाकर लौट
आया, तो ऐसा हुआ कि उसने अपने
दासों को जिन्हें रोकड़ दी थी, अपने
पास बुलवाया ताकि मालूम करे
कि उन्होंने लेन-देन से क्या-क्या
कमाया।
16 तब पहले ने आकर कहा, 'हे
स्वामी, तेरे मुहर से दस और मुहरें
कमाई हैं।'
17 उसने उससे कहा, 'हे उत्तम
दास, तू धन्य है, तू बहुत ही थोड़े में
विश्वासयोग्य निकला अब दस नगरों
का अधिकार रख।'
18 दूसरे ने आकर कहा, 'हे स्वामी,
तेरी मुहर से पाँच और मुहरें कमाई हैं।'
19 उसने उससे कहा, 'तू भी पाँच
नगरों पर अधिकार रख।'
20 तीसरे ने आकर कहा, 'हे स्वामी,
देख, तेरी मुहर यह है, जिसे मैंने
अँगोछे में बाँध रखा था।
21 क्योंकि मैं तुझ से डरता था,
इसलिए कि तू कठोर मनुष्य है: जो
तूने नहीं रखा उसे उठा लेता है, और
जो तूने नहीं बोया, उसे काटता है।'
22 उसने उससे कहा, 'हे दुष्ट दास,
मैं [illegible]‡ तुझे दोषी
ठहराता हूँ। तू मुझे जानता था कि
कठोर मनुष्य हूँ, जो मैंने नहीं रखा उसे
उठा लेता, और जो मैंने नहीं बोया,
उसे काटता हूँ;
23 तो तूने मेरे रुपये सर्राफों को क्यों
नहीं रख दिए, कि मैं आकर ब्याज
समेत ले लेता?'
24 और जो लोग निकट खड़े थे,
उसने उनसे कहा, 'वह मुहर उससे ले
लो, और जिसके पास दस मुहरें हैं उसे
दे दो।'
25 उन्होंने उससे कहा, 'हे स्वामी,
उसके पास दस मुहरें तो हैं।'
26 'मैं तुम से कहता हूँ, कि जिसके
पास है, उसे और दिया जाएगा; और
जिसके पास नहीं, उससे वह भी जो
उसके पास है ले लिया जाएगा।
27 परन्तु मेरे उन बैरियों को जो
नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य
करूँ, उनको यहाँ लाकर मेरे सामने
मार डालो।'"

[illegible]

28 ये बातें कहकर वह यरूशलेम की
ओर उनके आगे-आगे चला।
29 और जब वह जैतून नाम पहाड़
पर बैतफगे और बैतनिय्याह के पास
पहुँचा, तो उसने अपने चेलों में से दो
को यह कहकर भेजा,
30 "सामने के गाँव में जाओ,
और उसमें पहुँचते ही एक गदही का
बच्चा जिस पर कभी कोई सवार नहीं
हुआ, बन्धा हुआ तुम्हें मिलेगा, उसे
खोलकर लाओ।
31 और यदि कोई तुम से पूछे, कि
क्यों खोलते हो, तो यह कह देना, कि
प्रभु को इसकी जरूरत है।"

‡ **19:22** [illegible]: तेरे स्वयं के शब्दों से, या मेरे चरित्र के विषय तेरे स्वयं के विचार से।

32 जो भेजे गए थे, उन्होंने जाकर जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही पाया।

33 जब वे गदहे के बच्चे को खोल रहे थे, तो उसके मालिकों ने उनसे पूछा, “इस बच्चे को क्यों खोलते हो?”

34 उन्होंने कहा, “प्रभु को इसकी जरूरत है।”

35 वे उसको यीशु के पास ले आए और अपने कपड़े उस बच्चे पर डालकर यीशु को उस पर बैठा दिया।

36 जब वह जा रहा था, तो वे अपने कपड़े मार्ग में बिछाते जाते थे। *(2 [illegible]. 9:13)*

37 और निकट आते हुए जब वह जैतून पहाड़ की ढलान पर पहुँचा, तो चेलों की सारी मण्डली उन सब सामर्थ्य के कामों के कारण जो उन्होंने देखे थे, आनन्दित होकर बड़े शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगी: *([illegible]. 9:9)*

38 “धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम
से आता है!
स्वर्ग में शान्ति और आकाश में महिमा
हो!” *([illegible]. 72:18-19, [illegible]. 118:26)*

39 तब भीड़ में से कितने फरीसी उससे कहने लगे, “हे गुरु, अपने चेलों को डाँट।”

40 उसने उत्तर दिया, **“मैं तुम में से कहता हूँ, यदि ये चुप रहें, तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।”**

[illegible]

41 जब *[illegible]*§।

42 **और कहा, “क्या ही भला होता, कि तू; हाँ, तू ही, इसी दिन में कुशल की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी आँखों से छिप गई हैं।***([illegible]. 32:29, [illegible]. 6:9,10)*

43 **क्योंकि वे दिन तुझ पर आएँगे कि तेरे बैरी मोर्चा बाँधकर तुझे घेर लेंगे, और चारों ओर से तुझे दबाएँगे।**

44 **और तुझे और तेरे साथ तेरे बालकों को, मिट्टी में मिलाएँगे, और तुझ में पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ेंगे; क्योंकि तूने वह अवसर जब तुझ पर कृपादृष्टि की गई न पहचाना।”**

[illegible]

45 तब वह मन्दिर में जाकर बेचनेवालों को बाहर निकालने लगा।

46 और उनसे कहा, **“लिखा है; ‘मेरा घर प्रार्थना का घर होगा,’ परन्तु तुम ने उसे डाकुओं की खोह बना दिया है।”***([illegible]. 56:7, [illegible]. 7:11)*

47 और वह प्रतिदिन मन्दिर में उपदेश देता था: और प्रधान याजक और शास्त्री और लोगों के प्रमुख उसे मार डालने का अवसर ढूँढ़ते थे।

48 परन्तु कोई उपाय न निकाल सके; कि यह किस प्रकार करें, क्योंकि सब लोग बड़ी चाह से उसकी सुनते थे।

20

[illegible]

1 एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह मन्दिर में लोगों को उपदेश देता और सुसमाचार सुना रहा था, तो प्रधान याजक और शास्त्री, प्राचीनों के साथ पास आकर खड़े हुए।

2 और कहने लगे, “हमें बता, तू इन कामों को किस अधिकार से करता है, और वह कौन है, जिसने तुझे यह अधिकार दिया है?”

3 उसने उनको उत्तर दिया, **“मैं भी तुम से एक बात पूछता हूँ; मुझे बताओ**

§ **19:41** *[illegible]:* दोषी नगर के लिए उसकी सहानुभूति, और इस पर आनेवाली विपत्ति के बारे में उसकी मजबूत भावना को दिखाता हैं।

4 **यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग की ओर से था या मनुष्यों की ओर से था?"**

5 तब वे आपस में कहने लगे, "यदि हम कहें, 'स्वर्ग की ओर से,' तो वह कहेगा; 'फिर तुम ने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया?'

6 और यदि हम कहें, 'मनुष्यों की ओर से,' तो सब लोग हमें पथराव करेंगे, क्योंकि वे सचमुच जानते हैं, कि यूहन्ना भविष्यद्वक्ता था।"

7 अतः उन्होंने उत्तर दिया, "हम नहीं जानते, कि वह किसकी ओर से था।"

8 यीशु ने उनसे कहा, **"तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ।"**

[illegible]

9 तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा, **"किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई, और किसानों को उसका ठेका दे दिया और बहुत दिनों के लिये परदेश चला गया।*([illegible]. 12:1-12, [illegible] 21:33-46)***

10 **नियुक्त समय पर उसने किसानों के पास एक दास को भेजा, कि वे दाख की बारी के कुछ फलों का भाग उसे दें, पर किसानों ने उसे पीटकर खाली हाथ लौटा दिया।**

11 **फिर उसने एक और दास को भेजा, ओर उन्होंने उसे भी पीटकर और उसका अपमान करके खाली हाथ लौटा दिया।**

12 **फिर उसने तीसरा भेजा, और उन्होंने उसे भी घायल करके निकाल दिया।**

13 **तब दाख की बारी के स्वामी ने कहा, 'मैं क्या करूँ? मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजूँगा, क्या जाने वे उसका आदर करें।'**

14 **जब किसानों ने उसे देखा तो आपस में विचार करने लगे, 'यह तो वारिस है; आओ, हम उसे मार डालें, कि विरासत हमारी हो जाए।'**

15 **और उन्होंने उसे दाख की बारी से बाहर निकालकर मार डाला: इसलिए दाख की बारी का स्वामी उनके साथ क्या करेगा?**

16 **"वह आकर उन किसानों को नाश करेगा, और दाख की बारी दूसरों को सौंपेगा।"** यह सुनकर उन्होंने कहा, "परमेश्वर ऐसा न करे।"

17 उसने उनकी ओर देखकर कहा, **"फिर यह क्या लिखा है:**

'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था,
वही कोने का सिरा हो गया।'*([illegible]. 118:22,23)*

18 **"जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा वह*[illegible]**, और जिस पर वह गिरेगा, उसको पीस डालेगा।"*([illegible]. 2:34,35)***

[illegible]

19 उसी घड़ी शास्त्रियों और प्रधान याजकों ने उसे पकड़ना चाहा, क्योंकि समझ गए थे, कि उसने उनके विरुद्ध दृष्टान्त कहा, परन्तु वे लोगों से डरे।

20 और वे उसकी ताक में लगे और भेदिए भेजे, कि धर्मी का भेष धरकर उसकी कोई न कोई बात पकड़ें, कि उसे राज्यपाल के हाथ और अधिकार में सौंप दें।

21 उन्होंने उससे यह पूछा, "हे गुरु, हम जानते हैं कि तू ठीक कहता, और सिखाता भी है, और किसी का पक्षपात नहीं करता; वरन् परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से बताता है।

* **20:18** *[illegible]:* वे सभी जो ठोकर और अविश्वास और मन की कठोरता द्वारा गिर जाते है और उसे अपमानित करते हैं।

22 क्या हमें कैसर को कर देना
उचित है, कि नहीं?”
23 उसने उनकी चतुराई को ताड़कर
उनसे कहा,
24 **“एक दीनार मुझे दिखाओ। इस
पर किसकी छाप और नाम है?”**
उन्होंने कहा, “कैसर का।”
25 उसने उनसे कहा, **“तो जो कैसर
का है, वह कैसर को दो और जो
परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को
दो।”**
26 वे लोगों के सामने उस बात को
पकड़ न सके, वरन् उसके उत्तर से
अचम्भित होकर चुप रह गए।

[illegible]

27 फिर सदूकी जो कहते हैं, कि मरे
हुओं का जी उठना है ही नहीं, उनमें से
कुछ ने उसके पास आकर पूछा।
28 “हे गुरु, मूसा ने हमारे लिये यह
लिखा है, ‘यदि किसी का भाई अपनी
पत्नी के रहते हुए बिना सन्तान मर
जाए, तो उसका भाई उसकी पत्नी से
विवाह कर ले, और अपने भाई के लिये
वंश उत्पन्न करे।’ ***([illegible]. 38:8,
[illegible]. 25:5)***
29 अतः सात भाई थे, पहला भाई
विवाह करके बिना सन्तान मर गया।
30 फिर दूसरे,
31 और तीसरे ने भी उस स्त्री से
विवाह कर लिया। इसी रीति से सातों
बिना सन्तान मर गए।
32 सब के पीछे वह स्त्री भी मर गई।
33 अतः जी उठने पर वह उनमें से
किसकी पत्नी होगी, क्योंकि वह सातों
की पत्नी रह चुकी थी।”
34 यीशु ने उनसे कहा, **“इस युग के
सन्तानों में तो विवाह-शादी होती है,**
35 **पर जो लोग इस योग्य ठहरेंगे,
की उस युग को और मरे हुओं में से जी
उठना प्राप्त करें, उनमें विवाह-शादी
न होगी।**
36 **वे फिर मरने के भी नहीं;
क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान होंगे,
और पुनरुत्थान की सन्तान होने से
परमेश्वर के भी सन्तान होंगे।**
37 **परन्तु इस बात को कि मरे
हुए जी उठते हैं, मूसा ने भी झाड़ी
की कथा में प्रगट की है, वह प्रभु
को ‘अब्राहम का परमेश्वर, और
इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का
परमेश्वर’ कहता है।*([illegible]. 3:2,
[illegible]. 3:6)***
38 **परमेश्वर तो मुर्दों का नहीं परन्तु
जीवितों का परमेश्वर है: क्योंकि
उसके निकट सब जीवित हैं।”**
39 तब यह सुनकर शास्त्रियों में से
कितनों ने कहा, “हे गुरु, तूने अच्छा
कहा।”
40 और उन्हें फिर उससे कुछ और
[illegible][†]।

[illegible]?

41 फिर उसने उनसे पूछा, **“मसीह
को दाऊद की सन्तान कैसे कहते हैं?**
42 **दाऊद आप भजन संहिता की
पुस्तक में कहता है:**
‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा,
मेरे दाहिने बैठ,
43 **जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे
पाँवों तले की चौकी न कर दूँ।’**
44 **दाऊद तो उसे प्रभु कहता है; तो
फिर वह उसकी सन्तान कैसे ठहरा?”**

[illegible]

45 जब सब लोग सुन रहे थे, तो
उसने अपने चेलों से कहा।

† **20:40** *[illegible]*: या, कोई भी अन्य प्रश्न पूछने के लिए उद्यम नहीं किया, फिर से चकित न होने के डर से, जैसा कि वे पहले से ही किया गया था।

46 **“[illegible] [illegible]‡, जिनको लम्बे-लम्बे वस्त्र पहने हुए फिरना अच्छा लगता है, और जिन्हें बाजारों में नमस्कार, और आराधनालयों में मुख्य आसन और भोज में मुख्य स्थान प्रिय लगते हैं।**

47 **वे विधवाओं के घर खा जाते हैं, और दिखाने के लिये बड़ी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं, ये बहुत ही दण्ड पाएँगे।”**

21

[illegible]

1 फिर उसने आँख उठाकर धनवानों को अपना-अपना दान भण्डार में डालते हुए देखा।

2 और उसने एक कंगाल विधवा को भी उसमें दो दमड़ियाँ डालते हुए देखा।

3 तब उसने कहा, **“मैं तुम से सच कहता हूँ कि इस कंगाल विधवा ने सबसे बढ़कर डाला है।**

4 **क्योंकि उन सब ने अपनी-अपनी बढ़ती में से दान में कुछ डाला है, परन्तु इसने अपनी घटी में से अपनी सारी जीविका डाल दी है।”**

[illegible]

5 जब कितने लोग मन्दिर के विषय में कह रहे थे, कि वह कैसे सुन्दर पत्थरों और *[illegible]** की वस्तुओं से संवारा गया है, तो उसने कहा,

6 **“वे दिन आएँगे, जिनमें यह सब जो तुम देखते हो, उनमें से यहाँ किसी पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा।”**

7 उन्होंने उससे पूछा, “हे गुरु, यह सब कब होगा? और ये बातें जब पूरी होने पर होंगी, तो उस समय का क्या चिन्ह होगा?”

8 उसने कहा, **“सावधान रहो, कि भरमाए न जाओ, क्योंकि बहुत से मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं वही हूँ; और यह भी कि समय निकट आ पहुँचा है: तुम उनके पीछे न चले जाना।** ***(1 [illegible]. 4:1, [illegible]. 13:21,23)***

9 **और जब तुम लड़ाइयों और बलवों की चर्चा सुनो, तो घबरा न जाना; क्योंकि इनका पहले होना अवश्य है; परन्तु उस समय तुरन्त अन्त न होगा।”**

10 तब उसने उनसे कहा, **“जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा।** ***(2 [illegible]. 15:5,6, [illegible]. 19:2)***

11 **और बड़े-बड़े भूकम्प होंगे, और जगह-जगह अकाल और महामारियाँ पड़ेंगी, और आकाश में भयंकर बातें और बड़े-बड़े चिन्ह प्रगट होंगे।**

12 **परन्तु इन सब बातों से पहले वे मेरे नाम के कारण तुम्हें पकड़ेंगे, और सताएँगे, और आराधनालयों में सौंपेंगे, और बन्दीगृह में डलवाएँगे, और राजाओं और राज्यपालों के सामने ले जाएँगे।**

13 **पर यह तुम्हारे लिये गवाही देने का अवसर हो जाएगा।**

14 **इसलिए अपने-अपने मन में ठान रखो कि हम पहले से उत्तर देने की चिन्ता न करेंगे।**

15 **क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बोल और बुद्धि दूँगा, कि तुम्हारे सब विरोधी सामना या खण्डन न कर सकेंगे।**

‡ **20:46** *[illegible]:* जो उद्धार के मार्ग को दिखाना चाहता हैं उनके द्वारा लोगों को आकर्षित नहीं होने के लिए चेतावनी दी गई हैं। * **21:5** *[illegible]:* इस शब्द का ठीक अर्थ परमेश्वर के लिए कुछ भी समर्पित या अर्पित

16 और तुम्हारे माता-पिता और भाई और कुटुम्ब, और मित्र भी तुम्हें पकड़वाएँगे; यहाँ तक कि तुम में से कितनों को मरवा डालेंगे।
17 और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे।
18 परन्तु *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*[†]। *([illegible] 10:30, [illegible] 12:7)*
19 अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे।

[illegible] [illegible] [illegible]

20 "जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है।
21 तब जो यहूदिया में हों वह पहाड़ों पर भाग जाएँ, और जो यरूशलेम के भीतर हों वे बाहर निकल जाएँ; और जो गाँवों में हो वे उसमें न जाएँ।
22 क्योंकि यह पलटा लेने के ऐसे दिन होंगे, जिनमें लिखी हुई सब बातें पूरी हो जाएँगी। *([illegible]. 32:35, [illegible]. 46:10)*
23 उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय, हाय! क्योंकि देश में बड़ा क्लेश और इन लोगों पर बड़ी आपत्ति होगी।
24 वे तलवार के कौर हो जाएँगे, और सब देशों के लोगों में बन्धुए होकर पहुँचाए जाएँगे, और जब तक अन्यजातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्यजातियों से रौंदा जाएगा। *([illegible] 9:7, [illegible]. 79:1, [illegible]. 63:18, [illegible]. 21:7, [illegible]. 9:26)*

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

25 "और सूरज और चाँद और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे, और पृथ्वी पर, देश-देश के लोगों को संकट होगा; क्योंकि वे समुद्र के गरजने और लहरों के कोलाहल से घबरा जाएँगे। *([illegible]. 46:2,3, [illegible]. 65:7, [illegible]. 13:10, [illegible]. 24:19, [illegible]. 32:7, [illegible]. 2:30)*
26 और भय के कारण और संसार पर आनेवाली घटनाओं की बाट देखते-देखते *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*[‡] क्योंकि आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी। *([illegible]. 26:36, [illegible] 2:6, [illegible] 2:21)*
27 तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगे। *([illegible]. 1:7, [illegible]. 7:13)*
28 जब ये बातें होने लगें, तो सीधे होकर अपने सिर ऊपर उठाना; क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा।"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

29 उसने उनसे एक दृष्टान्त भी कहा, "अंजीर के पेड़ और सब पेड़ों को देखो।
30 ज्यों ही उनकी कोंपलें निकलती हैं, तो तुम देखकर आप ही जान लेते हो, कि ग्रीष्मकाल निकट है।
31 इसी रीति से जब तुम ये बातें होते देखो, तब जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट है।
32 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक ये सब बातें न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का कदापि अन्त न होगा।
33 आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।

[†] **21:18** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* मतलब यह है कि वे किसी भी चोट से ग्रस्त नहीं होंगे, परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा करेगा। [‡] **21:26** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* यह भयंकर दहशत को दर्शाती एक अभिव्यक्ति है।

[illegible]

34 **“इसलिए सावधान रहो, ऐसा
न हो कि तुम्हारे मन खुमार और
मतवालेपन, और इस जीवन की
चिन्ताओं से सुस्त हो जाएँ, और वह
दिन तुम पर फंदे के समान अचानक
आ पड़े।**

35 **क्योंकि वह सारी पृथ्वी के
सब रहनेवालों पर इसी प्रकार आ
पड़ेगा।*(*[illegible]*. 3:3, *[illegible]*
12:40)***

36 **इसलिए जागते रहो और हर
समय प्रार्थना करते रहो कि तुम
इन सब आनेवाली घटनाओं से
बचने, और *[illegible]*§ होने के योग्य बनो।”**

37 और वह दिन को मन्दिर में
उपदेश करता था; और रात को बाहर
जाकर जैतून नाम पहाड़ पर रहा
करता था।

38 और भोर को तड़के सब लोग
उसकी सुनने के लिये मन्दिर में उसके
पास आया करते थे।

22

[illegible]

1 अख़मीरी रोटी का पर्व जो फसह
कहलाता है, निकट था।

2 और प्रधान याजक और शास्त्री
इस बात की खोज में थे कि उसको कैसे
मार डालें, पर वे लोगों से डरते थे।

[illegible]

3 और *[illegible]**, जो इस्करियोती कहलाता
और बारह चेलों में गिना जाता था।

4 उसने जाकर प्रधान याजकों और
पहरुओं के सरदारों के साथ बातचीत
की, कि उसको किस प्रकार उनके हाथ
पकड़वाए।

5 वे आनन्दित हुए, और उसे रुपये
देने का वचन दिया।

6 उसने मान लिया, और अवसर
ढूँढ़ने लगा, कि बिना उपद्रव के उसे
उनके हाथ पकड़वा दे।

[illegible]

7 तब अख़मीरी रोटी के पर्व का
दिन आया, जिसमें फसह का मेम्ना
बलि करना अवश्य था। ***(*[illegible]*.
12:3,6,8,14)***

8 और यीशु ने पतरस और यूहन्ना
को यह कहकर भेजा, **“जाकर हमारे
खाने के लिये फसह तैयार करो।”**

9 उन्होंने उससे पूछा, “तू कहाँ
चाहता है, कि हम तैयार करें?”

10 उसने उनसे कहा, **“देखो, नगर
में प्रवेश करते ही एक मनुष्य जल का
घड़ा उठाए हुए तुम्हें मिलेगा, जिस
घर में वह जाए; तुम उसके पीछे चले
जाना,**

11 **और उस घर के स्वामी से
कहो, ‘गुरु तुझ से कहता है; कि वह
पाहुनशाला कहाँ है जिसमें मैं अपने
चेलों के साथ फसह खाऊँ?’**

12 **वह तुम्हें एक सजी-सजाई बड़ी
अटारी दिखा देगा; वहाँ तैयारी
करना।”**

13 उन्होंने जाकर, जैसा उसने उनसे
कहा था, वैसा ही पाया, और फसह
तैयार किया।

[illegible]

14 जब घड़ी पहुँची, तो वह प्रेरितों
के साथ भोजन करने बैठा।

15 और उसने उनसे कहा, **“मुझे बड़ी
लालसा थी, कि दुःख भोगने से पहले
यह फसह तुम्हारे साथ खाऊँ।**

---

§ **21:36** *[illegible]*: नजदीक आती विपत्ति न्याय करने के लिए “मनुष्य का पुत्र आ रहा हैं” को दर्शाता हैं। * **22:3** *[illegible]*: यह आवश्यक नहीं है कि शैतान व्यक्तिगत रूप से यहूदा के शरीर में प्रवेश किया, परन्तु केवल यह कि वह अपने प्रभाव में ले आया

16 **क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊँगा।”**
17 तब उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया और कहा, **“इसको लो और आपस में बाँट लो।**
18 **क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाखरस अब से कभी न पीऊँगा।”**
19 फिर उसने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उनको यह कहते हुए दी, **“यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी जाती है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।”**
20 इसी रीति से उसने भोजन के बाद कटोरा भी यह कहते हुए दिया, **“यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है।*([illegible]. 24:8, 1 [illegible]. 11:25, [illegible] 26:28, [illegible]. 9:11)***
21 **पर देखो, मेरे पकड़वानेवाले का हाथ मेरे साथ मेज पर है।*([illegible]. 41:9)***
22 **क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके लिये ठहराया गया, जाता ही है, पर हाय उस मनुष्य पर, जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाता है!”**
23 तब वे आपस में पूछताछ करने लगे, “हम में से कौन है, जो यह काम करेगा?”

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?

24 उनमें यह वाद-विवाद भी हुआ; कि हम में से कौन बड़ा समझा जाता है?
25 उसने उनसे कहा, **“अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे [illegible]† कहलाते हैं।**
26 **परन्तु तुम ऐसे न होना; वरन् जो तुम में बड़ा है, वह छोटे के समान और जो प्रधान है, वह सेवक के समान बने।**
27 **क्योंकि बड़ा कौन है; वह जो भोजन पर बैठा है, या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? पर मैं तुम्हारे बीच में सेवक के समान हूँ।**
28 **“परन्तु तुम वह हो, जो मेरी परीक्षाओं में लगातार मेरे साथ रहे;**
29 **और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये एक राज्य ठहराया है, वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिये ठहराता हूँ।**
30 **ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पीओ; वरन् सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करो।**

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

31 **“शमौन, हे शमौन, शैतान ने तुम लोगों को माँग लिया है कि [illegible]‡।**
32 **परन्तु मैंने तेरे लिये विनती की, कि तेरा विश्वास जाता न रहे और जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना।”**
33 उसने उससे कहा, “हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह जाने, वरन् मरने को भी तैयार हूँ।”
34 उसने कहा, **“हे पतरस मैं तुझ से कहता हूँ, कि आज मुर्गा बाँग देगा जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा कि मैं उसे नहीं जानता।”**

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

35 और उसने उनसे कहा, **“जब मैंने तुम्हें बटुए, और झोली, और जूते**

† **22:25** *[illegible]:* यह शब्द वह जो दूसरों को “उपकार” प्रदान करता है को संबोधित करता है।
‡ **22:31** *[illegible]:* अनाज हवा में हिलाया या छलनी में फटका जाता था।

बिना भेजा था, तो क्या तुम को किसी
वस्तु की घटी हुई थी?” उन्होंने कहा,
“किसी वस्तु की नहीं।”
36 उसने उनसे कहा, **“परन्तु अब**
जिसके पास बटुआ हो वह उसे ले,
और वैसे ही झोली भी, और जिसके
पास तलवार न हो वह अपने कपड़े
बेचकर एक मोल ले।
37 **क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि**
यह जो लिखा है, ‘वह अपराधी के
साथ गिना गया,’ उसका मुझ में पूरा
होना अवश्य है; क्योंकि मेरे विषय की
बातें पूरी होने पर हैं।” ***([illegible]. 3:13,***
2 [illegible]. 5:21, [illegible]. 53:12)
38 उन्होंने कहा, “हे प्रभु, देख, यहाँ
दो तलवारें हैं।” उसने उनसे कहा,
“बहुत हैं।”

[illegible]

39 तब वह बाहर निकलकर अपनी
रीति के अनुसार जैतून के पहाड़ पर
गया, और चेले उसके पीछे हो लिए।
40 उस जगह पहुँचकर उसने उनसे
कहा, **“प्रार्थना करो, कि तुम परीक्षा**
में न पड़ो।”
41 और वह आप उनसे अलग एक
ढेला फेंकने की दूरी भर गया, और
घुटने टेककर प्रार्थना करने लगा।
42 **“हे पिता यदि तू चाहे तो इस**
कटोरे को मेरे पास से हटा ले, फिर
भी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी
हो।”
43 तब स्वर्ग से एक दूत उसको
दिखाई दिया जो *[illegible]*§।
44 और वह अत्यन्त संकट में
व्याकुल होकर और भी हार्दिक वेदना
से प्रार्थना करने लगा; और उसका
पसीना मानो लहू की बड़ी-बड़ी बूँदों के
समान भूमि पर गिर रहा था।
45 तब वह प्रार्थना से उठा और
अपने चेलों के पास आकर उन्हें उदासी
के मारे सोता पाया।
46 और उनसे कहा, **“क्यों सोते हो?**
उठो, प्रार्थना करो, कि परीक्षा में न
पड़ो।”

[illegible]

47 वह यह कह ही रहा था, कि
देखो एक भीड़ आई, और उन बारहों में
से एक जिसका नाम यहूदा था उनके
आगे-आगे आ रहा था, वह यीशु के
पास आया, कि उसे चूम ले।
48 यीशु ने उससे कहा, **“हे यहूदा,**
क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को
पकड़वाता है?”
49 उसके साथियों ने जब देखा कि
क्या होनेवाला है, तो कहा, “हे प्रभु,
क्या हम तलवार चलाएँ?”
50 और उनमें से एक ने महायाजक
के दास पर तलवार चलाकर उसका
दाहिना कान काट दिया।
51 इस पर यीशु ने कहा, **“अब बस**
करो।” और उसका कान छूकर उसे
अच्छा किया।
52 तब यीशु ने प्रधान याजकों
और मन्दिर के पहरुओं के सरदारों
और प्राचीनों से, जो उस पर चढ़
आए थे, कहा, **“क्या तुम मुझे डाकू**
जानकर तलवारें और लाठियाँ लिए
हुए निकले हो?
53 **जब मैं मन्दिर में हर दिन तुम्हारे**
साथ था, तो तुम ने मुझ पर हाथ न
डाला; पर यह तुम्हारी घड़ी है, और
अंधकार का अधिकार है।”

[illegible]

---

§ **22:43** *[illegible]:* यीशु का मानवीय स्वभाव, बड़े बोझ को सम्भालने के लिए जो उसकी आत्मा पर था।

54 फिर वे उसे पकड़कर ले चले, और महायाजक के घर में लाए और पतरस दूर ही दूर उसके पीछे-पीछे चलता था।

55 और जब वे आँगन में आग सुलगाकर इकट्ठे बैठे, तो पतरस भी उनके बीच में बैठ गया।

56 और एक दासी उसे आग के उजियाले में बैठे देखकर और उसकी ओर ताक कर कहने लगी, “यह भी तो उसके साथ था।”

57 परन्तु उसने यह कहकर इन्कार किया, “हे नारी, मैं उसे नहीं जानता।”

58 थोड़ी देर बाद किसी और ने उसे देखकर कहा, “तू भी तो उन्हीं में से है।” पतरस ने कहा, “हे मनुष्य, मैं नहीं हूँ।”

59 कोई घंटे भर के बाद एक और मनुष्य दृढ़ता से कहने लगा, “निश्चय यह भी तो उसके साथ था; क्योंकि यह गलीली है।”

60 पतरस ने कहा, “हे मनुष्य, मैं नहीं जानता कि तू क्या कहता है?” वह कह ही रहा था कि तुरन्त मुर्गे ने बाँग दी।

61 तब प्रभु ने घूमकर पतरस की ओर देखा, और पतरस को प्रभु की वह बात याद आई जो उसने कही थी, **“आज मुर्गे के बाँग देने से पहले, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।”**

62 और वह बाहर निकलकर फूट फूटकर रोने लगा।

[illegible]

63 जो मनुष्य यीशु को पकड़े हुए थे, वे उसका उपहास करके पीटने लगे;

64 और उसकी आँखें ढाँपकर उससे पूछा, “भविष्यद्वाणी करके बता कि तुझे किसने मारा।”

65 और उन्होंने बहुत सी और भी निन्दा की बातें उसके विरोध में कहीं।

[illegible]

66 जब दिन हुआ तो लोगों के पुरनिए और प्रधान याजक और शास्त्री इकट्ठे हुए, और उसे अपनी महासभा में लाकर पूछा,

67 “यदि तू मसीह है, तो हम से कह दे!” उसने उनसे कहा, **“यदि मैं तुम से कहूँ तो विश्वास न करोगे।**

68 **और यदि पूछूँ, तो उत्तर न दोगे।**

69 **परन्तु अब से मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठा रहेगा।”** ***([illegible]. 14:62, [illegible]. 110:1)***

70 इस पर सब ने कहा, “तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?” उसने उनसे कहा, **“तुम आप ही कहते हो, क्योंकि मैं हूँ।”**

71 तब उन्होंने कहा, “अब हमें गवाही की क्या आवश्यकता है; क्योंकि हमने आप ही उसके मुँह से सुन लिया है।”

23

[illegible]

1 तब सारी सभा उठकर यीशु को पिलातुस के पास ले गई।

2 और वे यह कहकर उस पर दोष लगाने लगे, “हमने इसे लोगों को बहकाते और कैसर को कर देने से मना करते, और अपने आपको मसीह, राजा कहते हुए सुना है।”

3 पिलातुस ने उससे पूछा, “क्या तू यहूदियों का राजा है?” उसने उसे उत्तर दिया, **“तू आप ही कह रहा है।”**

4 तब पिलातुस ने प्रधान याजकों और लोगों से कहा, “मैं इस मनुष्य में कुछ दोष नहीं पाता।”

5 पर वे और भी दृढ़ता से कहने लगे, “यह गलील से लेकर यहाँ तक सारे

यहूदिया में उपदेश दे देकर लोगों को
भड़काता है।”
6 यह सुनकर पिलातुस ने पूछा,
“क्या यह मनुष्य गलीली है?”
7 और यह जानकर कि वह
[illegible][*] का है, उसे
हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि उन
दिनों में वह भी यरूशलेम में था।

[illegible]

8 हेरोदेस यीशु को देखकर बहुत ही
प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह बहुत दिनों से
उसको देखना चाहता था: इसलिए कि
उसके विषय में सुना था, और उसका
कुछ चिन्ह देखने की आशा रखता था।
9 वह उससे बहुत सारी बातें पूछता
रहा, पर उसने उसको कुछ भी उत्तर न
दिया।
10 और प्रधान याजक और शास्त्री
खड़े हुए तन मन से उस पर दोष लगाते
रहे।
11 तब हेरोदेस ने अपने सिपाहियों
के साथ उसका अपमान करके उपहास
किया, और भड़कीला वस्त्र पहनाकर
उसे पिलातुस के पास लौटा दिया।
12 उसी दिन पिलातुस और हेरोदेस
मित्र हो गए। इसके पहले वे एक दूसरे
के बैरी थे।

[illegible]

13 पिलातुस ने प्रधान याजकों और
सरदारों और लोगों को बुलाकर उनसे
कहा,
14 “तुम इस मनुष्य को लोगों का
बहकानेवाला ठहराकर मेरे पास लाए
हो, और देखो, मैंने तुम्हारे सामने
उसकी जाँच की, पर जिन बातों का तुम
उस पर दोष लगाते हो, उन बातों के
विषय में मैंने उसमें कुछ भी दोष नहीं
पाया है;
15 न हेरोदेस ने, क्योंकि उसने उसे
हमारे पास लौटा दिया है: और देखो,
उससे ऐसा कुछ नहीं हुआ कि वह मृत्यु
के दण्ड के योग्य ठहराया जाए।
16 इसलिए मैं उसे पिटवाकर छोड़
देता हूँ।”
17 पिलातुस पर्व के समय उनके
लिए एक बन्दी को छोड़ने पर विवश
था।
18 तब सब मिलकर चिल्ला उठे,
“इसका काम तमाम कर, और हमारे
लिये बरअब्बा को छोड़ दे।”
19 वह किसी बलवे के कारण जो
नगर में हुआ था, और हत्या के कारण
बन्दीगृह में डाला गया था।
20 पर पिलातुस ने यीशु को छोड़ने
की इच्छा से लोगों को फिर समझाया।
21 परन्तु उन्होंने चिल्लाकर कहा,
“उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!”
22 उसने तीसरी बार उनसे कहा,
“क्यों उसने कौन सी बुराई की है? मैंने
उसमें मृत्युदण्ड के योग्य कोई बात
नहीं पाई! इसलिए मैं उसे पिटवाकर
छोड़ देता हूँ।”
23 परन्तु वे चिल्ला चिल्लाकर पीछे
पड़ गए, कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए,
और उनका चिल्लाना प्रबल हुआ।
24 अतः पिलातुस ने आज्ञा दी, कि
उनकी विनती के अनुसार किया जाए।
25 और उसने उस मनुष्य को जो
बलवे और हत्या के कारण बन्दीगृह में
डाला गया था, और जिसे वे माँगते
थे, छोड़ दिया; और यीशु को उनकी
इच्छा के अनुसार सौंप दिया।

[illegible]

---

* **23:7** *[illegible]*: हेरोदेस अरखिलाउस, हेरोदेस महान का बेटा है। यह वही हेरोदेस है जिसने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को मृत्यु दी थी।

26 जब वे उसे लिए जा रहे थे, तो
उन्होंने शमौन नाम एक कुरेनी को जो
गाँव से आ रहा था, पकड़कर उस पर
क्रूस को लाद दिया कि उसे यीशु के
पीछे-पीछे ले चले।
27 और लोगों की बड़ी भीड़ उसके
पीछे हो ली: और बहुत सारी स्त्रियाँ
भी, जो उसके लिये छाती-पीटती और
विलाप करती थीं।
28 यीशु ने उनकी ओर फिरकर कहा,
**"हे यरूशलेम की पुत्रियों, मेरे लिये
मत रोओ; परन्तु अपने और अपने
बालकों के लिये रोओ।**
29 **क्योंकि वे दिन आते हैं, जिनमें
लोग कहेंगे, 'धन्य हैं वे जो बाँझ हैं,
और वे गर्भ जो न जने और वे स्तन
जिन्होंने दूध न पिलाया।'**
30 **उस समय
'वे पहाड़ों से कहने लगेंगे, कि हम पर
गिरो,
और टीलों से कि हमें ढाँप लो।'**
31 **"क्योंकि जब वे हरे पेड़ के साथ
ऐसा करते हैं, तो सूखे के साथ क्या
कुछ न किया जाएगा?"**
32 वे और दो मनुष्यों को भी जो
कुकर्मी थे उसके साथ मार डालने को
ले चले।
33 जब वे उस जगह जिसे खोपड़ी
कहते हैं पहुँचे, तो उन्होंने वहाँ उसे
और उन कुकर्मियों को भी एक को
दाहिनी और दूसरे को बाईं और क्रूसों
पर चढ़ाया।
34 तब यीशु ने कहा, **"*[illegible]*,
[illegible][†], क्योंकि ये
जानते नहीं कि क्या कर रहें हैं?"** और
उन्होंने चिट्ठियाँ डालकर उसके कपड़े
बाँट लिए।***(1 [illegible]. 3:9, [illegible]. 7:60, [illegible]. 53:12, [illegible]. 22:18)***
35 लोग खड़े-खड़े देख रहे थे, और
सरदार भी उपहास कर करके कहते
थे, "इसने औरों को बचाया, यदि यह
परमेश्वर का मसीह है, और उसका
चुना हुआ है, तो अपने आपको बचा
ले।" ***([illegible]. 22:7)***
36 सिपाही भी पास आकर और
सिरका देकर उसका उपहास करके
कहते थे। ***([illegible]. 69:21)***
37 "यदि तू यहूदियों का राजा है, तो
अपने आपको बचा!"
38 और उसके ऊपर एक दोषपत्र भी
लगा था: "यह यहूदियों का राजा है।"

[illegible]

39 जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उनमें
से एक ने उसकी निन्दा करके कहा,
"क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने
आपको और हमें बचा!"
40 इस पर दूसरे ने उसे डाँटकर कहा,
"क्या तू परमेश्वर से भी नहीं डरता? तू
भी तो वही दण्ड पा रहा है,
41 और हम तो न्यायानुसार दण्ड
पा रहे हैं, क्योंकि हम अपने कामों का
ठीक फल पा रहे हैं; पर इसने कोई
अनुचित काम नहीं किया।"
42 तब उसने कहा, "हे यीशु, जब
तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि
लेना।"
43 उसने उससे कहा, **"मैं तुझ से
सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ
[illegible][‡] में होगा।"**

[illegible]

44 और लगभग दोपहर से तीसरे
पहर तक सारे देश में अंधियारा छाया
रहा,
45 और सूर्य का उजियाला जाता
रहा, और मन्दिर का परदा बीच से

[†] **23:34** *[illegible]*: यह यशायाह 53:12 की भविष्यद्वाणी को पूरा करता है; यीशु ने अपराधी के लिए मध्यस्थता की। [‡] **23:43** *[illegible]*: यह "फारसी" मूल का एक शब्द है, और इसका अर्थ "एक बगीचा," विशेष रूप से खुशियों का बगीचा हैं।

फट गया, ***([illegible]. 8:9; [illegible]. 10:19)***
46 और यीशु ने बड़े शब्द से
पुकारकर कहा, **“हे पिता, मैं अपनी
आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।”** और
यह कहकर प्राण छोड़ दिए।
47 सूबेदार ने, जो कुछ हुआ था
देखकर परमेश्वर की बड़ाई की, और
कहा, “निश्चय यह मनुष्य धर्मी था।”
48 और भीड़ जो यह देखने को
इकट्ठी हुई थी, इस घटना को देखकर
छाती पीटती हुई लौट गई।
49 और उसके सब जान-पहचान,
और जो स्त्रियाँ गलील से उसके साथ
आई थीं, दूर खड़ी हुई यह सब देख रही
थीं। ***([illegible]. 38:11, [illegible]. 88:8)***

[illegible]

50 और वहाँ, यूसुफ नामक
महासभा का एक सदस्य था, जो
सज्जन और धर्मी पुरुष था।
51 और उनके विचार और उनके इस
काम से प्रसन्न न था; और वह यहूदियों
के नगर अरिमतियाह का रहनेवाला
और परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा
करनेवाला था।
52 उसने पिलातुस के पास जाकर
यीशु का शव माँगा,
53 और उसे उतारकर मलमल की
चादर में लपेटा, और एक कब्र में रखा,
जो चट्टान में खोदी हुई थी; और उसमें
कोई कभी न रखा गया था।
54 वह तैयारी का दिन था, और सब्त
का दिन आरम्भ होने पर था।
55 और उन स्त्रियों ने जो उसके
साथ गलील से आई थीं, पीछे-पीछे,
जाकर उस कब्र को देखा और यह भी
कि उसका शव किस रीति से रखा गया
हैं।
56 और लौटकर सुगन्धित वस्तुएँ
और इत्र तैयार किया; और सब्त के
दिन तो उन्होंने आज्ञा के अनुसार
विश्राम किया। ***([illegible]. 20:10, [illegible]. 5:14)***

24

[illegible]

1 परन्तु सप्ताह के पहले दिन बड़े
भोर को वे उन सुगन्धित वस्तुओं को
जो उन्होंने तैयार की थी, लेकर कब्र पर
आईं।
2 और उन्होंने पत्थर को कब्र पर से
लुढ़का हुआ पाया,
3 और भीतर जाकर प्रभु यीशु का
शव न पाया।
4 जब वे इस बात से भौचक्की हो
रही थीं तब, दो पुरुष झलकते वस्त्र
पहने हुए उनके पास आ खड़े हुए।
5 जब वे डर गईं, और धरती की
ओर मुँह झुकाए रहीं; तो उन्होंने उनसे
कहा, “तुम जीवित को मरे हुओं में क्यों
ढूँढ़ती हो? ***([illegible]. 1:18, [illegible]. 16:5,6)***
6 वह यहाँ नहीं, परन्तु जी उठा है।
स्मरण करो कि उसने गलील में रहते
हुए तुम से कहा था,
7 **‘अवश्य है, कि मनुष्य का पुत्र
पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए,
और क्रूस पर चढ़ाया जाए, और तीसरे
दिन जी उठे।’** ”
8 तब उसकी बातें उनको स्मरण
आईं,
9 और कब्र से लौटकर उन्होंने उन
ग्यारहों को, और अन्य सब को, ये सब
बातें कह सुनाई।
10 जिन्होंने प्रेरितों से ये बातें कहीं,
वे मरियम मगदलीनी और योअन्ना
और याकूब की माता मरियम और
उनके साथ की अन्य स्त्रियाँ भी थीं।
11 परन्तु उनकी बातें उन्हें कहानी
के समान लगी और उन्होंने उन पर
विश्वास नहीं किया।

12 तब पतरस उठकर कब्र पर दौड़ा गया, और झुककर केवल कपड़े पड़े देखे, और जो हुआ था, उससे अचम्भा करता हुआ, अपने घर चला गया।

[illegible]

13 उसी दिन उनमें से दो जन इम्माऊस नामक एक गाँव को जा रहे थे, जो यरूशलेम से कोई सात मील की दूरी पर था।

14 और वे इन सब बातों पर जो हुईं थीं, आपस में बातचीत करते जा रहे थे।

15 और जब वे आपस में बातचीत और पूछताछ कर रहे थे, तो यीशु आप पास आकर उनके साथ हो लिया।

16 परन्तु उनकी आँखें ऐसी बन्द कर दी गईं थी, कि *[illegible]** ।

17 उसने उनसे पूछा, **"ये क्या बातें हैं, जो तुम चलते-चलते आपस में करते हो?"** वे उदास से खड़े रह गए।

18 यह सुनकर, उनमें से क्लियुपास नामक एक व्यक्ति ने कहा, "क्या तू यरूशलेम में अकेला परदेशी है; जो नहीं जानता, कि इन दिनों में उसमें क्या-क्या हुआ है?"

19 उसने उनसे पूछा, **"कौन सी बातें?"** उन्होंने उससे कहा, "यीशु नासरी के विषय में जो परमेश्वर और सब लोगों के निकट काम और वचन में सामर्थी *[illegible]*† था।

20 और प्रधान याजकों और हमारे सरदारों ने उसे पकड़वा दिया, कि उस पर मृत्यु की आज्ञा दी जाए; और उसे क्रूस पर चढ़वाया।

21 परन्तु हमें आशा थी, कि यही इस्राएल को छुटकारा देगा, और इन सब बातों के सिवाय इस घटना को हुए तीसरा दिन है।

22 और हम में से कई स्त्रियों ने भी हमें आश्चर्य में डाल दिया है, जो भोर को कब्र पर गई थीं।

23 और जब उसका शव न पाया, तो यह कहती हुई आईं, कि हमने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया, जिन्होंने कहा कि वह जीवित है।

24 तब हमारे साथियों में से कई एक कब्र पर गए, और जैसा स्त्रियों ने कहा था, वैसा ही पाया; परन्तु उसको न देखा।"

25 तब उसने उनसे कहा, **"हे निर्बुद्धियों, और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियों!**

26 **क्या अवश्य न था, कि मसीह ये दुःख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?"**

27 तब उसने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्रशास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया। ***([illegible]. 1:45, [illegible] 24:44, [illegible]. 18:15)***

28 इतने में वे उस गाँव के पास पहुँचे, जहाँ वे जा रहे थे, और उसके ढंग से ऐसा जान पड़ा, कि वह आगे बढ़ना चाहता है।

29 परन्तु उन्होंने यह कहकर उसे रोका, "हमारे साथ रह; क्योंकि संध्या हो चली है और दिन अब बहुत ढल गया है।" तब वह उनके साथ रहने के लिये भीतर गया।

30 जब वह उनके साथ भोजन करने बैठा, तो उसने रोटी लेकर धन्यवाद किया, और उसे तोड़कर उनको देने लगा।

* **24:16** *[illegible]:* यह अभिव्यक्ति केवल इसलिए प्रयोग किया जाता है कि वे नहीं "जानते" थे कि वह कौन था। † **24:19** *[illegible]:* परमेश्वर की ओर से भेजा गया एक शिक्षक।

31 *[illegible]*‡;
और उन्होंने उसे पहचान लिया, और
वह उनकी आँखों से छिप गया।
32 उन्होंने आपस में कहा, "जब वह
मार्ग में हम से बातें करता था, और
पवित्रशास्त्र का अर्थ हमें समझाता
था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न
उत्पन्न हुई?"
33 वे उसी घड़ी उठकर यरूशलेम
को लौट गए, और उन ग्यारहों और
उनके साथियों को इकट्ठे पाया।
34 वे कहते थे, "प्रभु सचमुच जी
उठा है, और शमौन को दिखाई दिया
है।"
35 तब उन्होंने मार्ग की बातें उन्हें
बता दीं और यह भी कि उन्होंने उसे
रोटी तोड़ते समय कैसे पहचाना।

[illegible]

36 वे ये बातें कह ही रहे थे, कि वह
आप ही उनके बीच में आ खड़ा हुआ;
और उनसे कहा, "**तुम्हें शान्ति मिले।**"
37 परन्तु वे घबरा गए, और डर गए,
और समझे, कि हम किसी भूत को देख
रहे हैं।
38 उसने उनसे कहा, "**क्यों घबराते
हो? और तुम्हारे मन में क्यों सन्देह
उठते हैं?**
39 **मेरे हाथ और मेरे पाँव को देखो,
कि मैं वहीं हूँ; मुझे छूकर देखो;
क्योंकि आत्मा के हड्डी माँस नहीं
होता जैसा मुझ में देखते हो।**"
40 यह कहकर उसने उन्हें अपने
हाथ पाँव दिखाए।
41 जब आनन्द के मारे उनको
विश्वास नहीं हो रहा था, और आश्चर्य
करते थे, तो उसने उनसे पूछा, "**क्या
यहाँ तुम्हारे पास कुछ भोजन है?**"
42 उन्होंने उसे भुनी मछली का
टुकड़ा दिया।
43 उसने लेकर उनके सामने खाया।
44 फिर उसने उनसे कहा, "**ये मेरी
वे बातें हैं, जो मैंने तुम्हारे साथ रहते
हुए, तुम से कही थीं, कि अवश्य है,
कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था
और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की
पुस्तकों में, मेरे विषय में लिखी हैं, सब
पूरी हों।**"
45 तब उसने पवित्रशास्त्र समझने
के लिये उनकी समझ खोल दी।
46 और उनसे कहा, "**यह लिखा है
कि मसीह दुःख उठाएगा, और तीसरे
दिन मरे हुओं में से जी उठेगा,*(*[illegible]*.
53:5,* [illegible] *24:7)***
47 **और यरूशलेम से लेकर सब
जातियों में मन फिराव का और पापों
की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से
किया जाएगा।**
48 **तुम इन सब बातों के गवाह हो।**
49 **और जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने
की है, मैं उसको तुम पर उतारूँगा और
जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब
तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।**"

[illegible]

50 तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक
बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर
उन्हें आशीष दी;
51 और उन्हें आशीष देते हुए वह
उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर
उठा लिया गया। ***(**[illegible]**. 1:9,
[illegible]. 47:5)***
52 और वे उसको दण्डवत् करके बड़े
आनन्द से यरूशलेम को लौट गए।
53 और वे लगातार मन्दिर में
उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति
किया करते थे।

‡ **24:31** *[illegible]*: अंधकार हटा दिया गया था। उन्होंने उसे मसीह के रूप में देखा। उनके संदेह समाप्त हो गए 24:49 वादा यह था कि उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा सहायता प्राप्त करना।

यूहन्ना रचित सुसमाचार

[illegible]

जब्दी का पुत्र यूहन्ना इस पुस्तक का लेखक है। जैसा कि यूह. 21:20,24 से स्पष्ट होता है कि यह वृत्तान्त उस चेले ने लिखा "जिस शिष्य को यीशु प्यार करता था" और यूहन्ना स्वयं अपने लिए लिखता है, "चेला जिससे यीशु प्रेम रखता था।" वह और उसका भाई याकूब "गर्जन के पुत्र" कहलाते थे (मर. 3:17)। उन्हें यीशु के जीवन की घटनाओं का आँखों देखा गवाह बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

[illegible]

लगभग ई.स. 50 - 90

यूहन्ना का यह शुभ सन्देश वृत्तान्त सम्भवतः इफिसुस से लिखा गया था, लेखन के मुख्य स्थान यहूदिया का ग्रामीण क्षेत्र, सामरिया, गलील, बैतनिय्याह और यरूशलेम रहे होंगे।

[illegible]

यूहन्ना रचित शुभ सन्देश वृत्तान्त यहूदियों के लिए लिखा गया था। उसने यहूदियों को यह प्रमाणित करने के लिए यह वृत्तान्त लिखा था कि यीशु ही मसीह है उसने जानकारियाँ इसलिए दीं कि वे "विश्वास करें कि यीशु ही मसीह है और विश्वास करके उसके नाम में जीवन पाएँ।"

[illegible]

यूहन्ना के शुभ सन्देश वृत्तान्त का उद्देश्य है कि, "मसीही विश्वासियों को विश्वास में दृढ़ करके सुरक्षित किया जाये।" जैसा कि यूहन्ना 20:31 में स्पष्ट व्यक्त किया गया है, "ये इसलिए लिखे गये हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।" यूहन्ना प्रकट रूप से घोषणा करता है कि यीशु परमेश्वर है (यूह. 1:1), जिसने सब वस्तुओं को सृजा (यूह. 1:3)। वह ज्योति है (यूह. 1:4; 8:12) और जीवन है (यूह. 1:4; 5:26, 14:6)। यह वृत्तान्त यूहन्ना ने मसीह को परमेश्वर पुत्र सिद्ध करने के लिए भी लिखा था।

[illegible]

यीशु—परमेश्वर का पुत्र

रूपरेखा

1. यीशु जीवन का कर्ता है — 1:1-18
2. प्रथम शिष्य को बुलाना — 1:19-51
3. यीशु की सार्वजनिक सेवा — 2:1-16:33
4. प्रधान पुरोहित स्वरूप प्रार्थना — 17:1-26
5. मसीह का क्रूसीकरण एवं पुनरूत्थान — 18:1-20:10
6. यीशु की पुनरूत्थान सेवा — 20:11-21:25

[illegible]

1 [illegible]* वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।
2 यही आदि में परमेश्वर के साथ था।
3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।

* **1:1** [illegible]: इसका अर्थ यह है कि संसार की सृष्टि के पहले से ही "वचन" का अस्तित्व था। वचन यूनानी में यह 'लोगोस' के रूप में जाना जाता हैं, एक 'वचन' जिसके द्वारा हम दूसरों से बातचीत करते हैं।

4 [illegible][†]; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।

5 और ज्योति अंधकार में चमकती है; और अंधकार ने उसे ग्रहण न किया।

6 एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से भेजा हुआ, जिसका नाम यूहन्ना था।

7 यह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएँ।

8 वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था।

9 सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी।

10 वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहचाना।

11 वह अपने घर में आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।

12 परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं

13 वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। ***(1 [illegible]. 4:9)***

15 यूहन्ना ने उसके विषय में गवाही दी, और पुकारकर कहा, "यह वही है, जिसका मैंने वर्णन किया, कि जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझसे बढ़कर है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।"

16 क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह।

17 इसलिए कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची।

18 [illegible][‡], एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में हैं, उसी ने उसे प्रगट किया।

[illegible]

19 यूहन्ना की गवाही यह है, कि जब यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों और लेवियों को उससे यह पूछने के लिये भेजा, "तू कौन है?"

20 तो उसने यह मान लिया, और इन्कार नहीं किया, परन्तु मान लिया "मैं मसीह नहीं हूँ।"

21 तब उन्होंने उससे पूछा, "तो फिर कौन है? क्या तू एलिय्याह है?" उसने कहा, "मैं नहीं हूँ।" "तो क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है?" उसने उत्तर दिया, "नहीं।"

22 तब उन्होंने उससे पूछा, "फिर तू है कौन? ताकि हम अपने भेजनेवालों को उत्तर दें। तू अपने विषय में क्या कहता है?"

23 उसने कहा, "जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है, 'मैं जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हूँ कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो।' " (यशा. 40:3)

24 ये फरीसियों की ओर से भेजे गए थे।

[†] **1:4** *[illegible]:* परमेश्वर "जीवन" है या "जीवित" परमेश्वर है, घोषित किया गया हैं, क्योंकि वह स्रोत या जीवन का सोता है [‡] **1:18** *[illegible]:* यह घोषणा सम्भवतः किसी भी पिछले वितरण से ऊपर यीशु के रहस्योद्घाटन की श्रेष्ठता दिखाने के लिए की गई है

25 उन्होंने उससे यह प्रश्न पूछा,
“यदि तू न मसीह है, और न
एलिय्याह, और न वह भविष्यद्वक्ता
है, तो फिर बपतिस्मा क्यों देता है?”
26 यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, “मैं
तो जल से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु
तुम्हारे बीच में एक व्यक्ति खड़ा है,
जिसे तुम नहीं जानते।
27 अर्थात् मेरे बाद आनेवाला है,
जिसकी जूती का फीता मैं खोलने के
योग्य नहीं।”
28 ये बातें यरदन के पार बैतनिय्याह
में हुईं, जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देता
था।

[illegible]

29 दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी
ओर आते देखकर कहा, “देखो, यह
[illegible]§ है, जो
जगत के पाप हरता है। ***(1 [illegible]. 1:19,
[illegible]. 53:7)***
30 यह वही है, जिसके विषय में मैंने
कहा था, कि एक पुरुष मेरे पीछे आता
है, जो मुझसे श्रेष्ठ है, क्योंकि वह
मुझसे पहले था।
31 और मैं तो उसे पहचानता न था,
परन्तु इसलिए मैं जल से बपतिस्मा
देता हुआ आया, कि वह इस्राएल पर
प्रगट हो जाए।”
32 और यूहन्ना ने यह गवाही दी,
“मैंने आत्मा को कबूतर के रूप में
आकाश से उतरते देखा है, और वह उस
पर ठहर गया।
33 और मैं तो उसे पहचानता
नहीं था, परन्तु जिसने मुझे जल से
बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझसे
कहा, ‘जिस पर तू आत्मा को उतरते
और ठहरते देखे; वही पवित्र आत्मा से
बपतिस्मा देनेवाला है।’
34 और मैंने देखा, और गवाही दी है
कि यही परमेश्वर का पुत्र है।” ***([illegible].
2:7)***

[illegible]

35 दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके
चेलों में से दो जन खड़े हुए थे।
36 और उसने यीशु पर जो जा रहा
था, दृष्टि करके कहा, “देखो, यह
परमेश्वर का मेम्ना है।”
37 तब वे दोनों चेले उसकी सुनकर
यीशु के पीछे हो लिए।
38 यीशु ने मुड़कर और उनको पीछे
आते देखकर उनसे कहा, **“तुम किसकी
खोज में हो?”** उन्होंने उससे कहा, “हे
रब्बी, (अर्थात् हे गुरु), तू कहाँ रहता
है?”
39 उसने उनसे कहा, **“चलो, तो देख
लोगे।”** तब उन्होंने आकर उसके रहने
का स्थान देखा, और उस दिन उसी
के साथ रहे; और यह दसवें घंटे के
लगभग था।
40 उन दोनों में से, जो यूहन्ना की
बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे,
एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास
था।
41 उसने पहले अपने सगे भाई
शमौन से मिलकर उससे कहा, “हमको
ख्रिस्त अर्थात् मसीह मिल गया।”
([illegible]. 4:25)
42 वह उसे यीशु के पास
लाया: यीशु ने उस पर दृष्टि
करके कहा, **“तू यूहन्ना का पुत्र
शमौन है, तू *[illegible]** अर्थात् पतरस
कहलाएगा।”**

[illegible]

§ **1:29** *[illegible]:* एक “मेम्ना” यहूदियों के बीच, मिस्र से अपने उद्धार के उपलक्ष्य में फसह पर मारा और खाया जाता था। निर्गमन 12:3-11

* **1:42** *[illegible]:* यह एक सिरिएक शब्द है, उसी के समान यूनानी में इसका मतलब पतरस, एक पत्थर है।

43 दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाना चाहा, और फिलिप्पुस से मिलकर कहा, **"मेरे पीछे हो ले।"**

44 फिलिप्पुस तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का निवासी था।

45 फिलिप्पुस ने नतनएल से मिलकर उससे कहा, "जिसका वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हमको मिल गया; वह यूसुफ का पुत्र, यीशु नासरी है।" ***(□□□□□ 21:11)***

46 नतनएल ने उससे कहा, "क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है?" फिलिप्पुस ने उससे कहा, "चलकर देख ले।"

47 यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके विषय में कहा, **"देखो, यह सचमुच इस्राएली है: इसमें कपट नहीं।"**

48 नतनएल ने उससे कहा, "तू मुझे कैसे जानता है?" यीशु ने उसको उत्तर दिया, **"इससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब मैंने तुझे देखा था।"**

49 नतनएल ने उसको उत्तर दिया, "हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्राएल का महाराजा है।"

50 यीशु ने उसको उत्तर दिया, **"मैंने जो तुझ से कहा, कि मैंने तुझे अंजीर के पेड़ के तले देखा, क्या तू इसलिए विश्वास करता है? तू इससे भी बड़े-बड़े काम देखेगा।"*(□□□. 11:40)***

51 फिर उससे कहा, **"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते देखोगे।"*(□□□□. 28:12)***

2

□□□□ □□□ □□□□

1 फिर तीसरे दिन गलील के *□□□□** में किसी का विवाह था, और यीशु की माता भी वहाँ थी।

2 यीशु और उसके चेले भी उस विवाह में निमंत्रित थे।

3 जब दाखरस खत्म हो गया, तो यीशु की माता ने उससे कहा, "*□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□*†।"

4 यीशु ने उससे कहा, **"हे महिला मुझे तुझ से क्या काम? अभी *□□□□ □□□*‡ नहीं आया।"**

5 उसकी माता ने सेवकों से कहा, "जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।"

6 वहाँ यहूदियों के शुद्धिकरण के लिए पत्थर के छः मटके रखे थे, जिसमें दो-दो, तीन-तीन मन समाता था।

7 यीशु ने उनसे कहा, **"मटकों में पानी भर दो।"** तब उन्होंने उन्हें मुहाँमुहँ भर दिया।

8 तब उसने उनसे कहा, **"अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।"** और वे ले गए।

9 जब भोज के प्रधान ने वह पानी चखा, जो दाखरस बन गया था और नहीं जानता था कि वह कहाँ से आया है; (परन्तु जिन सेवकों ने पानी निकाला था वे जानते थे), तो भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाकर, उससे कहा

10 "हर एक मनुष्य पहले अच्छा दाखरस देता है, और जब लोग पीकर

* **2:1** *□□□□:* यह करीब 15 मील तिबिरियास के उत्तर-पश्चिम में और 6 मील नासरत के उत्तर-पूर्व में एक छोटा सा नगर था। † **2:3** *□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□:* यह ज्ञात नहीं है कि मरियम ने यीशु से यह क्यों कहा। यह प्रतीत होता है कि उसे यह विश्वास था कि वह यह आपूर्ति करने में सक्षम था। ‡ **2:4** *□□□□ □□□:* इसका मतलब यह नहीं है कि उनके चमत्कार के काम करने का समय, या लोगों के बीच में काम करने का उचित समय नहीं आया हैं, परन्तु उनके अन्तःक्षेप करने के लिए उचित समय नहीं आया था।

छक जाते हैं, तब मध्यम देता है;
परन्तु तूने अच्छा दाखरस अब तक
रख छोड़ा है।”
11 यीशु ने गलील के काना में
अपना यह पहला चिन्ह दिखाकर
अपनी महिमा प्रगट की और उसके
चेलों ने उस पर विश्वास किया।
12 इसके बाद वह और उसकी माता,
उसके भाई, उसके चेले, कफरनहूम को
गए और वहाँ कुछ दिन रहे।

[illegible]

13 यहूदियों का फसह का पर्व निकट
था, और यीशु यरूशलेम को गया।
14 और उसने मन्दिर में बैल, और
भेड़ और कबूतर के बेचनेवालों ओर
सर्राफों को बैठे हुए पाया।
15 तब उसने रस्सियों का कोड़ा
बनाकर, सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर
से निकाल दिया, और सर्राफों के पैसे
बिखेर दिये, और मेजें उलट दीं,
16 और कबूतर बेचनेवालों से कहा,
**“इन्हें यहाँ से ले जाओ। मेरे पिता
के भवन को व्यापार का घर मत
बनाओ।”**
17 तब उसके चेलों को स्मरण आया
कि लिखा है, “तेरे घर की धुन *[illegible]*
[illegible][§]।” ***([illegible]. 69:9)***
18 इस पर यहूदियों ने उससे कहा,
“तू जो यह करता है तो हमें कौन सा
चिन्ह दिखाता है?”
19 यीशु ने उनको उत्तर दिया, **“इस
मन्दिर को ढा दो, और मैं इसे तीन
दिन में खड़ा कर दूँगा।”**
20 यहूदियों ने कहा, “इस मन्दिर
के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं,
और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर
देगा?”
21 परन्तु उसने अपनी देह के मन्दिर
के विषय में कहा था।
22 फिर जब वह मुर्दों में से जी
उठा फिर उसके चेलों को स्मरण आया
कि उसने यह कहा था; और उन्होंने
पवित्रशास्त्र और उस वचन का जो
यीशु ने कहा था, विश्वास किया।

[illegible]

23 जब वह यरूशलेम में फसह के
समय, पर्व में था, तो बहुतों ने उन
चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर
उसके नाम पर विश्वास किया।
24 परन्तु यीशु ने अपने आपको
उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि
वह सब को जानता था,
25 और उसे प्रयोजन न था कि
मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे,
क्योंकि वह आप जानता था कि मनुष्य
के मन में क्या है?

3

[illegible]

1 फरीसियों में से *[illegible]*
[illegible][*]।
2 उसने रात को यीशु के पास आकर
उससे कहा, “हे रब्बी, हम जानते हैं,
कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर
आया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को
जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके
साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।”
3 यीशु ने उसको उत्तर दिया, “*[illegible]*[†]**, यदि
कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर
का राज्य देख नहीं सकता।”**

§ **2:17** *[illegible]:* मुझे उसकी धुन या मेरा पूरा ध्यान और मनोवेग

* **3:1** *[illegible]:* राष्ट्र के महान परिषद या “महासभा,” का एक सदस्य।

† **3:3** *[illegible]:* वह क्या कहना चाहता था उसकी निश्चितता और उसके महत्त्व को मजबूत अभिपुष्टि की अभिव्यक्ति को संकेत करता हैं।

4 नीकुदेमुस ने उससे कहा, “मनुष्य
जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे जन्म ले
सकता है? क्या वह अपनी माता के
गर्भ में दूसरी बार प्रवेश करके जन्म ले
सकता है?”
5 यीशु ने उत्तर दिया, “मैं तुझ
से सच-सच कहता हूँ, जब तक
कोई मनुष्य [illegible]‡ तो वह परमेश्वर के राज्य में
प्रवेश नहीं कर सकता।
6 क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह
शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है,
वह आत्मा है।
7 अचम्भा न कर, कि मैंने तुझ से
कहा, ‘तुझे नये सिरे से जन्म लेना
अवश्य है।’
8 हवा जिधर चाहती है उधर चलती
है, और तू उसकी आवाज सुनता है,
परन्तु नहीं जानता, कि वह कहाँ से
आती और किधर को जाती है? जो
कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही
है।” *([illegible]. 11:5)*
9 नीकुदेमुस ने उसको उत्तर दिया,
“ये बातें कैसे हो सकती हैं?”
10 यह सुनकर यीशु ने उससे कहा,
“तू इस्राएलियों का गुरु होकर भी क्या
इन बातों को नहीं समझता?
11 मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि
हम जो जानते हैं, वह कहते हैं, और
जिसे हमने देखा है उसकी गवाही देते
हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं
करते।
12 जब मैंने तुम से पृथ्वी की बातें
कहीं, और तुम विश्वास नहीं करते,
तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूँ,
तो फिर क्यों विश्वास करोगे?
13 कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल
वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य
का पुत्र जो स्वर्ग में है। *([illegible]. 6:38)*
14 और जिस तरह से मूसा ने जंगल
में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी
रीति से अवश्य है कि मनुष्य का
पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए। *([illegible].
8:28)*
15 ताकि जो कोई उस पर विश्वास
करे वह अनन्त जीवन पाए।
16 “क्योंकि परमेश्वर ने जगत
से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना
एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई
उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो,
परन्तु अनन्त जीवन पाए।
17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत
में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर
दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि
जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।
18 जो उस पर विश्वास करता है,
उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती,
परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं
करता, वह दोषी ठहराया जा चुका
है; इसलिए कि उसने परमेश्वर के
एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं
किया। *([illegible]. 5:10)*
19 और दण्ड की आज्ञा का कारण
यह है कि ज्योति जगत में आई है,
और मनुष्यों ने अंधकार को ज्योति से
अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम
बुरे थे।
20 क्योंकि जो कोई बुराई करता
है, वह ज्योति से बैर रखता है, और
ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न
हो कि उसके कामों पर दोष लगाया
जाए।
21 परन्तु जो सच्चाई पर चलता है,
वह ज्योति के निकट आता है, ताकि
उसके काम प्रगट हों कि वह परमेश्वर
की ओर से किए गए हैं।”

[illegible]

‡ **3:5** *[illegible]*: “जल” यहाँ स्पष्ट रूप से “बपतिस्मा” को प्रकट करता हैं।

[illegible]

22 इसके बाद यीशु और उसके चेले यहूदिया देश में आए; और वह वहाँ उनके साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा।

23 और यूहन्ना भी सालेम के निकट [illegible]§ में बपतिस्मा देता था। क्योंकि वहाँ बहुत जल था, और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे।

24 क्योंकि यूहन्ना उस समय तक जेलखाने में नहीं डाला गया था।

25 वहाँ यूहन्ना के चेलों का किसी यहूदी के साथ शुद्धि के विषय में वाद-विवाद हुआ।

26 और उन्होंने यूहन्ना के पास आकर उससे कहा, “हे रब्बी, जो व्यक्ति यरदन के पार तेरे साथ था, और जिसकी तूने गवाही दी है; देख, वह बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास आते हैं।”

27 यूहन्ना ने उत्तर दिया, “जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता।

28 तुम तो आप ही मेरे गवाह हो, कि मैंने कहा, ‘मैं मसीह नहीं, परन्तु उसके आगे भेजा गया हूँ।’ ***([illegible]. 1:20, [illegible]. 3:1)***

29 जिसकी दुल्हन है, वही दूल्हा है: परन्तु दूल्हे का मित्र जो खड़ा हुआ उसकी सुनता है, दूल्हे के शब्द से बहुत हर्षित होता है; अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है।

30 अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ।

31 “जो ऊपर से आता है, वह सर्वोत्तम है, जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी का है; और पृथ्वी की ही बातें कहता है: जो स्वर्ग से आता है, वह सब के ऊपर है। ***([illegible]. 8:23)***

32 जो कुछ उसने देखा, और सुना है, उसी की गवाही देता है; और कोई उसकी गवाही ग्रहण नहीं करता।

33 जिसने उसकी गवाही ग्रहण कर ली उसने इस बात पर छाप दे दी कि परमेश्वर सच्चा है।

34 क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता।

35 पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उसने सब वस्तुएँ उसके हाथ में दे दी हैं।

36 जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।”

4

[illegible]

1 फिर जब प्रभु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना है कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता और उन्हें बपतिस्मा देता है।

2 (यद्यपि यीशु स्वयं नहीं वरन् उसके चेले बपतिस्मा देते थे),

3 तब वह यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया,

4 और उसको सामरिया से होकर जाना अवश्य था।

5 इसलिए वह [illegible]* नामक सामरिया के एक नगर तक आया, जो उस भूमि के पास है जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था।

6 और याकूब का कुआँ भी वहीं था। यीशु मार्ग का थका हुआ उस कुएँ पर

§ **3:23** *[illegible]:* “इनोन” या “ऐनोन” शब्द का अर्थ “एक सोता” है। * **4:5** *[illegible]:* यह नगर करीब आठ मील दूर सामरिया नामक नगर से उत्तर-पूर्व में, एबाल पर्वत और गिरिज्जीम पर्वत के बीच में स्थित हैं।

ऐसे ही बैठ गया। और यह बात दोपहर
के समय हुई।

7 इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने
को आई। यीशु ने उससे कहा, **“मुझे
पानी पिला।”**
8 क्योंकि उसके चेले तो नगर में
भोजन मोल लेने को गए थे।
9 उस सामरी स्त्री ने उससे कहा,
“तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री
से पानी क्यों माँगता है?” क्योंकि
यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार
का व्यवहार नहीं रखते। ***([illegible]. 108:28)***
10 यीशु ने उत्तर दिया, **“यदि तू
परमेश्वर के वरदान को जानती, और
यह भी जानती कि वह कौन है
जो तुझ से कहता है, ‘मुझे पानी
पिला,’ तो तू उससे माँगती, और वह
तुझे *[illegible] [illegible] [illegible]*† देता।”**
11 स्त्री ने उससे कहा, “हे स्वामी,
तेरे पास जल भरने को तो कुछ है
भी नहीं, और कुआँ गहरा है; तो फिर
वह जीवन का जल तेरे पास कहाँ से
आया?
12 क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा
है, जिसने हमें यह कुआँ दिया; और
आप ही अपनी सन्तान, और अपने
पशुओं समेत उसमें से पीया?”
13 यीशु ने उसको उत्तर दिया, **“जो
कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा
होगा,**
14 **परन्तु जो कोई उस जल में से
पीएगा जो मैं उसे दूँगा, वह फिर
अनन्तकाल तक प्यासा न होगा;
वरन् *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*‡,
वह उसमें एक सोता बन जाएगा,
जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता
रहेगा।”**
15 स्त्री ने उससे कहा, “हे प्रभु, वह
जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊँ
और न जल भरने को इतनी दूर आऊँ।”
16 यीशु ने उससे कहा, **“जा, अपने
पति को यहाँ बुला ला।”**
17 स्त्री ने उत्तर दिया, “मैं बिना पति
की हूँ।” यीशु ने उससे कहा, **“तू ठीक
कहती है, ‘मैं बिना पति की हूँ।’**
18 **क्योंकि तू पाँच पति कर चुकी है,
और जिसके पास तू अब है वह भी तेरा
पति नहीं; यह तूने सच कहा है।”**
19 स्त्री ने उससे कहा, “हे प्रभु, मुझे
लगता है कि तू भविष्यद्वक्ता है।
20 हमारे पूर्वजों ने इसी पहाड़ पर
भजन किया, और तुम कहते हो कि
वह जगह जहाँ भजन करना चाहिए
यरूशलेम में है।” ***([illegible]. 11:29)***
21 यीशु ने उससे कहा, **“हे नारी,
मेरी बात का विश्वास कर कि वह
समय आता है कि तुम न तो इस
पहाड़ पर पिता का भजन करोगे, न
यरूशलेम में।**
22 **तुम जिसे नहीं जानते, उसका
भजन करते हो; और हम जिसे जानते
हैं, उसका भजन करते हैं; क्योंकि
उद्धार यहूदियों में से है।*([illegible]. 2:3)***
23 **परन्तु वह समय आता है, वरन्
अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता
परमेश्वर की आराधना आत्मा और
सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने
लिये ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है।**
24 **परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य
है कि उसकी आराधना करनेवाले
आत्मा और सच्चाई से आराधना
करें।”**

† **4:10** *[illegible] [illegible] [illegible]:* मृत और स्थिर जल के बदले यहूदी लोग जीवन के जल को सोता या चलती धाराओं के रूप में निरुपित अभिव्यक्ति के लिए इस्तेमाल करते हैं। ‡ **4:14** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* यीशु ने यहाँ पर बिना सन्देह के अपनी ही शिक्षा, अपना “अनुग्रह,” अपनी “आत्मा” और उसके सुसमाचार को गले लगाने से जो लाभ आत्मा में आते है, को संदर्भित किया।

25 स्त्री ने उससे कहा, “मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।”

26 यीशु ने उससे कहा, **“मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।”**

[illegible]

27 इतने में उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; फिर भी किसी ने न पूछा, “तू क्या चाहता है?” या “किस लिये उससे बातें करता है?”

28 तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी,

29 “आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है?”

30 तब वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे।

31 इतने में उसके चेले यीशु से यह विनती करने लगे, “हे रब्बी, कुछ खा ले।”

32 परन्तु उसने उनसे कहा, **“मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।”**

33 तब चेलों ने आपस में कहा, “क्या कोई उसके लिये कुछ खाने को लाया है?”

34 यीशु ने उनसे कहा, **“मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूँ और उसका काम पूरा करूँ।**

35 **क्या तुम नहीं कहते, ‘कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं?’ देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं।**

36 **और काटनेवाला मजदूरी पाता, और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है, ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें।**

37 **क्योंकि इस पर यह कहावत ठीक बैठती है: ‘बोनेवाला और है और काटनेवाला और।’*([illegible] 6:15)***

38 **मैंने तुम्हें वह खेत काटने के लिये भेजा जिसमें तुम ने परिश्रम नहीं किया औरों ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए।”**

[illegible]

39 और उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री के कहने से यीशु पर विश्वास किया; जिसने यह गवाही दी थी, कि उसने सब कुछ जो मैंने किया है, मुझे बता दिया।

40 तब जब ये सामरी उसके पास आए, तो उससे विनती करने लगे कि हमारे यहाँ रह, और वह वहाँ दो दिन तक रहा।

41 और उसके वचन के कारण और भी बहुतों ने विश्वास किया।

42 और उस स्त्री से कहा, “अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हमने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है।”

43 फिर उन दो दिनों के बाद वह वहाँ से निकलकर गलील को गया।

44 क्योंकि यीशु ने आप ही साक्षी दी कि भविष्यद्वक्ता अपने देश में आदर नहीं पाता।

45 जब वह गलील में आया, तो गलीली आनन्द के साथ उससे मिले; क्योंकि जितने काम उसने यरूशलेम में पर्व के समय किए थे, उन्होंने उन सब को देखा था, क्योंकि वे भी पर्व में गए थे।

[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]

46 तब वह फिर गलील के काना में
आया, जहाँ उसने पानी को दाखरस
बनाया था। वहाँ राजा का एक
कर्मचारी था जिसका पुत्र कफरनहूम में
बीमार था।
47 वह यह सुनकर कि यीशु
यहूदिया से गलील में आ गया है,
उसके पास गया और उससे विनती
करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र को
चंगा कर दे: क्योंकि वह मरने पर था।
48 यीशु ने उससे कहा, **"जब तक**
तुम चिन्ह और अद्भुत काम न
देखोगे तब तक कदापि विश्वास न
करोगे।" ***([illegible]. 4:2)***
49 राजा के कर्मचारी ने उससे कहा,
"हे प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने से
पहले चल।"
50 यीशु ने उससे कहा, **"जा, तेरा**
पुत्र जीवित है।" उस मनुष्य ने यीशु
की कही हुई बात पर विश्वास किया
और चला गया।
51 वह मार्ग में जा ही रहा था, कि
उसके दास उससे आ मिले और कहने
लगे, "तेरा लड़का जीवित है।"
52 उसने उनसे पूछा, "किस घड़ी
वह अच्छा होने लगा?" उन्होंने उससे
कहा, "कल सातवें घण्टे में उसका ज्वर
उतर गया।"
53 तब पिता जान गया कि यह उसी
घड़ी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उससे
कहा, **"तेरा पुत्र जीवित है,"** और
उसने और उसके सारे घराने ने विश्वास
किया।
54 यह दूसरा चिन्ह था जो यीशु ने
यहूदिया से गलील में आकर दिखाया।

5

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

1 इन बातों के पश्चात् यहूदियों का
एक पर्व हुआ, और यीशु यरूशलेम को
गया।
2 यरूशलेम में भेड़-फाटक के पास
एक कुण्ड है, जो इब्रानी भाषा में
*[illegible]** कहलाता है, और उसके
पाँच ओसारे हैं।
3 इनमें बहुत से बीमार, अंधे, लँगड़े
और सूखे अंगवाले (पानी के हिलने की
आशा में) पड़े रहते थे।
4 क्योंकि नियुक्त समय पर
परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर
पानी को हिलाया करते थे: पानी
हिलते ही जो कोई पहले उतरता, वह
चंगा हो जाता था, चाहे उसकी कोई
बीमारी क्यों न हो।
5 वहाँ एक मनुष्य था, जो अड़तीस
वर्ष से बीमारी में पड़ा था।
6 यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और
यह जानकर कि वह बहुत दिनों से इस
दशा में पड़ा है, उससे पूछा, **"क्या तू**
चंगा होना चाहता है?"
7 उस बीमार ने उसको उत्तर दिया,
"हे स्वामी, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं,
कि जब पानी हिलाया जाए, तो मुझे
कुण्ड में उतारे; परन्तु मेरे पहुँचते-
पहुँचते दूसरा मुझसे पहले उतर जाता
है।"
8 यीशु ने उससे कहा, **"उठ, अपनी**
खाट उठा और चल फिर।"
9 वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया,
और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने
लगा।
10 वह सब्त का दिन था। इसलिए
यहूदी उससे जो चंगा हुआ था, कहने
लगे, "आज तो सब्त का दिन है, तुझे
खाट उठानी उचित नहीं।" ***([illegible].***
17:21)

---
* **5:2** *[illegible]*: दया का घर। इसे अपनी मजबूत चिकित्सा गुणों के कारण कहा जाता था।

11 उसने उन्हें उत्तर दिया, “जिसने
मुझे चंगा किया, उसी ने मुझसे कहा,
‘अपनी खाट उठाकर चल फिर।’ ”
12 उन्होंने उससे पूछा, “वह कौन
मनुष्य है, जिसने तुझ से कहा, ‘खाट
उठा और, चल फिर’?”
13 परन्तु जो चंगा हो गया था,
वह नहीं जानता था कि वह कौन है;
क्योंकि उस जगह में भीड़ होने के
कारण यीशु वहाँ से हट गया था।
14 इन बातों के बाद वह यीशु को
मन्दिर में मिला, तब उसने उससे कहा,
**“देख, तू तो चंगा हो गया है; फिर से
पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे
कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।”**
15 उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से
कह दिया, कि जिसने मुझे चंगा किया,
वह यीशु है।
16 इस कारण यहूदी यीशु को
[illegible] [illegible]†, क्योंकि वह ऐसे-ऐसे
काम सब्त के दिन करता था।
17 इस पर यीशु ने उनसे कहा, **“मेरा
पिता परमेश्वर अब तक काम करता
है, और मैं भी काम करता हूँ।”**
18 इस कारण यहूदी और भी अधिक
उसके मार डालने का प्रयत्न करने
लगे, कि वह न केवल सब्त के दिन
की विधि को तोड़ता, परन्तु परमेश्वर
को अपना पिता कहकर, अपने आपको
परमेश्वर के तुल्य ठहराता था।

[illegible] [illegible] [illegible]

19 इस पर यीशु ने उनसे कहा, **“मैं
तुम से सच-सच कहता हूँ, पुत्र आप
से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह
जो पिता को करते देखता है, क्योंकि
जिन-जिन कामों को वह करता है,
उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।**
20 **क्योंकि** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*‡**और जो-जो
काम वह आप करता है, वह सब
उसे दिखाता है; और वह इनसे भी
बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम
अचम्भा करो।**
21 **क्योंकि जैसा पिता मरे हुओं को
उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र
भी जिन्हें चाहता है, उन्हें जिलाता
है।**
22 **पिता किसी का न्याय भी नहीं
करता, परन्तु न्याय करने का सब
काम पुत्र को सौंप दिया है,**
23 **इसलिए कि सब लोग जैसे पिता
का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी
आदर करें; जो पुत्र का आदर नहीं
करता, वह पिता का जिसने उसे भेजा
है, आदर नहीं करता।**
24 **मैं तुम से सच-सच कहता हूँ,
जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले
पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन
उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा
नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार
होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।**
25 **“मैं तुम से सच-सच कहता हूँ,
वह समय आता है, और अब है,
जिसमें मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द
सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएँगे।**
26 **क्योंकि जिस रीति से पिता
अपने आप में जीवन रखता है,
उसी रीति से उसने पुत्र को भी यह
अधिकार दिया है कि अपने आप में
जीवन रखे;**
27 **वरन् उसे न्याय करने का भी
अधिकार दिया है, इसलिए कि वह
मनुष्य का पुत्र है।**
28 **इससे अचम्भा मत करो; क्योंकि**

---

† **5:16** *[illegible] [illegible]:* उन लोगों ने उनका विरोध किया; उनकी लोकप्रियता को नष्ट करने के लिए; उनके चरित्र को खराब करने का प्रयास किया; ‡ **5:20** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* विशेष, अवर्णनीय, असीमित प्रेम जो परमेश्वर को अपने एकलौते पुत्र के लिए है।

वह समय आता है, कि जितने कब्रों में
हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे।
29 जिन्होंने भलाई की है, वे
जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी
उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है,
वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिये जी
उठेंगे।*([illegible]. 12:2)*

[illegible]

30 “मैं अपने आप से कुछ नहीं कर
सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय
करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है;
क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु
अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता
हूँ।
31 यदि मैं आप ही अपनी गवाही
दूँ; तो मेरी गवाही सच्ची नहीं।
32 एक और है जो मेरी गवाही देता
है, और मैं जानता हूँ कि मेरी जो
गवाही वह देता है, वह सच्ची है।
33 तुम ने यूहन्ना से पुछवाया और
उसने सच्चाई की गवाही दी है।
34 *[illegible]*§; फिर भी मैं ये बातें इसलिए
कहता हूँ, कि तुम्हें उद्धार मिले।
35 वह तो जलता और चमकता
हुआ दीपक था; और तुम्हें कुछ देर
तक उसकी ज्योति में, मगन होना
अच्छा लगा।
36 परन्तु मेरे पास जो गवाही है,
वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है:
क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा
करने को सौंपा है अर्थात् यही काम
जो मैं करता हूँ, वे मेरे गवाह हैं, कि
पिता ने मुझे भेजा है।
37 और पिता जिसने मुझे भेजा है,
उसी ने मेरी गवाही दी है: तुम ने न
कभी उसका शब्द सुना, और न उसका
रूप देखा है;
38 और उसके वचन को मन में स्थिर
नहीं रखते, क्योंकि जिसे उसने भेजा
तुम उस पर विश्वास नहीं करते।
39 तुम पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ते हो,
क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त
जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही
है, जो मेरी गवाही देता है;
40 फिर भी तुम जीवन पाने के लिये
मेरे पास आना नहीं चाहते।
41 मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता।
42 परन्तु मैं तुम्हें जानता हूँ, कि तुम
में परमेश्वर का प्रेम नहीं।
43 मैं अपने पिता परमेश्वर के नाम
से आया हूँ, और तुम मुझे ग्रहण नहीं
करते; यदि कोई और अपने ही नाम से
आए, तो उसे ग्रहण कर लोगे।
44 तुम जो एक दूसरे से आदर
चाहते हो और वह आदर जो एकमात्र
परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते,
किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?
45 यह न समझो, कि मैं पिता के
सामने तुम पर दोष लगाऊँगा, तुम
पर दोष लगानेवाला तो है, अर्थात्
मूसा है जिस पर तुम ने भरोसा रखा
है।
46 क्योंकि यदि तुम मूसा पर
विश्वास करते, तो मुझ पर भी
विश्वास करते, इसलिए कि उसने मेरे
विषय में लिखा है।*([illegible] 24:27)*
47 परन्तु यदि तुम उसकी लिखी हुई
बातों पर विश्वास नहीं करते, तो मेरी
बातों पर क्यों विश्वास करोगे?”

§ **5:34** *[illegible]:* वह मसीहत के लिए मनुष्यों की गवाही पर उसके प्रमाण के लिए निर्भर नहीं था, को संदर्भित करता है।

6

[illegible]

1 इन बातों के बाद यीशु गलील की
झील अर्थात् तिबिरियास की झील के
पार गया।
2 और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे
हो ली क्योंकि *[illegible]** ।
3 तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर अपने
चेलों के साथ वहाँ बैठा।
4 और यहूदियों के फसह का पर्व
निकट था।
5 तब यीशु ने अपनी आँखें उठाकर
एक बड़ी भीड़ को अपने पास आते
देखा, और फिलिप्पुस से कहा, **“हम
इनके भोजन के लिये कहाँ से रोटी
मोल लाएँ?”**
6 परन्तु उसने यह बात उसे परखने
के लिये कही; क्योंकि वह स्वयं जानता
था कि वह क्या करेगा।
7 फिलिप्पुस ने उसको उत्तर दिया,
“दो सौ दीनार की रोटी भी उनके लिये
पूरी न होंगी कि उनमें से हर एक को
थोड़ी-थोड़ी मिल जाए।”
8 उसके चेलों में से शमौन पतरस के
भाई अन्द्रियास ने उससे कहा,
9 “यहाँ एक लड़का है, जिसके पास
जौ की पाँच रोटी और दो मछलियाँ
हैं, परन्तु इतने लोगों के लिये वे क्या
हैं।”
10 यीशु ने कहा, **“लोगों को बैठा
दो।”** उस जगह बहुत घास थी। तब
लोग जिनमें पुरुषों की संख्या लगभग
पाँच हजार की थी, बैठ गए।
11 तब यीशु ने रोटियाँ लीं, और
धन्यवाद करके बैठनेवालों को बाँट दीं;
और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे
चाहते थे बाँट दिया।
12 जब वे खाकर तृप्त हो गए, तो
उसने अपने चेलों से कहा, **“बचे हुए
टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फेंका न
जाए।”**
13 इसलिए उन्होंने बटोरा, और
जौ की पाँच रोटियों के टुकड़े जो
खानेवालों से बच रहे थे, उनकी बारह
टोकरियाँ भरीं।
14 तब जो आश्चर्यकर्म उसने कर
दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने
लगे; कि “वह भविष्यद्वक्ता जो जगत
में आनेवाला था निश्चय यही है।”
([illegible] 21:11)
15 यीशु यह जानकर कि वे उसे
राजा बनाने के लिये आकर पकड़ना
चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला
गया।

[illegible]

16 फिर जब संध्या हुई, तो उसके
चेले झील के किनारे गए,
17 और नाव पर चढ़कर झील के पार
कफरनहूम को जाने लगे। उस समय
अंधेरा हो गया था, और यीशु अभी
तक उनके पास नहीं आया था।
18 और आँधी के कारण झील में
लहरें उठने लगीं।
19 तब जब वे खेते-खेते तीन चार
मील के लगभग निकल गए, तो
उन्होंने यीशु को झील पर चलते, और
नाव के निकट आते देखा, और डर
गए।
20 परन्तु उसने उनसे कहा, **“मैं हूँ;
डरो मत।”**
21 तब वे उसे नाव पर चढ़ा लेने के
लिये तैयार हुए और तुरन्त वह नाव
उसी स्थान पर जा पहुँची जहाँ वह
जाते थे।

---

* **6:2** *[illegible]* उन्होंने देखा कि उनमें उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने का सामर्थ्य हैं और वे इसलिए उनके पीछे हो लिए।

[illegible]

22 दूसरे दिन उस भीड़ ने, जो झील
के पार खड़ी थी, यह देखा, कि यहाँ एक
को छोड़कर और कोई छोटी नाव न
थी, और यीशु अपने चेलों के साथ उस
नाव पर न चढ़ा, परन्तु केवल उसके
चेले ही गए थे।
23 (तो भी और छोटी नावें
तिबिरियास से उस जगह के निकट
आईं, जहाँ उन्होंने प्रभु के धन्यवाद
करने के बाद रोटी खाई थी।)
24 जब भीड़ ने देखा, कि यहाँ न
यीशु है, और न उसके चेले, तो वे भी
छोटी-छोटी नावों पर चढ़ के यीशु को
ढूँढ़ते हुए कफरनहूम को पहुँचे।

[illegible]

25 और झील के पार उससे मिलकर
कहा, "हे रब्बी, तू यहाँ कब आया?"
26 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "**मैं
तुम से सच-सच कहता हूँ, तुम मुझे
इसलिए नहीं ढूँढ़ते हो कि तुम ने
अचम्भित काम देखे, परन्तु इसलिए
कि तुम रोटियाँ खाकर तृप्त हुए।**
27 ***[illegible]***[†]**, परन्तु उस
भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक
ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें
देगा, क्योंकि पिता, अर्थात् परमेश्वर
ने उसी पर छाप कर दी है।**"
28 उन्होंने उससे कहा, "परमेश्वर के
कार्य करने के लिये हम क्या करें?"
29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया,
"**परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम
उस पर, जिसे उसने भेजा है, विश्वास
करो।**"
30 तब उन्होंने उससे कहा, "फिर तू
कौन सा चिन्ह दिखाता है कि हम उसे
देखकर तुझ पर विश्वास करें? तू कौन
सा काम दिखाता है?
31 हमारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना
खाया; जैसा लिखा है, 'उसने उन्हें
खाने के लिये स्वर्ग से रोटी दी।' "
([illegible]. 78:24)
32 यीशु ने उनसे कहा, "**मैं तुम से
सच-सच कहता हूँ कि मूसा ने तुम्हें वह
रोटी स्वर्ग से न दी, परन्तु मेरा पिता
तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है।
33 क्योंकि परमेश्वर की रोटी वही
है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को
जीवन देती है।**"
34 तब उन्होंने उससे कहा, "हे
स्वामी, यह रोटी हमें सर्वदा दिया
कर।"
35 यीशु ने उनसे कहा, "***[illegible]***[‡]**: जो मेरे पास
आएगा वह कभी भूखा न होगा और
जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी
प्यासा न होगा।
36 परन्तु मैंने तुम से कहा, कि
तुम ने मुझे देख भी लिया है, तो भी
विश्वास नहीं करते।
37 जो कुछ पिता मुझे देता है
वह सब मेरे पास आएगा, और जो
कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न
निकालूँगा।
38 क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं,
वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी
करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ।
39 और मेरे भेजनेवाले की इच्छा
यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया
है, उसमें से मैं कुछ न खोऊँ परन्तु उसे
अन्तिम दिन फिर जिला उठाऊँ।**

[†] **6:27** *[illegible]:* इसका मतलब यह नहीं हैं कि हम हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कोई प्रयास न करे, परन्तु यह कि हम चिंता प्रकट ना करें। [‡] **6:35** *[illegible]:* यीशु का मतलब है कि वह आत्मिक जीवन का सहारा है या उनकी शिक्षा जीवन और आत्मा के लिए शान्ति देगा।

40 क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह
है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस
पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन
पाए; और मैं उसे अन्तिम दिन फिर
जिला उठाऊँगा।”
41 तब यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने
लगे, इसलिए कि उसने कहा था, “जो
रोटी स्वर्ग से उतरी, वह मैं हूँ।”
42 और उन्होंने कहा, “क्या यह
यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं, जिसके
माता-पिता को हम जानते हैं? तो वह
क्यों कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हूँ?”
43 यीशु ने उनको उत्तर दिया,
“आपस में मत कुड़कुड़ाओ।
44 कोई मेरे पास नहीं आ सकता,
जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है,
उसे खींच न ले; और मैं उसको अन्तिम
दिन फिर जिला उठाऊँगा।
45 भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह
लिखा है, ‘वे सब परमेश्वर की ओर
से सिखाए हुए होंगे।’ जिस किसी ने
पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे
पास आता है।*(▯▯▯. 54:13)*
46 यह नहीं, कि किसी ने पिता को
देखा है परन्तु जो परमेश्वर की ओर से
है, केवल उसी ने पिता को देखा है।
47 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि
जो कोई विश्वास करता है, अनन्त
जीवन उसी का है।
48 जीवन की रोटी मैं हूँ।
49 तुम्हारे पूर्वजों ने जंगल में मन्ना
खाया और मर गए।
50 यह वह रोटी है जो स्वर्ग से
उतरती है ताकि मनुष्य उसमें से खाए
और न मरे।
51 जीवन की रोटी जो स्वर्ग से
उतरी मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी में से
खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा; और
जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये
दूँगा, वह मेरा माँस है।”
52 इस पर यहूदी यह कहकर आपस
में झगड़ने लगे, “यह मनुष्य कैसे हमें
अपना माँस खाने को दे सकता है?”
53 यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से
सच-सच कहता हूँ जब तक मनुष्य के
पुत्र का माँस न खाओ, और उसका
लहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं।
54 जो मेरा माँस खाता, और मेरा
लहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का
है, और मैं अन्तिम दिन फिर उसे
जिला उठाऊँगा।
55 क्योंकि मेरा माँस वास्तव में
खाने की वस्तु है और मेरा लहू वास्तव
में पीने की वस्तु है।
56 जो मेरा माँस खाता और मेरा
लहू पीता है, वह*▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯▯*
▯▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯§, और मैं उसमें।
57 जैसा जीवित पिता ने मुझे भेजा
और मैं पिता के कारण जीवित हूँ वैसा
ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण
जीवित रहेगा।
58 जो रोटी स्वर्ग से उतरी यही है,
पूर्वजों के समान नहीं कि खाया, और
मर गए; जो कोई यह रोटी खाएगा,
वह सर्वदा जीवित रहेगा।”
59 ये बातें उसने कफरनहूम के एक
आराधनालय में उपदेश देते समय
कहीं।

▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯

60 इसलिए उसके चेलों में से बहुतों
ने यह सुनकर कहा, “यह तो कठोर
शिक्षा है; इसे कौन मान सकता है?”
61 यीशु ने अपने मन में यह जानकर
कि मेरे चेले आपस में इस बात पर

§ **6:56** *▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯:* सही मायने में और मुझ में अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। उनमें बसे रहना या बने रहना यह है कि उनके विश्वास के सिद्धान्त में बने रहना

कुड़कुड़ाते हैं, उनसे पूछा, **"क्या इस बात से तुम्हें ठोकर लगती है?**

62 **और यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहाँ वह पहले था, वहाँ ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा?*(▯▯. 47:5)***

63 **आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुम से कहीं हैं वे आत्मा हैं, और जीवन भी हैं।**

64 **परन्तु तुम में से कितने ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते।"** क्योंकि यीशु तो पहले ही से जानता था कि जो विश्वास नहीं करते, वे कौन हैं; और कौन मुझे पकड़वाएगा।

65 और उसने कहा, **"इसलिए मैंने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर से यह वरदान न दिया जाए तब तक वह मेरे पास नहीं आ सकता।"**

▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯

66 इस पर उसके चेलों में से बहुत सारे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले।

67 तब यीशु ने उन बारहों से कहा, **"क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?"**

68 शमौन पतरस ने उसको उत्तर दिया, "हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।

69 और हमने विश्वास किया, और जान गए हैं, कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है।"

70 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, **"क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुन लिया? तो भी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है।"**

71 यह उसने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के विषय में कहा, क्योंकि यही जो उन बारहों में से था, उसे पकड़वाने को था।

7

▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯▯

1 इन बातों के बाद यीशु गलील में फिरता रहा, क्योंकि यहूदी उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे, इसलिए वह यहूदिया में फिरना न चाहता था।

2 और यहूदियों का झोपड़ियों का पर्व निकट था। ***(▯▯▯▯▯▯. 23:34)***

3 इसलिए उसके भाइयों ने उससे कहा, "यहाँ से कूच करके यहूदिया में चला जा, कि जो काम तू करता है, उन्हें तेरे चेले भी देखें।

4 क्योंकि ऐसा कोई न होगा जो प्रसिद्ध होना चाहे, और छिपकर काम करे: यदि तू यह काम करता है, तो अपने आपको जगत पर प्रगट कर।"

5 क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे।

6 तब यीशु ने उनसे कहा, **"मेरा समय अभी नहीं आया; परन्तु तुम्हारे लिये सब समय है।**

7 ***▯▯▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯****[*]**, परन्तु वह मुझसे बैर करता है, क्योंकि मैं उसके विरोध में यह गवाही देता हूँ, कि उसके काम बुरे हैं।**

8 **तुम पर्व में जाओ; मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता, क्योंकि अभी तक मेरा समय पूरा नहीं हुआ।"**

9 वह उनसे ये बातें कहकर गलील ही में रह गया।

▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯▯

10 परन्तु जब उसके भाई पर्व में चले गए, तो वह आप ही प्रगट में नहीं, परन्तु मानो गुप्त होकर गया।

[*] **7:7** *▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯:* तुम संसार के विरोध में कोई सिद्धान्त के दावे पेश नहीं करते।

11 यहूदी पर्व में उसे यह कहकर ढूँढ़ने लगे कि “वह कहाँ है?”

12 और लोगों में उसके विषय चुपके-चुपके बहुत सी बातें हुईं: कितने कहते थे, “वह भला मनुष्य है।” और कितने कहते थे, “नहीं, वह लोगों को भरमाता है।”

13 तो भी यहूदियों के भय के मारे कोई व्यक्ति उसके विषय में खुलकर नहीं बोलता था।

□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□

14 और जब पर्व के आधे दिन बीत गए; तो यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश करने लगा।

15 तब यहूदियों ने अचम्भा करके कहा, “इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई?”

16 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, **“मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का है।**

17 ***□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□***† **, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूँ।**

18 **जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बढ़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उसमें अधर्म नहीं।**

19 **क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी? तो भी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता। तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो?”**

20 लोगों ने उत्तर दिया; “तुझ में दुष्टात्मा है! कौन तुझे मार डालना चाहता है?”

21 यीशु ने उनको उत्तर दिया, **“मैंने एक काम किया, और तुम सब अचम्भा करते हो।**

22 **इसी कारण मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी है, यह नहीं कि वह मूसा की ओर से है परन्तु पूर्वजों से चली आई है, और तुम सब्त के दिन को मनुष्य का खतना करते हो।*(□□□□□. 17:10-13, □□□□□□. 12:3)***

23 **जब सब्त के दिन मनुष्य का खतना किया जाता है ताकि मूसा की व्यवस्था की आज्ञा टल न जाए, तो तुम मुझ पर क्यों इसलिए क्रोध करते हो, कि मैंने सब्त के दिन एक मनुष्य को पूरी रीति से चंगा किया।**

24 **मुँह देखकर न्याय न करो, परन्तु ठीक-ठीक न्याय करो।”*(□□□□. 11:3, □□□□. 8:15)***

□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□?

25 तब कितने यरूशलेमवासी कहने लगे, “क्या यह वह नहीं, जिसके मार डालने का प्रयत्न किया जा रहा है?

26 परन्तु देखो, वह तो खुल्लमखुल्ला बातें करता है और कोई उससे कुछ नहीं कहता; क्या सम्भव है कि सरदारों ने सच-सच जान लिया है; कि यही मसीह है?

27 इसको तो हम जानते हैं, कि यह कहाँ का है; परन्तु मसीह जब आएगा, तो कोई न जानेगा कि वह कहाँ का है।”

28 तब यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए पुकारके कहा, **“तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ। मैं तो आप से नहीं आया परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, उसको तुम नहीं जानते।**

---

† **7:17** *□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□:* वस्तुतः यदि कोई मनुष्य इच्छा करता है या परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार है।

29 **मैं उसे जानता हूँ; क्योंकि मैं उसकी ओर से हूँ और उसी ने मुझे भेजा है।"**
30 इस पर उन्होंने उसे पकड़ना चाहा तो भी किसी ने उस पर हाथ न डाला, क्योंकि उसका समय अब तक न आया था।
31 और भीड़ में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया, और कहने लगे, "मसीह जब आएगा, तो क्या इससे अधिक चिन्हों को दिखाएगा जो इसने दिखाए?"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

32 फरीसियों ने लोगों को उसके विषय में ये बातें चुपके-चुपके करते सुना; और प्रधान याजकों और फरीसियों ने उसे पकड़ने को सिपाही भेजे।
33 इस पर यीशु ने कहा, **"मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूँ; तब अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊँगा।**
34 **तुम मुझे ढूँढ़ोगे, परन्तु नहीं पाओगे; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।"**
35 यहूदियों ने आपस में कहा, "यह कहाँ जाएगा कि हम इसे न पाएँगे? क्या वह उन यहूदियों के पास जाएगा जो यूनानियों में तितर-बितर होकर रहते हैं, और यूनानियों को भी उपदेश देगा?
36 यह क्या बात है जो उसने कही, कि 'तुम मुझे ढूँढ़ोगे, परन्तु न पाओगे: और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते'?"

[illegible]-[illegible] [illegible] [illegible]

37 फिर पर्व के अन्तिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकारकर कहा, **"यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आए और पीए।** ***([illegible]. 55:1)***
38 ***[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]***‡**, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।' "**
39 उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था। ***([illegible]. 44:3)***
40 तब भीड़ में से किसी किसी ने ये बातें सुनकर कहा, "सचमुच यही वह भविष्यद्वक्ता है।" ***([illegible] 21:11)***
41 औरों ने कहा, "यह मसीह है," परन्तु किसी ने कहा, "क्यों? क्या मसीह गलील से आएगा?
42 क्या पवित्रशास्त्र में नहीं लिखा कि मसीह दाऊद के वंश से और बैतलहम गाँव से आएगा, जहाँ दाऊद रहता था?" ***([illegible]. 11:1, [illegible] 5:2)***
43 अतः उसके कारण लोगों में फूट पड़ी।
44 उनमें से कितने उसे पकड़ना चाहते थे, परन्तु किसी ने उस पर हाथ न डाला।
45 तब सिपाही प्रधान याजकों और फरीसियों के पास आए, और उन्होंने उनसे कहा, "तुम उसे क्यों नहीं लाए?"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

46 सिपाहियों ने उत्तर दिया, "किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न की।"
47 फरीसियों ने उनको उत्तर दिया, "क्या तुम भी भरमाए गए हो?
48 क्या शासकों या फरीसियों में से किसी ने भी उस पर विश्वास किया है?

‡ **7:38** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* वह जो मुझे मसीह के रूप में स्वीकार करता है और उद्धार के लिए मुझ में विश्वास करता हैं।

49 परन्तु ये लोग जो व्यवस्था नहीं
जानते, श्रापित हैं।”
50 नीकुदेमुस ने, (जो पहले उसके
पास आया था और उनमें से एक था),
उनसे कहा,
51 “क्या हमारी व्यवस्था किसी
व्यक्ति को जब तक पहले उसकी
सुनकर जान न ले कि वह क्या करता
है; दोषी ठहराती है?”
52 उन्होंने उसे उत्तर दिया, “क्या
तू भी गलील का है? ढूँढ़ और देख,
कि गलील से कोई भविष्यद्वक्ता प्रगट
नहीं होने का।”
53 तब सब कोई अपने-अपने घर
चले गए।

8

[illegible] [illegible] [illegible]

1 यीशु *[illegible] [illegible] [illegible]*[*] पर
गया।
2 और भोर को फिर मन्दिर में आया,
और सब लोग उसके पास आए; और
वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।
3 तब शास्त्रियों और फरीसियों ने
एक स्त्री को लाकर जो व्यभिचार में
पकड़ी गई थी, और उसको बीच में
खड़ा करके यीशु से कहा,
4 “हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते
पकड़ी गई है।
5 व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी
है कि ऐसी स्त्रियों को पथराव करें;
अतः तू इस स्त्री के विषय में क्या
कहता है?” ***([illegible]. 20:10)***
6 उन्होंने उसको परखने के लिये यह
बात कही ताकि उस पर दोष लगाने
के लिये कोई बात पाएँ, परन्तु यीशु
झुककर उँगली से भूमि पर लिखने
लगा।
7 जब वे उससे पूछते रहे, तो उसने
सीधे होकर उनसे कहा, **“तुम में जो
निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर
मारे।”*([illegible]. 2:1)***
8 और फिर झुककर भूमि पर उँगली
से लिखने लगा।
9 परन्तु वे यह सुनकर बड़ों से लेकर
छोटों तक एक-एक करके निकल गए,
और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री
वहीं बीच में खड़ी रह गई।
10 यीशु ने सीधे होकर उससे कहा,
**“हे नारी, वे कहाँ गए? क्या किसी ने
तुझ पर दण्ड की आज्ञा न दी?”**
11 उसने कहा, “हे प्रभु, किसी ने
नहीं।” यीशु ने कहा, **“मैं भी तुझ पर
दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और
फिर पाप न करना।”**

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

12 तब यीशु ने फिर लोगों से
कहा, **“जगत की ज्योति मैं हूँ; जो
मेरे पीछे हो लेगा, वह अंधकार में
न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति
पाएगा।”*([illegible]. 12:46)***
13 फरीसियों ने उससे कहा; “तू
अपनी गवाही आप देता है; तेरी
गवाही ठीक नहीं।”
14 यीशु ने उनको उत्तर दिया, **“यदि
मैं अपनी गवाही आप देता हूँ, तो
भी मेरी गवाही ठीक है, क्योंकि*[illegible]
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]*[†]और कहाँ को जाता हूँ?
परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से
आता हूँ या कहाँ को जाता हूँ।
15 तुम शरीर के अनुसार न्याय
करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं
करता।**

---

* **8:1** *[illegible] [illegible] [illegible]:* यरूशलेम के पूर्व से सीधे करीब एक मील की दूरी पर यह पहाड़ हैं † **8:14** *[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* मैं जानता हूँ किस अधिकार के द्वारा मैं यह करता हूँ; मैं जानता हूँ किसके द्वारा मैं भेजा गया हूँ

16 **और यदि मैं न्याय करूँ भी, तो मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं पिता के साथ हूँ, जिसने मुझे भेजा है।**

17 **और तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है; कि दो जनों की गवाही मिलकर ठीक होती है।**

18 **एक तो मैं आप अपनी गवाही देता हूँ, और दूसरा पिता मेरी गवाही देता है जिसने मुझे भेजा।"*(**[illegible]*. 19:15)*

19 उन्होंने उससे कहा, "तेरा पिता कहाँ है?" यीशु ने उत्तर दिया, **"न तुम मुझे जानते हो, न मेरे पिता को, यदि मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जानते।"**

20 ये बातें उसने मन्दिर में उपदेश देते हुए भण्डार घर में कहीं, और किसी ने उसे न पकड़ा; क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया था।

[illegible]

21 उसने फिर उनसे कहा, **"मैं जाता हूँ, और तुम मुझे ढूँढ़ोगे और अपने पाप में मरोगे; जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।"**

22 इस पर यहूदियों ने कहा, "क्या वह अपने आपको मार डालेगा, जो कहता है, **'जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते'?"**

23 उसने उनसे कहा, **"तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूँ; तुम संसार के हो, मैं संसार का नहीं।**

24 **इसलिए मैंने तुम से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ, तो अपने पापों में मरोगे।"**

25 उन्होंने उससे कहा, "तू कौन है?" यीशु ने उनसे कहा, **"वही हूँ जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूँ।**

26 **तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है; और जो मैंने उससे सुना है, वही जगत से कहता हूँ।"**

27 वे न समझे कि हम से पिता के विषय में कहता है।

28 तब यीशु ने कहा, **"जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे मेरे पिता परमेश्वर ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूँ।**

29 **और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ, जिससे वह प्रसन्न होता है।"**

30 वह ये बातें कह ही रहा था, कि बहुतों ने यीशु पर विश्वास किया।

[illegible]

31 तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहा, **"यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।**

32 **और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"**

33 उन्होंने उसको उत्तर दिया, "हम तो अब्राहम के वंश से हैं, और कभी किसी के दास नहीं हुए; फिर तू क्यों कहता है, कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे?"

34 यीशु ने उनको उत्तर दिया, **"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।**

35 **और दास सदा घर में नहीं रहता; पुत्र सदा रहता है।***(*[illegible]*. 4:30)*

36 **इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।**

37 **मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के**
वंश से हो; तो भी मेरा वचन तुम्हारे
हृदय में जगह नहीं पाता, इसलिए
तुम मुझे मार डालना चाहते हो।
38 **मैं वही कहता हूँ, जो अपने पिता**
के यहाँ देखा है; और तुम वही करते
रहते हो जो तुम ने अपने पिता से सुना
है।"
39 उन्होंने उसको उत्तर दिया,
"हमारा पिता तो अब्राहम है।" यीशु
ने उनसे कहा, **"यदि तुम अब्राहम के**
सन्तान होते, तो अब्राहम के समान
काम करते।
40 **परन्तु अब तुम मुझ जैसे मनुष्य**
को मार डालना चाहते हो, जिसने
तुम्हें वह सत्य वचन बताया जो
परमेश्वर से सुना, यह तो अब्राहम ने
नहीं किया था।
41 **तुम अपने पिता के समान काम**
करते हो" उन्होंने उससे कहा, "हम
व्यभिचार से नहीं जन्मे, हमारा एक
पिता है अर्थात् परमेश्वर।"
42 यीशु ने उनसे कहा, **"यदि**
परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम
मुझसे प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर
में से निकलकर आया हूँ; मैं आप से
नहीं आया, परन्तु उसी ने मुझे भेजा।
43 **तुम मेरी बात क्यों नहीं**
समझते? इसलिए कि मेरा वचन सुन
नहीं सकते।
44 *[illegible]*‡**, और अपने पिता की लालसाओं**
को पूरा करना चाहते हो। वह तो
आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर
स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें
है ही नहीं; जब वह झूठ बोलता,
तो अपने स्वभाव ही से बोलता है;
क्योंकि वह झूठा है, वरन् झूठ का
पिता है।*([illegible]. 13:10)*
45 **परन्तु मैं जो सच बोलता हूँ,**
इसलिए तुम मेरा विश्वास नहीं
करते।
46 **तुम में से कौन मुझे पापी**
ठहराता है? और यदि मैं सच बोलता
हूँ, तो तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं
करते?
47 *[illegible]*§**, वह परमेश्वर की बातें सुनता**
है; और तुम इसलिए नहीं सुनते कि
परमेश्वर की ओर से नहीं हो।"

[illegible]

48 यह सुन यहूदियों ने उससे कहा,
"क्या हम ठीक नहीं कहते, कि तू
सामरी है, और तुझ में दुष्टात्मा है?"
49 यीशु ने उत्तर दिया, **"मुझ में**
दुष्टात्मा नहीं; परन्तु मैं अपने पिता
का आदर करता हूँ, और तुम मेरा
निरादर करते हो।
50 **परन्तु मैं अपनी प्रतिष्ठा नहीं**
चाहता, हाँ, एक है जो चाहता है, और
न्याय करता है।
51 **मैं तुम से सच-सच कहता हूँ,**
कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर
चलेगा, तो वह अनन्तकाल तक मृत्यु
को न देखेगा।"
52 लोगों ने उससे कहा, "अब हमने
जान लिया कि तुझ में दुष्टात्मा है:
अब्राहम मर गया, और भविष्यद्वक्ता
भी मर गए हैं और तू कहता है, 'यदि
कोई मेरे वचन पर चलेगा तो वह
अनन्तकाल तक मृत्यु का स्वाद न
चखेगा।'
53 हमारा पिता अब्राहम तो मर
गया, क्या तू उससे बड़ा है? और

‡ **8:44** *[illegible]:* यही कारण है, तुम्हारे पास गुस्सा, शैतान का स्वभाव, या शैतान की आत्मा है। § **8:47** *[illegible]:* वह जो परमेश्वर से प्रेम, भय, और सम्मान करता है।

भविष्यद्वक्ता भी मर गए, तू अपने
आपको क्या ठहराता है?”
54 यीशु ने उत्तर दिया, **“यदि मैं
आप अपनी महिमा करूँ, तो मेरी
महिमा कुछ नहीं, परन्तु मेरी महिमा
करनेवाला मेरा पिता है, जिसे तुम
कहते हो, कि वह हमारा परमेश्वर है।**
55 **और तुम ने तो उसे नहीं जाना:
परन्तु मैं उसे जानता हूँ; और यदि कहूँ
कि मैं उसे नहीं जानता, तो मैं तुम्हारे
समान झूठा ठहरूँगा: परन्तु मैं उसे
जानता, और उसके वचन पर चलता
हूँ।**
56 **तुम्हारा पिता अब्राहम मेरा दिन
देखने की आशा से बहुत मगन था;
और उसने देखा, और आनन्द किया।”**
57 लोगों ने उससे कहा, “अब तक
तू पचास वर्ष का नहीं, फिर भी तूने
अब्राहम को देखा है?”
58 यीशु ने उनसे कहा, **“मैं तुम से
सच-सच कहता हूँ, कि पहले इसके कि
अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।”**
59 तब उन्होंने उसे मारने के लिये
पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर
मन्दिर से निकल गया।

9

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 फिर जाते हुए उसने एक मनुष्य
को देखा, जो जन्म से अंधा था।
2 और उसके चेलों ने उससे पूछा, “हे
*[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]**
कि यह अंधा जन्मा, इस मनुष्य ने, या
उसके माता पिता ने?”
3 यीशु ने उत्तर दिया, **“न तो इसने
पाप किया था, न इसके माता पिता ने
परन्तु यह इसलिए हुआ, कि परमेश्वर
के काम उसमें प्रगट हों।**
4 **जिसने मुझे भेजा है; हमें उसके
काम दिन ही दिन में करना अवश्य
है। वह रात आनेवाली है जिसमें कोई
काम नहीं कर सकता।**
5 **जब तक मैं जगत में हूँ, तब तक
जगत की ज्योति हूँ।”***([illegible]. 8:12)*
6 यह कहकर उसने भूमि पर थूका
और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह
मिट्टी उस अंधे की आँखों पर लगाकर।
7 उससे कहा, **“जा, शीलोह के
कुण्ड में धो ले”** (शीलोह का अर्थ
भेजा हुआ है) अतः उसने जाकर धोया,
और देखता हुआ लौट आया। ***([illegible].
35:5)***
8 तब पड़ोसी और जिन्होंने पहले
उसे भीख माँगते देखा था, कहने लगे,
“क्या यह वही नहीं, जो बैठा भीख
माँगा करता था?”
9 कुछ लोगों ने कहा, “यह वही
है,” औरों ने कहा, “नहीं, परन्तु उसके
समान है” उसने कहा, “मैं वही हूँ।”
10 तब वे उससे पूछने लगे, “तेरी
आँखें कैसे खुल गईं?”
11 उसने उत्तर दिया, “यीशु नामक
एक व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और
मेरी आँखों पर लगाकर मुझसे कहा,
‘शीलोह में जाकर धो ले,’ तो मैं गया,
और धोकर देखने लगा।”
12 उन्होंने उससे पूछा, “वह कहाँ
है?” उसने कहा, “मैं नहीं जानता।”

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible]

13 लोग उसे जो पहले अंधा था
फरीसियों के पास ले गए।

* **9:2** *[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* यह यहूदियों के बीच एक सार्वभौमिक विचार था कि सभी प्रकार की आपदा पाप के प्रभाव से होती थी।

14 जिस दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उसकी आँखें खोली थी वह सब्त का दिन था।

15 फिर फरीसियों ने भी उससे पूछा; तेरी आँखें किस रीति से खुल गई? उसने उनसे कहा, “उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगाई, फिर मैंने धो लिया, और अब देखता हूँ।”

16 इस पर कई फरीसी कहने लगे, “*[illegible]*[†], क्योंकि वह सब्त का दिन नहीं मानता।” औरों ने कहा, “पापी मनुष्य कैसे ऐसे चिन्ह दिखा सकता है?” अतः उनमें फूट पड़ी।

17 उन्होंने उस अंधे से फिर कहा, “उसने जो तेरी आँखें खोली, तू उसके विषय में क्या कहता है?” उसने कहा, “यह भविष्यद्वक्ता है।”

18 परन्तु यहूदियों को विश्वास न हुआ कि यह अंधा था और अब देखता है जब तक उन्होंने उसके माता-पिता को जिसकी आँखें खुल गई थी, बुलाकर

19 उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि अंधा जन्मा था? फिर अब कैसे देखता है?”

20 उसके माता-पिता ने उत्तर दिया, “हम तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और अंधा जन्मा था।

21 परन्तु हम यह नहीं जानते हैं कि अब कैसे देखता है; और न यह जानते हैं, कि किसने उसकी आँखें खोलीं; वह सयाना है; उसी से पूछ लो; वह अपने विषय में आप कह देगा।”

22 ये बातें उसके माता-पिता ने इसलिए कहीं क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे; क्योंकि यहूदी एकमत हो चुके थे, कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो आराधनालय से निकाला जाए।

23 इसी कारण उसके माता-पिता ने कहा, “वह सयाना है; उसी से पूछ लो।”

24 तब उन्होंने उस मनुष्य को जो अंधा था दूसरी बार बुलाकर उससे कहा, “परमेश्वर की स्तुति कर; हम तो जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है।”

25 उसने उत्तर दिया, “मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहीं मैं एक बात जानता हूँ कि मैं अंधा था और अब देखता हूँ।”

26 उन्होंने उससे फिर कहा, “उसने तेरे साथ क्या किया? और किस तरह तेरी आँखें खोली?”

27 उसने उनसे कहा, “मैं तो तुम से कह चुका, और तुम ने न सुना; अब दूसरी बार क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके चेले होना चाहते हो?”

28 तब वे उसे बुरा-भला कहकर बोले, “तू ही उसका चेला है; हम तो मूसा के चेले हैं।

29 हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं; परन्तु इस मनुष्य को नहीं जानते की कहाँ का है।”

30 उसने उनको उत्तर दिया, “यह तो अचम्भे की बात है कि तुम नहीं जानते कि वह कहाँ का है तो भी उसने मेरी आँखें खोल दीं।

31 हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उसकी इच्छा पर चलता है, तो वह उसकी सुनता है। ***([illegible]. 15:29)***

32 जगत के आरम्भ से यह कभी सुनने में नहीं आया, कि किसी ने भी जन्म के अंधे की आँखें खोली हों।

33 यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता।”

---

† **9:16** *[illegible]*: परमेश्वर की ओर से नहीं भेजा गया, या परमेश्वर का मित्र नहीं हो सकता।

34उन्होंने उसको उत्तर दिया, "तू तो
बिलकुल पापों में जन्मा है, तू हमें क्या
सिखाता है?" और उन्होंने उसे बाहर
निकाल दिया।

[illegible]

35 यीशु ने सुना, कि उन्होंने उसे
बाहर निकाल दिया है; और जब उससे
भेंट हुई तो कहा, **"क्या तू परमेश्वर के
पुत्र पर विश्वास करता है?"**
36 उसने उत्तर दिया, "हे प्रभु, वह
कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूँ?"
37 यीशु ने उससे कहा, **"तूने उसे
देखा भी है; और जो तेरे साथ बातें कर
रहा है वही है।"**
38 उसने कहा, "हे प्रभु, *[illegible]*‡।" और उसे
दण्डवत् किया।
39 तब यीशु ने कहा, **"मैं इस जगत
में न्याय के लिये आया हूँ, ताकि जो
नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे
अंधे हो जाएँ।"**
40 जो फरीसी उसके साथ थे,
उन्होंने ये बातें सुनकर उससे कहा,
"क्या हम भी अंधे हैं?"
41 यीशु ने उनसे कहा, **"यदि तुम
अंधे होते तो पापी न ठहरते परन्तु
अब कहते हो, कि हम देखते हैं,
इसलिए तुम्हारा पाप बना रहता है।**

10

[illegible]

1 **"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि
जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश
नहीं करता, परन्तु किसी दूसरी ओर
से चढ़ जाता है,** *[illegible]****।**
2 **परन्तु** *[illegible]*†**वह भेड़ों का
चरवाहा है।**
3 **उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल
देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती
हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले
लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता
है।**
4 **और जब वह अपनी सब भेड़ों
को बाहर निकाल चुकता है, तो उनके
आगे-आगे चलता है, और भेड़ें उसके
पीछे-पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे
उसका शब्द पहचानती हैं।**
5 **परन्तु वे पराए के पीछे नहीं
जाएँगी, परन्तु उससे भागेंगी, क्योंकि
वे परायों का शब्द नहीं पहचानतीं।"**
6 यीशु ने उनसे यह दृष्टान्त कहा,
परन्तु वे न समझे कि ये क्या बातें हैं
जो वह हम से कहता है।

[illegible]

7 तब यीशु ने उनसे फिर कहा, **"मैं
तुम से सच-सच कहता हूँ, कि भेड़ों का
द्वार मैं हूँ।**
8 **जितने मुझसे पहले आए; वे सब
चोर और डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उनकी
न सुनी।***([illegible]. 23:1, [illegible]. 10:27)*
9 **द्वार मैं हूँ; यदि कोई मेरे द्वारा
भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और
भीतर बाहर आया-जाया करेगा और
चारा पाएगा।***([illegible]. 118:20)*
10 **चोर किसी और काम के लिये
नहीं परन्तु केवल चोरी करने और
हत्या करने और नष्ट करने को आता
है। मैं इसलिए आया कि वे जीवन
पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।**

‡ **9:38** *[illegible]*: यह आभार प्रकट करने की और विश्वास की उमड़ रही अभिव्यक्ति थी। * **10:1** *[illegible]*: वह जो चुपचाप और गुप्त रूप से दूसरों की सम्पत्ति दूर ले जाता है। † **10:2** *[illegible]*: यह एक तरीका था जिसमें एक चरवाहा अपने झुण्ड के बीच में प्रवेश करता था।

11 **अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा
चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण
देता है।**(*[illegible]. 23:1, [illegible]. 40:11,
[illegible]. 34:15)*
12 **मजदूर जो न चरवाहा है, और
न भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को
आते हुए देख, भेड़ों को छोड़कर भाग
जाता है, और भेड़िया उन्हें पकड़ता
और तितर-बितर कर देता है।**
13 **वह इसलिए भाग जाता है कि
वह मजदूर है, और उसको भेड़ों की
चिन्ता नहीं।**
14 **अच्छा चरवाहा मैं हूँ;**[illegible]
[illegible][‡]**,
और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं।**
15 **जिस तरह पिता मुझे जानता है,
और मैं पिता को जानता हूँ। और मैं
भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूँ।**
16 **और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस
भेड़शाला की नहीं; मुझे उनका भी
लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी;
तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा
होगा।**(*[illegible]. 56:8, [illegible]. 34:23,
[illegible]. 37:24)*
17 **पिता इसलिए मुझसे प्रेम रखता
है, कि मैं अपना प्राण देता हूँ, कि उसे
फिर ले लूँ।**
18 [illegible]
[illegible][§]**, वरन् मैं उसे आप ही देता हूँ।
मुझे उसके देने का अधिकार है, और
उसे फिर लेने का भी अधिकार है। यह
आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।"**
19 इन बातों के कारण यहूदियों में
फिर फूट पड़ी।
20 उनमें से बहुत सारे कहने लगे,
"उसमें दुष्टात्मा है, और वह पागल है;
उसकी क्यों सुनते हो?"
21 औरों ने कहा, "ये बातें ऐसे
मनुष्य की नहीं जिसमें दुष्टात्मा हो।
क्या दुष्टात्मा अंधों की आँखें खोल
सकती है?"

[illegible]

22 यरूशलेम में स्थापन पर्व हुआ,
और जाड़े की ऋतु थी।
23 और यीशु मन्दिर में सुलैमान के
ओसारे में टहल रहा था।
24 तब यहूदियों ने उसे आ घेरा
और पूछा, "तू हमारे मन को कब तक
दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है,
तो हम से साफ कह दे।"
25 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, **"मैंने
तुम से कह दिया, और तुम विश्वास
करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता
के नाम से करता हूँ वे ही मेरे गवाह हैं।**
26 **परन्तु तुम इसलिए विश्वास
नहीं करते, कि मेरी भेड़ों में से नहीं
हो।**
27 **मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं,
और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे
पीछे-पीछे चलती हैं।**
28 **और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता
हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगी, और
कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।**
29 **मेरा पिता, जिसने उन्हें मुझ को
दिया है, सबसे बड़ा है, और कोई उन्हें
पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।**
30 **मैं और पिता एक हैं।"**
31 यहूदियों ने उसे पथराव करने को
फिर पत्थर उठाए।
32 इस पर यीशु ने उनसे कहा, **"मैंने
तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से**

---

‡ **10:14** *[illegible]:* मैं अपने लोगों को जानता हूँ, यहाँ यह शब्द "जानता हूँ" स्नेही सम्बंध या प्रेम की भावना के लिए उपयोग किया गया है। § **10:18** *[illegible]:* यह कि, कोई भी बल द्वारा इसे ले नहीं सकता, या जब तक कि मैं अपने आपको उसके हाथों में सौंप दूँ।

भले काम दिखाए हैं, उनमें से किस
काम के लिये तुम मुझे पथराव करते
हो?"
33 यहूदियों ने उसको उत्तर दिया,
"भले काम के लिये हम तुझे पथराव
नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा
के कारण और इसलिए कि तू मनुष्य
होकर अपने आपको परमेश्वर बनाता
है।" *([illegible]. 24:16)*
34 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, **"क्या**
तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है
कि 'मैंने कहा, तुम ईश्वर हो'?*([illegible].*
82:6)
35 **यदि उसने उन्हें ईश्वर कहा**
जिनके पास परमेश्वर का वचन पहुँचा
(और पवित्रशास्त्र की बात लोप नहीं
हो सकती।)
36 **तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर**
जगत में भेजा है, तुम उससे कहते हो,
'तू निन्दा करता है,' इसलिए कि मैंने
कहा, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।'
37 **यदि मैं अपने पिता का काम**
नहीं करता, तो मेरा विश्वास न करो।
38 **परन्तु यदि मैं करता हूँ, तो चाहे**
मेरा विश्वास न भी करो, परन्तु उन
कामों पर विश्वास करो, ताकि तुम
जानो, और समझो, कि पिता मुझ में
है, और मैं पिता में हूँ।"
39 तब उन्होंने फिर उसे पकड़ने का
प्रयत्न किया परन्तु वह उनके हाथ से
निकल गया।
40 फिर वह यरदन के पार उस स्थान
पर चला गया, जहाँ यूहन्ना पहले
बपतिस्मा दिया करता था, और वहीं
रहा।
41 और बहुत सारे लोग उसके पास
आकर कहते थे, "यूहन्ना ने तो कोई
चिन्ह नहीं दिखाया, परन्तु जो कुछ
यूहन्ना ने इसके विषय में कहा था वह
सब सच था।"
42 और वहाँ बहुतों ने उस पर
विश्वास किया।

11

[illegible]
1 मरियम और उसकी बहन मार्था
के गाँव बैतनिय्याह का लाज़र नामक
एक मनुष्य बीमार था।
2 यह वही मरियम थी जिसने प्रभु
पर इत्र डालकर उसके पाँवों को अपने
बालों से पोंछा था, इसी का भाई
लाज़र बीमार था।
3 तब उसकी बहनों ने उसे कहला
भेजा, "हे प्रभु, देख, *[illegible]*
*[illegible]**, वह बीमार है।"
4 यह सुनकर यीशु ने कहा,
"यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु
परमेश्वर की महिमा के लिये है,
कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की
महिमा हो।"
5 और यीशु मार्था और उसकी बहन
और लाज़र से प्रेम रखता था।
6 जब उसने सुना, कि वह बीमार है,
तो जिस स्थान पर वह था, वहाँ दो दिन
और ठहर गया।
7 फिर इसके बाद उसने चेलों से
कहा, **"आओ, हम फिर यहूदिया को**
चलें।"
8 चेलों ने उससे कहा, "हे रब्बी,
अभी तो यहूदी तुझे पथराव करना
चाहते थे, और क्या तू फिर भी वहीं
जाता है?"
9 यीशु ने उत्तर दिया, **"क्या दिन**
के बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई
दिन को चले, तो ठोकर नहीं खाता,
क्योंकि इस जगत का उजाला देखता
है।

---

* **11:3** *[illegible]:* इस परिवार के सदस्य कुछ विशेष लोगों में और हमारे प्रभु के अन्तरंग मित्रों में से एक थे

10 **परन्तु यदि कोई रात को चले, तो
ठोकर खाता है, क्योंकि उसमें प्रकाश
नहीं।"**
11 उसने ये बातें कहीं, और इसके
बाद उनसे कहने लगा, **"हमारा मित्र
लाज़र सो गया है, परन्तु मैं उसे
जगाने जाता हूँ।"**
12 तब चेलों ने उससे कहा, "हे प्रभु,
यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा।"
13 यीशु ने तो उसकी मृत्यु के विषय
में कहा था: परन्तु वे समझे कि उसने
नींद से सो जाने के विषय में कहा।
14 तब यीशु ने उनसे साफ कह
दिया, **"लाज़र मर गया है।**
15 **और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित
हूँ कि मैं वहाँ न था जिससे तुम
विश्वास करो। परन्तु अब आओ, हम
उसके पास चलें।"**
16 तब थोमा ने जो दिदुमुस
कहलाता है, अपने साथ के चेलों से
कहा, "आओ, हम भी उसके साथ मरने
को चलें।"

[illegible]

17 फिर यीशु को आकर यह मालूम
हुआ कि उसे कब्र में रखे चार दिन हो
चुके हैं।
18 बैतनिय्याह यरूशलेम के समीप
कोई दो मील की दूरी पर था।
19 और बहुत से यहूदी मार्था और
मरियम के पास उनके भाई के विषय में
शान्ति देने के लिये आए थे।
20 जब मार्था यीशु के आने का
समाचार सुनकर उससे भेंट करने को
गई, परन्तु मरियम घर में बैठी रही।
21 मार्था ने यीशु से कहा, "हे प्रभु,
यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई कदापि
न मरता।
22 और अब भी मैं जानती हूँ, कि जो
कुछ तू परमेश्वर से माँगेगा, परमेश्वर
तुझे देगा।"
23 यीशु ने उससे कहा, **"तेरा भाई
जी उठेगा।"**
24 मार्था ने उससे कहा, "मैं जानती
हूँ, अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के
समय वह जी उठेगा।" ***([illegible].
24:15)***
25 यीशु ने उससे कहा,
**"*[illegible]*[†], जो कोई मुझ पर विश्वास
करता है वह यदि मर भी जाए, तो भी
जीएगा।**
26 **और जो कोई जीवित है, और
मुझ पर विश्वास करता है, वह
अनन्तकाल तक न मरेगा। क्या तू इस
बात पर विश्वास करती है?"**
27 उसने उससे कहा, "हाँ, हे प्रभु, मैं
विश्वास कर चुकी हूँ, कि परमेश्वर का
पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था,
वह तू ही है।"

[illegible]

28 यह कहकर वह चली गई, और
अपनी बहन मरियम को चुपके से
बुलाकर कहा, "गुरु यहीं है, और तुझे
बुलाता है।"
29 वह सुनते ही तुरन्त उठकर उसके
पास आई।
30 (यीशु अभी गाँव में नहीं पहुँचा
था, परन्तु उसी स्थान में था जहाँ मार्था
ने उससे भेंट की थी।)
31 तब जो यहूदी उसके साथ घर
में थे, और उसे शान्ति दे रहे थे, यह
देखकर कि मरियम तुरन्त उठकर बाहर
गई है और यह समझकर कि वह कब्र
पर रोने को जाती है, उसके पीछे हो
लिये।

† **11:25** *[illegible]:* अर्थात् वह पुनरुत्थान का कर्ता है या उसके होने का कारण है।

32 जब मरियम वहाँ पहुँची जहाँ
यीशु था, तो उसे देखते ही उसके पाँवों
पर गिरकर कहा, “हे प्रभु, यदि तू यहाँ
होता तो मेरा भाई न मरता।”
33 जब यीशु ने उसको और उन
यहूदियों को जो उसके साथ आए थे
रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही
उदास और व्याकुल हुआ,
34 और कहा, **“तुम ने उसे कहाँ रखा
है?”** उन्होंने उससे कहा, “हे प्रभु,
चलकर देख ले।”
35 [illegible]‡।
36 तब यहूदी कहने लगे, “देखो, वह
उससे कैसा प्यार करता था।”
37 परन्तु उनमें से कितनों ने कहा,
“क्या यह जिसने अंधे की आँखें खोलीं,
यह भी न कर सका कि यह मनुष्य न
मरता?”
38 यीशु मन में फिर बहुत ही उदास
होकर कब्र पर आया, वह एक गुफा थी,
और एक पत्थर उस पर धरा था।
39 यीशु ने कहा, **“पत्थर को
उठाओ।”** उस मरे हुए की बहन मार्था
उससे कहने लगी, “हे प्रभु, उसमें से
अब तो दुर्गन्ध आती है, क्योंकि उसे
मरे चार दिन हो गए।”
40 यीशु ने उससे कहा, **“क्या मैंने
तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास
करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को
देखेगी।”**
41 तब उन्होंने उस पत्थर को
हटाया, फिर यीशु ने आँखें उठाकर
कहा, **“हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद
करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है।**
42 **और मैं जानता था, कि तू सदा
मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस-
पास खड़ी है, उनके कारण मैंने यह
कहा, जिससे कि वे विश्वास करें, कि
तूने मुझे भेजा है।”**
43 यह कहकर उसने बड़े शब्द से
पुकारा, **“हे लाज़र, निकल आ!”**
44 जो मर गया था, वह कफन से
हाथ पाँव बंधे हुए निकल आया और
उसका मुँह अँगोछे से लिपटा हुआ
था। यीशु ने उनसे कहा, **“उसे खोलकर
जाने दो।”**

[illegible]

45 तब जो यहूदी मरियम के पास
आए थे, और उसका यह काम देखा
था, उनमें से बहुतों ने उस पर विश्वास
किया।
46 परन्तु उनमें से कितनों ने
फरीसियों के पास जाकर यीशु के
कामों का समाचार दिया।
47 इस पर प्रधान याजकों और
फरीसियों ने मुख्य सभा के लोगों को
इकट्ठा करके कहा, “हम क्या करेंगे?
यह मनुष्य तो बहुत चिन्ह दिखाता है।
48 यदि हम उसे ऐसे ही छोड़ दें, तो
सब उस पर विश्वास ले आएँगे और
रोमी आकर हमारी जगह और जाति
दोनों पर अधिकार कर लेंगे।”
49 तब उनमें से कैफा नामक एक
व्यक्ति ने जो उस वर्ष का महायाजक
था, उनसे कहा, “तुम कुछ नहीं जानते;
50 और न यह सोचते हो, कि तुम्हारे
लिये यह भला है, कि लोगों के लिये
एक मनुष्य मरे, और न यह, कि सारी
जाति नाश हो।”
51 यह बात उसने अपनी ओर से न
कही, परन्तु उस वर्ष का महायाजक
होकर भविष्यद्वाणी की, कि यीशु उस
जाति के लिये मरेगा;
52 और न केवल उस जाति के लिये,
वरन् इसलिए भी, कि परमेश्वर की
तितर-बितर सन्तानों को एक कर दे।

‡ **11:35** *[illegible]:* यह प्रभु यीशु को एक मित्र, एक संवेदनशील मित्र के रूप में, और उनके चरित्र को एक मनुष्य के रूप में दिखाता है।

53 अतः उसी दिन से वे उसके मार
डालने की सम्मति करने लगे।
54 इसलिए यीशु उस समय से
यहूदियों में प्रगट होकर न फिरा; परन्तु
वहाँ से जंगल के निकटवर्ती प्रदेश के
एप्रैम नामक, एक नगर को चला गया;
और अपने चेलों के साथ वहीं रहने
लगा।
55 और यहूदियों का फसह निकट
था, और बहुत सारे लोग फसह से
पहले दिहात से यरूशलेम को गए
कि अपने आपको शुद्ध करें। ***(2 [illegible]. 30:17)***
56 वे यीशु को ढूँढ़ने और मन्दिर में
खड़े होकर आपस में कहने लगे, "तुम
क्या समझते हो? क्या वह पर्व में नहीं
आएगा?"
57 और प्रधान याजकों और
फरीसियों ने भी आज्ञा दे रखी थी,
कि यदि कोई यह जाने कि यीशु कहाँ
है तो बताए, कि वे उसे पकड़ लें।

12

[illegible]

1 फिर यीशु फसह से छः दिन पहले
बैतनिय्याह में आया, जहाँ लाज़र था;
जिसे यीशु ने मरे हुओं में से जिलाया
था।
2 वहाँ उन्होंने उसके लिये भोजन
तैयार किया, और मार्था सेवा कर रही
थी, और लाज़र उनमें से एक था, जो
उसके साथ भोजन करने के लिये बैठे
थे।
3 तब मरियम ने जटामासी का
आधा सेर बहुमूल्य इत्र लेकर यीशु के
पाँवों पर डाला, और अपने बालों से
उसके पाँव पोंछे, और इत्र की सुगन्ध
से घर सुगन्धित हो गया।
4 परन्तु उसके चेलों में से यहूदा
इस्करियोती नामक एक चेला जो उसे
पकड़वाने पर था, कहने लगा,
5 "यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर
गरीबों को क्यों न दिया गया?"
6 उसने यह बात इसलिए न कही,
कि उसे गरीबों की चिन्ता थी, परन्तु
इसलिए कि वह चोर था और उसके
पास उनकी थैली रहती थी, और उसमें
जो कुछ डाला जाता था, वह निकाल
लेता था।
7 यीशु ने कहा, **"उसे मेरे गाड़े जाने
के दिन के लिये रहने दे।**
8 **क्योंकि गरीब तो तुम्हारे साथ
सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ
सदा न रहूँगा।"*(**[illegible]. 14:7)***

[illegible]

9 यहूदियों में से साधारण लोग जान
गए, कि वह वहाँ है, और वे न केवल
यीशु के कारण आए परन्तु इसलिए भी
कि लाज़र को देखें, जिसे उसने मरे हुओं
में से जिलाया था।
10 तब प्रधान याजकों ने लाज़र को
भी मार डालने की सम्मति की।
11 क्योंकि उसके कारण बहुत
से यहूदी चले गए, और यीशु पर
विश्वास किया।

[illegible]

12 दूसरे दिन बहुत से लोगों ने जो
पर्व में आए थे, यह सुनकर, कि यीशु
यरूशलेम में आ रहा है।
13 उन्होंने खजूर की डालियाँ लीं,
और उससे भेंट करने को निकले,
और पुकारने लगे, "होशाना! धन्य
इस्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से
आता है।" ***([illegible]. 118:25,26)***
14 जब यीशु को एक गदहे का बच्चा
मिला, तो वह उस पर बैठा, जैसा
लिखा है,
15 "हे सिय्योन की बेटी,
मत डर;
देख, तेरा राजा गदहे के बच्चे पर चढ़ा

हुआ चला आता है।"
16 उसके चेले, ये बातें पहले न
समझे थे; परन्तु जब यीशु की महिमा
प्रगट हुई, तो उनको स्मरण आया, कि
ये बातें उसके विषय में लिखी हुई थीं;
और लोगों ने उससे इस प्रकार का
व्यवहार किया था।
17 तब भीड़ के लोगों ने जो उस
समय उसके साथ थे यह गवाही दी कि
उसने लाज़र को कब्र में से बुलाकर, मरे
हुओं में से जिलाया था।
18 इसी कारण लोग उससे भेंट करने
को आए थे क्योंकि उन्होंने सुना था,
कि उसने यह आश्चर्यकर्म दिखाया है।
19 तब फरीसियों ने आपस में कहा,
"सोचो, तुम लोग कुछ नहीं कर पा रहे
हो; देखो, संसार उसके पीछे हो चला
है।"

[illegible]

20 जो लोग उस पर्व में आराधना
करने आए थे उनमें से कई यूनानी थे।
21 उन्होंने गलील के बैतसैदा के
रहनेवाले फिलिप्पुस के पास आकर
उससे विनती की, "श्रीमान हम यीशु
से भेंट करना चाहते हैं।"
22 फिलिप्पुस ने आकर अन्द्रियास
से कहा; तब अन्द्रियास और
फिलिप्पुस ने यीशु से कहा।
23 इस पर यीशु ने उनसे कहा, "*[illegible]*[*], **कि मनुष्य के पुत्र
कि महिमा हो।**
24 **मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि
जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर
मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है
परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल
लाता है।**
25 **जो अपने प्राण को प्रिय जानता
है, वह उसे खो देता है; और जो
इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय
जानता है; वह अनन्त जीवन के लिये
उसकी रक्षा करेगा।**
26 **यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे
पीछे हो ले; और जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा
सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा
करे, तो पिता उसका आदर करेगा।**

[illegible]

27 "*[illegible]*[†] **।इसलिए अब मैं क्या कहूँ?
'हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा?'
परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को
पहुँचा हूँ।**
28 **हे पिता अपने नाम की महिमा
कर।"** तब यह आकाशवाणी हुई, "मैंने
उसकी महिमा की है, और फिर भी
करूँगा।"
29 तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे,
उन्होंने कहा; कि बादल गरजा, औरों
ने कहा, "कोई स्वर्गदूत उससे बोला।"
30 इस पर यीशु ने कहा, "**यह शब्द
मेरे लिये नहीं परन्तु तुम्हारे लिये
आया है।**
31 **अब इस जगत का न्याय होता
है,** *[illegible]*[‡]**निकाल
दिया जाएगा।**
32 **और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे
पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने
पास खीचूँगा।"**
33 ऐसा कहकर उसने यह प्रगट कर
दिया, कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा।
34 इस पर लोगों ने उससे कहा,
"हमने व्यवस्था की यह बात सुनी है,

---

[*] **12:23** *[illegible]:* यह एक संक्षिप्त अवधि, और एक स्थिर, निश्चित, निर्धारित समय निरुपित करने के लिए उपयोग किया गया है। [†] **12:27** *[illegible]:* उनकी उल्लेखित मृत्यु से पहले उनके पास अपने अत्यन्त भय, अपने दर्द और अपने अंधेरे को लाया। [‡] **12:31** *[illegible]:* शैतान, या दुष्ट, वह इस संसार का सरदार भी कहा जाता है। (यूह 14:30, यूहन्ना 16:11)

कि मसीह सर्वदा रहेगा, फिर तू क्यों
कहता है, कि **मनुष्य के पुत्र को ऊँचे पर
चढ़ाया जाना अवश्य है?** यह मनुष्य
का पुत्र कौन है?" ***[illegible]. 7:14)***
35 यीशु ने उनसे कहा, **"ज्योति अब
थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है, जब
तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक
चले चलो; ऐसा न हो कि अंधकार
तुम्हें आ घेरे; जो अंधकार में चलता
है वह नहीं जानता कि किधर जाता
है।**
36 **जब तक ज्योति तुम्हारे साथ
है, ज्योति पर विश्वास करो कि तुम
ज्योति के सन्तान बनो।"** ये बातें
कहकर यीशु चला गया और उनसे
छिपा रहा।

[illegible]

37 और उसने उनके सामने इतने
चिन्ह दिखाए, तो भी उन्होंने उस पर
विश्वास न किया;
38 ताकि यशायाह भविष्यद्वक्ता का
वचन पूरा हो जो उसने कहा:

"हे प्रभु, हमारे समाचार पर किसने
विश्वास किया है?
और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट
हुआ?" ***([illegible]. 53:1)***

39 इस कारण वे विश्वास न कर सके,
क्योंकि यशायाह ने यह भी कहा है:
40 "उसने उनकी आँखें अंधी,
और उनका मन कठोर किया है;
कहीं ऐसा न हो, कि आँखों से देखें,
और मन से समझें,
और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूँ।"
([illegible]. 6:10)

41 यशायाह ने ये बातें इसलिए
कहीं, कि उसने उसकी महिमा देखी;
और उसने उसके विषय में बातें की।
42 तो भी सरदारों में से भी बहुतों
ने उस पर विश्वास किया, परन्तु
फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं
मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय
में से निकाले जाएँ।
43 क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उनको
परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय
लगती थी।

[illegible]

44 यीशु ने पुकारकर कहा, **"जो मुझ
पर विश्वास करता है, वह मुझ पर
नहीं, वरन् मेरे भेजनेवाले पर विश्वास
करता है।**
45 **और जो मुझे देखता है, वह मेरे
भेजनेवाले को देखता है।**
46 **मैं जगत में ज्योति होकर आया
हूँ ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास
करे, वह अंधकार में न रहे।**
47 **यदि कोई मेरी बातें सुनकर न
माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता,
क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के
लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार
करने के लिये आया हूँ।**
48 ***[illegible]***
**§और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है
उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है:
अर्थात् जो वचन मैंने कहा है, वह
अन्तिम दिन में उसे दोषी ठहराएगा।**
49 **क्योंकि मैंने अपनी ओर से बातें
नहीं की, परन्तु पिता जिसने मुझे
भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि
क्या-क्या कहूँ और क्या-क्या बोलूँ?**
50 **और मैं जानता हूँ, कि उसकी
आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिए मैं जो
बोलता हूँ, वह जैसा पिता ने मुझसे
कहा है वैसा ही बोलता हूँ।"**

---

§ **12:48** ***[illegible]:*** "तुच्छ" शब्द का मतलब तिरस्कार करना, या उसे ग्रहण करने के लिए अस्वीकार करना है।

13

[illegible]

1 फसह के पर्व से पहले जब यीशु
ने जान लिया, कि मेरा वह समय आ
पहुँचा है कि जगत छोड़कर पिता के
पास जाऊँ, तो अपने लोगों से, जो
जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था,
अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा।
2 और जब शैतान शमौन के पुत्र
यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल
चुका था, कि उसे पकड़वाए, तो भोजन
के समय
3 यीशु ने, यह जानकर कि पिता ने
सब कुछ उसके हाथ में कर दिया है
और मैं परमेश्वर के पास से आया हूँ,
और परमेश्वर के पास जाता हूँ।
4 भोजन पर से उठकर अपने कपड़े
उतार दिए, और अँगोछा लेकर अपनी
कमर बाँधी।

[illegible]

5 तब बर्तन में पानी भरकर *[illegible]**
और जिस अँगोछे
से उसकी कमर बंधी थी उसी से पोंछने
लगा।
6 जब वह शमौन पतरस के पास
आया तब उसने उससे कहा, "हे प्रभु,
क्या तू मेरे पाँव धोता है?"
7 यीशु ने उसको उत्तर दिया, **"जो मैं
करता हूँ, तू अभी नहीं जानता, परन्तु
इसके बाद समझेगा।"**
8 पतरस ने उससे कहा, "तू मेरे पाँव
कभी न धोने पाएगा!" यह सुनकर
यीशु ने उससे कहा, **"यदि मैं तुझे न
धोऊँ, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी भाग
नहीं।"**
9 शमौन पतरस ने उससे कहा, "हे
प्रभु, तो मेरे पाँव ही नहीं, वरन् हाथ
और सिर भी धो दे।"
10 यीशु ने उससे कहा, **"जो नहा
चुका है, उसे पाँव के सिवा और कुछ
धोने का प्रयोजन नहीं; परन्तु वह
बिलकुल शुद्ध है: और तुम शुद्ध हो;
परन्तु सब के सब नहीं।"**
11 वह तो अपने पकड़वानेवाले को
जानता था इसलिए उसने कहा, **"तुम
सब के सब शुद्ध नहीं।"**

[illegible]

12 जब वह उनके पाँव धो चुका और
अपने कपड़े पहनकर फिर बैठ गया तो
उनसे कहने लगा, **"क्या तुम समझे कि
मैंने तुम्हारे साथ क्या किया?**
13 **तुम मुझे गुरु, और प्रभु, कहते
हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं
वहीं हूँ।**
14 **यदि मैंने प्रभु और गुरु होकर
तुम्हारे पाँव धोए; तो तुम्हें भी एक
दूसरे के पाँव धोना चाहिए।**
15 **क्योंकि मैंने तुम्हें नमूना दिखा
दिया है, कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ
किया है, तुम भी वैसा ही किया करो।**
16 **मैं तुम से सच-सच कहता हूँ,
दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं; और
न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से।**
17 **तुम तो ये बातें जानते हो, और
यदि उन पर चलो, तो धन्य हो।**
18 **मैं तुम सब के विषय में नहीं
कहता: जिन्हें मैंने चुन लिया है, उन्हें
मैं जानता हूँ; परन्तु यह इसलिए है,
कि पवित्रशास्त्र का यह वचन पूरा हो,
'जो मेरी रोटी खाता है, उसने मुझ पर
लात उठाई।'** ***([illegible]. 41:9)***
19 **अब मैं उसके होने से पहले तुम्हें
जताए देता हूँ कि जब हो जाए तो तुम
विश्वास करो कि मैं वहीं हूँ।** ***([illegible].
14:29)***

---

* **13:5** *[illegible]*: यह दासों के लिए अतिथियों के पाँव धोने का एक रिवाज था।

20 **मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।"**

[illegible]

21 ये बातें कहकर यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ और यह गवाही दी, "**मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।"**

22 चेले यह संदेह करते हुए, कि वह किसके विषय में कहता है, एक दूसरे की ओर देखने लगे।

23 उसके चेलों में से एक जिससे यीशु प्रेम रखता था, यीशु की छाती की ओर झुका हुआ बैठा था।

24 तब शमौन पतरस ने उसकी ओर संकेत करके पूछा, "बता तो, वह किसके विषय में कहता है?"

25 तब उसने उसी तरह यीशु की छाती की ओर झुककर पूछा, "हे प्रभु, वह कौन है?"

26 यीशु ने उत्तर दिया, "**जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोकर दूँगा, वही है।"** और उसने टुकड़ा डुबोकर शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती को दिया।

27 और टुकड़ा लेते ही शैतान उसमें समा गया: तब यीशु ने उससे कहा, "**जो तू करनेवाला है, तुरन्त कर।"**

28 परन्तु बैठनेवालों में से किसी ने न जाना कि उसने यह बात उससे किस लिये कही।

29 यहूदा के पास थैली रहती थी, इसलिए किसी किसी ने समझा, कि यीशु उससे कहता है, कि जो कुछ हमें पर्व के लिये चाहिए वह मोल ले, या यह कि गरीबों को कुछ दे।

30 तब वह टुकड़ा लेकर तुरन्त बाहर चला गया, और रात्रि का समय था।

[illegible]

31 जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा, "**अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई, और परमेश्वर की महिमा उसमें हुई;**

32 **और परमेश्वर भी अपने में उसकी महिमा करेगा, वरन् तुरन्त करेगा।**

33 *[illegible]*†**, मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूँ: फिर तुम मुझे ढूँढ़ोगे, और जैसा मैंने यहूदियों से कहा, 'जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते,' वैसा ही मैं अब तुम से भी कहता हूँ।**

34 *[illegible]*‡**, कि एक दूसरे से प्रेम रखो जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।**

35 **यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।"**

[illegible]

36 शमौन पतरस ने उससे कहा, "हे प्रभु, तू कहाँ जाता है?" यीशु ने उत्तर दिया, "**जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तू अब मेरे पीछे आ नहीं सकता; परन्तु इसके बाद मेरे पीछे आएगा।"**

37 पतरस ने उससे कहा, "हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिये अपना प्राण दूँगा।"

† **13:33** *[illegible]*: महान कोमलता की एक अभिव्यक्ति, उनकी समृद्धि में उनकी गहरी रूचि को दर्शाता है। ‡ **13:34** *[illegible]*: जिसके द्वारा वे उनके अनुसरण करनेवाले के रूप में जाना जा सकता है और जिसके द्वारा वे सभी दूसरे लोगों से प्रतिष्ठित किया जा सकता है।

38 यीशु ने उत्तर दिया, “**क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा? मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ कि मुर्गा बाँग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा।**

14

[illegible]

1 “*[illegible]*[*], **तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।**

2 **मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ।**

3 **और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।**

[illegible]

4 “**और जहाँ मैं जाता हूँ तुम वहाँ का मार्ग जानते हो।**”

5 थोमा ने उससे कहा, “हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहाँ जाता है; तो मार्ग कैसे जानें?”

6 यीशु ने उससे कहा, “*[illegible]*[†]; **बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।**

7 **यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।**”

8 फिलिप्पुस ने उससे कहा, “हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे: यही हमारे लिये बहुत है।”

9 यीशु ने उससे कहा, “**हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है: तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा?**

10 **क्या तू विश्वास नहीं करता, कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।**

11 **मेरा ही विश्वास करो, कि मैं पिता में हूँ; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरा विश्वास करो।**

[illegible]

12 “**मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।**

13 **और जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।**

14 **यदि तुम मुझसे मेरे नाम से कुछ माँगोगे, तो मैं उसे करूँगा।**

[illegible]

15 “**यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।**

16 **और** *[illegible]*[‡], **और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।**

---

[*] **14:1** *[illegible]*: यीशु ने जो उन्हें छोड़कर जाने की बात कहीं थी उस पर शिष्य बहुत व्याकुल हो रहे थे [†] **14:6** *[illegible]*: उनके कहने का मतलब यह हैं कि, वे और अन्य सभी केवल उन्हीं के माध्यम से परमेश्वर के पास पहुँच सकते है। [‡] **14:16** *[illegible]*: यह उनकी मृत्यु और स्वर्ग में उठा लिए जाने के बाद उनके द्वारा मध्यस्थता करने को संदर्भित करता है

17 **अर्थात् सत्य की आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।**

18 **“मैं तुम्हें अनाथ न छोडूँगा, मैं तुम्हारे पास वापस आता हूँ।**

19 **और थोड़ी देर रह गई है कि संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिए कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे।**

20 **उस दिन तुम जानोगे, कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझ में, और मैं तुम में।**

21 **जिसके पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझसे प्रेम रखता है, और जो मुझसे प्रेम रखता है, उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा, और अपने आपको उस पर प्रगट करूँगा।”**

22 उस यहूदा ने जो इस्करियोती न था, उससे कहा, “हे प्रभु, क्या हुआ कि तू अपने आपको हम पर प्रगट करना चाहता है, और संसार पर नहीं?”

23 यीशु ने उसको उत्तर दिया, **“यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे, और उसके साथ वास करेंगे।**

24 **जो मुझसे प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता, और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं वरन् पिता का है, जिसने मुझे भेजा।**

25 **“ये बातें मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही।**

26 **परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।”**

[illegible]

27 ***[illegible]***§**, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।**

28 **तुम ने सुना, कि मैंने तुम से कहा, ‘मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आता हूँ’ यदि तुम मुझसे प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूँ क्योंकि पिता मुझसे बड़ा है।**

29 **और मैंने अब इसके होने से पहले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम विश्वास करो।**

30 **मैं अब से तुम्हारे साथ और बहुत बातें न करूँगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझ पर उसका कुछ अधिकार नहीं।**

31 **परन्तु यह इसलिए होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूँ, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूँ। उठो, यहाँ से चलें।**

15

[illegible]

1 **“सच्ची दाखलता मैं हूँ; और मेरा पिता किसान है।**

2 ***[illegible]****, **और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है,**

§ **14:27** *[illegible]*: यह यहूदियों के बीच आशीर्वाद देने का एक आम रूप था। * **15:2** *[illegible]*: हर कोई जो मेरा सच्चा अनुसरण करनेवाला है, विश्वास से मुझ में मिला हुआ है।

और जो फलती है, उसे वह छाँटता है
ताकि और फले।
3 तुम तो उस वचन के कारण जो
मैंने तुम से कहा है, शुद्ध हो।
4 [illegible]†, और
मैं तुम में जैसे डाली यदि दाखलता में
बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल
सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में
बने न रहो तो नहीं फल सकते।
5 मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ
हो; जो मुझ में बना रहता है, और
मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है,
क्योंकि[illegible]‡।
6 यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो
वह डाली के समान फेंक दिया जाता,
और सूख जाता है; और लोग उन्हें
बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे
जल जाती हैं।
7 यदि तुम मुझ में बने रहो, और
मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो
चाहो माँगो और वह तुम्हारे लिये हो
जाएगा।
8 मेरे पिता की महिमा इसी से
होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ,
तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।
9 जैसा पिता ने मुझसे प्रेम रखा,
वैसे ही मैंने तुम से प्रेम रखा, मेरे प्रेम
में बने रहो।
10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं को
मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे जैसा
कि मैंने अपने पिता की आज्ञाओं को
माना है, और उसके प्रेम में बना रहता
हूँ।
11 मैंने ये बातें तुम से इसलिए कही
हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे,
और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।

[illegible]

12 “मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैंने
तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक
दूसरे से प्रेम रखो।
13 इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं,
कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना
प्राण दे।
14 जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ,
यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो।
15 अब से मैं तुम्हें दास न कहूँगा,
क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका
स्वामी क्या करता है: परन्तु मैंने तुम्हें
मित्र कहा है, क्योंकि मैंने जो बातें
अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता
दीं।
16 [illegible]§परन्तु मैंने तुम्हें चुना है और
तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल
लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे,
कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से
माँगो, वह तुम्हें दे।
17 इन बातों की आज्ञा मैं तुम्हें
इसलिए देता हूँ, कि तुम एक दूसरे से
प्रेम रखो।

[illegible]

18 “[illegible]*, तो तुम जानते हो, कि
उसने तुम से पहले मुझसे भी बैर रखा।
19 यदि तुम संसार के होते, तो
संसार अपनों से प्रेम रखता, परन्तु
इस कारण कि तुम संसार के नहीं वरन्

† **15:4** [illegible]: एक जीवित विश्वास के द्वारा मुझ में बने रहो। ‡ **15:5** [illegible]: यह अभिव्यक्ति “मेरे बिना” मुझसे अलग होकर के रूप को दर्शाता है। § **15:16** [illegible]: वह कहता है कि ऐसा नहीं था क्योंकि उन्होंने उसे अपना शिक्षक और मार्गदर्शक चुना था, क्योंकि उसने उन्हें अपने प्रेरित होने के लिए नामित किया था। * **15:18** [illegible]: संसार से मित्रता करने की वे उम्मीद नहीं रखते थे, लेकिन वे उनके नफरत के द्वारा अपने कामों से विचलित नहीं हो रहे थे।

मैंने तुम्हें संसार में से चुन लिया है;
इसलिए संसार तुम से बैर रखता है।
20 जो बात मैंने तुम से कही थी,
'दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं
होता,' उसको याद रखो यदि उन्होंने
मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएँगे;
यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो
तुम्हारी भी मानेंगे।
21 परन्तु यह सब कुछ वे मेरे नाम
के कारण तुम्हारे साथ करेंगे क्योंकि वे
मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते।
22 यदि मैं न आता और उनसे बातें
न करता, तो वे पापी न ठहरते परन्तु
अब उन्हें उनके पाप के लिये कोई
बहाना नहीं।
23 जो मुझसे बैर रखता है, वह मेरे
पिता से भी बैर रखता है।
24 यदि मैं उनमें वे काम न करता,
जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी
नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्होंने
मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा,
और दोनों से बैर किया।
25 और यह इसलिए हुआ, कि वह
वचन पूरा हो, जो उनकी व्यवस्था
में लिखा है, 'उन्होंने मुझसे व्यर्थ बैर
किया।' ***(▯▯. 69:4, ▯▯. 109:3)***
26 परन्तु जब वह सहायक आएगा,
जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से
भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो
पिता की ओर से निकलता है, तो वह
मेरी गवाही देगा।
27 और तुम भी गवाह हो क्योंकि
तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।

16

1 "ये बातें मैंने तुम से इसलिए कहीं
कि तुम ठोकर न खाओ।
2 वे तुम्हें आराधनालयों में से
निकाल देंगे, वरन् वह समय आता
है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा
यह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा
करता हूँ।
3 और यह वे इसलिए करेंगे कि
उन्होंने न पिता को जाना है और न
मुझे जानते हैं।
4 परन्तु ये बातें मैंने इसलिए तुम से
कहीं, कि जब उनके पूरे होने का समय
आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैंने
तुम से पहले ही कह दिया था,

▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯

"मैंने आरम्भ में तुम से ये बातें
इसलिए नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे
साथ था।
5 अब मैं अपने भेजनेवाले के पास
जाता हूँ और तुम में से कोई मुझसे
नहीं पूछता, 'तू कहाँ जाता है?'
6 परन्तु मैंने जो ये बातें तुम से कही
हैं, इसलिए तुम्हारा मन शोक से भर
गया।
7 फिर भी मैं तुम से सच कहता हूँ,
कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा
है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ, तो
वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा,
परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे
पास भेज दूँगा।
8 और वह आकर संसार को पाप
और धार्मिकता और न्याय के विषय
में निरुत्तर करेगा।
9 पाप के विषय में इसलिए कि वे
मुझ पर विश्वास नहीं करते;
10 और धार्मिकता के विषय में
इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ,
और तुम मुझे फिर न देखोगे;
11 न्याय के विषय में इसलिए कि
संसार का सरदार दोषी ठहराया गया
है।***(▯▯▯. 12:31)***
12 "मुझे तुम से और भी बहुत सी
बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें
सह नहीं सकते।

13 परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का
आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य
का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी
ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ
सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली
बातें तुम्हें बताएगा।
14 वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि
वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें
बताएगा।
15 जो कुछ पिता का है, वह सब
मेरा है; इसलिए मैंने कहा, कि वह
मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

[illegible]

16 "थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे,
और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे।"
17 तब उसके कितने चेलों ने आपस
में कहा, "यह क्या है, जो वह हम से
कहता है, 'थोड़ी देर में तुम मुझे न
देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे
देखोगे?' और यह 'इसलिए कि मैं
पिता के पास जाता हूँ'?"
18 तब उन्होंने कहा, "यह 'थोड़ी
देर' जो वह कहता है, क्या बात है?
हम नहीं जानते, कि क्या कहता है।"
19 यीशु ने यह जानकर, कि वे
मुझसे पूछना चाहते हैं, उनसे कहा,
"क्या तुम आपस में मेरी इस बात के
विषय में पूछताछ करते हो, 'थोड़ी
देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर
थोड़ी देर में मुझे देखोगे'?
20 मैं तुम से सच-सच कहता हूँ; कि
तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु
संसार आनन्द करेगा: तुम्हें शोक
होगा, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द
बन जाएगा।
21 जब स्त्री जनने लगती है तो
उसको शोक होता है, क्योंकि उसकी
दुःख की घड़ी आ पहुँची, परन्तु जब
वह बालक को जन्म दे चुकी तो इस
आनन्द से कि जगत में एक मनुष्य
उत्पन्न हुआ, उस संकट को फिर स्मरण
नहीं करती। *([illegible]. 26:17, [illegible] 4:9)*
22 और तुम्हें भी अब तो शोक है,
परन्तु मैं तुम से फिर मिलूँगा और
तुम्हारे मन में आनन्द होगा; और
तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न
लेगा।
23 *[illegible]*[*] तुम मुझसे कुछ न
पूछोगे; मैं तुम से सच-सच कहता हूँ,
यदि पिता से कुछ माँगोगे, तो वह मेरे
नाम से तुम्हें देगा।
24 अब तक तुम ने मेरे नाम
से कुछ नहीं माँगा; *[illegible]*[†] ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा
हो जाए।

[illegible]

25 "मैंने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में
कही हैं, परन्तु वह समय आता है, कि
मैं तुम से दृष्टान्तों में और फिर नहीं
कहूँगा परन्तु खोलकर तुम्हें पिता के
विषय में बताऊँगा।
26 उस दिन तुम मेरे नाम से
माँगोगे, और मैं तुम से यह नहीं
कहता, कि मैं तुम्हारे लिये पिता से
विनती करूँगा।
27 क्योंकि पिता तो स्वयं ही तुम
से प्रेम रखता है, इसलिए कि तुम
ने मुझसे प्रेम रखा है, और यह भी
विश्वास किया, कि मैं पिता की ओर
से आया।
28 मैं पिता की ओर से जगत में
आया हूँ, फिर जगत को छोड़कर
पिता के पास वापस जाता हूँ।"

---

* **16:23** *[illegible]:* उनके जी उठने और पुनरुत्थान के बाद। † **16:24** *[illegible]:* अब उन्हें आश्वासन था कि यीशु के नाम से वे परमेश्वर के पास पहुँच सकते हैं।

29 उसके चेलों ने कहा, “देख, अब
तो तू खुलकर कहता है, और कोई
दृष्टान्त नहीं कहता।
30 अब हम जान गए, कि तू सब
कुछ जानता है, और जरूरत नहीं
कि कोई तुझ से प्रश्न करे, इससे हम
विश्वास करते हैं, कि तू परमेश्वर की
ओर से आया है।”
31 यह सुन यीशु ने उनसे कहा,
“क्या तुम अब विश्वास करते हो?
32 **देखो, वह घड़ी आती है वरन् आ
पहुँची कि तुम सब तितर-बितर होकर
अपना-अपना मार्ग लोगे, और मुझे
अकेला छोड़ दोगे, फिर भी मैं अकेला
नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है।*([illegible].
8:29)***
33 **मैंने ये बातें तुम से इसलिए कही
हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले;
संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु
ढाढ़स बाँधो, मैंने संसार को जीत
लिया है।”**

17

[illegible]

1 यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी
आँखें आकाश की ओर उठाकर कहा,
**“हे पिता, वह घड़ी आ पहुँची, अपने
पुत्र की महिमा कर,** *[illegible]**,
2 **क्योंकि तूने उसको सब प्राणियों
पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तूने
उसको दिया है, उन सब को वह
अनन्त जीवन दे।**
3 **और अनन्त जीवन यह है, कि वे
तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और
यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है,
जानें।**
4 **जो काम तूने मुझे करने को दिया
था, उसे पूरा करके मैंने पृथ्वी पर तेरी
महिमा की है।**
5 **और अब, हे पिता, तू अपने साथ
मेरी महिमा उस महिमा से कर जो
जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे
साथ थी।**

[illegible]

6 **“मैंने तेरा नाम उन मनुष्यों पर
प्रगट किया जिन्हें तूने जगत में से
मुझे दिया। वे तेरे थे और तूने उन्हें मुझे
दिया और उन्होंने तेरे वचन को मान
लिया है।**
7 **अब वे जान गए हैं, कि जो कुछ
तूने मुझे दिया है, सब तेरी ओर से है।**
8 **क्योंकि जो बातें तूने मुझे पहुँचा
दीं, मैंने उन्हें उनको पहुँचा दिया और
उन्होंने उनको ग्रहण किया और सच-
सच जान लिया है, कि मैं तेरी ओर से
आया हूँ, और यह विश्वास किया है
कि तू ही ने मुझे भेजा।**
9 **मैं उनके लिये विनती करता हूँ,
संसार के लिये विनती नहीं करता हूँ
परन्तु उन्हीं के लिये जिन्हें तूने मुझे
दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं।**
10 **और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा
है; और जो तेरा है वह मेरा है; और
इनसे मेरी महिमा प्रगट हुई है।**
11 **मैं आगे को जगत में न रहूँगा,
परन्तु ये जगत में रहेंगे, और मैं तेरे
पास आता हूँ; हे पवित्र पिता, अपने
उस नाम से जो तूने मुझे दिया है,
उनकी रक्षा कर, कि वे हमारे समान
एक हों।**

---

* **17:1** *[illegible]:* यह स्पष्ट रूप से परमेश्वर के सम्मान को जाहिर करने के लिए जो लोगों के बीच सुसमाचार के प्रचार के द्वारा किया जाएगा को संदर्भित करता है।

12 जब मैं उनके साथ था, तो मैंने
तेरे उस नाम से, जो तूने मुझे दिया है,
उनकी रक्षा की, मैंने उनकी देख-रेख
की और विनाश के पुत्र को छोड़ उनमें
से कोई नाश न हुआ, इसलिए कि
पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो।*([illegible]. 18:9)*
13 परन्तु अब मैं तेरे पास आता हूँ,
और ये बातें जगत में कहता हूँ, कि वे
मेरा आनन्द अपने में पूरा पाएँ।
14 मैंने तेरा वचन उन्हें पहुँचा दिया
है, और संसार ने उनसे बैर किया,
क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे
ही वे भी संसार के नहीं।
15 मैं यह विनती नहीं करता, कि तू
उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि
तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख।
16 जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही
वे भी संसार के नहीं।
17 सत्य के द्वारा*[illegible]*†: तेरा वचन सत्य है।
18 जैसे तूने जगत में मुझे भेजा,
वैसे ही मैंने भी उन्हें जगत में भेजा।
19 और उनके लिये मैं अपने आपको
पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सत्य के
द्वारा पवित्र किए जाएँ।

[illegible]

20 "मैं केवल इन्हीं के लिये विनती
नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो
इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास
करेंगे,
21 कि वे सब एक हों; जैसा तू हे
पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूँ, वैसे
ही वे भी हम में हों, इसलिए कि जगत
विश्वास करे, कि तू ही ने मुझे भेजा।
22 और वह महिमा जो तूने मुझे दी,
मैंने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों
जैसे कि हम एक हैं।
23 मैं उनमें और तू मुझ में कि वे
सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और जगत
जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा
तूने मुझसे प्रेम रखा, वैसा ही उनसे
प्रेम रखा।
24 हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें
तूने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ, वहाँ वे
भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा
को देखें जो तूने मुझे दी है, क्योंकि तूने
जगत की उत्पत्ति से पहले मुझसे प्रेम
रखा।*([illegible]. 14:3)*
25 हे धार्मिक पिता, संसार ने मुझे
नहीं जाना, परन्तु मैंने तुझे जाना और
इन्होंने भी जाना कि तू ही ने मुझे
भेजा।
26 और मैंने तेरा नाम उनको
बताया और बताता रहूँगा कि जो
प्रेम तुझको मुझसे था, वह उनमें रहे
और*[illegible]*‡।"

18

[illegible]

1 यीशु ये बातें कहकर अपने चेलों
के साथ किद्रोन के नाले के पार गया,
वहाँ एक बारी थी, जिसमें वह और
उसके चेले गए।
2 और उसका पकड़वानेवाला यहूदा
भी वह जगह जानता था, क्योंकि यीशु
अपने चेलों के साथ वहाँ जाया करता
था।
3 तब यहूदा सैन्य-दल को और
प्रधान याजकों और फरीसियों की
ओर से प्यादों को लेकर दीपकों और
मशालों और हथियारों को लिए हुए
वहाँ आया।

† **17:17** *[illegible]:* इस शब्द का मतलब हैं पवित्र बनाना या पापों से शुद्ध करना।
‡ **17:26** *[illegible]:* मेरी शिक्षाओं और मेरी आत्मा के प्रभावों के द्वारा।

4 तब यीशु उन सब बातों को जो उस पर आनेवाली थीं, जानकर निकला, और उनसे कहने लगा, **“किसे ढूँढ़ते हो?”**

5 उन्होंने उसको उत्तर दिया, “यीशु नासरी को।” यीशु ने उनसे कहा, **“मैं हूँ।”** और उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी उनके साथ खड़ा था।

6 उसके यह कहते ही, **“मैं हूँ,”** वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े।

7 तब उसने फिर उनसे पूछा, **“तुम किसको ढूँढ़ते हो।”** वे बोले, “यीशु नासरी को।”

8 यीशु ने उत्तर दिया, **“मैं तो तुम से कह चुका हूँ कि मैं हूँ, यदि मुझे ढूँढ़ते हो *[illegible]*[*]।”**

9 यह इसलिए हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उसने कहा था: **“जिन्हें तूने मुझे दिया, उनमें से मैंने एक को भी न खोया।”**

10 शमौन पतरस ने तलवार, जो उसके पास थी, खींची और महायाजक के दास पर चलाकर, उसका दाहिना कान काट दिया, उस दास का नाम मलखुस था।

11 तब यीशु ने पतरस से कहा, **“अपनी तलवार काठी में रख। जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पीऊँ?”**

[illegible]

12 तब सिपाहियों और उनके सूबेदार और यहूदियों के प्यादों ने यीशु को पकड़कर बाँध लिया,

13 और पहले उसे हन्ना के पास ले गए क्योंकि वह उस वर्ष के महायाजक कैफा का ससुर था।

14 यह वही कैफा था, जिसने यहूदियों को सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिये एक पुरुष का मरना अच्छा है।

[illegible]

15 शमौन पतरस और एक और चेला भी यीशु के पीछे हो लिए। यह चेला महायाजक का जाना पहचाना था और यीशु के साथ महायाजक के आँगन में गया।

16 परन्तु पतरस बाहर द्वार पर खड़ा रहा, तब वह दूसरा चेला जो महायाजक का जाना पहचाना था, बाहर निकला, और द्वारपालिन से कहकर, पतरस को भीतर ले आया।

17 उस दासी ने जो द्वारपालिन थी, पतरस से कहा, “क्या तू भी इस मनुष्य के चेलों में से है?” उसने कहा, “मैं नहीं हूँ।”

18 दास और प्यादे जाड़े के कारण कोयले धधकाकर खड़े आग ताप रहे थे और पतरस भी उनके साथ खड़ा आग ताप रहा था।

[illegible]

19 तब महायाजक ने यीशु से उसके चेलों के विषय में और उसके उपदेश के विषय में पूछा।

20 यीशु ने उसको उत्तर दिया, **“मैंने जगत से खुलकर बातें की; मैंने आराधनालयों और मन्दिर में जहाँ सब यहूदी इकट्ठा हुआ करते हैं सदा उपदेश किया और *[illegible]*[†]।**

21 **तू मुझसे क्यों पूछता है? सुननेवालों से पूछ: कि मैंने उनसे क्या कहा? देख वे जानते हैं; कि मैंने क्या-क्या कहा।”**

---

[*] **18:8** *[illegible]*: ये सभी प्रेरित थे। यह मुसीबत की घड़ी में भी उनकी देख-भाल और प्रेम को दर्शाता है। [†] **18:20** *[illegible]*: उसने अपने चेलों को ऐसी कोई शिक्षा और आज्ञा नहीं दी जो उसने सार्वजनिक आख्यान में न कही थी।

22 **जब उसने यह कहा, तो प्यादों
में से एक ने जो पास खड़ा था, यीशु
को थप्पड़ मारकर कहा, “क्या तू
महायाजक को इस प्रकार उत्तर देता
है?”**_([illegible] 22:63, [illegible] 5:1)_
23 यीशु ने उसे उत्तर दिया, **“यदि
मैंने बुरा कहा, तो उस बुराई पर
गवाही दे; परन्तु यदि भला कहा, तो
मुझे क्यों मारता है?”**
24 हन्ना ने उसे बंधे हुए कैफा
महायाजक के पास भेज दिया।

[illegible]

25 शमौन पतरस खड़ा हुआ आग
ताप रहा था। तब उन्होंने उससे कहा;
“क्या तू भी उसके चेलों में से है?”
उसने इन्कार करके कहा, “मैं नहीं हूँ।”
26 महायाजक के दासों में से एक जो
उसके कुटुम्ब में से था, जिसका कान
पतरस ने काट डाला था, बोला, “क्या
मैंने तुझे उसके साथ बारी में न देखा
था?”
27 पतरस फिर इन्कार कर गया और
तुरन्त मुर्गे ने बाँग दी।

[illegible]

28 और वे यीशु को कैफा के पास से
किले को ले गए और भोर का समय
था, परन्तु वे स्वयं किले के भीतर न
गए ताकि अशुद्ध न हों परन्तु फसह खा
सकें।
29 तब पिलातुस उनके पास बाहर
निकल आया और कहा, “तुम इस
मनुष्य पर किस बात का दोषारोपण
करते हो?”
30 उन्होंने उसको उत्तर दिया, “यदि
वह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे
हाथ न सौंपते।”
31 पिलातुस ने उनसे कहा, “तुम
ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के
अनुसार उसका न्याय करो।” यहूदियों
ने उससे कहा, “हमें अधिकार नहीं कि
किसी का प्राण लें।”
32 यह इसलिए हुआ, कि यीशु की
वह बात पूरी हो जो उसने यह दर्शाते
हुए कही थी, कि उसका मरना कैसा
होगा।
33 तब पिलातुस फिर किले के भीतर
गया और यीशु को बुलाकर, उससे
पूछा, “_[illegible]_‡?”
34 यीशु ने उत्तर दिया, **“क्या तू यह
बात अपनी ओर से कहता है या औरों
ने मेरे विषय में तुझ से कही?”**
35 पिलातुस ने उत्तर दिया, “क्या मैं
यहूदी हूँ? तेरी ही जाति और प्रधान
याजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा, तूने
क्या किया है?”
36 यीशु ने उत्तर दिया, **“मेरा राज्य
इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य
इस जगत का होता, तो मेरे सेवक
लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा
न जाता: परन्तु अब मेरा राज्य यहाँ
का नहीं।”**
37 पिलातुस ने उससे कहा, “तो क्या
तू राजा है?” यीशु ने उत्तर दिया, **“तू
कहता है, कि मैं राजा हूँ; मैंने इसलिए
जन्म लिया, और इसलिए जगत में
आया हूँ कि सत्य पर गवाही दूँ जो
कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता
है।”**_(1 [illegible]. 4:6)_
38 पिलातुस ने उससे कहा, “सत्य
क्या है?” और यह कहकर वह फिर
यहूदियों के पास निकल गया और
उनसे कहा, “मैं तो उसमें कुछ दोष नहीं
पाता।

‡ **18:33** _[illegible]:_ यह उसको देश द्रोही और कैसर को सम्मान नहीं देने का आरोप के बाद की घटना था।

[illegible]

39 “पर तुम्हारी यह रीति है कि मैं
फसह में तुम्हारे लिये एक व्यक्ति को
छोड़ दूँ। तो क्या तुम चाहते हो, कि
मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को
छोड़ दूँ?”

40 तब उन्होंने फिर चिल्लाकर कहा,
“इसे नहीं परन्तु हमारे लिये बरअब्बा
को छोड़ दे।” और बरअब्बा डाकू था।

19

[illegible]

1 इस पर पिलातुस ने यीशु को लेकर
कोड़े लगवाए।

2 और सिपाहियों ने काँटों का मुकुट
गूँथकर उसके सिर पर रखा, और उसे
बैंगनी ऊपरी वस्त्र पहनाया,

3 और उसके पास आ आकर कहने
लगे, “हे यहूदियों के राजा, प्रणाम!”
और उसे थप्पड़ मारे।

4 तब पिलातुस ने फिर बाहर
निकलकर लोगों से कहा, “देखो, मैं उसे
तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूँ; ताकि
तुम जानो कि मैं उसमें कुछ भी दोष
नहीं पाता।”

[illegible]

5 तब यीशु काँटों का मुकुट और
बैंगनी वस्त्र पहने हुए बाहर निकला
और पिलातुस ने उनसे कहा, “देखो,
यह पुरुष।”

6 जब प्रधान याजकों और प्यादों ने
उसे देखा, तो चिल्लाकर कहा, “उसे
क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!” पिलातुस ने
उनसे कहा, “तुम ही उसे लेकर क्रूस
पर चढ़ाओ; क्योंकि मैं उसमें दोष नहीं
पाता।”

7 यहूदियों ने उसको उत्तर दिया,
“हमारी भी व्यवस्था है और उस
व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के
योग्य है क्योंकि उसने अपने आपको
*[illegible]** बताया।”
([illegible]. 24:16)

8 जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो
और भी डर गया।

9 और फिर किले के भीतर गया और
यीशु से कहा, “तू कहाँ का है?” परन्तु
यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया।

10 पिलातुस ने उससे कहा, “मुझसे
क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं
जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार
मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी
मुझे अधिकार है।”

11 यीशु ने उत्तर दिया, **“यदि तुझे
ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ
पर कुछ अधिकार न होता; इसलिए
जिसने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है,
उसका पाप अधिक है।”**

12 इससे *[illegible]*†, परन्तु
यहूदियों ने चिल्ला चिल्लाकर कहा,
“यदि तू इसको छोड़ देगा तो तू कैसर
का मित्र नहीं; जो कोई अपने आपको
राजा बनाता है वह कैसर का सामना
करता है।”

13 ये बातें सुनकर पिलातुस यीशु
को बाहर लाया और उस जगह एक
चबूतरा था, जो इब्रानी में ‘*[illegible]*‡’
कहलाता है, और वहाँ न्याय आसन पर
बैठा।

14 यह फसह की तैयारी का दिन
था और छठे घंटे के लगभग था: तब

* **19:7** *[illegible]:* व्यवस्था में ऐसा कहना वर्जित नहीं था, परन्तु परमेश्वर की निन्दा करना निश्चय ही वर्जित था, अत: अपने लिए इस शीर्षक का उपयोग उनकी समझ में परमेश्वर की निन्दा करना था † **19:12** *[illegible]:* वह उसकी निर्दोषता के प्रति अधिक से अधिक आश्वस्त था। ‡ **19:13** *[illegible]:* यह एक इब्रानी भाषा का शब्द है, यह ऊँचा होने के वाचक शब्द से आता है।

उसने यहूदियों से कहा, “देखो, यही है,
तुम्हारा राजा!”
15 परन्तु वे चिल्लाए, “ले जा! ले
जा! उसे क्रूस पर चढ़ा!” पिलातुस
ने उनसे कहा, “क्या मैं तुम्हारे राजा
को क्रूस पर चढ़ाऊँ?” प्रधान याजकों
ने उत्तर दिया, “कैसर को छोड़ हमारा
और कोई राजा नहीं।”
16 तब उसने उसे उनके हाथ सौंप
दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।

?????? ?? ??????? ????

17 तब वे यीशु को ले गए। और
वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान
तक बाहर गया, जो ‘खोपड़ी का स्थान’
कहलाता है और इब्रानी में ‘गुलगुता’।
18 वहाँ उन्होंने उसे और उसके साथ
और दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया,
एक को इधर और एक को उधर, और
बीच में यीशु को।
19 और पिलातुस ने एक दोष-पत्र
लिखकर क्रूस पर लगा दिया और
उसमें यह लिखा हुआ था, “यीशु
नासरी यहूदियों का राजा।”
20 यह दोष-पत्र बहुत यहूदियों ने
पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहाँ यीशु क्रूस
पर चढ़ाया गया था नगर के पास
था और पत्र इब्रानी और लतीनी और
यूनानी में लिखा हुआ था।
21 तब यहूदियों के प्रधान याजकों
ने पिलातुस से कहा, “ ‘यहूदियों का
राजा’ मत लिख परन्तु यह कि ‘उसने
कहा, मैं यहूदियों का राजा हूँ।’ ”
22 पिलातुस ने उत्तर दिया, “मैंने जो
लिख दिया, वह लिख दिया।”
23 जब सिपाही यीशु को क्रूस पर
चढ़ा चुके, तो उसके कपड़े लेकर चार
भाग किए, हर सिपाही के लिये एक
भाग और कुर्ता भी लिया, परन्तु कुर्ता
बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना
हुआ था;
24 इसलिए उन्होंने आपस में कहा,
“हम इसको न फाड़ें, परन्तु इस पर
चिट्ठी डालें कि वह किसका होगा।”
यह इसलिए हुआ, कि पवित्रशास्त्र की
बात पूरी हो, “उन्होंने मेरे कपड़े आपस
में बाँट लिए और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी
डाली।” ***(??. 22:18)***

????? ?? ????? ????? ?? ????? ??????????

25 अत: सिपाहियों ने ऐसा ही
किया। परन्तु यीशु के क्रूस के पास
उसकी माता और उसकी माता की
बहन मरियम, क्लोपास की पत्नी और
मरियम मगदलीनी खड़ी थी।
26 यीशु ने अपनी माता और उस
चेले को जिससे वह प्रेम रखता था पास
खड़े देखकर अपनी माता से कहा, **“हे
नारी, देख, यह तेरा पुत्र है।”**
27 तब उस चेले से कहा, **“देख, यह
तेरी माता है।”** और उसी समय से वह
चेला, उसे अपने घर ले गया।

????????? ?? ????? ?????

28 इसके बाद यीशु ने यह जानकर
कि अब सब कुछ हो चुका; इसलिए
कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो कहा,
“मैं प्यासा हूँ।”
29 वहाँ एक सिरके से भरा हुआ
बर्तन धरा था, इसलिए उन्होंने सिरके
के भिगाए हुए पनसोख्ता को जूफे पर
रखकर उसके मुँह से लगाया। ***(??.
69:21)***
30 जब यीशु ने वह सिरका लिया,
तो कहा, **“पूरा हुआ”;** और सिर
झुकाकर प्राण त्याग दिए। ***(?????
23:46, ??. 15:37)***

????? ?? ????? ?????

31 और इसलिए कि वह तैयारी
का दिन था, यहूदियों ने पिलातुस से

विनती की, कि उनकी टाँगें तोड़ दी जाएँ और वे उतारे जाएँ ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें, क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था। ***(▯▯. 15: 42, ▯▯▯▯. 21:22,23)***

32 इसलिए सिपाहियों ने आकर पहले की टाँगें तोड़ीं तब दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे।

33 परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उसकी टाँगें न तोड़ीं।

34 परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उसमें से तुरन्त लहू और पानी निकला।

35 जिसने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उसकी गवाही सच्ची है; और वह जानता है, कि सच कहता है कि तुम भी विश्वास करो।

36 ये बातें इसलिए हुईं कि पवित्रशास्त्र की यह बात पूरी हो, "उसकी कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी।" ***(▯▯▯▯▯. 12:46, ▯▯▯. 9:12, ▯▯. 34:20)***

37 फिर एक और स्थान पर यह लिखा है, "जिसे उन्होंने बेधा है, उस पर दृष्टि करेंगे।" ***(▯▯. 12:10)***

▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯

38 इन बातों के बाद अरिमतियाह के यूसुफ ने, जो यीशु का चेला था, (परन्तु यहूदियों के डर से इस बात को छिपाए रखता था), पिलातुस से विनती की, कि मैं यीशु के शव को ले जाऊँ, और पिलातुस ने उसकी विनती सुनी, और वह आकर उसका शव ले गया।

39 नीकुदेमुस भी जो पहले यीशु के पास रात को गया था पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया।

40 तब उन्होंने यीशु के शव को लिया और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध-द्रव्य के साथ कफन में लपेटा।

41 उस स्थान पर जहाँ यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, एक बारी थी; और उस बारी में एक नई कब्र थी; जिसमें कभी कोई न रखा गया था।

42 अतः यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण, उन्होंने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी।

20

▯▯▯▯ ▯▯▯▯

1 सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा।

2 तब वह दौड़ी और शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास जिससे यीशु प्रेम रखता था आकर कहा, "वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं; और हम नहीं जानतीं, कि उसे कहाँ रख दिया है।"

3 तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र की ओर चले।

4 और दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे, परन्तु दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहले पहुँचा।

5 और झुककर कपड़े पड़े देखे: तो भी वह भीतर न गया।

6 तब शमौन पतरस उसके पीछे-पीछे पहुँचा और कब्र के भीतर गया और कपड़े पड़े देखे।

7 और वह अँगोछा जो उसके सिर पर बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा।

8 तब दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहले पहुँचा था, भीतर गया और देखकर विश्वास किया।
9 वे तो अब तक पवित्रशास्त्र की वह बात न समझते थे, कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा। ***([illegible]. 16:10)***
10 तब ये चेले अपने घर लौट गए।

[illegible]

11 परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही और रोते-रोते कब्र की ओर झुककर,
12 दो स्वर्गदूतों को उज्ज्वल कपड़े पहने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहाँ यीशु का शव पड़ा था।
13 उन्होंने उससे कहा, "हे नारी, तू क्यों रोती है?" उसने उनसे कहा, "वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहाँ रखा है।"
14 यह कहकर वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और *[illegible]*[*]।
15 यीशु ने उससे कहा, **"हे नारी तू क्यों रोती है? किसको ढूँढ़ती है?"** उसने माली समझकर उससे कहा, "हे श्रीमान, यदि तूने उसे उठा लिया है तो मुझसे कह कि उसे कहाँ रखा है और मैं उसे ले जाऊँगी।"
16 यीशु ने उससे कहा, **"मरियम!"** उसने पीछे फिरकर उससे इब्रानी में कहा, "*[illegible]*[†]!" अर्थात् 'हे गुरु।'
17 यीशु ने उससे कहा, **"मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ।"**
18 मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया, "मैंने प्रभु को देखा और उसने मुझसे बातें कहीं।"

[illegible]

19 उसी दिन जो सप्ताह का पहला दिन था, संध्या के समय जब वहाँ के द्वार जहाँ चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उनसे कहा, **"तुम्हें शान्ति मिले।"**
20 और यह कहकर उसने अपना हाथ और अपना पंजर उनको दिखाए: तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए।
21 यीशु ने फिर उनसे कहा, **"तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।"**
22 यह कहकर उसने उन पर फूँका और उनसे कहा, **"पवित्र आत्मा लो।**
23 ***[illegible]*[‡]वे उनके लिये क्षमा किए गए हैं; जिनके तुम रखो, वे रखे गए हैं।"**

[illegible]

24 परन्तु बारहों में से एक व्यक्ति अर्थात् थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, जब यीशु आया तो उनके साथ न था।
25 जब और चेले उससे कहने लगे, "हमने प्रभु को देखा है," तब उसने उनसे कहा, "जब तक मैं उसके हाथों में कीलों के छेद न देख लूँ, और कीलों के छेदों में अपनी उँगली न डाल लूँ, तब तक मैं विश्वास नहीं करूँगा।"
26 आठ दिन के बाद उसके चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उनके साथ

---

[*] **20:14** *[illegible]:* वह उसे देखने की उम्मीद नहीं कर रही थी। [†] **20:16** *[illegible]:* यह एक इब्रानी शब्द है, जिसका अर्थ है, मेरे महान गुरू [‡] **20:23** *[illegible]:* यीशु ने सब प्रेरितों पर वही सामर्थ्य प्रदान की, वह उनमें से किसी को भी कोई विशेष अधिकार नहीं देता है।

था, और द्वार बन्द थे, तब यीशु ने
आकर और बीच में खड़ा होकर कहा,
"तुम्हें शान्ति मिले।"
27 तब उसने थोमा से कहा, **"अपनी
उँगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख
और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर
में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु
विश्वासी हो।"**
28 यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, "हे
मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!"
29 यीशु ने उससे कहा, **"तूने तो मुझे
देखकर विश्वास किया है? धन्य हैं वे
जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया।"**

[illegible]

30 यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों
के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में
लिखे नहीं गए।
31 परन्तु ये इसलिए लिखे गए
हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु
ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और
विश्वास करके उसके नाम से जीवन
पाओ।

21

[illegible]

1 इन बातों के बाद यीशु ने अपने
आपको तिबिरियास झील के किनारे
चेलों पर प्रगट किया और इस रीति से
प्रगट किया।
2 शमौन पतरस और थोमा जो
दिदुमुस कहलाता है, और गलील के
काना नगर का नतनएल और जब्दी के
पुत्र, और उसके चेलों में से दो और जन
इकट्ठे थे।
3 शमौन पतरस ने उनसे कहा, "मैं
मछली पकड़ने जाता हूँ।" उन्होंने
उससे कहा, "हम भी तेरे साथ चलते
हैं।" इसलिए वे निकलकर नाव पर
चढ़े, परन्तु उस रात कुछ न पकड़ा।
4 भोर होते ही यीशु किनारे पर खड़ा
हुआ; फिर भी चेलों ने न पहचाना कि
यह यीशु है।
5 तब यीशु ने उनसे कहा, **"हे
बालकों, क्या तुम्हारे पास कुछ खाने
को है?"** उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं।"
6 उसने उनसे कहा, **"नाव की
दाहिनी ओर जाल डालो, तो
पाओगे।"** तब उन्होंने जाल डाला,
और अब मछलियों की बहुतायत के
कारण उसे खींच न सके।
7 इसलिए उस चेले ने जिससे यीशु
प्रेम रखता था पतरस से कहा, "*[illegible]**।" शमौन पतरस ने यह
सुनकर कि प्रभु है, कमर में अंगरखा
कस लिया, क्योंकि वह नंगा था, और
झील में कूद पड़ा।
8 परन्तु और चेले डोंगी पर
मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते
हुए आए, क्योंकि वे किनारे से अधिक
दूर नहीं, कोई दो सौ हाथ पर थे।
9 जब किनारे पर उतरे, तो उन्होंने
कोयले की आग, और उस पर मछली
रखी हुई, और रोटी देखी।
10 यीशु ने उनसे कहा, **"जो
मछलियाँ तुम ने अभी पकड़ी हैं, उनमें
से कुछ लाओ।"**
11 शमौन पतरस ने डोंगी पर चढ़कर
एक सौ तिरपन बड़ी मछलियों से भरा
हुआ जाल किनारे पर खींचा, और
इतनी मछलियाँ होने पर भी जाल न
फटा।
12 यीशु ने उनसे कहा, **"आओ,
भोजन करो।"** और चेलों में से किसी
को साहस न हुआ, कि उससे पूछे, "तू
कौन है?" क्योंकि वे जानते थे कि यह
प्रभु है।

* **21:7** *[illegible]*: वह आश्वस्त था, सम्भवतः दृश्यमान चमत्कार के द्वारा

13 यीशु आया, और रोटी लेकर उन्हें दी, और वैसे ही मछली भी।

14 यह तीसरी बार है, कि यीशु ने मरे हुओं में से जी उठने के बाद चेलों को दर्शन दिए।

[illegible]

15 भोजन करने के बाद यीशु ने शमौन पतरस से कहा, **"हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इनसे बढ़कर मुझसे प्रेम रखता है?"** उसने उससे कहा, "हाँ प्रभु; तू तो जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।" उसने उससे कहा, **"मेरे मेम्नों को चरा।"**

16 उसने फिर दूसरी बार उससे कहा, **"हे शमौन यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझसे प्रेम रखता है?"** उसने उससे कहा, "हाँ, प्रभु तू जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।" उसने उससे कहा, **"*[illegible]*[†] की रखवाली कर।"**

17 उसने तीसरी बार उससे कहा, **"हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझसे प्रीति रखता है?"** पतरस उदास हुआ, कि उसने उसे तीसरी बार ऐसा कहा, "क्या तू मुझसे प्रीति रखता है?" और उससे कहा, "हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता है: तू यह जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ।" यीशु ने उससे कहा, **"मेरी भेड़ों को चरा।**

18 **मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ, जब तू जवान था, तो अपनी कमर बाँधकर जहाँ चाहता था, वहाँ फिरता था; परन्तु जब तू बूढ़ा होगा, तो अपने हाथ लम्बे करेगा, और दूसरा तेरी कमर बाँधकर जहाँ तू न चाहेगा वहाँ तुझे ले जाएगा।"**

19 उसने इन बातों से दर्शाया कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा; और यह कहकर, उससे कहा, **"मेरे पीछे हो ले।"**

[illegible]

20 पतरस ने फिरकर उस चेले को पीछे आते देखा, जिससे यीशु प्रेम रखता था, और जिसने भोजन के समय उसकी छाती की ओर झुककर पूछा "हे प्रभु, तेरा पकड़वानेवाला कौन है?"

21 उसे देखकर पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, इसका क्या हाल होगा?"

22 यीशु ने उससे कहा, **"यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे क्या? तू मेरे पीछे हो ले।"**

23 इसलिए भाइयों में यह बात फैल गई, कि वह चेला न मरेगा; तो भी यीशु ने उससे यह नहीं कहा, कि वह न मरेगा, परन्तु यह कि **"यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इससे क्या?"**

[illegible]

24 यह वही चेला है, जो इन बातों की गवाही देता है और जिसने इन बातों को लिखा है और हम जानते हैं, कि उसकी गवाही सच्ची है।

25 और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक-एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं।

[†] **21:16** *[illegible]*: यह शब्द आमतौर पर सामान्य रूप में कलीसिया को व्यक्त करता है (यूह 10)

प्रेरितों के काम

[illegible]

वैद्य लूका इस पुस्तक का लेखक है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में व्यक्त अनेक घटनाओं का वह आँखों देखा गवाह था। इसकी पुष्टि उसके द्वारा बहुवचन सर्वनाम शब्द "हम" के उपयोग से होती है (16:10-17; 20:5-21:18; 27:1-28:16)। परम्परा के अनुसार वह एक विजातीय विश्वासी था जो प्रचारक बना।

[illegible]

लगभग ई.स. 60 - 63

लेखन कार्य के मुख्य स्थान यरूशलेम, सामरिया, लुद्दा, याफा, अन्ताकिया, इकुनियुस, लुस्त्रा, दिरबे, फिलिप्पी, थिस्सलुनीके, बिरीया, एथेंस, कुरिन्थ, इफिसुस, कैसरिया, माल्टा, और रोम रहे होंगे।

[illegible]

लूका ने थियुफिलुस को लिखा था (प्रेरि. 1:1)। दुर्भाग्यवश, थियुफिलुस के बारे में अन्य कोई जानकारी नहीं है। सम्भव है कि वह लूका का अभिभावक था; या यह नाम थियुफिलुस (अर्थात् "परमेश्वर से प्रेम करनेवाला") मसीही विश्वासियों के लिए काम में लिया गया व्यापक शब्द था।

[illegible]

प्रेरितों के काम की पुस्तक का उद्देश्य है की मसीही कलीसिया के आरम्भ और उसके विकास की कहानी प्रस्तुत करे। यह पुस्तक यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले, यीशु और शुभ सन्देश वृत्तान्तों में बारह शिष्यों के सन्देशों को प्रकट करती है। इस पुस्तक में पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के अवतरण से लेकर मसीही विश्वास के प्रसारण का वृत्तान्त व्यक्त है।

[illegible]

सुसमाचार का प्रसार

रूपरेखा

1. पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा — 1:1-26
2. पवित्र आत्मा का प्रकटीकरण — 2:1-4
3. यरूशलेम में पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित प्रेरितों की सेवकाई और कलीसिया का उत्पीड़न — 2:5-8:3
4. यहूदिया और सामरिया में पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित प्रेरितों की सेवकाई — 8:4-12:25
5. दुनिया के अन्य हिस्सों में पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित प्रेरितों की सेवकाई — 13:1-28:31

[illegible]

1 हे थियुफिलुस, मैंने पहली
पुस्तिका उन सब बातों के विषय में
लिखी, जो यीशु आरम्भ से करता और
सिखाता रहा,
2 उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों
को जिन्हें उसने चुना था, पवित्र
आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर
उठाया न गया,
3 और यीशु के दुःख उठाने के बाद
बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आपको
उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस
दिन तक वह प्रेरितों को दिखाई देता
रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें
करता रहा।

[illegible]

4 और चेलों से मिलकर उन्हें आज्ञा
दी, **"यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु
पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की
प्रतीक्षा करते रहो, जिसकी चर्चा तुम
मुझसे सुन चुके हो।***(* [illegible] *24:49)*

5 **क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में
बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के
बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा
पाओगे।"***([illegible] 3:11)***
6 अतः उन्होंने इकट्ठे होकर उससे
पूछा, "हे प्रभु, क्या तू इसी समय
इस्राएल का राज्य पुनः स्थापित
करेगा?"
7 उसने उनसे कहा, **"उन समयों या
कालों को जानना, जिनको पिता ने
अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा
काम नहीं।**
8 **परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम
पर आएगा तब** *[illegible]*[*]**; और यरूशलेम और सारे
यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी
की छोर तक मेरे गवाह होंगे।"**

[illegible]

9 यह कहकर वह उनके देखते-देखते
ऊपर उठा लिया गया, और बादल
ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया।
([illegible]. 47:5)
10 और उसके जाते समय जब वे
आकाश की ओर ताक रहे थे, तब देखो,
दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहने हुए उनके
पास आ खड़े हुए।
11 और कहने लगे, "हे गलीली
पुरुषों, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख
रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास
से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस
रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा
है उसी रीति से वह फिर आएगा।" ***(1
[illegible]. 4:16)***

[illegible]

12 तब वे जैतून नामक पहाड़ से जो
यरूशलेम के निकट एक सब्त के दिन
की दूरी पर है, यरूशलेम को लौटे।
13 और जब वहाँ पहुँचे तो वे उस
अटारी पर गए, जहाँ पतरस, यूहन्ना,
याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा,
बरतुल्मै, मत्ती, हलफईस का पुत्र
याकूब, शमौन जेलोतेस और याकूब
का पुत्र यहूदा रहते थे।
14 ये सब कई स्त्रियों और यीशु की
माता मरियम और उसके भाइयों के
साथ *[illegible]*[†] प्रार्थना में
लगे रहे।

[illegible]

15 और *[illegible]*[‡]
पतरस भाइयों के बीच में जो एक सौ
बीस व्यक्ति के लगभग इकट्ठे थे, खड़ा
होकर कहने लगा।
16 "हे भाइयों, अवश्य था कि
पवित्रशास्त्र का वह लेख पूरा हो, जो
पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से
यहूदा के विषय में जो यीशु के पकड़ने
वालों का अगुआ था, पहले से कहा
था। ***([illegible]. 41:9)***
17 क्योंकि वह तो हम में गिना
गया, और इस सेवकाई में भी सहभागी
हुआ।"
18 (उसने अधर्म की कमाई से एक
खेत मोल लिया; और सिर के बल
गिरा, और उसका पेट फट गया, और
उसकी सब अंतड़ियाँ निकल गई।
19 और इस बात को यरूशलेम के
सब रहनेवाले जान गए, यहाँ तक
कि उस खेत का नाम उनकी भाषा में
'हकलदमा' अर्थात् 'लहू का खेत' पड़
गया।)
20 क्योंकि भजन संहिता में लिखा
है,
'उसका घर उजड़ जाए,
और उसमें कोई न बसे'

---

[*] **1:8** *[illegible]:* "सामर्थ्य" शब्द यहाँ पर मदद या सहायता को संदर्भित करता है जो पवित्र आत्मा देगा [†] **1:14** *[illegible]:* एक मन के साथ। [‡] **1:15** *[illegible]:* यीशु के उठाएँ जाने और पिन्तेकुस्त के दिनों में से बीच का कोई एक दिन है।

और 'उसका पद कोई दूसरा ले ले।'
([illegible]. 69:25, [illegible]. 109:8)
21 इसलिए जितने दिन तक प्रभु
यीशु हमारे साथ आता-जाता रहा,
अर्थात् यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर
उसके हमारे पास से उठाए जाने तक,
जो लोग बराबर हमारे साथ रहे,
22 उचित है कि उनमें से एक व्यक्ति
हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह
हो जाए।
23 तब उन्होंने दो को खड़ा किया,
एक यूसुफ को, जो बरसब्बास
कहलाता है, जिसका उपनाम यूस्तुस
है, दूसरा मत्तियाह को।
24 और यह कहकर प्रार्थना की, "हे
प्रभु, तू जो सब के मन को जानता है,
यह प्रगट कर कि इन दोनों में से तूने
किसको चुना है,
25 कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई
का पद ले, जिसे यहूदा छोड़कर अपने
स्थान को गया।"
26 तब उन्होंने उनके बारे में चिट्ठियाँ
डाली, और चिट्ठी मत्तियाह के नाम पर
निकली, अतः वह उन ग्यारह प्रेरितों के
साथ गिना गया।

2

[illegible]

1 जब *[illegible]**
आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे
थे। ***([illegible]. 23:15-21, [illegible]. 16:9-11)***
2 और अचानक आकाश से बड़ी
आँधी के समान सनसनाहट का शब्द
हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे
थे, गूँज गया।
3 और उन्हें आग के समान जीभें
फटती हुई दिखाई दी और उनमें से हर
एक पर आ ठहरी।
4 और *[illegible]*†, और जिस प्रकार आत्मा
ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे
अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे।
5 और आकाश के नीचे की हर एक
जाति में से भक्त-यहूदी यरूशलेम में
रहते थे।
6 जब वह शब्द सुनाई दिया, तो
भीड़ लग गई और लोग घबरा गए,
क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता
था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे
हैं।
7 और वे सब चकित और अचम्भित
होकर कहने लगे, "देखो, ये जो बोल
रहे हैं क्या सब गलीली नहीं?
8 तो फिर क्यों हम में से; हर एक
अपनी-अपनी जन्म-भूमि की भाषा
सुनता है?
9 हम जो पारथी, मेदी, एलाम
लोग, मेसोपोटामिया, यहूदिया,
कप्पदूकिया, पुन्तुस और आसिया,
10 और फ्रूगिया और पंफूलिया और
मिस्र और लीबिया देश जो कुरेने
के आस-पास है, इन सब देशों के
रहनेवाले और रोमी प्रवासी,
11 अर्थात् क्या यहूदी, और क्या
यहूदी मत धारण करनेवाले, क्रेती
और अरबी भी हैं, परन्तु अपनी-अपनी
भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े-बड़े
कामों की चर्चा सुनते हैं।"
12 और वे सब चकित हुए, और
घबराकर एक दूसरे से कहने लगे, "यह
क्या हो रहा है?"
13 परन्तु दूसरों ने उपहास करके
कहा, "वे तो नई मदिरा के नशे में हैं।"

* **2:1** *[illegible]:* "पिन्तेकुस्त" एक यूनानी शब्द है फसह के विश्रामदिन से पचासवाँ दिन है। † **2:4** *[illegible]:* पूरी तरह से उसके पवित्र प्रभाव और सामर्थ्य के अधीन थे।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

14 पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से कहने लगा, “हे यहूदियों, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालों, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो।
15 जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं हैं, क्योंकि अभी तो तीसरा पहर ही दिन चढ़ा है।
16 परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है:
17 ‘परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि
मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूँगा और
तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी,
और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे,
और तुम्हारे वृद्ध पुरुष स्वप्न देखेंगे।
18 वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों
में अपनी आत्मा उण्डेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।
19 और मैं ऊपर आकाश में *[illegible] [illegible]*‡,
और नीचे धरती पर चिन्ह, अर्थात्
लहू, और आग और धुएँ का बादल दिखाऊँगा।
20 *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*§ के आने से पहले
सूर्य अंधेरा
और चाँद लहू सा हो जाएगा।
21 और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा।’ ***([illegible]. 2:28-32)***
22 “हे इस्राएलियों, ये बातें सुनो कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो।
23 उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला।
24 परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया: क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता। ***(2 [illegible]. 22:6, [illegible]. 18:4, [illegible]. 116:3)***
25 क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है,
‘मैं प्रभु को सर्वदा अपने सामने देखता रहा
क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊँ।
26 इसी कारण मेरा मन आनन्दित हुआ, और मेरी जीभ मगन हुई;
वरन् मेरा शरीर भी आशा में बना रहेगा।
27 क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा;
और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा!
28 तूने मुझे जीवन का मार्ग बताया है;
तू मुझे अपने दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा।’ ***([illegible]. 16:8-11)***
29 “हे भाइयों, मैं उस कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूँ कि वह तो मर गया और गाड़ा भी गया और उसकी कब्र

‡ **2:19** *[illegible] [illegible]:* मैं परमेश्वर द्वारा निष्पादित चिन्ह या चमत्कार दूँगा। § **2:20** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* उन दिनों में अन्य दिनों की तुलना से परमेश्वर असाधारण रूप से अधिक प्रभावशाली और सामर्थ्य के साथ प्रकट होगा।

आज तक हमारे यहाँ वर्तमान है। ***(1 □□□□. 2:10)***

30 वह भविष्यद्वक्ता था, वह जानता था कि परमेश्वर ने उससे शपथ खाई है, मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊँगा। ***(2 □□□. 7:12,13, □□. 132:11)***

31 उसने होनेवाली बात को पहले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की,

कि न तो उसका प्राण अधोलोक में
छोड़ा गया, और न उसकी देह
सड़ने पाई। ***(□□. 16:10)***

32 "इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं।

33 इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उण्डेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो।

34 क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह स्वयं कहता है,

'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने
बैठ,
35 जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे
पाँवों तले की चौकी न कर
दूँ।' " ***(□□. 110:1)***

36 "अतः अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।"

37 तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और अन्य प्रेरितों से पूछने लगे, "हे भाइयों, हम क्या करें?"

38 पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।

39 क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।" ***(□□□. 2:32)***

40 उसने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ। ***(□□□□. 32:5, □□. 78:8)***

41 अतः जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए।

□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□

42 और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

43 और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे।

44 और सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे की थीं।

45 और वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे।

46 और वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सिधाई से भोजन किया करते थे।

47 और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे; और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।

3

□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□

1 पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे।

2 और लोग एक जन्म के लँगड़े को
ला रहे थे, जिसको वे प्रतिदिन मन्दिर
के उस द्वार पर जो 'सुन्दर' कहलाता
है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में
जानेवालों से भीख माँगे।
3 जब उसने पतरस और यूहन्ना को
मन्दिर में जाते देखा, तो उनसे भीख
माँगी।
4 पतरस ने यूहन्ना के साथ उसकी
ओर ध्यान से देखकर कहा, "हमारी
ओर देख!"
5 अतः वह उनसे कुछ पाने की आशा
रखते हुए उनकी ओर ताकने लगा।

6 तब पतरस ने कहा, "चाँदी और
सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो
मेरे पास है, वह तुझे देता हूँ; यीशु
मसीह नासरी के नाम से चल फिर।"
7 और उसने उसका दाहिना हाथ
पकड़ के उसे उठाया; और तुरन्त उसके
पाँवों और टखनों में बल आ गया।
8 और वह उछलकर खड़ा हो गया,
और चलने फिरने लगा; और चलता,
और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति
करता हुआ उनके साथ मन्दिर में
गया।
9 सब लोगों ने उसे चलते फिरते
और परमेश्वर की स्तुति करते देखकर,
10 उसको पहचान लिया कि यह
वही है, जो मन्दिर के 'सुन्दर' फाटक
पर बैठकर भीख माँगा करता था; और
उस घटना से जो उसके साथ हुई थी;
वे बहुत अचम्भित और चकित हुए।

[illegible]

11 जब वह पतरस और यूहन्ना को
पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत
अचम्भा करते हुए उस ओसारे में जो
सुलैमान का कहलाता है, उनके पास
दौड़े आए।
12 यह देखकर पतरस ने लोगों से
कहा, "हे इस्राएलियों, तुम इस मनुष्य
पर क्यों अचम्भा करते हो, और हमारी
ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो, कि
मानो हमने अपनी सामर्थ्य या भक्ति
से इसे चलने फिरने योग्य बना दिया।
13 *[illegible]**, हमारे
पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने सेवक
यीशु की महिमा की, जिसे तुम ने
पकड़वा दिया, और जब पिलातुस ने
उसे छोड़ देने का विचार किया, तब
तुम ने उसके सामने यीशु का तिरस्कार
किया।
14 तुम ने *[illegible]*† का तिरस्कार किया, और
चाहा कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिये
छोड़ दिया जाए।
15 और तुम ने जीवन के कर्ता को
मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं
में से जिलाया; और इस बात के हम
गवाह हैं।
16 और उसी के नाम ने, उस
विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर
है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते
हो और जानते भी हो सामर्थ्य दी है;
और निश्चय उसी विश्वास ने जो यीशु
के द्वारा है, इसको तुम सब के सामने
बिलकुल भला चंगा कर दिया है।
17 "और अब हे भाइयों, मैं जानता
हूँ कि यह काम तुम ने अज्ञानता से
किया, और वैसा ही तुम्हारे सरदारों ने
भी किया।
18 परन्तु जिन बातों को परमेश्वर ने
सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से पहले
ही बताया था, कि उसका मसीह दुःख

---

* **3:13** *[illegible]:* वह अब्राहम का परमेश्वर कहा जाता है क्योंकि अब्राहम ने उन्हें परमेश्वर के रूप में स्वीकार किया। † **3:14** *[illegible]:* वह एक जो व्यवस्था की दृष्टिकोण से न्यायोचित है या जिस पर अपराध का दोष नहीं लगाया जा सकता है।

उठाएगा; उन्हें उसने इस रीति से पूरा किया।

19 इसलिए, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाएँ जाएँ, जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएँ।

20 और वह उस यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिये पहले ही से मसीह ठहराया गया है।

21 अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह *[illegible]*‡ न कर ले जिसकी चर्चा प्राचीनकाल से परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है।

22 जैसा कि मूसा ने कहा, 'प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ जैसा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुम से कहे, उसकी सुनना।' ***([illegible]. 18:15-18)***

23 परन्तु प्रत्येक मनुष्य जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुने, लोगों में से नाश किया जाएगा। ***([illegible]. 23:29, [illegible]. 18:19)***

24 और शमूएल से लेकर उसके बाद वालों तक जितने भविष्यद्वक्ताओं ने बात कहीं उन सब ने इन दिनों का सन्देश दिया है।

25 तुम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी हो, जो परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों से बाँधी, जब उसने अब्राहम से कहा, 'तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएँगे।' ***([illegible]. 12:3, [illegible]. 18:18, [illegible]. 22:18, [illegible]. 26:4)***

26 परमेश्वर ने अपने सेवक को उठाकर पहले तुम्हारे पास भेजा, कि तुम में से हर एक को उसकी बुराइयों से फेरकर आशीष दे।"

4

[illegible]

1 जब पतरस और यूहन्ना लोगों से यह कह रहे थे, तो याजक और मन्दिर के सरदार और सदूकी उन पर चढ़ आए।

2 वे बहुत क्रोधित हुए कि पतरस और यूहन्ना यीशु के विषय में सिखाते थे और उसके मरे हुओं में से जी उठने का प्रचार करते थे।

3 और उन्होंने उन्हें पकड़कर दूसरे दिन तक हवालात में रखा क्योंकि संध्या हो गई थी।

4 परन्तु वचन के सुननेवालों में से बहुतों ने विश्वास किया, और उनकी गिनती पाँच हजार पुरुषों के लगभग हो गई।

[illegible]: [illegible]

5 दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उनके सरदार और पुरनिए और शास्त्री।

6 और महायाजक हन्ना और कैफा और यूहन्ना और सिकन्दर और जितने महायाजक के घराने के थे, सब यरूशलेम में इकट्ठे हुए।

7 और पतरस और यूहन्ना को बीच में खड़ा करके पूछने लगे, "तुम ने यह काम किस सामर्थ्य से और किस नाम से किया है?"

8 तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा,

9 "हे लोगों के *[illegible]**, इस दुर्बल मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है, यदि आज

---

‡ **3:21** *[illegible]:* किसी वस्तु को उसकी पूर्व स्थिति में पुनर्स्थापित करना * **4:9** *[illegible]:* पतरस ने सही सम्मान के साथ महासभा को संबोधित किया।

हम से उसके विषय में पूछताछ की
जाती है, कि वह कैसे अच्छा हुआ।
10 तो तुम सब और सारे इस्राएली
लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी
के नाम से जिसे तुम ने क्रूस पर
चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में
से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे सामने
भला चंगा खड़ा है।
11 *[illegible]*[†] और वह कोने के
सिरे का पत्थर हो गया। ***([illegible]. 118:22,23, [illegible]. 2:34,35)***
12 और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार
नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में
और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया,
जिसके द्वारा हम उद्धार पा सके।”

[illegible]

13 जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना
का साहस देखा, और यह जाना कि
ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो
अचम्भा किया; फिर उनको पहचाना,
कि ये यीशु के साथ रहे हैं।
14 परन्तु उस मनुष्य को जो अच्छा
हुआ था, उनके साथ खड़े देखकर,
यहूदी उनके विरोध में कुछ न कह
सके।
15 परन्तु उन्हें महासभा के बाहर
जाने की आज्ञा देकर, वे आपस में
विचार करने लगे,
16 “हम इन मनुष्यों के साथ क्या
करें? क्योंकि यरूशलेम के सब
रहनेवालों पर प्रगट है, कि इनके द्वारा
एक प्रसिद्ध चिन्ह दिखाया गया है; और
हम उसका इन्कार नहीं कर सकते।
17 परन्तु इसलिए कि यह बात
लोगों में और अधिक फैल न जाए, हम
उन्हें धमकाएँ, कि वे इस नाम से फिर
किसी मनुष्य से बातें न करें।”
18 तब पतरस और यूहन्ना को
बुलाया और चेतावनी देकर यह कहा,
“यीशु के नाम से कुछ भी न बोलना
और न सिखाना।”
19 परन्तु पतरस और यूहन्ना ने
उनको उत्तर दिया, “तुम ही न्याय
करो, कि क्या यह परमेश्वर के निकट
भला है, कि हम परमेश्वर की बात से
बढ़कर तुम्हारी बात मानें?
20 क्योंकि यह तो हम से हो नहीं
सकता, कि जो हमने देखा और सुना
है, वह न कहें।”
21 तब उन्होंने उनको और धमकाकर
छोड़ दिया, क्योंकि लोगों के कारण
उन्हें दण्ड देने का कोई कारण नहीं
मिला, इसलिए कि जो घटना हुई थी
उसके कारण सब लोग परमेश्वर की
बड़ाई करते थे।
22 क्योंकि वह मनुष्य, जिस पर यह
चंगा करने का चिन्ह दिखाया गया था,
चालीस वर्ष से अधिक आयु का था।

[illegible]

23 पतरस और यूहन्ना छूटकर अपने
साथियों के पास आए, और जो कुछ
प्रधान याजकों और प्राचीनों ने उनसे
कहा था, उनको सुना दिया।
24 यह सुनकर, उन्होंने एक चित्त
होकर ऊँचे शब्द से परमेश्वर से कहा,
“हे प्रभु, तू वही है जिसने स्वर्ग और
पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें
है बनाया। ***([illegible]. 20:11, [illegible]. 146:6)***
25 तूने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने
सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से
कहा,
‘अन्यजातियों ने हुल्लड़ क्यों
मचाया?

[†] **4:11** *[illegible]:* यह वही है जिसे लोगों ने अस्वीकार किया परन्तु परमेश्वर ने उसे अपनी योजना का आधार बना दिया।

और देश-देश के लोगों ने क्यों व्यर्थ
बातें सोची?
26 प्रभु और उसके अभिषिक्त के
विरोध में पृथ्वी के राजा खड़े
हुए,
और हाकिम एक साथ इकट्ठे हो गए।’
([illegible]. 2:1,2)
27 “क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र
सेवक यीशु के विरोध में, जिसे
तूने अभिषेक किया, हेरोदेस और
पुन्तियुस पिलातुस भी अन्यजातियों
और इस्राएलियों के साथ इस नगर में
इकट्ठे हुए, ***([illegible]. 61:1)***
28 कि जो कुछ पहले से तेरी
सामर्थ्य और मति से ठहरा था वही
करें।
29 अब हे प्रभु, उनकी धमकियों को
देख; और अपने दासों को यह वरदान
दे कि तेरा वचन बड़े साहस से सुनाएँ।
30 और चंगा करने के लिये तू अपना
हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्भुत काम
तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए
जाएँ।”
31 जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह
स्थान जहाँ वे इकट्ठे थे *[illegible]*‡,
और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो
गए, और परमेश्वर का वचन साहस से
सुनाते रहे।

[illegible]

32 और विश्वास करनेवालों की
मण्डली एक चित्त और एक मन की थी,
यहाँ तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति
अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ
साझे का था।
33 और प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से प्रभु
यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे
और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।
34 और उनमें कोई भी दरिद्र न था,
क्योंकि जिनके पास भूमि या घर थे, वे
उनको बेच-बेचकर, बिकी हुई वस्तुओं
का दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पाँवों
पर रखते थे।
35 और जैसी जिसे आवश्यकता
होती थी, उसके अनुसार हर एक को
बाँट दिया करते थे।
36 और यूसुफ नामक, साइप्रस का
एक लेवी था जिसका नाम प्रेरितों
ने बरनबास अर्थात् (शान्ति का पुत्र)
रखा था।
37 उसकी कुछ भूमि थी, जिसे उसने
बेचा, और दाम के रुपये लाकर प्रेरितों
के पाँवों पर रख दिए।

5

[illegible]

1 हनन्याह नामक एक मनुष्य, और
उसकी पत्नी सफीरा ने कुछ भूमि
बेची।
2 और उसके दाम में से कुछ रख
छोड़ा; और यह बात उसकी पत्नी
भी जानती थी, और उसका एक भाग
लाकर प्रेरितों के पाँवों के आगे रख
दिया।
3 परन्तु पतरस ने कहा, “हे
हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह
बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा
से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से
कुछ रख छोड़े?
4 जब तक वह तेरे पास रही, क्या
तेरी न थी? और जब बिक गई तो
उसकी कीमत क्या तेरे वश में न थी?
तूने यह बात अपने मन में क्यों सोची?
तूने मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से
झूठ बोला है।”

‡ **4:31** *[illegible]:* आमतौर पर इसका अर्थ “तीव्र कम्पन,” भूकम्प का झटका या हवा से हिलाए गए पेड़ो के रूप में होता है * **5:5** *[illegible]:* यह जानते हुए कि उसका पाप ज्ञात हो गया और परमेश्वर को धोखा देने के प्रयास का महापाप का, वो दोषी पाया गया।

5 [illegible]*, और प्राण
छोड़ दिए; और सब सुननेवालों पर
बड़ा भय छा गया।
6 फिर जवानों ने उठकर उसकी
अर्थी बनाई और बाहर ले जाकर गाड़
दिया।
7 लगभग तीन घंटे के बाद उसकी
पत्नी, जो कुछ हुआ था न जानकर,
भीतर आई।
8 तब पतरस ने उससे कहा, "मुझे
बता क्या तुम ने वह भूमि इतने ही में
बेची थी?" उसने कहा, "हाँ, इतने ही
में।"
9 पतरस ने उससे कहा, "यह क्या
बात है, कि तुम दोनों प्रभु के आत्मा
की परीक्षा के लिए एक साथ सहमत
हो गए? देख, तेरे पति के गाड़नेवाले
द्वार ही पर खड़े हैं, और तुझे भी बाहर
ले जाएँगे।"
10 तब वह तुरन्त उसके पाँवों पर
गिर पड़ी, और प्राण छोड़ दिए; और
जवानों ने भीतर आकर उसे मरा पाया,
और बाहर ले जाकर उसके पति के पास
गाड़ दिया।
11 और सारी कलीसिया पर और इन
बातों के सब सुननेवालों पर, बड़ा भय
छा गया।

[illegible]

12 प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह
और अद्भुत काम लोगों के बीच में
दिखाए जाते थे, और वे सब एक चित्त
होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ
करते थे।
13 परन्तु औरों में से किसी को यह
साहस न होता था कि, उनमें जा मिलें;
फिर भी लोग उनकी बड़ाई करते थे।
14 और विश्वास करनेवाले बहुत
सारे पुरुष और स्त्रियाँ प्रभु की
कलीसिया में [illegible]†।
15 यहाँ तक कि लोग बीमारों को
सड़कों पर ला-लाकर, खाटों और
खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब
पतरस आए, तो उसकी छाया ही उनमें
से किसी पर पड़ जाए।
16 और यरूशलेम के आस-पास के
नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और
अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को
ला-लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब
अच्छे कर दिए जाते थे।

[illegible]

17 तब महायाजक और उसके सब
साथी जो सदूकियों के पंथ के थे, ईर्ष्या
से भर उठे।
18 और प्रेरितों को पकड़कर
बन्दीगृह में बन्द कर दिया।
19 परन्तु रात को प्रभु के एक
स्वर्गदूत ने बन्दीगृह के द्वार खोलकर
उन्हें बाहर लाकर कहा,
20 "जाओ, मन्दिर में खड़े होकर,
इस जीवन की सब बातें लोगों को
सुनाओ।"
21 वे यह सुनकर भोर होते
ही मन्दिर में जाकर उपदेश देने
लगे। परन्तु महायाजक और उसके
साथियों ने आकर महासभा को और
इस्राएलियों के सब प्राचीनों को इकट्ठा
किया, और बन्दीगृह में कहला भेजा
कि उन्हें लाएँ।
22 परन्तु अधिकारियों ने वहाँ
पहुँचकर उन्हें बन्दीगृह में न पाया,
और लौटकर सन्देश दिया,
23 "हमने बन्दीगृह को बड़ी
सावधानी से बन्द किया हुआ, और
पहरेवालों को बाहर द्वारों पर खड़े हुए

† **5:14** [illegible]: इन सब बातों के प्रभाव से विश्वासियों की संख्या में वृद्धि हो रही थी।

पाया; परन्तु जब खोला, तो भीतर कोई न मिला।”

24 जब मन्दिर के सरदार और प्रधान याजकों ने ये बातें सुनीं, तो उनके विषय में भारी चिन्ता में पड़ गए कि उनका क्या हुआ!

25 इतने में किसी ने आकर उन्हें बताया, “देखो, जिन्हें तुम ने बन्दीगृह में बन्द रखा था, वे मनुष्य मन्दिर में खड़े हुए लोगों को उपदेश दे रहे हैं।”

26 तब सरदार, अधिकारियों के साथ जाकर, उन्हें ले आया, परन्तु बलपूर्वक नहीं, क्योंकि वे लोगों से डरते थे, कि उन पर पथराव न करें।

27 उन्होंने उन्हें फिर लाकर महासभा के सामने खड़ा कर दिया और महायाजक ने उनसे पूछा,

28 “क्या हमने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी, कि तुम इस नाम से उपदेश न करना? फिर भी देखो, तुम ने सारे यरूशलेम को अपने उपदेश से भर दिया है और उस व्यक्ति का लहू हमारी गर्दन पर लाना चाहते हो।”

29 तब पतरस और, अन्य प्रेरितों ने उत्तर दिया, “मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है।

30 हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया, जिसे तुम ने क्रूस पर लटकाकर मार डाला था। ***([illegible]. 21:22,23)***

31 उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारकर्ता ठहराकर, अपने दाहिने हाथ से सर्वोच्च किया, कि वह इस्राएलियों को मन फिराव और पापों की क्षमा प्रदान करे। ***([illegible] 24:47)***

32 और हम इन बातों के गवाह हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं।”

33 यह सुनकर वे जल उठे, और उन्हें मार डालना चाहा।

34 परन्तु *[illegible]*‡ नामक एक फरीसी ने जो व्यवस्थापक और सब लोगों में माननीय था, महासभा में खड़े होकर प्रेरितों को थोड़ी देर के लिये बाहर कर देने की आज्ञा दी।

35 तब उसने कहा, “हे इस्राएलियों, जो कुछ इन मनुष्यों से करना चाहते हो, सोच समझ के करना।

36 क्योंकि इन दिनों से पहले थियूदास यह कहता हुआ उठा, कि मैं भी कुछ हूँ; और कोई चार सौ मनुष्य उसके साथ हो लिए, परन्तु वह मारा गया; और जितने लोग उसे मानते थे, सब तितर-बितर हुए और मिट गए।

37 उसके बाद नाम लिखाई के दिनों में यहूदा गलीली उठा, और कुछ लोग अपनी ओर कर लिए; वह भी नाश हो गया, और जितने लोग उसे मानते थे, सब तितर-बितर हो गए।

38 इसलिए अब मैं तुम से कहता हूँ, इन मनुष्यों से दूर ही रहो और उनसे कुछ काम न रखो; क्योंकि यदि यह योजना या काम मनुष्यों की ओर से हो तब तो मिट जाएगा;

39 परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है, तो तुम उन्हें कदापि मिटा न सकोगे; कहीं ऐसा न हो, कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो।”

40 तब उन्होंने उसकी बात मान ली; और प्रेरितों को बुलाकर पिटवाया; और यह आज्ञा देकर छोड़ दिया, कि यीशु के नाम से फिर बातें न करना।

41 वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के सामने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिये निरादर होने

‡ **5:34** *[illegible]:* पहली शताब्दी के आरम्भ में महासभा में एक प्रकार से न्यायमूर्ति था और वह महान यहूदी शिक्षक हिल्लेल का पोता भी था

के योग्य तो ठहरे।
42 इसके बाद हर दिन, मन्दिर में
और घर-घर में, वे लगातार सिखाते
और प्रचार करते थे कि यीशु ही मसीह
है।

6

[illegible]

1 उन दिनों में जब चेलों की संख्या
बहुत बढ़ने लगी, तब यूनानी भाषा
बोलनेवाले इब्रानियों पर कुड़कुड़ाने
लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में
हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली
जाती।
2 तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली
को अपने पास बुलाकर कहा, "यह
ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन
छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में
रहें।
3 इसलिए हे भाइयों, अपने में
से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र
आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हो, चुन
लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा
दें।
4 परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन
की सेवा में लगे रहेंगे।"
5 यह बात सारी मण्डली
को अच्छी लगी, और उन्होंने
स्तिफनुस नामक एक पुरुष को
जो विश्वास और पवित्र आत्मा से
परिपूर्ण था, फिलिप्पुस, प्रुखुरुस,
नीकानोर, तीमोन, परमिनास और
*[illegible]** वासी नीकुलाउस को
जो यहूदी मत में आ गया था, चुन
लिया।
6 और इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा
किया और उन्होंने प्रार्थना करके उन
पर हाथ रखे।
7 और *[illegible]*† और यरूशलेम में चेलों
की गिनती बहुत बढ़ती गई; और
याजकों का एक बड़ा समाज इस मत
के अधीन हो गया।

[illegible]

8 स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य
से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बड़े
अद्भुत काम और चिन्ह दिखाया
करता था।
9 तब उस आराधनालय में से
जो दासत्व-मुक्त कहलाती थी,
और कुरेनी और सिकन्दरिया और
किलिकिया और आसिया के लोगों
में से कई एक उठकर स्तिफनुस से
वाद-विवाद करने लगे।
10 परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा
का जिससे वह बातें करता था, वे
सामना न कर सके।
11 इस पर उन्होंने कई लोगों को
उकसाया जो कहने लगे, "हमने इसे
[illegible]‡ की बातें कहते सुना
है।"
12 और लोगों और प्राचीनों और
शास्त्रियों को भड़काकर चढ़ आए और
उसे पकड़कर महासभा में ले आए।
13 और झूठे गवाह खड़े किए,
जिन्होंने कहा, "यह मनुष्य इस
पवित्रस्थान और व्यवस्था के विरोध
में बोलना नहीं छोड़ता। ***([illegible]. 26:11)***
14 क्योंकि हमने उसे यह कहते सुना
है, कि यही यीशु नासरी इस जगह को

---

* **6:5** *[illegible]:* यह नगर सीरिया में, ओरोंटस नदी पर स्थित था, और पूर्वकाल में इसे रिब्लाथ कहा जाता था। † **6:7** *[illegible]:* यही कारण है, सुसमाचार अधिक से अधिक सफल रहा। ‡ **6:11** *[illegible]:* मूसा अत्यधिक सम्मान के साथ माना जाता था, परमेश्वर को यहूदियों ने केवल व्यवस्था का दाता माना था।।

ढा देगा, और उन रीतियों को बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं।”

15 तब सब लोगों ने जो महासभा में बैठे थे, उसकी ओर ताक कर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]§।

7

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 तब महायाजक ने कहा, “क्या ये बातें सत्य है?”

2 उसने कहा, “हे भाइयों, और पिताओं सुनो, हमारा पिता अब्राहम हारान में बसने से पहले जब मेसोपोटामिया में था; तो तेजोमय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया।

3 और उससे कहा, ‘तू अपने देश और अपने कुटुम्ब से निकलकर उस देश में चला जा, जिसे मैं तुझे दिखाऊँगा।’ ***([illegible]. 12:1)***

4 तब वह कसदियों के देश से निकलकर हारान में जा बसा; और उसके पिता की मृत्यु के बाद परमेश्वर ने उसको वहाँ से इस देश में लाकर बसाया जिसमें अब तुम बसते हो, ***([illegible]. 12:5)***

5 और परमेश्वर ने उसको कुछ विरासत न दी, वरन् पैर रखने भर की भी उसमें जगह न दी, यद्यपि उस समय उसके कोई पुत्र भी न था। फिर भी प्रतिज्ञा की, ‘मैं यह देश, तेरे और तेरे बाद तेरे वंश के हाथ कर दूँगा।’ ***([illegible]. 13:15, [illegible]. 15:18, [illegible]. 16:1, [illegible]. 24:7, [illegible]. 2:5, [illegible]. 11:5)***

6 और परमेश्वर ने यह कहा, ‘तेरी सन्तान के लोग पराए देश में परदेशी होंगे, और वे उन्हें दास बनाएँगे, और चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे।’ ***([illegible]. 15:13,14, [illegible]. 2:22)***

7 फिर परमेश्वर ने कहा, ‘जिस जाति के वे दास होंगे, उसको मैं दण्ड दूँगा; और इसके बाद वे निकलकर इसी जगह मेरी सेवा करेंगे।’ ***([illegible]. 15:14, [illegible]. 3:12)***

8 और उसने उससे खतने की *[illegible]** बाँधी; और इसी दशा में इसहाक उससे उत्पन्न हुआ; और आठवें दिन उसका खतना किया गया; और इसहाक से याकूब और याकूब से बारह कुलपति उत्पन्न हुए। ***([illegible]. 17:10,11, [illegible]. 21:4)***

9 “और कुलपतियों ने यूसुफ से ईर्ष्या करके उसे मिस्र देश जानेवालों के हाथ बेचा; परन्तु परमेश्वर उसके साथ था। ***([illegible]. 37:11, [illegible]. 37:28, [illegible]. 39:2,3, [illegible]. 45:4)***

10 और उसे उसके सब क्लेशों से छुड़ाकर मिस्र के राजा फ़िरौन के आगे अनुग्रह और बुद्धि दी, उसने उसे मिस्र पर और अपने सारे घर पर राज्यपाल ठहराया। ***([illegible]. 39:21, [illegible]. 41:40, [illegible]. 41:43, [illegible]. 41:46, [illegible]. 105:21)***

11 तब मिस्र और कनान के सारे देश में अकाल पड़ा; जिससे भारी क्लेश हुआ, और हमारे पूर्वजों को अन्न नहीं मिलता था। ***([illegible]. 41:54,55, [illegible]. 42:5)***

12 परन्तु याकूब ने यह सुनकर, कि मिस्र में अनाज है, हमारे पूर्वजों को पहली बार भेजा। ***([illegible]. 42:2)***

13 और दूसरी बार यूसुफ अपने भाइयों पर प्रगट हो गया, और यूसुफ की जाति फ़िरौन को मालूम हो गई। ***([illegible]. 45:1, [illegible]. 45:3, [illegible]. 45:16)***

---

§ **6:15** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* इस अभिव्यक्ति से जाहिर है कि वह ईमानदारी, निर्भयता और परमेश्वर में विश्वास के सबूत को प्रकट करता है, को दर्शाता है। * **7:8** *[illegible]:* “वाचा” शब्द का अर्थ है, “दो या अधिक व्यक्तियों के बीच एक समझौता”

14 तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब और अपने सारे कुटुम्ब को, जो पचहत्तर व्यक्ति थे, बुला भेजा। ***(□□□□. 45:9-11, □□□□. 45:18,19, □□□□□. 1:5, □□□□. 10:22)***

15 तब याकूब मिस्र में गया; और वहाँ वह और हमारे पूर्वज मर गए। ***(□□□□. 45:5,6, □□□□. 49:33, □□□□□. 1:6)***

16 उनके शव शेकेम में पहुँचाए जाकर उस कब्र में रखे गए, जिसे अब्राहम ने चाँदी देकर शेकेम में हमोर की सन्तान से मोल लिया था। ***(□□□□. 23:16,17, □□□□. 33:19, □□□□. 49:29,30, □□□□. 50:13, □□□. 24:32)***

17 "परन्तु जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय निकट आया, जो परमेश्वर ने अब्राहम से की थी, तो मिस्र में वे लोग बढ़ गए; और बहुत हो गए।

18 तब मिस्र में दूसरा राजा हुआ जो यूसुफ को नहीं जानता था। ***(□□□□□. 1:7,8)***

19 उसने हमारी जाति से चतुराई करके हमारे बापदादों के साथ यहाँ तक बुरा व्यवहार किया, कि उन्हें अपने बालकों को फेंक देना पड़ा कि वे जीवित न रहें। ***(□□□□□. 1:9,10, □□□□□. 1:18, □□□□□. 1:22)***

20 उस समय मूसा का जन्म हुआ; और वह परमेश्वर की दृष्टि में बहुत ही सुन्दर था; और वह तीन महीने तक अपने पिता के घर में पाला गया। ***(□□□□□. 2:2)***

21 परन्तु जब फेंक दिया गया तो फ़िरौन की बेटी ने उसे उठा लिया, और अपना पुत्र करके पाला। ***(□□□□□. 2:5, □□□□□. 2:10)***

22 और मूसा को मिस्रियों की सारी विद्या पढ़ाई गई, और वह वचन और कामों में सामर्थी था।

23 "जब वह चालीस वर्ष का हुआ, तो उसके मन में आया कि अपने इस्राएली भाइयों से भेंट करे। ***(□□□□□. 2:11)***

24 और उसने एक व्यक्ति पर अन्याय होते देखकर, उसे बचाया, और मिस्री को मारकर सताए हुए का पलटा लिया। ***(□□□□□. 2:12)***

25 उसने सोचा, कि उसके भाई समझेंगे कि परमेश्वर उसके हाथों से उनका उद्धार करेगा, परन्तु उन्होंने न समझा।

26 दूसरे दिन जब इस्राएली आपस में लड़ रहे थे, तो वह वहाँ जा पहुँचा; और यह कहकर उन्हें मेल करने के लिये समझाया, कि हे पुरुषों, 'तुम तो भाई-भाई हो, एक दूसरे पर क्यों अन्याय करते हो?'

27 परन्तु जो अपने पड़ोसी पर अन्याय कर रहा था, उसने उसे यह कहकर धक्का दिया, 'तुझे किसने हम पर अधिपति और न्यायाधीश ठहराया है?

28 क्या जिस रीति से तूने कल मिस्री को मार डाला मुझे भी मार डालना चाहता है?' ***(□□□□□. 2:13,14)***

29 यह बात सुनकर, मूसा भागा और मिद्यान देश में परदेशी होकर रहने लगा: और वहाँ उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए। ***(□□□□□. 2:15-22, □□□□□. 18:3,4)***

30 "जब पूरे चालीस वर्ष बीत गए, तो एक स्वर्गदूत ने सीनै पहाड़ के जंगल में उसे जलती हुई झाड़ी की ज्वाला में दर्शन दिया। ***(□□□□□. 3:1)***

31 मूसा ने उस दर्शन को देखकर अचम्भा किया, और जब देखने के लिये

पास गया, तो प्रभु की यह वाणी सुनाई
दी, ***(⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 3:2,3)***
32 'मैं तेरे पूर्वज, अब्राहम का
परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और
याकूब का परमेश्वर हूँ।' तब तो मूसा
काँप उठा, यहाँ तक कि उसे देखने का
साहस न रहा।
33 तब प्रभु ने उससे कहा, 'अपने
पाँवों से जूती उतार ले, क्योंकि जिस
जगह तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है।
(⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 3:5)
34 मैंने सचमुच अपने लोगों की
दुर्दशा को जो मिस्र में है, देखी है;
और उनकी आहें और उनका रोना सुन
लिया है; इसलिए उन्हें छुड़ाने के लिये
उतरा हूँ। अब आ, मैं तुझे मिस्र में
भेजूँगा। ***(⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 2:24, ⍰⍰⍰⍰⍰⍰.
3:7-10)***
35 "जिस मूसा को उन्होंने यह
कहकर नकारा था, 'तुझे किसने
हम पर अधिपति और न्यायाधीश
ठहराया है?' उसी को परमेश्वर ने
अधिपति और छुड़ानेवाला ठहराकर,
उस स्वर्गदूत के द्वारा जिसने उसे झाड़ी
में दर्शन दिया था, भेजा। ***(⍰⍰⍰⍰⍰⍰.
2:14, ⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 3:2)***
36 यही व्यक्ति मिस्र और लाल
समुद्र और जंगल में चालीस वर्ष
तक अद्भुत काम और चिन्ह दिखा
दिखाकर उन्हें निकाल लाया।
***(⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 7:3, ⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 14:21,
⍰⍰⍰. 14:33)***
37 यह वही मूसा है, जिसने
इस्राएलियों से कहा, 'परमेश्वर तुम्हारे
भाइयों में से तुम्हारे लिये मेरे जैसा
एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा।' ***(⍰⍰⍰⍰⍰.
18:15-18)***
38 यह वही है, जिसने जंगल में
मण्डली के बीच उस स्वर्गदूत के
साथ सीनै पहाड़ पर उससे बातें की,
और हमारे पूर्वजों के साथ था, उसी
को जीवित वचन मिले, कि हम
तक पहुँचाए। ***(⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 19:1-6,
⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 20:1-17, ⍰⍰⍰⍰⍰. 5:4-
22, ⍰⍰⍰⍰⍰. 9:10,11)***
39 परन्तु हमारे पूर्वजों ने उसकी
मानना न चाहा; वरन् उसे ठुकराकर
अपने मन मिस्र की ओर फेरे,
***(⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 23:20,21, ⍰⍰⍰⍰.
14:3,4)***
40 और हारून से कहा, 'हमारे लिये
ऐसा देवता बना, जो हमारे आगे-आगे
चलें; क्योंकि यह मूसा जो हमें मिस्र
देश से निकाल लाया, हम नहीं जानते
उसे क्या हुआ?' ***(⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 32:1,
⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 32:23)***
41 उन दिनों में उन्होंने एक बछड़ा
बनाकर, उसकी मूरत के आगे बलि
चढ़ाया; और अपने हाथों के कामों में
मगन होने लगे। ***(⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 32:4,6)***
42 अतः *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰
⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰
⍰⍰⍰⍰⍰*[†], कि आकाशगण पूजें, जैसा
भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में लिखा
है,

'हे इस्राएल के घराने,

क्या तुम जंगल में चालीस वर्ष तक
पशुबलि और अन्नबलि मुझ
ही को

चढ़ाते रहे? ***(⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 7:18,
⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 8:2, ⍰⍰⍰⍰⍰⍰.
19:13)***

43 और तुम *⍰⍰⍰⍰⍰⍰*[‡] के तम्बू

और रिफान देवता के तारे को लिए
फिरते थे,

---

† **7:42** *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰:* यही कारण है, उन लोगों से मुँह मोड़कर उन्हें दूर कर दिया; उन्हें अपनी इच्छाओं से जीने के लिए छोड़ दिया। ‡ **7:43** *⍰⍰⍰⍰⍰⍰:* यह शब्द इब्रानी से आता है जो "राजा" शब्द का वाचक है, यह अम्मोनियों का एक देवता था।

अर्थात् उन मूर्तियों को जिन्हें तुम ने
दण्डवत् करने के लिये बनाया
था।
अतः मैं तुम्हें बाबेल के परे ले
जाकर बसाऊँगा।' ***(⍰⍰⍰. 5:25,26)***

44 "साक्षी का तम्बू जंगल में हमारे
पूर्वजों के बीच में था; जैसा उसने
ठहराया, जिसने मूसा से कहा, 'जो
आकार तूने देखा है, उसके अनुसार
इसे बना।' ***(⍰⍰⍰⍰⍰. 25:1-40, ⍰⍰⍰⍰⍰. 25:40, ⍰⍰⍰⍰⍰. 27:21, ⍰⍰⍰. 1:50)***

45 उसी तम्बू को हमारे पूर्वजों ने
पूर्वकाल से पाकर यहोशू के साथ
यहाँ ले आए; जिस समय कि उन्होंने
उन अन्यजातियों पर अधिकार पाया,
जिन्हें परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों के
सामने से निकाल दिया, और वह
दाऊद के समय तक रहा। ***(⍰⍰⍰. 3:14-17, ⍰⍰⍰. 18:1, ⍰⍰⍰. 23:9, ⍰⍰⍰. 24:18)***

46 उस पर परमेश्वर ने अनुग्रह
किया; अतः उसने विनती की कि वह
याकूब के परमेश्वर के लिये निवास-
स्थान बनाए। ***(2 ⍰⍰⍰. 7:2-16, 1 ⍰⍰⍰⍰. 8:17,18, 1 ⍰⍰⍰. 17:1-14, 2 ⍰⍰⍰. 6:7,8, ⍰⍰. 132:5)***

47 परन्तु सुलैमान ने उसके लिये
घर बनाया। ***(1 ⍰⍰⍰⍰. 6:1,2, 1 ⍰⍰⍰⍰. 6:14, 1 ⍰⍰⍰⍰. 8:19,20, 2 ⍰⍰⍰. 3:1, 2 ⍰⍰⍰. 5:1, 2 ⍰⍰⍰. 6:2, 2 ⍰⍰⍰. 6:10)***

48 परन्तु परमप्रधान हाथ के
बनाए घरों में नहीं रहता, जैसा कि
भविष्यद्वक्ता ने कहा,

49 'प्रभु कहता है, स्वर्ग मेरा सिंहासन
और पृथ्वी मेरे पाँवों तले की चौकी है,
मेरे लिये तुम किस प्रकार का घर
बनाओगे?
और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान
होगा?
50 क्या ये सब वस्तुएँ मेरे हाथ
की बनाई नहीं?' ***(⍰⍰⍰. 66:1,2)***

51 "हे हठीले, और मन और कान
के खतनारहित लोगों, तुम सदा पवित्र
आत्मा का विरोध करते हो। जैसा
तुम्हारे पूर्वज करते थे, वैसे ही तुम
भी करते हो। ***(⍰⍰⍰⍰⍰. 32:9, ⍰⍰⍰⍰⍰. 26:41, ⍰⍰⍰. 27:14, ⍰⍰⍰. 63:10, ⍰⍰⍰⍰⍰. 6:10, ⍰⍰⍰⍰⍰. 9:26)***

52 भविष्यद्वक्ताओं में से किसको
तुम्हारे पूर्वजों ने नहीं सताया? और
उन्होंने उस धर्मी के आगमन का
पूर्वकाल से सन्देश देनेवालों को
मार डाला, और अब तुम भी उसके
पकड़वानेवाले और मार डालनेवाले
हुए ***(2 ⍰⍰⍰. 36:16)***

53 तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई
हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका
पालन नहीं किया।"

⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰

54 ये बातें सुनकर वे क्रोधित
हुए और उस पर दाँत पीसने लगे।
(⍰⍰⍰⍰⍰. 16:9, ⍰⍰. 35:16, ⍰⍰. 37:12, ⍰⍰. 112:10)

55 परन्तु उसने पवित्र आत्मा से
परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और
⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰§ और
यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर
खड़ा देखकर

56 कहा, "देखों, मैं स्वर्ग को खुला
हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर
के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ।"

57 तब उन्होंने बड़े शब्द से
चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और
एक चित्त होकर उस पर झपटे।

§ **7:55** *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰:* इसका मतलब है, कुछ शानदार प्रतिनिधित्व; एक वैभव, या प्रकाश, जो परमेश्वर की उपस्थिति का उचित प्रदर्शनी है।

58 और उसे नगर के बाहर
निकालकर पथराव करने लगे, और
गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नामक
एक जवान के पाँवों के पास उतार कर
रखे।
59 और वे स्तिफनुस को पथराव
करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना
करता रहा, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा
को ग्रहण कर।" ***([illegible]. 31:5)***
60 फिर घुटने टेककर ऊँचे शब्द से
पुकारा, "हे प्रभु, यह पाप उन पर मत
लगा।" और यह कहकर सो गया।

8

[illegible]

1 शाऊल उसकी मृत्यु के साथ
सहमत था। उसी दिन यरूशलेम की
कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा
और प्रेरितों को छोड़ सब के सब
यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-
बितर हो गए।
2 और भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र
में रखा; और उसके लिये बड़ा विलाप
किया।
3 पर शाऊल कलीसिया को उजाड़
रहा था; और घर-घर घुसकर पुरुषों
और स्त्रियों को घसीट-घसीट कर
बन्दीगृह में डालता था।

[illegible]

4 मगर जो तितर-बितर हुए थे, वे
सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।
5 और *[illegible]** सामरिया
नगर में जाकर लोगों में मसीह का
प्रचार करने लगा।
6 जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें
लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह
दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक
चित्त होकर मन लगाया।
7 क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध
आत्माएँ बड़े शब्द से चिल्लाती हुई
निकल गईं, और बहुत से लकवे के
रोगी और लँगड़े भी अच्छे किए गए।
8 और उस नगर में बड़ा आनन्द छा
गया।

[illegible]

9 इससे पहले उस नगर में *[illegible]*†
नामक एक मनुष्य था, जो जादू-टोना
करके सामरिया के लोगों को चकित
करता और अपने आपको एक बड़ा
पुरुष बताता था।
10 और सब छोटे से लेकर बड़े तक
उसका सम्मान कर कहते थे, "यह
मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो
महान कहलाती है।"
11 उसने बहुत दिनों से उन्हें अपने
जादू के कामों से चकित कर रखा था,
इसलिए वे उसको बहुत मानते थे।
12 परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस
का विश्वास किया जो परमेश्वर के
राज्य और यीशु मसीह के नाम का
सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या
पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।
13 तब शमौन ने स्वयं भी विश्वास
किया और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस
के साथ रहने लगा और चिन्ह और
बड़े-बड़े सामर्थ्य के काम होते देखकर
चकित होता था।

[illegible]

14 जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में
थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का
वचन मान लिया है तो पतरस और
यूहन्ना को उनके पास भेजा।
15 और उन्होंने जाकर उनके लिये
प्रार्थना की ताकि पवित्र आत्मा पाएँ।
16 क्योंकि पवित्र आत्मा अब तक
उनमें से किसी पर न उतरा था,

* **8:5** *[illegible]:* सात सेवकों में से एक, प्रेरित 6:5; वह उसके बाद "सुसमाचार प्रचारक" कहा गया, प्रेरित 21:8। † **8:9** *[illegible]:* वह जादूगर की कला जानता था, अतः उसका नाम शमौन जादूगर था।

उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में
बपतिस्मा लिया था।
17 तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और
उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।

[illegible]

18 जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों
के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया
जाता है, तो उनके पास रुपये लाकर
कहा,
19 "यह शक्ति मुझे भी दो, कि जिस
किसी पर हाथ रखूँ, वह पवित्र आत्मा
पाए।"
20 पतरस ने उससे कहा, "तेरे
रुपये तेरे साथ नाश हों, क्योंकि तूने
परमेश्वर का दान रुपयों से मोल लेने
का विचार किया।
21 इस बात में न तेरा हिस्सा है,
न भाग; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के
आगे सीधा नहीं। ***([illegible]. 78:37)***
22 इसलिए अपनी इस बुराई से मन
फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है
तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए।
23 क्योंकि मैं देखता हूँ, कि तू पित्त
की कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में
पड़ा है।" ***([illegible]. 29:18, [illegible]. 3:15)***
24 शमौन ने उत्तर दिया, "तुम मेरे
लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें
तुम ने कहीं, उनमें से कोई मुझ पर न
आ पड़े।"
25 अतः पतरस और यूहन्ना
गवाही देकर और प्रभु का वचन
सुनाकर, यरूशलेम को लौट गए,
और सामरियों के बहुत से गाँवों में
सुसमाचार सुनाते गए।

[illegible]

26 फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने
फिलिप्पुस से कहा, "उठकर दक्षिण की
ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम
से गाज़ा को जाता है। यह रेगिस्तानी
मार्ग है।"
27 वह उठकर चल दिया, और तब,
कूश देश का एक मनुष्य आ रहा था,
जो [illegible]‡ और कूशियों की रानी
कन्दाके का मंत्री और खजांची था, और
आराधना करने को यरूशलेम आया
था।
28 और वह अपने रथ पर बैठा हुआ
था, और यशायाह भविष्यद्वक्ता की
पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था।
29 तब पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस
से कहा, "निकट जाकर इस रथ के साथ
हो ले।"
30 फिलिप्पुस उसकी ओर दौड़ा और
उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक
पढ़ते हुए सुना, और पूछा, "तू जो पढ़
रहा है क्या उसे समझता भी है?"
31 उसने कहा, "जब तक कोई मुझे
न समझाए तो मैं कैसे समझूँ?" और
उसने फिलिप्पुस से विनती की, कि
चढ़कर उसके पास बैठे।
32 पवित्रशास्त्र का जो अध्याय वह
पढ़ रहा था, वह यह था:

"वह भेड़ के समान वध होने को
पहुँचाया गया,
और जैसा मेम्ना अपने ऊन
कतरनेवालों के सामने
चुपचाप रहता है, वैसे ही
उसने भी अपना मुँह न खोला,
33 उसकी दीनता में उसका न्याय होने
नहीं पाया,
और उसके समय के लोगों का वर्णन
कौन करेगा?
क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठा
लिया जाता है।" ***([illegible]. 53:7,8)***

34 इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से
पूछा, "मैं तुझ से विनती करता हूँ,
यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह किसके

---

‡ **8:27** *[illegible]:* यह शब्द यहाँ पर "किसी भी गोपनीय अधिकारी या राज्य के सलाहकार" को निरुपित करने के लिए प्रयोग किया गया है।

विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में?”

35 तब फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया।

36 मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुँचे, तब खोजे ने कहा, “देख यहाँ जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?”

37 फिलिप्पुस ने कहा, “यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो ले सकता है।” उसने उत्तर दिया, “मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।”

38 तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया।

39 जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, और खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया। ***(1 [illegible]. 18:12)***

40 पर फिलिप्पुस अश्दोद में आ निकला, और जब तक कैसरिया में न पहुँचा, तब तक नगर-नगर सुसमाचार सुनाता गया।

9

[illegible]

1 *[illegible]*[*] जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और मार डालने की धुन में था, महायाजक के पास गया।

2 और उससे *[illegible]*[†] के आराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियाँ माँगी, कि क्या पुरुष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बाँधकर यरूशलेम में ले आए।

3 परन्तु चलते-चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुँचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी,

4 और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, **“हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?”**

5 उसने पूछा, “हे प्रभु, तू कौन है?” उसने कहा, **“मैं यीशु हूँ; जिसे तू सताता है।**

6 **परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है, वह तुझ से कहा जाएगा।”**

7 जो मनुष्य उसके साथ थे, वे चुपचाप रह गए; क्योंकि शब्द तो सुनते थे, परन्तु किसी को देखते न थे।

8 तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु जब आँखें खोलीं तो उसे कुछ दिखाई न दिया और वे उसका हाथ पकड़ के दमिश्क में ले गए।

9 और वह तीन दिन तक न देख सका, और न खाया और न पीया।

[illegible]

10 दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा, **“हे हनन्याह!”** उसने कहा, “हाँ प्रभु।”

11 तब प्रभु ने उससे कहा, **“उठकर उस गली में जा, जो ‘सीधी’ कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नामक एक तरसुस वासी को पूछ ले; क्योंकि वह प्रार्थना कर रहा है,**

12 **और उसने हनन्याह नामक एक पुरुष को भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए।”**

---

* **9:1** *[illegible]*: वह मसीहियों को सताने में शामिल था और स्तिफनुस की हत्या का साक्षी था। † **9:2** *[illegible]*: यह सीरिया का एक नगर था, यरूशलेम के उत्तर-पूर्व से 120 मील की दूरी पर स्थित था, और अन्ताकिया के दक्षिण-पूर्व से करीब 190 मील की दूरी पर स्थित था।

13 हनन्याह ने उत्तर दिया, “हे प्रभु,
मैंने इस मनुष्य के विषय में बहुतों
से सुना है कि इसने यरूशलेम में
तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी-बड़ी
बुराइयाँ की हैं;
14 और यहाँ भी इसको प्रधान
याजकों की ओर से अधिकार मिला है,
कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब
को बाँध ले।”
15 परन्तु प्रभु ने उससे कहा,
**“तू चला जा; क्योंकि यह, तो
अन्यजातियों और राजाओं, और
इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रगट
करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है।**
16 **और मैं उसे बताऊँगा, कि मेरे
नाम के लिये उसे कैसा-कैसा दुःख
उठाना पड़ेगा।”**
17 तब हनन्याह उठकर उस घर में
गया, और उस पर अपना हाथ रखकर
कहा, “हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात्
यीशु, जो उस रास्ते में, जिससे तू आया
तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे
भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और
पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।”
18 और तुरन्त उसकी आँखों से
छिलके से गिरे, और वह देखने लगा
और उठकर बपतिस्मा लिया;
19 फिर भोजन करके बल पाया। वह
कई दिन उन चेलों के साथ रहा जो
दमिश्क में थे।

[illegible]

20 और वह तुरन्त आराधनालयों में
यीशु का प्रचार करने लगा, कि वह
परमेश्वर का पुत्र है।
21 और सब सुननेवाले चकित होकर
कहने लगे, “क्या यह वही व्यक्ति
नहीं है जो यरूशलेम में उन्हें जो इस
नाम को लेते थे नाश करता था, और
यहाँ भी इसलिए आया था, कि उन्हें
बाँधकर प्रधान याजकों के पास ले
जाए?”
22 परन्तु शाऊल और भी सामर्थी
होता गया, और इस बात का प्रमाण दे-
देकर कि यीशु ही मसीह है, दमिश्क के
रहनेवाले यहूदियों का मुँह बन्द करता
रहा।
23 जब बहुत दिन बीत गए, तो
यहूदियों ने मिलकर उसको मार डालने
की युक्ति निकाली।
24 परन्तु उनकी युक्ति शाऊल को
मालूम हो गई: वे तो उसको मार
डालने के लिये रात दिन फाटकों पर
घात में लगे रहते थे।
25 परन्तु रात को उसके चेलों ने
उसे लेकर टोकरे में बैठाया, और
शहरपनाह पर से लटकाकर उतार
दिया।

[illegible]

26 यरूशलेम में पहुँचकर उसने
चेलों के साथ मिल जाने का उपाय
किया परन्तु सब उससे डरते थे, क्योंकि
उनको विश्वास न होता था, कि वह भी
चेला है।
27 परन्तु बरनबास ने उसे अपने
साथ प्रेरितों के पास ले जाकर उनसे
कहा, कि इसने किस रीति से मार्ग में
प्रभु को देखा, और उसने इससे बातें
की; फिर दमिश्क में इसने कैसे साहस
से यीशु के नाम का प्रचार किया।
28 वह उनके साथ यरूशलेम में
आता-जाता रहा। और निधड़क होकर
प्रभु के नाम से प्रचार करता था;
29 और यूनानी भाषा बोलनेवाले
यहूदियों के साथ बातचीत और वाद-
विवाद करता था; परन्तु वे उसे मार
डालने का यत्न करने लगे।
30 यह जानकर भाइयों ने उसे
कैसरिया में ले आए, और तरसुस को
भेज दिया।

31 इस प्रकार सारे यहूदिया, और
गलील, और सामरिया में कलीसिया
को चैन मिला, और उसकी उन्नति
होती गई; और वह प्रभु के भय और
पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती
और बढ़ती गई।

[illegible]

32 फिर ऐसा हुआ कि पतरस हर
जगह फिरता हुआ, उन पवित्र लोगों
के पास भी पहुँचा, जो *[illegible]*‡ में
रहते थे।
33 वहाँ उसे ऐनियास नामक लकवे
का मारा हुआ एक मनुष्य मिला, जो
आठ वर्ष से खाट पर पड़ा था।
34 पतरस ने उससे कहा, "हे
ऐनियास! यीशु मसीह तुझे चंगा
करता है। उठ, अपना बिछौना उठा।"
तब वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ।
35 और लुद्दा और शारोन के सब
रहनेवाले उसे देखकर प्रभु की ओर
फिरे।

[illegible]

36 *[illegible]*§ में तबीता अर्थात्
दोरकास नामक एक विश्वासिनी
रहती थी, वह बहुत से भले-भले काम
और दान किया करती थी।
37 उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर
मर गई; और उन्होंने उसे नहलाकर
अटारी पर रख दिया।
38 और इसलिए कि लुद्दा याफा के
निकट था, चेलों ने यह सुनकर कि
पतरस वहाँ है दो मनुष्य भेजकर उससे
विनती की, "हमारे पास आने में देर न
कर।"
39 तब पतरस उठकर उनके साथ
हो लिया, और जब पहुँच गया, तो
वे उसे उस अटारी पर ले गए। और
सब विधवाएँ रोती हुई, उसके पास
आ खड़ी हुईं और जो कुर्ते और कपड़े
दोरकास ने उनके साथ रहते हुए बनाए
थे, दिखाने लगीं।
40 तब पतरस ने सब को बाहर कर
दिया, और घुटने टेककर प्रार्थना की;
और शव की ओर देखकर कहा, "हे
तबीता, उठ।" तब उसने अपनी आँखें
खोल दी; और पतरस को देखकर उठ
बैठी।
41 उसने हाथ देकर उसे उठाया
और पवित्र लोगों और विधवाओं को
बुलाकर उसे जीवित और जागृत दिखा
दिया।
42 यह बात सारे याफा में फैल गई;
और बहुतों ने प्रभु पर विश्वास किया।
43 और पतरस याफा में शमौन
नामक किसी चमड़े का धन्धा
करनेवाले के यहाँ बहुत दिन तक रहा।

10

[illegible]

1 कैसरिया में *[illegible]**
नामक एक मनुष्य था, जो
इतालियानी नाम सैन्य-दल का
सूबेदार था।
2 वह *[illegible]*† था, और अपने सारे
घराने समेत परमेश्वर से डरता था,
और यहूदी लोगों को बहुत दान देता,
और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता
था।
3 उसने दिन के तीसरे पहर के
निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि
परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने उसके पास
भीतर आकर कहा, "हे कुरनेलियुस।"
4 उसने उसे ध्यान से देखा और
डरकर कहा, "हे स्वामी क्या है?" उसने
उससे कहा, "तेरी प्रार्थनाएँ और तेरे

---

‡ **9:32** *[illegible]*: यह नगर यरूशलेम से कैसरिया फिलिप्पी के मार्ग पर स्थित था। § **9:36** *[illegible]*: यह भूमध्य सागर पर स्थित एक समुद्र तटीय नगर था, कैसरिया के दक्षिण से करीब 30 मील, और यरूशलेम के उत्तर-पश्चिम से 45 मील की दूरी पर स्थित था। * **10:1** *[illegible]*: यह एक लैटिन नाम है, और इससे दिखता है कि वह एक रोमी मनुष्य था। † **10:2** *[illegible]*: एक धार्मिक या वह जो परमेश्वर की आराधना करनेवाला।

दान स्मरण के लिये परमेश्वर के सामने पहुँचे हैं।

[5] और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले।

[6] वह शमौन, चमड़े का धन्धा करनेवाले के यहाँ अतिथि है, जिसका घर समुद्र के किनारे है।"

[7] जब वह स्वर्गदूत जिसने उससे बातें की थी चला गया, तो उसने दो सेवक, और जो उसके पास उपस्थित रहा करते थे उनमें से एक भक्त सिपाही को बुलाया,

[8] और उन्हें सब बातें बताकर याफा को भेजा।

[illegible]

[9] दूसरे दिन जब वे चलते-चलते नगर के पास पहुँचे, तो दोपहर के निकट पतरस छत पर प्रार्थना करने चढ़ा।

[10] उसे भूख लगी और कुछ खाना चाहता था, परन्तु जब वे तैयार कर रहे थे तो वह बेसुध हो गया।

[11] और उसने देखा, कि आकाश खुल गया; और एक बड़ी चादर, पात्र के समान चारों कोनों से लटकाया हुआ, पृथ्वी की ओर उतर रहा है।

[12] जिसमें पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे।

[13] और उसे एक ऐसी वाणी सुनाई दी, **"हे पतरस उठ, मार और खा।"**

[14] परन्तु पतरस ने कहा, "नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है।" ***([illegible]. 11:1-47, [illegible]. 4:14)***

[15] फिर दूसरी बार उसे वाणी सुनाई दी, "***[illegible]***‡**, उसे तू अशुद्ध मत कह।"**

[16] तीन बार ऐसा ही हुआ; तब तुरन्त वह चादर आकाश पर उठा लिया गया।

[illegible]

[17] जब पतरस अपने मन में दुविधा में था, कि यह दर्शन जो मैंने देखा क्या है, तब वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शमौन के घर का पता लगाकर द्वार पर आ खड़े हुए।

[18] और पुकारकर पूछने लगे, "क्या शमौन जो पतरस कहलाता है, यहाँ पर अतिथि है?"

[19] पतरस जो उस दर्शन पर सोच ही रहा था, कि आत्मा ने उससे कहा, "देख, तीन मनुष्य तुझे खोज रहे हैं।

[20] अतः उठकर नीचे जा, और निःसंकोच उनके साथ हो ले; क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा है।"

[21] तब पतरस ने नीचे उतरकर उन मनुष्यों से कहा, "देखो, जिसको तुम खोज रहे हो, वह मैं ही हूँ; तुम्हारे आने का क्या कारण है?"

[22] उन्होंने कहा, "कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और सारी यहूदी जाति में सुनाम मनुष्य है, उसने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह निर्देश पाया है, कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से उपदेश सुने।"

[23] तब उसने उन्हें भीतर बुलाकर उनको रहने की जगह दी। और दूसरे दिन, वह उनके साथ गया; और याफा के भाइयों में से कुछ उसके साथ हो लिए।

[24] दूसरे दिन वे कैसरिया में पहुँचे, और कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों

‡ **10:15** *[illegible]*: वह जो कुछ जिसे परमेश्वर ने शुद्ध कहा या शुद्ध घोषित किया है।

और प्रिय मित्रों को इकट्ठे करके उनकी
प्रतीक्षा कर रहा था।
25 जब पतरस भीतर आ रहा था,
तो कुरनेलियुस ने उससे भेंट की, और
उसके पाँवों पर गिरकर उसे प्रणाम
किया।
26 परन्तु पतरस ने उसे उठाकर
कहा, "खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य ही
हूँ।"
27 और उसके साथ बातचीत करता
हुआ भीतर गया, और बहुत से लोगों
को इकट्ठे देखकर
28 उनसे कहा, "तुम जानते हो, कि
अन्यजाति की संगति करना या उसके
यहाँ जाना यहूदी के लिये अधर्म है,
परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है कि
किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध
न कहूँ।
29 इसलिए मैं जब बुलाया गया तो
बिना कुछ कहे चला आया। अब मैं
पूछता हूँ कि मुझे किस काम के लिये
बुलाया गया है?"
30 कुरनेलियुस ने कहा, "चार दिन
पहले, इसी समय, मैं अपने घर में
तीसरे पहर को प्रार्थना कर रहा था; कि
एक पुरुष चमकीला वस्त्र पहने हुए,
मेरे सामने आ खड़ा हुआ।
31 और कहने लगा, 'हे कुरनेलियुस,
तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरे
दान परमेश्वर के सामने स्मरण किए
गए हैं।
32 इसलिए किसी को याफा भेजकर
शमौन को जो पतरस कहलाता है,
बुला। वह समुद्र के किनारे शमौन जो,
चमड़े का धन्धा करनेवाले के घर में
अतिथि है।'
33 तब मैंने तुरन्त तेरे पास लोग
भेजे, और तूने भला किया जो आ
गया। अब हम सब यहाँ परमेश्वर के
सामने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने
तुझ से कहा है उसे सुनें।"

[illegible]

34 तब पतरस ने मुँह खोलकर कहा,
अब मुझे निश्चय हुआ, कि परमेश्वर
किसी का पक्ष नहीं करता, ***([illegible].
10:17, 2 [illegible]. 19:7)***
35 वरन् हर जाति में जो उससे डरता
और धार्मिक काम करता है, वह उसे
भाता है।
36 जो वचन उसने इस्राएलियों के
पास भेजा, जबकि उसने यीशु मसीह
के द्वारा जो सब का प्रभु है, शान्ति का
सुसमाचार सुनाया। ***([illegible]. 107:20,
[illegible]. 147:18, [illegible]. 52:7, [illegible].
1:15)***
37 वह वचन तुम जानते हो, जो
यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार के बाद
गलील से आरम्भ होकर सारे यहूदिया
में फैल गया:
38 परमेश्वर ने किस रीति से यीशु
नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य
से अभिषेक किया; वह भलाई करता,
और सब को जो शैतान के सताए
हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि
परमेश्वर उसके साथ था। ***([illegible].
61:1)***
39 और हम उन सब कामों के गवाह
हैं; जो उसने यहूदिया के देश और
यरूशलेम में भी किए, और उन्होंने
उसे काठ पर लटकाकर मार डाला।
([illegible]. 21:22,23)
40 उसको परमेश्वर ने तीसरे दिन
जिलाया, और प्रगट भी कर दिया है।
41 सब लोगों को नहीं वरन् उन
गवाहों को जिन्हें परमेश्वर ने पहले से
चुन लिया था, अर्थात् हमको जिन्होंने
उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद
उसके साथ खाया पीया;

42 और उसने हमें आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करो और गवाही दो, कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवितों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है।

43 उसकी सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते है कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी। *([illegible]. 33:24, [illegible]. 53:5,6, [illegible]. 31:34, [illegible]. 9:24)*

[illegible]

44 पतरस ये बातें कह ही रहा था कि *[illegible]*§।

45 और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उण्डेला गया है।

46 क्योंकि उन्होंने उन्हें भाँति-भाँति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा,

47 “क्या अब कोई इन्हें जल से रोक सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएँ, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?”

48 और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की, कि कुछ दिन और हमारे साथ रह।

11

[illegible]

1 और प्रेरितों और भाइयों ने जो यहूदिया में थे सुना, कि अन्यजातियों ने भी परमेश्वर का वचन मान लिया है।

2 और जब पतरस यरूशलेम में आया, तो खतना किए हुए लोग उससे वाद-विवाद करने लगे,

3 “तूने खतनारहित लोगों के यहाँ जाकर उनके साथ खाया।”

4 तब पतरस ने उन्हें आरम्भ से क्रमानुसार कह सुनाया;

5 “मैं याफा नगर में प्रार्थना कर रहा था, और बेसुध होकर एक दर्शन देखा, कि एक बड़ी चादर, एक पात्र के समान चारों कोनों से लटकाया हुआ, आकाश से उतरकर मेरे पास आया।

6 जब मैंने उस पर ध्यान किया, तो पृथ्वी के चौपाए और वन पशु और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी देखे;

7 और यह आवाज भी सुना, **‘हे पतरस उठ मार और खा।’**

8 मैंने कहा, ‘नहीं प्रभु, नहीं; क्योंकि कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु मेरे मुँह में कभी नहीं गई।’

9 इसके उत्तर में आकाश से दोबारा आवाज आई, **‘जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अशुद्ध मत कह।’**

10 तीन बार ऐसा ही हुआ; तब सब कुछ फिर आकाश पर खींच लिया गया।

11 तब तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे, उस घर पर जिसमें हम थे, आ खड़े हुए।

12 तब आत्मा ने मुझसे उनके साथ बेझिझक हो लेने को कहा, और ये छः भाई भी मेरे साथ हो लिए; और हम उस मनुष्य के घर में गए।

13 और उसने बताया, कि मैंने एक स्वर्गदूत को अपने घर में खड़ा देखा, जिसने मुझसे कहा, ‘याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले।

§ **10:44** *[illegible]:* अन्य भाषा के साथ उन्हें बोलने की सामर्थ्य प्रदान की।

14 वह तुझ से ऐसी बातें कहेगा,
जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना
उद्धार पाएगा।’
15 जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र
आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा,
जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा
था।
16 तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण
आया; जो उसने कहा, **‘यूहन्ना ने तो**
पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम
पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।’
17 अतः जबकि परमेश्वर ने उन्हें
भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु
मसीह पर विश्वास करने से मिला;
तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक
सकता था?”
18 यह सुनकर, वे चुप रहे, और
परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे,
“तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को
भी जीवन के लिये मन फिराव का दान
दिया है।”

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

19 जो लोग उस क्लेश के मारे जो
स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तितर-
बितर हो गए थे, वे फिरते-फिरते
फीनीके और साइप्रस और अन्ताकिया
में पहुँचे; परन्तु यहूदियों को छोड़
किसी और को वचन न सुनाते थे।
20 परन्तु उनमें से कुछ साइप्रस
वासी और [illegible]* थे, जो
अन्ताकिया में आकर यूनानियों को
भी प्रभु यीशु का सुसमाचार की बातें
सुनाने लगे।
21 और प्रभु का हाथ उन पर था, और
बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर
फिरे।
22 तब उनकी चर्चा यरूशलेम की
कलीसिया के सुनने में आई, और
उन्होंने [illegible]† को अन्ताकिया
भेजा।
23 वह वहाँ पहुँचकर, और परमेश्वर
के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ;
और सब को उपदेश दिया कि तन मन
लगाकर प्रभु से लिपटे रहें।
24 क्योंकि वह एक भला मनुष्य था;
और पवित्र आत्मा और विश्वास से
परिपूर्ण था; और बहुत से लोग प्रभु में
आ मिले।
25 तब वह शाऊल को ढूँढ़ने के लिये
तरसुस को चला गया।
26 और जब उनसे मिला तो उसे
अन्ताकिया में लाया, और ऐसा हुआ
कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के
साथ मिलते और बहुत से लोगों को
उपदेश देते रहे, और चेले सबसे पहले
अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।
27 उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता
यरूशलेम से अन्ताकिया में आए।
28 उनमें से [illegible]‡ ने खड़े होकर
आत्मा की प्रेरणा से यह बताया, कि
सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा, और
वह अकाल क्लौदियुस के समय में
पड़ा।
29 तब चेलों ने निर्णय किया कि हर
एक अपनी-अपनी पूँजी के अनुसार
यहूदिया में रहनेवाले भाइयों की सेवा
के लिये कुछ भेजे।
30 और उन्होंने ऐसा ही किया; और
बरनबास और शाऊल के हाथ प्राचीनों
के पास कुछ भेज दिया।

12

[illegible] [illegible] [illegible]

* **11:20** [illegible]: अफ्रीका में एक प्रांत और लीबिया का शहर था।। † **11:22** [illegible]: वह साइप्रस का एक निवासी था, और सम्भवतः अन्ताकिया से अच्छी तरह से परिचित था। ‡ **11:28** [illegible]: वह भविष्यद्वक्ता के रूप में संदर्भित किया गया है कि पौलुस अन्यजातियों के हाथों में सौंपा जाएगा। * **12:1** [illegible] [illegible]: यह हेरोदेस अग्रिप्पा था, वह हेरोदेस महान का पोता था।

1 उस समय [illegible]* ने
कलीसिया के कई एक व्यक्तियों को
दुःख देने के लिये उन पर हाथ डाले।
2 उसने यूहन्ना के भाई याकूब को
तलवार से मरवा डाला।
3 जब उसने देखा, कि यहूदी लोग
इससे आनन्दित होते हैं, तो उसने
पतरस को भी पकड़ लिया। वे दिन
अख़मीरी रोटी के दिन थे।
4 और उसने उसे पकड़कर बन्दीगृह
में डाला, और रखवाली के लिये, चार-
चार सिपाहियों के चार पहरों में रखा,
इस मनसा से कि फसह के बाद उसे
लोगों के सामने लाए।

[illegible]

5 बन्दीगृह में पतरस की रखवाली
हो रही थी; परन्तु कलीसिया उसके
लिये लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना
कर रही थी।
6 और जब हेरोदेस उसे उनके सामने
लाने को था, तो उसी रात पतरस दो
जंजीरों से बंधा हुआ, दो सिपाहियों के
बीच में सो रहा था; और पहरेदार द्वार
पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे।
7 तब प्रभु का एक स्वर्गदूत आ
खड़ा हुआ और उस कोठरी में ज्योति
चमकी, और उसने पतरस की पसली
पर हाथ मारकर उसे जगाया, और
कहा, "उठ, जल्दी कर।" और उसके
हाथ से जंजीरें खुलकर गिर पड़ीं।
8 तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "कमर
बाँध, और अपने जूते पहन ले।" उसने
वैसा ही किया, फिर उसने उससे कहा,
"अपना वस्त्र पहनकर मेरे पीछे हो
ले।"
9 वह निकलकर उसके पीछे हो
लिया; परन्तु यह न जानता था कि जो
कुछ स्वर्गदूत कर रहा है, वह सच है,
बल्कि यह समझा कि मैं दर्शन देख रहा
हूँ।
10 तब वे पहले और दूसरे पहरे
से निकलकर उस लोहे के फाटक पर
पहुँचे, जो नगर की ओर है। वह उनके
लिये आप से आप खुल गया, और
वे निकलकर एक ही गली होकर गए,
इतने में स्वर्गदूत उसे छोड़कर चला
गया।
11 तब पतरस ने सचेत होकर कहा,
"अब मैंने सच जान लिया कि प्रभु ने
अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस
के हाथ से छुड़ा लिया, और यहूदियों
की सारी आशा तोड़ दी।"
12 और यह सोचकर, वह उस यूहन्ना
की माता मरियम के घर आया, जो
मरकुस कहलाता है। वहाँ बहुत लोग
इकट्ठे होकर प्रार्थना कर रहे थे।
13 जब उसने फाटक की खिड़की
खटखटाई तो [illegible]† नामक एक
दासी सुनने को आई।
14 और पतरस का शब्द पहचानकर,
उसने आनन्द के मारे फाटक न खोला;
परन्तु दौड़कर भीतर गई, और बताया
कि पतरस द्वार पर खड़ा है।
15 उन्होंने उससे कहा, "तू पागल
है।" परन्तु वह दृढ़ता से बोली कि
ऐसा ही है: तब उन्होंने कहा, "उसका
स्वर्गदूत होगा।"
16 परन्तु पतरस खटखटाता ही रहा
अतः उन्होंने खिड़की खोली, और [illegible]‡।
17 तब उसने उन्हें हाथ से संकेत
किया कि चुप रहें; और उनको बताया
कि प्रभु किस रीति से मुझे बन्दीगृह से
निकाल लाया है। फिर कहा, "याकूब
और भाइयों को यह बात कह देना।"
तब निकलकर दूसरी जगह चला गया।

† **12:13** [illegible]: यह एक यूनानी नाम है जो गुलाब को दर्शाता है। ‡ **12:16** [illegible]: पतरस बचा लिया गया था इससे वे चकित थे।

18 भोर को सिपाहियों में बड़ी हलचल होने लगी कि पतरस कहाँ गया।
19 जब हेरोदेस ने उसकी खोज की और न पाया, तो पहरुओं की जाँच करके आज्ञा दी कि वे मार डाले जाएँ: और वह यहूदिया को छोड़कर कैसरिया में जाकर रहने लगा।

□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□

20 हेरोदेस सोर और सीदोन के लोगों से बहुत अप्रसन्न था। तब वे एक चित्त होकर उसके पास आए और बलास्तुस को जो राजा का एक कर्मचारी था, मनाकर मेल करना चाहा; क्योंकि राजा के देश से उनके देश का पालन-पोषण होता था। ***(1 □□□□. 5:11, □□□. 27:17)***
21 ठहराए हुए दिन हेरोदेस राजवस्त्र पहनकर सिंहासन पर बैठा; और उनको व्याख्यान देने लगा।
22 और लोग पुकार उठे, "यह तो मनुष्य का नहीं ईश्वर का शब्द है।"
23 उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे आघात पहुँचाया, क्योंकि उसने परमेश्वर की महिमा नहीं की और उसके शरीर में कीड़े पड़ गए और वह मर गया। ***(□□□□. 5:20)***
24 परन्तु *□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□*§।
25 जब बरनबास और शाऊल अपनी सेवा पूरी कर चुके तो यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेकर यरूशलेम से लौटे।

13

□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□

1 अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; अर्थात् बरनबास और शमौन जो *□□□□** कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और चौथाई देश के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम और शाऊल।
2 जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैंने उन्हें बुलाया है।"
3 तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया।

□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□-□□□□□□

4 अत: वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया को गए; और वहाँ से जहाज पर चढ़कर साइप्रस को चले।
5 और *□□□□□*† में पहुँचकर, परमेश्वर का वचन यहूदियों के आराधनालयों में सुनाया; और यूहन्ना उनका सेवक था।
6 और उस सारे टापू में से होते हुए, पाफुस तक पहुँचे। वहाँ उन्हें *□□□-□□□□*‡ नामक एक जादूगर मिला, जो यहूदी और झूठा भविष्यद्वक्ता था।
7 वह हाकिम सिरगियुस पौलुस के साथ था, जो बुद्धिमान पुरुष था। उसने बरनबास और शाऊल को अपने पास बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा।
8 परन्तु एलीमास जादूगर ने, (क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ

§ **12:24** *□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□:* सताव अब समाप्त हो गया था और कलीसिया को दबा देने के जितने भी प्रयास किए गए थे उनके बावजूद भी वह बढ़ती और फलवन्त होती गई। * **13:1** *□□□□:* नीगर एक लैटिन नाम है जिसका अर्थ "काला" होता है। † **13:5** *□□□□□:* यह साइप्रस का प्रमुख नगर और बंदरगाह था। यह द्वीप के दक्षिण पूर्वी तट पर स्थित था ‡ **13:6** *□□□-□□□□:* "बार" अरामी भाषा का शब्द है और इसका अर्थ है "पुत्र", यीशु।

है) उनका सामना करके, हाकिम को
विश्वास करने से रोकना चाहा।
9 तब शाऊल ने जिसका नाम
पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण
होकर उसकी ओर टकटकी लगाकर
कहा,
10 “हे सारे कपट और सब चतुराई
से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल
धार्मिकता के बैरी, क्या तू प्रभु के
सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा?
([illegible]. 10:9, [illegible] 14:9)
11 अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर
पड़ा है; और तू कुछ समय तक अंधा
रहेगा और सूर्य को न देखेगा।” तब
तुरन्त धुंधलापन और अंधेरा उस पर
छा गया, और वह इधर-उधर टटोलने
लगा ताकि कोई उसका हाथ पकड़कर
ले चले।
12 तब हाकिम ने जो कुछ हुआ था,
देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित
होकर विश्वास किया।

[illegible]

13 पौलुस और उसके साथी पाफुस
से जहाज खोलकर *[illegible]*
[illegible]§ आए; और यूहन्ना
उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट
गया।
14 और पिरगा से आगे बढ़कर
पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुँचे;
और सब्त के दिन आराधनालय में
जाकर बैठ गए।
15 व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं
की पुस्तक से पढ़ने के बाद
आराधनालय के सरदारों ने उनके पास
कहला भेजा, “हे भाइयों, यदि लोगों
के उपदेश के लिये तुम्हारे मन में कोई
बात हो तो कहो।”
16 तब पौलुस ने खड़े होकर
और हाथ से इशारा करके कहा,
“हे इस्राएलियों, और परमेश्वर से
डरनेवालों, सुनो
17 इन इस्राएली लोगों के परमेश्वर
ने हमारे पूर्वजों को चुन लिया, और
जब ये मिस्र देश में परदेशी होकर रहते
थे, तो उनकी उन्नति की; और बलवन्त
भुजा से निकाल लाया। ***([illegible].
6:1, [illegible]. 12:51)***
18 और वह कोई चालीस वर्ष तक
जंगल में उनकी सहता रहा, ***([illegible].
16:35, [illegible]. 14:34, [illegible].
1:31)***
19 और कनान देश में सात जातियों
का नाश करके उनका देश लगभग
साढ़े चार सौ वर्ष में इनकी विरासत
में कर दिया। ***([illegible]. 7:1, [illegible].
14:1)***
20 इसके बाद उसने शमूएल
भविष्यद्वक्ता तक उनमें न्यायी
ठहराए। ***([illegible]. 2:16, 1 [illegible].
2:16)***
21 उसके बाद उन्होंने एक राजा
माँगा; तब परमेश्वर ने चालीस वर्ष
के लिये बिन्यामीन के गोत्र में से एक
मनुष्य अर्थात् कीश के पुत्र शाऊल
को उन पर राजा ठहराया। ***(1 [illegible].
8:5,1 [illegible]. 8:19, 1 [illegible].
10:24, 1 [illegible]. 11:15)***
22 फिर उसे अलग करके दाऊद को
उनका राजा बनाया; जिसके विषय में
उसने गवाही दी, ‘मुझे एक मनुष्य,
यिशै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के
अनुसार मिल गया है। वही मेरी सारी
इच्छा पूरी करेगा।’ ***(1 [illegible]. 13:14,
1 [illegible]. 16:12,13, [illegible]. 89:20,
[illegible]. 44:28)***
23 उसी के वंश में से परमेश्वर ने
अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राएल के
पास एक उद्धारकर्ता, अर्थात् यीशु को
भेजा। ***(2 [illegible]. 7:12,13, [illegible].
11:1)***

§ **13:13** *[illegible]:* पंफूलिया आसिया माइनर का एक प्रांत था, पिरगा पंफूलिया का एक महानगर था

24 जिसके आने से पहले यूहन्ना ने सब इस्राएलियों को मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार किया।

25 और जब यूहन्ना अपनी सेवा पूरी करने पर था, तो उसने कहा, 'तुम मुझे क्या समझते हो? मैं वह नहीं! वरन् देखो, मेरे बाद एक आनेवाला है, जिसके पाँवों की जूती के बन्ध भी मैं खोलने के योग्य नहीं।'

26 "हे भाइयों, तुम जो अब्राहम की सन्तान हो; और तुम जो परमेश्वर से डरते हो, तुम्हारे पास इस उद्धार का वचन भेजा गया है।

27 क्योंकि यरूशलेम के रहनेवालों और उनके सरदारों ने, न उसे पहचाना, और न भविष्यद्वक्ताओं की बातें समझी; जो हर सब्त के दिन पढ़ी जाती हैं, इसलिए उसे दोषी ठहराकर उनको पूरा किया।

28 उन्होंने मार डालने के योग्य कोई दोष उसमें न पाया, फिर भी पिलातुस से विनती की, कि वह मार डाला जाए।

29 और जब उन्होंने उसके विषय में लिखी हुई सब बातें पूरी की, तो उसे क्रूस पर से उतार कर कब्र में रखा।

30 परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया,

31 और वह उन्हें जो उसके साथ गलील से यरूशलेम आए थे, बहुत दिनों तक दिखाई देता रहा; लोगों के सामने अब वे ही उसके गवाह हैं।

32 और हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में जो पूर्वजों से की गई थी, यह सुसमाचार सुनाते हैं,

33 कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर, वही प्रतिज्ञा हमारी सन्तान के लिये पूरी की; जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है,

'तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे
जन्माया है।' ***([illegible]. 2:7)***

34 और उसके इस रीति से मरे हुओं में से जिलाने के विषय में भी, कि वह कभी न सड़े, उसने यह कहा है,

'मैं दाऊद पर की पवित्र और अटल
कृपा तुम पर करूँगा।' ***([illegible]. 55:3)***

35 इसलिए उसने एक और भजन में भी कहा है,

'तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा।'
([illegible]. 16:10)

36 "क्योंकि दाऊद तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने समय में सेवा करके सो गया, और अपने पूर्वजों में जा मिला, और सड़ भी गया। ***([illegible]. 2:10, 1 [illegible]. 2:10)***

37 परन्तु जिसको परमेश्वर ने जिलाया, वह सड़ने नहीं पाया।

38 इसलिए, हे भाइयों; तुम जान लो कि यीशु के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है।

39 और जिन बातों से तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते थे, उन्हीं सबसे हर एक विश्वास करनेवाला उसके द्वारा निर्दोष ठहरता है।

40 इसलिए चौकस रहो, ऐसा न हो, कि जो भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में लिखित है, तुम पर भी आ पड़े:

41 'हे निन्दा करनेवालों, देखो, और
चकित हो, और मिट जाओ;
क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम
करता हूँ;
ऐसा काम, कि यदि कोई तुम से
उसकी चर्चा करे, तो तुम कभी
विश्वास न करोगे।' " ***([illegible]. 1:5)***

[illegible]

42 उनके बाहर निकलते समय लोग उनसे विनती करने लगे, कि अगले

सब्त के दिन हमें ये बातें फिर सुनाई जाएँ।

43 और जब आराधनालय उठ गई तो यहूदियों और यहूदी मत में आए हुए भक्तों में से बहुत से पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए; और उन्होंने उनसे बातें करके समझाया, कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो।

44 अगले सब्त के दिन नगर के प्रायः सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकट्ठे हो गए।

45 परन्तु यहूदी भीड़ को देखकर ईर्ष्या से भर गए, और निन्दा करते हुए पौलुस की बातों के विरोध में बोलने लगे।

46 तब पौलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा, “अवश्य था, कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता; परन्तु जबकि तुम उसे दूर करते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो अब, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं।

47 क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है,

‘मैंने तुझे अन्यजातियों के लिये
ज्योति ठहराया है,
ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का
द्वार हो।’ ” ***([illegible]. 49:6)***

48 यह सुनकर अन्यजाति आनन्दित हुए, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे, और जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया।

49 तब प्रभु का वचन उस सारे देश में फैलने लगा।

50 परन्तु यहूदियों ने भक्त और कुलीन स्त्रियों को और नगर के प्रमुख लोगों को भड़काया, और पौलुस और बरनबास पर उपद्रव करवाकर उन्हें अपनी सीमा से बाहर निकाल दिया।

51 तब वे उनके सामने अपने पाँवों की धूल झाड़कर इकुनियुम को चले गए।

52 और चेले आनन्द से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे।

14

[illegible]

1 इकुनियुम में ऐसा हुआ कि पौलुस और बरनबास यहूदियों की आराधनालय में साथ-साथ गए, और ऐसी बातें की, कि यहूदियों और यूनानियों दोनों में से बहुतों ने विश्वास किया।

2 परन्तु विश्वास न करनेवाले यहूदियों ने अन्यजातियों के मन भाइयों के विरोध में भड़काए, और कटुता उत्पन्न कर दी।

3 और वे बहुत दिन तक वहाँ रहे, और प्रभु के भरोसे पर साहस के साथ बातें करते थे: और वह उनके हाथों से चिन्ह और अद्भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था।

4 परन्तु नगर के लोगों में फूट पड़ गई थी; इससे कितने तो यहूदियों की ओर, और कितने प्रेरितों की ओर हो गए।

5 परन्तु जब अन्यजाति और यहूदी उनका अपमान और उन्हें पथराव करने के लिये अपने सरदारों समेत उन पर दौड़े।

6 तो वे इस बात को जान गए, और *[illegible]** के लुस्त्रा और दिरबे नगरों में, और आस-पास के प्रदेशों में भाग गए।

7 और वहाँ सुसमाचार सुनाने लगे।

* **14:6** *[illegible]:* लुकाउनिया आसिया माइनर के प्रान्तों में से एक था।

[illegible]

8 लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था, जो पाँवों का निर्बल था। वह जन्म ही से लँगड़ा था, और कभी न चला था।

9 वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था और पौलुस ने उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा कि इसको चंगा हो जाने का विश्वास है।

10 और ऊँचे शब्द से कहा, “अपने पाँवों के बल सीधा खड़ा हो।” तब वह उछलकर चलने फिरने लगा।

11 लोगों ने पौलुस का यह काम देखकर लुकाउनिया भाषा में ऊँचे शब्द से कहा, “देवता मनुष्यों के रूप में होकर हमारे पास उतर आए हैं।”

12 और उन्होंने बरनबास को ज्यूस, और पौलुस को हिर्मेस कहा क्योंकि वह बातें करने में मुख्य था।

13 और ज्यूस के उस मन्दिर का पुजारी जो उनके नगर के सामने था, बैल और फूलों के हार फाटकों पर लाकर लोगों के साथ बलिदान करना चाहता था।

14 परन्तु बरनबास और पौलुस प्रेरितों ने जब सुना, तो अपने कपड़े फाड़े, और भीड़ की ओर लपक गए, और पुकारकर कहने लगे,

15 “हे लोगों, तुम क्या करते हो? हम भी तो तुम्हारे समान दुःख-सुख भोगी मनुष्य हैं, और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं, कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर जीवित परमेश्वर की ओर फिरो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया। ***([illegible]. 20:11, [illegible]. 146:6)***

16 उसने बीते समयों में सब जातियों को अपने-अपने मार्गों में चलने दिया।

17 तो भी उसने अपने आपको बे-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा।” ***([illegible]. 147:8, [illegible]. 5:24)***

18 यह कहकर भी उन्होंने लोगों को बड़ी कठिनाई से रोका कि उनके लिये बलिदान न करें।

19 परन्तु कितने यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियुम से आकर लोगों को अपनी ओर कर लिया, और पौलुस पर पथराव किया, और मरा समझकर उसे नगर के बाहर घसीट ले गए।

20 पर जब चेले उसकी चारों ओर आ खड़े हुए, तो वह उठकर नगर में गया और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे को चला गया।

[illegible]

21 और वे उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाकर, और बहुत से चेले बनाकर, लुस्त्रा और इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए।

22 और चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे कि विश्वास में बने रहो; और यह कहते थे, “हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।”

23 और उन्होंने हर एक कलीसिया में उनके लिये प्राचीन ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्होंने विश्वास किया था।

24 और पिसिदिया से होते हुए वे पंफूलिया में पहुँचे;

25 और पिरगा में वचन सुनाकर अत्तलिया में आए।

26 और वहाँ से जहाज द्वारा अन्ताकिया गये, जहाँ वे उस काम के लिये जो उन्होंने पूरा किया था परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपे गए।

27 वहाँ पहुँचकर, उन्होंने कलीसिया इकट्ठी की और बताया, कि परमेश्वर ने हमारे साथ होकर कैसे बड़े-बड़े काम किए! और अन्यजातियों के लिये [illegible]†।

28 और वे चेलों के साथ बहुत दिन तक रहे।

15

[illegible]

1 फिर कुछ लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे: "यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते।" ***([illegible]. 12:3)***

2 जब पौलुस और बरनबास का उनसे बहुत मतभेद और विवाद हुआ तो यह ठहराया गया, कि पौलुस और बरनबास, और उनमें से कुछ व्यक्ति इस बात के विषय में प्रेरितों और प्राचीनों के पास यरूशलेम को जाएँ।

3 अतः कलीसिया ने उन्हें कुछ दूर तक पहुँचाया; और वे फीनीके और सामरिया से होते हुए अन्यजातियों के मन फिराने का समाचार सुनाते गए, और सब भाइयों को बहुत आनन्दित किया।

4 जब वे यरूशलेम में पहुँचे, तो कलीसिया और प्रेरित और प्राचीन उनसे आनन्द के साथ मिले, और उन्होंने बताया कि परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे-कैसे काम किए थे।

5 परन्तु फरीसियों के पंथ में से जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से कितनों ने उठकर कहा, "उन्हें खतना कराने और मूसा की व्यवस्था को मानने की आज्ञा देनी चाहिए।"

6 तब प्रेरित और प्राचीन इस बात के विषय में विचार करने के लिये इकट्ठे हुए।

7 तब पतरस ने बहुत वाद-विवाद हो जाने के बाद खड़े होकर उनसे कहा, "हे भाइयों, तुम जानते हो, कि बहुत दिन हुए, कि परमेश्वर ने तुम में से मुझे चुन लिया, कि मेरे मुँह से अन्यजातियाँ सुसमाचार का वचन सुनकर विश्वास करें।

8 और मन के जाँचने वाले परमेश्वर ने उनको भी हमारे समान पवित्र आत्मा देकर उनकी गवाही दी;

9 और विश्वास के द्वारा उनके मन शुद्ध करके हम में और उनमें कुछ भेद न रखा।

10 तो अब तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो, कि चेलों की गर्दन पर ऐसा जूआ रखो, जिसे न हमारे पूर्वज उठा सकते थे और न हम उठा सकते हैं।

11 हाँ, हमारा यह तो निश्चय है कि जिस रीति से वे [illegible]*; उसी रीति से हम भी पाएँगे।"

12 तब सारी सभा चुपचाप होकर बरनबास और पौलुस की सुनने लगी, कि परमेश्वर ने उनके द्वारा अन्यजातियों में कैसे-कैसे बड़े चिन्ह, और अद्भुत काम दिखाए।

[illegible]

13 जब वे चुप हुए, तो याकूब कहने लगा, "हे भाइयों, मेरी सुनो।

14 शमौन ने बताया, कि परमेश्वर ने पहले-पहल अन्यजातियों पर कैसी कृपादृष्टि की, कि उनमें से अपने नाम के लिये एक लोग बना ले।

† **14:27** *[illegible]*: अन्यजातियों को सुसमाचार प्रचार करने का एक अवसर सुसज्जित था। * **15:11** *[illegible]*: यहूदियों के संस्कार और अनुष्ठानों के बिना, केवल मसीह के अनुग्रह या दया के द्वारा उद्धार पाएँगे।

15 और इससे भविष्यद्वक्ताओं की
बातें भी मिलती हैं, जैसा लिखा है,
16 'इसके बाद मैं फिर आकर दाऊद का
गिरा हुआ डेरा उठाऊँगा,
और उसके खंडहरों को फिर बनाऊँगा,
और उसे खड़ा करूँगा, *(⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 12:15)*
17 इसलिए कि शेष मनुष्य, अर्थात्
सब अन्यजाति जो मेरे नाम
के कहलाते हैं, प्रभु को ढूँढ़ें,
18 यह वही प्रभु कहता है जो जगत
की उत्पत्ति से इन बातों
का समाचार देता आया है।'
(⍰⍰⍰. 9:9-12, ⍰⍰⍰. 45:21)
19 "इसलिए मेरा विचार यह है, कि
अन्यजातियों में से जो लोग परमेश्वर
की ओर फिरते हैं, हम उन्हें दुःख न दें;
20 परन्तु उन्हें लिख भेजें, कि वे
⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰† और
व्यभिचार और गला घोंटे हुओं के माँस
से और लहू से परे रहें। *(⍰⍰⍰⍰. 9:4, ⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 3:17, ⍰⍰⍰⍰⍰. 17:10-14)*
21 क्योंकि पुराने समय से नगर-
नगर मूसा की व्यवस्था के प्रचार
करनेवाले होते चले आए है, और वह
हर सब्त के दिन आराधनालय में पढ़ी
जाती है।"

⍰⍰⍰-⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰

22 तब सारी कलीसिया सहित
प्रेरितों और प्राचीनों को अच्छा लगा,
कि अपने में से कुछ मनुष्यों को
चुनें, अर्थात् यहूदा, जो बरसब्बास
कहलाता है, और सीलास को जो
भाइयों में मुखिया थे; और उन्हें पौलुस
और बरनबास के साथ अन्ताकिया को
भेजें।
23 और उन्होंने उनके हाथ यह लिख
भेजा: "अन्ताकिया और सीरिया और
किलिकिया के रहनेवाले भाइयों को
जो अन्यजातियों में से हैं, प्रेरितों और
प्राचीन भाइयों का नमस्कार!
24 हमने सुना है, कि हम में से कुछ
ने वहाँ जाकर, तुम्हें अपनी बातों से
घबरा दिया; और तुम्हारे मन उलट
दिए हैं परन्तु हमने उनको आज्ञा नहीं
दी थी।
25 इसलिए हमने एक चित्त होकर
ठीक समझा, कि चुने हुए मनुष्यों को
अपने प्रिय बरनबास और पौलुस के
साथ तुम्हारे पास भेजें।
26 ये तो ऐसे मनुष्य हैं, जिन्होंने
अपने प्राण हमारे प्रभु यीशु मसीह के
नाम के लिये जोखिम में डाले हैं।
27 और हमने यहूदा और सीलास
को भेजा है, जो अपने मुँह से भी ये
बातें कह देंगे।
28 पवित्र आत्मा को, और हमको भी
ठीक जान पड़ा कि इन आवश्यक बातों
को छोड़; तुम पर और बोझ न डालें;
29 कि तुम मूरतों के बलि किए हुओं
से, और लहू से, और गला घोंटे हुओं
के माँस से, और व्यभिचार से दूर रहो।
इनसे दूर रहो तो तुम्हारा भला होगा।
आगे शुभकामना।" *(⍰⍰⍰⍰. 9:4, ⍰⍰⍰⍰⍰. 3:17)*
30 फिर वे विदा होकर अन्ताकिया
में पहुँचे, और सभा को इकट्ठी करके
उन्हें पत्री दे दी।
31 और वे पढ़कर उस उपदेश की
बात से अति आनन्दित हुए।
32 और यहूदा और सीलास ने जो
आप भी भविष्यद्वक्ता थे, बहुत बातों
से भाइयों को उपदेश देकर स्थिर
किया।

† **15:20** *⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰:* अशुद्ध का मतलब किसी भी तरह का अपवित्रीकरण। परन्तु यहाँ स्पष्ट रूप से निरुपित किया गया है कि उन पशुओं का माँस जो मूरतों को बलिदान किया गया था।

33 वे कुछ दिन रहकर भाइयों से शान्ति के साथ विदा हुए कि अपने भेजनेवालों के पास जाएँ।

34 (परन्तु सीलास को वहाँ रहना अच्छा लगा।)

35 और पौलुस और बरनबास अन्ताकिया में रह गए: और अन्य बहुत से लोगों के साथ प्रभु के वचन का उपदेश करते और सुसमाचार सुनाते रहे।

[illegible]

36 कुछ दिन बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, "जिन-जिन नगरों में हमने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर उनमें चलकर अपने भाइयों को देखें कि कैसे हैं।"

37 तब बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेने का विचार किया।

38 परन्तु पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उनसे अलग हो गया था, और काम पर उनके साथ न गया, साथ ले जाना अच्छा न समझा।

39 अत: ऐसा विवाद उठा कि वे एक दूसरे से अलग हो गए; और बरनबास, मरकुस को लेकर जहाज से साइप्रस को चला गया।

[illegible] ([illegible]) [illegible]-[illegible]

40 परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपा जाकर वहाँ से चला गया।

41 और कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ, सीरिया और किलिकिया से होते हुए निकला।

16

[illegible]

1 फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में भी गया, और वहाँ तीमुथियुस नामक एक चेला था। उसकी माँ यहूदी विश्वासी थी, परन्तु उसका पिता यूनानी था।

2 वह लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों में सुनाम था।

3 पौलुस की इच्छा थी कि वह उसके साथ चले; और जो यहूदी लोग उन जगहों में थे उनके कारण उसे लेकर उसका खतना किया, क्योंकि वे सब जानते थे, कि उसका पिता यूनानी था।

4 और नगर-नगर जाते हुए वे उन विधियों को जो यरूशलेम के प्रेरितों और प्राचीनों ने ठहराई थीं, मानने के लिये उन्हें पहुँचाते जाते थे।

5 इस प्रकार कलीसियाएँ विश्वास में स्थिर होती गई और गिनती में प्रतिदिन बढ़ती गई।

[illegible]

6 और वे फ्रूगिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें आसिया में वचन सुनाने से मना किया।

7 और उन्होंने [illegible]* के निकट पहुँचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया।

8 अत: वे मूसिया से होकर [illegible]† में आए।

9 वहाँ पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ, उससे विनती करके कहता है, "पार उतरकर मकिदुनिया में आ, और हमारी सहायता कर।"

* **16:7** [illegible]: यह आसिया माइनर का एक प्रांत था, जिसके उत्तर में प्रोपोंतिस था। † **16:8** [illegible]: ट्रोजन्स के पूरे देश को दर्शाने के लिए उपयोग किया गया है, जहाँ ट्रॉय का प्राचीन नगर खड़ा था।

10 उसके यह दर्शन देखते ही हमने
तुरन्त मकिदुनिया जाना चाहा, यह
समझकर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें
सुसमाचार सुनाने के लिये बुलाया है।
11 इसलिए त्रोआस से जहाज
खोलकर हम सीधे सुमात्राके और दूसरे
दिन नियापुलिस में आए।
12 वहाँ से हम [illegible]‡ में
पहुँचे, जो मकिदुनिया प्रान्त का मुख्य
नगर, और रोमियों की बस्ती है; और
हम उस नगर में कुछ दिन तक रहे।
13 सब्त के दिन हम नगर के फाटक
के बाहर नदी के किनारे यह समझकर
गए कि वहाँ प्रार्थना करने का स्थान
होगा; और बैठकर उन स्त्रियों से जो
इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे।

[illegible]

14 और लुदिया नाम थुआतीरा नगर
की बैंगनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त
स्त्री सुन रही थी, और प्रभु ने उसका
मन खोला, ताकि पौलुस की बातों पर
ध्यान लगाए।
15 और जब उसने अपने घराने
समेत बपतिस्मा लिया, तो उसने
विनती की, "यदि तुम मुझे प्रभु की
विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर
मेरे घर में रहो," और वह हमें मनाकर
ले गई।

[illegible]

16 जब हम प्रार्थना करने की जगह
जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली,
जिसमें भावी कहनेवाली आत्मा थी;
और भावी कहने से अपने स्वामियों के
लिये बहुत कुछ कमा लाती थी।
17 वह पौलुस के और हमारे पीछे
आकर चिल्लाने लगी, "ये मनुष्य
परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो
हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं।"
18 वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती
रही, परन्तु पौलुस परेशान हुआ, और
मुड़कर उस आत्मा से कहा, "मैं तुझे
यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ,
कि उसमें से निकल जा और वह उसी
घड़ी निकल गई।"
19 जब उसके स्वामियों ने देखा, कि
हमारी कमाई की आशा जाती रही, तो
पौलुस और सीलास को पकड़कर चौक
में प्रधानों के पास खींच ले गए।
20 और उन्हें फौजदारी के हाकिमों
के पास ले जाकर कहा, "ये लोग जो
यहूदी हैं, हमारे नगर में बड़ी हलचल
मचा रहे हैं; ***(1 [illegible]. 18:17)***
21 और ऐसी रीतियाँ बता रहे हैं,
जिन्हें ग्रहण करना या मानना हम
रोमियों के लिये ठीक नहीं।"

[illegible]

22 तब भीड़ के लोग उनके विरोध में
इकट्ठे होकर चढ़ आए, और हाकिमों ने
उनके कपड़े फाड़कर उतार डाले, और
उन्हें बेंत मारने की आज्ञा दी।
23 और बहुत बेंत लगवाकर उन्होंने
उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया और
दरोगा को आज्ञा दी कि उन्हें सावधानी
से रखे।
24 उसने ऐसी आज्ञा पाकर उन्हें
भीतर की कोठरी में रखा और उनके
पाँव काठ में ठोंक दिए।

[illegible]

25 आधी रात के लगभग पौलुस
और सीलास प्रार्थना करते हुए
परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और कैदी
उनकी सुन रहे थे।
26 कि इतने में अचानक एक बड़ा
भूकम्प हुआ, यहाँ तक कि बन्दीगृह

‡ **16:12** *[illegible]*: इस नगर का भूतपूर्व नाम दाथोस था। सिकंदर महान के पिता, फिलिप के द्वारा इसकी मरम्मत और विभूषित हुई थी।

की नींव हिल गई, और तुरन्त सब द्वार
खुल गए; और सब के बन्धन खुल गए।
27 और दरोगा जाग उठा, और
बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर समझा
कि कैदी भाग गए, अत: उसने तलवार
खींचकर अपने आपको मार डालना
चाहा।
28 परन्तु पौलुस ने ऊँचे शब्द से
पुकारकर कहा, “अपने आपको कुछ
हानि न पहुँचा, क्योंकि हम सब यहीं
हैं।”
29 तब वह दिया मँगवाकर भीतर
आया और काँपता हुआ पौलुस और
सीलास के आगे गिरा;

[illegible]

30 और उन्हें बाहर लाकर कहा, “हे
सज्जनों, उद्धार पाने के लिये मैं क्या
करूँ?”
31 उन्होंने कहा, “प्रभु यीशु मसीह
पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना
उद्धार पाएगा।”
32 और उन्होंने उसको और उसके
सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन
सुनाया।
33 और रात को उसी घड़ी उसने
उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और
उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त
बपतिस्मा लिया।
34 और उसने उन्हें अपने घर में
ले जाकर, उनके आगे भोजन रखा
और सारे घराने समेत परमेश्वर पर
विश्वास करके आनन्द किया।
35 जब दिन हुआ तब हाकिमों ने
सिपाहियों के हाथ कहला भेजा कि उन
मनुष्यों को छोड़ दो।
36 दरोगा ने ये बातें पौलुस से कह
सुनाई, “हाकिमों ने तुम्हें छोड़ देने
की आज्ञा भेज दी है, इसलिए अब
निकलकर कुशल से चले जाओ।”
37 परन्तु पौलुस ने उससे कहा,
“उन्होंने हमें जो रोमी मनुष्य हैं, दोषी
ठहराए बिना लोगों के सामने मारा
और बन्दीगृह में डाला, और अब क्या
चुपके से निकाल देते हैं? ऐसा नहीं,
परन्तु वे आप आकर हमें बाहर ले
जाएँ।”
38 सिपाहियों ने ये बातें हाकिमों से
कह दीं, और वे यह सुनकर कि रोमी हैं,
डर गए,
39 और आकर उन्हें मनाया, और
बाहर ले जाकर विनती की, कि नगर
से चले जाएँ।
40 वे बन्दीगृह से निकलकर लुदिया
के यहाँ गए, और भाइयों से भेंट करके
उन्हें शान्ति दी, और चले गए।

17

[illegible]

1 फिर वे [illegible]* और
अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके
में आए, जहाँ यहूदियों का एक
आराधनालय था।
2 और पौलुस अपनी रीति के
अनुसार उनके पास गया, और तीन
सब्त के दिन पवित्रशास्त्रों से उनके
साथ वाद-विवाद किया;
3 और उनका अर्थ खोल-खोलकर
समझाता था कि मसीह का दुःख
उठाना, और मरे हुओं में से जी उठना,
अवश्य था; “यही यीशु जिसकी मैं
तुम्हें कथा सुनाता हूँ, मसीह है।”
4 उनमें से कितनों ने, और भक्त
यूनानियों में से बहुतों ने और बहुत
सारी प्रमुख स्त्रियों ने मान लिया, और
पौलुस और सीलास के साथ मिल
गए।
5 परन्तु यहूदियों ने ईर्ष्या से भरकर
बाजार से लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों

* **17:1** [illegible]: यह मकिदुनिया के पूर्वी प्रांत की राजधानी थी।

को अपने साथ में लिया, और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा।

6 और उन्हें न पाकर, वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कुछ भाइयों को नगर के हाकिमों के सामने खींच लाए, "ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा पुलटा कर दिया है, यहाँ भी आए हैं।

7 और यासोन ने उन्हें अपने यहाँ ठहराया है, और ये सब के सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं।"

8 जब भीड़ और नगर के हाकिमों ने ये बातें सुनीं, तो वे परेशान हो गये।

9 और उन्होंने यासोन और बाकी लोगों को जमानत पर छोड़ दिया।

[illegible]

10 भाइयों ने तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरीया में भेज दिया, और वे वहाँ पहुँचकर यहूदियों के आराधनालय में गए।

11 ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में ढूँढ़ते रहे कि ये बातें ऐसी ही हैं कि नहीं।

12 इसलिए उनमें से बहुतों ने, और यूनानी कुलीन स्त्रियों में से और पुरुषों में से बहुतों ने विश्वास किया।

13 किन्तु जब थिस्सलुनीके के यहूदी जान गए कि पौलुस बिरीया में भी परमेश्वर का वचन सुनाता है, तो वहाँ भी आकर लोगों को भड़काने और हलचल मचाने लगे।

14 तब भाइयों ने तुरन्त पौलुस को विदा किया कि समुद्र के किनारे चला जाए; परन्तु सीलास और तीमुथियुस वहीं रह गए।

15 पौलुस के पहुँचाने वाले उसे एथेंस तक ले गए, और सीलास और तीमुथियुस के लिये यह निर्देश लेकर विदा हुए कि मेरे पास अति शीघ्र आओ।

[illegible]

16 जब पौलुस एथेंस में उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल उठा।

17 अतः वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से और चौक में जो लोग मिलते थे, उनसे हर दिन वाद-विवाद किया करता था।

18 तब [illegible]† और स्तोईकी दार्शनिकों में से कुछ उससे तर्क करने लगे, और कुछ ने कहा, "यह बकवादी क्या कहना चाहता है?" परन्तु दूसरों ने कहा, "वह अन्य देवताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है," क्योंकि वह यीशु का और पुनरुत्थान का सुसमाचार सुनाता था।

19 तब वे उसे अपने साथ [illegible]‡ पर ले गए और पूछा, "क्या हम जान सकते हैं, कि यह नया मत जो तू सुनाता है, क्या है?

20 क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है, इसलिए हम जानना चाहते हैं कि इनका अर्थ क्या है?"

21 (इसलिए कि सब एथेंस वासी और परदेशी जो वहाँ रहते थे नई-नई बातें कहने और सुनने के सिवाय और किसी काम में समय नहीं बिताते थे।)

† **17:18** [illegible]: दार्शनिकों के इस संप्रदाय ने इन्कार किया था कि संसार की सृष्टि परमेश्वर के द्वारा की गई है। ‡ **17:19** [illegible]: मार्जिन, या "मंगल ग्रह की पहाड़ी।"

[illegible]

22 तब पौलुस ने अरियुपगुस के
बीच में खड़ा होकर कहा, "हे एथेंस के
लोगों, मैं देखता हूँ कि तुम हर बात में
देवताओं के बड़े माननेवाले हो।
23 क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी
पूजने की वस्तुओं को देख रहा था,
तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर
लिखा था, 'अनजाने ईश्वर के लिये।'
इसलिए जिसे तुम बिना जाने पूजते
हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूँ।
24 जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और
उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह
स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ
के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता।
(1 [illegible]. 8:27, 2 [illegible]. 6:18, [illegible]. 146:6)
25 न किसी वस्तु की आवश्यकता के
कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता
है, क्योंकि वह तो आप ही सब को
जीवन और श्वास और सब कुछ देता
है। ***([illegible]. 42:5, [illegible]. 50:12, [illegible]. 50:12)***
26 उसने एक ही मूल से मनुष्यों
की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने
के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराए
हुए समय और निवास के सीमाओं को
इसलिए बाँधा है, ***([illegible]. 32:8)***
27 कि वे परमेश्वर को ढूँढ़े, और
शायद वे उसके पास पहुँच सके, और
वास्तव में, वह हम में से किसी से
दूर नहीं हैं। ***([illegible]. 55:6, [illegible]. 23:23)***
28 क्योंकि हम उसी में जीवित रहते,
और चलते फिरते, और स्थिर रहते हैं;
जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा
है, 'हम तो उसी के वंश भी हैं।'
29 अतः परमेश्वर का वंश होकर हमें
यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व,
सोने या चाँदी या पत्थर के समान है,
जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना
से गढ़े गए हों। ***([illegible]. 1:27, [illegible]. 40:18-20, [illegible]. 44:10-17)***
30 इसलिए परमेश्वर ने अज्ञानता
के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब
हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने
की आज्ञा देता है।
31 क्योंकि उसने एक दिन ठहराया
है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा
धार्मिकता से जगत का न्याय करेगा,
जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे
हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर
प्रमाणित कर दी है।" ***([illegible]. 9:8, [illegible]. 72:2-4, [illegible]. 96:13, [illegible]. 98:9, [illegible]. 2:4)***
32 मरे हुओं के पुनरुत्थान की बात
सुनकर कितने तो उपहास करने लगे,
और कितनों ने कहा, "यह बात हम
तुझ से फिर कभी सुनेंगे।"
33 इस पर पौलुस उनके बीच में से
चला गया।
34 परन्तु कुछ मनुष्य उसके साथ
मिल गए, और विश्वास किया; जिनमें
दियुनुसियुस जो अरियुपगुस का
सदस्य था, और दमरिस नामक एक
स्त्री थी, और उनके साथ और भी
कितने लोग थे।

18

[illegible]

1 इसके बाद पौलुस एथेंस को
छोड़कर कुरिन्थुस में आया।
2 और वहाँ अक्विला नामक एक
यहूदी मिला, जिसका जन्म पुन्तुस
में हुआ था; और अपनी पत्नी
प्रिस्किल्ला के साथ इतालिया से हाल
ही में आया था, क्योंकि क्लौदियुस ने
सब यहूदियों को रोम से निकल जाने
की आज्ञा दी थी, इसलिए वह उनके
यहाँ गया।

3 और उसका और उनका एक ही
व्यापार था; इसलिए वह उनके साथ
रहा, और वे काम करने लगे, और
उनका व्यापार तम्बू बनाने का था।
4 और वह हर एक सब्त के दिन
आराधनालय में वाद-विवाद करके
यहूदियों और यूनानियों को भी
समझाता था।
5 जब सीलास और तीमुथियुस
मकिदुनिया से आए, तो पौलुस वचन
सुनाने की धुन में लगकर यहूदियों को
गवाही देता था कि यीशु ही मसीह है।
6 परन्तु जब वे विरोध और निन्दा
करने लगे, तो उसने अपने कपड़े
झाड़कर उनसे कहा, “तुम्हारा लहू
तुम्हारी सिर पर रहे! मैं निर्दोष हूँ। अब
से मैं अन्यजातियों के पास जाऊँगा।”
7 और वहाँ से चलकर वह तीतुस
यूस्तुस नामक परमेश्वर के एक
भक्त के घर में आया, जिसका घर
आराधनालय से लगा हुआ था।
8 तब आराधनालय के सरदार
[illegible][*] ने अपने सारे घराने
समेत प्रभु पर विश्वास किया; और
बहुत से कुरिन्थवासियों ने सुनकर
विश्वास किया और बपतिस्मा लिया।
9 और प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा
पौलुस से कहा, **“मत डर, वरन् कहे**
जा और चुप मत रह;
10 **क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और कोई**
तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न
करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत
से लोग हैं।” ***([illegible]. 41:10, [illegible].***
43:5, [illegible]. 1:8)
11 इसलिए वह उनमें परमेश्वर का
वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा।
12 जब गल्लियो अखाया देश का
राज्यपाल था तो यहूदी लोग एका
करके पौलुस पर चढ़ आए, और उसे
न्याय आसन के सामने लाकर कहने
लगे,
13 “यह लोगों को समझाता है, कि
परमेश्वर की उपासना ऐसी रीति से
करें, जो व्यवस्था के विपरीत है।”
14 जब पौलुस बोलने पर था, तो
गल्लियो ने यहूदियों से कहा, “हे
यहूदियों, यदि यह कुछ अन्याय या
दुष्टता की बात होती तो उचित था कि
मैं तुम्हारी सुनता।
15 परन्तु यदि यह वाद-विवाद
शब्दों, और नामों, और तुम्हारे यहाँ की
व्यवस्था के विषय में है, तो तुम ही
जानो; क्योंकि मैं इन बातों का न्यायी
बनना नहीं चाहता।”
16 और उसने उन्हें न्याय आसन के
सामने से निकलवा दिया।
17 तब सब लोगों ने आराधनालय
के सरदार सोस्थिनेस को पकड़ के
न्याय आसन के सामने मारा। परन्तु
गल्लियो ने इन बातों की कुछ भी
चिन्ता न की।

[illegible]

18 अतः पौलुस बहुत दिन तक
वहाँ रहा, फिर भाइयों से विदा होकर
किंख्रिया में इसलिए सिर मुँड़ाया,
क्योंकि उसने मन्नत मानी थी और
जहाज पर सीरिया को चल दिया और
उसके साथ प्रिस्किल्ला और अक्विला
थे। ***([illegible]. 6:18)***
19 और उसने [illegible][†] में
पहुँचकर उनको वहाँ छोड़ा, और आप
ही आराधनालय में जाकर यहूदियों से
विवाद करने लगा।

---

[*] **18:8** *[illegible]:* वह कुलुस्सियों 1:14 में कुछ लोगों में से एक के रूप में उल्लेखित है जिसे पौलुस ने अपने हाथों से बपतिस्मा दिया था। [†] **18:19** *[illegible]:* यह नगर इओनिआ, आसिया माइनर में था, करीब 40 मील स्मुरना के दक्षिण में था।

20 जब उन्होंने उससे विनती की, "हमारे साथ और कुछ दिन रह।" तो उसने स्वीकार न किया;

21 परन्तु यह कहकर उनसे विदा हुआ, "यदि परमेश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊँगा।" तब इफिसुस से जहाज खोलकर चल दिया;

22 और कैसरिया में उतरकर (यरूशलेम को) गया और कलीसिया को नमस्कार करके अन्ताकिया में आया।

[illegible]

23 फिर कुछ दिन रहकर वहाँ से चला गया, और एक ओर से गलातिया और फ्रूगिया में सब चेलों को स्थिर करता फिरा।

[illegible]

24 अपुल्लोस नामक एक यहूदी जिसका जन्म *[illegible]*‡ में हुआ था, जो विद्वान पुरुष था और पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह से जानता था इफिसुस में आया।

25 उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी, और मन लगाकर यीशु के विषय में ठीक-ठीक सुनाता और सिखाता था, परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था।

26 वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अक्विला उसकी बातें सुनकर, उसे अपने यहाँ ले गए और परमेश्वर का मार्ग उसको और भी स्पष्ट रूप से बताया।

27 और जब उसने निश्चय किया कि पार उतरकर अखाया को जाए तो भाइयों ने उसे ढाढ़स देकर चेलों को लिखा कि वे उससे अच्छी तरह मिलें, और उसने पहुँचकर वहाँ उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था।

28 अपुल्लोस ने अपनी शक्ति और कौशल के साथ यहूदियों को सार्वजनिक रूप से अभिभूत किया, पवित्रशास्त्र से प्रमाण दे देकर कि यीशु ही मसीह है।

19

[illegible]

1 जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे देश से होकर इफिसुस में आया और वहाँ कुछ चेले मिले।

2 उसने कहा, "क्या तुम ने विश्वास करते समय *[illegible]**?" उन्होंने उससे कहा, "हमने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।"

3 उसने उनसे कहा, "तो फिर तुम ने किसका बपतिस्मा लिया?" उन्होंने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा।"

4 पौलुस ने कहा, "यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।"

5 यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया।

6 और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे।

7 ये सब लगभग बारह पुरुष थे।

8 और वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा।

---

‡ **18:24** *[illegible]*: सिकन्दरिया मिस्र का एक नगर था, इसे सिकंदर महान द्वारा स्थापित किया गया था। * **19:2** *[illegible]*: यह पूछना पौलुस के लिए स्वाभाविक था कि यह आत्मिक वरदान उन्हें मिला है या नहीं।

9 परन्तु जब कुछ लोगों ने कठोर होकर उसकी नहीं मानी वरन् लोगों के सामने इस पंथ को बुरा कहने लगे, तो उसने उनको छोड़कर चेलों को अलग कर लिया, और प्रतिदिन तुरन्नुस की पाठशाला में वाद-विवाद किया करता था।

10 दो वर्ष तक यही होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी, क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया।

[illegible]

11 और परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ्य के अद्भुत काम दिखाता था।

12 यहाँ तक कि रूमाल और अँगोछे उसकी देह से स्पर्श कराकर बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियाँ दूर हो जाती थीं; और दुष्टात्माएँ उनमें से निकल जाया करती थीं।

13 परन्तु कुछ यहूदी जो झाड़ा फूँकी करते फिरते थे, यह करने लगे कि जिनमें दुष्टात्मा हों उन पर प्रभु यीशु का नाम यह कहकर फूँकने लगे, "जिस यीशु का प्रचार पौलुस करता है, मैं तुम्हें उसी की शपथ देता हूँ।"

14 और *[illegible]*† नाम के एक यहूदी प्रधान याजक के सात पुत्र थे, जो ऐसा ही करते थे।

15 पर दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, "यीशु को मैं जानती हूँ, और पौलुस को भी पहचानती हूँ; परन्तु तुम कौन हो?"

16 और उस मनुष्य ने जिसमें दुष्ट आत्मा थी; उन पर लपककर, और उन्हें काबू में लाकर, उन पर ऐसा उपद्रव किया, कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे।

17 और यह बात इफिसुस के रहनेवाले यहूदी और यूनानी भी सब जान गए, और उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई।

18 और जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से बहुतों ने आकर अपने-अपने बुरे कामों को मान लिया और प्रगट किया।

19 और जादू-टोना करनेवालों में से बहुतों ने अपनी-अपनी पोथियाँ इकट्ठी करके सब के सामने जला दीं; और जब उनका दाम जोड़ा गया, जो पचास हजार चाँदी के सिक्कों के बराबर निकला।

20 इस प्रकार प्रभु का वचन सामर्थ्यपूर्वक फैलता गया और प्रबल होता गया।

21 जब ये बातें हो चुकी तो पौलुस ने आत्मा में ठाना कि *[illegible]*‡ से होकर यरूशलेम को जाऊँ, और कहा, "वहाँ जाने के बाद मुझे रोम को भी देखना अवश्य है।"

22 इसलिए अपनी सेवा करनेवालों में से तीमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया में भेजकर आप कुछ दिन आसिया में रह गया।

[illegible]

23 उस समय उस पन्थ के विषय में बड़ा हुल्लड़ हुआ।

24 क्योंकि दिमेत्रियुस नाम का एक सुनार अरतिमिस के चाँदी के मन्दिर बनवाकर, कारीगरों को बहुत काम दिलाया करता था।

25 उसने उनको और ऐसी वस्तुओं के कारीगरों को इकट्ठे करके कहा, "हे मनुष्यों, तुम जानते हो कि इस काम से हमें कितना धन मिलता है।

† **19:14** *[illegible]:* यह एक यूनानी नाम है, परन्तु इसके बारे में कुछ ज्यादा ज्ञात नहीं है।
‡ **19:21** *[illegible]:* इन स्थानों में उन्होंने उत्कर्षित कलीसियाओं की स्थापना की थी।

26 और तुम देखते और सुनते हो कि
केवल इफिसुस ही में नहीं, वरन् प्रायः
सारे आसिया में यह कह कहकर इस
पौलुस ने बहुत लोगों को समझाया
और भरमाया भी है, कि जो हाथ की
कारीगरी है, वे ईश्वर नहीं।
27 और अब केवल इसी एक बात
का ही डर नहीं कि हमारे इस धन्धे
की प्रतिष्ठा जाती रहेगी; वरन् यह
कि महान देवी अरतिमिस का मन्दिर
तुच्छ समझा जाएगा और जिसे सारा
आसिया और जगत पूजता है उसका
महत्त्व भी जाता रहेगा।"
28 वे यह सुनकर क्रोध से भर गए
और चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे,
"इफिसियों की अरतिमिस, महान है!"
29 और सारे नगर में बड़ा कोलाहल
मच गया और लोगों ने गयुस और
अरिस्तर्खुस, मकिदुनियों को जो
पौलुस के संगी यात्री थे, पकड़ लिया,
और एक साथ होकर रंगशाला में दौड़
गए।
30 जब पौलुस ने लोगों के पास
भीतर जाना चाहा तो चेलों ने उसे जाने
न दिया।
31 आसिया के हाकिमों में से भी
उसके कई मित्रों ने उसके पास कहला
भेजा और विनती की, कि रंगशाला में
जाकर जोखिम न उठाना।
32 वहाँ कोई कुछ चिल्लाता था,
और कोई कुछ; क्योंकि सभा में बड़ी
गड़बड़ी हो रही थी, और बहुत से लोग
तो यह जानते भी नहीं थे कि वे किस
लिये इकट्ठे हुए हैं।
33 तब उन्होंने सिकन्दर को, जिसे
यहूदियों ने खड़ा किया था, भीड़ में
से आगे बढ़ाया, और सिकन्दर हाथ से
संकेत करके लोगों के सामने उत्तर देना
चाहता था।
34 परन्तु जब उन्होंने जान लिया
कि वह यहूदी है, तो सब के सब एक
स्वर से कोई दो घंटे तक चिल्लाते रहे,
"इफिसियों की अरतिमिस, महान है।"
35 तब नगर के मंत्री ने लोगों
को शान्त करके कहा, "हे इफिसियों,
कौन नहीं जानता, कि इफिसियों का
नगर महान देवी अरतिमिस के मन्दिर,
और आकाश से गिरी हुई मूरत का
रखवाला है।
36 अतः जबकि इन बातों का खण्डन
ही नहीं हो सकता, तो उचित है,
कि तुम शान्त रहो; और बिना सोचे-
विचारे कुछ न करो।
37 क्योंकि तुम इन मनुष्यों को लाए
हो, जो न मन्दिर के लूटनेवाले हैं, और
न हमारी देवी के निन्दक हैं।
38 यदि दिमेत्रियुस और उसके
साथी कारीगरों को किसी से विवाद हो
तो कचहरी खुली है, और हाकिम भी हैं;
वे एक दूसरे पर आरोप लगाए।
39 परन्तु यदि तुम किसी और बात
के विषय में कुछ पूछना चाहते हो, तो
नियत सभा में फैसला किया जाएगा।
40 क्योंकि आज के बलवे के कारण
हम पर दोष लगाए जाने का डर है,
इसलिए कि इसका कोई कारण नहीं,
अतः हम इस भीड़ के इकट्ठा होने का
कोई उत्तर न दे सकेंगे।"
41 और यह कह के उसने सभा को
विदा किया।

20

??????????, ?????? ?? ??????? ??? ??????

1 जब हुल्लड़ थम गया तो पौलुस
ने चेलों को बुलवाकर समझाया, और
उनसे विदा होकर मकिदुनिया की ओर
चल दिया।
2 उस सारे प्रदेश में से होकर और
चेलों को बहुत उत्साहित कर वह
यूनान में आया।

3 जब तीन महीने रहकर वह वहाँ
से जहाज पर सीरिया की ओर जाने
पर था, तो यहूदी उसकी घात में लगे,
इसलिए उसने यह निश्चय किया कि
मकिदुनिया होकर लौट जाए।
4 बिरीया के पुरूर्स का पुत्र
सोपत्रुस और थिस्सलुनीकियों में
से अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस और
दिरबे का गयुस, और तीमुथियुस और
आसिया का तुखिकुस और त्रुफिमुस
आसिया तक उसके साथ हो लिए।
5 पर वे आगे जाकर त्रोआस में
हमारी प्रतीक्षा करते रहे।
6 और हम अख़मीरी रोटी के दिनों
के बाद फिलिप्पी से जहाज पर चढ़कर
पाँच दिन में त्रोआस में उनके पास
पहुँचे, और सात दिन तक वहीं रहे।

[illegible]

7 सप्ताह के पहले दिन जब हम
रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो
पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर
था, उनसे बातें की, और आधी रात तक
उपदेश देता रहा।
8 जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे,
उसमें बहुत दीये जल रहे थे।
9 और यूतुखुस नाम का एक जवान
खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से
झुक रहा था, और जब पौलुस देर तक
बातें करता रहा तो वह नींद के झोंके
में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और
मरा हुआ उठाया गया।
10 परन्तु पौलुस उतरकर उससे
*[illegible]**, और गले लगाकर कहा,
"घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण
उसी में है।" ***(1 [illegible]. 17:21)***
11 और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और
खाकर इतनी देर तक उनसे बातें करता
रहा कि पौ फट गई; फिर वह चला
गया।
12 और वे उस जवान को जीवित ले
आए, और बहुत शान्ति पाई।

[illegible]

13 हम पहले से जहाज पर चढ़कर
अस्सुस को इस विचार से आगे गए,
कि वहाँ से हम पौलुस को चढ़ा लें
क्योंकि उसने यह इसलिए ठहराया
था, कि आप ही पैदल जानेवाला था।
14 जब वह अस्सुस में हमें मिला
तो हम उसे चढ़ाकर *[illegible]*† में
आए।
15 और वहाँ से जहाज खोलकर हम
दूसरे दिन खियुस के सामने पहुँचे, और
अगले दिन सामुस में जा पहुँचे, फिर
दूसरे दिन मीलेतुस में आए।
16 क्योंकि पौलुस ने इफिसुस के
पास से होकर जाने की ठानी थी, कि
कहीं ऐसा न हो, कि उसे आसिया में
देर लगे; क्योंकि वह जल्दी में था, कि
यदि हो सके, तो वह पिन्तेकुस्त के दिन
यरूशलेम में रहे।

[illegible]

17 और उसने मीलेतुस से इफिसुस
में कहला भेजा, और कलीसिया के
प्राचीनों को बुलवाया।
18 जब वे उसके पास आए, तो उनसे
कहा, "तुम जानते हो, कि पहले ही
दिन से जब मैं आसिया में पहुँचा, मैं हर
समय तुम्हारे साथ किस प्रकार रहा।
19 अर्थात् बड़ी दीनता से, और आँसू
बहा-बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो
यहूदियों के षड्यंत्र के कारण जो मुझ
पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही
रहा।

* **20:10** *[illegible]*: सम्भवत: एलीशा के समान जैसा उसने शूनेमवासी स्त्री के बेटे के साथ किया था उसी तरह से पौलुस ने अपने आपको उस पर लिटा दिया। † **20:14** *[illegible]*: यह लेसबोस के द्वीप की राजधानी थी।

20 और जो-जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनको बताने और लोगों के सामने और घर-घर सिखाने से कभी न झिझका।
21 वरन् यहूदियों और यूनानियों को चेतावनी देता रहा कि परमेश्वर की ओर मन फिराए, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करे।
22 और अब, मैं *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*‡ यरूशलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता, कि वहाँ मुझ पर क्या-क्या बीतेगा,
23 केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे-देकर मुझसे कहता है कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार है।
24 परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूँ, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवा को पूरी करूँ, जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।
25 और अब मैं जानता हूँ, कि तुम सब जिनमें मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुँह फिर न देखोगे।
26 इसलिए मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूँ, कि मैं सब के लहू से निर्दोष हूँ।
27 क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका।
28 इसलिए अपनी और पूरे झुण्ड की देख-रेख करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है। ***([illegible]. 74:2)***
29 मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएँगे, जो झुण्ड को न छोड़ेंगे।
30 तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे।
31 इसलिए जागते रहो, और स्मरण करो कि मैंने तीन वर्ष तक रात दिन आँसू बहा-बहाकर, हर एक को चितौनी देना न छोड़ा।
32 और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, और सब पवित्र किए गये लोगों में सहभागी होकर विरासत दे सकता है।
33 मैंने किसी के चाँदी, सोने या कपड़े का लालच नहीं किया। ***(1 [illegible]. 12:3)***
34 तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएँ पूरी की।
35 मैंने तुम्हें सब कुछ करके दिखाया, कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बलों को सम्भालना, और प्रभु यीशु के वचन स्मरण रखना अवश्य है, कि उसने आप ही कहा है: **'लेने से देना धन्य है।'** ”
36 यह कहकर उसने घुटने टेके और उन सब के साथ प्रार्थना की।
37 तब वे सब बहुत रोए और पौलुस के गले लिपटकर उसे चूमने लगे।
38 वे विशेष करके इस बात का शोक करते थे, जो उसने कही थी, कि तुम मेरा मुँह फिर न देखोगे। और उन्होंने उसे जहाज तक पहुँचाया।

21

[illegible] [illegible] [illegible]

1 जब हमने उनसे अलग होकर समुद्री यात्रा प्रारम्भ किया, तो सीधे

‡ **20:22** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* पवित्र आत्मा के प्रभाव के द्वारा दृढ़तापूर्वक आग्रह या विवश किया हुआ।

मार्ग से कोस में आए, और दूसरे दिन
रुदुस में, और वहाँ से पतरा में;
2 और एक जहाज फीनीके को जाता
हुआ मिला, और हमने उस पर चढ़कर,
उसे खोल दिया।
3 जब साइप्रस दिखाई दिया, तो
हमने उसे बाएँ हाथ छोड़ा, और
सीरिया को चलकर सोर में उतरे;
क्योंकि वहाँ जहाज का बोझ उतारना
था।
4 और चेलों को पाकर हम वहाँ
सात दिन तक रहे। उन्होंने आत्मा के
सिखाए पौलुस से कहा कि यरूशलेम
में पाँव न रखना।
5 जब वे दिन पूरे हो गए, तो हम
वहाँ से चल दिए; और सब स्त्रियों और
बालकों समेत हमें नगर के बाहर तक
पहुँचाया और हमने किनारे पर घुटने
टेककर प्रार्थना की।
6 तब एक दूसरे से विदा होकर, हम
तो जहाज पर चढ़े, और वे अपने-अपने
घर लौट गए।

7 जब हम सोर से जलयात्रा पूरी
करके [illegible]* में पहुँचे, और
भाइयों को नमस्कार करके उनके साथ
एक दिन रहे।
8 दूसरे दिन हम वहाँ से चलकर
कैसरिया में आए, और फिलिप्पुस
सुसमाचार प्रचारक के घर में जो सातों
में से एक था, जाकर उसके यहाँ रहे।
9 उसकी चार कुँवारी पुत्रियाँ थीं;
जो भविष्यद्वाणी करती थीं। ***([illegible]. 2:28)***
10 जब हम वहाँ बहुत दिन रह चुके,
तो अगबुस नामक एक भविष्यद्वक्ता
यहूदिया से आया।
11 उसने हमारे पास आकर पौलुस
का कमरबन्द लिया, और अपने हाथ
पाँव बाँधकर कहा, "पवित्र आत्मा
यह कहता है, कि जिस मनुष्य का
यह कमरबन्द है, उसको यरूशलेम
में यहूदी इसी रीति से बाँधेंगे, और
अन्यजातियों के हाथ में सौंपेंगे।"
12 जब हमने ये बातें सुनी, तो हम
और वहाँ के लोगों ने उससे विनती की,
कि यरूशलेम को न जाए।
13 परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया,
"तुम क्या करते हो, कि रो-रोकर मेरा
मन तोड़ते हो? मैं तो प्रभु यीशु के नाम
के लिये यरूशलेम में न केवल बाँधे
जाने ही के लिये वरन् मरने के लिये भी
तैयार हूँ।"
14 जब उसने न माना तो हम यह
कहकर चुप हो गए, "प्रभु की इच्छा
पूरी हो।"
15 उन दिनों के बाद हमने तैयारी की
और यरूशलेम को चल दिए।
16 कैसरिया के भी कुछ चेले हमारे
साथ हो लिए, और मनासोन नामक
साइप्रस के एक पुराने चेले को साथ ले
आए, कि हम उसके यहाँ टिकें।

[illegible]

17 जब हम यरूशलेम में पहुँचे, तब
भाइयों ने बड़े आनन्द के साथ हमारा
स्वागत किया।
18 दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर
याकूब के पास गया, जहाँ सब प्राचीन
इकट्ठे थे।
19 तब उसने उन्हें नमस्कार करके,
जो-जो काम परमेश्वर ने उसकी
सेवकाई के द्वारा अन्यजातियों में किए
थे, एक-एक करके सब बताया।
20 उन्होंने यह सुनकर परमेश्वर की
महिमा की, फिर उससे कहा, "हे भाई,
तू देखता है, कि यहूदियों में से कई
हजार ने विश्वास किया है; और सब
व्यवस्था के लिये धुन लगाए हैं।

* **21:7** *[illegible]*: यह भूमध्य सागर के तट पर स्थित एक नगर था।

21 और उनको तेरे विषय में सिखाया
गया है, कि तू अन्यजातियों में
रहनेवाले यहूदियों को मूसा से फिर
जाने को सिखाता है, और कहता है, कि
न अपने बच्चों का खतना कराओ ओर
न रीतियों पर चलो।
22 तो फिर क्या किया जाए? लोग
अवश्य सुनेंगे कि तू यहाँ आया है।
23 इसलिए जो हम तुझ से कहते
हैं, वह कर। हमारे यहाँ चार मनुष्य हैं,
जिन्होंने मन्नत मानी है।
24 उन्हें लेकर उसके साथ अपने
आपको शुद्ध कर; और उनके लिये
खर्चा दे, कि वे सिर मुँड़ाएँ। तब सब
जान लेंगे, कि जो बातें उन्हें तेरे
विषय में सिखाई गईं, उनकी कुछ जड़
नहीं है परन्तु तू आप भी व्यवस्था
को मानकर उसके अनुसार चलता है।
(⍰⍰⍰. 6:5, ⍰⍰⍰. 6:13-18, ⍰⍰⍰. 6:21)
25 परन्तु उन अन्यजातियों के
विषय में जिन्होंने विश्वास किया है,
हमने यह निर्णय करके लिख भेजा है
कि वे मूर्तियों के सामने बलि किए हुए
माँस से, और लहू से, और गला घोंटे
हुओं के माँस से, और व्यभिचार से, बचे
रहें।”
26 तब पौलुस उन मनुष्यों को लेकर,
और दूसरे दिन उनके साथ शुद्ध होकर
मन्दिर में गया, और वहाँ बता दिया,
कि शुद्ध होने के दिन, अर्थात् उनमें से
हर एक के लिये चढ़ावा चढ़ाए जाने
तक के दिन कब पूरे होंगे। ***(⍰⍰⍰. 6:13-21)***

⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰

27 जब वे सात दिन पूरे होने पर
थे, तो आसिया के यहूदियों ने पौलुस
को मन्दिर में देखकर सब लोगों को
भड़काया, और यह चिल्ला चिल्लाकर
उसको पकड़ लिया,
28 “हे इस्राएलियों, सहायता करो;
यह वही मनुष्य है, जो लोगों के, और
व्यवस्था के, और इस स्थान के विरोध
में हर जगह सब लोगों को सिखाता है,
यहाँ तक कि यूनानियों को भी मन्दिर
में लाकर उसने इस पवित्रस्थान को
अपवित्र किया है।”
29 उन्होंने तो इससे पहले इफिसुस
वासी *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰*† को उसके साथ
नगर में देखा था, और समझते थे कि
पौलुस उसे मन्दिर में ले आया है।
30 तब सारे नगर में कोलाहल मच
गया, और लोग दौड़कर इकट्ठे हुए,
और पौलुस को पकड़कर मन्दिर के
बाहर घसीट लाए, और तुरन्त द्वार
बन्द किए गए।
31 जब वे उसे मार डालना चाहते
थे, तो सैन्य-दल के सरदार को सन्देश
पहुँचा कि सारे यरूशलेम में कोलाहल
मच रहा है।
32 तब वह तुरन्त सिपाहियों और
सूबेदारों को लेकर उनके पास नीचे
दौड़ आया; और उन्होंने सैन्य-दल के
सरदार को और सिपाहियों को देखकर
पौलुस को मारना-पीटना रोक दिया।
33 तब सैन्य-दल के सरदार ने पास
आकर उसे पकड़ लिया; और दो
जंजीरों से बाँधने की आज्ञा देकर
पूछने लगा, “यह कौन है, और इसने
क्या किया है?”
34 परन्तु भीड़ में से कोई कुछ
और कोई कुछ चिल्लाते रहे और जब
हुल्लड़ के मारे ठीक सच्चाई न जान
सका, तो उसे गढ़ में ले जाने की आज्ञा
दी।
35 जब वह सीढ़ी पर पहुँचा, तो
ऐसा हुआ कि भीड़ के दबाव के मारे

† **21:29** *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰:* वह पौलुस के साथ उनके इफिसुस से आने के मार्ग में हो लिया था, प्रेरित 20:4।

सिपाहियों को उसे उठाकर ले जाना
पड़ा।
36 क्योंकि लोगों की भीड़ यह
चिल्लाती हुई उसके पीछे पड़ी,
“उसका अन्त कर दो।”
37 जब वे पौलुस को गढ़ में ले जाने
पर थे, तो उसने सैन्य-दल के सरदार से
कहा, “क्या मुझे आज्ञा है कि मैं तुझ
से कुछ कहूँ?” उसने कहा, “क्या तू
यूनानी जानता है?
38 क्या तू वह मिस्री नहीं, जो इन
दिनों से पहले बलवाई बनाकर चार
हजार हथियार-बन्द लोगों को जंगल
में ले गया?”
39 पौलुस ने कहा, “मैं तो तरसुस
का यहूदी मनुष्य हूँ! किलिकिया के
प्रसिद्ध नगर का निवासी हूँ। और मैं
तुझ से विनती करता हूँ, कि मुझे लोगों
से बातें करने दे।”
40 जब उसने आज्ञा दी, तो पौलुस
ने सीढ़ी पर खड़े होकर लोगों को हाथ
से संकेत किया। जब वे चुप हो गए, तो
वह इब्रानी भाषा में बोलने लगा:

22

[illegible]

1 “हे भाइयों और पिताओं, मेरा
प्रत्युत्तर सुनो, जो मैं अब तुम्हारे
सामने कहता हूँ।”
2 वे यह सुनकर कि वह उनसे इब्रानी
भाषा में बोलता है, वे चुप रहे। तब
उसने कहा:
3 “मैं तो यहूदी हूँ, जो किलिकिया
के तरसुस में जन्मा; परन्तु इस नगर
में *[illegible]** के पाँवों के पास बैठकर
शिक्षा प्राप्त की, और पूर्वजों की
व्यवस्था भी ठीक रीति पर सिखाया
गया; और परमेश्वर के लिये ऐसी धुन
लगाए था, जैसे तुम सब आज लगाए
हो।
4 मैंने पुरुष और स्त्री दोनों को
बाँधकर, और बन्दीगृह में डालकर,
इस पंथ को यहाँ तक सताया, कि उन्हें
मरवा भी डाला।
5 स्वयं महायाजक और सब पुरनिए
गवाह हैं; कि उनमें से मैं भाइयों के
नाम पर चिट्ठियाँ लेकर दमिश्क को
चला जा रहा था, कि जो वहाँ हों
उन्हें दण्ड दिलाने के लिये बाँधकर
यरूशलेम में लाऊँ।

[illegible]

6 “जब मैं यात्रा करके दमिश्क के
निकट पहुँचा, तो ऐसा हुआ कि दोपहर
के लगभग अचानक एक बड़ी ज्योति
आकाश से मेरे चारों ओर चमकी।
7 और मैं भूमि पर गिर पड़ा:
और यह वाणी सुनी, **‘हे शाऊल, हे
शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?’**
8 मैंने उत्तर दिया, ‘हे प्रभु, तू कौन
है?’ उसने मुझसे कहा, **‘मैं यीशु
नासरी हूँ, जिसे तू सताता है।’**
9 और मेरे साथियों ने ज्योति तो
देखी, परन्तु जो मुझसे बोलता था
उसकी वाणी न सुनी।
10 तब मैंने कहा, ‘हे प्रभु, मैं क्या
करूँ?’ प्रभु ने मुझसे कहा, **‘उठकर
दमिश्क में जा, और जो कुछ तेरे करने
के लिये ठहराया गया है वहाँ तुझे सब
बता दिया जाएगा।’**
11 जब उस ज्योति के तेज के कारण
मुझे कुछ दिखाई न दिया, तो मैं अपने
साथियों के हाथ पकड़े हुए दमिश्क में
आया।
12 “तब हनन्याह नाम का व्यवस्था
के अनुसार एक भक्त मनुष्य, जो वहाँ
के रहनेवाले सब यहूदियों में सुनाम
था, मेरे पास आया,

---

* **22:3** *[illegible]*: प्रेरित 5:34 की टिप्पणी देखिए।

13 और खड़ा होकर मुझसे कहा, 'हे
भाई शाऊल, फिर देखने लग।' उसी
घड़ी मेरी आँखें खुल गई और मैंने उसे
देखा।
14 तब उसने कहा, 'हमारे पूर्वजों के
परमेश्वर ने तुझे इसलिए ठहराया है
कि तू उसकी इच्छा को जाने, और उस
धर्मी को देखे, और उसके मुँह से बातें
सुने।
15 क्योंकि तू उसकी ओर से सब
मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह
होगा, जो तूने देखी और सुनी हैं।
16 अब क्यों देर करता है? उठ,
बपतिस्मा ले, और *[illegible]*[†] अपने पापों को धो डाल।'
([illegible]. 2:32)

17 "जब मैं फिर यरूशलेम में आकर
मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था, तो
बेसुध हो गया।
18 और उसको देखा कि मुझसे
कहता है, **'जल्दी करके यरूशलेम से
झट निकल जा; क्योंकि वे मेरे विषय
में तेरी गवाही न मानेंगे।'**
19 मैंने कहा, 'हे प्रभु वे तो आप
जानते हैं, कि मैं तुझ पर विश्वास
करनेवालों को बन्दीगृह में डालता
और जगह-जगह आराधनालय में
पिटवाता था।
20 और जब तेरे गवाह स्तिफनुस
का लहू बहाया जा रहा था तब भी मैं
वहाँ खड़ा था, और इस बात में सहमत
था, और उसके हत्यारों के कपड़ों की
रखवाली करता था।'
21 और उसने मुझसे कहा, **'चला
जा: क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियों के
पास दूर-दूर भेजूँगा।' "**

22 वे इस बात तक उसकी सुनते
रहे; तब ऊँचे शब्द से चिल्लाए, "ऐसे
मनुष्य का अन्त करो; उसका जीवित
रहना उचित नहीं!"
23 जब वे चिल्लाते और कपड़े
फेंकते और *[illegible]*[‡];
24 तो सैन्य-दल के सूबेदार ने कहा,
"इसे गढ़ में ले जाओ; और कोड़े
मारकर जाँचो, कि मैं जानूँ कि लोग
किस कारण उसके विरोध में ऐसा
चिल्ला रहे हैं।"
25 जब उन्होंने उसे तसमों से बाँधा
तो पौलुस ने उस सूबेदार से जो उसके
पास खड़ा था कहा, "क्या यह उचित
है, कि तुम एक रोमी मनुष्य को, और
वह भी बिना दोषी ठहराए हुए कोड़े
मारो?"
26 सूबेदार ने यह सुनकर सैन्य-दल
के सरदार के पास जाकर कहा, "तू यह
क्या करता है? यह तो रोमी मनुष्य
है।"
27 तब सैन्य-दल के सरदार ने उसके
पास आकर कहा, "मुझे बता, क्या तू
रोमी है?" उसने कहा, "हाँ।"
28 यह सुनकर सैन्य-दल के सरदार
ने कहा, "मैंने रोमी होने का पद बहुत
रुपये देकर पाया है।" पौलुस ने कहा,
"मैं तो जन्म से रोमी हूँ।"
29 तब जो लोग उसे जाँचने पर थे,
वे तुरन्त उसके पास से हट गए; और
सैन्य-दल का सरदार भी यह जानकर
कि यह रोमी है, और उसने उसे बाँधा
है, डर गया।

[illegible]

30 दूसरे दिन वह ठीक-ठीक जानने
की इच्छा से कि यहूदी उस पर क्यों
दोष लगाते हैं, इसलिए उसके बन्धन
खोल दिए; और प्रधान याजकों और
सारी महासभा को इकट्ठे होने की आज्ञा

† **22:16** *[illegible]:* क्षमा और पवित्रीकरण के लिए। ‡ **22:23** *[illegible]:* उनमें से सार्थक रूप में घृणा और आक्रोश।

दी, और पौलुस को नीचे ले जाकर
उनके सामने खड़ा कर दिया।

23

1 पौलुस ने महासभा की ओर
टकटकी लगाकर देखा, और कहा, "हे
भाइयों, मैंने आज तक परमेश्वर के
लिये बिलकुल सच्चे विवेक से जीवन
बिताया है।"
2 हनन्याह महायाजक ने, उनको
जो उसके पास खड़े थे, उसके मुँह पर
थप्पड़ मारने की आज्ञा दी।
3 तब पौलुस ने उससे कहा, "हे
चूना फिरी हुई दीवार, परमेश्वर तुझे
मारेगा। तू व्यवस्था के अनुसार मेरा
न्याय करने को बैठा है, और फिर
क्या व्यवस्था के विरुद्ध मुझे मारने की
आज्ञा देता है?" ***([illegible]. 19:15, [illegible]. 13:10-15)***
4 जो पास खड़े थे, उन्होंने कहा,
"क्या तू परमेश्वर के महायाजक को
बुरा-भला कहता है?"
5 पौलुस ने कहा, "हे भाइयों, मैं
नहीं जानता था, कि यह महायाजक है;
क्योंकि लिखा है,
'अपने लोगों के प्रधान को बुरा न
कह।' " ***([illegible]. 22:28)***
6 तब पौलुस ने यह जानकर, कि एक
दल सदूकियों और दूसरा फरीसियों
का है, महासभा में पुकारकर कहा, "हे
भाइयों, मैं फरीसी और फरीसियों के
वंश का हूँ, मरे हुओं की आशा और
पुनरुत्थान के विषय में मेरा मुकद्दमा
हो रहा है।"
7 जब उसने यह बात कही तो
फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा
होने लगा; और सभा में फूट पड़ गई।
8 क्योंकि सदूकी तो यह कहते हैं,
कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न
आत्मा है; परन्तु फरीसी इन सब को
मानते हैं।
9 तब बड़ा हल्ला मचा और कुछ
शास्त्री जो फरीसियों के दल के थे,
उठकर यह कहकर झगड़ने लगे, "हम
इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते;
और यदि कोई आत्मा या स्वर्गदूत
उससे बोला है तो फिर क्या?"
10 जब बहुत झगड़ा हुआ, तो सैन्य-
दल के सरदार ने इस डर से कि वे
पौलुस के टुकड़े-टुकड़े न कर डालें,
सैन्य-दल को आज्ञा दी कि उतरकर
उसको उनके बीच में से जबरदस्ती
निकालो, और गढ़ में ले आओ।
11 उसी रात प्रभु ने उसके पास आ
खड़े होकर कहा, **"हे पौलुस, धैर्य रख;
क्योंकि जैसी तूने यरूशलेम में मेरी
गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी
गवाही देनी होगी।"**

[illegible]

12 जब दिन हुआ, तो यहूदियों ने
एका किया, और शपथ खाई कि जब
तक हम पौलुस को मार न डालें, यदि
हम खाएँ या पीएँ तो हम पर धिक्कार।
13 जिन्होंने यह शपथ खाई थी, वे
चालीस जन से अधिक थे।
14 उन्होंने प्रधान याजकों और
प्राचीनों के पास आकर कहा, "हमने
यह ठाना है कि जब तक हम पौलुस
को मार न डालें, तब तक यदि कुछ भी
खाएँ, तो हम पर धिक्कार है।
15 इसलिए अब महासभा समेत
सैन्य-दल के सरदार को समझाओ, कि
उसे तुम्हारे पास ले आए, मानो कि
तुम उसके विषय में और भी ठीक से
जाँच करना चाहते हो, और हम उसके
पहुँचने से पहले ही उसे मार डालने के
लिये तैयार रहेंगे।"
16 और पौलुस के भांजे ने सुना कि
वे उसकी घात में हैं, तो गढ़ में जाकर
पौलुस को सन्देश दिया।

17 पौलुस ने सूबेदारों में से एक को
अपने पास बुलाकर कहा, “इस जवान
को सैन्य-दल के सरदार के पास ले
जाओ, यह उससे कुछ कहना चाहता
है।”
18 अत: उसने उसको सैन्य-दल के
सरदार के पास ले जाकर कहा, “बन्दी
पौलुस ने मुझे बुलाकर विनती की, कि
यह जवान सैन्य-दल के सरदार से कुछ
कहना चाहता है; इसे उसके पास ले
जा।”
19 सैन्य-दल के सरदार ने उसका
हाथ पकड़कर, और उसे अलग ले
जाकर पूछा, “तू मुझसे क्या कहना
चाहता है?”
20 उसने कहा, “यहूदियों ने एका
किया है, कि तुझ से विनती करें कि
कल पौलुस को महासभा में लाए,
मानो तू और ठीक से उसकी जाँच
करना चाहता है।
21 परन्तु उनकी मत मानना, क्योंकि
उनमें से चालीस के ऊपर मनुष्य
उसकी घात में हैं, जिन्होंने यह ठान
लिया है कि जब तक वे पौलुस को
मार न डालें, तब तक न खाएँगे और न
पीएँगे, और अब वे तैयार हैं और तेरे
वचन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।”
22 तब सैन्य-दल के सरदार ने जवान
को यह निर्देश देकर विदा किया,
“किसी से न कहना कि तूने मुझ को ये
बातें बताई हैं।”

[illegible]

23 उसने तब दो सूबेदारों को
बुलाकर कहा, “दो सौ सिपाही, सत्तर
सवार, और दो सौ भालैत को कैसरिया
जाने के लिये तैयार कर रख, तू रात के
तीसरे पहर को निकलना।
24 और पौलुस की सवारी के लिये
घोड़े तैयार रखो कि उसे [illegible]
[illegible]* के पास सुरक्षित पहुँचा
दें।”
25 उसने इस प्रकार की चिट्ठी भी
लिखी:
26 “महाप्रतापी फेलिक्स राज्यपाल
को क्लौदियुस लूसियास को नमस्कार;
27 इस मनुष्य को यहूदियों ने
पकड़कर मार डालना चाहा, परन्तु
जब मैंने जाना कि वो रोमी है, तो
सैन्य-दल लेकर छुड़ा लाया।
28 और मैं जानना चाहता था, कि
वे उस पर किस कारण दोष लगाते हैं,
इसलिए उसे उनकी महासभा में ले
गया।
29 तब मैंने जान लिया, कि वे अपनी
व्यवस्था के विवादों के विषय में उस
पर दोष लगाते हैं, परन्तु मार डाले
जाने या बाँधे जाने के योग्य उसमें कोई
दोष नहीं।
30 और जब मुझे बताया गया, कि
वे इस मनुष्य की घात में लगे हैं तो
मैंने तुरन्त उसको तेरे पास भेज दिया;
और मुद्दइयों को भी आज्ञा दी, कि तेरे
सामने उस पर आरोप लगाए।”
31 अत: जैसे सिपाहियों को आज्ञा
दी गई थी, वैसे ही पौलुस को लेकर
रातों-रात अन्तिपत्रिस में लाए।
32 दूसरे दिन वे सवारों को उसके
साथ जाने के लिये छोड़कर आप गढ़
को लौटे।
33 उन्होंने कैसरिया में पहुँचकर
राज्यपाल को चिट्ठी दी; और पौलुस
को भी उसके सामने खड़ा किया।
34 उसने पढ़कर पूछा, “यह किस
प्रदेश का है?” और जब जान लिया
कि किलिकिया का है;
35 तो उससे कहा, “जब तेरे मुद्दई भी
आएँगे, तो मैं तेरा मुकद्दमा करूँगा।”

* **23:24** [illegible]: यहूदिया का हाकिम, उसका नाम अनतोलियाई फेलिक्स था।

और उसने उसे हेरोदेस के किले में, पहरे
में रखने की आज्ञा दी।

24

[illegible]

1 पाँच दिन के बाद हनन्याह
महायाजक कई प्राचीनों और
तिरतुल्लुस नामक किसी वकील को
साथ लेकर आया; उन्होंने राज्यपाल
के सामने पौलुस पर दोषारोपण किया।
2 जब वह बुलाया गया तो
तिरतुल्लुस उस पर दोष लगाकर कहने
लगा, "हे महाप्रतापी फेलिक्स, तेरे
द्वारा हमें जो बड़ा कुशल होता है;
और तेरे प्रबन्ध से इस जाति के लिये
कितनी बुराइयाँ सुधरती जाती हैं।
3 "इसको हम हर जगह और हर
प्रकार से धन्यवाद के साथ मानते हैं।
4 परन्तु इसलिए कि तुझे और दुःख
नहीं देना चाहता, मैं तुझ से विनती
करता हूँ, कि कृपा करके हमारी दो एक
बातें सुन ले।
5 क्योंकि हमने इस मनुष्य को
उपद्रवी और जगत के सारे यहूदियों में
बलवा करानेवाला, और नासरियों के
कुपंथ का मुखिया पाया है।
6 उसने *[illegible]**, और तब हमने उसे
बन्दी बना लिया। [हमने उसे अपनी
व्यवस्था के अनुसार दण्ड दिया होता;
7 परन्तु सैन्य-दल के सरदार
लूसियास ने आकर उसे बलपूर्वक
हमारे हाथों से छीन लिया,
8 और इस पर दोष लगाने वालों को
तेरे सम्मुख आने की आज्ञा दी।] इन
सब बातों को जिनके विषय में हम उस
पर दोष लगाते हैं, तू स्वयं उसको जाँच
करके जान लेगा।"
9 यहूदियों ने भी उसका साथ देकर
कहा, ये बातें इसी प्रकार की हैं।

[illegible]

10 जब राज्यपाल ने पौलुस को
बोलने के लिये संकेत किया तो उसने
उत्तर दिया: "मैं यह जानकर कि तू
बहुत वर्षों से इस जाति का न्याय
करता है, आनन्द से अपना प्रत्युत्तर
देता हूँ।,
11 तू आप जान सकता है, कि जब
से मैं यरूशलेम में आराधना करने को
आया, मुझे बारह दिन से ऊपर नहीं
हुए।
12 उन्होंने मुझे न मन्दिर में, न
आराधनालयों में, न नगर में किसी से
विवाद करते या भीड़ लगाते पाया;
13 और न तो वे उन बातों को, जिनके
विषय में वे अब मुझ पर दोष लगाते
हैं, तेरे सामने उन्हें सच प्रमाणित कर
सकते हैं।
14 परन्तु यह मैं तेरे सामने मान
लेता हूँ, कि जिस पंथ को वे कुपंथ
कहते हैं, उसी की रीति पर मैं *[illegible]*† की
सेवा करता हूँ; और जो बातें व्यवस्था
और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में
लिखी हैं, उन सब पर विश्वास करता
हूँ।
15 और परमेश्वर से आशा रखता
हूँ जो वे आप भी रखते हैं, कि धर्मी
और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा।
([illegible]. 12:2)
16 इससे मैं आप भी यत्न करता हूँ,
कि परमेश्वर की और मनुष्यों की ओर
मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे।

---

* **24:6** *[illegible]*: यह एक गंभीर, परन्तु निराधार आरोप था। † **24:14** *[illegible]*: मेरे बापदादों के परमेश्वर, यहोवा; परमेश्वर जिसे मेरे यहूदी पूर्वज मानते है।

17 बहुत वर्षों के बाद मैं अपने लोगों
को दान पहुँचाने, और भेंट चढ़ाने आया
था।
18 उन्होंने मुझे मन्दिर में, शुद्ध दशा
में, बिना भीड़ के साथ, और बिना दंगा
करते हुए इस काम में पाया। परन्तु
वहाँ आसिया के कुछ यहूदी थे - और
उनको उचित था,
19 कि यदि मेरे विरोध में उनकी कोई
बात हो तो यहाँ तेरे सामने आकर मुझ
पर दोष लगाते।
20 या ये आप ही कहें, कि जब
मैं महासभा के सामने खड़ा था, तो
उन्होंने मुझ में कौन सा अपराध
पाया?
21 इस एक बात को छोड़ जो मैंने
उनके बीच में खड़े होकर पुकारकर कहा
था, 'मरे हुओं के जी उठने के विषय में
आज मेरा तुम्हारे सामने मुकद्दमा हो
रहा है।' "
22 फेलिक्स ने जो इस पंथ की
बातें ठीक-ठीक जानता था, उन्हें यह
कहकर टाल दिया, "जब सैन्य-दल का
सरदार लूसियास आएगा, तो तुम्हारी
बात का निर्णय करूँगा।"
23 और सूबेदार को आज्ञा दी,
कि पौलुस को कुछ छूट में रखकर
रखवाली करना, और उसके मित्रों में
से किसी को भी उसकी सेवा करने से न
रोकना।

[illegible]

24 कुछ दिनों के बाद फेलिक्स
अपनी पत्नी [illegible]‡ को,
जो यहूदिनी थी, साथ लेकर आया
और पौलुस को बुलवाकर उस विश्वास
के विषय में जो मसीह यीशु पर है,
उससे सुना।
25 जब वह धार्मिकता और संयम
और आनेवाले न्याय की चर्चा कर रहा
था, तो फेलिक्स ने भयभीत होकर
उत्तर दिया, "अभी तो जा; अवसर
पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊँगा।"
26 उसे पौलुस से कुछ धन मिलने
की भी आशा थी; इसलिए और भी
बुला-बुलाकर उससे बातें किया करता
था।
27 परन्तु जब दो वर्ष बीत गए, तो
पुरकियुस फेस्तुस, फेलिक्स की जगह
पर आया, और फेलिक्स यहूदियों को
खुश करने की इच्छा से पौलुस को
बन्दी ही छोड़ गया।

25

[illegible]

1 फेस्तुस उस प्रान्त में पहुँचकर तीन
दिन के बाद कैसरिया से यरूशलेम को
गया।
2 तब प्रधान याजकों ने, और
यहूदियों के प्रमुख लोगों ने, उसके
सामने पौलुस पर दोषारोपण की;
3 और उससे विनती करके उसके
विरोध में यह चाहा कि वह उसे
यरूशलेम में बुलवाए, क्योंकि वे उसे
रास्ते ही में मार डालने की [illegible]*
लगाए हुए थे।
4 फेस्तुस ने उत्तर दिया, "पौलुस
कैसरिया में कैदी है, और मैं स्वयं जल्द
वहाँ जाऊँगा।"
5 फिर कहा, "तुम से जो अधिकार
रखते हैं, वे साथ चलें, और यदि इस
मनुष्य ने कुछ अनुचित काम किया है,
तो उस पर दोष लगाएँ।"
6 उनके बीच कोई आठ दस दिन
रहकर वह कैसरिया गया: और दूसरे
दिन न्याय आसन पर बैठकर पौलुस
को लाने की आज्ञा दी।

---

‡ **24:24** [illegible]: द्रुसिल्ला हेरोदेस अग्रिप्पा की बेटी थी। * **25:3** [illegible]: यह वही है, वे मार्ग में प्रतिक्षा करेगा, या यात्रा में उनकी जान लेने के लिए वे हत्यारों के जत्थों के साथ होगा।

7 जब वह आया, तो जो यहूदी
यरूशलेम से आए थे, उन्होंने आस-
पास खड़े होकर उस पर बहुत से
गम्भीर दोष लगाए, जिनका प्रमाण वे
नहीं दे सकते थे।
8 परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, "मैंने
न तो यहूदियों की व्यवस्था के और न
मन्दिर के, और न कैसर के विरुद्ध कोई
अपराध किया है।"
9 तब फेस्तुस ने यहूदियों को खुश
करने की इच्छा से पौलुस को उत्तर
दिया, "क्या तू चाहता है कि यरूशलेम
को जाए; और वहाँ मेरे सामने तेरा यह
मुकद्दमा तय किया जाए?"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

10 पौलुस ने कहा, "मैं कैसर के
न्याय आसन के सामने खड़ा हूँ; मेरे
मुकद्दमे का यहीं फैसला होना चाहिए।
जैसा तू अच्छी तरह जानता है,
यहूदियों का मैंने कुछ अपराध नहीं
किया।
11 यदि अपराधी हूँ और मार डाले
जाने योग्य कोई काम किया है, तो
मरने से नहीं मुकरता; परन्तु जिन
बातों का ये मुझ पर दोष लगाते हैं,
यदि उनमें से कोई बात सच न ठहरे,
तो कोई मुझे उनके हाथ नहीं सौंप
सकता। मैं कैसर की दुहाई देता हूँ।"
12 तब फेस्तुस ने मंत्रियों की सभा
के साथ विचार करके उत्तर दिया, "तूने
कैसर की दुहाई दी है, तो तू कैसर के
पास ही जाएगा।"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

13 कुछ दिन बीतने के बाद
[illegible] [illegible]† और बिरनीके
ने कैसरिया में आकर फेस्तुस से भेंट
की।
14 उनके बहुत दिन वहाँ रहने के बाद
फेस्तुस ने पौलुस के विषय में राजा को
बताया, "एक मनुष्य है, जिसे फेलिक्स
बन्दी छोड़ गया है।
15 जब मैं यरूशलेम में था, तो
प्रधान याजकों और यहूदियों के
प्राचीनों ने उस पर दोषारोपण किया
और चाहा, कि उस पर दण्ड की आज्ञा
दी जाए।
16 परन्तु मैंने उनको उत्तर दिया,
कि रोमियों की यह रीति नहीं, कि
किसी मनुष्य को दण्ड के लिये सौंप
दें, जब तक आरोपी को अपने दोष
लगाने वालों के सामने खड़े होकर दोष
के उत्तर देने का अवसर न मिले।
17 अतः जब वे यहाँ उपस्थित हुए,
तो मैंने कुछ देर न की, परन्तु दूसरे
ही दिन न्याय आसन पर बैठकर, उस
मनुष्य को लाने की आज्ञा दी।
18 जब उसके मुद्दई खड़े हुए, तो
उन्होंने ऐसी बुरी बातों का दोष नहीं
लगाया, जैसा मैं समझता था।
19 परन्तु अपने मत के, और यीशु
नामक किसी मनुष्य के विषय में जो
मर गया था, और पौलुस उसको
जीवित बताता था, विवाद करते थे।
20 और मैं उलझन में था, कि इन
बातों का पता कैसे लगाऊँ? इसलिए
मैंने उससे पूछा, 'क्या तू यरूशलेम
जाएगा, कि वहाँ इन बातों का फैसला
हो?'
21 परन्तु जब पौलुस ने दुहाई
दी, कि मेरे मुकद्दमे का फैसला
महाराजाधिराज के यहाँ हो; तो मैंने
आज्ञा दी, कि जब तक उसे कैसर
के पास न भेजूँ, उसकी रखवाली की
जाए।"

† **25:13** *[illegible] [illegible]*: यह अग्रिप्पा हेरोदेस अग्रिप्पा का पुत्र था प्रेरित 12:1, और हेरोदेस महान का प्रपौत्र था।

22 तब अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा,
"मैं भी उस मनुष्य की सुनना चाहता
हूँ।" उसने कहा, "तू कल सुन लेगा।"

23 अतः दूसरे दिन, जब अग्रिप्पा
और बिरनीके बड़ी धूमधाम से आकर
सैन्य-दल के सरदारों और नगर के
प्रमुख लोगों के साथ दरबार में पहुँचे।
तब फेस्तुस ने आज्ञा दी, कि वे पौलुस
को ले आएँ।

24 फेस्तुस ने कहा, "हे महाराजा
अग्रिप्पा, और हे सब मनुष्यों जो
यहाँ हमारे साथ हो, तुम इस मनुष्य
को देखते हो, जिसके विषय में सारे
यहूदियों ने यरूशलेम में और यहाँ भी
चिल्ला चिल्लाकर मुझसे विनती की,
कि इसका जीवित रहना उचित नहीं।

25 परन्तु मैंने जान लिया कि उसने
ऐसा कुछ नहीं किया कि मार डाला
जाए; और जबकि उसने आप ही
महाराजाधिराज की दुहाई दी, तो मैंने
उसे भेजने का निर्णय किया।

26 परन्तु मैंने उसके विषय में
[illegible][‡],
इसलिए मैं उसे तुम्हारे सामने और
विशेष करके हे राजा अग्रिप्पा तेरे
सामने लाया हूँ, कि जाँचने के बाद
मुझे कुछ लिखने को मिले।

27 क्योंकि बन्दी को भेजना और
जो दोष उस पर लगाए गए, उन्हें न
बताना, मुझे व्यर्थ समझ पड़ता है।"

26

[illegible]

1 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "तुझे
अपने विषय में बोलने की अनुमति
है।" तब पौलुस हाथ बढ़ाकर उत्तर देने
लगा,

2 "हे राजा अग्रिप्पा, जितनी बातों
का यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं, आज
तेरे सामने उनका उत्तर देने में मैं अपने
को धन्य समझता हूँ,

3 विशेष करके इसलिए कि तू
[illegible][*]। अतः
मैं विनती करता हूँ, धीरज से मेरी सुन
ले।

4 "जैसा मेरा चाल-चलन आरम्भ से
अपनी जाति के बीच और यरूशलेम में
जैसा था, यह सब यहूदी जानते हैं।

5 वे यदि गवाही देना चाहते हैं, तो
आरम्भ से मुझे पहचानते हैं, कि मैं
फरीसी होकर अपने धर्म के सबसे खरे
पंथ के अनुसार चला।

6 और अब उस प्रतिज्ञा की आशा के
कारण जो परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से
की थी, मुझ पर मुकद्दमा चल रहा है।

7 उसी प्रतिज्ञा के पूरे होने की आशा
लगाए हुए, हमारे बारहों गोत्र अपने
सारे मन से रात-दिन परमेश्वर की
सेवा करते आए हैं। हे राजा, इसी
आशा के विषय में यहूदी मुझ पर दोष
लगाते हैं।

8 जबकि *[illegible]*[†], तो तुम्हारे यहाँ
यह बात क्यों विश्वास के योग्य नहीं
समझी जाती?

9 "मैंने भी समझा था कि यीशु
नासरी के नाम के विरोध में मुझे बहुत
कुछ करना चाहिए।

---

‡ **25:26** *[illegible]*: लिखने के लिए कुछ भी निश्चित और सुव्यवस्थित नहीं। वे रोमन कानून के विरुद्ध किसी भी अपराध में पौलुस को दोषी नहीं ठहरा पाए। * **26:3** *[illegible]*: संस्कार, सभाओं, व्यवस्था, आदि सब कुछ मूसा के अनुष्ठान से सम्बंधित, आदि † **26:8** *[illegible]*: यह क्यों बेतुका माना जाना चाहिए कि परमेश्वर, जो सभी के निर्माता हैं, फिर से मनुष्य को जीवन में पुनर्स्थापित करना चाहिए।

10 और मैंने यरूशलेम में ऐसा
ही किया; और प्रधान याजकों से
अधिकार पाकर बहुत से पवित्र लोगों
को बन्दीगृह में डाला, और जब वे मार
डाले जाते थे, तो मैं भी उनके विरोध में
अपनी सम्मति देता था।
11 और हर आराधनालय में मैं उन्हें
ताड़ना दिला-दिलाकर यीशु की निन्दा
करवाता था, यहाँ तक कि क्रोध के मारे
ऐसा पागल हो गया कि बाहर के नगरों
में भी जाकर उन्हें सताता था।
12 “इसी धुन में जब मैं प्रधान
याजकों से अधिकार और आज्ञापत्र
लेकर दमिश्क को जा रहा था;
13 तो हे राजा, मार्ग में दोपहर के
समय मैंने आकाश से सूर्य के तेज
से भी बढ़कर एक ज्योति, अपने और
अपने साथ चलनेवालों के चारों ओर
चमकती हुई देखी।
14 और जब हम सब भूमि पर गिर
पड़े, तो मैंने इब्रानी भाषा में, मुझसे
कहते हुए यह वाणी सुनी, **‘हे शाऊल,
हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?
पैने पर लात मारना तेरे लिये कठिन
है।’**
15 मैंने कहा, ‘हे प्रभु, तू कौन है?’
प्रभु ने कहा, **‘मैं यीशु हूँ, जिसे तू
सताता है।**
16 **परन्तु तू उठ, अपने पाँवों पर
खड़ा हो; क्योंकि मैंने तुझे इसलिए
दर्शन दिया है कि तुझे उन बातों का
भी सेवक और गवाह ठहराऊँ, जो तूने
देखी हैं, और उनका भी जिनके लिये
मैं तुझे दर्शन दूँगा।***(*[illegible]*. 2:1)***
17 **और मैं तुझे तेरे लोगों से
और अन्यजातियों से बचाता रहूँगा,
जिनके पास मैं अब तुझे इसलिए
भेजता हूँ।***(1 *[illegible]*. 16:35)***
18 **कि तू उनकी आँखें खोले, कि** *[illegible]*‡**,
और शैतान के अधिकार से परमेश्वर
की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा,
और उन लोगों के साथ जो मुझ पर
विश्वास करने से पवित्र किए गए
हैं, विरासत पाएँ।’***(*[illegible]*. 33:3,4,
[illegible]. 35:5,6, *[illegible]*. 42:7, *[illegible]*.
42:16, *[illegible]*. 61:1)***
19 अतः हे राजा अग्रिप्पा, मैंने उस
स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली,
20 परन्तु पहले दमिश्क के,
फिर यरूशलेम के रहनेवालों को,
तब यहूदिया के सारे देश में और
अन्यजातियों को समझाता रहा, कि
मन फिराओ और परमेश्वर की ओर
फिरकर मन फिराव के योग्य काम
करो।
21 इन बातों के कारण यहूदी मुझे
मन्दिर में पकड़कर मार डालने का
यत्न करते थे।
22 परन्तु परमेश्वर की सहायता से
मैं आज तक बना हूँ और छोटे बड़े
सभी के सामने गवाही देता हूँ, और उन
बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता, जो
भविष्यद्वक्ताओं और मूसा ने भी कहा
कि होनेवाली हैं,
23 कि मसीह को दुःख उठाना
होगा, और वही सबसे पहले मरे
हुओं में से जी उठकर, हमारे लोगों
में और अन्यजातियों में ज्योति का
प्रचार करेगा।” ***(*[illegible]*. 42:6, *[illegible]*.
49:6)***
24 जब वह इस रीति से उत्तर दे रहा
था, तो फेस्तुस ने ऊँचे शब्द से कहा,
“हे पौलुस, तू पागल है। बहुत विद्या
ने तुझे पागल कर दिया है।”
25 परन्तु उसने कहा, “हे महाप्रतापी
फेस्तुस, मैं पागल नहीं, परन्तु सच्चाई
और बुद्धि की बातें कहता हूँ।

‡ **26:18** *[illegible]:* मूर्तिपूजा और पाप के अंधेरे से ज्योति और सुसमाचार
की पवित्रता में।

26 राजा भी जिसके सामने मैं निडर होकर बोल रहा हूँ, ये बातें जानता है, और मुझे विश्वास है, कि इन बातों में से कोई उससे छिपी नहीं, क्योंकि वह घटना तो कोने में नहीं हुई।

27 हे राजा अग्रिप्पा, क्या तू भविष्यद्वक्ताओं का विश्वास करता है? हाँ, मैं जानता हूँ, कि तू विश्वास करता है।”

28 अब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, “क्या तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?”

29 पौलुस ने कहा, “परमेश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़े में, क्या बहुत में, केवल तू ही नहीं, परन्तु जितने लोग आज मेरी सुनते हैं, मेरे इन बन्धनों को छोड़ वे मेरे समान हो जाएँ।”

30 तब राजा और राज्यपाल और बिरनीके और उनके साथ बैठनेवाले उठ खड़े हुए;

31 और अलग जाकर आपस में कहने लगे, “यह मनुष्य [illegible]§।

32 अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, “यदि यह मनुष्य कैसर की दुहाई न देता, तो छूट सकता था।”

27

[illegible]

1 जब यह निश्चित हो गया कि हम जहाज द्वारा इतालिया जाएँ, तो उन्होंने पौलुस और कुछ अन्य बन्दियों को भी यूलियुस नामक औगुस्तुस की सैन्य-दल के एक सूबेदार के हाथ सौंप दिया।

2 [illegible]* के एक जहाज पर जो आसिया के किनारे की जगहों में जाने पर था, चढ़कर हमने उसे खोल दिया, और अरिस्तर्खुस नामक थिस्सलुनीके का एक मकिदुनी हमारे साथ था।

3 दूसरे दिन हमने सीदोन में लंगर डाला और यूलियुस ने पौलुस पर कृपा करके उसे मित्रों के यहाँ जाने दिया कि उसका सत्कार किया जाए।

4 वहाँ से जहाज खोलकर हवा विरुद्ध होने के कारण हम साइप्रस की आड़ में होकर चले;

5 और किलिकिया और पंफूलिया के निकट के समुद्र में होकर [illegible]† के मूरा में उतरे।

6 वहाँ सूबेदार को सिकन्दरिया का एक जहाज इतालिया जाता हुआ मिला, और उसने हमें उस पर चढ़ा दिया।

7 जब हम बहुत दिनों तक धीरे धीरे चलकर कठिनता से कनिदुस के सामने पहुँचे, तो इसलिए कि हवा हमें आगे बढ़ने न देती थी, हम सलमोने के सामने से होकर क्रेते की आड़ में चले;

8 और उसके किनारे-किनारे कठिनता से चलकर ‘शुभलंगरबारी’ नामक एक जगह पहुँचे, जहाँ से लसया नगर निकट था।

[illegible]

9 जब बहुत दिन बीत गए, और जलयात्रा में जोखिम इसलिए होती थी कि उपवास के दिन अब बीत चुके थे, तो पौलुस ने उन्हें यह कहकर चेतावनी दी,

10 “हे सज्जनों, मुझे ऐसा जान पड़ता है कि इस यात्रा में विपत्ति और

§ **26:31** [illegible], ... [illegible]: यह निष्कर्ष था जो यहूदियों के द्वारा उसके विरुद्ध लगाए गए आरोप को सुनने के बाद आया था। * **27:2** [illegible]: आसिया माइनर में मुसिया का एक समुद्री नगर। † **27:5** [illegible]: लूसिया आसिया माइनर के पश्चिमी हिस्से में एक प्रांत था।

बहुत हानि, न केवल माल और जहाज की वरन् हमारे प्राणों की भी होनेवाली है।”

11 परन्तु सूबेदार ने कप्तान और जहाज के स्वामी की बातों को पौलुस की बातों से बढ़कर माना।

12 वह बन्दरगाह जाड़ा काटने के लिये अच्छा न था; इसलिए बहुतों का विचार हुआ कि वहाँ से जहाज खोलकर यदि किसी रीति से हो सके तो [illegible]‡ में पहुँचकर जाड़ा काटें। यह तो क्रेते का एक बन्दरगाह है जो दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर खुलता है।

[illegible]

13 जब दक्षिणी हवा बहने लगी, तो उन्होंने सोचा कि उन्हें जिसकी जरूरत थी वह उनके पास थी, इसलिए लंगर उठाया और किनारे के किनारे, समुद्र तट के पास चल दिए।

14 परन्तु थोड़ी देर में जमीन की ओर से एक बड़ी आँधी उठी, जो ‘यूरकुलीन’ कहलाती है।

15 जब आँधी जहाज पर लगी, तब वह हवा के सामने ठहर न सका, अतः हमने उसे बहने दिया, और इसी तरह बहते हुए चले गए।

16 तब [illegible]§ नामक एक छोटे से टापू की आड़ में बहते-बहते हम कठिनता से डोंगी को वश में कर सके।

17 फिर मल्लाहों ने उसे उठाकर, अनेक उपाय करके जहाज को नीचे से बाँधा, और सुरतिस के रेत पर टिक जाने के भय से पाल और सामान उतार कर बहते हुए चले गए।

18 और जब हमने आँधी से बहुत हिचकोले और धक्के खाए, तो दूसरे दिन वे जहाज का माल फेंकने लगे;

19 और तीसरे दिन उन्होंने अपने हाथों से जहाज का साज-सामान भी फेंक दिया।

20 और जब बहुत दिनों तक न सूर्य न तारे दिखाई दिए, और बड़ी आँधी चल रही थी, तो अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही।

21 जब वे बहुत दिन तक भूखे रह चुके, तो पौलुस ने उनके बीच में खड़ा होकर कहा, “हे लोगों, चाहिए था कि तुम मेरी बात मानकर, क्रेते से न जहाज खोलते और न यह विपत्ति आती और न यह हानि उठाते।

22 परन्तु अब मैं तुम्हें समझाता हूँ कि ढाढ़स बाँधो, क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की हानि न होगी, पर केवल जहाज की।

23 क्योंकि परमेश्वर जिसका मैं हूँ, और जिसकी सेवा करता हूँ, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा,

24 ‘हे पौलुस, मत डर! तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है। और देख, परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है।’

25 इसलिए, हे सज्जनों, ढाढ़स बाँधो; क्योंकि मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ, कि जैसा मुझसे कहा गया है, वैसा ही होगा।

26 परन्तु हमें किसी टापू पर जा टिकना होगा।”

[illegible]

27 जब चौदहवीं रात हुई, और हम अद्रिया समुद्र में भटक रहे थे, तो आधी रात के निकट मल्लाहों ने अनुमान से जाना कि हम किसी देश के निकट पहुँच रहे हैं।

---

‡ **27:12** [illegible]: यह एक बन्दरगाह या क्रेते के दक्षिण की ओर टिकने का एक स्थान था § **27:16** [illegible]: यह एक छोटा सा द्वीप करीब 20 मील क्रेते के दक्षिण-पश्चिम में है।

28 थाह लेकर उन्होंने बीस पुरसा
गहरा पाया और थोड़ा आगे बढ़कर
फिर थाह ली, तो पन्द्रह पुरसा पाया।
29 तब पत्थरीली जगहों पर पड़ने
के डर से उन्होंने जहाज के पीछे चार
लंगर डाले, और भोर होने की कामना
करते रहे।
30 परन्तु जब मल्लाह जहाज पर से
भागना चाहते थे, और गलही से लंगर
डालने के बहाने डोंगी समुद्र में उतार
दी;
31 तो पौलुस ने सूबेदार और
सिपाहियों से कहा, "यदि ये जहाज पर
न रहें, तो तुम भी नहीं बच सकते।"
32 तब सिपाहियों ने रस्से काटकर
डोंगी गिरा दी।
33 जब भोर होने पर था, तो पौलुस
ने यह कहकर, सब को भोजन करने को
समझाया, "आज चौदह दिन हुए कि
तुम आस देखते-देखते भूखे रहे, और
कुछ भोजन न किया।
34 इसलिए तुम्हें समझाता हूँ कि
कुछ खा लो, जिससे तुम्हारा बचाव
हो; क्योंकि तुम में से किसी के सिर का
एक बाल भी न गिरेगा।"
35 और यह कहकर उसने रोटी लेकर
सब के सामने परमेश्वर का धन्यवाद
किया और तोड़कर खाने लगा।
36 तब वे सब भी ढाढ़स बाँधकर
भोजन करने लगे।
37 हम सब मिलकर जहाज पर दो
सौ छिहत्तर जन थे।
38 जब वे भोजन करके तृप्त हुए, तो
गेहूँ को समुद्र में फेंककर जहाज हलका
करने लगे।
39 जब दिन निकला, तो उन्होंने
उस देश को नहीं पहचाना, परन्तु एक
खाड़ी देखी जिसका चौरस किनारा था,
और विचार किया कि यदि हो सके तो
इसी पर जहाज को टिकाएँ।
40 तब उन्होंने लंगरों को खोलकर
समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय
पतवारों के बन्धन खोल दिए, और हवा
के सामने अगला पाल चढ़ाकर किनारे
की ओर चले।
41 परन्तु दो समुद्र के संगम की
जगह पड़कर उन्होंने जहाज को
टिकाया, और गलही तो धक्का खाकर
गड़ गई, और टल न सकी; परन्तु
जहाज का पीछला भाग लहरों के बल
से टूटने लगा।
42 तब सिपाहियों का यह विचार
हुआ कि बन्दियों को मार डालें; ऐसा
न हो कि कोई तैर कर निकल भागे।
43 परन्तु सूबेदार ने पौलुस को
बचाने की इच्छा से उन्हें इस विचार से
रोका, और यह कहा, कि जो तैर सकते
हैं, पहले कूदकर किनारे पर निकल
जाएँ।
44 और बाकी कोई पटरों पर, और
कोई जहाज की अन्य वस्तुओं के सहारे
निकल जाएँ, इस रीति से सब कोई
भूमि पर बच निकले।

28

[illegible]

1 जब हम बच निकले, तो पता चला
कि यह टापू *[illegible]** कहलाता है।
2 और वहाँ के निवासियों ने हम पर
अनोखी कृपा की; क्योंकि मेंह के कारण
जो बरस रहा था और जाड़े के कारण,
उन्होंने आग सुलगाकर हम सब को
ठहराया।
3 जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठा
बटोरकर आग पर रखा, तो *[illegible]*†
आँच पाकर निकला और उसके हाथ से
लिपट गया।

* **28:1** *[illegible]*: यह सिसिली के तट से लगभग 60 मील की दूरी पर है। † **28:3** *[illegible]*: एक ज़हरीला साँप।

4 जब उन निवासियों ने साँप को उसके हाथ में लटके हुए देखा, तो आपस में कहा, "सचमुच यह मनुष्य हत्यारा है, कि यद्यपि समुद्र से बच गया, तो भी न्याय ने जीवित रहने न दिया।"

5 तब उसने साँप को आग में झटक दिया, और उसे कुछ हानि न पहुँची।

6 परन्तु वे प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह सूज जाएगा, या एकाएक गिरकर मर जाएगा, परन्तु जब वे बहुत देर तक देखते रहे और देखा कि उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा, तो और ही विचार कर कहा, "यह तो कोई देवता है।"

7 उस जगह के आस-पास पुबलियुस नामक उस टापू के प्रधान की भूमि थी: उसने हमें अपने घर ले जाकर तीन दिन मित्रभाव से पहुनाई की।

8 पुबलियुस के पिता तेज बुखार और पेचिश से रोगी पड़ा था। अतः पौलुस ने उसके पास घर में जाकर प्रार्थना की, और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया।

9 जब ऐसा हुआ, तो उस टापू के बाकी बीमार आए, और चंगे किए गए।

10 उन्होंने हमारा बहुत आदर किया, और जब हम चलने लगे, तो जो कुछ हमारे लिये आवश्यक था, जहाज पर रख दिया।

[illegible]

11 तीन महीने के बाद हम सिकन्दरिया के एक जहाज पर चल निकले, जो उस टापू में जाड़े काट रहा था, और जिसका चिन्ह दियुसकूरी था।

12 [illegible]‡ में लंगर डाल करके हम तीन दिन टिके रहे।

13 वहाँ से हम घूमकर [illegible]§ में आए; और एक दिन के बाद दक्षिणी हवा चली, तब दूसरे दिन पुतियुली में आए।

14 वहाँ हमको कुछ भाई मिले, और उनके कहने से हम उनके यहाँ सात दिन तक रहे; और इस रीति से हम रोम को चले।

15 वहाँ से वे भाई हमारा समाचार सुनकर अप्पियुस के चौक और तीन-सराय तक हमारी भेंट करने को निकल आए, जिन्हें देखकर पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया, और ढाढ़स बाँधा।

16 जब हम रोम में पहुँचे, तो पौलुस को एक सिपाही के साथ जो उसकी रखवाली करता था, अकेले रहने की आज्ञा हुई।

[illegible]

17 तीन दिन के बाद उसने यहूदियों के प्रमुख लोगों को बुलाया, और जब वे इकट्ठे हुए तो उनसे कहा, "हे भाइयों, मैंने अपने लोगों के या पूर्वजों की प्रथाओं के विरोध में कुछ भी नहीं किया, फिर भी बन्दी बनाकर यरूशलेम से रोमियों के हाथ सौंपा गया।

18 उन्होंने मुझे जाँचकर छोड़ देना चाहा, क्योंकि मुझ में मृत्यु के योग्य कोई दोष न था।

19 परन्तु जब यहूदी इसके विरोध में बोलने लगे, तो मुझे कैसर की दुहाई देनी पड़ी; यह नहीं कि मुझे अपने लोगों पर कोई दोष लगाना था।

20 इसलिए मैंने तुम को बुलाया है, कि तुम से मिलूँ और बातचीत करूँ; क्योंकि इस्राएल की आशा के लिये मैं इस जंजीर से जकड़ा हुआ हूँ।"

---

‡ **28:12** [illegible]: यह पूर्वी तट पर सिसिली के द्वीप की राजधानी था। § **28:13** [illegible]: यह नेपल्स के राज्य में इतालिया का एक नगर था।

21 उन्होंने उससे कहा, “न हमने तेरे विषय में यहूदियों से चिट्ठियाँ पाईं, और न भाइयों में से किसी ने आकर तेरे विषय में कुछ बताया, और न बुरा कहा।

22 परन्तु तेरा विचार क्या है? वही हम तुझ से सुनना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं, कि हर जगह इस मत के विरोध में लोग बातें करते हैं।”

23 तब उन्होंने उसके लिये एक दिन ठहराया, और बहुत से लोग उसके यहाँ इकट्ठे हुए, और वह परमेश्वर के राज्य की गवाही देता हुआ, और मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों से यीशु के विषय में समझा-समझाकर भोर से साँझ तक वर्णन करता रहा।

24 तब कुछ ने उन बातों को मान लिया, और कुछ ने विश्वास न किया।

25 जब वे आपस में एकमत न हुए, तो पौलुस के इस एक बात के कहने पर चले गए, “पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे पूर्वजों से ठीक ही कहा,

26 ‘जाकर इन लोगों से कह,
कि सुनते तो रहोगे, परन्तु न समझोगे,
और देखते तो रहोगे, परन्तु न बूझोगे;
27 क्योंकि इन लोगों का मन मोटा,
और उनके कान भारी हो गए हैं,
और उन्होंने अपनी आँखें बन्द की हैं,
ऐसा न हो कि वे कभी आँखों से देखें,
और कानों से सुनें,
और मन से समझें
और फिरें,
और मैं उन्हें चंगा करूँ।’ ***(▯▯▯. 6:9,10)***

28 “अतः तुम जानो, कि परमेश्वर के इस उद्धार की कथा अन्यजातियों के पास भेजी गई है, और वे सुनेंगे।” ***(▯▯. 67:2, ▯▯. 98:3, ▯▯▯. 40:5)***

29 जब उसने यह कहा तो यहूदी आपस में बहुत विवाद करने लगे और वहाँ से चले गए।

30 और पौलुस पूरे दो वर्ष अपने किराये के घर में रहा,

31 और जो उसके पास आते थे, उन सबसे मिलता रहा और *▯▯▯▯▯ ▯▯▯-▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯** परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।

* **28:31** *▯▯▯▯▯ ▯▯▯-▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯:* उन्हें बिना किसी रुकावट पहुँचाए, खुले आम और साहसपूर्वक।

रोमियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

????

रोम. 1:1 के अनुसार इस पत्र का लेखक पौलुस है। उसने यूनानी नगर कुरिन्थ से इस पत्री को लिखा था। यह वह समय था जब 16 वर्षीय नीरो रोमी साम्राज्य की गद्दी पर बैठा था। यह प्रमुख यूनानी नगर यौन अनैतिकता और मूर्तिपूजा का सक्रिय स्थान था। अतः जब पौलुस रोम की कलीसिया को लिखे इस पत्र में मनुष्यों के पाप और चमत्कारी रूप से मनुष्य के जीवन को पूर्णतः बदलने वाले परमेश्वर के अनुग्रह के सामर्थ्य की चर्चा करता है तो वह जनता था कि वह क्या कह रहा है। पौलुस मसीह के शुभ सन्देश के आधारभूत सिद्धान्तों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है और सब प्रमुख बातों का उल्लेख करता है जैसे: परमेश्वर की पवित्रता, मनुष्यजाति का पाप और मसीह यीशु द्वारा उपलब्ध उद्धारक अनुग्रह।

???? ???? ??? ?????

लगभग ई.स. 57, कुरिन्थ नगर से प्रमुख लक्षित स्थान रोम की कलीसिया

??????

परमेश्वर के प्रिय सब रोमी विश्वासी जिन्हें उसमें पवित्र जन होने के लिए बुलाया गया है अर्थात् रोम नगर की मसीही कलीसिया (रोमि. 1:7)। रोम रोमी साम्राज्य की राजधानी थी।

????????

रोम की कलीसिया को लिखा गया यह पत्र मसीही धर्म सिद्धान्तों का स्पष्टतम् एवं सर्वादित विधिवत् प्रस्तुतिकरण है। पौलुस मनुष्य के पापी स्वभाव की चर्चा से आरम्भ करता है। परमेश्वर से विद्रोह करने के कारण सब मनुष्य दोषी ठहराए गए हैं। तथापि परमेश्वर अपने अनुग्रह में हमें प्रभु यीशु में विश्वास के द्वारा न्यायोचित अवस्था प्रदान करता है। परमेश्वर द्वारा न्यायोचित ठहराए जाने पर हम उद्धार या मुक्ति पाते हैं; क्योंकि मसीह का लहू सब पापों को ढाँप लेता है। इन विषयों पर पौलुस का विवेचन तार्किक वरन् परिपूर्ण प्रस्तुतिकरण उपलब्ध करवाता है कि मनुष्य कैसे उसके पाप के दण्ड और पाप की प्रभुता से बच सकता है।

??? ????

परमेश्वर की धार्मिकता

रूपरेखा

1. दोषी अवस्था- पाप और न्यायोचित होने की आवश्यकता — 1:18-3:20
2. न्यायोचित अवस्था का रोपण- धार्मिकता — 3:21-5:21
3. न्यायोचित अवस्था का निवेश- पवित्रता — 6:1-8:39
4. इस्राएल के लिए परमेश्वर का प्रावधान — 9:1-11:36
5. न्यायोचित अभ्यास को करना — 12:1-15:13
6. उपसंहार-व्यक्तिगत सन्देश — 15:14-16:27

????????

1 *??????** की ओर से जो यीशु
मसीह का दास है, और प्रेरित होने के
लिये बुलाया गया, और परमेश्वर के
उस सुसमाचार के लिये अलग किया
गया है

* **1:1** *?????*: इस पत्री के लेखक का मूल नाम “शाऊल” था, शाऊल इब्रानी नाम था; पौलुस रोमी नाम था।

2 जिसकी उसने पहले ही से अपने
भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्रशास्त्र
में,
3 अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह
के विषय में प्रतिज्ञा की थी, जो शरीर
के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न
हुआ।
4 और पवित्रता की आत्मा के भाव
से मरे हुओं में से जी उठने के कारण
सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र
ठहरा है।
5 जिसके द्वारा हमें अनुग्रह और
प्रेरिताई मिली कि उसके नाम के कारण
सब जातियों के लोग विश्वास करके
उसकी मानें,
6 जिनमें से तुम भी यीशु मसीह के
होने के लिये बुलाए गए हो।
7 उन सब के नाम जो रोम में
परमेश्वर के प्यारे हैं और *[illegible]
[illegible]*[†] के लिये बुलाए गए हैं: हमारे
पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह
की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति
मिलती रहे। ***([illegible]. 1:2)***

[illegible]

8 पहले मैं तुम सब के लिये यीशु
मसीह के द्वारा अपने परमेश्वर का
धन्यवाद करता हूँ, कि तुम्हारे विश्वास
की चर्चा सारे जगत में हो रही है।
9 परमेश्वर जिसकी सेवा मैं अपनी
आत्मा से उसके पुत्र के सुसमाचार के
विषय में करता हूँ, वही मेरा गवाह है,
कि मैं तुम्हें किस प्रकार लगातार स्मरण
करता रहता हूँ,
10 और नित्य अपनी प्रार्थनाओं में
विनती करता हूँ, कि किसी रीति से
अब भी तुम्हारे पास आने को मेरी
यात्रा परमेश्वर की इच्छा से सफल
हो।
11 क्योंकि मैं तुम से मिलने की
लालसा करता हूँ, कि मैं तुम्हें कोई
आत्मिक वरदान दूँ जिससे तुम स्थिर
हो जाओ,
12 अर्थात् यह, कि मैं तुम्हारे बीच
में होकर तुम्हारे साथ उस विश्वास के
द्वारा जो मुझ में, और तुम में है, शान्ति
पाऊँ।
13 और हे भाइयों, मैं नहीं चाहता
कि तुम इससे अनजान रहो कि मैंने
बार बार तुम्हारे पास आना चाहा, कि
जैसा मुझे और अन्यजातियों में फल
मिला, वैसा ही तुम में भी मिले, परन्तु
अब तक रुका रहा।
14 मैं यूनानियों और अन्यभाषियों
का, और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का
कर्जदार हूँ।
15 इसलिए मैं तुम्हें भी जो रोम में
रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक
तैयार हूँ।

[illegible]

16 क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं
लजाता, इसलिए कि वह हर एक
विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो
यहूदी, फिर यूनानी के लिये, उद्धार के
निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है। ***(2
[illegible]. 1:8)***
17 क्योंकि उसमें परमेश्वर की
धार्मिकता विश्वास से और विश्वास
के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा
है, "विश्वास से धर्मी जन जीवित
रहेगा।" ***([illegible]. 2:4, [illegible]. 3:11)***

[illegible]

18 परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों
की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग
से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म
से दबाए रखते हैं।

---

† **1:7** *[illegible]:* "पवित्र होने" शब्द का अर्थ है वह लोग जो पवित्र है या वह जो भक्त या परमेश्वर को समर्पित है।

19 इसलिए कि परमेश्वर के विषय
का ज्ञान उनके मनों में प्रगट है, क्योंकि
परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है।
20 क्योंकि उसके *▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯*[‡],
अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और
परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय
से उसके कामों के द्वारा देखने में
आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं।
(▯▯▯▯▯. 12:7-9, ▯▯. 19:1)
21 इस कारण कि परमेश्वर को
जानने पर भी उन्होंने परमेश्वर के
योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया,
परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहाँ
तक कि उनका निर्बुद्धि मन अंधेरा हो
गया।
22 वे अपने आपको बुद्धिमान
जताकर मूर्ख बन गए, ***(▯▯▯▯▯.
10:14)***
23 और अविनाशी परमेश्वर की
महिमा को नाशवान मनुष्य, और
पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले
जन्तुओं की मूरत की समानता में
बदल डाला। ***(▯▯▯▯. 4:15-19,
▯▯. 106:20)***
24 इस कारण परमेश्वर ने उन्हें
उनके मन की अभिलाषाओं के
अनुसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया,
कि वे आपस में अपने शरीरों का
अनादर करें।
25 क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की
सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला,
और सृष्टि की उपासना और सेवा
की, न कि उस सृजनहार की जो सदा
धन्य है। आमीन। ***(▯▯▯▯▯. 13:25,
▯▯▯▯▯. 16:19)***
26 इसलिए परमेश्वर ने उन्हें नीच
कामनाओं के वश में छोड़ दिया;
यहाँ तक कि उनकी स्त्रियों ने भी
स्वाभाविक व्यवहार को उससे जो
स्वभाव के विरुद्ध है, बदल डाला।
27 वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ
स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस
में कामातुर होकर जलने लगे, और
पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज्ज
काम करके अपने भ्रम का ठीक फल
पाया। ***(▯▯▯▯▯. 18:22, ▯▯▯▯▯.
20:13)***
28 जब उन्होंने परमेश्वर को
पहचानना न चाहा, तो परमेश्वर ने
भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़
दिया; कि वे अनुचित काम करें।
29 वे सब प्रकार के अधर्म, और
दुष्टता, और लोभ, और बैर-भाव से
भर गए; और डाह, और हत्या, और
झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर
हो गए, और चुगलखोर,
30 गपशप करनेवाले, निन्दा
करनेवाले, परमेश्वर से घृणा
करनेवाले, हिंसक, अभिमानी,
डींगमार, बुरी-बुरी बातों के
बनानेवाले, माता पिता की आज्ञा का
उल्लंघन करनेवाले,
31 निर्बुद्धि, विश्वासघाती,
स्वाभाविक व्यवहार रहित, कठोर और
निर्दयी हो गए।
32 वे तो परमेश्वर की यह विधि
जानते हैं कि ऐसे-ऐसे काम करनेवाले
मृत्यु के दण्ड के योग्य हैं, तो भी न
केवल आप ही ऐसे काम करते हैं वरन्
करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं।

2

▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯

1 अतः हे दोष लगानेवाले, तू कोई
क्यों न हो, तू निरुत्तर है; क्योंकि जिस
बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है,
उसी बात में अपने आपको भी दोषी
ठहराता है, इसलिए कि तू जो दोष
लगाता है, स्वयं ही वही काम करता
है।

‡ **1:20** *▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯*: यह उन चीजों को दर्शाता है जो इंद्रियों के द्वारा समझा नहीं जा सकता है।

2 और हम जानते हैं कि ऐसे-ऐसे काम करनेवालों पर परमेश्वर की ओर से सच्चे दण्ड की आज्ञा होती है।

3 और हे मनुष्य, तू जो ऐसे-ऐसे काम करनेवालों पर दोष लगाता है, और स्वयं वे ही काम करता है; क्या यह समझता है कि तू परमेश्वर की दण्ड की आज्ञा से बच जाएगा?

4 क्या तू उसकी भलाई, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन को तुच्छ जानता है? और क्या यह नहीं समझता कि परमेश्वर की भलाई तुझे मन फिराव को सिखाती है?

5 पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिये, जिसमें परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने लिये क्रोध कमा रहा है।

6 वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा। ***(??. 62:12, ????. 24:12)***

7 जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा;

8 पर जो स्वार्थी हैं और सत्य को नहीं मानते, वरन् अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा।

9 और क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है आएगा, पहले यहूदी पर फिर यूनानी पर;

10 परन्तु महिमा और आदर और कल्याण हर एक को मिलेगा, जो भला करता है, पहले यहूदी को फिर यूनानी को।

11 क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता। ***(????. 10:17, 2 ???. 19:7)***

12 इसलिए कि जिन्होंने बिना व्यवस्था पाए पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे, और जिन्होंने व्यवस्था पाकर पाप किया, उनका दण्ड व्यवस्था के अनुसार होगा;

13 क्योंकि परमेश्वर के यहाँ व्यवस्था के सुननेवाले धर्मी नहीं, पर व्यवस्था पर चलनेवाले धर्मी ठहराए जाएँगे।

14 फिर जब अन्यजाति लोग जिनके पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उनके पास न होने पर भी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं।

15 वे व्यवस्था की बातें अपने-अपने हृदयों में लिखी हुई दिखाते हैं और उनके विवेक भी गवाही देते हैं, और उनकी चिन्ताएँ परस्पर दोष लगाती, या उन्हें निर्दोष ठहराती हैं।

16 जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा।

17 यदि तू स्वयं को यहूदी कहता है, और व्यवस्था पर भरोसा रखता है, परमेश्वर के विषय में घमण्ड करता है,

18 और उसकी इच्छा जानता और व्यवस्था की शिक्षा पाकर उत्तम-उत्तम बातों को प्रिय जानता है;

19 यदि तू अपने पर भरोसा रखता है, कि मैं अंधों का अगुआ, और अंधकार में पड़े हुओं की ज्योति,

20 और बुद्धिहीनों का सिखानेवाला, और बालकों का उपदेशक हूँ, और ज्ञान, और सत्य का नमूना, जो व्यवस्था में है, मुझे मिला है।

21 अतः क्या तू जो औरों को सिखाता है, अपने आपको नहीं सिखाता? क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है, आप ही चोरी करता है? ***(?????? 23:3)***

22 तू जो कहता है, "व्यभिचार न

करना," क्या आप ही व्यभिचार करता
है? तू जो मूरतों से घृणा करता है, क्या
आप ही मन्दिरों को लूटता है?
23 तू जो व्यवस्था के विषय में
घमण्ड करता है, क्या व्यवस्था न
मानकर, परमेश्वर का अनादर करता
है?
24 "क्योंकि तुम्हारे कारण
अन्यजातियों में परमेश्वर का नाम
अपमानित हो रहा है," जैसा लिखा
भी है। ***([illegible]. 52:5, [illegible]. 36:20)***

[illegible]

25 यदि तू व्यवस्था पर चले, तो
खतने से लाभ तो है, परन्तु यदि तू
व्यवस्था को न माने, तो तेरा *[illegible]**
बिन खतना की दशा ठहरा। ***([illegible].
4:4)***
26 तो यदि खतनारहित मनुष्य
व्यवस्था की विधियों को माना करे, तो
क्या उसकी बिन खतना की दशा खतने
के बराबर न गिनी जाएगी?
27 और जो मनुष्य शारीरिक रूप
से बिन खतना रहा यदि वह व्यवस्था
को पूरा करे, तो क्या तुझे जो लेख
पाने और खतना किए जाने पर भी
व्यवस्था को माना नहीं करता है, दोषी
न ठहराएगा?
28 क्योंकि वह यहूदी नहीं जो केवल
बाहरी रूप में यहूदी है; और न वह
खतना है जो प्रगट में है और देह में है।
29 पर यहूदी वही है, जो आन्तरिक
है; और खतना वही है, जो हृदय का
और आत्मा में है; न कि लेख का; ऐसे
की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं,
परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है।
([illegible]. 3:3)

3

[illegible]

1 फिर यहूदी की क्या बड़ाई, या
खतने का क्या लाभ?
2 हर प्रकार से बहुत कुछ। पहले तो
यह कि परमेश्वर के वचन उनको सौंपे
गए। ***([illegible]. 9:4)***
3 यदि कुछ विश्वासघाती निकले
भी तो क्या हुआ? क्या उनके
विश्वासघाती होने से परमेश्वर की
सच्चाई व्यर्थ ठहरेगी?
4 कदापि नहीं! वरन् परमेश्वर
सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे,
जैसा लिखा है,
"जिससे तू अपनी बातों में धर्मी ठहरे
और न्याय करते समय तू जय पाए।"
([illegible]. 51:4, [illegible]. 116:11)
5 पर यदि हमारा अधर्म परमेश्वर
की धार्मिकता ठहरा देता है, तो हम
क्या कहें? क्या यह कि परमेश्वर जो
क्रोध करता है अन्यायी है? (यह तो
मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूँ)।
6 कदापि नहीं! नहीं तो परमेश्वर
कैसे जगत का न्याय करेगा?
7 यदि मेरे झूठ के कारण परमेश्वर
की सच्चाई उसकी महिमा के लिये
अधिक करके प्रगट हुई, तो फिर क्यों
पापी के समान मैं दण्ड के योग्य
ठहराया जाता हूँ?
8 "*[illegible]**?" जैसा हम पर
यही दोष लगाया भी जाता है, और
कुछ कहते हैं कि इनका यही कहना है।
परन्तु ऐसों का दोषी ठहराना ठीक है।

[illegible]

9 तो फिर क्या हुआ? क्या हम उनसे
अच्छे हैं? कभी नहीं; क्योंकि हम

---

* **2:25** *[illegible]:* यह वह विशेष अनुष्ठान था जिसके द्वारा अब्राहम की वाचा के सम्बंध को मान्यता दी गई थी

* **3:8** *[illegible]:* जबकि बुराई, परमेश्वर की महिमा को बढ़ावा देने के लिए हैं जितना सम्भव है हम उतना करें।

यहूदियों और यूनानियों दोनों पर यह
दोष लगा चुके हैं कि वे सब के सब पाप
के वश में हैं।
10 जैसा लिखा है:
“कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। ***(▯▯▯. 7:20)***
11 कोई समझदार नहीं;
कोई परमेश्वर को खोजनेवाला नहीं।
12 सब भटक गए हैं, सब के सब
निकम्मे बन गए;
कोई भलाई करनेवाला नहीं, एक भी
नहीं। ***(▯▯. 14:3, ▯▯. 53:1)***
13 उनका गला खुली हुई कब्र है:
उन्होंने अपनी जीभों से छल किया है:
उनके होठों में साँपों का विष है। ***(▯▯. 5:9, ▯▯. 140:3)***
14 और उनका मुँह श्राप और कड़वाहट
से भरा है। ***(▯▯. 10:7)***
15 उनके पाँव लहू बहाने को फुर्तीले हैं।
16 उनके मार्गों में नाश और क्लेश है।
17 उन्होंने कुशल का मार्ग नहीं जाना।
(▯▯▯. 59:8)
18 उनकी आँखों के सामने परमेश्वर का
भय नहीं।” ***(▯▯. 36:1)***
19 हम जानते हैं, कि व्यवस्था जो
कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो
व्यवस्था के अधीन हैं इसलिए कि
हर एक मुँह बन्द किया जाए, और
सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य
ठहरे।
20 *▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯*† से कोई प्राणी उसके सामने
धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिए कि
व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती
है। ***(▯▯. 143:2)***

▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯

21 पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर
की धार्मिकता प्रगट हुई है, जिसकी
गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता
देते हैं,
22 अर्थात् परमेश्वर की वह
धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर
विश्वास करने से सब विश्वास
करनेवालों के लिये है। क्योंकि कुछ
भेद नहीं;
23 इसलिए कि सब ने पाप किया
है और *▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯*‡ से
रहित हैं,
24 परन्तु उसके अनुग्रह से उस
छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है,
सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।
25 उसे परमेश्वर ने उसके लहू के
कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया,
जो विश्वास करने से कार्यकारी होता
है, कि जो पाप पहले किए गए,
और जिन पर परमेश्वर ने अपनी
सहनशीलता से ध्यान नहीं दिया;
उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता
प्रगट करे।
26 वरन् इसी समय उसकी
धार्मिकता प्रगट हो कि जिससे वह
आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु
पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी
ठहरानेवाला हो।
27 तो घमण्ड करना कहाँ रहा?
उसकी तो जगह ही नहीं। कौन सी
व्यवस्था के कारण से? क्या कर्मों की
व्यवस्था से? नहीं, वरन् विश्वास की
व्यवस्था के कारण।
28 इसलिए हम इस परिणाम पर
पहुँचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के
कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी
ठहरता है।
29 क्या परमेश्वर केवल यहूदियों
का है? क्या अन्यजातियों का नहीं?
हाँ, अन्यजातियों का भी है।
30 क्योंकि एक ही परमेश्वर है,

† **3:20** *▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯:* कामों के द्वारा या इस तरह के काम जो व्यवस्था की माँग है।
‡ **3:23** *▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯:* परमेश्वर की स्तुति या प्रशंसा।

जो खतनावालों को विश्वास से और
खतनारहितों को भी विश्वास के द्वारा
धर्मी ठहराएगा।
31 *[illegible]*§? कदापि नहीं! वरन्
व्यवस्था को स्थिर करते हैं।

4

[illegible]

1 तो हम क्या कहें, कि हमारे
शारीरिक पिता अब्राहम को क्या प्राप्त
हुआ?
2 क्योंकि यदि *[illegible]**, तो
उसे घमण्ड करने का कारण होता
है, परन्तु परमेश्वर के निकट नहीं।
([illegible]. 15:6)
3 पवित्रशास्त्र क्या कहता है? यह
कि "अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास
किया, और यह उसके लिये धार्मिकता
गिना गया।"
4 काम करनेवाले की मजदूरी देना
दान नहीं, परन्तु हक़ समझा जाता है।

[illegible]

5 परन्तु जो काम नहीं करता वरन्
भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर
विश्वास करता है, उसका विश्वास
उसके लिये धार्मिकता गिना जाता है।
6 जिसे परमेश्वर बिना कर्मों के धर्मी
ठहराता है, उसे दाऊद भी धन्य कहता
है:
7 "धन्य वे हैं, जिनके अधर्म क्षमा हुए,
और जिनके पाप ढांपे गए।
8 धन्य है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर
पापी न ठहराए।" ***([illegible]. 32:2)***
9 तो यह धन्य वचन, क्या
खतनावालों ही के लिये है, या
खतनारहितों के लिये भी? हम यह
कहते हैं, "अब्राहम के लिये उसका
विश्वास धार्मिकता गिना गया।"
10 तो वह कैसे गिना गया? खतने
की दशा में या बिना खतने की दशा
में? खतने की दशा में नहीं परन्तु बिना
खतने की दशा में।
11 और उसने खतने का *[illegible]*†
पाया, कि उस विश्वास की धार्मिकता
पर छाप हो जाए, जो उसने बिना
खतने की दशा में रखा था, जिससे वह
उन सब का पिता ठहरे, जो बिना खतने
की दशा में विश्वास करते हैं, ताकि वे
भी धर्मी ठहरें; ***([illegible]. 17:11)***
12 और उन खतना किए हुओं का
पिता हो, जो न केवल खतना किए हुए
हैं, परन्तु हमारे पिता अब्राहम के उस
विश्वास के पथ पर भी चलते हैं, जो
उसने बिन खतने की दशा में किया था।
13 क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत
का वारिस होगा, न अब्राहम को, न
उसके वंश को व्यवस्था के द्वारा दी गई
थी, परन्तु विश्वास की धार्मिकता के
द्वारा मिली।
14 क्योंकि यदि व्यवस्थावाले
वारिस हैं, तो विश्वास व्यर्थ और
प्रतिज्ञा निष्फल ठहरी।
15 व्यवस्था तो क्रोध उपजाती है
और जहाँ व्यवस्था नहीं वहाँ उसका
उल्लंघन भी नहीं।
16 इसी कारण प्रतिज्ञा विश्वास पर
आधारित है कि अनुग्रह की रीति
पर हो, कि वह सब वंश के लिये

§ **3:31** *[illegible]*: तो क्या हम इसे व्यर्थ और बेकार समझते है; क्या हम इसके नैतिक दायित्व को नष्ट करते हैं। * **4:2** *[illegible]*: यदि अब्राहम अपने ही कामों के आधार के द्वारा धर्मी ठहराया जाता तो यह उसका गर्व करने का कारण होता। † **4:11** *[illegible]*: खतना वाचा का चिन्ह कहा जाता है जो परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बाँधा था।

दृढ़ हो, न कि केवल उसके लिये जो
व्यवस्थावाला है, वरन् उनके लिये भी
जो अब्राहम के समान विश्वासवाले हैं
वही तो हम सब का पिता है
17 जैसा लिखा है, "मैंने तुझे बहुत
सी जातियों का पिता ठहराया है" उस
परमेश्वर के सामने जिस पर *[illegible]*‡ और जो मरे हुओं
को जिलाता है, और जो बातें हैं ही
नहीं, उनका नाम ऐसा लेता है, कि
मानो वे हैं। ***([illegible]. 17:15)***
18 उसने निराशा में भी आशा
रखकर विश्वास किया, इसलिए कि
उस वचन के अनुसार कि "तेरा वंश
ऐसा होगा," वह बहुत सी जातियों का
पिता हो।
19 वह जो सौ वर्ष का था, अपने मरे
हुए से शरीर और सारा के गर्भ की मरी
हुई की सी दशा जानकर भी विश्वास
में निर्बल न हुआ, ***([illegible]. 11:11)***
20 और न अविश्वासी होकर
परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया,
पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की
महिमा की,
21 और निश्चय जाना कि जिस बात
की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा
करने में भी सामर्थी है।
22 इस कारण, यह उसके लिये
धार्मिकता गिना गया।
23 और यह वचन, "विश्वास उसके
लिये धार्मिकता गिना गया," *[illegible]*§,
24 वरन् हमारे लिये भी जिनके लिये
विश्वास धार्मिकता गिना जाएगा,
अर्थात् हमारे लिये जो उस पर
विश्वास करते हैं, जिसने हमारे प्रभु
यीशु को मरे हुओं में से जिलाया।
25 वह हमारे अपराधों के लिये
पकड़वाया गया, और हमारे धर्मी
ठहरने के लिये जिलाया भी गया।
([illegible]. 53:5, [illegible]. 53:12)

5

[illegible]

1 क्योंकि हम विश्वास से धर्मी ठहरे,
तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा
परमेश्वर के साथ मेल रखें,
2 जिसके द्वारा विश्वास के कारण
उस अनुग्रह तक जिसमें हम बने
हैं, हमारी *[illegible]** भी हुई, और
परमेश्वर की महिमा की आशा पर
घमण्ड करें।
3 केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों
में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि
क्लेश से धीरज,
4 और धीरज से खरा निकलना, और
खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है;
5 और आशा से लज्जा नहीं होती,
क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया
गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम
हमारे मन में डाला गया है।
6 क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो
मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के
लिये मरा।
7 किसी *[illegible]*† के लिये कोई
मरे, यह तो दुर्लभ है; परन्तु क्या जाने
किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने
का धैर्य दिखाए।
8 परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम
की भलाई इस रीति से प्रगट करता है,

‡ **4:17** *[illegible]:* जिन वादों में उन्होंने विश्वास किया; या जिनमें उन्होंने भरोसा किया।

§ **4:23** *[illegible]:* इस असाधारण विश्वास का अभिलेख केवल उन्हीं के लिए नहीं बनाया गया था, लेकिन यह मार्ग दिखाने के लिए बनाया गया जिसमें मनुष्य परमेश्वर के द्वारा सम्मान और धर्मी के रूप में ठहराया जाए।

* **5:2** *[illegible]:* इसका मतलब है, "जिसके द्वारा हमें परमेश्वर का अनुग्रह पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसमें हम आनन्दित होंगे जब हम धर्मी ठहराए जाएँगे।"

† **5:7** *[illegible]:* एक धर्मी मनुष्य; आचरण की अखण्डता के लिए प्रतिष्ठित एक मनुष्य।

कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह
हमारे लिये मरा।
9 तो जबकि हम, अब उसके लहू
के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा
परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे?
10 क्योंकि बैरी होने की दशा में
उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल
परमेश्वर के साथ हुआ, फिर मेल हो
जाने पर उसके जीवन के कारण हम
उद्धार क्यों न पाएँगे?
11 और केवल यही नहीं, परन्तु हम
अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके
द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर में
आनन्दित होते हैं।

[illegible]

12 इसलिए जैसा एक मनुष्य के
द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के
द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु
सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने
पाप किया। ***(1 [illegible]. 15:21,22)***
13 क्योंकि व्यवस्था के दिए जाने
तक पाप जगत में तो था, परन्तु जहाँ
व्यवस्था नहीं, वहाँ पाप गिना नहीं
जाता।
14 तो भी आदम से लेकर मूसा तक
[illegible]‡, जिन्होंने उस आदम,
जो उस आनेवाले का चिन्ह है, के
अपराध के समान पाप न किया।
15 पर जैसी अपराध की दशा है,
वैसी अनुग्रह के वरदान की नहीं,
क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध
से बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का
अनुग्रह और उसका जो दान एक
मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के
अनुग्रह से हुआ बहुत से लोगों पर
अवश्य ही अधिकाई से हुआ।
16 और जैसा एक मनुष्य के पाप
करने का फल हुआ, वैसा ही दान की
दशा नहीं, क्योंकि एक ही के कारण
दण्ड की आज्ञा का फैसला हुआ, परन्तु
बहुत से अपराधों से ऐसा वरदान
उत्पन्न हुआ कि लोग धर्मी ठहरे।
17 क्योंकि जब एक मनुष्य के
अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक
ही के द्वारा राज्य किया, तो जो
लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान
बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के,
अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही
अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।
18 इसलिए जैसा एक अपराध सब
मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का
कारण हुआ, वैसा ही एक धार्मिकता
का काम भी सब मनुष्यों के लिये
जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने
का कारण हुआ।
19 क्योंकि जैसा एक मनुष्य के
आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी
ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा
मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।
20 *[illegible]*§ बीच में आ गई
कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहाँ पाप
बहुत हुआ, वहाँ अनुग्रह उससे भी
कहीं अधिक हुआ,
21 कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए
राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु यीशु
मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त
जीवन के लिये धर्मी ठहराते हुए राज्य
करे।

6

[illegible]

‡ **5:14** *[illegible]*: मृत्यु के प्रभुत्व के अधीन उन लोगों की मृत्यु हो गई। § **5:20** *[illegible]*: यह शब्द यहाँ पर सभी नियम जो पुराने नियम में दिए गए थे, को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया गया है।

1 तो हम क्या कहें? क्या हम पाप
करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो?
2 कदापि नहीं! हम जब *[illegible]*
[illegible][*] तो फिर आगे को
उसमें कैसे जीवन बिताएँ?
3 क्या तुम नहीं जानते कि हम सब
जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा
लिया तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा
लिया?
4 इसलिए उस मृत्यु का बपतिस्मा
पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि
जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा
मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही
हम भी नये जीवन के अनुसार चाल
चलें।
5 क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की
समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो
निश्चय उसके जी उठने की समानता
में भी जुट जाएँगे।
6 क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा
पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर
चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर
नाश हो जाए, ताकि हम आगे को पाप
के दासत्व में न रहें।
7 क्योंकि जो मर गया, वह पाप से
मुक्त हो गया है।
8 इसलिए यदि हम मसीह के साथ
मर गए, तो हमारा विश्वास यह है कि
उसके साथ जीएँगे भी,
9 क्योंकि हम जानते है कि मसीह
मरे हुओं में से जी उठा और फिर कभी
नहीं मरेगा। मृत्यु उस पर प्रभुता नहीं
करती।
10 क्योंकि वह जो मर गया तो पाप
के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु
जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिये
जीवित है।
11 ऐसे ही तुम भी अपने आपको
पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर
के लिये मसीह यीशु में जीवित
समझो।
12 इसलिए पाप तुम्हारे नाशवान
शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी
लालसाओं के अधीन रहो।
13 और न अपने अंगों को अधर्म के
हथियार होने के लिये पाप को सौंपो,
पर अपने आपको मरे हुओं में से जी
उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो,
और अपने अंगों को धार्मिकता के
हथियार होने के लिये परमेश्वर को
सौंपो।
14 तब तुम पर पाप की प्रभुता न
होगी, क्योंकि तुम व्यवस्था के अधीन
नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हो।

[illegible]

15 तो क्या हुआ? क्या हम इसलिए
पाप करें कि हम व्यवस्था के अधीन
नहीं वरन् अनुग्रह के अधीन हैं?
कदापि नहीं!
16 क्या तुम नहीं जानते कि जिसकी
आज्ञा मानने के लिये तुम अपने
आपको दासों के समान सौंप देते हो
उसी के दास हो: चाहे पाप के, जिसका
अन्त मृत्यु है, चाहे आज्ञा मानने के,
जिसका अन्त धार्मिकता है?
17 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो,
कि तुम जो पाप के दास थे अब मन
से उस उपदेश के माननेवाले हो गए,
जिसके साँचे में ढाले गए थे,
18 और *[illegible]*[†]
धार्मिकता के दास हो गए।
19 मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के
कारण मनुष्यों की रीति पर कहता हूँ।
जैसे तुम ने अपने अंगों को अशुद्धता
और कुकर्म के दास करके सौंपा था,

---

[*] **6:2** *[illegible]*: किसी बात के लिए मर गए एक मजबूत अभिव्यक्ति है कि उसका हम पर कोई प्रभाव नहीं है, को दर्शाता है। [†] **6:18** *[illegible]*: आप उसके राज्य के अधीन नहीं हैं; आप अब उसके दास नहीं हैं।

वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता
के लिये धार्मिकता के दास करके सौंप
दो।
20 जब तुम पाप के दास थे, तो
धार्मिकता की ओर से स्वतंत्र थे।
21 तो जिन बातों से अब तुम
लज्जित होते हो, उनसे उस समय तुम
क्या फल पाते थे? क्योंकि उनका
अन्त तो मृत्यु है।
22 परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर
और परमेश्वर के दास बनकर तुम
को फल मिला जिससे पवित्रता प्राप्त
होती है, और उसका अन्त अनन्त
जीवन है।
23 क्योंकि *[illegible]*‡ तो
मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान
हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त
जीवन है।

7

1 हे भाइयों, क्या तुम नहीं जानते
(मैं व्यवस्था के जाननेवालों से कहता
हूँ) कि जब तक मनुष्य जीवित रहता
है, तब तक उस पर व्यवस्था की प्रभुता
रहती है?
2 क्योंकि विवाहित स्त्री व्यवस्था के
अनुसार अपने पति के जीते जी उससे
बंधी है, परन्तु यदि पति मर जाए, तो
वह पति की व्यवस्था से छूट गई।
3 इसलिए यदि पति के जीते जी
वह किसी दूसरे पुरुष की हो जाए, तो
व्यभिचारिणी कहलाएगी, परन्तु यदि
पति मर जाए, तो वह उस व्यवस्था से
छूट गई, यहाँ तक कि यदि किसी दूसरे
पुरुष की हो जाए तो भी व्यभिचारिणी
न ठहरेगी।
4 तो हे मेरे भाइयों, तुम भी मसीह
की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे
हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ,
जो मरे हुओं में से जी उठा: ताकि हम
परमेश्वर के लिये फल लाएँ।
5 क्योंकि जब हम शारीरिक थे, तो
पापों की अभिलाषाएँ जो व्यवस्था के
द्वारा थीं, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के
लिये हमारे अंगों में काम करती थीं।
6 परन्तु जिसके बन्धन में हम थे
उसके लिये मरकर, अब व्यवस्था से
ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति
पर नहीं, वरन् आत्मा की नई रीति पर
सेवा करते हैं।

[illegible]

7 तो हम क्या कहें? *[illegible]**? कदापि
नहीं! वरन् बिना व्यवस्था के मैं
पाप को नहीं पहचानता व्यवस्था यदि
न कहती, "लालच मत कर" तो मैं
लालच को न जानता। ***([illegible]. 3:20)***
8 परन्तु पाप ने अवसर पाकर आज्ञा
के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच
उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्था
के पाप मुर्दा है।
9 मैं तो व्यवस्था बिना पहले जीवित
था, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जी
गया, और मैं मर गया।
10 और वही आज्ञा जो *[illegible]*†, मेरे लिये मृत्यु का कारण
ठहरी। ***([illegible]. 18:5)***
11 क्योंकि पाप ने अवसर पाकर
आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया, और उसी
के द्वारा मुझे मार भी डाला। ***([illegible].
7:8)***
12 इसलिए व्यवस्था पवित्र है, और
आज्ञा पवित्र, धर्मी, और अच्छी है।

[illegible]

‡ **6:23** *[illegible]*: एक मनुष्य जो कमाता है या उसका हकदार है * **7:7** *[illegible]*: क्या पापमय इच्छा "व्यवस्था के द्वारा" थी, यह स्वाभाविक रूप से पूछा जाता था कि व्यवस्था स्वयं बुरी बात नहीं थी? † **7:10** *[illegible]*: जिसका लक्ष्य जीवन या खुशी देने का था।

13 तो क्या वह जो अच्छी थी, मेरे
लिये मृत्यु ठहरी? कदापि नहीं! परन्तु
पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये
मृत्यु का उत्पन्न करनेवाला हुआ कि
उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा
के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे।
14 क्योंकि हम जानते हैं कि
व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं
शारीरिक हूँ और पाप के हाथ बिका
हुआ हूँ।
15 और जो मैं करता हूँ उसको नहीं
जानता, क्योंकि जो मैं चाहता हूँ वह
नहीं किया करता, परन्तु जिससे मुझे
घृणा आती है, वही करता हूँ।
16 और यदि, जो मैं नहीं चाहता
वही करता हूँ, तो मैं मान लेता हूँ कि
व्यवस्था भली है।
17 तो ऐसी दशा में उसका
करनेवाला मैं नहीं, वरन् पाप है जो
मुझ में बसा हुआ है।
18 क्योंकि मैं जानता हूँ, कि मुझ में
अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु
वास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है,
परन्तु भले काम मुझसे बन नहीं पड़ते।
([illegible]. 6:5)
19 क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं
इच्छा करता हूँ, वह तो नहीं करता,
परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं
करता, वही किया करता हूँ।
20 परन्तु यदि मैं वही करता हूँ
जिसकी इच्छा नहीं करता, तो उसका
करनेवाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो
मुझ में बसा हुआ है।
21 तो मैं यह व्यवस्था पाता हूँ कि
जब भलाई करने की इच्छा करता हूँ,
तो बुराई मेरे पास आती है।
22 क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो
परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न
रहता हूँ।
23 परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे
प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है,
जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती
है और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन
में डालती है जो मेरे अंगों में है।
24 मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ!
मुझे इस मृत्यु की देह से *[illegible]*
[illegible]‡?
25 हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा
परमेश्वर का धन्यवाद हो। इसलिए मैं
आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था
का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था
की सेवा करता हूँ।

8

[illegible]

1 इसलिए अब जो मसीह यीशु
में हैं, उन पर *[illegible]*
*[illegible]**।
2 क्योंकि जीवन की आत्मा की
व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप
की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र
कर दिया।
3 क्योंकि *[illegible]*
[illegible]†, उसको परमेश्वर ने किया,
अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर
की समानता में, और पाप के बलिदान
होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर
दण्ड की आज्ञा दी।
4 इसलिए कि व्यवस्था की विधि
हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन्

‡ **7:24** *[illegible]*: मन की परिस्थिति गम्भीर पीड़ा में, और उसका विवेक स्वयं की कमजोरी में, और मदद की तलाश में देख रहे हैं। * **8:1** *[illegible]*: सुसमाचार व्यवस्था की तरह दण्ड की आज्ञा नहीं सुनाता है। † **8:3** *[illegible] .... [illegible]*: परमेश्वर की व्यवस्था, नैतिक व्यवस्था। यह पाप और दण्ड से मुक्त नहीं कर सकी।

आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।

5 क्योंकि शारीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।

6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।

7 क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है, और न हो सकता है।

8 और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

9 परन्तु जबकि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं, परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।

10 यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है; परन्तु आत्मा धार्मिकता के कारण जीवित है।

11 और यदि उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।

[illegible]

12 तो हे भाइयों, हम शरीर के कर्जदार नहीं, कि शरीर के अनुसार दिन काटें।

13 क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।

14 इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही *[illegible]*‡ हैं।

15 क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।

16 पवित्र आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

17 और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब हम उसके साथ दुःख उठाए तो उसके साथ महिमा भी पाएँ।

[illegible]

18 क्योंकि मैं समझता हूँ, कि इस समय के दुःख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं।

19 क्योंकि सृष्टि बड़ी आशा भरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की प्रतीक्षा कर रही है।

20 क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर अधीन करनेवाले की ओर से व्यर्थता के अधीन इस आशा से की गई।

21 कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी।

22 क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है।

23 और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और

‡ **8:14** *[illegible]*: परमेश्वर के पुत्र है और उनके परिवार में गोद लिए गए उनके बच्चे है।

लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की प्रतीक्षा करते हैं।

24 आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है परन्तु जिस वस्तु की आशा की जाती है जब वह देखने में आए, तो फिर आशा कहाँ रही? क्योंकि जिस वस्तु को कोई देख रहा है उसकी आशा क्या करेगा?

25 परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उसकी आशा रखते हैं, तो धीरज से उसकी प्रतीक्षा भी करते हैं।

26 इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए; परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये विनती करता है।

27 और मनों का जाँचनेवाला जानता है, कि पवित्र आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है।

28 और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

29 क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहलौठा ठहरे।

30 फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है।

31 तो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? ***(??. 118:6)***

32 जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?

33 परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है।

34 फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह वह है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर की दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है।

35 कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार?

36 जैसा लिखा है, "तेरे लिये हम दिन भर मार डाले जाते हैं; हम वध होनेवाली भेड़ों के समान गिने गए हैं।" ***(??. 44:22)***

37 परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, विजेता से भी बढ़कर हैं।

38 क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊँचाई,

39 न गहराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।

9

1 मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूठ
नहीं बोलता और मेरा विवेक भी
पवित्र आत्मा में गवाही देता है।
2 कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा
मन सदा दुखता रहता है।
3 क्योंकि मैं यहाँ तक चाहता था,
कि अपने भाइयों, के लिये जो शरीर के
भाव से मेरे कुटुम्बी हैं, आप ही मसीह
से श्रापित और अलग हो जाता।
(□□□□□. 32:32)
4 वे इस्राएली हैं, लेपालकपन
का हक़, महिमा, वाचाएँ, व्यवस्था
का उपहार, परमेश्वर की उपासना,
और प्रतिज्ञाएँ उन्हीं की हैं। *(□□.
147:19)*
5 पूर्वज भी उन्हीं के हैं, और मसीह
भी शरीर के भाव से उन्हीं में से
हुआ, जो सब के ऊपर परम परमेश्वर
युगानुयुग धन्य है। आमीन।

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

6 परन्तु यह नहीं, कि परमेश्वर
का वचन टल गया, इसलिए कि जो
इस्राएल के वंश हैं, वे सब इस्राएली
नहीं;
7 और न अब्राहम के वंश होने के
कारण सब उसकी सन्तान ठहरे, परन्तु
(लिखा है) "इसहाक ही से तेरा वंश
कहलाएगा।" *(□□□□□. 11:18)*
8 अर्थात् शरीर की सन्तान
परमेश्वर की सन्तान नहीं, परन्तु
प्रतिज्ञा के सन्तान वंश गिने जाते हैं।
9 क्योंकि प्रतिज्ञा का वचन यह है,
"मैं इस समय के अनुसार आऊँगा,
और सारा का एक पुत्र होगा।"
(□□□□. 18:10, □□□□. 21:2)
10 और केवल यही नहीं, परन्तु जब
रिबका भी एक से अर्थात् हमारे पिता
इसहाक से गर्भवती थी। *(□□□□.
25:21)*
11 और अभी तक न तो बालक
जन्मे थे, और न उन्होंने कुछ भला या
बुरा किया था, इसलिए कि परमेश्वर
की मनसा जो उसके चुन लेने के
अनुसार है, कर्मों के कारण नहीं, परन्तु
बुलानेवाले पर बनी रहे।
12 उसने कहा, "जेठा छोटे का दास
होगा।" *(□□□□. 25:23)*
13 जैसा लिखा है, "मैंने याकूब से
प्रेम किया, परन्तु एसाव को अप्रिय
जाना।" *(□□□. 1:2,3)*

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□

14 तो हम क्या कहें? क्या परमेश्वर
के यहाँ अन्याय है? कदापि नहीं!
15 क्योंकि वह मूसा से कहता है,
"मैं जिस किसी पर दया करना चाहूँ,
उस पर दया करूँगा, और जिस किसी
पर कृपा करना चाहूँ उसी पर कृपा
करूँगा।" *(□□□□□. 33:19)*
16 इसलिए यह न तो चाहनेवाले
की, न दौड़नेवाले की परन्तु दया
करनेवाले परमेश्वर की बात है।
17 क्योंकि पवित्रशास्त्र में फ़िरौन से
कहा गया, "मैंने तुझे इसलिए खड़ा
किया है, कि तुझ में अपनी सामर्थ्य
दिखाऊँ, और मेरे नाम का प्रचार सारी
पृथ्वी पर हो।" *(□□□□□. 9:16)*
18 तो फिर, वह जिस पर चाहता
है, उस पर दया करता है; और जिसे
चाहता है, उसे कठोर कर देता है।
19 फिर तू मुझसे कहेगा, "वह फिर
क्यों दोष लगाता है? कौन उसकी
इच्छा का सामना करता है?"
20 हे मनुष्य, भला तू कौन है, जो
परमेश्वर का सामना करता है? क्या
गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती
है, "तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया है?"
21 क्या कुम्हार को मिट्टी पर
अधिकार नहीं, कि एक ही लोंदे में से,

एक बर्तन आदर के लिये, और दूसरे
को अनादर के लिये बनाए? ***(□□□. 64:8)***
22 कि परमेश्वर ने अपना क्रोध
दिखाने और अपनी सामर्थ्य प्रगट
करने की इच्छा से क्रोध के बरतनों की,
जो विनाश के लिये तैयार किए गए थे
बड़े धीरज से सही। ***(□□□□. 16:4)***
23 और दया के बरतनों पर जिन्हें
उसने महिमा के लिये पहले से तैयार
किया, अपने महिमा के धन को प्रगट
करने की इच्छा की?
24 अर्थात् हम पर जिन्हें उसने
न केवल यहूदियों में से वरन्
अन्यजातियों में से भी बुलाया।
(□□□. 3:6, □□□. 3:29)
25 जैसा वह होशे की पुस्तक में भी
कहता है,

"जो मेरी प्रजा न थी, उन्हें मैं अपनी
प्रजा कहूँगा,
और जो प्रिया न थी, उसे प्रिया कहूँगा;
(□□□□ 2:23)
26 और ऐसा होगा कि जिस जगह में
उनसे यह कहा गया था, कि
तुम मेरी प्रजा नहीं हो,
उसी जगह वे जीवित परमेश्वर की
सन्तान कहलाएँगे।"

27 और यशायाह इस्राएल के विषय
में पुकारकर कहता है, "चाहे इस्राएल
की सन्तानों की गिनती समुद्र के रेत
के बराबर हो, तो भी उनमें से थोड़े ही
बचेंगे। ***(□□□. 6:8)***
28 क्योंकि प्रभु अपना वचन पृथ्वी
पर पूरा करके, धार्मिकता से शीघ्र उसे
सिद्ध करेगा।"
29 जैसा यशायाह ने पहले भी कहा
था,

"यदि सेनाओं का प्रभु हमारे लिये कुछ
वंश न छोड़ता,
तो हम सदोम के समान हो जाते,
और गमोरा के सरीखे ठहरते।" ***(□□□. 1:9)***

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□

30 तो हम क्या कहें? यह कि
अन्यजातियों ने जो धार्मिकता की
खोज नहीं करते थे, धार्मिकता प्राप्त
की अर्थात् उस धार्मिकता को जो
विश्वास से है;
31 परन्तु इस्राएली; जो धार्मिकता
की व्यवस्था की खोज करते हुए उस
व्यवस्था तक नहीं पहुँचे।
32 किस लिये? इसलिए कि वे
विश्वास से नहीं, परन्तु मानो कर्मों
से उसकी खोज करते थे: उन्होंने उस
ठोकर के पत्थर पर ठोकर खाई।
33 जैसा लिखा है,

"देखो मैं सिय्योन में एक ठेस लगने
का पत्थर, और ठोकर खाने की
चट्टान रखता हूँ,
और जो उस पर विश्वास करेगा, वह
लज्जित न होगा।" ***(□□□. 28:16)***

10

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□

1 हे भाइयों, मेरे मन की अभिलाषा
और उनके लिये परमेश्वर से मेरी
प्रार्थना है, *□□ □□ □□□□□□□ □□□□**।
2 क्योंकि मैं उनकी गवाही देता हूँ,
कि उनको परमेश्वर के लिये धुन रहती
है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं।
3 क्योंकि वे *□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□*† से अनजान होकर,

* **10:1** *□□ □□ □□□□□□□ □□□□:* यह स्पष्ट रूप से अविश्वासियों को उसके पाप से उद्धार पाने के लिए संदर्भित करता है। † **10:3** *□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□:* लोगों को धर्मी ठहराने की परमेश्वर की योजना, या विश्वास के द्वारा उनके पुत्र में धर्मी ठहराने की घोषणा करना।

अपनी धार्मिकता स्थापित करने का
यत्न करके, परमेश्वर की धार्मिकता
के अधीन न हुए।
4 क्योंकि हर एक विश्वास
करनेवाले के लिये धार्मिकता के
निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है।
5 क्योंकि मूसा व्यवस्था से प्राप्त
धार्मिकता के विषय में यह लिखता है:
“जो व्यक्ति उनका पालन करता है,
वह उनसे जीवित रहेगा।” ***([illegible]. 18:5)***
6 परन्तु जो धार्मिकता विश्वास से
है, वह यह कहती है, “तू अपने मन
में यह न कहना कि स्वर्ग पर कौन
चढ़ेगा?” (अर्थात् मसीह को उतार
लाने के लिये),
7 या “अधोलोक में कौन उतरेगा?”
(अर्थात् मसीह को मरे हुओं में से
जिलाकर ऊपर लाने के लिये!)
8 परन्तु क्या कहती है? यह, कि
“वचन तेरे निकट है,
तेरे मुँह में और तेरे मन में है,” यह वही
विश्वास का वचन है, जो हम
प्रचार करते हैं।
9 कि यदि तू अपने मुँह से यीशु को
प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने
मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने
उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू
निश्चय उद्धार पाएगा। ***([illegible]. 16:31)***
10 क्योंकि धार्मिकता के लिये मन
से विश्वास किया जाता है, और
[illegible]‡ किया जाता है।
11 क्योंकि पवित्रशास्त्र यह कहता
है, “जो कोई उस पर विश्वास करेगा,
वह लज्जित न होगा।” ***([illegible]. 17:7)***
12 यहूदियों और यूनानियों में कुछ
भेद नहीं, इसलिए कि वह सब का प्रभु
है; और अपने सब नाम लेनेवालों के
लिये उदार है।
13 क्योंकि “जो कोई प्रभु का
नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।”
([illegible]. 2:21, [illegible]. 2:32)

[illegible]

14 फिर जिस पर उन्होंने विश्वास
नहीं किया, वे उसका नाम क्यों लें?
और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्यों
विश्वास करें? और प्रचारक बिना क्यों
सुनें?
15 और यदि भेजे न जाएँ, तो क्यों
प्रचार करें? जैसा लिखा है, “उनके पाँव
क्या ही सुहावने हैं, जो अच्छी बातों
का सुसमाचार सुनाते हैं!” ***([illegible]. 52:7, [illegible]. 1:15)***
16 परन्तु सब ने उस सुसमाचार पर
कान न लगाया। यशायाह कहता है,
“हे प्रभु, किसने हमारे समाचार पर
विश्वास किया है?” ***([illegible]. 53:1)***
17 इसलिए विश्वास सुनने से, और
सुनना मसीह के वचन से होता है।
18 परन्तु मैं कहता हूँ, “क्या उन्होंने
नहीं सुना?” सुना तो सही क्योंकि
लिखा है,
“उनके स्वर सारी पृथ्वी पर,
और उनके वचन जगत के छोर तक
पहुँच गए हैं।” ***([illegible]. 19:4)***
19 फिर मैं कहता हूँ। क्या इस्राएली
नहीं जानते थे? पहले तो मूसा कहता
है,
“मैं उनके द्वारा जो जाति नहीं, तुम्हारे
मन में जलन उपजाऊँगा,
मैं एक मूर्ख जाति के द्वारा तुम्हें
रिस दिलाऊँगा।” ***([illegible]. 32:21)***
20 फिर यशायाह बड़े साहस के साथ
कहता है,

‡ **10:10** *[illegible]:* अंगीकार या स्वीकार उद्धार प्राप्त करने के रूप में किया जाता है।

"जो मुझे नहीं ढूँढ़ते थे, उन्होंने मुझे पा
लिया;
और जो मुझे पूछते भी न थे,
उन पर मैं प्रगट हो गया।"
21 परन्तु इस्राएल के विषय में वह
यह कहता है "मैं सारे दिन अपने हाथ
एक आज्ञा न माननेवाली और विवाद
करनेवाली प्रजा की ओर पसारे रहा।"
(▯▯▯. 65:1,2)

11

▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯

1 इसलिए मैं कहता हूँ, क्या
परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग
दिया? कदापि नहीं! मैं भी तो
इस्राएली हूँ; अब्राहम के वंश और
बिन्यामीन के गोत्र में से हूँ।
2 परमेश्वर ने अपनी उस प्रजा को
नहीं त्यागा, जिसे उसने पहले ही से
जाना: क्या तुम नहीं जानते, कि
पवित्रशास्त्र एलिय्याह की कथा में
क्या कहता है; कि वह इस्राएल के
विरोध में परमेश्वर से विनती करता
है। ***(▯▯. 94:14)***
3 "हे प्रभु, उन्होंने तेरे
भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला, और
तेरी वेदियों को ढा दिया है; और मैं ही
अकेला बच रहा हूँ, और वे मेरे प्राण के
भी खोजी हैं।" ***(1 ▯▯▯▯. 19:10, 1 ▯▯▯▯. 19:14)***
4 परन्तु परमेश्वर से उसे क्या उत्तर
मिला "मैंने अपने लिये सात हजार
पुरुषों को रख छोड़ा है जिन्होंने बाल
के आगे घुटने नहीं टेके हैं।" ***(1 ▯▯▯▯. 19:18)***
5 इसी रीति से इस समय भी,
अनुग्रह से चुने हुए *▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯** ।
6 यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो
फिर कर्मों से नहीं, नहीं तो अनुग्रह
फिर अनुग्रह नहीं रहा।
7 फिर परिणाम क्या हुआ? यह
कि इस्राएली जिसकी खोज में हैं, वह
उनको नहीं मिला; परन्तु चुने हुओं को
मिला और शेष लोग कठोर किए गए
हैं।
8 जैसा लिखा है, "परमेश्वर ने उन्हें
▯▯ ▯▯ ▯▯▯ ▯▯† मंदता की आत्मा
दे रखी है और ऐसी आँखें दी जो
न देखें और ऐसे कान जो न सुनें।"
(▯▯▯▯. 29:4, ▯▯▯. 6:9,10, ▯▯▯. 29:10, ▯▯▯. 12:2)
9 और दाऊद कहता है,
"उनका भोजन उनके लिये जाल, और
फंदा,
और ठोकर, और दण्ड का कारण हो
जाए।
10 उनकी आँखों पर अंधेरा छा जाए
ताकि न देखें,
और तू सदा उनकी पीठ को झुकाए
रख।" ***(▯▯. 69:23)***

▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯

11 तो मैं कहता हूँ क्या उन्होंने
इसलिए ठोकर खाई, कि गिर पड़ें?
कदापि नहीं परन्तु उनके गिरने के
कारण अन्यजातियों को उद्धार मिला,
कि उन्हें जलन हो। ***(▯▯▯▯. 32:21)***
12 अब यदि उनका गिरना जगत
के लिये धन और उनकी घटी
अन्यजातियों के लिये सम्पत्ति का
कारण हुआ, तो उनकी भरपूरी से
कितना न होगा।
13 मैं तुम अन्यजातियों से यह बातें
कहता हूँ। जबकि मैं अन्यजातियों के
लिये प्रेरित हूँ, तो मैं अपनी सेवा की
बड़ाई करता हूँ,

* **11:5** *▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯:* वह जो बाकी या अलग करके रखें हुए हैं † **11:8** *▯▯ ▯▯ ▯▯▯ ▯▯:* यहूदियों का चरित्र जिस तरह से यशायाह के समय में था। उसी तरह से पौलुस के समय में भी था।

14 ताकि किसी रीति से मैं अपने कुटुम्बियों से जलन करवाकर उनमें से कई एक का उद्धार कराऊँ।

15 क्योंकि जबकि *[illegible]*‡ जगत के मिलाप का कारण हुआ, तो क्या उनका ग्रहण किया जाना मरे हुओं में से जी उठने के बराबर न होगा?

16 जब भेंट का पहला पेड़ा पवित्र ठहरा, तो पूरा गूँधा हुआ आटा भी पवित्र है: और जब जड़ पवित्र ठहरी, तो डालियाँ भी ऐसी ही हैं।

17 और यदि कई एक डाली तोड़ दी गई, और तू जंगली जैतून होकर उनमें साटा गया, और जैतून की जड़ की चिकनाई का भागी हुआ है।

18 तो डालियों पर घमण्ड न करना; और यदि तू घमण्ड करे, तो जान रख, कि तू जड़ को नहीं, परन्तु जड़ तुझे सम्भालती है।

19 फिर तू कहेगा, "डालियाँ इसलिए तोड़ी गई, कि मैं साटा जाऊँ।"

20 भला, वे तो अविश्वास के कारण तोड़ी गई, परन्तु तू विश्वास से बना रहता है इसलिए अभिमानी न हो, परन्तु भय मान,

21 क्योंकि जब परमेश्वर ने स्वाभाविक डालियाँ न छोड़ी, तो तुझे भी न छोड़ेगा।

22 इसलिए परमेश्वर की दयालुता और कड़ाई को देख! जो गिर गए, उन पर कड़ाई, परन्तु तुझ पर दयालुता, यदि तू उसमें बना रहे, नहीं तो, तू भी काट डाला जाएगा।

23 और वे भी यदि अविश्वास में न रहें, तो साटे जाएँगे क्योंकि परमेश्वर उन्हें फिर साट सकता है।

24 क्योंकि यदि तू उस जैतून से, जो स्वभाव से जंगली है, काटा गया और *[illegible]*§ अच्छी जैतून में साटा गया, तो ये जो स्वाभाविक डालियाँ हैं, अपने ही जैतून में साटे क्यों न जाएँगे।

25 हे भाइयों, कहीं ऐसा न हो, कि तुम अपने आपको बुद्धिमान समझ लो; इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो, कि जब तक अन्यजातियाँ पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा।

26 और इस रीति से सारा इस्राएल उद्धार पाएगा; जैसा लिखा है,

"छुड़ानेवाला सिय्योन से आएगा,
और अभक्ति को याकूब से दूर करेगा।
([illegible]. 59:20)

27 और उनके साथ मेरी यही वाचा होगी,
जबकि मैं उनके पापों को दूर कर दूँगा।" ***([illegible]. 27:9, [illegible]. 43:25)***

28 सुसमाचार के भाव से तो तुम्हारे लिए वे परमेश्वर के बैरी हैं, परन्तु चुन लिये जाने के भाव से पूर्वजों के कारण प्यारे हैं।

29 क्योंकि परमेश्वर अपने वरदानों से, और बुलाहट से कभी पीछे नहीं हटता।

30 क्योंकि जैसे तुम ने पहले परमेश्वर की आज्ञा न मानी परन्तु अभी उनके आज्ञा न मानने से तुम पर दया हुई।

31 वैसे ही उन्होंने भी अब आज्ञा न मानी कि तुम पर जो दया होती है इससे उन पर भी दया हो।

‡ **11:15** *[illegible]:* यदि उनकी अस्वीकृति परमेश्वर के विशेष लोगों के रूप में होती हैं। § **11:24** *[illegible]:* अपने स्वाभाविक आदतों, विचारों, और प्रथाओं के विपरीत है।

32 क्योंकि परमेश्वर ने सब को
आज्ञा न मानने के कारण बन्द कर रखा
है ताकि वह सब पर दया करे।
33 अहा, परमेश्वर का धन और बुद्धि
और ज्ञान क्या ही गम्भीर है! उसके
विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग
कैसे अगम हैं!
34 “प्रभु कि बुद्धि को किसने जाना? या
उनका मंत्री कौन हुआ? ***([illegible].
15:8, [illegible]. 23:18)***
35 या किसने पहले उसे कुछ दिया है
जिसका बदला उसे दिया जाए?”
([illegible]. 41:11)
36 क्योंकि उसकी ओर से, और उसी
के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है:
उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे।
आमीन।

12

[illegible]

1 इसलिए हे भाइयों, मैं तुम से
परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर
विनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को
जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को
भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ;
यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।
2 और *[illegible]*[*]; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये
हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी
बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर
की भली, और भावती, और सिद्ध
इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।

[illegible]

3 क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण
जो मुझ को मिला है, तुम में से हर
एक से कहता हूँ, कि जैसा समझना
चाहिए, उससे बढ़कर कोई भी अपने
आपको न समझे; पर जैसा परमेश्वर
ने हर एक को परिमाण के अनुसार बाँट
दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने
को समझे।
4 क्योंकि जैसे हमारी एक देह में
बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक
ही जैसा काम नहीं;
5 वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह
में एक देह होकर आपस में एक दूसरे
के अंग हैं।
6 और जबकि उस अनुग्रह के
अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें
भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको
भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह
विश्वास के परिमाण के अनुसार
भविष्यद्वाणी करे।
7 यदि सेवा करने का दान मिला
हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई
सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा
रहे;
8 जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने
में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से
दे, जो अगुआई करे, वह उत्साह से
करे, जो दया करे, वह हर्ष से करे।

[illegible]

9 प्रेम निष्कपट हो; बुराई से घृणा
करो; भलाई में लगे रहो। ***([illegible].
5:15)***
10 *[illegible]*[†] से एक
दूसरे पर स्नेह रखो; परस्पर आदर
करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।
11 प्रयत्न करने में आलसी न हो;
आत्मिक उन्माद में भरे रहो; प्रभु की
सेवा करते रहो।

[*] **12:2** *[illegible]:* “सदृश्य” शब्द का ठीक अर्थ यह हैं, दूसरों की शैली, चाल-ढाल, या उपस्थिति को पहन लेने का प्रतीक हैं। [†] **12:10** *[illegible]:* यह शब्द भाइयों के बीच रहने के स्नेह को दर्शाता है। [‡] **12:12** *[illegible]:* वह यह है, अनन्त जीवन की आशा में और सुसमाचार में जिससे महिमा होती है।

12 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible]‡; क्लेश के विषय में, धैर्य
रखें; प्रार्थना के विषय में, स्थिर रहें।
13 पवित्र लोगों को जो कुछ
अवश्य हो, उसमें उनकी सहायता
करो; पहुनाई करने में लगे रहो।
14 अपने सतानेवालों को आशीष
दो; आशीष दो श्राप न दो।
15 आनन्द करनेवालों के साथ
आनन्द करो, और रोनेवालों के साथ
रोओ। ***([illegible]. 35:13)***
16 आपस में एक सा मन रखो;
अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ
संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान
न हो। ***([illegible]. 3:7, [illegible]. 5:21)***
17 बुराई के बदले किसी से बुराई
न करो; जो बातें सब लोगों के निकट
भली हैं, उनकी चिन्ता किया करो।
18 जहाँ तक हो सके, तुम भरसक
सब मनुष्यों के साथ [illegible] [illegible]
[illegible]§।
19 हे प्रियों अपना बदला न लेना;
परन्तु परमेश्वर को क्रोध का अवसर
दो, क्योंकि लिखा है, "बदला लेना
मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला
दूँगा।" ***([illegible]. 32:35)***
20 परन्तु "यदि तेरा बैरी भूखा हो तो
उसे खाना खिला,
यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला;
क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर
पर आग के अंगारों का
ढेर लगाएगा।" ***([illegible].
25:21,22)***
21 बुराई से न हारो परन्तु भलाई से
बुराई को जीत लो।

13

[illegible] [illegible] [illegible]

1 हर एक व्यक्ति प्रधान
अधिकारियों के अधीन रहे; क्योंकि
कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर
की ओर से न हो; और जो अधिकार
हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं।
([illegible]. 3:1)
2 इसलिए जो कोई अधिकार का
विरोध करता है, वह परमेश्वर की
विधि का विरोध करता है, और विरोध
करनेवाले दण्ड पाएँगे।
3 क्योंकि अधिपति अच्छे काम के
नहीं, परन्तु बुरे काम के लिये डर का
कारण है; क्या तू अधिपति से निडर
रहना चाहता है, [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]* और उसकी ओर से तेरी सराहना
होगी;
4 क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये
परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू
बुराई करे, तो डर; क्योंकि वह तलवार
व्यर्थ लिए हुए नहीं और [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]†; कि उसके क्रोध के
अनुसार बुरे काम करनेवाले को दण्ड
दे।
5 इसलिए अधीन रहना न केवल
उस क्रोध से परन्तु डर से अवश्य है,
वरन् विवेक भी यही गवाही देता है।
6 इसलिए कर भी दो, क्योंकि
शासन करनेवाले परमेश्वर के सेवक हैं,
और सदा इसी काम में लगे रहते हैं।
7 इसलिए हर एक का हक़ चुकाया
करो; जिसे कर चाहिए, उसे कर
दो; जिसे चुंगी चाहिए, उसे चुंगी
दो; जिससे डरना चाहिए, उससे डरो;
जिसका आदर करना चाहिए उसका
आदर करो।

[illegible] [illegible] [illegible]

§ **12:18** *[illegible] [illegible] [illegible]:* इस अभिव्यक्ति का यह तात्पर्य हैं कि यह हमेशा नहीं किया जा सकता है। फिर भी यह इच्छा होनी चाहिए। * **13:3** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* एक धार्मिक और शान्तिप्रिय नागरिक बनें। † **13:4** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* परमेश्वर का "सेवक" वह परमेश्वर के द्वारा नियुक्त किया गया है उनकी इच्छाओं को पूरी करने के लिए।

8 आपस के प्रेम को छोड़ और किसी
बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि
जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने
व्यवस्था पूरी की है।
9 क्योंकि यह कि "व्यभिचार न
करना, हत्या न करना, चोरी न करना,
लालच न करना," और इनको छोड़
और कोई भी आज्ञा हो तो सब
का सारांश इस बात में पाया जाता
है, "अपने पड़ोसी से अपने समान
प्रेम रख।" *([illegible]. 20:13-16,
[illegible]. 19:18)*
10 प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं
करता, इसलिए प्रेम रखना व्यवस्था
को पूरा करना है।

[illegible]

11 और समय को पहचानकर ऐसा
ही करो, इसलिए कि अब तुम्हारे लिये
नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुँची
है; क्योंकि जिस समय हमने विश्वास
किया था, उस समय की तुलना से अब
हमारा उद्धार निकट है।
12 *[illegible]*‡ बहुत बीत गई है, और
दिन निकलने पर है; इसलिए हम
अंधकार के कामों को तजकर ज्योति
के हथियार बाँध लें।
13 जैसे दिन में, वैसे ही हमें
उचित रूप से चलना चाहिए; न कि
लीलाक्रीड़ा, और पियक्कड़पन, न
व्यभिचार, और लुचपन में, और न
झगड़े और ईर्ष्या में।
14 वरन् *[illegible]*§, और शरीर की
अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय
न करो।

14

[illegible]

1 *[illegible]**, उसे अपनी संगति में ले लो,
परन्तु उसकी शंकाओं पर विवाद करने
के लिये नहीं।
2 क्योंकि एक को विश्वास है, कि
सब कुछ खाना उचित है, परन्तु जो
विश्वास में निर्बल है, वह साग-पात ही
खाता है।
3 और खानेवाला न-खानेवाले को
तुच्छ न जाने, और न-खानेवाला
खानेवाले पर दोष न लगाए; क्योंकि
परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया है।
4 तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर
दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना
या गिर जाना उसके स्वामी ही से
सम्बंध रखता है, वरन् वह स्थिर ही
कर दिया जाएगा; क्योंकि प्रभु उसे
स्थिर रख सकता है।
5 कोई तो एक दिन को दूसरे से
बढ़कर मानता है, और कोई सब दिन
एक सा मानता है: हर एक अपने ही
मन में निश्चय कर ले।
6 जो किसी दिन को मानता है, वह
प्रभु के लिये मानता है: जो खाता
है, वह प्रभु के लिये खाता है, क्योंकि
वह परमेश्वर का धन्यवाद करता है,
और जो नहीं खाता, वह प्रभु के लिये
नहीं खाता और परमेश्वर का धन्यवाद
करता है।
7 क्योंकि हम में से न तो कोई अपने
लिये जीता है, और न कोई अपने लिये
मरता है।

‡ **13:12** *[illegible]:* यह "नज़रअंदाज़" और "अपराध" को दर्शाता हैं और यह शब्द "अंधकार" का पर्यायवाची हैं। § **13:14** *[illegible]:* मतलब एक आदर्श और मार्गदर्शक के रूप में, उनके उदाहरण का अनुसरण करने के लिए, उनके उपदेशों का पालन करने के लिए, उनके जैसा बनने के लिए उन्हें पकड़ लो। * **14:1** *[illegible]:* मसीहियों को उनकी संगति स्वीकार करने के लिए जिनको कुछ चीजों की शुद्धता के बारे में सन्देह था, को संदर्भित करता है † **14:8** *[illegible]:* हम उनकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए और उसकी महिमा को बढ़ावा देने के लिए जीये

8 क्योंकि *[illegible]*[†]; और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिये मरते हैं; फिर हम जीएँ या मरें, हम प्रभु ही के हैं।

9 क्योंकि मसीह इसलिए मरा और जी भी उठा कि वह मरे हुओं और जीवितों, दोनों का प्रभु हो।

10 तू अपने भाई पर क्यों दोष लगाता है? या तू फिर क्यों अपने भाई को तुच्छ जानता है? हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे।

11 क्योंकि लिखा है,

"प्रभु कहता है, मेरे जीवन की सौगन्ध
कि हर एक घुटना मेरे सामने टिकेगा,
और हर एक जीभ परमेश्वर को अंगीकार करेगी।" ***([illegible]. 45:23, [illegible]. 49:18)***

12 तो फिर, हम में से हर एक परमेश्वर को अपना-अपना लेखा देगा।

13 इसलिए आगे को हम एक दूसरे पर दोष न लगाएँ पर तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के सामने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखे।

[illegible]

14 मैं जानता हूँ, और प्रभु यीशु से मुझे निश्चय हुआ है, कि कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं, परन्तु जो उसको अशुद्ध समझता है, उसके लिये अशुद्ध है।

15 यदि तेरा भाई तेरे भोजन के कारण उदास होता है, तो फिर तू प्रेम की रीति से नहीं चलता; जिसके लिये मसीह मरा उसको तू अपने भोजन के द्वारा नाश न कर।

16 अब तुम्हारी भलाई की निन्दा न होने पाए।

17 क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं; परन्तु धार्मिकता और मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है।

18 जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है, वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यों में ग्रहणयोग्य ठहरता है।

19 इसलिए हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो।

20 भोजन के लिये *[illegible]*[‡] न बिगाड़; सब कुछ शुद्ध तो है, परन्तु उस मनुष्य के लिये बुरा है, जिसको उसके भोजन करने से ठोकर लगती है।

21 भला तो यह है, कि तू न माँस खाए, और न दाखरस पीए, न और कुछ ऐसा करे, जिससे तेरा भाई ठोकर खाए।

22 तेरा जो विश्वास हो, उसे *[illegible]*[§]। धन्य है वह, जो उस बात में, जिसे वह ठीक समझता है, अपने आपको दोषी नहीं ठहराता।

23 परन्तु जो सन्देह करके खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर चुका, क्योंकि वह विश्वास से नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है।

15

[illegible]

1 अतः *[illegible]*[*], कि निर्बलों की निर्बलताओं

‡ **14:20** *[illegible]:* वह काम जो परमेश्वर करता है और यहाँ विशेष रूप से उनके काम "अपनी कलीसिया" में पालन-पोषण करने के लिए दर्शाता है। § **14:22** *[illegible]:* दूसरों पर अपने विश्वास या विचार निकाला मत करो। * **15:1** *[illegible]:* "बलवानों" के द्वारा यहाँ पर उनका मतलब हैं "विश्वास में" मजबूत।

में सहायता करें, न कि अपने आपको
प्रसन्न करें।
2 हम में से हर एक अपने पड़ोसी
को उसकी भलाई के लिये सुधारने के
निमित्त प्रसन्न करे।
3 क्योंकि मसीह ने अपने आपको
प्रसन्न नहीं किया, पर जैसा लिखा है,
"तेरे निन्दकों की निन्दा मुझ पर आ
पड़ी।" ***([illegible]. 69:9)***
4 जितनी बातें पहले से लिखी गईं,
वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं
हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के
प्रोत्साहन के द्वारा आशा रखें।
5 धीरज, और प्रोत्साहन का दाता
परमेश्वर तुम्हें यह वरदान दे, कि
मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक
मन रहो।
6 ताकि तुम *[illegible]*[†] और एक स्वर
होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता
परमेश्वर की स्तुति करो।

[illegible]

7 इसलिए, जैसा मसीह ने भी
परमेश्वर की महिमा के लिये तुम्हें
ग्रहण किया है, वैसे ही तुम भी एक
दूसरे को ग्रहण करो।
8 मैं कहता हूँ, कि जो प्रतिज्ञाएँ
पूर्वजों को दी गई थीं, उन्हें दृढ़ करने
के लिये मसीह, परमेश्वर की सच्चाई
का प्रमाण देने के लिये खतना किए
हुए लोगों का सेवक बना। ***([illegible]
15:24)***
9 और अन्यजाति भी दया के कारण
परमेश्वर की स्तुति करो, जैसा लिखा
है,
"इसलिए मैं जाति-जाति में तेरी
स्तुति करूँगा,
और तेरे नाम के भजन गाऊँगा।" ***(2
[illegible]. 22:50, [illegible]. 18:49)***
10 फिर कहा है,
"हे जाति-जाति के सब लोगों, उसकी
प्रजा के साथ आनन्द करो।"
11 और फिर,
"हे जाति-जाति के सब लोगों, प्रभु की
स्तुति करो;
और हे राज्य-राज्य के सब लोगों;
उसकी स्तुति करो।" ***([illegible].
117:1)***
12 और फिर यशायाह कहता है,
"*[illegible]*[‡] प्रगट होगी,
और अन्यजातियों का अधिपति होने
के लिये एक उठेगा,
उस पर अन्यजातियाँ आशा रखेंगी।"
([illegible]. 11:11)
13 परमेश्वर जो आशा का दाता है
तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के
आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि
पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी
आशा बढ़ती जाए।

[illegible]

14 हे मेरे भाइयों; मैं आप भी तुम्हारे
विषय में निश्चय जानता हूँ, कि तुम
भी आप ही भलाई से भरे और ईश्वरीय
ज्ञान से भरपूर हो और एक दूसरे को
समझा सकते हो।
15 तो भी मैंने कहीं-कहीं याद
दिलाने के लिये तुम्हें जो बहुत साहस
करके लिखा, यह उस अनुग्रह के कारण
हुआ, जो परमेश्वर ने मुझे दिया है।
16 कि मैं अन्यजातियों के लिये
मसीह यीशु का सेवक होकर परमेश्वर
के सुसमाचार की सेवा याजक के
समान करूँ; जिससे अन्यजातियों का
मानो चढ़ाया जाना, पवित्र आत्मा से
पवित्र बनकर ग्रहण किया जाए।

---

† **15:6** *[illegible]:* इसका अर्थ है मिलकर, एक उद्देश्य के साथ, बिना विवाद के रहो। ‡ **15:12** *[illegible]:* जब एक पेड़ सूख और गिर जाता है तब भी उसमें "जड़" बनी रहती है जो फिर से उसमें जीवन ला सकती हैं, प्रभु यीशु भी इसी प्रकार से "जड़ और दाऊद का वंश" कहलाता है

17 इसलिए उन बातों के विषय में
जो परमेश्वर से सम्बंध रखती हैं, मैं
मसीह यीशु में बड़ाई कर सकता हूँ।
18 क्योंकि उन बातों को छोड़
मुझे और किसी बात के विषय में
कहने का साहस नहीं, जो मसीह ने
अन्यजातियों की अधीनता के लिये
वचन, और कर्म।
19 और चिन्हों और अद्भुत कामों
की सामर्थ्य से, और पवित्र आत्मा की
सामर्थ्य से मेरे ही द्वारा किए। यहाँ तक
कि मैंने यरूशलेम से लेकर चारों ओर
इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार
का पूरा-पूरा प्रचार किया।
20 पर मेरे मन की उमंग यह है, कि
जहाँ-जहाँ मसीह का नाम नहीं लिया
गया, वहीं सुसमाचार सुनाऊँ; ऐसा न
हो, कि दूसरे की नींव पर घर बनाऊँ।
21 परन्तु जैसा लिखा है, वैसा ही
हो,

"जिन्हें उसका सुसमाचार नहीं पहुँचा,
वे ही देखेंगे
और जिन्होंने नहीं सुना वे ही
समझेंगे।" ***([illegible]. 52:15)***

[illegible]

22 इसलिए मैं तुम्हारे पास आने से
बार बार रोका गया।
23 परन्तु अब इन देशों में मेरे कार्य
के लिए जगह नहीं रही, और बहुत
वर्षों से मुझे तुम्हारे पास आने की
लालसा है।
24 इसलिए जब इसपानिया को
जाऊँगा तो तुम्हारे पास होता हुआ
जाऊँगा क्योंकि मुझे आशा है, कि
उस यात्रा में तुम से भेंट करूँ, और
जब तुम्हारी संगति से मेरा जी कुछ
भर जाए, तो तुम मुझे कुछ दूर आगे
पहुँचा दो।
25 परन्तु अभी तो पवित्र लोगों
की सेवा करने के लिये यरूशलेम को
जाता हूँ।
26 क्योंकि *[illegible]*§ के लोगों को यह अच्छा
लगा, कि यरूशलेम के पवित्र लोगों
के कंगालों के लिये कुछ चन्दा करें।
27 उन्हें अच्छा तो लगा, परन्तु
वे उनके कर्जदार भी हैं, क्योंकि यदि
अन्यजाति उनकी आत्मिक बातों में
भागी हुए, तो उन्हें भी उचित है, कि
शारीरिक बातों में उनकी सेवा करें।
28 इसलिए मैं यह काम पूरा
करके और उनको यह चन्दा सौंपकर
तुम्हारे पास होता हुआ इसपानिया को
जाऊँगा।
29 और मैं जानता हूँ, कि जब मैं
तुम्हारे पास आऊँगा, तो मसीह की
पूरी आशीष के साथ आऊँगा।

30 और हे भाइयों; मैं यीशु मसीह
का जो हमारा प्रभु है और पवित्र
आत्मा के प्रेम का स्मरण दिलाकर,
तुम से विनती करता हूँ, कि मेरे लिये
परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ
मिलकर लौलीन रहो।
31 कि मैं यहूदिया के अविश्वासियों
से बचा रहूँ, और मेरी वह सेवा जो
यरूशलेम के लिये है, पवित्र लोगों को
स्वीकार्य हो।
32 और मैं परमेश्वर की इच्छा से
तुम्हारे पास आनन्द के साथ आकर
तुम्हारे साथ विश्राम पाऊँ।
33 शान्ति का परमेश्वर तुम सब के
साथ रहे। आमीन।

16

[illegible]

§ **15:26** *[illegible]:* मकिदुनिया यूनान का एक देश था और अखाया यूनान को के अधीन एक प्रांत था।

1 मैं तुम से फीबे के लिए, जो हमारी बहन और किंख्रिया की कलीसिया की सेविका है, विनती करता हूँ।

2 कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो; और जिस किसी बात में उसको तुम से प्रयोजन हो, उसकी सहायता करो; क्योंकि वह भी बहुतों की वरन् मेरी भी उपकारिणी हुई है।

[illegible]

3 *[illegible]** और अक्विला को जो यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार।

4 उन्होंने मेरे प्राण के लिये अपना ही सिर दे रखा था और केवल मैं ही नहीं, वरन् अन्यजातियों की सारी कलीसियाएँ भी उनका धन्यवाद करती हैं।

5 और उस कलीसिया को भी नमस्कार जो उनके घर में है। मेरे प्रिय इपैनितुस को जो मसीह के लिये आसिया का पहला फल है, नमस्कार।

6 मरियम को जिसने तुम्हारे लिये बहुत परिश्रम किया, नमस्कार।

7 अन्द्रुनीकुस और यूनियास को जो मेरे कुटुम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे, और प्रेरितों में नामी हैं, और मुझसे पहले मसीही हुए थे, नमस्कार।

8 अम्पलियातुस को, जो प्रभु में मेरा प्रिय है, नमस्कार।

9 उरबानुस को, जो मसीह में हमारा सहकर्मी है, और मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार।

10 अपिल्लेस को जो मसीह में खरा निकला, नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के घराने को नमस्कार।

11 मेरे कुटुम्बी हेरोदियोन को नमस्कार। नरकिस्सुस के घराने के जो लोग प्रभु में हैं, उनको नमस्कार।

12 *[illegible]*† को जो प्रभु में परिश्रम करती हैं, नमस्कार। प्रिय पिरसिस को जिसने प्रभु में बहुत परिश्रम किया, नमस्कार।

13 रूफुस को जो प्रभु में

चुना हुआ है, और उसकी माता को जो मेरी भी है, दोनों को नमस्कार।

14 असुंक्रितुस और फिलगोन और हिर्मेस, पत्रुबास, हर्मास और उनके साथ के भाइयों को नमस्कार।

15 फिलुलुगुस और यूलिया और नेर्युस और उसकी बहन, और उलुम्पास और उनके साथ के सब पवित्र लोगों को नमस्कार।

16 आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो: तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।

[illegible]

17 अब हे भाइयों, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट डालने, और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उनसे सावधान रहो; और उनसे दूर रहो।

18 क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते है; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।

19 तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई है; इसलिए मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूँ; परन्तु मैं यह चाहता हूँ, कि तुम भलाई के लिये बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिये भोले बने रहो।

---

* **16:3** *[illegible]:* प्रिस्का अक्विला की पत्नी थी। † **16:12** *[illegible]:* सम्भवत: ये दो पवित्र महिलाएँ थी, जिन्होंने स्त्री डीकन की भूमिका निभाई थी।

20 *[illegible] [illegible] [illegible]*‡
शैतान को तुम्हारे पाँवों के नीचे शीघ्र
कुचल देगा।

हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह
तुम पर होता रहे। ***([illegible]. 3:15)***

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

21 तीमुथियुस मेरे सहकर्मी का,
और लूकियुस और यासोन और
सोसिपत्रुस मेरे कुटुम्बियों का, तुम
को नमस्कार।
22 मुझ पत्री के लिखनेवाले
तिरतियुस का प्रभु में तुम को
नमस्कार।
23 गयुस का जो मेरी और
कलीसिया का पहुनाई करनेवाला
है उसका तुम्हें नमस्कार: इरास्तुस
जो नगर का भण्डारी है, और भाई
क्वारतुस का, तुम को नमस्कार।
24 हमारे प्रभु यीशु मसीह का
अनुग्रह तुम पर होता रहे। आमीन।

[illegible]

25 अब जो तुम को मेरे सुसमाचार
अर्थात् यीशु मसीह के विषय के प्रचार
के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस
[illegible]§ के प्रकाश के अनुसार जो
सनातन से छिपा रहा।
26 परन्तु अब प्रगट होकर सनातन
परमेश्‍वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं
की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को
बताया गया है, कि वे विश्वास से
आज्ञा माननेवाले हो जाएँ।
27 उसी एकमात्र अद्वैत बुद्धिमान
परमेश्‍वर की यीशु मसीह के द्वारा
युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन।

---

‡ **16:20** *[illegible] [illegible] [illegible]:* परमेश्‍वर जो शान्ति को बढ़ावा देता है; (रोम 15:33)
§ **16:25** *[illegible]:* “भेद” शब्द का सही अर्थ वह जो “छिपा हुआ” या “गुप्त” हैं, और इस तरह से शिक्षाओं के लिए लागू किया जाता है जो पहले से ज्ञात नहीं था।

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहली पत्री

[illegible]

पौलुस को इस पुस्तक का लेखक स्वीकार किया गया (1 कुरि. 1:1-2; 16:21)। इसे पौलुस का पत्र भी कहा जाता है। पौलुस जब इफिसुस नगर में था या वहाँ पहुँचने से पूर्व पौलुस ने यह पत्र कुरिन्थ नगर की कलीसिया को लिखा था। यह पत्र उसके प्रथम पत्र के बाद लिखा गया था (5:10-11)। उस पत्र को कुरिन्थ की कलीसिया ने गलत समझा था। दुर्भाग्य से वह पत्र खो गया है। इस प्रथम पत्र की विषयवस्तु अज्ञात है। यह पत्र पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया द्वारा उसे लिखे गये पत्र के उत्तर में लिखा था। अति सम्भव है कि उन्होंने उस प्रथम पत्र के उत्तर में पौलुस को एक पत्र लिखा था।

[illegible]

लगभग ई.स. 55 - 56

यह पत्र इफिसुस नगर से लिखा गया था। (1 कुरि. 16:8)

[illegible]

पौलुस के इस पत्र के अपेक्षित पाठक थे, कुरिन्थ नगर में परमेश्वर की कलीसिया के सदस्य (1 कुरि. 1:2)। परन्तु पौलुस यह भी लिखता है, “और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।” (1:2)

[illegible]

पौलुस को कुरिन्थ की कलीसिया की वर्तमान परिस्थितियों की जानकारी अनेक स्रोतों से प्राप्त हुई थी। इस पत्र को लिखने के पीछे पौलुस का उद्देश्य था कि कलीसिया की दुर्बलताओं के बारे में उन्हें निर्देश दे और उसका पुनरुद्धार करे और उनके अनुचित अभ्यास जैसे कलीसिया में विभाजन आदि की प्रवृत्ति को दूर करे (1 कुरि. 1:10-4:21)। पुनरुत्थान के बारे में उनमें जो भ्रम उपजाया गया था उसे भी दूर करे। (1 कुरि. 15) तथा अनैतिकता के विरुद्ध अपना निर्णय दे (1 कुरि. 5, 6:12-20)। प्रभु भोज के अपमान को भी सुधारे (1 कुरि. 11:17-34)। कुरिन्थ की कलीसिया को वरदान प्राप्त थे (1:4-7)। परन्तु उनमें परिपक्वता एवं आत्मिकता की कमी थी (3:1-4)। अतः पौलुस ने एक महत्त्वपूर्ण आदर्श स्थापित किया कि कलीसिया में पाप के साथ क्या किया जाये। कलीसिया में विभाजनों तथा अनैतिकता को अनदेखा करने की अपेक्षा पौलुस ने सीधा उसका समाधान किया।

[illegible]

विश्वासियों का चरित्र

रूपरेखा

1. प्रस्तावना — 1:1-9
2. कुरिन्थुस की कलीसिया में विभाजन — 1:10-4:21
3. नैतिकता एवं सदाचार सम्बंधित फूट — 5:1-6:20
4. विवाह के सिद्धान्त — 7:1-40
5. प्रेरितों से सम्बंधित — 8:1-11:1
6. आराधना के निर्देश — 11:2-34
7. आत्मिक उपहार — 12:1-14:40
8. पुनरुत्थान की धर्मशिक्षा — 15:1-16:24

[illegible]

* **1:1** *[illegible]*: से मनुष्य के द्वारा नियुक्ति, या प्राधिकारी नहीं।

1 पौलुस की ओर से जो [illegible]* से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिये बुलाया गया और भाई सोस्थिनेस की ओर से।

2 परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।

3 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

[illegible]

4 मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर का धन्यवाद सदा करता हूँ, इसलिए कि परमेश्वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह यीशु में हुआ,

5 कि उसमें होकर तुम हर बात में अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए।

6 कि मसीह की गवाही तुम में पक्की निकली।

7 यहाँ तक कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की प्रतीक्षा करते रहते हो।

8 वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ भी करेगा, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो।

9 *[illegible]*†; जिसने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है। ***([illegible]. 7:9)***

[illegible]

10 हे भाइयों, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा विनती करता हूँ, कि तुम सब एक ही बात कहो और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।

11 क्योंकि हे मेरे भाइयों, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है, कि तुम में झगड़े हो रहे हैं।

12 मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आपको "पौलुस का," कोई "अपुल्लोस का," कोई "कैफा का," कोई "मसीह का" कहता है।

13 क्या मसीह बँट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला?

14 मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि क्रिस्पुस और गयुस को छोड़, मैंने तुम में से किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया।

15 कहीं ऐसा न हो, कि कोई कहे, कि तुम्हें मेरे नाम पर बपतिस्मा मिला।

16 और मैंने स्तिफनास के घराने को भी बपतिस्मा दिया; इनको छोड़, मैं नहीं जानता कि मैंने और किसी को बपतिस्मा दिया।

17 क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, वरन् सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी मनुष्यों के शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे।

[illegible]

18 क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ्य है।

19 क्योंकि लिखा है,

† **1:9** *[illegible]*: अर्थात्, परमेश्वर विश्वासयोग्य और स्थिर है और अपने वादों का पालन करता है।

"मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करूँगा,
और समझदारों की समझ को तुच्छ
कर दूँगा।" ***([illegible]. 29:14)***
20 कहाँ रहा ज्ञानवान? कहाँ रहा
शास्त्री? कहाँ रहा इस संसार का
विवादी? क्या परमेश्वर ने संसार के
ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया? ***([illegible].
1:22)***
21 क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के
अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को
न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा
लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा
विश्वास करनेवालों को उद्धार दे।
22 यहूदी तो चिन्ह चाहते हैं, और
यूनानी ज्ञान की खोज में हैं,
23 परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए
हुए मसीह का प्रचार करते हैं जो
यहूदियों के निकट ठोकर का कारण,
और अन्यजातियों के निकट मूर्खता है;
24 परन्तु जो बुलाए हुए हैं क्या
यहूदी, क्या यूनानी, उनके निकट
मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य, और
परमेश्वर का ज्ञान है।
25 *[illegible]*‡ मनुष्यों के ज्ञान से
ज्ञानवान है; और परमेश्वर की
निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत
बलवान है।

[illegible]

26 हे भाइयों, अपने बुलाए जाने को
तो सोचो, कि न शरीर के अनुसार बहुत
ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न
बहुत कुलीन बुलाए गए।
27 परन्तु परमेश्वर ने *[illegible]*§ को चुन लिया है, कि
ज्ञानियों को लज्जित करे; और
परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन
लिया है, कि बलवानों को लज्जित
करे।
28 और परमेश्वर ने जगत के नीचों
और तुच्छों को, वरन् जो हैं भी नहीं
उनको भी चुन लिया, कि उन्हें जो हैं,
व्यर्थ ठहराए।
29 ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के
सामने घमण्ड न करने पाए।
30 परन्तु उसी की ओर से तुम
मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर
की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा
अर्थात् धार्मिकता, और पवित्रता, और
छुटकारा। ***([illegible]. 1:7, [illegible]. 8:1)***
31 ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही
हो, "जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड
करे।" ***(2 [illegible]. 10:17)***

2

[illegible]

1 हे भाइयों, जब मैं परमेश्वर का
भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया,
तो वचन या ज्ञान की उत्तमता के साथ
नहीं आया।
2 क्योंकि मैंने यह ठान लिया था, कि
तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन् क्रूस पर
चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी
बात को न जानूँ।
3 और मैं निर्बलता और भय के साथ,
और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ
रहा।
4 और मेरे वचन, और *[illegible]**; परन्तु आत्मा और सामर्थ्य का प्रमाण
था,

‡ **1:25** *[illegible]*: वह जो परमेश्वर नियुक्त करता है, अपेक्षा करता है, आज्ञा देता है, काम करता है, इत्यादि, यह लोगों के सम्मुख मूर्खतापूर्ण लगता है। § **1:27** *[illegible]*: वह बातें जो लोगों के बीच मूर्ख लगती हैं। * **2:4** *[illegible]*: उस प्रकार के वक्तत्व के साथ नहीं जिसे वशीकरण और आकर्षण के लिए अनुकूलित किया गया था।

5 इसलिए कि तुम्हारा विश्वास
मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु
परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर हो।

⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰

6 फिर भी सिद्ध लोगों में हम ज्ञान
सुनाते हैं परन्तु इस संसार का और इस
संसार के नाश होनेवाले हाकिमों का
ज्ञान नहीं;
7 परन्तु हम परमेश्वर का वह गुप्त
ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे
परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा
के लिये ठहराया।
8 जिसे इस संसार के हाकिमों में
से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि
जानते, तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर
न चढ़ाते। ***(⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 13:27)***
9 परन्तु जैसा लिखा है,
"*⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰*†,
और कान ने नहीं सुनी,
और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं
चढ़ी वे ही हैं,
जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों
के लिये तैयार की हैं।" ***(⍰⍰⍰. 64:4)***
10 परन्तु परमेश्वर ने उनको
अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट
किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन्
परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जाँचता है।
11 मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य
की बातें जानता है, केवल मनुष्य
की आत्मा जो उसमें है? वैसे
ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं
जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।
(⍰⍰⍰⍰. 20:27)
12 परन्तु हमने *⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰*
⍰⍰⍰⍰⍰‡ नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया
है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम
उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने
हमें दी हैं।
13 जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान
की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु
पवित्र आत्मा की सिखाई हुई बातों
में, आत्मा, आत्मिक ज्ञान से आत्मिक
बातों की व्याख्या करती है।
14 परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर
के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता,
क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की
बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता
है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति
से होती है।
15 *⍰⍰⍰⍰⍰⍰*§ जन सब कुछ
जाँचता है, परन्तु वह आप किसी से
जाँचा नहीं जाता।
16 "क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना
है, कि उसे सिखाए?"
परन्तु हम में मसीह का मन है। ***(⍰⍰⍰. 40:13)***

3

⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰

1 हे भाइयों, मैं तुम से इस रीति से
बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों
से परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और
उनसे जो मसीह में बालक हैं।
2 मैंने *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰*
*⍰⍰⍰⍰⍰⍰**, अन्न न खिलाया; क्योंकि
तुम उसको न खा सकते थे; वरन् अब
तक भी नहीं खा सकते हो,
3 क्योंकि अब तक शारीरिक हो।
इसलिए, कि जब तुम में ईर्ष्या और
झगड़ा है, तो क्या तुम शारीरिक नहीं?
और मनुष्य की रीति पर नहीं चलते?

---

† **2:9** *⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰:* इसका मतलब कोई भी कभी भी पूरी तरह से न महसूस किया और न समझा था उसकी कीमत और सौन्दर्य जो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए तैयार की हैं। ‡ **2:12** *⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰:* वह बुद्धि और ज्ञान नहीं जो यह संसार दे सकता हैं। § **2:15** *⍰⍰⍰⍰⍰⍰:* वह मनुष्य जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रबुद्ध है * **3:2** *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰:* पौलुस यहाँ पर निरन्तर रूपक देकर बता रहे है, जो शिशुओं को सबसे हल्के भोजन खिलाने के रिवाज से लिया गया है।

4 इसलिए कि जब एक कहता है, "मैं पौलुस का हूँ," और दूसरा, "मैं अपुल्लोस का हूँ," तो क्या तुम मनुष्य नहीं?

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

5 अपुल्लोस कौन है? और पौलुस कौन है? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुम लोगों ने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया।

6 मैंने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।

7 इसलिए न तो लगानेवाला कुछ है, और न सींचनेवाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ानेवाला है।

8 लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं; परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा।

9 क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर की खेती और परमेश्वर के भवन हो।

10 परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया, मैंने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।

11 क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता। ***([illegible]. 28:16)***

12 और यदि कोई इस नींव पर सोना या चाँदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे,

13 तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा; इसलिए कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है।

14 जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा।

15 और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते-जलते।

16 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?

17 यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

18 कोई अपने आपको धोखा न दे। यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आपको ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने कि ज्ञानी हो जाए।

19 क्योंकि इस संसार का ज्ञान परमेश्वर के निकट मूर्खता है, जैसा लिखा है,

"वह ज्ञानियों को उनकी चतुराई में फँसा देता है," ***([illegible]. 5:13)***

20 और फिर, "प्रभु ज्ञानियों के विचारों को जानता है, कि व्यर्थ हैं।" ***([illegible]. 94:11)***

21 इसलिए मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है।

22 क्या पौलुस, क्या अपुल्लोस, क्या कैफा, क्या जगत, क्या जीवन, क्या मरण, क्या वर्तमान, क्या भविष्य, सब कुछ तुम्हारा है,

23 और *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*†, और मसीह परमेश्वर का है।

---

† **3:23** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* तुम उसके हो; इसलिए, आपको यह महसूस नहीं होना चाहिए कि आप किसी सांसारिक अगुओं के प्रति समर्पित हैं।

4

[illegible]

1 मनुष्य हमें मसीह के सेवक और
परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे।
2 फिर यहाँ भण्डारी में यह बात
देखी जाती है, कि विश्वासयोग्य
निकले।
3 परन्तु मेरी दृष्टि में यह बहुत
छोटी बात है, कि तुम या मनुष्यों का
कोई न्यायी मुझे परखे, वरन् मैं आप
ही अपने आपको नहीं परखता।
4 क्योंकि मेरा मन मुझे किसी बात
में दोषी नहीं ठहराता, परन्तु इससे
मैं निर्दोष नहीं ठहरता, क्योंकि मेरा
परखनेवाला प्रभु है। ***([illegible]. 19:12)***
5 इसलिए जब तक प्रभु न आए,
समय से पहले किसी बात का न्याय न
करो: *[illegible]** ज्योति में दिखाएगा, और
मनों के उद्देश्यों को प्रगट करेगा, तब
परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा
होगी।

[illegible]

6 हे भाइयों, मैंने इन बातों में तुम्हारे
लिये अपनी और अपुल्लोस की चर्चा
दृष्टान्त की रीति पर की है, इसलिए
कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो,
कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना,
और एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध
में गर्व न करना।
7 क्योंकि तुझ में और दूसरे में कौन भेद
करता है? और तेरे पास क्या है जो
तूने (दूसरे से) नहीं पाया और जबकि
तूने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड
क्यों करता है, कि मानो नहीं पाया?
8 तुम तो तृप्त हो चुके; तुम धनी हो
चुके, तुम ने हमारे बिना राज्य किया;
परन्तु भला होता कि तुम राज्य करते
कि हम भी तुम्हारे साथ राज्य करते।
9 मेरी समझ में परमेश्वर ने हम
प्रेरितों को सब के बाद उन लोगों के
समान ठहराया है, जिनकी मृत्यु की
आज्ञा हो चुकी हो; क्योंकि हम जगत
और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिये
एक तमाशा ठहरे हैं।
10 *[illegible]*†; परन्तु तुम मसीह में बुद्धिमान
हो; हम निर्बल हैं परन्तु तुम बलवान
हो। तुम आदर पाते हो, परन्तु हम
निरादर होते हैं।
11 हम इस घड़ी तक भूखे प्यासे और
नंगे हैं, और घूसे खाते हैं और मारे-मारे
फिरते हैं;
12 और अपने ही हाथों के काम करके
परिश्रम करते हैं। लोग बुरा कहते हैं,
हम आशीष देते हैं; वे सताते हैं, हम
सहते हैं।
13 वे बदनाम करते हैं, हम विनती
करते हैं हम आज तक जगत के कूड़े
और सब वस्तुओं की खुरचन के समान
ठहरे हैं। ***([illegible]. 3:45)***

[illegible]

14 मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये ये
बातें नहीं लिखता, परन्तु अपने प्रिय
बालक जानकर तुम्हें चिताता हूँ।
15 क्योंकि यदि मसीह में तुम्हारे
सिखानेवाले दस हजार भी होते, तो भी
तुम्हारे पिता बहुत से नहीं, इसलिए
कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा
मैं तुम्हारा पिता हुआ।
16 इसलिए मैं तुम से विनती करता
हूँ, कि मेरी जैसी चाल चलो।

* **4:5** *[illegible]:* मन की छिपी या गुप्त बात जो अंधकार में छिपे हुए के रूप में थी। † **4:10** *[illegible]:* यह जाहिर विडंबना ही है। "निःसंदेह हम मूर्ख लोग हैं, परन्तु हम मसीह में बुद्धिमान हैं।"

17 इसलिए मैंने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है, और वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश देता हूँ।

18 कितने तो ऐसे फूल गए हैं, मानो मैं तुम्हारे पास आने ही का नहीं।

19 परन्तु प्रभु चाहे तो मैं तुम्हारे पास शीघ्र ही आऊँगा, और उन फूले हुओं की बातों को नहीं, परन्तु उनकी सामर्थ्य को जान लूँगा।

20 क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं, परन्तु सामर्थ्य में है।

21 तुम क्या चाहते हो? क्या मैं छड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊँ या प्रेम और नम्रता की आत्मा के साथ?

5

[illegible]

1 यहाँ तक सुनने में आता है, कि तुम में व्यभिचार होता है, वरन् ऐसा व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता, कि एक पुरुष अपने पिता की पत्नी को रखता है। ***([illegible]. 18:8, [illegible]. 22:30)***

2 और तुम शोक तो नहीं करते, जिससे ऐसा काम करनेवाला तुम्हारे बीच में से निकाला जाता, परन्तु घमण्ड करते हो।

3 मैं तो शरीर के भाव से दूर था, परन्तु आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ होकर, मानो उपस्थिति की दशा में ऐसे काम करनेवाले के विषय में न्याय कर चुका हूँ।

4 कि जब तुम, और मेरी आत्मा, हमारे प्रभु यीशु की सामर्थ्य के साथ इकट्ठे हों, तो ऐसा मनुष्य, हमारे प्रभु यीशु के नाम से।

5 शरीर के विनाश के लिये शैतान को सौंपा जाए, ताकि उसकी आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए।

6 तुम्हारा घमण्ड करना अच्छा नहीं; क्या तुम नहीं जानते, कि *[illegible]** पूरे गुँधे हुए आटे को ख़मीर कर देता है।

7 पुराना ख़मीर निकालकर, अपने आपको शुद्ध करो कि नया गूँधा हुआ आटा बन जाओ; ताकि तुम अख़मीरी हो, क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है।

8 इसलिए आओ हम उत्सव में आनन्द मनाएँ, न तो पुराने ख़मीर से और न बुराई और दुष्टता के ख़मीर से, परन्तु सिधाई और सच्चाई की अख़मीरी रोटी से।

[illegible]

9 *[illegible]*†, कि व्यभिचारियों की संगति न करना।

10 यह नहीं, कि तुम बिलकुल इस जगत के व्यभिचारियों, या लोभियों, या अंधेर करनेवालों, या मूर्तिपूजकों की संगति न करो; क्योंकि इस दशा में तो तुम्हें जगत में से निकल जाना ही पड़ता।

11 मेरा कहना यह है; कि यदि कोई भाई कहलाकर, व्यभिचारी, या लोभी, या मूर्तिपूजक, या गाली देनेवाला, या पियक्कड़, या अंधेर करनेवाला हो, तो उसकी संगति मत करना; वरन् ऐसे मनुष्य के साथ खाना भी न खाना।

12 क्योंकि *[illegible]*

---

* **5:6** *[illegible]:* ख़मीर की छोटी सी मात्रा पूरे आटे को ख़मीर बना देता है। † **5:9** *[illegible]:* यह सामान्य तौर पर दर्शाता है कि उसने उन लोगों को लिखा था।

[illegible]‡? क्या तुम भीतरवालों का
न्याय नहीं करते?
13 परन्तु बाहरवालों का न्याय
परमेश्वर करता है:
इसलिए उस कुकर्मी को अपने बीच में
से निकाल दो।

6

[illegible]

1 क्या तुम में से किसी को यह
साहस है, कि जब *[illegible]*
*[illegible]** हो, तो फैसले के लिये
अधर्मियों के पास जाए; और पवित्र
लोगों के पास न जाए?
2 क्या तुम नहीं जानते, कि
[illegible]† जगत का न्याय
करेंगे? और जब तुम्हें जगत का न्याय
करना है, तो क्या तुम छोटे से छोटे
झगड़ों का भी निर्णय करने के योग्य
नहीं? ***([illegible]. 7:22)***
3 क्या तुम नहीं जानते, कि हम
स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो क्या
सांसारिक बातों का निर्णय न करें?
4 यदि तुम्हें सांसारिक बातों का
निर्णय करना हो, तो क्या उन्हीं को
बैठाओगे जो कलीसिया में कुछ नहीं
समझे जाते हैं?
5 मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये यह
कहता हूँ। क्या सचमुच तुम में से एक
भी बुद्धिमान नहीं मिलता, जो अपने
भाइयों का निर्णय कर सके?
6 वरन् भाई-भाई में मुकद्दमा होता
है, और वह भी अविश्वासियों के
सामने।
7 सचमुच तुम में बड़ा दोष तो यह
है, कि आपस में मुकद्दमा करते हो।
वरन् अन्याय क्यों नहीं सहते? अपनी
हानि क्यों नहीं सहते?
8 वरन् अन्याय करते और हानि
पहुँचाते हो, और वह भी भाइयों को।
9 क्या तुम नहीं जानते, कि
अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य
के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ,
न वेश्यागामी, न मूर्तिपूजक, न
परस्त्रीगामी, न लुच्चे, न पुरुषगामी।
10 न चोर, न लोभी, न पियक्कड़,
न गाली देनेवाले, न अंधेर करनेवाले
परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे।
11 और तुम में से कितने ऐसे ही थे,
परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से
और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए
गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।

[illegible]

12 सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो
हैं, परन्तु सब वस्तुएँ लाभ की नहीं,
सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित हैं, परन्तु
मैं किसी बात के अधीन न होऊँगा।
13 भोजन पेट के लिये, और पेट
भोजन के लिये है, परन्तु परमेश्वर
इसको और उसको दोनों को नाश
करेगा, परन्तु देह व्यभिचार के लिये
नहीं, वरन् प्रभु के लिये; और प्रभु देह
के लिये है।
14 और परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य
से प्रभु को जिलाया, और हमें भी
जिलाएगा।
15 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी
देह मसीह के अंग हैं? तो क्या मैं
मसीह के अंग लेकर उन्हें वेश्या के
अंग बनाऊँ? कदापि नहीं।
16 क्या तुम नहीं जानते, कि जो
कोई वेश्या से संगति करता है, वह

‡ **5:12** *[illegible]:* मुझे उन लोगों पर कोई अधिकार नहीं हैं; और हम उन लोगों का न्याय नहीं कर सकते हैं। * **6:1** *[illegible]:* मुकदमेबाजी का एक विषय या मण्डली के किसी अन्य मसीही सदस्य के साथ एक मुकद्दमा। † **6:2** *[illegible]:* रोमियों 1:7 की टिप्पणी देखें।

उसके साथ एक तन हो जाता है क्योंकि लिखा है, "वे दोनों एक तन होंगे।" (मर. 10:8)
17 और [illegible][‡], वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है।
18 व्यभिचार से बचे रहो। जितने और पाप मनुष्य करता है, वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपनी ही देह के विरुद्ध पाप करता है।
19 क्या तुम नहीं जानते, कि [illegible][§]; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?
20 क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।

7

[illegible]

1 उन बातों के विषय में जो तुम ने लिखीं, यह अच्छा है, कि पुरुष स्त्री को न छूए।
2 परन्तु व्यभिचार के डर से हर एक पुरुष की पत्नी, और हर एक स्त्री का पति हो।
3 पति अपनी पत्नी का हक़ पूरा करे; और वैसे ही पत्नी भी अपने पति का।
4 पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं पर उसके पति का अधिकार है; वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं, परन्तु पत्नी को।
5 तुम एक दूसरे से अलग न रहो; परन्तु केवल कुछ समय तक [illegible][*] से कि प्रार्थना के लिये अवकाश मिले, और फिर एक साथ रहो; ऐसा न हो, कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हें परखे।
6 परन्तु मैं जो यह कहता हूँ वह अनुमति है न कि आज्ञा।
7 मैं यह चाहता हूँ, कि जैसा मैं हूँ, वैसा ही सब मनुष्य हों; परन्तु हर एक को [illegible][†] मिले हैं; किसी को किसी प्रकार का, और किसी को किसी और प्रकार का।

[illegible]

8 परन्तु मैं अविवाहितों और विधवाओं के विषय में कहता हूँ, कि उनके लिये ऐसा ही रहना अच्छा है, जैसा मैं हूँ।
9 परन्तु यदि वे संयम न कर सके, तो विवाह करें; क्योंकि विवाह करना कामातुर रहने से भला है।

[illegible]

10 जिनका विवाह हो गया है, उनको मैं नहीं, वरन् प्रभु आज्ञा देता है, कि पत्नी अपने पति से अलग न हो।
11 (और यदि अलग भी हो जाए, तो बिना दूसरा विवाह किए रहे; या अपने पति से फिर मेल कर ले) और न पति अपनी पत्नी को छोड़े।
12 दूसरों से प्रभु नहीं, परन्तु मैं ही कहता हूँ, यदि किसी भाई की पत्नी विश्वास न रखती हो, और उसके साथ रहने से प्रसन्न हो, तो वह उसे न छोड़े।
13 और जिस स्त्री का पति विश्वास न रखता हो, और उसके साथ रहने से प्रसन्न हो; वह पति को न छोड़े।

---

‡ **6:17** [illegible]: सच्चे मसीही, विश्वास के द्वारा प्रभु यीशु के साथ एकजुट रहते हैं। § **6:19** [illegible]: पवित्र आत्मा हम में निवास करता है और हमारा शरीर उनका मन्दिर है और वह पाप से अशुद्ध और दूषित नहीं होना चाहिए। * **7:5** [illegible]: परिपक्व समझदारी के साथ रहें, कि आप प्रार्थना और उपासना में संलग्न रह सके। † **7:7** [illegible]: हर मनुष्य को अपनी ही विशेष प्रतिभा या उत्कृष्टता होती है।

14 क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास
न रखता हो, वह पत्नी के कारण
पवित्र ठहरता है, और ऐसी पत्नी जो
विश्वास नहीं रखती, पति के कारण
पवित्र ठहरती है; नहीं तो तुम्हारे बाल-
बच्चे अशुद्ध होते, परन्तु अब तो पवित्र
हैं।
15 परन्तु जो पुरुष विश्वास नहीं
रखता, यदि वह अलग हो, तो अलग
होने दो, ऐसी दशा में कोई भाई या
बहन बन्धन में नहीं; परन्तु परमेश्वर
ने तो हमें मेल-मिलाप के लिये बुलाया
है।
16 क्योंकि हे स्त्री, तू क्या जानती है,
कि तू अपने पति का उद्धार करा लेगी?
और हे पुरुष, तू क्या जानता है कि तू
अपनी पत्नी का उद्धार करा लेगा?

[illegible]

17 पर जैसा प्रभु ने हर एक को बाँटा
है, और जैसा [illegible]‡; वैसा ही वह चले:
और मैं सब कलीसियाओं में ऐसा ही
ठहराता हूँ।
18 जो खतना किया हुआ बुलाया
गया हो, वह खतनारहित न बने:
जो खतनारहित बुलाया गया हो, वह
खतना न कराए।
19 न खतना कुछ है, और न
खतनारहित परन्तु परमेश्वर की
आज्ञाओं को मानना ही सब कुछ है।
20 हर एक जन जिस दशा में बुलाया
गया हो, उसी में रहे।
21 यदि तू दास की दशा में बुलाया
गया हो तो चिन्ता न कर; परन्तु यदि तू
स्वतंत्र हो सके, तो ऐसा ही काम कर।
22 क्योंकि जो दास की दशा में
प्रभु में बुलाया गया है, वह प्रभु का
स्वतंत्र किया हुआ है और वैसे ही जो
स्वतंत्रता की दशा में बुलाया गया है,
वह मसीह का दास है।
23 तुम दाम देकर मोल लिये गए
हो, मनुष्यों के दास न बनो।
24 हे भाइयों, जो कोई जिस दशा में
बुलाया गया हो, वह उसी में परमेश्वर
के साथ रहे।

[illegible]

25 कुँवारियों के विषय में प्रभु की
कोई आज्ञा मुझे नहीं मिली, परन्तु
विश्वासयोग्य होने के लिये जैसी दया
प्रभु ने मुझ पर की है, उसी के अनुसार
सम्मति देता हूँ।
26 इसलिए मेरी समझ में यह
अच्छा है, कि आजकल क्लेश के
कारण मनुष्य जैसा है, वैसा ही रहे।
27 यदि तेरे पत्नी है, तो उससे
अलग होने का यत्न न कर: और यदि
तेरे पत्नी नहीं, तो पत्नी की खोज न
कर:
28 परन्तु यदि तू विवाह भी करे,
तो पाप नहीं; और यदि कुँवारी ब्याही
जाए तो कोई पाप नहीं; परन्तु ऐसों को
शारीरिक दुःख होगा, और मैं बचाना
चाहता हूँ।
29 हे भाइयों, मैं यह कहता हूँ, कि
समय कम किया गया है, इसलिए
चाहिए कि जिनके पत्नी हों, वे ऐसे हों
मानो उनके पत्नी नहीं।
30 और रोनेवाले ऐसे हों, मानो रोते
नहीं; और आनन्द करनेवाले ऐसे हों,
मानो आनन्द नहीं करते; और मोल
लेनेवाले ऐसे हों, कि मानो उनके पास
कुछ है नहीं।
31 और इस संसार के साथ व्यवहार
करनेवाले ऐसे हों, कि संसार ही के न

‡ **7:17** [illegible]: विश्वासियों को उनके जीवन की परिस्थिति या बुलाहट को बदलने के लिए कोशिश नहीं करनी चाहिए, परन्तु उन परिस्थितियों में बने रहना चाहिए जिनमें वे जब विश्वासी बने थे।

हो लें; क्योंकि इस संसार की रीति और
व्यवहार बदलते जाते हैं।
32 मैं यह चाहता हूँ, कि तुम्हें चिन्ता
न हो। अविवाहित पुरुष प्रभु की बातों
की चिन्ता में रहता है, कि प्रभु को कैसे
प्रसन्न रखे।
33 परन्तु विवाहित मनुष्य संसार
की बातों की चिन्ता में रहता है, कि
अपनी पत्नी को किस रीति से प्रसन्न
रखे।
34 विवाहिता और अविवाहिता में
भी भेद है: अविवाहिता प्रभु की
चिन्ता में रहती है, कि वह देह और
आत्मा दोनों में पवित्र हो, परन्तु
विवाहिता संसार की चिन्ता में रहती
है, कि अपने पति को प्रसन्न रखे।
35 यह बात तुम्हारे ही लाभ के
लिये कहता हूँ, न कि तुम्हें फँसाने के
लिये, वरन् इसलिए कि जैसा उचित
है; ताकि तुम एक चित्त होकर प्रभु की
सेवा में लगे रहो।
36 और यदि कोई यह समझे, कि मैं
अपनी उस कुँवारी का हक़ मार रहा
हूँ, जिसकी जवानी ढल रही है, और
प्रयोजन भी हो, तो जैसा चाहे, वैसा
करे, इसमें पाप नहीं, वह उसका विवाह
होने दे।
37 परन्तु यदि वह मन में फैसला
करता है, और कोई अत्यावश्यकता
नहीं है, और वह अपनी अभिलाषाओं
को नियंत्रित कर सकता है, तो वह
विवाह न करके अच्छा करता है।
38 तो जो अपनी कुँवारी का विवाह
कर देता है, वह अच्छा करता है और
जो विवाह नहीं कर देता, वह और भी
अच्छा करता है।
39 जब तक किसी स्त्री का पति
जीवित रहता है, तब तक वह उससे
बंधी हुई है, परन्तु जब उसका पति
मर जाए, तो जिससे चाहे विवाह कर
सकती है, परन्तु केवल प्रभु में।
40 परन्तु जैसी है यदि वैसी ही रहे,
तो मेरे विचार में और भी धन्य है, और
मैं समझता हूँ, कि परमेश्वर का आत्मा
मुझ में भी है।

8

[illegible]

1 अब मूरतों के सामने बलि की हुई
वस्तुओं के विषय में हम जानते हैं,
कि हम सब को ज्ञान है: ज्ञान घमण्ड
उत्पन्न करता है, परन्तु प्रेम से उन्नति
होती है।
2 यदि कोई समझे, कि मैं कुछ
जानता हूँ, तो जैसा जानना चाहिए
वैसा अब तक नहीं जानता।
3 *[illegible]**, तो उसे परमेश्वर पहचानता है।
4 अतः मूरतों के सामने बलि की
हुई वस्तुओं के खाने के विषय में हम
जानते हैं, कि *[illegible]*†, और एक को छोड़
और कोई परमेश्वर नहीं। ***([illegible]. 4:39)***
5 यद्यपि आकाश में और पृथ्वी पर
बहुत से ईश्वर कहलाते हैं, (जैसा कि
बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं)।
6 तो भी हमारे निकट तो एक ही
परमेश्वर है:
अर्थात् पिता जिसकी ओर से सब
वस्तुएँ हैं, और हम उसी के
लिये हैं,
और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु
मसीह

---

* **8:3** *[illegible]:* यदि कोई व्यक्ति सही मायने में परमेश्वर से जुड़ा हुआ है; यदि वह उनकी सेवा करने के लिए प्रयास करता है। † **8:4** *[illegible]:* सच्चा परमेश्वर नहीं है, आराधना करने के लिए एक उचित विषय नहीं है।

जिसके द्वारा सब वस्तुएँ हुईं, और हम
भी उसी के द्वारा हैं। ***(▯▯▯. 1:3, ▯▯▯. 11:36)***
7 परन्तु सब को यह ज्ञान नहीं;
परन्तु कितने तो अब तक मूरत को
कुछ समझने के कारण मूरतों के सामने
बलि की हुई को कुछ वस्तु समझकर
खाते हैं, और उनका विवेक निर्बल
होकर अशुद्ध होता है।
8 भोजन हमें परमेश्वर के निकट
नहीं पहुँचाता, यदि हम न खाएँ, तो
हमारी कुछ हानि नहीं, और यदि खाएँ,
तो कुछ लाभ नहीं।
9 परन्तु चौकस रहो, ऐसा न हो, कि
तुम्हारी यह स्वतंत्रता कहीं निर्बलों के
लिये ठोकर का कारण हो जाए।
10 क्योंकि यदि कोई तुझ ज्ञानी को
मूरत के मन्दिर में भोजन करते देखे,
और वह निर्बल जन हो, तो क्या उसके
विवेक में मूरत के सामने बलि की हुई
वस्तु के खाने का साहस न हो जाएगा।
11 इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण
वह निर्बल भाई जिसके लिये मसीह
मरा नाश हो जाएगा।
12 तो भाइयों का अपराध करने से
और उनके निर्बल विवेक को चोट देने
से तुम मसीह का अपराध करते हो।
13 इस कारण यदि भोजन मेरे भाई
को ठोकर खिलाएँ, तो मैं कभी किसी
रीति से माँस न खाऊँगा, न हो कि मैं
अपने भाई के ठोकर का कारण बनूँ।

9

▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯

1 *▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯
▯▯▯▯**? क्या मैं प्रेरित नहीं? क्या
मैंने यीशु को जो हमारा प्रभु है, नहीं
देखा? क्या तुम प्रभु में मेरे बनाए हुए
नहीं?
2 यदि मैं औरों के लिये प्रेरित नहीं,
फिर भी तुम्हारे लिये तो हूँ; क्योंकि तुम
प्रभु में मेरी प्रेरिताई पर छाप हो।
3 जो मुझे जाँचते हैं, उनके लिये
यही मेरा उत्तर है।
4 क्या हमें खाने-पीने का अधिकार
नहीं?
5 क्या हमें यह अधिकार नहीं, कि
किसी मसीही बहन को विवाह करके
साथ लिए फिरें, जैसा अन्य प्रेरित और
प्रभु के भाई और कैफा करते हैं?
6 या केवल मुझे और बरनबास को
ही जीवन निर्वाह के लिए काम करना
चाहिए।
7 कौन कभी अपनी गिरह से खाकर
सिपाही का काम करता है? कौन दाख
की बारी लगाकर उसका फल नहीं
खाता? कौन भेड़ों की रखवाली करके
उनका दूध नहीं पीता?
8 क्या मैं ये बातें मनुष्य ही की रीति
पर बोलता हूँ?
9 क्या व्यवस्था भी यही नहीं
कहती? क्योंकि मूसा की व्यवस्था
में लिखा है "दाँवते समय चलते हुए
बैल का मुँह न बाँधना।" क्या परमेश्वर
बैलों ही की चिन्ता करता है? ***(▯▯▯▯. 25:4)***
10 या विशेष करके हमारे लिये
कहता है। हाँ, हमारे लिये ही
लिखा गया, क्योंकि उचित है, कि
जोतनेवाला आशा से जोते, और
दाँवनेवाला भागी होने की आशा से
दाँवनी करे।
11 यदि हमने तुम्हारे लिये आत्मिक
वस्तुएँ बोईं, तो क्या यह कोई बड़ी
बात है, कि तुम्हारी शारीरिक वस्तुओं
की फसल काटें।
12 जब औरों का तुम पर यह
अधिकार है, तो क्या हमारा इससे

* **9:1** *▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯:* क्या मैं एक स्वतंत्र व्यक्ति नहीं हूँ; क्या मेरे पास स्वाधीनता नहीं जो सभी विश्वासियों के अधिकार में हैं।

अधिक न होगा? परन्तु हम यह अधिकार काम में नहीं लाए; परन्तु सब कुछ सहते हैं, कि हमारे द्वारा मसीह के सुसमाचार की कुछ रोक न हो।

13 क्या तुम नहीं जानते कि जो मन्दिर में सेवा करते हैं, वे मन्दिर में से खाते हैं; और जो वेदी की सेवा करते हैं; वे वेदी के साथ भागी होते हैं? ***([illegible]. 6:16, [illegible]. 6:26, [illegible]. 18:1-3)***

14 इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया, कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उनकी जीविका सुसमाचार से हो।

15 परन्तु मैं इनमें से कोई भी बात काम में न लाया, और मैंने तो ये बातें इसलिए नहीं लिखीं, कि मेरे लिये ऐसा किया जाए, क्योंकि इससे तो मेरा मरना ही भला है; कि कोई मेरा घमण्ड व्यर्थ ठहराए।

16 यदि मैं सुसमाचार सुनाऊँ, तो मेरा कुछ घमण्ड नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है; और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊँ, तो मुझ पर हाय!

17 क्योंकि यदि अपनी इच्छा से यह करता हूँ, तो मजदूरी मुझे मिलती है, और यदि अपनी इच्छा से नहीं करता, तो भी भण्डारीपन मुझे सौंपा गया है।

18 तो फिर मेरी कौन सी मजदूरी है? यह कि सुसमाचार सुनाने में मैं मसीह का सुसमाचार सेंत-मेंत कर दूँ; यहाँ तक कि सुसमाचार में जो मेरा अधिकार है, उसको मैं पूरी रीति से काम में लाऊँ।

[illegible]

19 क्योंकि सबसे स्वतंत्र होने पर भी *[illegible]*† है; कि अधिक लोगों को खींच लाऊँ।

20 मैं यहूदियों के लिये यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊँ, जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उनके लिये मैं व्यवस्था के अधीन न होने पर भी व्यवस्था के अधीन बना, कि उन्हें जो व्यवस्था के अधीन हैं, खींच लाऊँ।

21 व्यवस्थाहीनों के लिये मैं (जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के अधीन हूँ) व्यवस्थाहीन सा बना, कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊँ।

22 मैं *[illegible]*‡ निर्बल सा बना, कि निर्बलों को खींच लाऊँ, मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूँ, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ।

23 और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूँ, कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊँ।

[illegible]

24 क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो, कि जीतो।

25 और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुर्झानेवाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिये करते हैं, जो मुर्झाने का नहीं।

26 इसलिए मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूँ, परन्तु बेठिकाने नहीं, मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूँ, परन्तु उसके समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है।

---

† **9:19** *[illegible]:* मैंने अपने आपको सब का दास बना दिया हैं, मैं उनके या उनकी सेवा के लिए परिश्रम, और उनकी भलाई के लिए बढ़ावा देता हूँ। ‡ **9:22** *[illegible]:* विश्वास में कमजोर लोगों के लिए, जिसका विवेक कोमल और अज्ञात था।

27 परन्तु मैं अपनी देह को मारता
कूटता, और वश में लाता हूँ; ऐसा न
हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप
ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ।

10

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 हे भाइयों, मैं नहीं चाहता, कि
तुम इस बात से अज्ञात रहो, कि हमारे
सब पूर्वज बादल के नीचे थे, और सब
के सब समुद्र के बीच से पार हो गए।
([illegible]. 14:29)
2 और सब ने बादल में, और समुद्र
में, मूसा का बपतिस्मा लिया।
3 और सब ने एक ही आत्मिक
भोजन किया। ***([illegible]. 16:35, [illegible]. 8:3)***
4 और सब ने एक ही आत्मिक
जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक
चट्टान से पीते थे, जो उनके साथ-साथ
चलती थी; और वह चट्टान मसीह था।
([illegible]. 17:6, [illegible]. 20:11)
5 परन्तु परमेश्वर उनमें से बहुतों से
प्रसन्न ना था, इसलिए वे जंगल में ढेर
हो गए। ***([illegible]. 3:17)***
6 ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरीं,
कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम
बुरी वस्तुओं का लालच न करें।
7 और न तुम मूरत पूजनेवाले बनो;
जैसे कि उनमें से कितने बन गए थे,
जैसा लिखा है, "लोग खाने-पीने बैठे,
और खेलने-कूदने उठे।"
8 और न हम व्यभिचार करें; जैसा
उनमें से कितनों ने किया और एक
दिन में तेईस हजार मर गये। ***([illegible]. 25:1, [illegible]. 25:9)***
9 और न हम प्रभु को परखें; जैसा
उनमें से कितनों ने किया, और साँपों के
द्वारा नाश किए गए। ***([illegible]. 21:5-6)***
10 और न तुम कुड़कुड़ाओ, जिस
रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए,
और नाश करनेवाले के द्वारा नाश किए
गए।
11 परन्तु ये सब बातें, जो उन पर
पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे
हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के
अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं।
12 इसलिए जो समझता है, "मैं
स्थिर हूँ," वह चौकस रहे; कि कहीं गिर
न पड़े।
13 तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं
पड़े, जो मनुष्य के सहने के बाहर
है: और परमेश्वर विश्वासयोग्य है:
वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में
न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ
निकास भी करेगा; कि तुम सह सको।
(2 [illegible]. 2:9)

[illegible] [illegible]

14 इस कारण, हे मेरे प्यारों
*[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]**।
15 मैं बुद्धिमान जानकर, तुम से
कहता हूँ: जो मैं कहता हूँ, उसे तुम
परखो।
16 वह *[illegible] [illegible] [illegible]*†,
जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या
वह मसीह के लहू की सहभागिता
नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं,
क्या मसीह की देह की सहभागिता
नहीं?
17 इसलिए, कि एक ही रोटी है तो
हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं क्योंकि
हम सब उसी एक रोटी में भागी होते
हैं।

* **10:14** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* मंदिरों से, जहाँ मूर्तियों की पूजा होती है, उनकी सेवा करने से बचो। † **10:16** *[illegible] [illegible] [illegible]:* प्रभु भोज में भाग लेने के द्वारा, वे उन्हें अपने प्रभु के रूप में स्वीकार करते हैं, और वे अपने आपको उन्हें समर्पित करते हैं।

18 जो शरीर के भाव से इस्राएली
हैं, उनको देखो: क्या बलिदानों के
खानेवाले वेदी के सहभागी नहीं?
19 फिर मैं क्या कहता हूँ? क्या यह
कि मूर्ति का बलिदान कुछ है, या मूरत
कुछ है?
20 नहीं, बस यह, कि अन्यजाति
जो बलिदान करते हैं, वे परमेश्वर के
लिये नहीं, परन्तु *[illegible]*
[illegible]‡ करते हैं और मैं
नहीं चाहता, कि तुम दुष्टात्माओं के
सहभागी हो। ***([illegible]. 32:17)***
21 तुम प्रभु के कटोरे, और
दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं
पी सकते! तुम प्रभु की मेज और
दुष्टात्माओं की मेज दोनों के सहभागी
नहीं हो सकते। ***([illegible] 6:24)***
22 क्या हम प्रभु को क्रोध दिलाते
हैं? क्या हम उससे शक्तिमान हैं?
([illegible]. 32:21)

[illegible]

23 सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो
हैं, परन्तु सब लाभ की नहीं। सब
वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु
सब वस्तुओं से उन्नति नहीं।
24 कोई अपनी ही भलाई को न ढूँढ़े
वरन् औरों की।
25 जो कुछ कसाइयों के यहाँ
बिकता है, वह खाओ और विवेक के
कारण कुछ न पूछो।
26 "क्योंकि पृथ्वी और उसकी
भरपूरी प्रभु की है।" ***([illegible]. 24:1)***
27 और यदि अविश्वासियों में से
कोई तुम्हें नेवता दे, और तुम जाना
चाहो, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा
जाए वही खाओ: और विवेक के कारण
कुछ न पूछो।
28 परन्तु यदि कोई तुम से कहे, "यह
तो मूरत को बलि की हुई वस्तु है," तो
उसी बतानेवाले के कारण, और विवेक
के कारण न खाओ।
29 मेरा मतलब, तेरा विवेक नहीं,
परन्तु उस दूसरे का। भला, मेरी
स्वतंत्रता दूसरे के विचार से क्यों परखी
जाए?
30 यदि मैं धन्यवाद करके सहभागी
होता हूँ, तो जिस पर मैं धन्यवाद
करता हूँ, उसके कारण मेरी बदनामी
क्यों होती है?
31 इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे
पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ
परमेश्वर की महिमा के लिये करो।
32 तुम न यहूदियों, न यूनानियों,
और न परमेश्वर की कलीसिया के
लिये *[illegible]*§ बनो।
33 जैसा मैं भी सब बातों में सब
को प्रसन्न रखता हूँ, और अपना नहीं,
परन्तु बहुतों का लाभ ढूँढ़ता हूँ, कि वे
उद्धार पाएँ।

11

[illegible]

1 तुम मेरी जैसी चाल चलो जैसा मैं
मसीह के समान चाल चलता हूँ।
2 मैं तुम्हें सराहता हूँ, कि सब बातों
में तुम मुझे स्मरण करते हो; और जो
व्यवहार मैंने तुम्हें सौंप दिए हैं, उन्हें
धारण करते हो।
3 पर मैं चाहता हूँ, कि तुम यह जान
लो, कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है:
और स्त्री का सिर पुरुष है: और मसीह
का सिर परमेश्वर है।

‡ **10:20** *[illegible]*: यह आमतौर पर आत्माओं को संदर्भित करता है कि सर्वोच्च परमेश्वर को नीचा दिखाएँ। § **10:32** *[illegible]*: निरापराध रहो, वह यह है कि पाप में दूसरों का नेतृत्व करने के जैसा काम मत करो।

4 जो पुरुष सिर ढाँके हुए प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है।

5 परन्तु जो स्त्री बिना सिर ढके प्रार्थना या भविष्यद्वाणी करती है, वह अपने सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह मुँण्डी होने के बराबर है।

6 यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े, तो बाल भी कटा ले; यदि स्त्री के लिये बाल कटाना या मुण्डाना लज्जा की बात है, तो ओढ़नी ओढ़े।

7 हाँ पुरुष को अपना सिर ढाँकना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है; परन्तु स्त्री पुरुष की शोभा है। ***(1 [illegible]. 11:3)***

8 क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई है। ***([illegible]. 2:21-23)***

9 और *[illegible]*[*], परन्तु स्त्री पुरुष के लिये सिरजी गई है। ***([illegible]. 2:18)***

10 इसलिए स्वर्गदूतों के कारण स्त्री को उचित है, कि अधिकार अपने सिर पर रखे।

11 तो भी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष और न पुरुष बिना स्त्री के है।

12 क्योंकि जैसे *[illegible]*[†], वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है; परन्तु सब वस्तुएँ परमेश्वर से हैं।

13 तुम स्वयं ही विचार करो, क्या स्त्री को बिना सिर ढके परमेश्वर से प्रार्थना करना उचित है?

14 क्या स्वाभाविक रीति से भी तुम नहीं जानते, कि यदि पुरुष लम्बे बाल रखे, तो उसके लिये अपमान है।

15 परन्तु यदि स्त्री लम्बे बाल रखे; तो उसके लिये शोभा है क्योंकि बाल उसको ओढ़नी के लिये दिए गए हैं।

16 परन्तु यदि कोई विवाद करना चाहे, तो यह जाने कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं की ऐसी रीति है।

[illegible]

17 परन्तु यह निर्देश देते हुए, मैं तुम्हें नहीं सराहता, इसलिए कि तुम्हारे इकट्ठे होने से भलाई नहीं, परन्तु हानि होती है।

18 क्योंकि पहले तो मैं यह सुनता हूँ, कि जब तुम कलीसिया में इकट्ठे होते हो, तो तुम में फूट होती है और मैं कुछ कुछ विश्वास भी करता हूँ।

19 क्योंकि विधर्म भी तुम में अवश्य होंगे, इसलिए कि जो लोग तुम में खरे निकले हैं, वे प्रगट हो जाएँ।

20 *[illegible]*[‡] तो यह प्रभु भोज खाने के लिये नहीं।

21 क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहले अपना भोज खा लेता है, तब कोई भूखा रहता है, और कोई मतवाला हो जाता है।

22 क्या खाने-पीने के लिये तुम्हारे घर नहीं? या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिनके पास नहीं है उन्हें लज्जित करते हो? मैं तुम से क्या कहूँ? क्या इस बात में तुम्हारी प्रशंसा करूँ? मैं प्रशंसा नहीं करता।

23 क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुँची, और मैंने तुम्हें भी पहुँचा दी; कि प्रभु यीशु ने जिस रात पकड़वाया गया रोटी ली,

---

* **11:9** *[illegible]:* स्त्री को पुरुष के आराम और खुशी के लिये बनाया गया था। एक दास होने के लिये नहीं। † **11:12** *[illegible]:* मूल रचना में, वह पुरुष से बनाई गई थी। ‡ **11:20** *[illegible]:* यह सम्भव है कि इस शुरुआती समय में कुरिन्थुस के सब विश्वासी एक ही स्थान पर मिलने के आदी थे।

24 और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा, **“यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।”**

25 इसी रीति से उसने बियारी के बाद कटोरा भी लिया, और कहा, **“यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।”*(*[illegible] *22:20)***

26 क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।

27 इसलिए जो कोई *[illegible]*§ प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा।

28 इसलिए मनुष्य अपने आपको जाँच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए।

29 क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है।

30 इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए।

31 यदि हम अपने आपको जाँचते, तो दण्ड न पाते।

32 परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।

33 इसलिए, हे मेरे भाइयों, जब तुम खाने के लिये इकट्ठे होते हो, तो एक दूसरे के लिये ठहरा करो।

34 यदि कोई भूखा हो, तो अपने घर में खा ले जिससे तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो। और शेष बातों को मैं आकर ठीक कर दूँगा।

12

[illegible]

1 हे भाइयों, मैं नहीं चाहता कि तुम *[illegible]** के विषय में अज्ञात रहो।

2 तुम जानते हो, कि जब तुम अन्यजाति थे, तो गूँगी मूरतों के पीछे जैसे चलाए जाते थे वैसे चलते थे। ***(*[illegible]*. 4:8)***

3 इसलिए मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुआई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु श्रापित है; और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है।

4 वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है।

5 और सेवा भी कई प्रकार की है, परन्तु प्रभु एक ही है।

6 और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।

7 किन्तु सब के लाभ पहुँचाने के लिये हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।

8 क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें।

9 और किसी को उसी आत्मा से विश्वास; और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है।

10 फिर किसी को सामर्थ्य के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को

§ **11:27** *[illegible]:* इसका ठीक मतलब यह है, उद्देश्यों के लिए अनुपयुक्त तरीके से जिस काम के लिये यह रूपांकित किया गया था।

* **12:1** *[illegible]:* कुछ भी वह जो एक आत्मिक स्वभाव का है।

अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को
भाषाओं का अर्थ बताना।
11 परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य
वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे
जो चाहता है वह बाँट देता है।

[illegible]

12 क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक
है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस
एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी
सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार
मसीह भी है।
13 क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो,
क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र
[illegible]† एक
देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और
हम सब को एक ही आत्मा पिलाया
गया।
14 इसलिए कि देह में एक ही अंग
नहीं, परन्तु बहुत से हैं।
15 यदि पाँव कहे: कि मैं हाथ नहीं,
इसलिए देह का नहीं, तो क्या वह इस
कारण देह का नहीं?
16 और यदि कान कहे, "मैं आँख
नहीं, इसलिए देह का नहीं," तो क्या
वह इस कारण देह का नहीं?
17 यदि सारी देह आँख ही होती तो
सुनना कहाँ से होता? यदि सारी देह
कान ही होती तो सूँघना कहाँ होता?
18 परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों
को अपनी इच्छा के अनुसार एक-एक
करके देह में रखा है।
19 यदि वे सब एक ही अंग होते, तो
देह कहाँ होती?
20 परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं,
परन्तु देह एक ही है।
21 आँख हाथ से नहीं कह सकती,
"मुझे तेरा प्रयोजन नहीं," और न सिर
पाँवों से कह सकता है, "मुझे तुम्हारा
प्रयोजन नहीं।"
22 परन्तु देह के वे अंग जो औरों
से *[illegible]*‡ देख पड़ते हैं, बहुत ही
आवश्यक हैं।
23 और देह के जिन अंगों को
हम कम आदरणीय समझते हैं उन्हीं
को हम अधिक आदर देते हैं; और
हमारे शोभाहीन अंग और भी बहुत
शोभायमान हो जाते हैं,
24 फिर भी हमारे शोभायमान
अंगों को इसका प्रयोजन नहीं, परन्तु
परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया
है, कि जिस अंग को घटी थी उसी को
और भी बहुत आदर हो।
25 ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु
अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें।
26 इसलिए यदि एक अंग दुःख
पाता है, तो सब अंग उसके साथ
दुःख पाते हैं; और यदि एक अंग की
बड़ाई होती है, तो उसके साथ सब अंग
आनन्द मनाते हैं।
27 इसी प्रकार तुम सब मिलकर
मसीह की देह हो, और अलग-अलग
उसके अंग हो।
28 और परमेश्वर ने कलीसिया में
अलग-अलग व्यक्ति नियुक्त किए
हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता,
तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ्य के काम
करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और
उपकार करनेवाले, और प्रधान, और
नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले।
29 क्या सब प्रेरित हैं? क्या सब
भविष्यद्वक्ता हैं? क्या सब उपदेशक
हैं? क्या सब सामर्थ्य के काम
करनेवाले हैं?
30 क्या सब को चंगा करने का
वरदान मिला है? क्या सब नाना प्रकार

† **12:13** *[illegible]:* यह वह है, एक ही आत्मा, पवित्र आत्मा के द्वारा हम एक ही शरीर में संयुक्त हैं। ‡ **12:22** *[illegible]:* बाकी की तुलना में निर्बल; जो थकान को सहन करने और कठिनाइयों का सामना करने के लिए कम सक्षम लगते हैं।

की भाषा बोलते हैं?
31 क्या सब अनुवाद करते हैं? तुम
बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहो!
परन्तु मैं तुम्हें और भी सबसे उत्तम
मार्ग बताता हूँ।

13

[illegible]

1 यदि मैं मनुष्यों, और स्वर्गदूतों की
बोलियाँ बोलूँ, और प्रेम न रखूँ, तो मैं
ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती
हुई झाँझ हूँ।
2 और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूँ,
और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान
को समझूँ, और मुझे यहाँ तक पूरा
विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा
दूँ, परन्तु प्रेम न रखूँ, तो मैं *[illegible]**।
3 और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण
सम्पत्ति कंगालों को खिला दूँ, या
अपनी देह जलाने के लिये दे दूँ, और
प्रेम न रखूँ, तो मुझे कुछ भी लाभ
नहीं।
4 प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है;
प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई
नहीं करता, और फूलता नहीं।
5 अशोभनीय व्यवहार नहीं करता,
वह अपनी भलाई नहीं चाहता,
झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।
6 कुकर्म से आनन्दित नहीं होता,
परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।
7 वह सब बातें सह लेता है, सब
बातों पर विश्वास करता है, *[illegible]*†, सब
बातों में धीरज धरता है। ***(1 [illegible]. 13:4)***
8 प्रेम कभी टलता नहीं;
भविष्यद्वाणियाँ हों, तो समाप्त हो
जाएँगी, भाषाएँ मौन हो जाएँगी;
ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।
9 क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और
हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी।
10 परन्तु जब *[illegible]*‡
आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।
11 जब मैं बालक था, तो मैं बालकों
के समान बोलता था, बालकों के
समान मन था बालकों सी समझ थी;
परन्तु सयाना हो गया, तो बालकों की
बातें छोड़ दीं।
12 अब हमें दर्पण में धुँधला सा
दिखाई देता है; परन्तु उस समय
आमने-सामने देखेंगे, इस समय मेरा
ज्ञान अधूरा है; परन्तु उस समय ऐसी
पूरी रीति से पहचानूँगा, जैसा मैं
पहचाना गया हूँ।
13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये
तीनों *[illegible]*§ हैं, पर इनमें सबसे
बड़ा प्रेम है।

14

[illegible]

1 *[illegible]**,
और आत्मिक वरदानों की भी धुन में
रहो विशेष करके यह, कि भविष्यद्वाणी
करो।
2 क्योंकि जो *[illegible]*† में बातें
करता है; वह मनुष्यों से नहीं, परन्तु
परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए

---

* **13:2** *[illegible]*: इन सभी का कोई मूल्य नहीं होगा। यह मुझे उद्धार नहीं देगा। † **13:7** *[illegible]*: आशा जो सब बातों को अच्छाई में बदल देगा। ‡ **13:10** *[illegible]*: इसका मतलब यह है कि जब कोई वह चीज जो उत्तम दिखती है या आनन्द लिया जाता है, तब वह जो उत्तम नहीं है भूला दिया जाता हैं। § **13:13** *[illegible]*: यह “नित्यता” को दर्शाता है, जब अन्य सब बातें समाप्त हो जाएँगी, विश्वास, आशा, और प्रेम “स्थायी” रहेंगे। * **14:1** *[illegible]*: अर्थात्, उत्सुकता से उसकी लालसा करो; उसको धारण करने के लिए प्रयास करो। † **14:2** *[illegible]*: यदि वह इस तरह से परमेश्वर से बात करता हों। कोई भी उसे समझ नहीं सकता परन्तु परमेश्वर समझता हैं।

कि उसकी बातें कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।

3 परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति, और उपदेश, और शान्ति की बातें कहता है।

4 जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह अपनी ही उन्नति करता है; परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह कलीसिया की उन्नति करता है।

5 मैं चाहता हूँ, कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो, परन्तु अधिकतर यह चाहता हूँ कि भविष्यद्वाणी करो: क्योंकि यदि अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिये अनुवाद न करे तो भविष्यद्वाणी करनेवाला उससे बढ़कर है।

[illegible]

6 इसलिए हे भाइयों, यदि मैं तुम्हारे पास आकर अन्य भाषा में बातें करूँ, और प्रकाश, या ज्ञान, या भविष्यद्वाणी, या उपदेश की बातें तुम से न कहूँ, तो मुझसे तुम्हें क्या लाभ होगा?

7 इसी प्रकार यदि निर्जीव वस्तुएँ भी, जिनसे ध्वनि निकलती है जैसे बाँसुरी, या बीन, यदि उनके स्वरों में भेद न हो तो जो फूँका या बजाया जाता है, वह क्यों पहचाना जाएगा?

8 और यदि तुरही का शब्द साफ न हो तो कौन लड़ाई के लिये तैयारी करेगा?

9 ऐसे ही तुम भी यदि जीभ से साफ बातें न कहो, तो जो कुछ कहा जाता है वह कैसे समझा जाएगा? तुम तो हवा से बातें करनेवाले ठहरोगे।

10 जगत में कितने ही प्रकार की भाषाएँ क्यों न हों, परन्तु उनमें से कोई भी बिना अर्थ की न होगी।

11 इसलिए यदि मैं किसी भाषा का अर्थ न समझूँ, तो बोलनेवाले की दृष्टि में परदेशी ठहरूँगा; और बोलनेवाला मेरी दृष्टि में परदेशी ठहरेगा।

12 इसलिए तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो, कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो।

13 इस कारण जो अन्य भाषा बोले, तो वह प्रार्थना करे, कि उसका अनुवाद भी कर सके।

14 इसलिए यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूँ, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती।

15 तो क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूँगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा; मैं आत्मा से गाऊँगा, और बुद्धि से भी गाऊँगा।

16 नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन क्यों कहेगा? इसलिए कि वह तो नहीं जानता, कि तू क्या कहता है?

17 तू तो भली भाँति से धन्यवाद करता है, परन्तु दूसरे की उन्नति नहीं होती।

18 मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि मैं तुम सबसे अधिक अन्य भाषा में बोलता हूँ।

19 परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हजार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है, कि औरों के सिखाने के लिये बुद्धि से पाँच ही बातें कहूँ।

[illegible]

20 हे भाइयों, तुम समझ में बालक न बनो: फिर भी बुराई में तो बालक रहो, परन्तु समझ में सयाने बनो।

21 व्यवस्था में लिखा है,
कि प्रभु कहता है,

“मैं अन्य भाषा बोलनेवालों के द्वारा,
और पराए मुख के द्वारा
इन लोगों से बात करूँगा
तो भी वे मेरी न सुनेंगे।” *(???. 28:11,12)*

22 इसलिए अन्य भाषाएँ
विश्वासियों के लिये नहीं, परन्तु
अविश्वासियों के लिये चिन्ह हैं, और
भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिये
नहीं परन्तु विश्वासियों के लिये चिन्ह
है।
23 तो यदि कलीसिया एक जगह
इकट्ठी हो, और सब के सब अन्य भाषा
बोलें, और बाहरवाले या अविश्वासी
लोग भीतर आ जाएँ तो क्या वे तुम्हें
पागल न कहेंगे?
24 परन्तु यदि सब भविष्यद्वाणी
करने लगें, और कोई अविश्वासी या
बाहरवाला मनुष्य भीतर आ जाए, तो
सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख
लेंगे।
25 और उसके मन के भेद प्रगट
हो जाएँगे, और तब वह मुँह के बल
गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करेगा,
और मान लेगा, कि सचमुच परमेश्वर
तुम्हारे बीच में है।

??????? ??? ????????

26 इसलिए हे भाइयों क्या करना
चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो
हर एक के हृदय में भजन, या उपदेश,
या अन्य भाषा, या प्रकाश, या अन्य
भाषा का अर्थ बताना रहता है: सब
कुछ आत्मिक उन्नति के लिये होना
चाहिए।
27 यदि अन्य भाषा में बातें करनी
हों, तो दो-दो, या बहुत हो तो तीन-
तीन जन बारी-बारी बोलें, और एक
व्यक्ति *??????? ???*‡।
28 परन्तु यदि अनुवाद करनेवाला
न हो, तो अन्य भाषा बोलनेवाला
कलीसिया में शान्त रहे, और अपने
मन से, और परमेश्वर से बातें करे।
29 भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन
बोलें, और शेष लोग उनके वचन को
परखें।
30 परन्तु यदि दूसरे पर जो बैठा है,
कुछ ईश्वरीय प्रकाश हो, तो पहला
चुप हो जाए।
31 क्योंकि तुम सब एक-एक करके
भविष्यद्वाणी कर सकते हो ताकि सब
सीखें, और सब शान्ति पाएँ।
32 और भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा
भविष्यद्वक्ताओं के वश में है।
33 क्योंकि *?????????*
???????? ?? ?????§, परन्तु
शान्ति का कर्ता है; जैसा पवित्र लोगों
की सब कलीसियाओं में है।

34 स्त्रियाँ कलीसिया की सभा में
चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की
अनुमति नहीं, परन्तु अधीन रहने की
आज्ञा है: जैसा व्यवस्था में लिखा भी
है।
35 और यदि वे कुछ सीखना चाहें,
तो घर में अपने-अपने पति से पूछें,
क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें
करना लज्जा की बात है।
36 क्यों परमेश्वर का वचन तुम में से
निकला? या केवल तुम ही तक पहुँचा
है?

37 यदि कोई मनुष्य अपने आपको
भविष्यद्वक्ता या आत्मिक जन समझे,

‡ **14:27** *??????? ???:* वह जिनको अन्य भाषाओं की व्याख्या करने का वरदान हैं, ताकि वे उसे समझ सके और कलीसिया का विस्तार हो सके। § **14:33** *????????? ???????? ?? ?????:* वह शान्ति का परमेश्वर है और वह अनुशासन को बढ़ावा देने के लिए सिखाता है।

तो यह जान ले, कि जो बातें मैं तुम्हें
लिखता हूँ, वे प्रभु की आज्ञाएँ हैं।
38 परन्तु यदि कोई न माने, तो न
माने।
39 अतः हे भाइयों, भविष्यद्वाणी
करने की धुन में रहो और अन्य भाषा
बोलने से मना न करो।
40 पर सारी बातें सभ्यता और
क्रमानुसार की जाएँ।

15

[illegible]

1 हे भाइयों, मैं तुम्हें वही सुसमाचार
बताता हूँ जो पहले सुना चुका हूँ, जिसे
तुम ने अंगीकार भी किया था और
जिसमें तुम स्थिर भी हो।
2 उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी
होता है, यदि उस सुसमाचार को जो
मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो;
नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ
हुआ।
3 इसी कारण मैंने सबसे पहले
तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे
पहुँची थी, कि पवित्रशास्त्र के वचन
के अनुसार *[illegible]**।
4 और गाड़ा गया; और पवित्रशास्त्र
के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।
([illegible] 6:2)
5 और कैफा को तब बारहों को
दिखाई दिया।
6 फिर पाँच सौ से अधिक भाइयों
को एक साथ दिखाई दिया, जिनमें से
बहुत सारे अब तक वर्तमान हैं पर
कितने सो गए।
7 फिर याकूब को दिखाई दिया तब
सब प्रेरितों को दिखाई दिया।
8 और सब के बाद मुझ को भी
दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का
जन्मा हूँ।
9 क्योंकि मैं प्रेरितों में सबसे छोटा
हूँ, वरन् प्रेरित कहलाने के योग्य
भी नहीं, क्योंकि मैंने परमेश्वर की
कलीसिया को सताया था।
10 परन्तु मैं जो कुछ भी हूँ, परमेश्वर
के अनुग्रह से हूँ। और उसका अनुग्रह
जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ
परन्तु मैंने उन सबसे बढ़कर परिश्रम
भी किया तो भी यह मेरी ओर से नहीं
हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो
मुझ पर था।
11 इसलिए चाहे मैं हूँ, चाहे वे हों,
हम यही प्रचार करते हैं, और इसी पर
तुम ने विश्वास भी किया।

[illegible]

12 अतः जबकि मसीह का यह प्रचार
किया जाता है, कि वह मरे हुओं में
से जी उठा, तो तुम में से कितने क्यों
कहते हैं, कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है
ही नहीं?
13 यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान ही
नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा।
14 और यदि मसीह नहीं जी उठा,
तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है;
और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है।
15 वरन् हम परमेश्वर के झूठे गवाह
ठहरे; क्योंकि हमने परमेश्वर के विषय
में यह गवाही दी कि उसने मसीह को
जिला दिया यद्यपि नहीं जिलाया, यदि
मरे हुए नहीं जी उठते।
16 और यदि मुर्दे नहीं जी उठते, तो
मसीह भी नहीं जी उठा।
17 और यदि मसीह नहीं जी उठा,
तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम
अब तक अपने पापों में फँसे हो।

* **15:3** *[illegible]:* यीशु मसीह हमारे पापों के लिए एक प्रायश्चित के रूप में मरा।

18 वरन् जो मसीह में सो गए हैं, वे
भी नाश हुए।
19 यदि हम केवल इसी जीवन में
मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब
मनुष्यों से अधिक अभागे हैं।
20 परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से
जी उठा है, और जो सो गए हैं, उनमें
पहला फल हुआ।
21 क्योंकि जब *[illegible]*†; तो मनुष्य
ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी
आया।
22 और जैसे आदम में सब मरते हैं,
वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे।
23 परन्तु हर एक अपनी-अपनी
बारी से; पहला फल मसीह; फिर
मसीह के आने पर उसके लोग।
24 इसके बाद अन्त होगा; उस
समय वह सारी प्रधानता और सारा
अधिकार और सामर्थ्य का अन्त करके
राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में
सौंप देगा। ***([illegible]. 2:44)***
25 क्योंकि जब तक कि वह अपने
बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए,
तब तक उसका राज्य करना अवश्य
है। ***([illegible]. 110:1)***
26 सबसे *[illegible]*‡।
27 क्योंकि “परमेश्वर ने सब कुछ
उसके पाँवों तले कर दिया है,” परन्तु
जब वह कहता है कि सब कुछ उसके
अधीन कर दिया गया है तो स्पष्ट है,
कि जिसने सब कुछ मसीह के अधीन
कर दिया, वह आप अलग रहा। ***([illegible].
8:6)***
28 और जब सब कुछ उसके अधीन
हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके
अधीन हो जाएगा जिसने सब कुछ
उसके अधीन कर दिया; ताकि सब में
परमेश्वर ही सब कुछ हो।
29 नहीं तो जो लोग मरे हुओं के
लिये बपतिस्मा लेते हैं, वे क्या करेंगे?
यदि मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्यों
उनके लिये बपतिस्मा लेते हैं?
30 और हम भी क्यों हर घड़ी
जोखिम में पड़े रहते हैं?
31 हे भाइयों, मुझे उस घमण्ड की
शपथ जो हमारे मसीह यीशु में मैं
तुम्हारे विषय में करता हूँ, कि मैं
प्रतिदिन मरता हूँ।
32 यदि मैं मनुष्य की रीति पर
इफिसुस में वन-पशुओं से लड़ा, तो
मुझे क्या लाभ हुआ? यदि मुर्दे
जिलाए नहीं जाएँगे, “तो आओ,
खाएँ-पीएँ, क्योंकि कल तो मर ही
जाएँगे।” ***([illegible]. 22:13)***
33 धोखा न खाना, “बुरी संगति
अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।”
34 धार्मिकता के लिये जाग उठो
और पाप न करो; क्योंकि कितने ऐसे हैं
जो परमेश्वर को नहीं जानते, मैं तुम्हें
लज्जित करने के लिये यह कहता हूँ।

[illegible]?

35 अब कोई यह कहेगा, “मुर्दे किस
रीति से जी उठते हैं, और किस देह के
साथ आते हैं?”
36 हे निर्बुद्धि, जो कुछ तू बोता
है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं
जाता।
37 और जो तू बोता है, यह वह देह
नहीं जो उत्पन्न होनेवाली है, परन्तु
केवल दाना है, चाहे गेहूँ का, चाहे
किसी और अनाज का।
38 परन्तु परमेश्वर अपनी इच्छा
के अनुसार उसको देह देता है; और

---

† **15:21** *[illegible]:* आदम के द्वारा, या उनके अपराध के माध्यम से।
‡ **15:26** *[illegible]:* क्योंकि मृत्यु के राज्य का अन्त हो जाएगा। और फिर कभी कोई नहीं मरेगा।

हर एक बीज को उसकी विशेष देह।
(▯▯▯▯. 1:11)
[39] सब शरीर एक समान नहीं, परन्तु
मनुष्यों का शरीर और है, पशुओं का
शरीर और है; पक्षियों का शरीर और
है; मछलियों का शरीर और है।
[40] स्वर्गीय देह है, और पार्थिव देह
भी है: परन्तु स्वर्गीय देहों का तेज और
है, और पार्थिव का और।
[41] सूर्य का तेज और है, चाँद का तेज
और है, और तारागणों का तेज और है,
क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में
अन्तर है।

[42] मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही
है। शरीर नाशवान दशा में बोया जाता
है, और अविनाशी रूप में जी उठता
है।
[43] वह अनादर के साथ बोया जाता
है, और तेज के साथ जी उठता है;
निर्बलता के साथ बोया जाता है; और
सामर्थ्य के साथ जी उठता है।
[44] स्वाभाविक देह बोई जाती है,
और आत्मिक देह जी उठती है: जबकि
स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी
है।
[45] ऐसा ही लिखा भी है, "प्रथम
मनुष्य, अर्थात् आदम, जीवित
प्राणी बना" और अन्तिम आदम,
जीवनदायक आत्मा बना।
[46] परन्तु पहले आत्मिक न था, पर
स्वाभाविक था, इसके बाद आत्मिक
हुआ।
[47] प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात्
मिट्टी का था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है।
(▯▯▯. 3:31)
[48] जैसा वह मिट्टी का था वैसे ही वे
भी हैं जो मिट्टी के हैं; और जैसा वह
स्वर्गीय है, वैसे ही वे भी स्वर्गीय हैं।
[49] और जैसे हमने उसका रूप जो
मिट्टी का था धारण किया वैसे ही उस
स्वर्गीय का रूप भी धारण करेंगे। ***(1
▯▯▯. 3:2)***

[50] हे भाइयों, मैं यह कहता हूँ
कि माँस और लहू परमेश्वर के राज्य
के अधिकारी नहीं हो सकते, और न
नाशवान अविनाशी का अधिकारी हो
सकता है।
[51] देखो, मैं तुम से भेद की बात
कहता हूँ: कि हम सब तो नहीं सोएँगे,
परन्तु सब बदल जाएँगे।
[52] और यह क्षण भर में, पलक मारते
ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा
क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे
अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और
हम बदल जाएँगे।
[53] क्योंकि अवश्य है, कि वह
नाशवान देह अविनाश को पहन ले,
और यह मरनहार देह अमरता को पहन
ले।
[54] और जब यह नाशवान अविनाश
को पहन लेगा, और यह मरनहार
अमरता को पहन लेगा, तब वह वचन
जो लिखा है, पूरा हो जाएगा,

"जय ने मृत्यु को निगल लिया।
(▯▯▯. 25:8)

[55] हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही?

हे मृत्यु तेरा डंक कहाँ रहा?" ***(▯▯▯▯
13:14)***

[56] मृत्यु का डंक पाप है; और पाप
का बल व्यवस्था है।
[57] परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो,
जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें
जयवन्त करता है।
[58] इसलिए हे मेरे प्रिय भाइयों, दृढ़
और अटल रहो, और प्रभु के काम में
सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते
हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ
नहीं है। ***(▯▯▯. 6:9)***

16

[illegible]

1 अब उस चन्दे के विषय में जो
पवित्र लोगों के लिये किया जाता
है, जैसा निर्देश मैंने गलातिया की
कलीसियाओं को दिया, वैसा ही तुम
भी करो।
2 सप्ताह के पहले दिन तुम में से हर
एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ
अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने
पर चन्दा न करना पड़े।
3 और जब मैं आऊँगा, तो जिन्हें
तुम चाहोगे उन्हें मैं चिट्ठियाँ देकर
भेज दूँगा, कि तुम्हारा दान यरूशलेम
पहुँचा दें।
4 और यदि मेरा भी जाना उचित
हुआ, तो वे मेरे साथ जाएँगे।

[illegible]

5 और मैं मकिदुनिया होकर
तुम्हारे पास आऊँगा, क्योंकि मुझे
मकिदुनिया होकर जाना ही है।
6 परन्तु सम्भव है कि तुम्हारे यहाँ ही
ठहर जाऊँ और शरद ऋतु तुम्हारे यहाँ
काटूँ, तब जिस ओर मेरा जाना हो, उस
ओर तुम मुझे पहुँचा दो।
7 क्योंकि मैं अब मार्ग में तुम से भेंट
करना नहीं चाहता; परन्तु मुझे आशा
है, कि यदि प्रभु चाहे तो कुछ समय
तक तुम्हारे साथ रहूँगा।
8 परन्तु मैं पिन्तेकुस्त तक इफिसुस
में रहूँगा।
9 क्योंकि मेरे लिये एक *[illegible]*
*[illegible]** खुला है, और
विरोधी बहुत से हैं।
10 यदि तीमुथियुस आ जाए, तो
देखना, कि वह तुम्हारे यहाँ निडर रहे;
क्योंकि वह मेरे समान प्रभु का काम
करता है।
11 इसलिए कोई उसे तुच्छ न जाने,
परन्तु उसे कुशल से इस ओर पहुँचा
देना, कि मेरे पास आ जाए; क्योंकि मैं
उसकी प्रतीक्षा करता रहा हूँ, कि वह
भाइयों के साथ आए।
12 और भाई अपुल्लोस से मैंने बहुत
विनती की है कि तुम्हारे पास भाइयों
के साथ जाए; परन्तु उसने इस समय
जाने की कुछ भी इच्छा न की, परन्तु
जब अवसर पाएगा, तब आ जाएगा।

[illegible]

13 जागते रहो, विश्वास में स्थिर
रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त हो।
([illegible]. 6:10)
14 जो कुछ करते हो प्रेम से करो।
15 हे भाइयों, तुम स्तिफनास के
घराने को जानते हो, कि वे अखाया के
पहले फल हैं, और पवित्र लोगों की
सेवा के लिये तैयार रहते हैं।
16 इसलिए मैं तुम से विनती करता
हूँ कि ऐसों के अधीन रहो, वरन् हर
एक के जो इस काम में परिश्रमी और
सहकर्मी हैं।
17 और मैं स्तिफनास और
फूरतूनातुस और अखइकुस के आने से
आनन्दित हूँ, क्योंकि उन्होंने तुम्हारी
घटी को पूरी की है।
18 और *[illegible]*† इसलिए ऐसों को मानो।

[illegible]

19 आसिया की कलीसियाओं की
ओर से तुम को नमस्कार; अक्विला
और प्रिस्का का और उनके घर की
कलीसिया का भी तुम को प्रभु में बहुत-
बहुत नमस्कार।

---

* **16:9** *[illegible]:* “द्वार” शब्द का स्पष्ट रूप से एक मौका या कुछ भी करने के लिए एक अवसर को निरुपित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। † **16:18** *[illegible]:* उनकी मौजूदगी और बातचीत के द्वारा।

20 सब भाइयों का तुम को नमस्कार:
पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार
करो।
21 मुझ पौलुस का अपने हाथ का
लिखा हुआ नमस्कार:
22 यदि कोई प्रभु से प्रेम न रखे तो
वह शापित हो। हे हमारे प्रभु, आ!
23 प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम
पर होता रहे।
24 मेरा प्रेम *[illegible] [illegible] [illegible]*‡
तुम सब के साथ रहे। आमीन।

‡ **16:24** *[illegible] [illegible] [illegible]:* मसीह यीशु के माध्यम से; या यीशु मसीह में तुम्हारे प्रेम के सम्बंध के द्वारा।

कुरिन्थियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

[illegible]

पौलुस ने अपने जीवन के एक अति कोमल समय में कुरिन्थ की कलीसिया को यह दूसरा पत्र लिखा था। पौलुस को जब जानकारी प्राप्त हुई कि वह कलीसिया संघर्षरत है तो उसने कुछ करना चाहा कि उस कलीसिया की एकता सुरक्षित रहे। जब पौलुस ने यह पत्र लिखा था तब उसे कष्ट एवं व्यथा का अनुभव हो रहा था क्योंकि वह कुरिन्थ की कलीसिया से प्रेम रखता था। कष्ट मनुष्य की दुर्बलता को दर्शाते हैं परन्तु परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर्याप्त होती है, "मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है, क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है" (2 कुरि. 2:7-10)। इस पत्र में पौलुस अपनी सेवा और प्रेरितीय अधिकार की प्रबलता से रक्षा करता है। पत्र के आरम्भ ही में वह इस तथ्य की पुष्टि करता है कि वह परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है (2 कुरि. 1:1)। पौलुस का यह पत्र उसके और मसीह विश्वास के बारे में बहुत कुछ दर्शाता है।

[illegible]

लगभग ई.स. 55 - 56

कुरिन्थ की कलीसिया को पौलुस का यह दूसरा पत्र मकिदुनिया से लिखा गया था।

[illegible]

कुरिन्थ की कलीसिया और सम्पूर्ण अखाया जिसकी रोमी राजधानी कुरिन्थ थी (2 कुरि. 1:1)।

[illegible]

इस पत्र को लिखने में पौलुस के अनेक उद्देश्य थे। कुरिन्थ की कलीसिया ने पौलुस के पिछले दर्द भरे पत्र के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया दिखाई इस कारण पौलुस को बड़ी शक्ति मिली थी और वह आनन्द से भर गया था (1:3-4; 7:8-9,12-13)। वह उन्हें यह भी बताना चाहता था कि एशिया के क्षेत्र में उसने कैसी-कैसी परेशानियाँ उठाई थीं (1:8-11)। वह उनसे निवेदन करना चाहता था कि हानि पहुँचाने वाले दल को क्षमा कर दें (2:5-11)। उन्हें चेतावनी भी दी थी कि "अविश्वासियों के साथ उस असमान जूए में न जुतें" (6:14-7:1)। उन्हें मसीह की सेवा की सच्ची प्रकृति एवं उच्च बुलाहट को समझाया (2:14-7:4)। कुरिन्थ की कलीसिया को उसने दान देने के अनुग्रह की शिक्षा दी ताकि वे सुनिश्चित करें कि यरूशलेम के आपदाग्रस्त गरीब विश्वासियों के लिए दान एकत्र करके पहले ही तैयार रखें (अध्याय 8-9)।

[illegible]

पौलुस अपने प्रेरिताई का बचाव करता है।

रूपरेखा

1. पौलुस द्वारा उसकी सेवा की व्याख्या — 1:1-7:16
2. यरूशलेम के विश्वासियों के लिए दान संग्रह — 8:1-9:15
3. पौलुस द्वारा अपने अधिकार की रक्षा — 10:1-13:10
4. त्रिएक आशीर्वाद द्वारा समापन — 13:11-14

[illegible]

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है, और भाई तीमुथियुस की ओर से परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम

जो कुरिन्थुस में है, और सारे अखाया
के सब पवित्र लोगों के नाम:
2 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह
और शान्ति मिलती रहे।

[illegible]

3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के
परमेश्वर, और पिता का धन्यवाद हो,
जो दया का पिता, और सब प्रकार की
शान्ति का परमेश्वर है।
4 वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति
देता है; ताकि हम उस शान्ति के कारण
जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी
शान्ति दे सकें, जो किसी प्रकार के
क्लेश में हों।
5 क्योंकि जैसे *[illegible]**
हमको अधिक होते हैं, वैसे ही हमारी
शान्ति में भी मसीह के द्वारा अधिक
सहभागी होते है।
6 यदि हम क्लेश पाते हैं, तो यह
तुम्हारी शान्ति और उद्धार के लिये
है और यदि शान्ति पाते हैं, तो यह
तुम्हारी शान्ति के लिये है; जिसके
प्रभाव से तुम धीरज के साथ उन
क्लेशों को सह लेते हो, जिन्हें हम भी
सहते हैं।
7 और *[illegible]*
[illegible]†; क्योंकि हम
जानते हैं, कि तुम जैसे दुःखों के वैसे ही
शान्ति के भी सहभागी हो।

[illegible]

8 हे भाइयों, हम नहीं चाहते कि तुम
हमारे उस क्लेश से अनजान रहो, जो
आसिया में हम पर पड़ा, कि ऐसे भारी
बोझ से दब गए थे, जो हमारी सामर्थ्य
से बाहर था, यहाँ तक कि हम जीवन
से भी हाथ धो बैठे थे।
9 वरन् हमने अपने मन में समझ
लिया था, कि हम पर मृत्यु की सजा
हो चुकी है कि हम अपना भरोसा न
रखें, वरन् परमेश्वर का जो मरे हुओं को
जिलाता है।
10 उसी ने हमें मृत्यु के ऐसे बड़े
संकट से बचाया, और बचाएगा; और
उससे हमारी यह आशा है, कि वह
आगे को भी बचाता रहेगा।
11 और तुम भी मिलकर प्रार्थना
के द्वारा हमारी सहायता करोगे, कि
जो वरदान बहुतों के द्वारा हमें मिला,
उसके कारण बहुत लोग हमारी ओर से
धन्यवाद करें।

[illegible]

12 क्योंकि हम अपने विवेक की
इस गवाही पर घमण्ड करते हैं, कि
जगत में और विशेष करके तुम्हारे बीच
हमारा चरित्र परमेश्वर के योग्य ऐसी
पवित्रता और सच्चाई सहित था, जो
शारीरिक ज्ञान से नहीं, परन्तु परमेश्वर
के अनुग्रह के साथ था।
13 हम तुम्हें और कुछ नहीं लिखते,
केवल वह जो तुम पढ़ते या मानते भी
हो, और मुझे आशा है, कि अन्त तक
भी मानते रहोगे।
14 जैसा तुम में से कितनों ने मान
लिया है, कि हम तुम्हारे घमण्ड का
कारण है; वैसे तुम भी प्रभु यीशु के दिन
हमारे लिये घमण्ड का कारण ठहरोगे।

[illegible]

15 और इस भरोसे से मैं चाहता था
कि पहले तुम्हारे पास आऊँ; कि तुम्हें
एक और दान मिले।
16 और तुम्हारे पास से होकर
मकिदुनिया को जाऊँ, और फिर
मकिदुनिया से तुम्हारे पास आऊँ और

---

* **1:5** *[illegible]*: जैसा कि हम भी उसी दुःखों के अनुभव के लिए बुलाए गए हैं जो मसीह ने उठाया था † **1:7** *[illegible]*: हमारे पास तुम्हारे सम्बंध में एक सुनिश्चित और दृढ़ आशा है।

तुम मुझे यहूदिया की ओर कुछ दूर तक पहुँचाओ।

17 इसलिए मैंने जो यह इच्छा की थी तो क्या मैंने चंचलता दिखाई? या जो करना चाहता हूँ क्या शरीर के अनुसार करना चाहता हूँ, कि मैं बात में 'हाँ, हाँ' भी करूँ; और 'नहीं, नहीं' भी करूँ?

18 परमेश्वर विश्वासयोग्य है, कि हमारे उस वचन में जो तुम से कहा 'हाँ' और 'नहीं' दोनों पाए नहीं जाते।

19 क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह जिसका हमारे द्वारा अर्थात् मेरे और सिलवानुस और तीमुथियुस के द्वारा तुम्हारे बीच में प्रचार हुआ; उसमें 'हाँ' और 'नहीं' दोनों न थी; परन्तु, उसमें 'हाँ' ही 'हाँ' हुई।

20 क्योंकि *[illegible]*‡ हैं, वे सब उसी में 'हाँ' के साथ हैं इसलिए उसके द्वारा आमीन भी हुई, कि हमारे द्वारा परमेश्वर की महिमा हो।

21 और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में दृढ़ करता है, और जिसने *[illegible]*§ किया वही परमेश्वर है।

22 जिसने हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया।

23 मैं परमेश्वर को गवाह करता हूँ, कि मैं अब तक कुरिन्थुस में इसलिए नहीं आया, कि मुझे तुम पर तरस आता था।

24 यह नहीं, कि हम विश्वास के विषय में तुम पर प्रभुता जताना चाहते हैं; परन्तु तुम्हारे आनन्द में सहायक हैं क्योंकि तुम विश्वास ही से स्थिर रहते हो।

2

[illegible]

1 मैंने अपने मन में यही ठान लिया था कि फिर तुम्हारे पास उदास होकर न आऊँ।

2 क्योंकि यदि मैं तुम्हें उदास करूँ, तो मुझे आनन्द देनेवाला कौन होगा, केवल वही जिसको मैंने उदास किया?

3 और मैंने यही बात तुम्हें इसलिए लिखी, कि कहीं ऐसा न हो, कि मेरे आने पर जिनसे मुझे आनन्द मिलना चाहिए, मैं उनसे उदास होऊँ; क्योंकि मुझे तुम सब पर इस बात का भरोसा है, कि जो मेरा आनन्द है, वही तुम सब का भी है।

4 बड़े क्लेश, और *[illegible]** से, मैंने बहुत से आँसू बहा बहाकर तुम्हें लिखा था इसलिए नहीं, कि तुम उदास हो, परन्तु इसलिए कि तुम उस बड़े प्रेम को जान लो, जो मुझे तुम से है।

[illegible]

5 और यदि किसी ने उदास किया है, तो मुझे ही नहीं वरन् (कि उसके साथ बहुत कड़ाई न करूँ) कुछ कुछ तुम सब को भी उदास किया है। ***([illegible]. 4:12)***

6 ऐसे जन के लिये यह दण्ड जो भाइयों में से बहुतों ने दिया, बहुत है।

7 इसलिए इससे यह भला है कि उसका अपराध क्षमा करो; और शान्ति दो, न हो कि ऐसा मनुष्य उदासी में डूब जाए। ***([illegible]. 4:32)***

8 इस कारण मैं तुम से विनती करता हूँ, कि उसको अपने प्रेम का प्रमाण दो।

9 क्योंकि मैंने इसलिए भी लिखा था, कि तुम्हें परख लूँ, कि तुम सब

‡ **1:20** *[illegible]:* परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ जो मसीह के द्वारा बनी हैं।
§ **1:21** *[illegible]:* यह मसीहियों पर भी लागू है, जिन्हें पवित्र आत्मा द्वारा पवित्र तथा सेवा करने के लिए अलग किया गया है।
* **2:4** *[illegible]:* इस तरह का दबाव महान दु: ख के रूप में मन के कष्ट का कारण होता है।

बातों के मानने के लिये तैयार हो, कि
नहीं।
10 जिसका तुम कुछ क्षमा करते हो
उसे मैं भी क्षमा करता हूँ, क्योंकि मैंने
भी जो कुछ क्षमा किया है, यदि किया
हो, तो तुम्हारे कारण मसीह की जगह
में होकर क्षमा किया है।
11 कि *[illegible]*† का हम पर दाँव न
चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से
अनजान नहीं।

[illegible]

12 और जब मैं मसीह का
सुसमाचार, सुनाने को त्रोआस में
आया, और प्रभु ने मेरे लिये एक द्वार
खोल दिया।
13 तो मेरे मन में चैन न मिला,
इसलिए कि मैंने अपने भाई तीतुस को
नहीं पाया; इसलिए उनसे विदा होकर
मैं मकिदुनिया को चला गया।

[illegible] —[illegible]

14 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो,
जो मसीह में सदा हमको जय के उत्सव
में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान की
सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता
है।
15 क्योंकि हम परमेश्वर के निकट
उद्धार पानेवालों, और नाश होनेवालों,
दोनों के लिये मसीह की सुगन्ध हैं।
16 कितनों के लिये तो मरने के
निमित्त मृत्यु की गन्ध, और कितनों
के लिये जीवन के निमित्त जीवन की
सुगन्ध, और इन बातों के योग्य कौन
है?
17 क्योंकि हम उन बहुतों के
समान नहीं, जो परमेश्वर के वचन
में मिलावट करते हैं; परन्तु मन की
सच्चाई से, और परमेश्वर की ओर से
परमेश्वर को उपस्थित जानकर *[illegible]*‡।

3

[illegible]

1 क्या हम फिर अपनी बड़ाई करने
लगे? या हमें कितनों के समान
सिफारिश की पत्रियाँ तुम्हारे पास
लानी या तुम से लेनी हैं?
2 *[illegible]**,
जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है, और
उसे सब मनुष्य पहचानते और पढ़ते
हैं।
3 यह प्रगट है, कि तुम मसीह
की पत्री हो, जिसको हमने सेवकों के
समान लिखा; और जो स्याही से नहीं,
परन्तु जीवित परमेश्वर के आत्मा
से पत्थर की पटियों पर नहीं, परन्तु
हृदय की माँस रूपी पटियों पर लिखी
है। ***([illegible]. 24:12, [illegible]. 31:33, [illegible]. 11:19,20)***

[illegible]

4 हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर
ऐसा ही भरोसा रखते हैं।
5 यह नहीं, कि हम अपने आप से
इस योग्य हैं, कि अपनी ओर से किसी
बात का विचार कर सकें; पर हमारी
योग्यता परमेश्वर की ओर से है।
6 जिसने हमें नई वाचा के सेवक होने
के योग्य भी किया, शब्द के सेवक नहीं
वरन् आत्मा के; क्योंकि शब्द मारता
है, पर आत्मा जिलाता है। ***([illegible]. 24:8, [illegible]. 31:31, [illegible]. 32:40)***

[illegible]

7 और यदि मृत्यु की यह वाचा
जिसके अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे,
यहाँ तक तेजोमय हुई, कि मूसा के

---

† **2:11** *[illegible]:* मत्ती 16: 23 की टिप्पणी देखें। ‡ **2:17** *[illegible]:* नाम में, और मसीह की सेवा में। * **3:2** *[illegible]:* सेवकाई के तहत उन लोगों की रूपान्तरण जो सब देख और पढ़ सकते हैं, उनके चरित्र का सार्वजनिक प्रशंसापत्र था।

मुँह पर के तेज के कारण जो घटता भी जाता था, इस्राएली उसके मुँह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे।

8 तो आत्मा की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी?

9 क्योंकि जब दोषी ठहरानेवाली वाचा तेजोमय थी, तो धर्मी ठहरानेवाली वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी?

10 और जो तेजोमय था, वह भी उस तेज के कारण जो उससे बढ़कर तेजोमय था, कुछ तेजोमय न ठहरा। ***([illegible]. 34:29-30)***

11 क्योंकि जब वह जो घटता जाता था तेजोमय था, तो वह जो स्थिर रहेगा, और भी तेजोमय क्यों न होगा?

12 इसलिए ऐसी आशा रखकर हम साहस के साथ बोलते हैं।

13 और मूसा के समान नहीं, जिसने अपने मुँह पर परदा डाला था ताकि इस्राएली उस घटनेवाले तेज के अन्त को न देखें। ***([illegible]. 34:33,35)***

14 परन्तु वे मतिमन्द हो गए, क्योंकि आज तक पुराने नियम के पढ़ते समय उनके हृदयों पर वही परदा पड़ा रहता है; पर वह मसीह में उठ जाता है।

15 और आज तक जब कभी मूसा की पुस्तक पढ़ी जाती है, तो उनके हृदय पर परदा पड़ा रहता है।

16 परन्तु जब कभी उनका हृदय प्रभु की ओर फिरेगा, तब वह परदा उठ जाएगा। ***([illegible]. 34:34, [illegible]. 25:7)***

17 प्रभु तो आत्मा है: और जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है वहाँ स्वतंत्रता है।

18 परन्तु जब हम सब के *[illegible]*† से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं।

4

[illegible]

1 इसलिए जब हम पर ऐसी दया हुई, कि हमें यह सेवा मिली, तो हम साहस नहीं छोड़ते।

2 परन्तु *[illegible]**, और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं, परन्तु सत्य को प्रगट करके, परमेश्वर के सामने हर एक मनुष्य के विवेक में अपनी भलाई बैठाते हैं।

3 परन्तु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नाश होनेवालों ही के लिये पड़ा है।

4 और उन अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि *[illegible]*† ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।

5 क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं, कि वह प्रभु है; और उसके विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं।

6 इसलिए कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, “अंधकार में से ज्योति चमके,” और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की

---

† **3:18** *[illegible]:* पौलुस कहता है कि मसीही सुसमाचार में परमेश्वर की महिमा को एक घूँघट के बिना, किसी भी अस्पष्ट हस्तक्षेप के माध्यम के बिना देखने में सक्षम हैं। * **4:2** *[illegible]:* लज्जा की छिपी बातों का मतलब यहाँ पर अपमान जनक आचरण हैं। † **4:4** *[illegible]:* “ईश्वर” नाम यहाँ पर शैतान को दिया गया हैं, इसलिए नहीं कि उसमें कोई दिव्य गुण हैं, परन्तु क्योंकि वास्तव में उसे इस संसार के लोगों में उसके प्रति ईश्वर के जैसे सम्मान है।

पहचान की ज्योति यीशु मसीह के
चेहरे से प्रकाशमान हो। *([illegible]. 9:2)*

[illegible]

7 परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी
के बरतनों में रखा है, कि यह असीम
सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन्
परमेश्वर ही की ओर से ठहरे।
8 हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते
हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो
हैं, पर निराश नहीं होते।
9 सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं
जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं
होते।
10 *[illegible]*‡; कि यीशु का जीवन
भी हमारी देह में प्रगट हो।
11 क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु
के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं
कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार
शरीर में प्रगट हो।
12 इस कारण मृत्यु तो हम पर
प्रभाव डालती है और जीवन तुम पर।
13 और इसलिए कि हम में वही
विश्वास की आत्मा है, "जिसके विषय
में लिखा है, कि मैंने विश्वास किया,
इसलिए मैं बोला।" अतः हम भी
विश्वास करते हैं, इसलिए बोलते हैं।
([illegible]. 116:10)
14 क्योंकि हम जानते हैं, जिसने प्रभु
यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में
भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे
साथ अपने सामने उपस्थित करेगा।
15 क्योंकि सब वस्तुएँ तुम्हारे लिये
हैं, ताकि अनुग्रह बहुतों के द्वारा
अधिक होकर परमेश्वर की महिमा के
लिये धन्यवाद भी बढ़ाए।
16 इसलिए हम साहस नहीं छोड़ते;
यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश
भी होता जाता है, तो भी हमारा भीतरी
मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता
जाता है।
17 क्योंकि हमारा पल भर का
हलका सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही
महत्त्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न
करता जाता है।
18 और हम तो देखी हुई वस्तुओं को
नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते
रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े
ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ
सदा बनी रहती हैं।

5

[illegible]

1 क्योंकि हम जानते हैं, कि जब
हमारा *[illegible]** गिराया जाएगा तो हमें
परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक
ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना
हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थाई है।
([illegible]. 9:11, [illegible]. 4:19)
2 इसमें तो हम कराहते, और बड़ी
लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय
घर को पहन लें।
3 कि इसके पहनने से हम नंगे न
पाए जाएँ।
4 और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ
से दबे कराहते रहते हैं; क्योंकि हम
उतारना नहीं, वरन् और पहनना चाहते
हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में
डूब जाए।
5 और जिसने हमें इसी बात के लिये
तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिसने
हमें बयाने में आत्मा भी दिया है।

‡ **4:10** *[illegible]:* यह परीक्षणों की कठिनता को निरुपित करता है जिसे पौलुस ने अवगत कराया था। * **5:1** *[illegible]:* 'पृथ्वी पर का' इस शब्द का ठीक अर्थ है जो पृथ्वी से सम्बंधित है, यहाँ पर "डेरा" शब्द शरीर को दर्शाता है।

6 इसलिए हम सदा ढाढ़स बाँधे
रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब
तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु
से अलग हैं।
7 क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं,
पर विश्वास से चलते हैं।
8 इसलिए हम ढाढ़स बाँधे रहते हैं,
और देह से अलग होकर प्रभु के साथ
रहना और भी उत्तम समझते हैं।

[illegible]

9 इस कारण हमारे मन की उमंग यह
है, कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें
पर हम उसे भाते रहें।
10 क्योंकि अवश्य है, कि हम सब
का हाल मसीह के न्याय आसन के
सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति
अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला
जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए।
([illegible]. 6:8, [illegible] 16:27, [illegible]. 12:14)

[illegible]

11 इसलिए प्रभु का भय मानकर हम
लोगों को समझाते हैं और परमेश्वर पर
हमारा हाल प्रगट है; और मेरी आशा
यह है, कि तुम्हारे विवेक पर भी प्रगट
हुआ होगा।
12 हम फिर भी अपनी बड़ाई तुम्हारे
सामने नहीं करते वरन् हम अपने
विषय में तुम्हें घमण्ड करने का अवसर
देते हैं, कि तुम उन्हें उत्तर दे सको, जो
मन पर नहीं, वरन् दिखावटी बातों पर
घमण्ड करते हैं।
13 यदि हम बेसुध हैं, तो परमेश्वर के
लिये; और यदि चैतन्य हैं, तो तुम्हारे
लिये हैं।
14 क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश
कर देता है; इसलिए कि हम यह
समझते हैं, कि जब एक सब के लिये
मरा तो सब मर गए।
15 और वह इस निमित्त सब के लिये
मरा, कि जो जीवित हैं, वे आगे को
अपने लिये न जीएँ परन्तु उसके लिये
जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा।

[illegible]

16 इस कारण अब से हम किसी को
शरीर के अनुसार न समझेंगे, और यदि
हमने मसीह को भी शरीर के अनुसार
जाना था, तो भी अब से उसको ऐसा
नहीं जानेंगे।
17 इसलिए यदि कोई मसीह में है
तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत
गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।
([illegible]. 43:18,19)
18 और *[illegible]*[†], जिसने मसीह के
द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप
कर लिया, और मेल मिलाप की सेवा
हमें सौंप दी है।
19 अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में
होकर अपने साथ संसार का मेल
मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों
का दोष उन पर नहीं लगाया और
उसने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप
दिया है।

20 इसलिए हम मसीह के राजदूत
हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा
समझाता है: हम मसीह की ओर से
निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ
मेल मिलाप कर लो। ***([illegible]. 6:10, [illegible]. 2:7)***
21 जो पाप से अज्ञात था, उसी को
उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम
उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता
बन जाएँ।

† **5:18** *[illegible]:* पौलुस विश्वास करता है कि केवल ये सब बातें परमेश्वर की ओर से तैयार किया गया हैं, परन्तु यह सब बातें उसकी दिशा के तहत किया गया है, और उसके नियंत्रण के अधीन है।

6

[illegible]

1 हम जो परमेश्वर के सहकर्मी हैं यह भी समझाते हैं, कि परमेश्वर का अनुग्रह जो तुम पर हुआ, व्यर्थ न रहने दो।

2 क्योंकि वह तो कहता है,

“अपनी प्रसन्नता के समय मैंने तेरी
सुन ली,
और *[illegible]** मैंने तेरी,
सहायता की।”

देखो; अभी प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी उद्धार का दिन है। ***([illegible]. 49:8)***

[illegible]

3 हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई भी अवसर नहीं देते, कि हमारी सेवा पर कोई दोष न आए।

4 परन्तु हर बात में परमेश्वर के सेवकों के समान अपने सद्‌गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दरिद्रता से, संकटों से,

5 कोड़े खाने से, कैद होने से, हुल्लड़ों से, परिश्रम से, जागते रहने से, उपवास करने से,

6 पवित्रता से, ज्ञान से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से।

7 सच्चे प्रेम से, सत्य के वचन से, परमेश्वर की सामर्थ्य से; धार्मिकता के हथियारों से जो दाहिने, बाएँ हैं,

8 आदर और निरादर से, दुर्नाम और सुनाम से, यद्यपि भरमानेवालों के जैसे मालूम होते हैं तो भी सच्चे हैं।

9 अनजानों के सदृश्य हैं; तो भी प्रसिद्ध हैं; मरते हुओं के समान हैं और देखो जीवित हैं; मार खानेवालों के सदृश्य हैं परन्तु प्राण से मारे नहीं जाते। ***(1 [illegible]. 4:9, [illegible]. 118:18)***

10 शोक करनेवालों के समान हैं, परन्तु सर्वदा आनन्द करते हैं, कंगालों के समान हैं, परन्तु *[illegible]*†; ऐसे हैं जैसे हमारे पास कुछ नहीं फिर भी सब कुछ रखते हैं।

11 हे कुरिन्थियों, हमने खुलकर तुम से बातें की हैं, हमारा हृदय तुम्हारी ओर खुला हुआ है।

12 तुम्हारे लिये हमारे मन में कुछ संकोच नहीं, पर तुम्हारे ही मनों में संकोच है।

13 पर अपने बच्चे जानकर तुम से कहता हूँ, कि तुम भी उसके बदले में अपना हृदय खोल दो।

[illegible]

14 *[illegible]*‡, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अंधकार की क्या संगति?

15 और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता?

16 और मूरतों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बंध? क्योंकि हम तो जीवित परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है

“मैं उनमें बसूँगा और उनमें चला फिरा
करूँगा;
और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा,

* **6:2** *[illegible]:* उस समय जब मैं उद्धार दिखाने के लिए निपटारा कर रहा होऊँगा। अभी वह प्रसन्नता का समय है अब यह वह समय है जब परमेश्वर मानवजाति पर सहानुभूति दिखाने के लिए, प्रार्थना सुनने के लिए, और उन पर दया करने के लिये तैयार है। † **6:10** *[illegible]:* उन्होंने जिनके लिए वे सेवा किया करते थे वे उस खजाने के भागी बन गये जहाँ पर कीड़े नहीं होते हैं, और जहाँ चोर नहीं तोड़ते और न ही चोरी करते हैं। ‡ **6:14** *[illegible]:* यह प्रतीत होता है कि वहाँ पर विश्वासियों और अविश्वासियों में बहुत बड़ी असमानता है और इसलिए उनका आपस में मिलना अनुचित है।

और वे मेरे लोग होंगे।” ***([illegible]. 26:11,12, [illegible]. 32:38, [illegible]. 37:27)***

17 इसलिए प्रभु कहता है,
“उनके बीच में से निकलो
और अलग रहो;
और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ,
तो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा; ***([illegible]. 52:11, [illegible]. 51:45)***

18 और तुम्हारा पिता होऊँगा,
और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होंगे;
यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है।” ***(2 [illegible]. 7:14, [illegible]. 43:6, [illegible] 1:10)***

7

1 हे प्यारों जबकि ये प्रतिज्ञाएँ हमें मिली हैं, तो आओ, हम अपने आपको शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।

[illegible]

2 हमें अपने हृदय में जगह दो: हमने न किसी से अन्याय किया, न किसी को बिगाड़ा, और न किसी को ठगा।

3 मैं *[illegible]*[*] क्योंकि मैं पहले ही कह चूका हूँ, कि तुम हमारे हृदय में ऐसे बस गए हो कि हम तुम्हारे साथ मरने जीने के लिये तैयार हैं।

4 मैं तुम से बहुत साहस के साथ बोल रहा हूँ, मुझे तुम पर बड़ा घमण्ड है: मैं शान्ति से भर गया हूँ; अपने सारे क्लेश में मैं आनन्द से अति भरपूर रहता हूँ।

5 क्योंकि जब हम मकिदुनिया में आए, तब भी हमारे शरीर को चैन नहीं मिला, परन्तु हम चारों ओर से क्लेश पाते थे; बाहर लड़ाइयाँ थीं, भीतर भयंकर बातें थी।

6 तो भी दीनों को शान्ति देनेवाले परमेश्वर ने तीतुस के आने से हमको शान्ति दी।

7 और न केवल उसके आने से परन्तु उसकी उस शान्ति से भी, जो उसको तुम्हारी ओर से मिली थी; और उसने तुम्हारी लालसा, और तुम्हारे दुःख और मेरे लिये तुम्हारी धुन का समाचार हमें सुनाया, जिससे मुझे और भी आनन्द हुआ।

8 क्योंकि यद्यपि मैंने अपनी पत्री से तुम्हें शोकित किया, परन्तु उससे पछताता नहीं जैसा कि पहले पछताता था क्योंकि मैं देखता हूँ, कि उस पत्री से तुम्हें शोक तो हुआ परन्तु वह थोड़ी देर के लिये था।

9 अब मैं आनन्दित हूँ पर इसलिए नहीं कि तुम को शोक पहुँचा वरन् इसलिए कि तुम ने उस शोक के कारण मन फिराया, क्योंकि तुम्हारा शोक परमेश्वर की इच्छा के अनुसार था, कि हमारी ओर से तुम्हें किसी बात में हानि न पहुँचे।

10 क्योंकि *[illegible]-[illegible] [illegible]*[†] ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है; जिसका परिणाम उद्धार है और फिर उससे पछताना नहीं पड़ता: परन्तु सांसारिक शोक मृत्यु उत्पन्न करता है।

11 अत: देखो, इसी बात से कि तुम्हें परमेश्वर-भक्ति का शोक हुआ; तुम में कितना उत्साह, प्रत्युत्तर, रिस, भय, लालसा, धुन और पलटा लेने का विचार उत्पन्न हुआ? तुम ने सब प्रकार से यह सिद्ध कर दिखाया, कि तुम इस बात में निर्दोष हो।

* **7:3** *[illegible]:* मैं तुम्हें दोषी ठहराने के उद्देश्य से शिकायत नहीं की है। † **7:10** *[illegible]-[illegible] [illegible]:* इस प्रकार का शोक परमेश्वर के सम्मान के रूप में या उनकी इच्छा के अनुसार से किया जाता है।

12 फिर मैंने जो तुम्हारे पास लिखा
था, वह न तो उसके कारण लिखा,
जिसने अन्याय किया, और न उसके
कारण जिस पर अन्याय किया गया,
परन्तु इसलिए कि तुम्हारी उत्तेजना
जो हमारे लिये है, वह परमेश्वर के
सामने तुम पर प्रगट हो जाए।
13 इसलिए हमें शान्ति हुई; और
हमारी इस शान्ति के साथ तीतुस के
आनन्द के कारण और भी आनन्द हुआ
क्योंकि उसका जी तुम सब के कारण
हरा भरा हो गया है।
14 क्योंकि यदि मैंने उसके सामने
तुम्हारे विषय में कुछ घमण्ड दिखाया,
तो लज्जित नहीं हुआ, परन्तु जैसे
हमने तुम से सब बातें सच-सच कह
दी थीं, वैसे ही हमारा घमण्ड दिखाना
तीतुस के सामने भी सच निकला।
15 जब उसको तुम सब के
आज्ञाकारी होने का स्मरण आता है,
कि कैसे तुम ने डरते और काँपते हुए
उससे भेंट की; तो उसका प्रेम तुम्हारी
ओर और भी बढ़ता जाता है।
16 मैं आनन्द करता हूँ, कि तुम्हारी
ओर से मुझे हर बात में भरोसा होता
है।

8

[illegible]

1 अब हे भाइयों, हम तुम्हें परमेश्वर
के उस अनुग्रह का समाचार देते हैं, जो
मकिदुनिया की कलीसियाओं पर हुआ
है।
2 कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में
[illegible][*] और भारी
कंगालपन के बढ़ जाने से उनकी
उदारता बहुत बढ़ गई।
3 और उनके विषय में मेरी यह
गवाही है, कि उन्होंने अपनी सामर्थ्य
भर वरन् सामर्थ्य से भी बाहर मन से
दिया।
4 और इस दान में और पवित्र लोगों
की सेवा में भागी होने के अनुग्रह के
विषय में हम से बार बार बहुत विनती
की।
5 और जैसी हमने आशा की थी,
वैसी ही नहीं, वरन् उन्होंने प्रभु को,
फिर परमेश्वर की इच्छा से हमको भी
अपने आपको दे दिया।
6 इसलिए हमने तीतुस को
समझाया, कि जैसा उसने पहले
आरम्भ किया था, वैसा ही तुम्हारे बीच
में इस दान के काम को पूरा भी कर ले।
7 पर जैसे हर बात में अर्थात्
विश्वास, वचन, ज्ञान और सब प्रकार
के यत्न में, और उस प्रेम में, जो हम से
रखते हो, बढ़ते जाते हो, वैसे ही इस
दान के काम में भी बढ़ते जाओ।

[illegible]

8 *[illegible]*[†], परन्तु औरों के उत्साह से
तुम्हारे प्रेम की सच्चाई को परखने के
लिये कहता हूँ।
9 तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का
अनुग्रह जानते हो, कि वह धनी होकर
भी तुम्हारे लिये कंगाल बन गया ताकि
उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो
जाओ।
10 और इस बात में मेरा विचार यही
है: यह तुम्हारे लिये अच्छा है; जो एक
वर्ष से न तो केवल इस काम को करने
ही में, परन्तु इस बात के चाहने में भी
प्रथम हुए थे।
11 इसलिए अब यह काम पूरा करो;
कि जिस प्रकार इच्छा करने में तुम

---

* **8:2** *[illegible]:* आनन्द आशा और सुसमाचार की प्रतिज्ञा से उत्पन्न होती हैं † **8:8** *[illegible]:* उनका आज्ञा देने का मतलब नहीं था; वह आधिकारिक तौर पर बात नहीं करता था

तैयार थे, वैसा ही अपनी-अपनी पूँजी
के अनुसार पूरा भी करो।
12 क्योंकि यदि मन की तैयारी हो
तो दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता
है जो उसके पास है न कि उसके
अनुसार जो उसके पास नहीं।
13 यह नहीं कि औरों को चैन और
तुम को क्लेश मिले।
14 परन्तु बराबरी के विचार से इस
समय तुम्हारी बढ़ती उनकी घटी में
काम आए, ताकि उनकी बढ़ती भी
तुम्हारी घटी में काम आए, कि बराबरी
हो जाए।
15 जैसा लिखा है,

"जिसने बहुत बटोरा उसका कुछ
अधिक न निकला
और जिसने थोड़ा बटोरा उसका
कुछ कम न निकला।" (निर्ग.
16:18)

[illegible]

16 परमेश्वर का धन्यवाद हो,
जिसने तुम्हारे लिये वही उत्साह
तीतुस के हृदय में डाल दिया है।
17 कि उसने हमारा समझाना मान
लिया वरन् बहुत उत्साही होकर वह
अपनी इच्छा से तुम्हारे पास गया है।
18 और हमने उसके साथ उस भाई
को भेजा है जिसका नाम सुसमाचार के
विषय में सब कलीसिया में फैला हुआ
है;
19 और इतना ही नहीं, परन्तु वह
कलीसिया द्वारा ठहराया भी गया कि
इस दान के काम के लिये हमारे साथ
जाए और हम यह सेवा इसलिए करते
हैं, कि प्रभु की महिमा और हमारे मन
की तैयारी प्रगट हो जाए।
20 हम इस बात में चौकस रहते हैं,
कि इस उदारता के काम के विषय में
जिसकी सेवा हम करते हैं, कोई हम पर
दोष न लगाने पाए।
21 क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के
निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट
भी भली हैं हम उनकी चिन्ता करते हैं।
22 और हमने उसके साथ अपने भाई
को भेजा है, जिसको हमने बार बार
परख के बहुत बातों में उत्साही पाया
है; परन्तु अब तुम पर उसको बड़ा
भरोसा है, इस कारण वह और भी
अधिक उत्साही है।
23 यदि कोई तीतुस के विषय में
पूछे, तो वह मेरा साथी, और तुम्हारे
लिये मेरा सहकर्मी है, और यदि हमारे
भाइयों के विषय में पूछे, तो वे
कलीसियाओं के भेजे हुए और मसीह
की महिमा हैं।
24 अतः अपना प्रेम और हमारा
वह घमण्ड जो तुम्हारे विषय में है
कलीसियाओं के सामने उन्हें सिद्ध
करके दिखाओ।

9

[illegible]

1 अब उस सेवा के विषय में जो
पवित्र लोगों के लिये की जाती है, मुझे
तुम को लिखना अवश्य नहीं।
2 क्योंकि मैं तुम्हारे मन की तैयारी
को जानता हूँ, जिसके कारण मैं तुम्हारे
विषय में मकिदुनियों के सामने घमण्ड
दिखाता हूँ, कि अखाया के लोग एक
वर्ष से तैयार हुए हैं, और तुम्हारे
उत्साह ने और बहुतों को भी उभारा है।
3 परन्तु मैंने भाइयों को इसलिए
भेजा है, कि हमने जो घमण्ड तुम्हारे
विषय में दिखाया, वह इस बात में
व्यर्थ न ठहरे; परन्तु जैसा मैंने कहा;
वैसे ही तुम तैयार रहो।
4 ऐसा न हो, कि यदि कोई मकिदुनी
मेरे साथ आए, और तुम्हें तैयार न

पाए, तो क्या जानें, इस भरोसे के कारण हम (यह नहीं कहते कि तुम) लज्जित हों।

5 इसलिए मैंने भाइयों से यह विनती करना अवश्य समझा कि वे पहले से तुम्हारे पास जाएँ, और तुम्हारी उदारता का फल जिसके विषय में पहले से वचन दिया गया था, तैयार कर रखें, कि यह दबाव से नहीं परन्तु उदारता के फल की तरह तैयार हो।

[illegible]

6 परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा। ***([illegible]. 11:24, [illegible]. 22:9)***

7 हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे; न कुढ़-कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम रखता है। ***([illegible]. 18:10, [illegible]. 22:9, [illegible]. 11:25)***

8 *[illegible]** । जिससे हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।

9 जैसा लिखा है,

“उसने बिखेरा, उसने गरीबों को दान
दिया,
उसकी धार्मिकता सदा बनी रहेगी।”

([illegible]. 112:9)

10 अतः जो बोनेवाले को बीज, और भोजन के लिये रोटी देता है वह तुम्हें बीज देगा, और उसे फलवन्त करेगा; और तुम्हारे धार्मिकता के फलों को बढ़ाएगा। ***([illegible]. 55:10, [illegible] 10:12)***

11 तुम हर बात में सब प्रकार की उदारता के लिये जो हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करवाती है, धनवान किए जाओ।

12 क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से, न केवल पवित्र लोगों की घटियाँ पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का बहुत धन्यवाद होता है।

13 क्योंकि इस सेवा को प्रमाण स्वीकार कर वे *[illegible]*†, कि तुम मसीह के सुसमाचार को मानकर उसके अधीन रहते हो, और उनकी, और सब की सहायता करने में उदारता प्रगट करते रहते हो।

14 और वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं; और इसलिए कि *[illegible]*‡, तुम्हारी लालसा करते रहते हैं।

15 परमेश्वर को उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो।

10

[illegible]

1 मैं वही पौलुस जो तुम्हारे सामने दीन हूँ, परन्तु पीठ पीछे तुम्हारी ओर साहस करता हूँ; तुम को *[illegible], [illegible]** के कारण समझाता हूँ।

---

* **9:8** *[illegible]:* यह मत समझो कि उदारतापूर्वक देने के द्वारा आपकी जरुरत कम हो जाएगी, बल्कि परमेश्वर में भरोसा रखें कि वह हमारे भविष्य की जरूरतों के लिए आपूर्ति करेंगे। † **9:13** *[illegible]:* तुम्हारे उदारता को देखकर वे परमेश्वर की स्तुति करेंगे। ‡ **9:14** *[illegible]:* उस अति कृपा के तहत जो परमेश्वर ने तुम्हें दिखाया। * **10:1** *[illegible], [illegible]:* नम्रता और उद्धारकर्ता की दयालुता; या उसकी नम्रता और सौम्यता की अनुसरण करने की इच्छा।

2 मैं यह विनती करता हूँ, कि तुम्हारे
सामने मुझे निर्भय होकर साहस करना
न पड़े; जैसा मैं कितनों पर जो हमको
शरीर के अनुसार चलनेवाले समझते
हैं, वीरता दिखाने का विचार करता हूँ।
3 क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते
फिरते हैं, तो भी शरीर के अनुसार नहीं
लड़ते।
4 क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार
शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के
लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं।
5 हम कल्पनाओं को, और हर
एक ऊँची बात को, जो परमेश्वर की
पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन
करते हैं; और हर एक भावना को कैद
करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते
हैं।
6 और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा
आज्ञा मानना पूरा हो जाए, तो हर एक
प्रकार की आज्ञा न मानने का पलटा
लें।

[illegible]

7 तुम इन्हीं बातों को देखते हो, जो
आँखों के सामने हैं, यदि किसी का
अपने पर यह भरोसा हो, कि मैं मसीह
का हूँ, तो वह यह भी जान ले, कि जैसा
वह मसीह का है, वैसे ही हम भी हैं।
8 क्योंकि यदि मैं उस अधिकार के
विषय में और भी घमण्ड दिखाऊँ, जो
प्रभु ने तुम्हारे बिगाड़ने के लिये नहीं
पर बनाने के लिये हमें दिया है, तो
लज्जित न होऊँगा।
9 यह मैं इसलिए कहता हूँ, कि
पत्रियों के द्वारा तुम्हें डरानेवाला न
ठहरूँ।
10 क्योंकि वे कहते हैं, "उसकी
पत्रियाँ तो गम्भीर और प्रभावशाली
हैं; परन्तु जब देखते हैं, तो कहते है वह
देह का निर्बल और वक्तव्य में हलका
जान पड़ता है।"
11 इसलिए जो ऐसा कहता है, कि
वह यह समझ रखे, कि जैसे पीठ पीछे
पत्रियों में हमारे वचन हैं, वैसे ही
तुम्हारे सामने हमारे काम भी होंगे।

[illegible]

12 क्योंकि हमें यह साहस नहीं कि
हम अपने आपको उनके साथ गिनें,
या उनसे अपने को मिलाएँ, जो अपनी
प्रशंसा करते हैं, और अपने आपको
आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से
तुलना करके मूर्ख ठहरते हैं।
13 हम तो सीमा से बाहर घमण्ड
कदापि न करेंगे, परन्तु उसी सीमा तक
जो परमेश्वर ने हमारे लिये ठहरा दी
है, और उसमें तुम भी आ गए हो और
उसी के अनुसार घमण्ड भी करेंगे।
14 क्योंकि हम अपनी सीमा से
बाहर अपने आपको बढ़ाना नहीं
चाहते, जैसे कि तुम तक न पहुँचने
की दशा में होता, वरन् मसीह का
सुसमाचार सुनाते हुए तुम तक पहुँच
चुके हैं।
15 और हम सीमा से बाहर औरों के
परिश्रम पर घमण्ड नहीं करते; परन्तु
हमें आशा है, कि ज्यों-ज्यों तुम्हारा
विश्वास बढ़ता जाएगा त्यों-त्यों हम
अपनी सीमा के अनुसार तुम्हारे कारण
और भी बढ़ते जाएँगे।
16 कि हम तुम्हारी सीमा से आगे
बढ़कर सुसमाचार सुनाएँ, और यह
नहीं, कि हम औरों की सीमा के भीतर
बने बनाए कामों पर घमण्ड करें।
17 परन्तु जो घमण्ड करे, वह प्रभु
पर घमण्ड करे। ***(1 [illegible]. 1:31, [illegible]. 9:24)***
18 क्योंकि जो अपनी बड़ाई करता
है, वह नहीं, परन्तु जिसकी बड़ाई प्रभु
करता है, वही ग्रहण किया जाता है।

11

[illegible]

1 यदि तुम मेरी थोड़ी मूर्खता सह लेते तो क्या ही भला होता; हाँ, मेरी सह भी लेते हो।

2 क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूँ, इसलिए कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुँवारी के समान मसीह को सौंप दूँ।

3 परन्तु मैं डरता हूँ कि जैसे साँप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सिधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाएँ। ***(1 [illegible]. 3:5, [illegible]. 3:13)***

4 यदि कोई तुम्हारे पास आकर, किसी दूसरे यीशु का प्रचार करे, जिसका प्रचार हमने नहीं किया या कोई और आत्मा तुम्हें मिले; जो पहले न मिला था; या और कोई सुसमाचार जिसे तुम ने पहले न माना था, तो तुम्हारा सहना ठीक होता।

[illegible]

5 मैं तो समझता हूँ, कि मैं किसी बात में बड़े से बड़े प्रेरितों से कम नहीं हूँ।

6 यदि मैं वक्तव्य में अनाड़ी हूँ, तो भी ज्ञान में नहीं; वरन् हमने इसको हर बात में सब पर तुम्हारे लिये प्रगट किया है।

7 क्या इसमें मैंने कुछ पाप किया; कि मैंने तुम्हें परमेश्वर का सुसमाचार सेंत-मेंत सुनाया; और अपने आपको नीचा किया, कि तुम ऊँचे हो जाओ?

8 मैंने और कलीसियाओं को लूटा अर्थात् मैंने उनसे मजदूरी ली, ताकि तुम्हारी सेवा करूँ।

9 और जब तुम्हारे साथ था, और मुझे घटी हुई, तो मैंने किसी पर भार नहीं डाला, क्योंकि भाइयों ने, मकिदुनिया से आकर मेरी घटी को पूरी की: और मैंने हर बात में अपने आपको तुम पर भार बनने से रोका, और रोके रहूँगा।

10 मसीह की सच्चाई मुझ में है, तो अखाया देश में कोई मुझे इस घमण्ड से न रोकेगा।

11 किस लिये? क्या इसलिए कि मैं तुम से प्रेम नहीं रखता? परमेश्वर यह जानता है।

12 परन्तु जो मैं करता हूँ, वही करता रहूँगा; कि जो लोग दाँव ढूँढ़ते हैं, उन्हें मैं दाँव पाने न दूँ, ताकि जिस बात में वे घमण्ड करते हैं, उसमें वे हमारे ही समान ठहरें।

13 क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करनेवाले, और मसीह के प्रेरितों का रूप धरनेवाले हैं।

14 और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है।

15 इसलिए यदि उसके सेवक भी धार्मिकता के सेवकों जैसा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात नहीं, परन्तु उनका अन्त उनके कामों के अनुसार होगा।

[illegible]

16 मैं फिर कहता हूँ, कोई मुझे मूर्ख न समझे; नहीं तो मूर्ख ही समझकर मेरी सह लो, ताकि थोड़ा सा मैं भी घमण्ड कर सकूँ।

17 इस बेधड़क में जो कुछ मैं कहता हूँ वह प्रभु की आज्ञा के अनुसार नहीं पर मानो मूर्खता से ही कहता हूँ।

18 जबकि बहुत लोग शरीर के
अनुसार घमण्ड करते हैं, तो मैं भी
घमण्ड करूँगा।
19 तुम तो समझदार होकर आनन्द
से मूर्खों की सह लेते हो।
20 क्योंकि जब तुम्हें [illegible]
[illegible]*, या खा जाता है, या
फँसा लेता है, या अपने आपको बड़ा
बनाता है, या तुम्हारे मुँह पर थप्पड़
मारता है, तो तुम सह लेते हो।
21 मेरा कहना अनादर की रीति पर
है, मानो कि हम निर्बल से थे;
परन्तु जिस किसी बात में कोई
साहस करता है, मैं मूर्खता से कहता
हूँ तो मैं भी साहस करता हूँ।
22 क्या वे ही इब्रानी हैं? मैं भी हूँ।
क्या वे ही इस्राएली हैं? मैं भी हूँ; क्या
वे ही अब्राहम के वंश के हैं? मैं भी हूँ।
23 क्या वे ही मसीह के सेवक हैं?
(मैं पागल के समान कहता हूँ) मैं उनसे
बढ़कर हूँ! अधिक परिश्रम करने में;
बार बार कैद होने में; कोड़े खाने में; बार
बार मृत्यु के जोखिमों में।
24 पाँच बार मैंने यहूदियों के हाथ से
उनतालीस कोड़े खाए।
25 तीन बार मैंने बेंतें खाई; एक बार
पथराव किया गया; तीन बार जहाज
जिन पर मैं चढ़ा था, टूट गए; एक रात
दिन मैंने समुद्र में काटा।
26 मैं बार बार यात्राओं में; नदियों
के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों
में; अपने जातिवालों से जोखिमों में;
अन्यजातियों से जोखिमों में; नगरों में
के जोखिमों में; जंगल के जोखिमों में;
समुद्र के जोखिमों में; झूठे भाइयों के
बीच जोखिमों में रहा;
27 परिश्रम और कष्ट में; बार बार
जागते रहने में; भूख-प्यास में; बार
बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े
रहने में।
28 और अन्य बातों को छोड़कर
जिनका वर्णन मैं नहीं करता सब
कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे
दबाती है।
29 किसकी निर्बलता से मैं निर्बल
नहीं होता? किसके पाप में गिरने से
मेरा जी नहीं दुखता?
30 यदि घमण्ड करना अवश्य है,
तो मैं अपनी निर्बलता की बातों पर
घमण्ड करूँगा।
31 प्रभु यीशु का परमेश्वर और पिता
जो सदा धन्य है, जानता है, कि मैं झूठ
नहीं बोलता।
32 दमिश्क में अरितास राजा की
ओर से जो राज्यपाल था, उसने मेरे
पकड़ने को दमिश्कियों के नगर पर
पहरा बैठा रखा था।
33 और मैं टोकरे में खिड़की से होकर
दीवार पर से उतारा गया, और उसके
हाथ से बच निकला।

12

[illegible]

1 यद्यपि घमण्ड करना तो मेरे लिये
ठीक नहीं, फिर भी करना पड़ता है;
पर मैं प्रभु के दिए हुए दर्शनों और
प्रकाशनों की चर्चा करूँगा।
2 मैं मसीह में एक मनुष्य को
जानता हूँ, चौदह वर्ष हुए कि न जाने
देहसहित, न जाने देहरहित, परमेश्वर
जानता है, ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग
तक उठा लिया गया।
3 मैं ऐसे मनुष्य को जानता हूँ
न जाने देहसहित, न जाने देहरहित
परमेश्वर ही जानता है।
4 कि स्वर्गलोक पर उठा लिया गया,
और ऐसी बातें सुनीं जो कहने की नहीं;

* **11:20** [illegible]: झूठे शिक्षक उनके विवेक पर अपना प्रभुत्व कर लेता है; उनके विचारों की स्वतंत्रता को नष्ट कर देता हैं।

और जिनका मुँह में लाना मनुष्य को
उचित नहीं।
5 ऐसे मनुष्य पर तो मैं घमण्ड
करूँगा, परन्तु अपने पर अपनी
निर्बलताओं को छोड़, अपने विषय
में घमण्ड न करूँगा।
6 क्योंकि यदि मैं घमण्ड करना चाहूँ
भी तो मूर्ख न होऊँगा, क्योंकि सच
बोलूँगा; तो भी रुक जाता हूँ, ऐसा
न हो, कि जैसा कोई मुझे देखता है,
या मुझसे सुनता है, मुझे उससे बढ़कर
समझे।

[illegible]

7 और इसलिए कि मैं प्रकाशनों की
बहुतायत से फूल न जाऊँ, मेरे शरीर में
एक काँटा चुभाया गया अर्थात् शैतान
का एक दूत कि मुझे घूँसे मारे ताकि
मैं फूल न जाऊँ। ***([illegible]. 4:13, [illegible]. 2:6)***
8 इसके विषय में मैंने प्रभु से तीन
बार विनती की, कि मुझसे यह दूर हो
जाए।
9 और उसने मुझसे कहा,
**“मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत
है; क्योंकि***[illegible]***।” इसलिए मैं बड़े आनन्द से
अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूँगा,
कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया
करती रहे।
10 इस कारण मैं मसीह के लिये
निर्बलताओं, और निन्दाओं में, और
दरिद्रता में, और उपद्रवों में, और
संकटों में, प्रसन्न हूँ; क्योंकि जब मैं
निर्बल होता हूँ, तभी बलवन्त होता हूँ।

[illegible]

11 मैं मूर्ख तो बना, परन्तु तुम ही ने
मुझसे यह बरबस करवाया: तुम्हें तो
मेरी प्रशंसा करनी चाहिए थी, क्योंकि
यद्यपि मैं कुछ भी नहीं, फिर भी उन
बड़े से बड़े प्रेरितों से किसी बात में कम
नहीं हूँ।
12 प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे बीच
सब प्रकार के धीरज सहित चिन्हों,
और अद्भुत कामों, और सामर्थ्य के
कामों से दिखाए गए।
13 तुम कौन सी बात में और
कलीसियाओं से कम थे, केवल इसमें
कि मैंने तुम पर अपना भार न रखा मेरा
यह अन्याय क्षमा करो।

[illegible]

14 अब, मैं तीसरी बार तुम्हारे पास
आने को तैयार हूँ, और मैं तुम पर
कोई भार न रखूँगा; क्योंकि मैं तुम्हारी
सम्पत्ति नहीं, वरन् तुम ही को चाहता
हूँ। क्योंकि बच्चों को माता-पिता के
लिये धन बटोरना न चाहिए, पर
माता-पिता को बच्चों के लिये।
15 मैं तुम्हारी आत्माओं के लिये
बहुत आनन्द से खर्च करूँगा, वरन्
आप भी खर्च हो जाऊँगा क्या जितना
बढ़कर मैं तुम से प्रेम रखता हूँ, उतना
ही घटकर तुम मुझसे प्रेम रखोगे?
16 ऐसा हो सकता है, कि मैंने तुम
पर बोझ नहीं डाला, परन्तु चतुराई से
तुम्हें धोखा देकर फँसा लिया।
17 भला, जिन्हें मैंने तुम्हारे पास
भेजा, क्या उनमें से किसी के द्वारा मैंने
छल करके तुम से कुछ ले लिया?
18 मैंने तीतुस को समझाकर उसके
साथ उस भाई को भेजा, तो क्या
तीतुस ने छल करके तुम से कुछ
लिया? क्या हम एक ही आत्मा के
चलाए न चले? क्या एक ही मार्ग पर
न चले?

* **12:9** *[illegible]:* सामर्थ्य जो मैं अपने लोगों को देता हूँ, जब वे अनुभव करेंगे कि वह कमजोर है तो और अधिक उन पर प्रकट होगा।

19 तुम अभी तक समझ रहे होंगे कि
हम तुम्हारे सामने प्रत्युत्तर दे रहे हैं,
[illegible]†,
और हे प्रियों, सब बातें तुम्हारी उन्नति
ही के लिये कहते हैं।
20 क्योंकि मुझे डर है, कहीं ऐसा
न हो, कि मैं आकर जैसा चाहता हूँ,
वैसा तुम्हें न पाऊँ; और मुझे भी जैसा
तुम नहीं चाहते वैसा ही पाओ, कि तुम
में झगड़ा, डाह, क्रोध, विरोध, ईर्ष्या,
चुगली, अभिमान और बखेड़े हों।
21 और कहीं ऐसा न हो कि जब
मैं वापस आऊँगा, मेरा परमेश्वर मुझे
अपमानित करे और मुझे बहुतों के
लिये फिर शोक करना पड़े, जिन्होंने
पहले पाप किया था, और उस गंदे
काम, और व्यभिचार, और लुचपन से,
जो उन्होंने किया, मन नहीं फिराया।

13

[illegible]

1 अब तीसरी बार तुम्हारे पास आता
हूँ: दो या तीन गवाहों के मुँह से हर
एक बात ठहराई जाएगी। ***([illegible]. 19:15)***
2 जैसे मैं जब दूसरी बार तुम्हारे
साथ था, वैसे ही अब दूर रहते हुए उन
लोगों से जिन्होंने पहले पाप किया,
और अन्य सब लोगों से अब पहले से
कह देता हूँ, कि यदि मैं फिर आऊँगा,
तो नहीं छोड़ूँगा।
3 तुम तो इसका प्रमाण चाहते हो,
कि मसीह मुझ में बोलता है, जो
तुम्हारे लिये निर्बल नहीं; परन्तु तुम में
सामर्थी है।
4 वह निर्बलता के कारण क्रूस पर
चढ़ाया तो गया, फिर भी परमेश्वर
की सामर्थ्य से जीवित है, हम भी तो
उसमें निर्बल हैं; परन्तु परमेश्वर की
सामर्थ्य से जो तुम्हारे लिये है, उसके
साथ जीएँगे।
5 अपने आपको परखो, कि विश्वास
में हो कि नहीं; *[illegible]**, क्या तुम अपने विषय में
यह नहीं जानते, कि यीशु मसीह तुम
में है? नहीं तो तुम निकम्मे निकले हो।
6 पर मेरी आशा है, कि तुम जान
लोगे, कि हम निकम्मे नहीं।
7 और हम अपने *[illegible]*†; इसलिए नहीं,
कि हम खरे देख पड़ें, पर इसलिए कि
तुम भलाई करो, चाहे हम निकम्मे ही
ठहरें।
8 क्योंकि हम सत्य के विरोध में कुछ
नहीं कर सकते, पर सत्य के लिये ही
कर सकते हैं।
9 जब हम निर्बल हैं, और तुम
बलवन्त हो, तो हम आनन्दित होते हैं,
और यह प्रार्थना भी करते हैं, कि तुम
सिद्ध हो जाओ।
10 इस कारण मैं तुम्हारे पीठ पीछे
ये बातें लिखता हूँ, कि उपस्थित होकर
मुझे उस अधिकार के अनुसार जिसे
प्रभु ने बिगाड़ने के लिये नहीं पर बनाने
के लिये मुझे दिया है, कड़ाई से कुछ
करना न पड़े।

[illegible]

† **12:19** *[illegible]*: हम परमेश्वर की उपस्थिति में सरल और स्पष्ट सच्चाई की घोषणा करते है। * **13:5** *[illegible]*: पौलुस अपने आपको परखने के लिए कहता है, क्योंकि वहाँ डर का अवसर था कि उनमें से बहुत से धोखा दिए गए थे। † **13:7** *[illegible]*: उत्सुकता से भलाई और केवल भलाई करने की इच्छा। ‡ **13:11** *[illegible]*: एक दूसरे के साथ। विवाद और कलह का अन्त हो जाए।

11 अतः हे भाइयों, आनन्दित रहो; सिद्ध बनते जाओ; धैर्य रखो; एक ही मन रखो; ??? ?? ???[‡], और प्रेम और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हारे साथ होगा।

12 एक दूसरे को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो।

13 सब पवित्र लोग तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

14 प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।

गलातियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

[illegible]

इस पत्र का लेखक पौलुस है। आरम्भिक कलीसिया का यही एकमत विश्वास था। पौलुस ने दक्षिणी गलातिया क्षेत्र की कलीसियाओं को यह पत्र लिखा था। एशिया माइनर की प्रचार-यात्रा के समय इन कलीसियाओं की स्थापना में पौलुस का भी हाथ था। गलातिया रोम या कुरिन्थ के जैसा एक सम्पूर्ण नगर नहीं था। वह एक रोमी प्रान्त था जिसमें अनेक नगर थे और वहाँ अनेक कलीसियाएँ स्थापित हो गई थीं। ये गलातियावासी जिन्हें पौलुस ने पत्र लिखा पौलुस द्वारा मसीही विश्वास में लाए गये थे।

[illegible]

लगभग ई.स. 48

सम्भव है कि पौलुस ने यह पत्र अन्ताकिया से लिखा था क्योंकि यह नगर उसका मुख्य निवास था।

[illegible]

यह पत्र गलातिया प्रदेश की कलीसियाओं के सदस्यों को लिखा गया था (गला. 1:1-2)।

[illegible]

इस पत्र के पीछे का उद्देश्य यह था कि यहूदी पृष्ठभूमि के मसीही विश्वासियों की भ्रमित शिक्षा का खण्डन करे क्योंकि उनकी शिक्षा के अनुसार उद्धार पाने के लिए खतना करवाना आवश्यक था। वह गलातिया के विश्वासियों को उद्धार का वास्तविक आधार समझाना चाहता था। पौलुस अपने प्रेरितीय अधिकार की पुष्टि करके अपने द्वारा प्रचार किए गये शुभ सन्देश का सत्यापन करता है। मनुष्य अनुग्रह के द्वारा विश्वास ही से धर्मनिष्ठ माना जाता है और उन्हें केवल अपने विश्वास से आत्मा की स्वतंत्रता के इस जीवन में जीना सीखना है।

[illegible]

मसीह में स्वतंत्रता

रूपरेखा

1. प्रस्तावना — 1:1-10
2. शुभ सन्देश का प्रमाणीकरण — 1:11-2:21
3. विश्वास के द्वारा धार्मिकता होना — 3:1-4:31
4. विश्वास के जीवन का आचरण एवं स्वतंत्रता — 5:1-6:18

[illegible]

1 पौलुस की, जो न मनुष्यों की ओर
से, और न मनुष्य के द्वारा, वरन् यीशु
मसीह और परमेश्वर पिता के द्वारा,
जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया,
प्रेरित है।
2 और सारे भाइयों की ओर से,
जो मेरे साथ हैं; गलातिया की
कलीसियाओं के नाम।
3 परमेश्वर पिता, और हमारे प्रभु
यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह
और शान्ति मिलती रहे।
4 उसी ने अपने आपको हमारे पापों
के लिये दे दिया, ताकि हमारे परमेश्वर
और पिता की इच्छा के अनुसार हमें
इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए।
5 उसकी महिमा युगानुयुग होती
रहे। आमीन।

[illegible]

6 मुझे आश्चर्य होता है, कि जिसने
तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया
उससे तुम इतनी जल्दी फिरकर और
ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने
लगे।
7 परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही
नहीं पर बात यह है, कि कितने ऐसे

हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं।

[8] परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो श्रापित हो।

[9] जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूँ, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो श्रापित हो।

[10] अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूँ या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूँ? यदि मैं अब तक *[illegible]*[*], तो मसीह का दास न होता।

[illegible]

[11] हे भाइयों, मैं तुम्हें जताए देता हूँ, कि जो सुसमाचार मैंने सुनाया है, वह मनुष्य का नहीं।

[12] क्योंकि वह *[illegible]*[†], और न मुझे सिखाया गया, पर यीशु मसीह के प्रकाशन से मिला।

[13] यहूदी मत में जो पहले मेरा चाल-चलन था, तुम सुन चुके हो; कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नाश करता था।

[14] और मैं यहूदी धर्म में अपने साथी यहूदियों से अधिक आगे बढ़ रहा था और अपने पूर्वजों की परम्पराओं में बहुत ही उत्तेजित था।

[15] परन्तु परमेश्वर की जब इच्छा हुई, *[illegible]*[‡] और अपने अनुग्रह से बुला लिया, ***([illegible]. 49:1,5, [illegible]. 1:5)***

[16] कि मुझ में अपने पुत्र को प्रगट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊँ; तो न मैंने माँस और लहू से सलाह ली;

[17] और न यरूशलेम को उनके पास गया जो मुझसे पहले प्रेरित थे, पर तुरन्त अरब को चला गया और फिर वहाँ से दमिश्क को लौट आया।

[18] फिर तीन वर्षों के बाद मैं कैफा से भेंट करने के लिये यरूशलेम को गया, और उसके पास पन्द्रह दिन तक रहा।

[19] परन्तु प्रभु के भाई याकूब को छोड़ और प्रेरितों में से किसी से न मिला।

[20] जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, परमेश्वर को उपस्थित जानकर कहता हूँ, कि वे झूठी नहीं।

[21] इसके बाद मैं सीरिया और किलिकिया के देशों में आया।

[22] परन्तु यहूदिया की कलीसियाओं ने जो मसीह में थीं, मेरा मुँह तो कभी नहीं देखा था।

[23] परन्तु यही सुना करती थीं, कि जो हमें पहले सताता था, वह अब उसी विश्वास का सुसमाचार सुनाता है, जिसे पहले नाश करता था।

[24] और मेरे विषय में परमेश्वर की महिमा करती थीं।

2

[illegible]

---

[*] **1:10** *[illegible]*: यदि यह उसके जीवन का उद्देश्य होता, तो वह "अब मसीह का दास" नहीं होता। [†] **1:12** *[illegible]*: सम्भवतः यह अपने विरोधियों के उत्तर में कहा हैं, जो उल्लेख करता था कि पौलुस के पास अन्य लोगों से सुसमाचार का ज्ञान आया था। [‡] **1:15** *[illegible]*: अर्थ हैं कि परमेश्वर अपने गुप्त उद्देश्यों के लिए प्रेरित होने के लिए पौलुस को अलग किया था।

1 चौदह वर्ष के बाद मैं बरनबास के साथ यरूशलेम को गया और तीतुस को भी साथ ले गया।

2 और *[illegible]*[*] और जो सुसमाचार मैं अन्यजातियों में प्रचार करता हूँ, उसको मैंने उन्हें बता दिया, पर एकान्त में उन्हीं को जो बड़े समझे जाते थे, ताकि ऐसा न हो, कि मेरी इस समय की, या पिछली भाग-दौड़ व्यर्थ ठहरे।

3 परन्तु तीतुस भी जो मेरे साथ था और जो यूनानी है; खतना कराने के लिये विवश नहीं किया गया।

4 और यह उन झूठे भाइयों के कारण हुआ, जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतंत्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिली है, भेद कर, हमें दास बनाएँ।

5 उनके अधीन होना हमने एक घड़ी भर न माना, इसलिए कि सुसमाचार की सच्चाई तुम में बनी रहे।

6 फिर जो लोग कुछ समझे जाते थे वे चाहे कैसे भी थे, मुझे इससे कुछ काम नहीं, परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता उनसे मुझे कुछ भी नहीं प्राप्त हुआ। ***(2 [illegible]. 11:5, [illegible]. 10:17)***

7 परन्तु इसके विपरीत उन्होंने देखा, कि जैसा खतना किए हुए लोगों के लिये सुसमाचार का काम पतरस को सौंपा गया वैसा ही *[illegible]*[†]।

8 क्योंकि जिसने पतरस से खतना किए हुओं में प्रेरिताई का कार्य बड़े प्रभाव सहित करवाया, उसी ने मुझसे भी अन्यजातियों में प्रभावशाली कार्य करवाया।

9 और जब उन्होंने उस अनुग्रह को जो मुझे मिला था जान लिया, तो याकूब, और कैफा, और यूहन्ना ने जो कलीसिया के खम्भे समझे जाते थे, मुझ को और बरनबास को संगति का दाहिना हाथ देकर संग कर लिया, कि हम अन्यजातियों के पास जाएँ, और वे खतना किए हुओं के पास।

10 केवल यह कहा, कि हम कंगालों की सुधि लें, और इसी काम को करने का मैं आप भी यत्न कर रहा था।

[illegible]

11 पर जब कैफा अन्ताकिया में आया तो मैंने उसके मुँह पर उसका सामना किया, क्योंकि वह दोषी ठहरा था। ***([illegible]. 2:14)***

12 इसलिए कि याकूब की ओर से कुछ लोगों के आने से पहले वह अन्यजातियों के साथ खाया करता था, परन्तु जब वे आए, तो खतना किए हुए लोगों के डर के मारे उनसे हट गया और किनारा करने लगा। ***([illegible]. 10:28, [illegible]. 11:2-3)***

13 और उसके साथ शेष यहूदियों ने भी कपट किया, यहाँ तक कि बरनबास भी उनके कपट में पड़ गया।

14 पर जब मैंने देखा, कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते, तो मैंने सब के सामने कैफा से कहा, "जब तू यहूदी होकर अन्यजातियों के समान चलता है, और यहूदियों के समान नहीं तो तू अन्यजातियों को यहूदियों के समान चलने को क्यों कहता है?"

[illegible]

---

* **2:2** *[illegible]:* पौलुस सचेत रूप से बताता है कि वह परमेश्वर के व्यक्त आदेश के अनुसार चला। † **2:7** *[illegible]:* संसार के खतनारहितों को अर्थात् अन्यजातीय लोगों के लिए सुसमाचार प्रचार का कर्त्तव्य।

15 हम जो जन्म के यहूदी हैं, और
पापी अन्यजातियों में से नहीं।
16 तो भी यह जानकर कि मनुष्य
व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल
यीशु मसीह पर विश्वास करने के
द्वारा धर्मी ठहरता है, हमने आप भी
मसीह यीशु पर विश्वास किया, कि
हम व्यवस्था के कामों से नहीं पर
मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें;
इसलिए कि व्यवस्था के कामों से कोई
प्राणी धर्मी न ठहरेगा। ***([illegible]. 3:20-22, [illegible]. 3:9)***
17 हम जो मसीह में धर्मी ठहरना
चाहते हैं, यदि आप ही पापी निकलें,
तो क्या मसीह पाप का सेवक है?
कदापि नहीं!
18 क्योंकि जो कुछ मैंने गिरा दिया,
यदि उसी को फिर बनाता हूँ, तो अपने
आपको अपराधी ठहराता हूँ।
19 मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था
के लिये मर गया, कि परमेश्वर के लिये
जीऊँ।
20 मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया
गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर
मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर
में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस
विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर
के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया,
और मेरे लिये अपने आपको दे दिया।
21 मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ
नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के
द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का
मरना व्यर्थ होता।

3

[illegible]

1 *[illegible]*[*],
किसने तुम्हें मोह लिया? तुम्हारी तो
मानो आँखों के सामने यीशु मसीह
क्रूस पर दिखाया गया!
2 मैं तुम से केवल यह जानना
चाहता हूँ, कि तुम ने पवित्र आत्मा
को, क्या व्यवस्था के कामों से, या
विश्वास के समाचार से पाया? ***([illegible]. 3:5, [illegible]. 15:8-10)***
3 क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो, कि
[illegible][†] अब शरीर की रीति पर अन्त
करोगे?
4 क्या तुम ने इतना दुःख व्यर्थ
उठाया? परन्तु कदाचित् व्यर्थ नहीं।
5 इसलिए जो तुम्हें आत्मा दान
करता और तुम में सामर्थ्य के काम
करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों
से या विश्वास के सुसमाचार से ऐसा
करता है?
6 "अब्राहम ने तो परमेश्वर पर
विश्वास किया और यह उसके लिये
धार्मिकता गिनी गई।" ***([illegible]. 15:6)***
7 तो यह जान लो, कि जो विश्वास
करनेवाले हैं, वे ही अब्राहम की
सन्तान हैं।
8 और पवित्रशास्त्र ने पहले
ही से यह जानकर, कि परमेश्वर
अन्यजातियों को विश्वास से धर्मी
ठहराएगा, पहले ही से अब्राहम को
यह सुसमाचार सुना दिया, कि "तुझ
में सब जातियाँ आशीष पाएँगी।"
([illegible]. 12:3, [illegible]. 18:18)
9 तो जो विश्वास करनेवाले हैं, वे
विश्वासी अब्राहम के साथ आशीष
पाते हैं।

[illegible]

10 अतः जितने लोग व्यवस्था के
कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब श्राप
के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, "जो

[*] **3:1** *[illegible]:* अर्थात्, झूठे शिक्षकों के प्रभाव में आने के लिए, उन्हें निर्बुद्धि कहता है। [†] **3:3** *[illegible]:* जब सुसमाचार पहले उनको प्रचार किया गया था।

कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह श्रापित है।" *([illegible]. 2:10,12, [illegible]. 27:26)*
11 पर यह बात प्रगट है, कि
व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के यहाँ कोई धर्मी नहीं ठहरता क्योंकि धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा।
12 पर व्यवस्था का विश्वास से कुछ
सम्बंध नहीं; पर "जो उनको मानेगा, वह उनके कारण जीवित रहेगा।" *([illegible]. 18:5)*
13 *[illegible]*‡ क्योंकि लिखा है, "जो
कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है।" *([illegible]. 21:23)*
14 यह इसलिए हुआ, कि
[illegible]§ मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुँचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें, जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।

[illegible]

15 हे भाइयों, मैं मनुष्य की रीति
पर कहता हूँ, कि मनुष्य की वाचा भी जो पक्की हो जाती है, तो न कोई उसे टालता है और न उसमें कुछ बढ़ाता है।
16 अतः प्रतिज्ञाएँ अब्राहम को, और
उसके वंश को दी गईं; वह यह नहीं कहता, "वंशों को," जैसे बहुतों के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि "तेरे वंश को" और वह मसीह है। *([illegible] 1:1)*
17 पर मैं यह कहता हूँ कि जो
वाचा परमेश्वर ने पहले से पक्की की थी, उसको व्यवस्था चार सौ तीस वर्षों के बाद आकर नहीं टाल सकती, कि प्रतिज्ञा व्यर्थ ठहरे। *([illegible]. 12:40)*
18 क्योंकि यदि विरासत व्यवस्था
से मिली है, तो फिर प्रतिज्ञा से नहीं, परन्तु परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा के द्वारा दे दी है।

[illegible]

19 तब फिर व्यवस्था क्या रही? वह
तो अपराधों के कारण बाद में दी गई, कि उस वंश के आने तक रहे, जिसको प्रतिज्ञा दी गई थी, और व्यवस्था स्वर्गदूतों के द्वारा एक मध्यस्थ के हाथ ठहराई गई।
20 मध्यस्थ तो एक का नहीं होता,
परन्तु परमेश्वर एक ही है।
21 तो क्या व्यवस्था परमेश्वर की
प्रतिज्ञाओं के विरोध में है? कदापि नहीं! क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था दी जाती जो जीवन दे सकती, तो सचमुच धार्मिकता व्यवस्था से होती।
22 परन्तु पवित्रशास्त्र ने सब को
पाप के अधीन कर दिया, ताकि वह प्रतिज्ञा जिसका आधार यीशु मसीह पर विश्वास करना है, विश्वास करनेवालों के लिये पूरी हो जाए।
23 पर विश्वास के आने से पहले
व्यवस्था की अधीनता में हम कैद थे, और उस विश्वास के आने तक जो प्रगट होनेवाला था, हम उसी के बन्धन में रहे।
24 इसलिए व्यवस्था मसीह तक
पहुँचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें।
25 परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो
हम अब शिक्षक के अधीन न रहे।

[illegible]

‡ **3:13** *[illegible] ....* *[illegible]:* इसका मतलब, मसीह ने खरीदा, या व्यवस्था के श्राप से स्वतंत्र किया। § **3:14** *[illegible]:* आशीष, जिसका अब्राहम ने आनन्द लिया, वो विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया।

26 क्योंकि तुम सब उस विश्वास
करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है,
परमेश्वर की सन्तान हो।
27 और तुम में से जितनों ने मसीह
में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह
को पहन लिया है।
28 अब न कोई यहूदी रहा और न
यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न
कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब
मसीह यीशु में एक हो।
29 और यदि तुम मसीह के हो,
तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के
अनुसार वारिस भी हो।

4

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 मैं यह कहता हूँ, कि वारिस जब
तक बालक है, यद्यपि सब वस्तुओं का
स्वामी है, तो भी उसमें और दास में
कुछ भेद नहीं।
2 परन्तु पिता के ठहराए हुए समय
तक रक्षकों और भण्डारियों के वश में
रहता है।
3 वैसे ही हम भी, जब बालक थे, तो
संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर
दास बने हुए थे।
4 परन्तु जब *[illegible] [illegible] [illegible]*[*], तो
परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो
स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन
उत्पन्न हुआ।
5 ताकि व्यवस्था के अधीनों को
मोल लेकर छुड़ा ले, और हमको
लेपालक होने का पद मिले।
6 और तुम जो पुत्र हो, इसलिए
परमेश्वर ने *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*[†] को, जो 'हे अब्बा, हे पिता'
कहकर पुकारता है, हमारे हृदय में
भेजा है।
7 इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु
पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो
परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

8 फिर पहले, तो तुम परमेश्वर को
न जानकर उनके दास थे जो स्वभाव
में देवता नहीं। ***([illegible]. 37:19, [illegible]. 2:11)***
9 पर अब जो तुम ने परमेश्वर
को पहचान लिया वरन् परमेश्वर ने
तुम को पहचाना, तो उन निर्बल और
निकम्मी आदि शिक्षा की बातों की
ओर क्यों फिरते हो, जिनके तुम दोबारा
दास होना चाहते हो?
10 तुम दिनों और महीनों और नियत
समयों और वर्षों को मानते हो।
11 मैं तुम्हारे विषय में डरता हूँ, कहीं
ऐसा न हो, कि जो परिश्रम मैंने तुम्हारे
लिये किया है वह व्यर्थ ठहरे।
12 हे भाइयों, मैं तुम से विनती
करता हूँ, तुम मेरे समान हो जाओ:
क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूँ;
तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं।
13 पर तुम जानते हो, कि पहले-
पहल मैंने शरीर की निर्बलता के कारण
तुम्हें सुसमाचार सुनाया।
14 और तुम ने मेरी शारीरिक दशा
को जो तुम्हारी परीक्षा का कारण थी,
तुच्छ न जाना; न उससे घृणा की; और
परमेश्वर के दूत वरन् मसीह के समान
मुझे ग्रहण किया।
15 तो वह तुम्हारा आनन्द कहाँ
गया? मैं तुम्हारा गवाह हूँ, कि यदि

---

* **4:4** *[illegible] [illegible] [illegible]:* मसीहा के आने के लिए नियुक्त समय। † **4:6** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* प्रभु यीशु का आत्मा जो परमेश्वर के नजदीक उन्हें उनके पुत्र के रूप में आने के लिये योग्य बनाता हैं।

हो सकता, तो तुम अपनी आँखें भी निकालकर मुझे दे देते।

16 तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी हो गया हूँ। ***(▯▯▯. 5:10)***

17 वे तुम्हें मित्र बनाना तो चाहते हैं, पर भली मनसा से नहीं; वरन् तुम्हें मुझसे अलग करना चाहते हैं, कि तुम उन्हीं के साथ हो जाओ।

18 पर उत्साही होना अच्छा है, कि भली बात में हर समय यत्न किया जाए, न केवल उसी समय, कि जब मैं तुम्हारे साथ रहता हूँ।

19 हे मेरे बालकों, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर जच्चा के समान पीड़ाएँ सहता हूँ।

20 इच्छा तो यह होती है, कि अब तुम्हारे पास आकर और ही प्रकार से बोलूँ, क्योंकि तुम्हारे विषय में मैं विकल हूँ।

▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯: ▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯

21 तुम जो व्यवस्था के अधीन होना चाहते हो, मुझसे कहो, क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते?

22 यह लिखा है, कि अब्राहम के दो पुत्र हुए; एक दासी से, और एक स्वतंत्र स्त्री से। ***(▯▯▯▯. 16:5, ▯▯▯▯. 21:2)***

23 परन्तु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा, और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा।

24 इन बातों में दृष्टान्त है, ये स्त्रियाँ मानो दो वाचाएँ हैं, एक तो सीनै पहाड़ की जिससे दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह हागार है।

25 और हागार मानो अरब का सीनै पहाड़ है, और आधुनिक यरूशलेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है।

26 पर ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और वह हमारी माता है।

27 क्योंकि लिखा है,

“हे बाँझ, तू जो नहीं जनती आनन्द कर,
तू जिसको पीड़ाएँ नहीं उठती; गला खोलकर जयजयकार कर,
क्योंकि त्यागी हुई की सन्तान सुहागिन की सन्तान से भी अधिक है।” ***(▯▯▯. 54:1)***

28 हे भाइयों, हम इसहाक के समान *▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯*‡ हैं।

29 और जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्मा हुआ आत्मा के अनुसार जन्मे हुए को सताता था, वैसा ही अब भी होता है। ***(▯▯▯▯. 21:9)***

30 परन्तु पवित्रशास्त्र क्या कहता है? “दासी और उसके पुत्र को निकाल दे, क्योंकि दासी का पुत्र स्वतंत्र स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा।” ***(▯▯▯▯. 21:10)***

31 इसलिए हे भाइयों, हम दासी के नहीं परन्तु स्वतंत्र स्त्री की सन्तान हैं।

5

▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯

1 मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; इसलिए इसमें स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो।

2 मैं पौलुस तुम से कहता हूँ, कि यदि खतना कराओगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा।

‡ **4:28** *▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯:* हम इसहाक के समान है क्योंकि हमारे लिए महान और बहुमूल्य प्रतिज्ञा बनाई गई है।

3 फिर भी मैं हर एक खतना
करानेवाले को जताए देता हूँ, कि उसे
सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी।
4 तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी
ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग
और अनुग्रह से गिर गए हो।
5 क्योंकि आत्मा के कारण, हम
विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता
की प्रतीक्षा करते हैं।
6 और मसीह यीशु में न खतना, न
खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु
केवल विश्वास का जो प्रेम के द्वारा
प्रभाव करता है।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

7 तुम तो भली भाँति दौड़ रहे थे,
अब किसने तुम्हें रोक दिया, कि सत्य
को न मानो।
8 ऐसी सीख तुम्हारे बुलानेवाले की
ओर से नहीं।
9 थोड़ा सा ख़मीर सारे गुँधे हुए आटे
को ख़मीर कर डालता है।
10 मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में
भरोसा रखता हूँ, कि तुम्हारा कोई
दूसरा विचार न होगा; परन्तु जो तुम्हें
घबरा देता है, वह कोई क्यों न हो दण्ड
पाएगा।
11 हे भाइयों, यदि मैं अब तक
खतना का प्रचार करता हूँ, तो क्यों अब
तक सताया जाता हूँ; फिर तो क्रूस की
ठोकर जाती रही।
12 भला होता, कि जो तुम्हें
डाँवाडोल करते हैं, वे अपना अंग ही
काट डालते!
13 हे भाइयों, तुम *[illegible]*
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible][*];
परन्तु ऐसा न हो, कि यह स्वतंत्रता
शारीरिक कामों के लिये अवसर बने,
वरन् प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।
14 क्योंकि सारी व्यवस्था इस
एक ही बात में पूरी हो जाती है,
"तू अपने पड़ोसी से अपने समान
प्रेम रख।" ***([illegible] 22:39,40,***
[illegible]. 19:18)
15 पर यदि तुम एक दूसरे को दाँत से
काटते और फाड़ खाते हो, तो चौकस
रहो, कि एक दूसरे का सत्यानाश न कर
दो।

[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible]

16 पर मैं कहता हूँ, आत्मा के
अनुसार चलो, तो तुम शरीर की
लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।
17 क्योंकि *[illegible] [illegible] [illegible]*
[illegible] [illegible][†] और आत्मा शरीर के
विरोध में लालसा करता है, और ये
एक दूसरे के विरोधी हैं; इसलिए कि
जो तुम करना चाहते हो वह न करने
पाओ।
18 और यदि तुम आत्मा के चलाए
चलते हो तो व्यवस्था के अधीन न रहे।
19 शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात्
व्यभिचार, गंदे काम, लुचपन,
20 मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा,
ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म,
21 डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा,
और इनके जैसे और-और काम हैं,
इनके विषय में मैं तुम को पहले से कह
देता हूँ जैसा पहले कह भी चुका हूँ, कि
ऐसे-ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के
राज्य के वारिस न होंगे।
22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द,
शान्ति, धीरज, और दया, भलाई,
विश्वास,
23 नम्रता, और संयम हैं; ऐसे-ऐसे
कामों के विरोध में कोई व्यवस्था नहीं।

---

* **5:13** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* पाप की दासत्व से स्वतंत्र, और महँगा और कष्टदायक संस्कार और रीति-रिवाजों की अधीनता से स्वतंत्र। † **5:17** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* शरीर की अभिलाषा और हठ आत्मा के विरोध में होती हैं।

24 और जो मसीह यीशु के हैं,
उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं
और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा
दिया है।
25 यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित
हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।
26 हम घमण्डी होकर न एक दूसरे
को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें।

6

[illegible]

1 हे भाइयों, यदि कोई मनुष्य किसी
अपराध में पकड़ा जाए, तो तुम जो
आत्मिक हो, नम्रता के साथ ऐसे को
सम्भालो, और अपनी भी देख-रेख
करो, कि तुम भी परीक्षा में न पड़ो।
2 *[illegible]*[*], और इस प्रकार मसीह की
व्यवस्था को पूरी करो।
3 क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर
भी अपने आपको कुछ समझता है, तो
अपने आपको धोखा देता है।
4 पर *[illegible]*[†], और तब दूसरे के विषय
में नहीं परन्तु अपने ही विषय में उसको
घमण्ड करने का अवसर होगा।
5 क्योंकि हर एक व्यक्ति अपना ही
बोझ उठाएगा।

[illegible]

6 जो वचन की शिक्षा पाता है, वह
सब अच्छी वस्तुओं में सिखानेवाले को
भागी करे।
7 धोखा न खाओ, परमेश्वर उपहास
में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य
जो कुछ बोता है, वही काटेगा।
8 क्योंकि जो अपने शरीर के लिये
बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश
की कटनी काटेगा; और जो आत्मा
के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा
अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।
9 हम भले काम करने में साहस न
छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो
ठीक समय पर कटनी काटेंगे।
10 इसलिए जहाँ तक अवसर मिले
हम सब के साथ भलाई करें; विशेष
करके विश्वासी भाइयों के साथ।

[illegible]

11 देखो, मैंने कैसे बड़े-बड़े अक्षरों में
तुम को अपने हाथ से लिखा है।
12 जितने लोग शारीरिक दिखावा
चाहते हैं वे तुम्हारे खतना करवाने के
लिये दबाव देते हैं, केवल इसलिए कि
वे मसीह के क्रूस के कारण सताए न
जाएँ।
13 क्योंकि खतना करानेवाले आप
तो, व्यवस्था पर नहीं चलते, पर
तुम्हारा खतना कराना इसलिए चाहते
हैं, कि तुम्हारी शारीरिक दशा पर
घमण्ड करें।
14 पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी
बात का घमण्ड करूँ, केवल हमारे प्रभु
यीशु मसीह के क्रूस का जिसके द्वारा
संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की
दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ।
15 क्योंकि न खतना, और न
खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि
महत्त्वपूर्ण है।
16 और जितने इस नियम पर चलेंगे
उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर,
शान्ति और दया होती रहे।
17 आगे को कोई मुझे दुःख न दे,
क्योंकि मैं *[illegible]*[‡]।

---

[*] **6:2** *[illegible]*: एक दूसरे के साथ रहें; आत्मिक जीवन में एक दूसरे की मदद करे। [†] **6:4** *[illegible]*: अपने आपको परमेश्वर के वचन से तुलना करे, जिसके द्वारा हमें अन्त के महान दिन में न्याय किया जाएगा। [‡] **6:17** *[illegible]*: मतलब है वह दाग जो शरीर में चुभाया गया या शरीर के ऊपर जलाया गया।

18 हे भाइयों, हमारे प्रभु यीशु मसीह
का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ
रहे। आमीन।

इफिसियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

⍰⍰⍰⍰

इफि. 1:1 से स्पष्ट होता है कि इस पत्री का लेखक पौलुस है। यह पत्री पौलुस द्वारा कलीसिया के आरम्भिक दिनों में लिखी गई प्रतीत होती है और आरम्भिक प्रेरितीय पितरों द्वारा इसका संदर्भ भी दिया गया है, जैसे रोम का क्लेमेंस, इग्नेशियस, हरमास तथा पोलीकार्प इत्यादि।

⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰

लगभग ई.स. 60

सम्भवतः जब पौलुस रोम में बन्दी था तब उसने यह पत्री लिखी।

⍰⍰⍰⍰⍰⍰

इसके प्रमुख पाठक इफिसुस की कलीसिया थी। पौलुस स्पष्ट संकेत देता है कि उसके लक्षित पाठक अन्यजाति विश्वासी हैं। इफि. 2:11-13 में वह स्पष्ट व्यक्त करता है कि; उसके पाठक “जन्म से अन्यजाति हैं।” (2:11) और इसी कारण यहूदी उन्हें “प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी” नहीं मानते थे (2:12)। इसी प्रकार इफि. 3:1 में भी वह अन्यजाति विश्वासियों का ही स्मरण करवाता है कि वह उनके लिए ही कारागार में है।

⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰

पौलुस की इच्छा थी कि जो मसीह के तुल्य परिपक्वता चाहते हैं वे इस पत्र को स्वीकार करें। इस पत्र में परमेश्वर की सच्ची सन्तान स्वरूप विकास हेतु आवश्यक अनुशासन समझाया गया है। इसके अतिरिक्त, इफिसियों के इस पत्र में विश्वासी को विश्वास में स्थिर रहने एवं दृढ़ होने हेतु सहायता प्रदान की गई है कि वे परमेश्वर की बुलाहट एवं उद्देश्य को पूरा करने में सक्षम हों। पौलुस चाहता था कि इफिसुस के मसीही विश्वासी अपने विश्वास में दृढ़ हों, अतः वह उन्हें कलीसिया के स्वभाव एवं उद्देश्य को समझाता है।

इस पत्र में पौलुस ऐसे अनेक शब्दों को काम में लेता है जो अन्यजाति मसीही पाठक समझ सकते थे क्योंकि वे उनके पूर्व धर्म के थे जैसे सिर, देह, परिपूर्णता, भेद, युग, शासन आदि। उसने इन शब्दों का उपयोग इसलिए किया कि उसके पाठकों को समझ में आ जाये कि मसीह किसी भी देवगण या आत्मिक प्राणियों से सर्वश्रेष्ठ है।

⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰

मसीह में आशीष

रूपरेखा

1. कलीसिया के सदस्यों के लिए सिद्धान्त — 1:1-3:21
2. कलीसिया के सदस्यों के कर्तव्य — 4:1-6:24

⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर
की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित
है, उन पवित्र और मसीह यीशु में
विश्वासी लोगों के नाम जो इफिसुस
में हैं,
2 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह
और शान्ति मिलती रहे।

⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰

3 हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु
मसीह के पिता का धन्यवाद हो कि
उसने हमें मसीह में *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰*

* **1:3** *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰*: परमेश्वर ने स्वर्गीय स्थानों या मामलों के सम्बंध में हमें मसीह में आशीष दी हैं।

[illegible][*] दी है।

4 जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया कि हम उसकी दृष्टि में पवित्र और निर्दोष हों।

5 और प्रेम में उसने अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों,

6 कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें अपने प्रिय पुत्र के द्वारा सेंत-मेंत दिया।

7 हमको मसीह में उसके लहू के द्वारा *[illegible]*[†], अर्थात् अपराधों की क्षमा, परमेश्वर के उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है,

8 जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया।

9 उसने अपनी इच्छा का भेद, अपने भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया, जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था,

10 कि परमेश्वर की योजना के अनुसार, समय की पूर्ति होने पर, जो कुछ स्वर्ग में और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।

11 मसीह में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर विरासत बने।

12 कि हम जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति का कारण हों।

13 और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।

14 वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये हमारी विरासत का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो।

[illegible]

15 इस कारण, मैं भी उस विश्वास जो तुम लोगों में प्रभु यीशु पर है और सब पवित्र लोगों के प्रति प्रेम का समाचार सुनकर,

16 तुम्हारे लिये परमेश्वर का धन्यवाद करना नहीं छोड़ता, और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता हूँ।

17 कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें बुद्धि की आत्मा और अपने ज्ञान का प्रकाश दे। ***([illegible]. 11:2)***

18 और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि हमारे बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी विरासत की महिमा का धन कैसा है।

19 और उसकी सामर्थ्य हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार।

20 जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर, ***([illegible]. 10:22, [illegible]. 110:1)***

21 सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता के, और *[illegible]*[‡], जो न केवल इस लोक में, पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया;

22 और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया और उसे सब वस्तुओं पर

---

† **1:7** *[illegible]*: पाप और पाप के दुष्परिणामों से छुटकारे को दर्शाता हैं ‡ **1:21** *[illegible]*: प्रभु यीशु उच्चतम बोधगम्य, गरिमा और सम्मान से अधिक ऊँचा किया गया।

शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे
दिया, ***([illegible]. 2:10, [illegible]. 8:6)***
23 यह उसकी देह है, और उसी की
परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण
करता है।

2

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 और उसने तुम्हें भी जिलाया, जो
अपने अपराधों और पापों के कारण मरे
हुए थे।
2 जिनमें तुम पहले इस संसार की
रीति पर, और *[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]** अर्थात् उस आत्मा के
अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा
न माननेवालों में कार्य करता है।
3 इनमें हम भी सब के सब पहले
अपने शरीर की लालसाओं में दिन
बिताते थे, और शरीर, और मन की
मनसाएँ पूरी करते थे, और अन्य
लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की
सन्तान थे।
4 परन्तु परमेश्वर ने जो दया का
धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण
जिससे उसने हम से प्रेम किया,
5 जब हम अपराधों के कारण मरे
हुए थे, तो हमें मसीह के साथ
जिलाया; अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार
हुआ है,
6 और मसीह यीशु में उसके साथ
उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके
साथ बैठाया।
7 कि वह अपनी उस दया से जो
मसीह यीशु में हम पर है, आनेवाले
समयों में अपने अनुग्रह का असीम
धन दिखाए।
8 क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह
ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह
तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर
का दान है;
9 और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो
कि कोई घमण्ड करे।
10 क्योंकि *[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]*† ; और मसीह यीशु में उन
भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें
परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के
लिये तैयार किया।

[illegible] [illegible] [illegible]

11 इस कारण स्मरण करो, कि तुम
जो शारीरिक रीति से अन्यजाति हो,
और जो लोग शरीर में हाथ के किए
हुए खतने से खतनावाले कहलाते हैं,
वे तुम को खतनारहित कहते हैं,
12 तुम लोग उस समय मसीह से
अलग और इस्राएल की प्रजा के पद
से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की
वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन
और जगत में ईश्वर रहित थे।
13 पर अब मसीह यीशु में तुम जो
पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा
निकट हो गए हो।
14 क्योंकि वही हमारा मेल है,
जिसने यहूदियों और अन्यजातियों को
एक कर दिया और अलग करनेवाले
दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया।
([illegible]. 3:28, [illegible]. 2:15)
15 और *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*‡
अर्थात् वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएँ
विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया
कि दोनों से अपने में एक नई जाति
उत्पन्न करके मेल करा दे,
16 और क्रूस पर बैर को नाश करके
इसके द्वारा दोनों को एक देह बनाकर
परमेश्वर से मिलाए।

* **2:2** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* दुष्ट आत्मा जो वायुमण्डल में निवास करते और अधिकार चलाते हैं। † **2:10** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* अर्थात्, हम लोग उसके द्वारा “रचे या बनाए” गये हैं। ‡ **2:15** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* उसके शरीर के क्रूस पर बलिदान के द्वारा।

17 और उसने आकर तुम्हें जो दूर थे, और उन्हें जो निकट थे, दोनों को मेल-मिलाप का सुसमाचार सुनाया। ***([illegible]. 2:13, [illegible]. 2:39)***

18 क्योंकि उस ही के द्वारा हम दोनों की एक आत्मा में पिता के पास पहुँच होती है।

[illegible]

19 इसलिए तुम अब परदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए।

20 और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। ***([illegible]. 28:16, 1 [illegible]. 12:28)***

21 जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है,

22 जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का *[illegible]*§ बनाए जाते हो।

3

[illegible]

1 *[illegible]** मैं पौलुस जो तुम अन्यजातियों के लिये मसीह यीशु का बन्दी हूँ

2 यदि तुम ने परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबन्ध का समाचार सुना हो, जो तुम्हारे लिये मुझे दिया गया।

3 अर्थात् यह कि वह भेद मुझ पर प्रकाश के द्वारा प्रगट हुआ, जैसा मैं पहले संक्षेप में लिख चुका हूँ।

4 जिससे तुम पढ़कर जान सकते हो कि मैं मसीह का वह भेद कहाँ तक समझता हूँ।

5 जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है।

6 अर्थात् यह कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग विरासत में सहभागी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं।

7 और मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो सामर्थ्य के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना।

[illegible]

8 मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से *[illegible]*† हूँ, यह अनुग्रह हुआ कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊँ,

9 और सब पर यह बात प्रकाशित करूँ कि उस भेद का प्रबन्ध क्या है, जो सब के सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था।

10 ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो स्वर्गीय स्थानों में हैं प्रगट किया जाए।

11 उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी।

12 जिसमें हमको उस पर विश्वास रखने से साहस और भरोसे से निकट आने का अधिकार है।

---

§ **2:22** *[illegible]:* आप केवल इससे जोड़े नहीं गए, परन्तु आप इमारत गठन का एक हिस्सा हो। * **3:1** *[illegible]:* इस सिद्धान्त के उपदेश के कारण; अर्थात् वह सिद्धान्त सुसमाचार था जो अन्यजातियों में प्रचार किया जाना है। † **3:8** *[illegible]:* यहाँ पर इस शब्द का मतलब हैं, मैं सभी संतों की तुलना में सबसे छोटा हूँ;' या मैं संतों के बीच में गिनें जाने के योग्य भी नहीं हूँ।

13 इसलिए मैं विनती करता हूँ कि जो क्लेश तुम्हारे लिये मुझे हो रहे हैं, उनके कारण साहस न छोड़ो, क्योंकि उनमें तुम्हारी महिमा है।

[illegible]

14 मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूँ,

15 जिससे स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है,

16 कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होते जाओ,

17 और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नींव डालकर,

18 सब पवित्र लोगों के साथ भली भाँति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है।

19 और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम *[illegible]*‡ तक परिपूर्ण हो जाओ।

20 अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है,

21 कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।

4

[illegible]

1 इसलिए मैं जो प्रभु में बन्दी हूँ तुम से विनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो,

2 अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो,

3 और मेल के बन्धन में आत्मा की *[illegible]** ।

4 एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।

5 एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा,

6 और *[illegible]*†, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में, और सब में है।

[illegible]

7 पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण से अनुग्रह मिला है।

8 इसलिए वह कहता है,

“वह ऊँचे पर चढ़ा,
और बन्दियों को बाँध ले गया,
और मनुष्यों को दान दिए।”

9 (उसके चढ़ने से, और क्या अर्थ पाया जाता है केवल यह कि वह पृथ्वी की निचली जगहों में उतरा भी था। ***([illegible]. 2:9, [illegible]. 3:13)***

10 और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश के ऊपर चढ़ भी गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे।)

11 और उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक

‡ **3:19** *[illegible]*: यहाँ इसका मतलब है कि आपके पास दैवीय उपस्थिति प्रचुर मात्रा में हो सके कि आप पर्याप्त मात्रा में परमेश्वर के सभी आनन्द के भागी हो सके। * **4:3** *[illegible]*: यह प्यार की, भरोसे की, स्नेह की एकता को दर्शाता है। † **4:6** *[illegible]*: एक परमेश्वर जो सब का पिता हैं, अर्थात्, वह जो उस पर विश्वास करते है, वह उन सभी का पिता हैं।

नियुक्त करके दे दिया। ***(2 [illegible]. 12:28,29)***
12 जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ
और सेवा का काम किया जाए, और
मसीह की देह उन्नति पाए।
13 जब तक कि हम सब के सब
विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की
पहचान में एक न हो जाएँ, और एक
सिद्ध मनुष्य न बन जाएँ और मसीह
के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएँ।
14 ताकि हम आगे को बालक न
रहें, जो मनुष्यों की ठग-विद्या और
चतुराई से उनके भ्रम की युक्तियों
की, और उपदेश की, हर एक वायु से
उछाले, और इधर-उधर घुमाए जाते
हों।
15 वरन् प्रेम में सच बोलें और सब
बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात्
मसीह में बढ़ते जाएँ,
16 जिससे सारी देह हर एक जोड़
की सहायता से एक साथ मिलकर,
और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के
अनुसार जो हर एक अंग के ठीक-
ठीक कार्य करने के द्वारा उसमें होता है,
अपने आपको बढ़ाती है कि वह प्रेम में
उन्नति करती जाए।

[illegible]

17 इसलिए मैं यह कहता हूँ और
प्रभु में जताए देता हूँ कि जैसे
अन्यजातीय लोग अपने मन की
अनर्थ की रीति पर चलते हैं, तुम अब
से फिर ऐसे न चलो।
18 क्योंकि उनकी बुद्धि अंधेरी हो
गई है और उस अज्ञानता के कारण जो
उनमें है और उनके मन की कठोरता के
कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग
किए हुए हैं;
19 और वे सुन्न होकर लुचपन में
लग गए हैं कि सब प्रकार के गंदे काम
लालसा से किया करें।
20 पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा
नहीं पाई।
21 वरन् तुम ने सचमुच उसी की
सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी
में सिखाए भी गए।
22 कि तुम अपने चाल-चलन के
पुराने मनुष्यत्व को जो भरमानेवाली
अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता
जाता है, उतार डालो।
23 और अपने मन के आत्मिक
स्वभाव में नये बनते जाओ,
24 और नये मनुष्यत्व को पहन
लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य
की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा
गया है। ***([illegible]. 3:10, 2 [illegible]. 5:17)***

[illegible]

25 इस कारण झूठ बोलना छोड़कर,
हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले,
क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग
हैं। ***([illegible]. 3:9, [illegible]. 12:5, [illegible]. 8:16)***
26 क्रोध तो करो, पर पाप मत करो;
सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न
रहे। ***([illegible]. 4:4)***
27 *[illegible]*‡।
28 चोरी करनेवाला फिर चोरी न
करे; वरन् भले काम करने में अपने
हाथों से परिश्रम करे; इसलिए कि
जिसे प्रयोजन हो, उसे देने को उसके
पास कुछ हो।
29 कोई गंदी बात तुम्हारे मुँह से न
निकले, पर आवश्यकता के अनुसार
वही निकले जो उन्नति के लिये
उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर
अनुग्रह हो।

‡ **4:27** *[illegible]:* शैतान के सुझावों और लालचों को मत मानो, जो निर्दयी और गुस्से की भावनाओं को संजोने के लिए हर एक मौके का इस्तेमाल करेगा।

30 परमेश्वर के पवित्र आत्मा को
शोकित मत करो, जिससे तुम पर
छुटकारे के दिन के लिये छाप दी
गई है। ***([illegible]. 1:13,14, [illegible].
63:10)***
31 सब प्रकार की कड़वाहट और
प्रकोप और क्रोध, और कलह, और
निन्दा सब बैर-भाव समेत तुम से दूर
की जाए।
32 एक दूसरे पर कृपालु, और
करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने
मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए,
वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध
क्षमा करो।

5

[illegible]

1 इसलिए प्रिय बच्चों के समान
परमेश्वर का अनुसरण करो;
2 और प्रेम में चलो जैसे मसीह
ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे
लिये अपने आपको सुखदायक सुगन्ध
के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके
बलिदान कर दिया। ***([illegible]. 13:34,
[illegible]. 2:20)***
3 जैसा पवित्र लोगों के योग्य है,
वैसा तुम में व्यभिचार, और किसी
प्रकार के अशुद्ध काम, या लोभ की
चर्चा तक न हो।
4 और *[illegible]*[*], क्योंकि ये बातें
शोभा नहीं देती, वरन् धन्यवाद ही
सुना जाए।
5 क्योंकि तुम यह जानते हो कि
किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या
लोभी मनुष्य की, जो मूर्तिपूजक के
बराबर है, मसीह और परमेश्वर के
राज्य में विरासत नहीं।
6 कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा
न दे; क्योंकि इन ही कामों के
कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न
माननेवालों पर भड़कता है।
7 इसलिए तुम उनके सहभागी न
हो।

[illegible]

8 क्योंकि *[illegible]*[†] परन्तु अब प्रभु में
ज्योति हो, अतः ज्योति की सन्तान
के समान चलो।
9 (क्योंकि ज्योति का फल सब
प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और
सत्य है),
10 और यह परखो, कि प्रभु को क्या
भाता है?
11 और अंधकार के निष्फल कामों में
सहभागी न हो, वरन् उन पर उलाहना
दो।
12 क्योंकि उनके गुप्त कामों की
चर्चा भी लज्जा की बात है।
13 पर जितने कामों पर उलाहना
दिया जाता है वे सब ज्योति से प्रगट
होते हैं, क्योंकि जो सब कुछ को प्रगट
करता है, वह ज्योति है।
14 इस कारण वह कहता है,

“हे सोनेवाले जाग
और मुर्दों में से जी उठ;
तो मसीह की ज्योति तुझ
पर चमकेगी।” ***([illegible]. 13:11,12, [illegible]. 60:1)***

[illegible]

15 इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी
चाल चलते हो; निर्बुद्धियों के समान
नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो।

---

* **5:4** *[illegible]:* इसका मतलब है कि इस प्रकार की बात जो फीकी, मूर्खतापूर्ण, बेवकूफ, मूढ़ जो उपदेश देने और सिखाने के लिए अनुकूल नहीं है। † **5:8** *[illegible]:* यहाँ इसका अर्थ है, वे स्वयं ही विगत में अज्ञानता में डूबे हुए थे, और उसी घृणित कामों में अभ्यस्त थे।

16 और अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं। ***([illegible]. 5:13, [illegible]. 4:5)***

17 इस कारण निर्बुद्धि न हो, पर ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है।

18 और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ, ***([illegible]. 23:31,32, [illegible]. 5:21-25)***

19 और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और स्तुति करते रहो। ***([illegible]. 3:16, 1 [illegible]. 14:26)***

20 और सदा सब बातों के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।

21 और मसीह के भय से *[illegible]*‡।

[illegible]

22 हे पत्नियों, अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो, जैसे प्रभु के। ***([illegible]. 3:18, 1 [illegible]. 3:1, [illegible]. 3:16)***

23 क्योंकि पति तो पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ता है।

24 पर जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियाँ भी हर बात में अपने-अपने पति के अधीन रहें।

25 हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया,

26 कि उसको *[illegible]*§ से शुद्ध करके पवित्र बनाए,

27 और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो।

28 इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी-अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है।

29 क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन् उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है।

30 इसलिए कि हम उसकी देह के अंग हैं।

31 "इस कारण पुरुष माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।" ***([illegible]. 2:24)***

32 यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ।

33 पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने।

6

[illegible]-[illegible] [illegible] [illegible]

1 हे बच्चों, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है।

2 "अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहली आज्ञा है, जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है),

‡ **5:21** *[illegible]:* जीवन के विभिन्न सम्बंधों में अधीनता को बनाए रखें। § **5:26** *[illegible]:* यह बाहरी समारोहों के द्वारा नहीं किया गया था, और न हृदय पर कोई चमत्कारी शक्ति के द्वारा किया गया था, परन्तु मन पर सच्चाई की विश्वासयोग्यता से प्रयोग के द्वारा किया गया।

3 कि तेरा भला हो, और तू धरती
पर बहुत दिन जीवित रहे।” ***([illegible]. 20:12, [illegible]. 5:16)***
4 और हे पिताओं, अपने बच्चों को
रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा,
और चेतावनी देते हुए, उनका पालन-पोषण करो। ***([illegible]. 6:7, [illegible]. 3:11,12 [illegible]. 19:18, [illegible]. 22:6, [illegible]. 3:2)***

[illegible] [illegible] [illegible]

5 हे दासों, जो लोग संसार के
अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, अपने मन
की सिधाई से डरते, और काँपते हुए,
जैसे मसीह की, वैसे ही उनकी भी
आज्ञा मानो।
6 और मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों
के समान दिखाने के लिये सेवा न करो,
पर मसीह के दासों के समान मन से
परमेश्वर की इच्छा पर चलो,
7 और उस सेवा को मनुष्यों की
नहीं, परन्तु प्रभु की जानकर सुइच्छा
से करो।
8 क्योंकि तुम जानते हो, कि जो
कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे
दास हो, चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही
पाएगा।
9 और हे स्वामियों, तुम भी
धमकियाँ छोड़कर उनके साथ वैसा ही
व्यवहार करो, क्योंकि जानते हो, कि
उनका और तुम्हारा दोनों का स्वामी
स्वर्ग में है, और वह किसी का पक्ष
नहीं करता। ***([illegible] 6:31, [illegible]. 10:17, 2 [illegible]. 19:7)***

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

10 इसलिए *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*[*]।
11 *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*[†] कि तुम शैतान
की युक्तियों के सामने खड़े रह सको।
12 क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध,
लहू और माँस से नहीं, परन्तु प्रधानों से
और अधिकारियों से, और इस संसार
के अंधकार के शासकों से, और उस
दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो
आकाश में हैं।
13 इसलिए परमेश्वर के सारे
हथियार बाँध लो कि तुम बुरे दिन में
सामना कर सको, और सब कुछ पूरा
करके स्थिर रह सको।
14 इसलिए सत्य से अपनी कमर
कसकर, और धार्मिकता की झिलम
पहनकर, ***([illegible]. 11:5, [illegible]. 59:17)***
15 और पाँवों में मेल के सुसमाचार
की तैयारी के जूते पहनकर; ***([illegible]. 52:7, [illegible]. 1:15)***
16 और उन सब के साथ विश्वास की
ढाल लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस
दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा
सको।
17 और उद्धार का टोप, और आत्मा
की तलवार जो परमेश्वर का वचन
है, ले लो। ***([illegible]. 49:2, [illegible]. 4:12, [illegible]. 59:17)***
18 और हर समय और हर प्रकार से
[illegible] [illegible] [illegible][‡], और
विनती करते रहो, और जागते रहो
कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार
विनती किया करो,
19 और मेरे लिये भी कि मुझे बोलने
के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए
कि मैं साहस से सुसमाचार का भेद
बता सकूँ,
20 जिसके लिये मैं जंजीर से जकड़ा

---

* **6:10** *[illegible] [illegible] .... [illegible] [illegible]:* पौलुस गलातियों को यह याद दिलाता हैं कि केवल प्रभु की सामर्थ्य के द्वारा वे विजय की आशा कर सकते हैं। † **6:11** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* यह पूरा विवरण यहाँ पर प्राचीन सैनिक के हथियारों से लिया गया हैं, जिसका मतलब “पूरा कवच” आक्रामक और रक्षात्मक होता हैं। ‡ **6:18** *[illegible] [illegible] [illegible]:* पवित्र आत्मा की सहायता से।

हुआ राजदूत हूँ। और यह भी कि मैं
उसके विषय में जैसा मुझे चाहिए
साहस से बोलूँ।

[illegible]

21 तुखिकुस जो प्रिय भाई और प्रभु
में विश्वासयोग्य सेवक है, तुम्हें सब
बातें बताएगा कि तुम भी मेरी दशा
जानो कि मैं कैसा रहता हूँ।
22 उसे मैंने तुम्हारे पास इसलिए
भेजा है, कि तुम हमारी दशा जानो,
और वह तुम्हारे मनों को शान्ति दे।
23 परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु
मसीह की ओर से भाइयों को शान्ति
और विश्वास सहित प्रेम मिले।
24 जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से
अमर प्रेम रखते हैं, उन सब पर अनुग्रह
होता रहे।

फिलिप्पियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

[illegible]

पौलुस स्वयं दावा करता है कि उसने यह पत्र लिखा है (1:1) तथा भाषा, शैली, ऐतिहासिक तथ्य इसकी पुष्टि करते हैं। आरम्भिक कलीसिया भी विषमता रहित पौलुस के लेखक होने और अधिकार की चर्चा करती है। फिलिप्पी की कलीसिया को लिखा गया यह पत्र मसीह का मन प्रकट करता है (2:1-11)। इस पत्र को लिखते समय पौलुस कारागार में था परन्तु वह आनन्दित था। यह पत्र हमें सिखाता है कि कठिनाइयों और कष्टों में भी मसीह के विश्वासी आनन्द का अनुभव कर सकते हैं। हमारे आनन्द का कारण मसीह में हमारी आशा है।

[illegible]

लगभग ई.स. 61

पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया को यह पत्र रोम के कारागार से लिखा था (प्रेरि. 28:30)। इस पत्र का वाहक इपफ्रुदीतुस था। वह फिलिप्पी की कलीसिया की ओर से पौलुस के लिए आर्थिक भेंट लेकर रोम आया था (फिलि. 2:25, 4:18)। वहाँ आकर इपफ्रुदीतुस बहुत बीमार हो गया था और इस कारण वह शीघ्र घर नहीं लौट पाया था। यही कारण था कि पत्र भी विलम्ब से पहुँचा (2:26,27)।

[illegible]

फिलिप्पी की कलीसिया, फिलिप्पी मकिदुनिया का एक प्रमुख नगर था।

[illegible]

पौलुस कलीसिया को अपने कारावास की परिस्थितियों से (1:12-26) और वहाँ से मुक्त हो जाने पर उसकी क्या योजना है उससे अवगत कराना चाहता था (2:23-24)। ऐसा प्रतीत होता है कि उस कलीसिया में कलह और विभाजन थे। अतः पौलुस दीनता के द्वारा एकता के विषय में लिखता है (2:1-18; 4:2-3)। पास्तरीय धर्मशास्त्री, पौलुस नकारात्मक शिक्षा और कुछ झूठे शिक्षकों के परिणामों के बारे में सीधा प्रतिवादी पत्र लिखता है (3:2,3)। पौलुस ने तीमुथियुस को कलीसिया की देख-रेख को सौंपना तथा इपफ्रुदीतुस के स्वास्थ्य एवं अपनी योजनाओं के बारे में चर्चा की है (2:19-30)। पौलुस उनकी आर्थिक भेंट एवं उसके प्रति उनकी चिन्ता के लिए भी आभार व्यक्त करता है (4:10-20)।

[illegible]

आनन्द भरा जीवन

रूपरेखा

1. नमस्कार — 1:1, 2
2. पौलुस की परिस्थिति एवं कलीसिया को प्रोत्साहन — 1:3-2:30
3. झूठे शिष्यों के विरुद्ध चेतावनी — 3:1-4:1
4. अन्तिम प्रबोधन — 4:2-9
5. आभारोक्ति — 4:10-20
6. अन्तिम नमस्कार — 4:21-23

[illegible]

1 मसीह यीशु के दास पौलुस और
तीमुथियुस की ओर से सब पवित्र
लोगों के नाम, जो मसीह यीशु में
होकर फिलिप्पी में रहते हैं, अध्यक्षों
और सेवकों समेत,
2 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह
और शान्ति मिलती रहे।

[illegible]

3 मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूँ,
तब-तब अपने परमेश्वर का धन्यवाद
करता हूँ,
4 और जब कभी तुम सब के लिये
विनती करता हूँ, तो सदा आनन्द के
साथ विनती करता हूँ
5 इसलिए कि तुम पहले दिन से
लेकर आज तक सुसमाचार के फैलाने
में मेरे सहभागी रहे हो।
6 *????? ?? ???? ?? ??????*
*??** कि जिसने तुम में अच्छा काम
आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह
के दिन तक पूरा करेगा।
7 उचित है कि मैं तुम सब के लिये
ऐसा ही विचार करूँ, क्योंकि तुम मेरे
मन में आ बसे हो, और मेरी कैद में और
सुसमाचार के लिये उत्तर और प्रमाण
देने में तुम सब मेरे साथ अनुग्रह में
सहभागी हो।
8 इसमें परमेश्वर मेरा गवाह है कि
मैं मसीह यीशु के समान प्रेम करके तुम
सब की लालसा करता हूँ।
9 और मैं यह प्रार्थना करता हूँ, कि
तुम्हारा प्रेम, ज्ञान और सब प्रकार के
विवेक सहित और भी बढ़ता जाए,
10 यहाँ तक कि तुम उत्तम से
?????? ?????? ?? ??????
?????†, और मसीह के दिन तक सच्चे
बने रहो, और ठोकर न खाओ;
11 और उस धार्मिकता के फल से
जो यीशु मसीह के द्वारा होते हैं,
भरपूर होते जाओ जिससे परमेश्वर की
महिमा और स्तुति होती रहे। ***(???.
15:8)***

????? ?? ???? ???? ?????

12 हे भाइयों, मैं चाहता हूँ, कि तुम
यह जान लो कि मुझ पर जो बीता है,
उससे सुसमाचार ही की उन्नति हुई है।
(2 ????. 2:9)
13 यहाँ तक कि कैसर के राजभवन
की सारे सैन्य-दल और शेष सब लोगों
में यह प्रगट हो गया है कि मैं मसीह के
लिये कैद हूँ,
14 और प्रभु में जो भाई हैं, उनमें
से अधिकांश मेरे कैद होने के कारण,
साहस बाँधकर, परमेश्वर का वचन
बेधड़क सुनाने का और भी साहस करते
हैं।
15 कुछ तो डाह और झगड़े के कारण
मसीह का प्रचार करते हैं और कुछ
भली मनसा से। ***(????. 2:3)***
16 कई एक तो यह जानकर कि
मैं सुसमाचार के लिये उत्तर देने को
ठहराया गया हूँ प्रेम से प्रचार करते हैं।
17 और कई एक तो सिधाई से नहीं
पर विरोध से मसीह की कथा सुनाते
हैं, यह समझकर कि मेरी कैद में मेरे
लिये क्लेश उत्पन्न करें।
18 तो क्या हुआ? केवल यह, कि
हर प्रकार से चाहे बहाने से, चाहे
सच्चाई से, मसीह की कथा सुनाई
जाती है, और मैं इससे आनन्दित हूँ,
और आनन्दित रहूँगा भी।
19 क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी
विनती के द्वारा, और *????? ?????*
?? ??????‡ के दान के द्वारा, इसका
प्रतिफल, मेरा उद्धार होगा। ***(???.
8:28)***

?????? ????? ????? ??

20 मैं तो यही हार्दिक लालसा और
आशा रखता हूँ कि मैं किसी बात में

---

* **1:6** *????? ?? ???? ?? ?????? ??:* इसका मतलब यह है पौलुस ने जो कुछ कहा उसका सच पूरी तरह से आश्वस्त था। † **1:10** *?????? ?????? ?? ?????? ?????:* सही और गलत क्या था, अच्छाई और बुराई क्या थी, इसकी समझ होना। ‡ **1:19** *????? ????? ?? ??????:* वह आत्मा जो यीशु मसीह में था कि उसे परीक्षाओं का धीरज पूर्वक सामना करने के योग्य बनाए।

लज्जित न होऊँ, पर जैसे मेरे प्रबल
साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी
देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसा ही
अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूँ या मर
जाऊँ।
21 *[illegible]*§, और मर
जाना लाभ है।
22 पर यदि शरीर में जीवित रहना
ही मेरे काम के लिये लाभदायक है तो
मैं नहीं जानता कि किसको चुनूँ।
23 क्योंकि मैं दोनों के बीच
असमंजस में हूँ; जी तो चाहता है कि
देह-त्याग के मसीह के पास जा रहूँ,
क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है,
24 परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे
कारण और भी आवश्यक है।
25 और इसलिए कि मुझे इसका
भरोसा है। अतः मैं जानता हूँ कि मैं
जीवित रहूँगा, वरन् तुम सब के साथ
रहूँगा, जिससे तुम विश्वास में दृढ़ होते
जाओ और उसमें आनन्दित रहो;
26 और जो घमण्ड तुम मेरे विषय
में करते हो, वह मेरे फिर तुम्हारे पास
आने से मसीह यीशु में अधिक बढ़
जाए।

[illegible]

27 केवल इतना करो कि तुम्हारा
चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के
योग्य हो कि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूँ,
चाहे न भी आऊँ, तुम्हारे विषय में यह
सुनूँ कि तुम एक ही आत्मा में स्थिर
हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के
विश्वास के लिये परिश्रम करते रहते
हो।
28 और किसी बात में विरोधियों से
भय नहीं खाते। यह उनके लिये विनाश
का स्पष्ट चिन्ह है, परन्तु तुम्हारे लिये
उद्धार का, और यह परमेश्वर की ओर
से है।
29 क्योंकि मसीह के कारण तुम पर
यह अनुग्रह हुआ कि न केवल उस पर
विश्वास करो पर उसके लिये दुःख भी
उठाओ,
30 और तुम्हें वैसा ही परिश्रम करना
है, जैसा तुम ने मुझे करते देखा है, और
अब भी सुनते हो कि मैं वैसा ही करता
हूँ।

2

[illegible]

1 अतः यदि मसीह में कुछ
प्रोत्साहन और प्रेम से ढाढ़स और
आत्मा की सहभागिता, और कुछ
करुणा और दया हो,
2 तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि
*[illegible]** और एक ही प्रेम, एक
ही चित्त, और एक ही मनसा रखो।
3 स्वार्थ या मिथ्यागर्व के लिये कुछ
न करो, पर दीनता से एक दूसरे को
अपने से अच्छा समझो।
4 हर एक अपने ही हित की नहीं,
वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।

[illegible]

5 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था
वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो;
6 जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर
भी
परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश
में
रखने की वस्तु न समझा।

---

§ **1:21** *[illegible]*: ये उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था जिसके निमित्त उसने स्वयं को एकनिष्ठा में समर्पित कर दिया था। * **2:2** *[illegible]*: एक ही बात सोचो, भावना की सम्पूर्ण एकता, यदि यह प्राप्त किया जा सकता है विचार और योजना वांछनीय होगा। † **2:7** *[illegible]*: यह उन मामले में प्रयुक्त है जहाँ कोई अपनी प्रतिष्ठा और महिमा को एक तरफ अपने से अलग कर देता है और उनके लिये अप्रतिष्ठित बन जाता हैं।

7 वरन् [illegible]†,
और दास का स्वरूप धारण किया,
और मनुष्य की समानता में हो गया।
8 और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर
अपने आपको दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ,
क्रूस की मृत्यु भी सह ली।
9 इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया,
और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है,
10 कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है;
[illegible]‡,
11 और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये
हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

[illegible]

12 इसलिए हे मेरे प्रियों, जिस
प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए
हो, वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ
रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे
दूर रहने पर भी डरते और काँपते हुए
अपने-अपने उद्धार का कार्य पूरा करते
जाओ।
13 क्योंकि परमेश्वर ही है, जिसने
अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में
इच्छा और काम, दोनों बातों के करने
का प्रभाव डाला है।
14 सब काम बिना कुड़कुड़ाए और
बिना विवाद के किया करो;
15 ताकि तुम निर्दोष और निष्कपट
होकर टेढ़े और विकृत लोगों के बीच
परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने
रहो, जिनके बीच में तुम [illegible]§ लिए हुए जगत में जलते
दीपकों के समान दिखाई देते हो,
16 कि मसीह के दिन मुझे घमण्ड
करने का कारण हो कि न मेरा दौड़ना
और न मेरा परिश्रम करना व्यर्थ हुआ।
17 यदि मुझे तुम्हारे विश्वास के
बलिदान और सेवा के साथ अपना लहू
भी बहाना पड़े तो भी मैं आनन्दित हूँ,
और तुम सब के साथ आनन्द करता
हूँ।
18 वैसे ही तुम भी आनन्दित हो,
और मेरे साथ आनन्द करो।

[illegible]

19 मुझे प्रभु यीशु में आशा है कि
मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त
भेजूँगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर
मुझे शान्ति मिले।
20 क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का
और कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी
चिन्ता करे।
21 क्योंकि सब अपने स्वार्थ की
खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह
की।
22 पर उसको तो तुम ने परखा
और जान भी लिया है कि जैसा पुत्र
पिता के साथ करता है, वैसा ही
उसने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ
परिश्रम किया।
23 इसलिए मुझे आशा है कि ज्यों
ही मुझे जान पड़ेगा कि मेरी क्या दशा
होगी, त्यों ही मैं उसे तुरन्त भेज दूँगा।
24 और मुझे प्रभु में भरोसा है कि मैं
आप भी शीघ्र आऊँगा।

[illegible]

25 पर मैंने इपफ्रुदीतुस को जो मेरा
भाई, और सहकर्मी और संगी योद्धा

‡ **2:10** [illegible]: वह इतना ऊँचा उठाया गया कि स्वर्ग में और पृथ्वी पर सब उन्हें दण्डवत् करेंगे। § **2:15** [illegible]: इसका मतलब सुसमाचार है, और इसे "जीवन का वचन" कहा जाता है क्योंकि यह वही सन्देश है जो जीवन का वादा करता है।

और तुम्हारा दूत, और आवश्यक बातों
में मेरी सेवा टहल करनेवाला है,
तुम्हारे पास भेजना अवश्य समझा।
26 क्योंकि उसका मन तुम सब में
लगा हुआ था, इस कारण वह व्याकुल
रहता था क्योंकि तुम ने उसकी बीमारी
का हाल सुना था।
27 और निश्चय वह बीमार तो हो
गया था, यहाँ तक कि मरने पर था,
परन्तु परमेश्वर ने उस पर दया की;
और केवल उस पर ही नहीं, पर मुझ
पर भी कि मुझे शोक पर शोक न हो।
28 इसलिए मैंने उसे भेजने का और
भी यत्न किया कि तुम उससे फिर भेंट
करके आनन्दित हो जाओ और मेरा भी
शोक घट जाए।
29 इसलिए तुम प्रभु में उससे बहुत
आनन्द के साथ भेंट करना, और ऐसों
का आदर किया करना,
30 क्योंकि वह मसीह के काम के
लिये अपने प्राणों पर जोखिम उठाकर
मरने के निकट हो गया था, ताकि जो
घटी तुम्हारी ओर से मेरी सेवा में हुई
उसे पूरा करे।

3

[illegible]

1 इसलिए हे मेरे भाइयों, *[illegible]*
[illegible][*] । वे ही बातें
तुम को बार बार लिखने में मुझे तो
कोई कष्ट नहीं होता, और इसमें
तुम्हारी कुशलता है।
2 कुत्तों से चौकस रहो, उन बुरे काम
करनेवालों से चौकस रहो, उन काट-
कूट करनेवालों से चौकस रहो। ***(2
[illegible]. 11:13)***
3 क्योंकि यथार्थ खतनावाले तो हम
ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की
अगुआई से उपासना करते हैं, और
मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं और
शरीर पर भरोसा नहीं रखते।
4 पर मैं तो शरीर पर भी भरोसा रख
सकता हूँ। यदि किसी और को शरीर
पर भरोसा रखने का विचार हो, तो मैं
उससे भी बढ़कर रख सकता हूँ।
5 आठवें दिन मेरा खतना हुआ,
इस्राएल के वंश, और बिन्यामीन के
गोत्र का हूँ; इब्रानियों का इब्रानी हूँ;
व्यवस्था के विषय में यदि कहो तो
फरीसी हूँ।
6 उत्साह के विषय में यदि कहो
तो कलीसिया का सतानेवाला; और
व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में
यदि कहो तो निर्दोष था।
7 *[illegible]*
[illegible][†], उन्हीं को मैंने
मसीह के कारण हानि समझ लिया है।
8 वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु
की पहचान की उत्तमता के कारण सब
बातों को हानि समझता हूँ। जिसके
कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि
उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ,
ताकि मैं मसीह को प्राप्त करूँ।
9 और उसमें पाया जाऊँ; न कि
अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो
व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के
साथ जो मसीह पर विश्वास करने के
कारण है, और परमेश्वर की ओर से
विश्वास करने पर मिलती है,
10 ताकि मैं उसको और उसके
पुनरुत्थान की सामर्थ्य को, और उसके
साथ दुःखों में सहभागी होने के मर्म को

---

* **3:1** *[illegible]:* जब हम अपने पापों को याद करते हैं, तो अब हम आनन्द मना सकते हैं क्योंकि वह जो हमें उनसे छुड़ा सकता हैं। † **3:7** *[illegible]:* जन्म का, शिक्षा का, और व्यवस्था के लिए बाहरी अनुपालन के लाभ का मसीह के कारण हानि समझ लिया है अब पौलुस उन सब बातों को प्राप्त करने या फायदे के रूप में नहीं देखता हैं परन्तु अपने उद्धार के लिये उसे एक बाधा के रूप में देखता हैं।

जानूँ, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ।

11 ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुँचूँ।

[illegible]

12 यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूँ, या सिद्ध हो चुका हूँ; पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिये दौड़ा चला जाता हूँ, जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था।

13 हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ; परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूलकर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ,

14 निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ, जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

15 अतः हम में से जितने सिद्ध हैं, यही विचार रखें, और यदि किसी बात में तुम्हारा और ही विचार हो तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रगट कर देगा।

16 इसलिए जहाँ तक हम पहुँचे हैं, उसी के अनुसार चलें।

[illegible]

17 हे भाइयों, तुम सब मिलकर मेरी सी चाल चलो, और उन्हें पहचानों, जो इस रीति पर चलते हैं जिसका उदाहरण तुम हम में पाते हो।

18 क्योंकि अनेक लोग ऐसी चाल चलते हैं, जिनकी चर्चा मैंने तुम से बार बार की है और अब भी रो-रोकर कहता हूँ, कि वे अपनी चाल-चलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं,

19 उनका अन्त विनाश है, उनका ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं, और *[illegible]*‡।

20 पर हमारा स्वदेश स्वर्ग में है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की प्रतीक्षा करते हैं।

21 वह अपनी शक्ति के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है, हमारी दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा।

4

[illegible]

1 इसलिए हे मेरे प्रिय भाइयों, जिनमें मेरा जी लगा रहता है, जो मेरे आनन्द और मुकुट हो, हे प्रिय भाइयों, प्रभु में इसी प्रकार स्थिर रहो।

2 मैं यूओदिया से निवेदन करता हूँ, और सुन्तुखे से भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें।

3 हे सच्चे सहकर्मी, मैं तुझ से भी विनती करता हूँ, कि तू उन स्त्रियों की सहायता कर, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ सुसमाचार फैलाने में, क्लेमेंस और मेरे अन्य सहकर्मियों समेत परिश्रम किया, जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं।

[illegible]

4 *[illegible]**; मैं फिर कहता हूँ, आनन्दित रहो।

5 तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर प्रगट हो। प्रभु निकट है।

---

‡ **3:19** *[illegible]:* जिनका मन पृथ्वी की वस्तुओं पर लगा रहता है या जो उन्हें प्राप्त करने के लिए जीते हैं। * **4:4** *[illegible]:* आनन्दित रहना मसीहियों के लिये विशेषाधिकार हैं, केवल कुछ समय और एक अंतराल पर नहीं, परन्तु हर समय वे आनन्द मना सके कि एक परमेश्वर और उद्धारकर्ता हैं।

6 किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।

7 तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी। ***([illegible]. 26:3)***

[illegible]

8 इसलिए, हे भाइयों, जो-जो बातें सत्य हैं, और जो-जो बातें आदरणीय हैं, और जो-जो बातें उचित हैं, और जो-जो बातें पवित्र हैं, और जो-जो बातें सुहावनी हैं, और जो-जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात्, जो भी सद्‌गुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।

9 जो बातें तुम ने मुझसे सीखी, और ग्रहण की, और सुनी, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा।

[illegible]

10 मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हूँ कि अब इतने दिनों के बाद तुम्हारा विचार मेरे विषय में फिर जागृत हुआ है; निश्चय तुम्हें आरम्भ में भी इसका विचार था, पर तुम्हें अवसर न मिला।

11 यह नहीं कि मैं अपनी घटी के कारण यह कहता हूँ; क्योंकि मैंने यह सीखा है कि जिस दशा में हूँ, उसी में सन्तोष करूँ।

12 मैं दीन होना भी जानता हूँ और बढ़ना भी जानता हूँ; हर एक बात और सब दशाओं में मैंने तृप्त होना, भूखा रहना, और बढ़ना-घटना सीखा है।

13 *[illegible]*[†]।

14 तो भी तुम ने भला किया कि मेरे क्लेश में मेरे सहभागी हुए।

15 हे फिलिप्पियों, तुम आप भी जानते हो कि सुसमाचार प्रचार के आरम्भ में जब मैंने मकिदुनिया से कूच किया तब तुम्हें छोड़ और किसी कलीसिया ने लेने-देने के विषय में मेरी सहायता नहीं की।

16 इसी प्रकार जब मैं थिस्सलुनीके में था; तब भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिये एक बार क्या वरन् दो बार कुछ भेजा था।

17 यह नहीं कि मैं दान चाहता हूँ परन्तु मैं ऐसा फल चाहता हूँ, जो तुम्हारे लाभ के लिये बढ़ता जाए।

18 मेरे पास सब कुछ है, वरन् बहुतायत से भी है; जो वस्तुएँ तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ, वह तो सुखदायक सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है। ***([illegible]. 13:16)***

19 और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।

20 हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

[illegible]

21 हर एक पवित्र जन को जो यीशु मसीह में हैं नमस्कार कहो। जो भाई मेरे साथ हैं तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

[†] **4:13** *[illegible]:* पौलुस जानता था कि कहाँ से सामर्थ्य को प्राप्त किया जा सकता था किसके द्वारा सब कुछ कर सकता है और वह उस बाँह पर जो उसे बनाए रखने में सक्षम था, वह आत्म-विश्वास से भरोसा करता था।

22 सब पवित्र लोग, विशेष करके
जो कैसर के घराने के हैं तुम को
नमस्कार कहते हैं।
23 हमारे प्रभु यीशु मसीह का
अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे।

कुलुस्सियों के नाम पौलुस प्रेरित की पत्री

????

कुलुस्से की कलीसिया को लिखा गया यह पत्र पौलुस का ही प्रामाणिक पत्र है (1:1)। आरम्भिक कलीसिया में जो भी लेखक के विषय चर्चा करते हैं इसे पौलुस की कृति मानते हैं। कुलुस्से की कलीसिया स्वयं पौलुस ने आरम्भ नहीं की थी। पौलुस के किसी सहकर्मी सम्भवतः इपफ्रास ने वहाँ शुभ सन्देश पहुँचाया था (4:12,13)। वहाँ भी झूठे शिक्षक विचित्र नई शिक्षाएँ लेकर पहुँच गये थे। उन्होंने विजातीय तत्व-ज्ञान एवं यहूदी मान्यताओं को मसीही विश्वास में जोड़ दिया था। पौलुस ने इस झूठी शिक्षा का खण्डन करके यह सिद्ध किया कि मसीह ही सर्वेसर्वा है।

कुलुस्से की कलीसिया को लिखा यह पत्र "सम्पूर्ण नये नियम में सबसे अधिक मसीह केन्द्रित पत्र" माना जाता है। इसमें मसीह यीशु को सब वस्तुओं पर परमप्रधान दर्शाया गया है।

???? ???? ??? ?????

लगभग ई.स. 60

पौलुस ने यह पत्र सम्भवतः रोम से लिखा था जब प्रथम बार कारागार में था।

??????

पौलुस ने यह पत्र कुलुस्से की कलीसिया को लिखा था, "उन पवित्र और विश्वासी भाइयों के नाम जो कुलुस्से में रहते हैं।" (1:1-2) यह कलीसिया इफिसुस से लगभग 150 कि.मी. भीतर लाइकुस घाटी में थी। पौलुस इस कलीसिया में कभी नहीं गया। (1:4; 2:1)

?????????

पौलुस उस विनाशकारी झूठी शिक्षा के विरुद्ध परामर्श देता है जिसका उदय कुलुस्सियों में हुआ था। इन झूठी शिक्षाओं के प्रतिवाद में सम्पूर्ण सृष्टि पर मसीह की पूर्ण, अपरोक्ष एवं सतत् सर्वश्रेष्ठता को महत्त्व प्रदान करने के लिए (1:15; 3:4); पाठकों को सम्पूर्ण सृष्टि के परमप्रधान मसीह को निहारते हुए जीवन जीने का प्रोत्साहन देने के लिए (3:5; 4:6)। और कलीसिया को प्रोत्साहित करने के लिए कि वे अनुशासित मसीही जीवन जीएँ तथा झूठे शिक्षकों द्वारा उत्पन्न संकट के समय अपने विश्वास में दृढ़ रहें, यह पत्री लिखी (2:2-5)।

??? ????

मसीह की सर्वोच्चता

रूपरेखा

1. पौलुस की प्रार्थना — 1:1-14
2. "मसीह में" पौलुस की शिक्षा — 1:15-23
3. परमेश्वर की योजना एवं उद्देश्य में पौलुस का स्थान — 1:24-2:5
4. झूठी शिक्षाओं के विरुद्ध चेतावनी — 2:6-15
5. संकट पूर्ण झूठी शिक्षाओं से पौलुस का सामना — 2:16-3:4
6. मसीह में नए मनुष्यत्व का वर्णन — 3:5-25
7. प्रशंसा एवं समापन — 4:1-18

???????????

1 पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर
की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है,
और भाई तीमुथियुस की ओर से,

2 मसीह में उन पवित्र और विश्वासी भाइयों के नाम जो कुलुस्से में रहते हैं। हमारे पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त होती रहे।

[illegible]

3 हम तुम्हारे लिये नित प्रार्थना करके अपने प्रभु यीशु मसीह के पिता अर्थात् परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।

4 क्योंकि हमने सुना है, कि मसीह यीशु पर तुम्हारा विश्वास है, और सब पवित्र लोगों से प्रेम रखते हो;

5 उस आशा की हुई वस्तु के कारण जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी हुई है, जिसका वर्णन तुम उस सुसमाचार के सत्य वचन में सुन चुके हो।

6 जो तुम्हारे पास पहुँचा है और जैसा जगत में भी *[illegible]*[*], और बढ़ता जाता है; वैसे ही जिस दिन से तुम ने उसको सुना, और सच्चाई से परमेश्वर का अनुग्रह पहचाना है, तुम में भी ऐसा ही करता है।

7 उसी की शिक्षा तुम ने हमारे प्रिय सहकर्मी इपफ्रास से पाई, जो हमारे लिये मसीह का विश्वासयोग्य सेवक है।

8 उसी ने तुम्हारे प्रेम को जो आत्मा में है हम पर प्रगट किया।

[illegible]

9 इसलिए जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना करने और विनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो जाओ,

10 ताकि *[illegible]*[†], और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ,

11 और उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ्य से बलवन्त होते जाओ, यहाँ तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको।

12 और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ विरासत में सहभागी हों।

13 उसी ने हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया,

14 जिसमें हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।

[illegible]

15 *[illegible]*[‡] और सारी सृष्टि में पहलौठा है।

16 क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं।

17 और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं। ***([illegible]. 1:8)***

18 वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में

---

[*] **1:6** *[illegible]*: धार्मिकता या अच्छा जीवन जीने का फल। [†] **1:10** *[illegible]*: ताकि आप प्रभु के अनुसरण करनेवाले शिष्य के रूप में जी सको। [‡] **1:15** *[illegible]*: अर्थ है कि वह मानवजाति के लिए परमेश्वर की पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है।

से जी उठनेवालों में पहलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।

19 क्योंकि पिता की प्रसन्नता इसी में है कि उसमें सारी परिपूर्णता वास करे।

20 और उसके क्रूस पर बहे हुए लहू के द्वारा मेल-मिलाप करके, सब वस्तुओं को उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग की।

21 तुम जो पहले पराए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे।

22 उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे।

23 यदि तुम विश्वास की नींव पर दृढ़ बने रहो, और उस सुसमाचार की आशा को जिसे तुम ने सुना है न छोड़ो, जिसका प्रचार आकाश के नीचे की सारी सृष्टि में किया गया; और जिसका मैं पौलुस सेवक बना।

[illegible]

24 अब मैं उन दुःखों के कारण आनन्द करता हूँ, जो तुम्हारे लिये उठाता हूँ, और मसीह के क्लेशों की घटी उसकी देह के लिये, अर्थात् कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी किए देता हूँ,

25 जिसका मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक बना, जो तुम्हारे लिये मुझे सौंपा गया, ताकि मैं परमेश्वर के वचन को पूरा-पूरा प्रचार करूँ।

26 अर्थात् उस भेद को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा, परन्तु अब उसके उन पवित्र लोगों पर प्रगट हुआ है।

27 जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।

28 जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को जता देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।

29 और इसी के लिये मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।

2

1 मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो, कि तुम्हारे और उनके जो लौदीकिया में हैं, और उन सब के लिये जिन्होंने मेरा शारीरिक मुँह नहीं देखा मैं कैसा परिश्रम करता हूँ।

2 ताकि उनके मनों को प्रोत्साहन मिले और *[illegible]**, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात् मसीह को पहचान लें।

3 जिसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं।

4 यह मैं इसलिए कहता हूँ, कि कोई मनुष्य तुम्हें लुभानेवाली बातों से धोखा न दे।

5 यद्यपि मैं यदि शरीर के भाव से तुम से दूर हूँ, तो भी आत्मिक भाव से तुम्हारे निकट हूँ, और तुम्हारे विधि-अनुसार चरित्र और तुम्हारे विश्वास

* **2:2** *[illegible]*: इसका मतलब, एक साथ आने के लिए, और इसलिए, दर्शाता है कि एकता में स्थिर रहें।

की जो मसीह में है दृढ़ता देखकर प्रसन्न होता हूँ।

[illegible]

6 इसलिए, जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो।

7 और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ; और जैसे तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और अत्यन्त धन्यवाद करते रहो।

8 चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले, जो मनुष्यों की परम्पराओं और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं।

9 क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।

10 और तुम मसीह में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।

11 *[illegible]*[†], परन्तु मसीह का खतना हुआ, जिससे पापमय शारीरिक देह उतार दी जाती है।

12 और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।

13 और उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया।

14 और *[illegible]*[‡] और सहायक नियम जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है।

15 और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतार कर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जय जयकार की ध्वनि सुनाई।

16 इसलिए खाने-पीने या पर्व या नये चाँद, या सब्त के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे।

17 क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएँ मसीह की हैं।

18 कोई मनुष्य दीनता और स्वर्गदूतों की पूजा करके तुम्हें दौड़ के प्रतिफल से वंचित न करे। ऐसा मनुष्य देखी हुई बातों में लगा रहता है और अपनी शारीरिक समझ पर व्यर्थ फूलता है।

19 और उस शिरोमणि को पकड़े नहीं रहता जिससे सारी देह जोड़ों और पट्ठों के द्वारा पालन-पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है।

[illegible]

20 जबकि तुम मसीह के साथ संसार की आदि शिक्षा की ओर से मर गए हो, तो फिर क्यों उनके समान जो संसार में जीवन बिताते हैं और ऐसी विधियों के वश में क्यों रहते हो?

21 कि 'यह न छूना,' 'उसे न चखना,' और 'उसे हाथ न लगाना'?,

22 क्योंकि ये सब वस्तु काम में लाते-लाते नाश हो जाएँगी क्योंकि ये मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षाओं के अनुसार है।

---

† **2:11** *[illegible]*: सभी पापों का त्याग करने के द्वारा हृदय में बनाया गया। ‡ **2:14** *[illegible]*: मूसा की व्यवस्था की कष्टदायक माँग को समाप्त कर दिया।

23 इन विधियों में अपनी इच्छा
के अनुसार गढ़ी हुई भक्ति की रीति,
और दीनता, और शारीरिक अभ्यास
के भाव से ज्ञान का नाम तो है,
परन्तु शारीरिक लालसाओं को रोकने
में इनसे कुछ भी लाभ नहीं होता।

3

□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□

1 तो जब तुम मसीह के साथ
जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की
खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान
है और परमेश्वर के दाहिनी ओर
विराजमान है। ***(□□□□□□ 6:20)***
2 पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय
वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।
3 क्योंकि *□□□□ □□ □□ □□**,
और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ
परमेश्वर में छिपा हुआ है।
4 जब मसीह जो हमारा जीवन है,
प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ
महिमा सहित प्रगट किए जाओगे।
5 इसलिए अपने उन अंगों को
मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात्
व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी
लालसा और लोभ को जो मूर्तिपूजा के
बराबर है।
6 इन ही के कारण परमेश्वर का
प्रकोप आज्ञा न माननेवालों पर पड़ता
है।
7 और तुम भी, जब इन बुराइयों में
जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार
चलते थे।
8 पर अब तुम भी इन सब को
अर्थात् क्रोध, रोष, बैर-भाव, निन्दा,
और मुँह से गालियाँ बकना ये सब बातें
छोड़ दो। ***(□□□. 4:23,24)***
9 एक दूसरे से झूठ मत बोलो
क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को
उसके कामों समेत उतार डाला है।
10 और नये मनुष्यत्व को पहन
लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप
के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये
नया बनता जाता है।
11 उसमें न तो यूनानी रहा, न
यहूदी, न खतना, न खतनारहित, न
जंगली, न स्कूती, न दास और न
स्वतंत्र *□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□
□□□□ □□*† ।

□□□□□□ □□□□□

12 इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं
के समान जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी
करुणा, और भलाई, और दीनता, और
नम्रता, और सहनशीलता धारण करो;
13 और यदि किसी को किसी पर
दोष देने को कोई कारण हो, तो एक
दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के
अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे
अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी
करो।
14 और इन सब के ऊपर प्रेम को जो
सिद्धता का कमरबन्ध है बाँध लो।
15 और मसीह की शान्ति, जिसके
लिये तुम एक देह होकर बुलाए भी गए
हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम
धन्यवादी बने रहो।
16 मसीह के वचन को अपने हृदय
में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध
ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ,
और चिताओ, और अपने-अपने मन
में कृतज्ञता के साथ परमेश्वर के लिये
भजन और स्तुतिगान और आत्मिक
गीत गाओ।
17 वचन से या काम से *□□ □□□□ □□
□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□*

---

* **3:3** *□□□□ □□ □□ □□:* संसार के लिए मर गए, पाप के लिए मर गए, सांसारिक भोग-विलास के लिए मर गए। † **3:11** *□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□:* है कलीसिया की विशिष्टता को जो महान बनाता है, वह यह है कि मसीह उद्धारकर्ता है, और सब उनके दोस्त और अनुसरणीय है।

[illegible]‡, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता
का धन्यवाद करो।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

18 हे पत्नियों, जैसा प्रभु में उचित
है, वैसा ही अपने-अपने पति के अधीन
रहो। *([illegible]. 5:22)*
19 हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी
से प्रेम रखो, और उनसे कठोरता न
करो।
20 हे बच्चों, सब बातों में अपने-
अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन
करो, क्योंकि प्रभु इससे प्रसन्न होता है।
21 हे पिताओं, अपने बच्चों को
भड़काया न करो, न हो कि उनका
साहस टूट जाए।
22 हे सेवकों, जो शरीर के अनुसार
तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी
आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को
प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के
लिये नहीं, परन्तु मन की सिधाई और
परमेश्वर के भय से।
23 और जो कुछ तुम करते हो, तन
मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों
के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते
हो।
24 क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें
इसके बदले प्रभु से विरासत मिलेगी।
तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो।
25 क्योंकि जो बुरा करता है, वह
अपनी बुराई का फल पाएगा; वहाँ
किसी का पक्षपात नहीं। *([illegible].
10:34, [illegible]. 2:11)*

4

[illegible] [illegible]

1 हे स्वामियों, अपने-अपने दासों
के साथ न्याय और ठीक-ठीक व्यवहार
करो, यह समझकर कि स्वर्ग में तुम्हारा
भी एक स्वामी है। *([illegible]. 25:43,
[illegible]. 25:53)*
2 *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]**,
और धन्यवाद के साथ उसमें जागृत
रहो;
3 और इसके साथ ही साथ हमारे
लिये भी प्रार्थना करते रहो, कि
परमेश्वर हमारे लिये वचन सुनाने का
ऐसा द्वार खोल दे, कि हम मसीह के
उस भेद का वर्णन कर सकें जिसके
कारण मैं कैद में हूँ।
4 और उसे ऐसा प्रगट करूँ, जैसा
मुझे करना उचित है।
5 अवसर को बहुमूल्य समझकर
बाहरवालों के साथ बुद्धिमानी से
बर्ताव करो।
6 *[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]*† और सुहावना हो,
कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से
उत्तर देना आ जाए।

[illegible] [illegible]

7 प्रिय भाई और विश्वासयोग्य
सेवक, तुखिकुस जो प्रभु में मेरा
सहकर्मी है, मेरी सब बातें तुम्हें बता
देगा।
8 उसे मैंने इसलिए तुम्हारे पास
भेजा है, कि तुम्हें हमारी दशा मालूम
हो जाए और वह तुम्हारे हृदयों को
प्रोत्साहित करे।
9 और उसके साथ उनेसिमुस को भी
भेजा है; जो विश्वासयोग्य और प्रिय
भाई और तुम ही में से है, वे तुम्हें यहाँ
की सारी बातें बता देंगे।

‡ **3:17** *[illegible]:* यह सब करो क्योंकि वह चाहता है और आज्ञा देता हैं, और उनको सम्मान देने की इच्छा से यह सब करो। * **4:2** *[illegible]:* प्रार्थना के भाव को बनाए रखने के लिए उसकी उपेक्षा मत करो, सभी दिए गए समयों में उसका पालन करो। † **4:6** *[illegible]:* हमारी बातचीत सदैव धार्मिकता के साथ या इसी तरह के अनुग्रह से होनी चाहिए जैसे हम भोजन में नमक का इस्तेमाल करते है।

10 अरिस्तर्खुस जो मेरे साथ कैदी
है, और मरकुस जो बरनबास का भाई
लगता है। (जिसके विषय में तुम ने
निर्देश पाया था कि यदि वह तुम्हारे
पास आए, तो उससे अच्छी तरह
व्यवहार करना।)
11 और यीशु जो यूस्तुस कहलाता
है, तुम्हें नमस्कार कहते हैं। खतना
किए हुए लोगों में से केवल ये
ही परमेश्वर के राज्य के लिये मेरे
सहकर्मी और मेरे लिए सांत्वना ठहरे
हैं।
12 इपफ्रास जो तुम में से है, और
मसीह यीशु का दास है, तुम्हें नमस्कार
कहता है और सदा तुम्हारे लिये
प्रार्थनाओं में प्रयत्न करता है, ताकि
तुम सिद्ध होकर पूर्ण विश्वास के साथ
परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर रहो।
13 मैं उसका गवाह हूँ, कि वह
तुम्हारे लिये और लौदीकिया और
हियरापुलिसवालों के लिये बड़ा यत्न
करता रहता है।
14 प्रिय वैद्य लूका और देमास का
तुम्हें नमस्कार।
15 लौदीकिया के भाइयों को
और नुमफास और उसकी घर की
कलीसिया को नमस्कार कहना।
16 और जब यह पत्र तुम्हारे यहाँ
पढ़ लिया जाए, तो ऐसा करना कि
लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा
जाए, और वह पत्र जो लौदीकिया से
आए उसे तुम भी पढ़ना।
17 फिर अरखिप्पुस से कहना कि जो
सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है, उसे
सावधानी के साथ पूरी करना।
18 मुझ पौलुस का अपने हाथ से
लिखा हुआ नमस्कार। मेरी जंजीरों को
स्मरण रखना; तुम पर अनुग्रह होता
रहे। आमीन।

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की पहली पत्री

[illegible]

प्रेरित पौलुस दो बार स्वयं को इसका लेखक बताता है (1:1, 2:18)। सीलास और तीमुथियुस पौलुस की दूसरी प्रचार-यात्रा में उसके साथ थे (3:2,6)। जब उन्होंने यह कलीसिया आरम्भ की थी (प्रेरि. 17:1-9) तब उसने वहाँ से प्रस्थान करने के कुछ ही समय बाद वहाँ के विश्वासियों को यह पत्र लिखा था। थिस्सलुनीके नगर में पौलुस की मसीही सेवा ने स्पष्टतः यहूदी ही नहीं अन्यजाति को भी छुआ कलीसिया में अनेक अन्यजाति मूर्तिपूजक पृष्ठभूमि से आए थे परन्तु उस युग के यहूदियों की यह समस्या नहीं थी (1 थिस्स. 1:9)।

[illegible]

लगभग ई.स. 51

पौलुस ने थिस्सलुनीके की कलीसिया को अपना प्रथम पत्र कुरिन्थ नगर से लिखा था।

[illegible]

1 थिस्स. 1:1 इस प्रथम पत्र के पाठकों की पहचान कराता है, “थिस्सलुनीके की कलीसिया के नाम” परन्तु सामान्यतः यह पत्र सर्वत्र उपस्थित विश्वासियों से बातें करता है।

[illegible]

इस पत्र के पीछे पौलुस का उद्देश्य था कि नये विश्वासियों को परीक्षा के समय में प्रोत्साहन प्रदान करे (3:3-5), और परमेश्वर परायण जीवन के निर्देश दे (4:1-12), और मसीह के पुनः आगमन से पूर्व मरणहार विश्वासियों को भविष्य के बारे में आश्वस्त करे (4:13-18) तथा कुछ नैतिक एवं व्यावहारिक विषयों में उनका सुधार करे।

[illegible]

कलीसिया के लिए चिंतित

रूपरेखा

1. धन्यवाद — 1:1-10
2. प्रेरितों के काम की प्रतिरक्षा — 2:1-3:13
3. थिस्सलुनीके की कलीसिया को प्रबोधन — 4:1-5:22
4. समापन प्रार्थना एवं आशीर्वाद — 5:23-28

[illegible]

1 पौलुस और सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम जो पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में है। अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे।

[illegible]

2 हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं,

3 और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम, और प्रेम का परिश्रम, और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं।

4 और हे भाइयों, परमेश्वर के प्रिय लोगों हम जानते हैं, कि तुम चुने हुए हो। ***([illegible]. 1:4)***

---

* **1:5** *[illegible]:* प्रेरित स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वहाँ किसी चमत्कार का प्रदर्शन नहीं किया गया, परन्तु उन पर सुसमाचार का प्रभाव था जिन्होंने उसे सुना।

5 क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल वचन मात्र ही में ???? ????????[*] और पवित्र आत्मा, और बड़े निश्चय के साथ पहुँचा है; जैसा तुम जानते हो, कि हम तुम्हारे लिये तुम में कैसे बन गए थे।

6 और तुम बड़े क्लेश में पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु के समान चाल चलने लगे।

7 यहाँ तक कि मकिदुनिया और अखाया के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने।

8 क्योंकि तुम्हारे यहाँ से न केवल मकिदुनिया और अखाया में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है, कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं।

9 क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ; और तुम क्यों मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो।

10 और ???? ?????? ?? ??????? ?? ?? ??? ?? ??????????? ????? ???[†] जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु को, जो हमें आनेवाले प्रकोप से बचाता है।

2

?????? ?? ?????

1 हे भाइयों, तुम आप ही जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना व्यर्थ न हुआ।

2 वरन् तुम आप ही जानते हो, कि पहले फिलिप्पी में दुःख उठाने और उपद्रव सहने पर भी हमारे परमेश्वर ने हमें ऐसा साहस दिया, कि हम परमेश्वर का सुसमाचार भारी विरोधों के होते हुए भी तुम्हें सुनाएँ।

3 क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है और न अशुद्धता से, और न छल के साथ है।

4 पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही वर्णन करते हैं; और इसमें ????????? ?? ?????[*], परन्तु परमेश्वर को, जो हमारे मनों को जाँचता है, प्रसन्न करते हैं। ***(????. 1:3, ???. 6:6)***

5 क्योंकि तुम जानते हो, कि हम न तो कभी चापलूसी की बातें किया करते थे, और न लोभ के लिये बहाना करते थे, परमेश्वर गवाह है।

6 और यद्यपि हम मसीह के प्रेरित होने के कारण तुम पर बोझ डाल सकते थे, फिर भी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से।

7 परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हमने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है।

8 और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार, पर अपना-अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिए कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे।

9 क्योंकि, हे भाइयों, तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो, कि हमने इसलिए रात दिन काम धन्धा करते हुए तुम में परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया, कि तुम में से

† **1:10** *???? ?????? ?? ??????? ?? ?? ??? ?? ??????????? ????? ???:* आगमन का उपदेश थिस्सलुनीकियों के कलीसिया में पौलुस के प्रचार का एक प्रमुख विषय था। * **2:4** *????????? ?? ?????:* पौलुस को लोगों की चापलूसी करने और उनकी वाहवाही जीतने के लिए इस प्रकार की शिक्षा देने का लक्ष्य नहीं था।

किसी पर भार न हों।
10 तुम आप ही गवाह हो, और
परमेश्वर भी गवाह है, कि तुम
विश्वासियों के बीच में हमारा व्यवहार
कैसा पवित्र और धार्मिक और निर्दोष
रहा।
11 जैसे तुम जानते हो, कि जैसा
पिता अपने बालकों के साथ बर्ताव
करता है, वैसे ही हम भी तुम में से हर
एक को उपदेश देते और प्रोत्साहित
करते और समझाते थे।
12 कि तुम्हारा चाल-चलन
परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने
राज्य और महिमा में बुलाता है।

[illegible]

13 इसलिए हम भी परमेश्वर का
धन्यवाद निरन्तर करते हैं; कि जब
हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का
वचन तुम्हारे पास पहुँचा, तो तुम ने
उसे मनुष्यों का नहीं, परन्तु परमेश्वर
का वचन समझकर (और सचमुच यह
ऐसा ही है) ग्रहण किया और वह तुम
में जो विश्वास रखते हो, कार्य करता
है।
14 इसलिए कि तुम, हे भाइयों,
परमेश्वर की उन कलीसियाओं के
समान चाल चलने लगे, जो यहूदिया
में मसीह यीशु में हैं, क्योंकि तुम ने
भी अपने लोगों से वैसा ही दुःख पाया,
जैसा उन्होंने यहूदियों से पाया था।
15 जिन्होंने प्रभु यीशु को और
भविष्यद्वक्ताओं को भी मार डाला
और हमको सताया, और *[illegible]*†; और वे
सब मनुष्यों का विरोध करते हैं।
16 और वे अन्यजातियों से उनके
उद्धार के लिये बातें करने से हमें रोकते
हैं, कि सदा अपने पापों का घड़ा भरते
रहें; पर उन पर भयानक प्रकोप आ
पहुँचा है।

[illegible]

17 हे भाइयों, जब हम थोड़ी देर के
लिये मन में नहीं वरन् प्रगट में तुम
से अलग हो गए थे, तो हमने बड़ी
लालसा के साथ तुम्हारा मुँह देखने के
लिये और भी अधिक यत्न किया।
18 इसलिए हमने (अर्थात् मुझ
पौलुस ने) एक बार नहीं, वरन् दो बार
तुम्हारे पास आना चाहा, परन्तु शैतान
हमें रोके रहा।
19 हमारी आशा, या आनन्द या
बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे
प्रभु यीशु मसीह के सम्मुख उसके आने
के समय, तुम ही न होगे?
20 हमारी बड़ाई और आनन्द तुम ही
हो।

3

[illegible]

1 इसलिए जब हम से और न रहा
गया, तो हमने यह ठहराया कि एथेंस
में अकेले रह जाएँ।
2 और हमने तीमुथियुस को जो
मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई,
और परमेश्वर का सेवक है, इसलिए
भेजा, कि वह तुम्हें स्थिर करे; और
तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें
समझाए।
3 कि कोई इन क्लेशों के कारण
डगमगा न जाए; क्योंकि तुम आप
जानते हो, कि हम इन ही के लिये
ठहराए गए हैं।
4 क्योंकि पहले भी, जब हम तुम्हारे
यहाँ थे, तो तुम से कहा करते थे, कि
हमें क्लेश उठाने पड़ेंगे, और ऐसा ही
हुआ है, और तुम जानते भी हो।

† **2:15** *[illegible]:* उनका आचरण परमेश्वर को प्रसन्न करने के जैसा नहीं था, परन्तु उनके क्रोध को भड़काने के जैसा था।

5 इस कारण जब मुझसे और न रहा
गया, तो तुम्हारे विश्वास का हाल
जानने के लिये भेजा, कि कहीं ऐसा
न हो, कि *[illegible]**
ने तुम्हारी परीक्षा की हो, और हमारा
परिश्रम व्यर्थ हो गया हो।

[illegible]

6 पर अभी तीमुथियुस ने जो तुम्हारे
पास से हमारे यहाँ आकर तुम्हारे
विश्वास और प्रेम का समाचार सुनाया
और इस बात को भी सुनाया, कि तुम
सदा प्रेम के साथ हमें स्मरण करते हो,
और हमारे देखने की लालसा रखते हो,
जैसा हम भी तुम्हें देखने की।
7 इसलिए हे भाइयों, हमने अपनी
सारी सकेती और क्लेश में तुम्हारे
विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति
पाई।
8 क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर
रहो तो हम जीवित हैं।
9 और जैसा आनन्द हमें तुम्हारे
कारण अपने परमेश्वर के सामने है,
उसके बदले तुम्हारे विषय में हम किस
रीति से परमेश्वर का धन्यवाद करें?
10 हम रात दिन बहुत ही प्रार्थना
करते रहते हैं, कि तुम्हारा मुँह देखें,
और तुम्हारे विश्वास की घटी पूरी
करें।

[illegible]

11 अब हमारा परमेश्वर और पिता
आप ही और हमारा प्रभु यीशु, तुम्हारे
यहाँ आने के लिये हमारी अगुआई
करे।
12 और प्रभु ऐसा करे, कि जैसा हम
तुम से प्रेम रखते हैं; वैसा ही तुम्हारा
प्रेम भी आपस में, और सब मनुष्यों के
साथ बढ़े, और उन्नति करता जाए,
13 ताकि वह तुम्हारे मनों को ऐसा
स्थिर करे, कि जब हमारा *[illegible]*†, तो वे हमारे परमेश्वर
और पिता के सामने पवित्रता में
निर्दोष ठहरें। ***([illegible]. 1:22, [illegible]. 5:27)***

4

[illegible]

1 इसलिए हे भाइयों, हम तुम से
विनती करते हैं, और तुम्हें प्रभु यीशु
में समझाते हैं, कि जैसे तुम ने हम से
योग्य चाल चलना, और परमेश्वर को
प्रसन्न करना सीखा है, और जैसा तुम
चलते भी हो, वैसे ही और भी बढ़ते
जाओ।
2 क्योंकि तुम जानते हो, कि हमने
प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन-कौन
से निर्देश पहुँचाए।
3 क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह
है, कि तुम *[illegible]** अर्थात्
व्यभिचार से बचे रहो,
4 और तुम में से हर एक पवित्रता
और आदर के साथ अपने *[illegible]*† को
प्राप्त करना जाने।
5 और यह काम अभिलाषा से नहीं,
और न अन्यजातियों के समान, जो
परमेश्वर को नहीं जानतीं।
6 कि इस बात में कोई अपने भाई
को न ठगे, और न उस पर दाँव चलाए,
क्योंकि प्रभु इस सब बातों का पलटा

---

* **3:5** *[illegible]:* शैतान अक्सर पीड़ित को कुड़कुड़ाने और शिकायत करने के लिए परीक्षा करता हैं; परमेश्वर को कठोरता के साथ दिखाने के लिये। † **3:13** *[illegible]:* यह वचन बताता हैं कि उनके “स्वर्गदूत” और छुड़ाए हुए लोग उनके चारों ओर खड़े होंगे (मत्ती 25:31) * **4:3** *[illegible]:* परमेश्वर की यह इच्छा या आज्ञा हैं कि आपको पवित्र होना चाहिए। † **4:4** *[illegible]:* कुछ अनुवादों में पात्र शब्द का प्रयोग पत्नी के लिए भी किया गया है।

लेनेवाला है; जैसा कि हमने पहले तुम
से कहा, और चिताया भी था। ***(▯▯. 94:1)***
7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध
होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने
के लिये बुलाया है।
8 इसलिए जो इसे तुच्छ जानता है,
वह मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर
को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र
आत्मा तुम्हें देता है।

▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯

9 किन्तु भाईचारे के प्रेम के विषय
में यह आवश्यक नहीं, कि मैं तुम्हारे
पास कुछ लिखूँ; क्योंकि आपस में प्रेम
रखना तुम ने आप ही परमेश्वर से
सीखा है; ***(1 ▯▯▯. 3:11, ▯▯▯. 12:10)***
10 और सारे मकिदुनिया के सब
भाइयों के साथ ऐसा करते भी हो, पर
हे भाइयों, हम तुम्हें समझाते हैं, कि
और भी बढ़ते जाओ,
11 और जैसा हमने तुम्हें समझाया,
वैसे ही चुपचाप रहने और *▯▯▯▯-▯▯▯▯ ▯▯▯-▯▯▯*‡ करने, और अपने-
अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो।
12 कि बाहरवालों के साथ सभ्यता
से बर्ताव करो, और तुम्हें किसी वस्तु
की घटी न हो।

▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯

13 हे भाइयों, हम नहीं चाहते,
कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं,
अज्ञानी रहो; ऐसा न हो, कि तुम औरों
के समान शोक करो जिन्हें आशा नहीं।
14 क्योंकि यदि हम विश्वास करते
हैं, कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो
वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में
सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा।
15 क्योंकि हम प्रभु के वचन के
अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम
जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक
बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे
न बढ़ेंगे।
16 क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से
उतरेगा; उस समय ललकार, और
▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯§, और परमेश्वर की तुरही
फूँकी जाएगी, और जो मसीह में मरे
हैं, वे पहले जी उठेंगे।
17 तब हम जो जीवित और बचे
रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए
जाएँगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और
इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ
रहेंगे।
18 इसलिए इन बातों से एक दूसरे
को शान्ति दिया करो।

5

▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯

1 पर हे भाइयों, इसका प्रयोजन
नहीं, कि *▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯** के
विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा
जाए।
2 क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो
कि जैसा रात को चोर आता है, वैसा
ही प्रभु का दिन आनेवाला है।
3 जब लोग कहते होंगे, "कुशल
है, और कुछ भय नहीं," तो उन
पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस
प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी
रीति से न बचेंगे। ***(▯▯▯▯▯ 24:37-39)***
4 पर हे भाइयों, तुम तो अंधकार में
नहीं हो, कि वह दिन तुम पर चोर के
समान आ पड़े।

‡ **4:11** *▯▯▯▯-▯▯▯▯ ▯▯▯-▯▯▯:* दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप किए बिना अपने स्वयं के कामों से मतलब रखना। § **4:16** *▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯:* मतलब एक प्रमुख स्वर्गदूत; वह जो प्रथम है, या वह जो दूसरों के ऊपर हैं। * **5:1** *▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯:* यहाँ पर प्रभु यीशु के आगमन को दर्शाता है।

5 क्योंकि तुम सब ज्योति की
सन्तान, और दिन की सन्तान हो, हम
न रात के हैं, न अंधकार के हैं।
6 इसलिए हम औरों की समान सोते
न रहें, पर जागते और सावधान रहें।
7 क्योंकि जो सोते हैं, वे रात ही को
सोते हैं, और जो मतवाले होते हैं, वे
रात ही को मतवाले होते हैं।
8 पर हम जो दिन के हैं, विश्वास
और प्रेम की झिलम पहनकर और
उद्धार की आशा का टोप पहनकर
सावधान रहें। ***([illegible]. 59:17)***
9 क्योंकि *[illegible]*[†], परन्तु
इसलिए ठहराया कि हम अपने प्रभु
यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें।
10 वह हमारे लिये इस कारण मरा,
कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों,
सब मिलकर उसी के साथ जीएँ।
11 इस कारण एक दूसरे को शान्ति
दो, और एक दूसरे की उन्नति का कारण
बनो, जैसा कि तुम करते भी हो।

[illegible]

12 हे भाइयों, हम तुम से विनती
करते हैं, कि जो तुम में परिश्रम करते
हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुए हैं, और
तुम्हें शिक्षा देते हैं, उन्हें मानो।
13 और उनके काम के कारण प्रेम के
साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य
समझो आपस में मेल-मिलाप से रहो।
14 और हे भाइयों, हम तुम्हें
समझाते हैं, कि जो ठीक चाल नहीं
चलते, उनको समझाओ, निरुत्साहित
को प्रोत्साहित करो, निर्बलों को
सम्भालो, सब की ओर सहनशीलता
दिखाओ।
15 देखो की कोई किसी से बुराई के
बदले बुराई न करे; पर सदा भलाई
करने पर तत्पर रहो आपस में और
सबसे भी भलाई ही की चेष्टा करो। ***(1
[illegible]. 3:9)***
16 सदा आनन्दित रहो।
17 निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो।
18 हर बात में धन्यवाद करो:
क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में
परमेश्वर की यहीं इच्छा है।
19 आत्मा को न बुझाओ।
20 भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न
जानो।
21 सब बातों को परखो जो अच्छी
है उसे पकड़े रहो।
22 सब प्रकार की बुराई से बचे रहो।
([illegible]. 4:8)

[illegible]

23 शान्ति का परमेश्वर आप ही
तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; तुम्हारी
आत्मा, प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु
मसीह के आने तक पूरे और निर्दोष
सुरक्षित रहें।
24 तुम्हारा बुलानेवाला
विश्वासयोग्य है, और वह ऐसा ही
करेगा।
25 हे भाइयों, हमारे लिये प्रार्थना
करो।
26 सब भाइयों को पवित्र चुम्बन से
नमस्कार करो।
27 मैं तुम्हें प्रभु की शपथ देता हूँ, कि
यह पत्री सब भाइयों को पढ़कर सुनाई
जाए।
28 हमारे प्रभु यीशु मसीह का
अनुग्रह तुम पर होता रहे।

[†] **5:9** *[illegible]:* परमेश्वर की इच्छा हमें उद्धार देने की हैं, और इसलिए हमें सचेत और शान्त होना चाहिए।

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस प्रेरित की दूसरी पत्री

[illegible]

प्रथम पत्र के सदृश्य यह पत्र भी पौलुस, तीमुथियुस एवं सीलास की ओर से था। लेखक ने इस पत्र में भी वही लेखन शैली का इस्तेमाल किया है जो पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों और अन्य पत्रों में किए है। इससे स्पष्ट होता है कि मुख्य लेखक पौलुस ही था। सीलास और तीमुथियुस का नाम अभिवादन में जोड़ा गया है (1:1)। अनेक पदों में “हम” लिखने का अर्थ है कि इस पत्र के लेखन में तीनों एक मन हैं। क्योंकि पौलुस ने अन्तिम नमस्कार एवं प्रार्थना अपने हाथों से लिखी थी, इस कारण पत्र लेखन कार्य पौलुस का नहीं है (3:17)। ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस ने तीमुथियुस या सीलास के हाथों यह पत्र लिखवाया था।

[illegible]

लगभग ई.स. 51 - 52

पौलुस ने यह दूसरा पत्र कुरिन्थ नगर से लिखा था, जब वह प्रथम पत्र लिखते समय वहाँ उपस्थित था।

[illegible]

2 थिस्स. 1:1 पाठकों की पहचान कराता है कि वे “थिस्सलुनीके की कलीसिया” के सदस्य थे।

[illegible]

इस पत्री का उद्देश्य था कि प्रभु के दिन के विषय में भ्रमित शिक्षा का खण्डन किया जाए। विश्वास में बने रहने के लिए उन्होंने जो यत्न किया उसके लिए उनकी प्रशंसा करे और उन्हें प्रोत्साहित करे और अन्त समय से सम्बंधित शिक्षा में भ्रम में पड़नेवालों को झिड़के क्योंकि उनकी शिक्षा के अनुसार प्रभु का दिन आ चुका था और प्रभु का आगमन अति निकट है। इस प्रकार वे इस शिक्षा के माध्यम से अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे थे।

[illegible]

आशा में जीना

रूपरेखा

1. अभिवादन — 1:1, 2
2. कष्टों में ढाढ़स बाँधना — 1:3-12
3. प्रभु के दिनों के बारे में त्रुटि सुधार — 2:1-12
4. उनकी नियति के विषय स्मरण करवाना — 2:13-17
5. व्यावहारिक विषयों में प्रबोधन — 3:1-15
6. अन्तिम नमस्कार — 3:16-18

[illegible]

1 पौलुस और सिलवानुस
और तीमुथियुस की ओर से
थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के
नाम, जो हमारे पिता परमेश्वर और
प्रभु यीशु मसीह में है:
2 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह में तुम्हें अनुग्रह और
शान्ति मिलती रहे।

[illegible]

3 हे भाइयों, तुम्हारे विषय में हमें
हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करना
चाहिए, और यह उचित भी है इसलिए
कि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता
जाता है, और आपस में तुम सब में प्रेम
बहुत ही बढ़ता जाता है।
4 यहाँ तक कि हम आप परमेश्वर
की कलीसिया में तुम्हारे विषय में
घमण्ड करते हैं, कि जितने उपद्रव
और क्लेश तुम सहते हो, उन सब
में तुम्हारा धीरज और विश्वास प्रगट
होता है।

[5] यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का स्पष्ट प्रमाण है; कि तुम परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहरो, *□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□*[*]।

[6] क्योंकि परमेश्वर के निकट यह न्याय है, कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं, उन्हें बदले में क्लेश दे।

[7] और तुम जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जबकि प्रभु यीशु अपने सामर्थी स्वर्गदूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। ***(□□□. 1:14,15, □□□□□. 14:13)***

[8] और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। ***(□□. 79:6, □□□. 66:15, □□□□□. 10:25)***

[9] वे प्रभु के सामने से, और *□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□*[†] अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे। ***(□□□□□. 21:8, □□□□□ 25:41,46, □□□. 2:19,21)***

[10] यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा; क्योंकि तुम ने हमारी गवाही पर विश्वास किया। ***(1 □□□□□. 2:13, 1 □□□□. 1:6, □□. 89:7, □□□. 49:3)***

[11] इसलिए हम सदा तुम्हारे निमित्त प्रार्थना भी करते हैं, कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे, और भलाई की हर एक इच्छा, और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ्य सहित पूरा करे,

[12] कि हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए, और तुम उसमें। ***(□□□. 24:15, □□□. 66:5, 1 □□. 1:7-8)***

2

□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□

[1] हे भाइयों, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय में तुम से विनती करते हैं।

[2] कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि प्रभु का दिन आ पहुँचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए; और न तुम घबराओ।

[3] किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक विद्रोह नहीं होता, और वह अधर्मी पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो।

[4] जो विरोध करता है, और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य कहलाता है, अपने आपको बड़ा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आपको परमेश्वर प्रगट करता है। ***(□□□. 28:2, □□□□. 11:36,37)***

[5] क्या तुम्हें स्मरण नहीं, कि जब मैं तुम्हारे यहाँ था, तो तुम से ये बातें कहा करता था?

[6] और अब तुम उस वस्तु को जानते हो, जो उसे रोक रही है, कि वह अपने ही समय में प्रगट हो।

[7] क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक

---

[*] **1:5** *□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□:* अब जो यह कष्ट तुम सहन करते हो वह इसलिए है क्योंकि तुम स्वर्ग राज्य के आत्मस्वीकृत वारिस हो। [†] **1:9** *□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□:* इसका अर्थ यह प्रतीत होता है कि, जब वह प्रकट होंगे तो वे उसकी शक्ति और महिमा की अभिव्यक्ति सहन करने में सक्षम नहीं होंगे।

रोकनेवाला है, और जब तक वह दूर
न हो जाए, वह रोके रहेगा।
8 तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे
[illegible][*], और
अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा।
([illegible]. 4:9, [illegible]. 11:4)
9 उस अधर्मी का आना शैतान के
कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी
सामर्थ्य, चिन्ह, और अद्भुत काम के
साथ,
10 और नाश होनेवालों के लिये
अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ
होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को
ग्रहण नहीं किया जिससे उनका उद्धार
होता।
11 और इसी कारण परमेश्वर उनमें
एक भटका देनेवाली सामर्थ्य को
भेजेगा ताकि वे *[illegible]*[†]।
12 और जितने लोग सत्य पर
विश्वास नहीं करते, वरन् अधर्म से
प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पाएँ।

[illegible]

13 पर हे भाइयों, और प्रभु के प्रिय
लोगों, चाहिये कि हम तुम्हारे विषय
में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते
रहें, कि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें
चुन लिया; कि आत्मा के द्वारा पवित्र
बनकर, और सत्य पर विश्वास करके
उद्धार पाओ। ***([illegible]. 1:4,5, 1 [illegible]. 1:1-5, [illegible]. 33:12)***
14 जिसके लिये उसने तुम्हें हमारे
सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम
हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को
प्राप्त करो।
15 इसलिए, हे भाइयों, स्थिर रहो;
और जो शिक्षा तुम ने हमारे वचन या
पत्र के द्वारा प्राप्त किया है, उन्हें थामे
रहो।
16 हमारा प्रभु यीशु मसीह आप ही,
और हमारा पिता परमेश्वर जिसने हम
से प्रेम रखा, और अनुग्रह से अनन्त
शान्ति और उत्तम आशा दी है।
17 *[illegible]*[‡], और तुम्हें हर एक
अच्छे काम, और वचन में दृढ़ करे।

3

[illegible]

1 अन्त में, हे भाइयों, हमारे लिये
प्रार्थना किया करो, कि प्रभु का वचन
ऐसा शीघ्र फैले, और महिमा पाए,
जैसा तुम में हुआ।
2 और हम टेढ़े और दुष्ट मनुष्यों से
बचे रहें क्योंकि हर एक में विश्वास
नहीं।
3 परन्तु *[illegible]*[*]; वह तुम्हें दृढ़ता से स्थिर करेगा:
और उस दुष्ट से सुरक्षित रखेगा।
4 और हमें प्रभु में तुम्हारे ऊपर
भरोसा है, कि जो-जो आज्ञा हम तुम्हें
देते हैं, उन्हें तुम मानते हो, और मानते
भी रहोगे।
5 परमेश्वर के प्रेम और मसीह के
धीरज की ओर प्रभु तुम्हारे मन की
अगुआई करे।

[illegible]

6 हे भाइयों, हम तुम्हें अपने प्रभु
यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं;

---

[*] **2:8** *[illegible]:* इस वाक्य में पापी मनुष्य को "नाश" करने की विधियों में से एक का उल्लेख किया गया हैं। [†] **2:11** *[illegible]:* इसका मतलब है परमेश्वर ने उन्हें छोड़ दिया हैं, क्योंकि वे सत्य से प्रेम नहीं करते है, और जो गलत था उसमें विश्वास करते है। [‡] **2:17** *[illegible]:* थिस्सलुनीकियों परीक्षणों के दौर से गुजर रहे थे, और पौलुस ने प्रार्थना की, कि उन लोगों को उनके विश्वास से भरी सांत्वना मिल सके। [*] **3:3** *[illegible]:* यद्यपि मनुष्य भरोसे योग्य नहीं है, परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं और अपने उद्देश्यों के प्रति सच्चा है।

कि हर एक ऐसे भाई से अलग रहो, जो आलस्य में रहता है, और जो शिक्षा तुम ने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता।

7 क्योंकि तुम आप जानते हो, कि किस रीति से हमारी सी चाल चलनी चाहिए; क्योंकि हम तुम्हारे बीच में आलसी तरीके से न चले।

8 और किसी की रोटी मुफ्त में न खाई; पर परिश्रम और कष्ट से रात दिन काम धन्धा करते थे, कि तुम में से किसी पर भार न हो।

9 यह नहीं, कि हमें अधिकार नहीं; पर इसलिए कि अपने आपको तुम्हारे लिये आदर्श ठहराएँ, कि तुम हमारी सी चाल चलो।

10 और जब हम तुम्हारे यहाँ थे, तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे, कि यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए।

11 हम सुनते हैं, कि कितने लोग तुम्हारे बीच में आलसी चाल चलते हैं; और कुछ काम नहीं करते, पर [illegible][†]।

12 ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं, कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें।

13 और तुम, हे भाइयों, भलाई करने में साहस न छोड़ो।

14 यदि कोई हमारी इस पत्री की बात को न माने, तो उस पर दृष्टि रखो; और उसकी संगति न करो, जिससे वह लज्जित हो;

15 तो भी उसे बैरी मत समझो पर भाई जानकर चिताओ।

16 अब प्रभु जो शान्ति का सोता है आप ही तुम्हें सदा और हर प्रकार से शान्ति दे: प्रभु तुम सब के साथ रहे।

17 मैं पौलुस [illegible][‡] नमस्कार लिखता हूँ। हर पत्री में मेरा यही चिन्ह है: मैं इसी प्रकार से लिखता हूँ।

18 हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर होता रहे।

[illegible]

† **3:11** *[illegible]:* अर्थात् वे दूसरों के मामलों में हस्तक्षेप करते हैं, उनका स्वयं का ऐसा कोई काम नहीं होता जिसमें वे अपने आपको व्यस्त रख सके। ‡ **3:17** *[illegible]:* अर्थात्, यह हस्ताक्षर इस पत्री की सत्यता का चिन्ह या प्रमाण हैं।

तीमुथियुस के नाम प्रेरित पौलुस की पहली पत्री

[illegible]

इसका लेखक पौलुस है। पत्र की विषयवस्तु स्पष्ट व्यक्त करती है कि यह पत्र प्रेरित पौलुस के द्वारा ही लिखा गया था, “पौलुस की ओर से जो मसीह यीशु का प्रेरित है” (1:1)। आरम्भिक कलीसिया इसे पौलुस का प्रामाणिक पत्र मानती थी।

[illegible]

लगभग ई.स. 62 - 64

पौलुस तीमुथियुस को इफिसुस में छोड़कर मकिदुनिया चला गया था। वहाँ से उसने उसे यह पत्र लिखा था (1 तीमु. 1:3; 3:14,15)।

[illegible]

जैसा नाम प्रकट करता है यह पत्र तीमुथियुस को जो प्रचार कार्य में उसका सहकर्मी एवं सहयोगी था, लिखा गया था। तीमुथियुस एवं सम्पूर्ण कलीसिया इसके लक्षित पाठक हैं।

[illegible]

इस पत्र का उद्देश्य यह था कि, तीमुथियुस को निर्देश देना कि परमेश्वर के परिवार का आचरण कैसा होना चाहिये (3:14-15)। और तीमुथियुस का इन निर्देशों पर स्थिर रहना। ये दो पद इस प्रथम पत्र में पौलुस के अभिप्रेत अर्थ को व्यक्त करते हैं। वह कहता है कि उसके लिखने का उद्देश्य है, तू जान ले कि लोगों को स्वयं का संचालन किस तरह करना चाहिए परमेश्वर के घराने में, जो जीविते परमेश्वर की कलीसिया है, स्तम्भ और सच्चाई की नींव है, इस गद्यांश में प्रकट है कि पौलुस अपने सहकर्मियों को पत्र लिख रहा था और निर्देशन दे रहा था कि वे कलीसियाओं को कैसे दृढ़ एवं स्थिर करें।

[illegible]

एक युवा शिष्य के लिए निर्देश

रूपरेखा

1. सेवकाई के आचरण — 1:1-20
2. सेवकाई के सिद्धान्त — 2:1-3:16
3. सेवकाई की जिम्मेदारियाँ — 4:1-6:21

[illegible]

1 पौलुस की ओर से जो हमारे
उद्धारकर्ता परमेश्वर, और हमारी
आशा के आधार मसीह यीशु की आज्ञा
से मसीह यीशु का प्रेरित है,
2 तीमुथियुस के नाम जो विश्वास
में मेरा सच्चा पुत्र है: पिता परमेश्वर,
और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर
से, तुझे अनुग्रह और दया, और शान्ति
मिलती रहे।

[illegible]

3 जैसे मैंने मकिदुनिया को जाते
समय तुझे समझाया था, कि इफिसुस
में रहकर कुछ लोगों को आज्ञा दे कि
अन्य प्रकार की शिक्षा न दें,
4 और *[illegible]**, जिनसे विवाद होते हैं; और
परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार
नहीं, जो विश्वास से सम्बंध रखता है;
वैसे ही फिर भी कहता हूँ।

* **1:4** *[illegible]:* अर्थात्, उन्हें अपना ध्यान बनावटी बातों पर नहीं लगाना चाहिए या इस तरह की तुच्छ बातों के सम्बंध में महत्त्व नहीं देना चाहिए।

5 आज्ञा का सारांश यह है कि शुद्ध मन और अच्छे विवेक, और निष्कपट विश्वास से प्रेम उत्पन्न हो।

6 इनको छोड़कर कितने लोग फिरकर बकवाद की ओर भटक गए हैं,

7 और व्यवस्थापक तो होना चाहते हैं, पर जो बातें कहते और जिनको दृढ़ता से बोलते हैं, उनको समझते भी नहीं।

8 पर हम जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था को व्यवस्था की रीति पर काम में लाए तो वह भली है।

9 यह जानकर कि व्यवस्था धर्मी जन के लिये नहीं पर अधर्मियों, निरंकुशों, भक्तिहीनों, पापियों, अपवित्रों और अशुद्धों, माँ-बाप के मारनेवाले, हत्यारों,

10 व्यभिचारियों, पुरुषगामियों, मनुष्य के बेचनेवालों, झूठ बोलनेवालों, और झूठी शपथ खानेवालों, और इनको छोड़ खरे उपदेश के सब विरोधियों के लिये ठहराई गई है।

11 यही परमधन्य परमेश्वर की महिमा के उस सुसमाचार के अनुसार है, जो मुझे सौंपा गया है।

[illegible]

12 और मैं अपने प्रभु मसीह यीशु का, जिसने मुझे सामर्थ्य दी है, धन्यवाद करता हूँ; कि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिये ठहराया।

13 मैं तो पहले निन्दा करनेवाला, और सतानेवाला, और अंधेर करनेवाला था; तो भी मुझ पर दया हुई, क्योंकि मैंने अविश्वास की दशा में बिन समझे बूझे ये काम किए थे।

14 और हमारे प्रभु का अनुग्रह उस विश्वास और प्रेम के साथ जो मसीह यीशु में है, बहुतायत से हुआ।

15 यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया, जिनमें सबसे बड़ा मैं हूँ।

16 पर मुझ पर इसलिए दया हुई कि मुझ सबसे बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी पूरी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिये विश्वास करेंगे, उनके लिये मैं एक आदर्श बनूँ।

17 अब सनातन राजा अर्थात् [illegible]† अनदेखे अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

[illegible]

18 हे पुत्र तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहले तेरे विषय में की गई थीं, मैं यह आज्ञा सौंपता हूँ, कि तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रह।

19 और विश्वास और उस अच्छे विवेक को थामे रह जिसे दूर करने के कारण कितनों का विश्वास रूपी जहाज डूब गया।

20 उन्हीं में से हुमिनयुस और सिकन्दर हैं जिन्हें मैंने शैतान को सौंप दिया कि वे निन्दा करना न सीखें।

2

[illegible]

1 अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ, कि विनती, प्रार्थना, निवेदन, धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिये किए जाएँ।

2 राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित्त इसलिए कि हम विश्राम और

† **1:17** [illegible]: यह स्वयं परमेश्वर को संदर्भित करता है, इसका मतलब हैं कि वह मरता नहीं है।

चैन के साथ सारी भक्ति और गरिमा में जीवन बिताएँ।

3 यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है,

4 जो यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली भाँति पहचान लें। ***([illegible]. 18:23)***

5 क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और *[illegible]*[*], अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है,

6 जिसने अपने आपको सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उसकी गवाही ठीक समयों पर दी जाए।

7 मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और प्रेरित और अन्यजातियों के लिये विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया।

[illegible]

8 इसलिए मैं चाहता हूँ, कि हर जगह पुरुष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें।

9 वैसे ही स्त्रियाँ भी संकोच और संयम के साथ *[illegible]*[†] वस्त्रों से अपने आपको संवारे; न कि बाल गूँथने, सोने, मोतियों, और बहुमूल्य कपड़ों से,

10 पर भले कामों से, क्योंकि परमेश्वर की भक्ति करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है।

11 और स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता में सीखना चाहिए।

12 मैं कहता हूँ, कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर अधिकार चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।

13 क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई। ***(1 [illegible]. 11:8)***

14 और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकावे में आकर अपराधिनी हुई। ***([illegible]. 3:6)***

15 तो भी स्त्री बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वह संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहे।

3

[illegible]

1 यह बात सत्य है कि जो अध्यक्ष होना चाहता है, तो वह भले काम की इच्छा करता है।

2 यह आवश्यक है कि अध्यक्ष निर्दोष, और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील, सभ्य, अतिथि-सत्कार करनेवाला, और सिखाने में निपुण हो।

3 पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो; वरन् कोमल हो, और न झगड़ालू, और न धन का लोभी हो।

4 अपने घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, और बाल-बच्चों को सारी गम्भीरता से अधीन रखता हो।

5 जब कोई अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा?

6 फिर यह कि नया चेला न हो, ऐसा न हो कि अभिमान करके शैतान के समान दण्ड पाए।

---

[*] **2:5** *[illegible]:* वह “परमेश्वर और मनुष्यों” के बीच मध्यस्थता करानेवाला हैं, जिसका अर्थ है, वह सम्पूर्ण मानवजाति के उद्धार की इच्छा करता है। [†] **2:9** *[illegible]:* यहाँ पर इसका मतलब हैं, उनका ध्यान उनके पहरावे पर होना चाहिए कि यह किसी भी वर्ग के व्यक्तियों के लिए अपमान का कारण न हो, इस तरह की बातों से यह दिखता है कि उनका मन उच्च और महत्त्वपूर्ण बातों पर लगा है।

7 और बाहरवालों में भी उसका
सुनाम हो, ऐसा न हो कि निन्दित
होकर शैतान के फंदे में फँस जाए।

[illegible]

8 वैसे ही *[illegible]** को भी गम्भीर
होना चाहिए, दो रंगी, पियक्कड़, और
नीच कमाई के लोभी न हों;
9 पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक
से सुरक्षित रखें।
10 और ये भी पहले परखे जाएँ, तब
यदि निर्दोष निकलें तो सेवक का काम
करें।
11 इसी प्रकार से स्त्रियों को
भी गम्भीर होना चाहिए; दोष
लगानेवाली न हों, पर सचेत और सब
बातों में विश्वासयोग्य हों।
12 सेवक एक ही पत्नी के पति हों
और बाल-बच्चों और अपने घरों का
अच्छा प्रबन्ध करना जानते हों।
13 क्योंकि जो सेवक का काम
अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने
लिये अच्छा पद और उस विश्वास में,
जो मसीह यीशु पर है, बड़ा साहस
प्राप्त करते हैं।

[illegible]

14 मैं तेरे पास जल्द आने की आशा
रखने पर भी ये बातें तुझे इसलिए
लिखता हूँ,
15 कि यदि मेरे आने में देर हो तो
तू जान ले कि परमेश्वर के घराने में
जो जीवित परमेश्वर की कलीसिया है,
और जो सत्य का खम्भा और नींव है;
कैसा बर्ताव करना चाहिए।
16 और इसमें सन्देह नहीं कि
[illegible]† गम्भीर है, अर्थात्,
वह जो शरीर में प्रगट हुआ,
आत्मा में धर्मी ठहरा,
स्वर्गदूतों को दिखाई दिया,
अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ,
जगत में उस पर विश्वास किया गया,
और महिमा में ऊपर उठाया गया।

4

[illegible]

1 परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता
है कि आनेवाले समयों में कितने
लोग भरमानेवाली आत्माओं, और
दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन
लगाकर विश्वास से बहक जाएँगे,
2 यह उन झूठे मनुष्यों के कपट
के कारण होगा, जिनका विवेक मानो
जलते हुए लोहे से दागा गया है,
3 जो विवाह करने से रोकेंगे, और
भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने
की आज्ञा देंगे; जिन्हें परमेश्वर ने
इसलिए सृजा कि विश्वासी और सत्य
के पहचाननेवाले उन्हें धन्यवाद के
साथ खाएँ। ***([illegible]. 9:3)***
4 क्योंकि *[illegible]**,
और कोई वस्तु अस्वीकार करने के
योग्य नहीं; पर यह कि धन्यवाद के
साथ खाई जाए; ***([illegible]. 1:31)***
5 क्योंकि परमेश्वर के वचन और
प्रार्थना के द्वारा शुद्ध हो जाती है।

[illegible]

6 यदि तू भाइयों को इन बातों
की सुधि दिलाता रहेगा, तो मसीह
यीशु का अच्छा सेवक ठहरेगा; और
विश्वास और उस अच्छे उपदेश की
बातों से, जो तू मानता आया है, तेरा
पालन-पोषण होता रहेगा।

---

* **3:8** *[illegible]*: इस शब्द का स्पष्ट अर्थ है वह लोग जिन्हें कलीसिया ने गरीब लोगों की देख-रेख करने की जिम्मेदारी दी है। † **3:16** *[illegible]*: "भेद" शब्द का अर्थ है, गुप्त या छुपा हुआ, और "भक्ति" शब्द का अर्थ है, उचित रूप से, ईश्वर-भक्ति, श्रद्धा, या धार्मिकता। * **4:4** *[illegible]*: यह अपने जगह में अच्छा है, जिस काम के लिए उसे बनाया उस उद्देश्य के लिये अच्छा हैं।

7 पर अशुद्ध और बूढ़ियों की सी कहानियों से अलग रह; और भक्ति में खुद को प्रशिक्षित कर।

8 क्योंकि देह के प्रशिक्षण से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिये लाभदायक है, क्योंकि इस समय के और आनेवाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिये है।

9 यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है।

10 क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसलिए करते हैं कि हमारी आशा उस जीविते परमेश्वर पर है; जो सब मनुष्यों का और विशेष रूप से विश्वासियों का उद्धारकर्ता है।

11 इन बातों की आज्ञा दे और सिखाता रह।

[illegible]

12 *[illegible]*†; पर वचन, चाल चलन, प्रेम, विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।

13 जब तक मैं न आऊँ, तब तक पढ़ने और उपदेश देने और सिखाने में लौलीन रह।

14 उस वरदान से जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह।

15 उन बातों को सोचता रह और इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह, ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो।

16 अपनी और अपने उपदेश में सावधानी रख। इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा, तो तू अपने, और अपने सुननेवालों के लिये भी उद्धार का कारण होगा।

5

[illegible]

1 किसी बूढ़े को न डाँट; पर उसे पिता जानकर समझा दे, और जवानों को भाई जानकर; ***([illegible]. 19:32)***

2 बूढ़ी स्त्रियों को माता जानकर; और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहन जानकर, समझा दे।

[illegible]

3 उन विधवाओं का *[illegible]**।

4 और यदि किसी विधवा के बच्चे या नाती-पोते हों, तो वे पहले अपने ही घराने के साथ आदर का बर्ताव करना, और अपने माता-पिता आदि को उनका हक़ देना सीखें, क्योंकि यह परमेश्वर को भाता है।

5 जो सचमुच विधवा है, और उसका कोई नहीं; वह परमेश्वर पर आशा रखती है, और रात-दिन विनती और प्रार्थना में लौलीन रहती है। ***([illegible]. 49:11)***

6 पर जो भोग-विलास में पड़ गई, वह जीते जी मर गई है।

7 इन बातों की भी आज्ञा दिया कर ताकि वे निर्दोष रहें।

8 पर यदि कोई अपने रिश्तेदारों की, विशेष रूप से अपने परिवार की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है।

9 उसी विधवा का नाम लिखा जाए जो साठ वर्ष से कम की न हो, और एक ही पति की पत्नी रही हो,

10 और भले काम में सुनाम रही हो, जिसने बच्चों का पालन-पोषण किया हो; अतिथि की सेवा की हो, पवित्र लोगों के पाँव धोए हों, दु:खियों की

† **4:12** *[illegible]:* अर्थात्, इस तरह का काम न करे कि तुम्हारी जवानी के कारण तुम्हें तुच्छ समझें। * **5:3** *[illegible]:* विशेष ध्यान और सम्मान देना जो यहाँ दिया गया हैं, यह गरीब विधवाओं को दर्शाता हैं जो आश्रित हालत में थी।

सहायता की हो, और हर एक भले काम में मन लगाया हो।

11 पर जवान विधवाओं के नाम न लिखना, क्योंकि जब वे मसीह का विरोध करके सुख-विलास में पड़ जाती हैं, तो विवाह करना चाहती हैं,

12 और दोषी ठहरती हैं, क्योंकि उन्होंने अपनी पहली प्रतिज्ञा को छोड़ दिया है।

13 और इसके साथ ही साथ वे घर-घर फिरकर आलसी होना सीखती हैं, और केवल आलसी नहीं, पर बक-बक करती रहतीं और दूसरों के काम में हाथ भी डालती हैं और अनुचित बातें बोलती हैं।

14 इसलिए मैं यह चाहता हूँ, कि जवान विधवाएँ विवाह करें; और बच्चे जनें और घरबार सम्भालें, और किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें।

15 क्योंकि कई एक तो बहक कर शैतान के पीछे हो चुकी हैं।

16 यदि किसी विश्वासिनी के यहाँ विधवाएँ हों, तो वही उनकी सहायता करे कि कलीसिया पर भार न हो ताकि वह उनकी सहायता कर सके, जो सचमुच में विधवाएँ हैं।

[illegible]

17 जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएँ।

18 क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, "दाँवनेवाले बैल का मुँह न बाँधना," क्योंकि "मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है।" ***([illegible]. 19:13, [illegible]. 25:4)***

19 कोई दोष किसी प्राचीन पर लगाया जाए तो बिना दो या तीन गवाहों के उसको स्वीकार न करना। ***([illegible]. 17:6, [illegible]. 19:15)***

20 पाप करनेवालों को सब के सामने समझा दे, ताकि और लोग भी डरें।

21 परमेश्वर, और मसीह यीशु, और चुने हुए स्वर्गदूतों को उपस्थित जानकर मैं तुझे चेतावनी देता हूँ कि तू मन खोलकर इन बातों को माना कर, और कोई काम पक्षपात से न कर।

22 *[illegible]*† और दूसरों के पापों में भागी न होना; अपने आपको पवित्र बनाए रख।

23 भविष्य में केवल जल ही का पीनेवाला न रह, पर अपने पेट के और अपने बार बार बीमार होने के कारण *[illegible]*‡।

24 कुछ मनुष्यों के पाप प्रगट हो जाते हैं, और न्याय के लिये पहले से पहुँच जाते हैं, लेकिन दूसरों के पाप बाद में दिखाई देते हैं।

25 वैसे ही कुछ भले काम भी प्रगट होते हैं, और जो ऐसे नहीं होते, वे भी छिप नहीं सकते।

6

[illegible]

1 जितने दास जूए के नीचे हैं, वे अपने-अपने स्वामी को बड़े आदर के योग्य जानें, ताकि परमेश्वर के नाम और उपदेश की निन्दा न हो।

2 और जिनके स्वामी विश्वासी हैं, इन्हें वे भाई होने के कारण तुच्छ

† **5:22** *[illegible]*: यह अभिषेक करने के अर्थ में उल्लेख किया गया है। सामान्य तौर पर सिर के ऊपर हाथ उसके रखा जाता था जो पवित्र सेवा के लिये अभिषिक्त या महत्त्वपूर्ण काम के लिये नियुक्त किया गया हो। ‡ **5:23** *[illegible]*: यहाँ पर दाखरस के उपयोग से प्राप्त होनेवाली खुशी के लिए नहीं था, परन्तु यह एक औषधि के रूप में, स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए उसका उपयोग किया जाता था।

न जानें; वरन् उनकी और भी सेवा
करें, क्योंकि इससे लाभ उठानेवाले
विश्वासी और प्रेमी हैं। इन बातों का
उपदेश किया कर और समझाता रह।
3 यदि कोई और ही प्रकार का
उपदेश देता है और खरी बातों को,
अर्थात् हमारे प्रभु यीशु मसीह की
बातों को और उस उपदेश को नहीं
मानता, जो भक्ति के अनुसार है।
4 तो वह अभिमानी है और कुछ
नहीं जानता, वरन् उसे विवाद और
शब्दों पर तर्क करने का रोग है, जिनसे
डाह, और झगड़े, और निन्दा की बातें,
और बुरे-बुरे सन्देह,
5 और उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े-
झगड़े उत्पन्न होते हैं, जिनकी बुद्धि
बिगड़ गई है और वे सत्य से विहीन हो
गए हैं, जो समझते हैं कि भक्ति लाभ
का द्वार है।
6 पर सन्तोष सहित भक्ति बड़ी
लाभ है।
7 क्योंकि न हम जगत में कुछ
लाए हैं और न कुछ ले जा सकते हैं।
([illegible]. 1:21, [illegible]. 49:17)
8 और यदि हमारे पास खाने और
पहनने को हो, तो इन्हीं पर सन्तोष
करना चाहिए।
9 पर जो धनी होना चाहते हैं, वे
ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुत सी
व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में
फँसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती
हैं और विनाश के समुद्र में डुबा देती
हैं। ***([illegible]. 23:4, [illegible]. 15:27)***
10 क्योंकि *[illegible]*[*], जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न
करते हुए कितनों ने विश्वास से
भटककर अपने आपको विभिन्न प्रकार
के दुःखों से छलनी बना लिया है।

[illegible]

11 पर हे परमेश्वर के जन, तू इन
बातों से भाग; और धार्मिकता, भक्ति,
विश्वास, प्रेम, धीरज, और नम्रता का
पीछा कर।
12 विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़;
और *[illegible]*[†], जिसके लिये तू बुलाया गया,
और बहुत गवाहों के सामने अच्छा
अंगीकार किया था।
13 मैं तुझे परमेश्वर को जो सब
को जीवित रखता है, और मसीह
यीशु को गवाह करके जिसने पुन्तियुस
पिलातुस के सामने अच्छा अंगीकार
किया, यह आज्ञा देता हूँ,
14 कि तू हमारे प्रभु यीशु मसीह
के प्रगट होने तक इस आज्ञा को
निष्कलंक और निर्दोष रख,
15 जिसे वह *[illegible]*[‡]
दिखाएगा, जो परमधन्य और एकमात्र
अधिपति और राजाओं का राजा, और
प्रभुओं का प्रभु है, ***([illegible]. 47:2)***
16 और अमरता केवल उसी की है,
और वह अगम्य ज्योति में रहता है,
और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और
न कभी देख सकता है। उसकी प्रतिष्ठा
और राज्य युगानुयुग रहेगा। आमीन।
(1 [illegible]. 1:17)

[illegible]

17 इस संसार के धनवानों को
आज्ञा दे कि वे अभिमानी न हों और
अनिश्चित धन पर आशा न रखें,
परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के
लिये सब कुछ बहुतायत से देता है।
([illegible]. 62:10)

---

* **6:10** *[illegible]*: प्रेरित यह नहीं कहता हैं कि "रुपया सब बुराइयों की जड़ हैं" या यह एक बुराई सब पर हैं। रुपये का "लालच" सब प्रकार की बुराइयों की जड़ हैं। † **6:12** *[illegible]*: विजय के मुकुट के रूप में जो आपके लिए रखा गया है। ‡ **6:15** *[illegible]*: परमेश्वर ऐसे समय में प्रकट करेगा क्योंकि वह सबसे अच्छा करेगा। यह यहाँ निहित है कि समय लोगों के लिए अज्ञात है।

18 और भलाई करें, और भले कामों
में धनी बनें, और उदार और सहायता
देने में तत्पर हों,
19 और आनेवाले जीवन के लिये
एक अच्छी नींव डाल रखें, कि सत्य
जीवन को वश में कर लें।

[illegible]

20 हे तीमुथियुस इस धरोहर की
रखवाली कर। जो तुझे दी गई है और
मूर्ख बातों से और विरोध के तर्क जो
झूठा ज्ञान कहलाता है दूर रह।
21 कितने इस ज्ञान का अंगीकार
करके विश्वास से भटक गए हैं।
तुम पर अनुग्रह होता रहे।

तीमुथियुस के नाम प्रेरित पौलुस की दूसरी पत्री

[illegible]

रोम के कारागार से मुक्त होकर और उसकी चौथी प्रचार-यात्रा के बाद पौलुस फिर से सम्राट नीरो के अधीन बन्दी बनाया गया था। इस चौथी प्रचार-यात्रा ही में पौलुस ने तीमुथियुस को पहला पत्र लिखा था। तीमुथियुस को दूसरा पत्र लिखते समय वह फिर से कारागार में था। पहली बार जब पौलुस बन्दी बनाया गया था वह तब एक किराये के मकान में नजरबन्द था (प्रेरि. 28:30)। परन्तु इस समय वह कालकोठरी में था (4:13)। एक साधारण बन्दी के जैसा वह जंजीरों में जकड़ा हुआ था (1:16, 2:9)। पौलुस जानता था कि उसका कार्य पूरा हो गया है और उसका अन्त समय आ गया है (4:6-8)।

[illegible]

लगभग ई.स. 66 - 67

पौलुस दूसरी बार बन्दीगृह में था जब उसने यह पत्र लिखा। अब उसे बस अपने शहीद होने की प्रतीक्षा थी।

[illegible]

इस पत्र का मुख्य पाठक तीमुथियुस तो था ही परन्तु उसने निश्चय ही यह पत्र कलीसिया को भी पढ़ाया था।

[illegible]

इस पत्र के लिखने में पौलुस का यह उद्देश्य था कि, तीमुथियुस को अन्तिम बार प्रोत्साहित करना और प्रबोधित करना के जो कार्य पौलुस ने उसे सौंपा है उसे वह निर्भीक होकर (1:3-14) ध्यान केन्द्रित होकर (2:1-26), और लगन से करे (3:14-17; 4:1-8)।

[illegible]

विश्वासयोग्य सेवकाई करने का प्रभार

रूपरेखा

1. सेवकाई के लिए प्रोत्साहन — 1:1-18
2. सेवकाई के आदर्श — 2:1-26
3. झूठी शिक्षा के खिलाफ चेतावनी — 3:1-17
4. अन्तिम प्रबोधन एवं आशीर्वाद — 4:1-22

[illegible]

1 पौलुस की ओर से जो उस जीवन
की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु
में है, [illegible]*
मसीह यीशु का प्रेरित है,
2 प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम।
परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह
यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया
और शान्ति मिलती रहे।

[illegible]

3 जिस परमेश्वर की सेवा मैं अपने
पूर्वजों की रीति पर शुद्ध विवेक से
करता हूँ, उसका धन्यवाद हो कि
अपनी प्रार्थनाओं में रात दिन तुझे
लगातार स्मरण करता हूँ,
4 और तेरे आँसुओं की सुधि कर
करके तुझ से भेंट करने की लालसा
रखता हूँ, कि आनन्द से भर जाऊँ।
5 और मुझे तेरे उस निष्कपट
विश्वास की सुधि आती है, जो पहले
तेरी नानी लोइस, और तेरी माता
यूनीके में थी, और मुझे निश्चय हुआ
है, कि तुझ में भी है।
6 इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता
हूँ, कि तू परमेश्वर के उस वरदान को

* **1:1** [illegible]: ईश्वरीय इच्छा और उद्देश्य के अनुसार प्रेरित होने के लिए बुलाया जाना।

जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला
है प्रज्वलित कर दे।
7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें *[illegible]*†
पर सामर्थ्य, और प्रेम, और
संयम की आत्मा दी है।

[illegible]

8 इसलिए हमारे प्रभु की गवाही
से, और मुझसे जो उसका कैदी हूँ,
लज्जित न हो, पर उस परमेश्वर की
सामर्थ्य के अनुसार सुसमाचार के लिये
मेरे साथ दुःख उठा।
9 जिसने हमारा उद्धार किया, और
पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह
हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर
अपनी मनसा और उस अनुग्रह के
अनुसार है; जो मसीह यीशु में
अनादिकाल से हम पर हुआ है।
10 पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह
यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाशित
हुआ, जिसने मृत्यु का नाश किया,
और जीवन और अमरता को उस
सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर
दिया।
11 जिसके लिये मैं प्रचारक, और
प्रेरित, और उपदेशक भी ठहरा।
12 इस कारण मैं इन दुःखों को भी
उठाता हूँ, पर लजाता नहीं, क्योंकि
जिस पर मैंने विश्वास रखा है, जानता
हूँ; और मुझे निश्चय है, कि वह मेरी
धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर
सकता है।

[illegible]

13 जो खरी बातें तूने मुझसे सुनी हैं
उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ
जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श
बनाकर रख।
14 और पवित्र आत्मा के द्वारा जो
हम में बसा हुआ है, इस अच्छी धरोहर
की रखवाली कर।
15 तू जानता है, कि आसियावाले
सब मुझसे फिर गए हैं, जिनमें
फूगिलुस और हिरमुगिनेस हैं।
16 उनेसिफुरूस के घराने पर प्रभु
दया करे, क्योंकि उसने बहुत बार मेरे
जी को ठंडा किया, और मेरी जंजीरों
से लज्जित न हुआ।
17 पर जब वह रोम में आया, तो बड़े
यत्न से ढूँढ़कर मुझसे भेंट की।
18 (प्रभु करे, कि उस दिन उस पर
प्रभु की दया हो)। और जो-जो सेवा
उसने इफिसुस में की है उन्हें भी तू भली
भाँति जानता है।

2

[illegible]

1 इसलिए हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह
से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो
जा।
2 और जो बातें तूने बहुत गवाहों के
सामने मुझसे सुनी हैं, उन्हें विश्वासी
मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी
सिखाने के योग्य हों।
3 मसीह यीशु के *[illegible]**।
4 जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता
है, तो इसलिए कि अपने वरिष्ठ
अधिकारी को प्रसन्न करे, अपने
आपको संसार के कामों में नहीं फँसाता
5 फिर अखाड़े में लड़नेवाला यदि
विधि के अनुसार न लड़े तो मुकुट नहीं
पाता।
6 जो किसान परिश्रम करता है, फल
का अंश पहले उसे मिलना चाहिए।

---

† **1:7** *[illegible]*: एक डरपोक और दासत्व की आत्मा नहीं दी। * **2:3** *[illegible]*: प्रेरित मानते है कि सुसमाचार के सेवक दुःख उठाने के लिये बुलाए गए है, और यही कारण हैं कि उसे एक अच्छे सिपाही की तरह दुःख उठाने के लिये तैयार रहना चाहिए।

7 जो मैं कहता हूँ, उस पर ध्यान
दे और प्रभु तुझे सब बातों की समझ
देगा।
8 यीशु मसीह को स्मरण रख, जो
दाऊद के वंश से हुआ, और मरे हुओं
में से जी उठा; और यह मेरे सुसमाचार
के अनुसार है।
9 जिसके लिये मैं कुकर्मी के समान
दुःख उठाता हूँ, यहाँ तक कि कैद भी
हूँ; परन्तु *[illegible]*† ।
10 इस कारण मैं चुने हुए लोगों के
लिये सब कुछ सहता हूँ, कि वे भी उस
उद्धार को जो मसीह यीशु में हैं अनन्त
महिमा के साथ पाएँ।
11 यह बात सच है, कि

यदि हम उसके साथ मर गए हैं तो
उसके साथ जीएँगे भी।
12 यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो
उसके साथ राज्य भी करेंगे;
यदि हम उसका इन्कार करेंगे तो वह
भी हमारा इन्कार करेगा।
13 यदि हम विश्वासघाती भी हों तो भी
वह विश्वासयोग्य बना रहता
है,
क्योंकि वह आप अपना इन्कार नहीं
कर सकता। ***(1 [illegible]. 5:24)***

[illegible]

14 इन बातों की सुधि उन्हें दिला,
और प्रभु के सामने चिता दे, कि शब्दों
पर तर्क-वितर्क न किया करें, जिनसे
कुछ लाभ नहीं होता; वरन् सुननेवाले
बिगड़ जाते हैं।
15 अपने आपको परमेश्वर का
ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला
ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित
होने न पाए, और जो सत्य के वचन
को ठीक रीति से काम में लाता हो।
16 पर अशुद्ध बकवाद से बचा रह;
क्योंकि ऐसे लोग और भी अभक्ति में
बढ़ते जाएँगे।
17 और उनका वचन सड़े-घाव की
तरह फैलता जाएगा: हुमिनयुस और
फिलेतुस उन्हीं में से हैं,
18 जो यह कहकर कि पुनरुत्थान हो
चुका है सत्य से भटक गए हैं, और
कितनों के विश्वास को उलट-पुलट
कर देते हैं।
19 तो भी परमेश्वर की पक्की नींव
बनी रहती है, और उस पर यह छाप
लगी है: “प्रभु अपनों को पहचानता
है,” और “जो कोई प्रभु का नाम लेता
है, वह अधर्म से बचा रहे।” ***([illegible]. 1:7)***

20 बड़े घर में न केवल सोने-चाँदी
ही के, पर काठ और मिट्टी के बर्तन भी
होते हैं; कोई-कोई आदर, और कोई-
कोई अनादर के लिये।
21 यदि कोई अपने आपको इनसे
शुद्ध करेगा, तो वह आदर का पात्र,
और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के
काम आएगा, और हर भले काम के
लिये तैयार होगा।
22 जवानी की अभिलाषाओं से
भाग; और जो शुद्ध मन से प्रभु का नाम
लेते हैं, उनके साथ धार्मिकता, और
विश्वास, और प्रेम, और मेल-मिलाप
का पीछा कर।
23 पर मूर्खता, और अविद्या के
विवादों से अलग रह; क्योंकि तू
जानता है, कि इनसे झगड़े होते हैं।
24 और प्रभु के दास को झगड़ालू
नहीं होना चाहिए, पर सब के साथ
कोमल और शिक्षा में निपुण, और
सहनशील हो।
25 और विरोधियों को नम्रता से
समझाए, क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन

† **2:9** *[illegible]:* सुसमाचार समृद्ध किया गया था और वह लिखित और कैद नहीं किया जा सका।

फिराव का मन दे, कि वे भी सत्य को पहचानें।

26 और इसके द्वारा शैतान की इच्छा पूरी करने के लिये सचेत होकर शैतान के फंदे से छूट जाएँ।

3

□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□

1 पर यह जान रख, कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएँगे।

2 क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, धन का लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र,

3 दया रहित, क्षमा रहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी,

4 विश्वासघाती, हठी, अभिमानी और परमेश्वर के नहीं वरन् सुख-विलास ही के चाहनेवाले होंगे।

5 वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना।

6 इन्हीं में से वे लोग हैं, जो घरों में दबे पाँव घुस आते हैं और उन दुर्बल स्त्रियों को वश में कर लेते हैं, जो पापों से दबी और हर प्रकार की अभिलाषाओं के वश में हैं।

7 और सदा सीखती तो रहती हैं पर सत्य की पहचान तक कभी नहीं पहुँचतीं।

8 और जैसे यन्नेस और यम्ब्रेस ने मूसा का विरोध किया था वैसे ही ये भी सत्य का विरोध करते हैं; ये तो ऐसे मनुष्य हैं, जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और वे विश्वास के विषय में निकम्मे हैं। ***(□□□□□□□. 13:8)***

9 पर वे इससे आगे नहीं बढ़ सकते, क्योंकि जैसे उनकी अज्ञानता सब मनुष्यों पर प्रगट हो गई थी, वैसे ही इनकी भी हो जाएगी।

□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□

10 पर तूने उपदेश, चाल-चलन, मनसा, विश्वास, सहनशीलता, प्रेम, धीरज, उत्पीड़न, और पीड़ा में मेरा साथ दिया,

11 और ऐसे दुःखों में भी जो अन्ताकिया और इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझ पर पड़े थे। मैंने ऐसे उत्पीड़नों को सहा, और प्रभु ने मुझे उन सबसे छुड़ाया। ***(□□. 34:19)***

12 पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएँगे।

13 और दुष्ट, और बहकानेवाले धोखा देते हुए, और धोखा खाते हुए, बिगड़ते चले जाएँगे।

14 पर तू इन बातों पर जो तूने सीखी हैं और विश्वास किया था, यह जानकर दृढ़ बना रह; कि तूने उन्हें किन लोगों से सीखा है,

15 और बालकपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है।

16 *□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□** और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है,

17 ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।

4

□□□□ □□ □□□□□□□ □□

* **3:16** *□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□:* इसका मतलब है, परमेश्वर के द्वारा प्रेरित

1 परमेश्वर और मसीह यीशु को
गवाह करके, जो जीवितों और मरे
हुओं का न्याय करेगा, उसे और
उसके प्रगट होने, और राज्य को सुधि
दिलाकर मैं तुझे आदेश देता हूँ।
2 कि तू वचन का प्रचार कर; समय
और असमय तैयार रह, सब प्रकार
की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ
उलाहना दे, और डाँट, और समझा।
3 क्योंकि ऐसा समय आएगा, कि
लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर
कानों की खुजली के कारण अपनी
अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये
बहुत सारे उपदेशक बटोर लेंगे।
4 और अपने कान सत्य से फेरकर
कथा-कहानियों पर लगाएँगे।
5 पर तू सब बातों में सावधान रह,
दुःख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम
कर और अपनी सेवा को पूरा कर।
6 *[illegible]*[*],
और मेरे संसार से जाने का समय आ
पहुँचा है।
7 मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ,
मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने
विश्वास की रखवाली की है।
8 भविष्य में मेरे लिये
[illegible][†] रखा
हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और
न्यायी है, मुझे उस दिन देगा और
मुझे ही नहीं, वरन् उन सब को भी, जो
उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।

[illegible]

9 मेरे पास शीघ्र आने का प्रयत्न
कर।
10 क्योंकि देमास ने इस संसार को
प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है, और
थिस्सलुनीके को चला गया है, और
क्रेसकेंस गलातिया को और तीतुस
दलमतिया को चला गया है।
11 केवल लूका मेरे साथ है मरकुस
को लेकर चला आ; क्योंकि सेवा के
लिये वह मेरे बहुत काम का है।
12 तुखिकुस को मैंने इफिसुस को
भेजा है।
13 जो बागा मैं त्रोआस में करपुस के
यहाँ छोड़ आया हूँ, जब तू आए, तो
उसे और पुस्तकें विशेष करके चर्मपत्रों
को लेते आना।
14 सिकन्दर ठठेरे ने मुझसे बहुत
बुराइयाँ की हैं प्रभु उसे उसके कामों
के अनुसार बदला देगा। ***([illegible]. 28:4, [illegible]. 12:19)***
15 तू भी उससे सावधान रह, क्योंकि
उसने हमारी बातों का बहुत ही विरोध
किया।
16 मेरे पहले प्रत्युत्तर करने के समय
में किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया,
वरन् सब ने मुझे छोड़ दिया था भला
हो, कि इसका उनको लेखा देना न
पड़े।
17 परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा,
और मुझे सामर्थ्य दी; *[illegible]*[‡], और सब अन्यजाति सुन लें; और
मैं तो सिंह के मुँह से छुड़ाया गया।
([illegible]. 22:21, [illegible]. 6:21)
18 और प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से
छुड़ाएगा, और अपने स्वर्गीय राज्य
में उद्धार करके पहुँचाएगा उसी की

---

[*] **4:6** *[illegible]*: प्रेरित को ऐसा प्रतीत होता हैं कि वह मरने की कगार पर है, तीमुथियुस को एक कारण के रूप में आग्रह किया है कि उसे क्यों अपने कर्तव्यों को निभाने में मेहनती और विश्वासयोग्य होना चाहिए। [†] **4:8** *[illegible]*: अर्थात् वह एक मुकुट धार्मिकता के कारण जीता और उसके संघर्ष और प्रयास पवित्रता के कारण इनाम के रूप में सम्मानित किया गया। [‡] **4:17** *[illegible]*: अर्थात्, पूरी तरह से पुष्टि की जा सके, ताकि दूसरे लोग इसकी सच्चाई में आश्वस्त रहें।

महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।

[illegible]

19 प्रिस्का और अक्विला को, और
उनेसिफुरूस के घराने को नमस्कार।
20 इरास्तुस कुरिन्थुस में रह गया,
और त्रुफिमुस को मैंने मीलेतुस में
बीमार छोड़ा है।
21 जाड़े से पहले चले आने का
प्रयत्न कर: यूबूलुस, और पूदेंस,
और लीनुस और क्लौदिया, और सब
भाइयों का तुझे नमस्कार।
22 प्रभु तेरी आत्मा के साथ रहे, तुम
पर अनुग्रह होता रहे।

तीतुस के नाम प्रेरित पौलुस की पत्री

[illegible]

पौलुस स्वयं को इस पत्र का लेखक कहता है। वह स्वयं को “परमेश्वर का दास एवं मसीह यीशु का प्रेरित” कहता है (तीतु. 1:1)। तीतुस के साथ पौलुस के सम्बंध का उद्देश्य स्पष्ट नहीं है। हमें यही समझ में आता है कि उसने पौलुस की सेवा में मसीह को ग्रहण किया था। पौलुस उसे अपना पुत्र कहता है, “जो विश्वास की सहभागिता के विचार से मेरा सच्चा पुत्र है” (1:4)। पौलुस तीतुस को एक मित्र और सुसमाचार में सहकर्मी मानकर सम्मान प्रदान करता था। अनुराग, सत्यनिष्ठा और लोगों को शान्ति दिलाने के कारण वह उसकी प्रशंसा भी करता है।

[illegible]

लगभग ई.स. 63 - 65

पहली बार कारागार से मुक्ति पाने के बाद पौलुस ने तीतुस को यह पत्र निकोपोलिस से लिखा था। तीमुथियुस को इफिसुस में छोड़ने के बाद पौलुस तीतुस के साथ क्रेते में आया था।

[illegible]

तीतुस, एक और सहकर्मी तथा विश्वास में पौलुस का पुत्र जो क्रेते में था।

[illegible]

इस पत्र को लिखने में पौलुस का उद्देश्य यह था की, क्रेते की कलीसिया में जो भी कमी थी उसे सुधारने के लिए तीतुस को परामर्श देना वहाँ व्यवस्था की कमी और कुछ अनुशासन रहित मनुष्यों के सुधार में सहायता करना (1) धर्मवृद्धों की नियुक्ति और (2) क्रेते में अविश्वासियों के मध्य विश्वास की उचित गवाही देना (तीतु. 1:5)।

[illegible]

आचरण की नियमावली

रूपरेखा

1. अभिवादन — 1:1-4
2. धर्मवृद्धों की नियुक्ति — 1:5-16
3. विभिन्न आयु के मनुष्यों के लिए निर्देश — 2:1-3:11
4. समापन टिप्पणी — 3:12-15

[illegible]

1 पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर
का दास और यीशु मसीह का प्रेरित है,
परमेश्वर के चुने हुए लोगों के विश्वास
को स्थापित करने और सच्चाई का
ज्ञान स्थापित करने के लिए जो भक्ति
के साथ सहमत हैं,
2 उस अनन्त जीवन की आशा पर,
जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो झूठ
बोल नहीं सकता सनातन से की है,
3 पर [illegible]* अपने वचन
को उस प्रचार के द्वारा प्रगट किया, जो
हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की आज्ञा
के अनुसार मुझे सौंपा गया।
4 तीतुस के नाम जो विश्वास की
सहभागिता के विचार से मेरा सच्चा
पुत्र है: परमेश्वर पिता और हमारे
उद्धारकर्ता मसीह यीशु की ओर से तुझे
अनुग्रह और शान्ति होती रहे।

[illegible]

5 मैं इसलिए तुझे क्रेते में छोड़
आया था, कि तू शेष रही हुई बातों
को सुधारें, और मेरी आज्ञा के अनुसार
नगर-नगर प्राचीनों को नियुक्त करे।
6 जो निर्दोष और एक ही पत्नी का
पति हो, जिनके बच्चे विश्वासी हो,

* **1:3** [illegible]: ठीक समय पर, जो उन्होंने सबसे बेहतर समय नियुक्त किया था।

और जिन पर लुचपन और निरंकुशता
का दोष नहीं।
7 क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर
का भण्डारी होने के कारण निर्दोष
होना चाहिए; न हठी, न क्रोधी, न
पियक्कड़, न मारपीट करनेवाला, और
न नीच कमाई का लोभी।
8 पर पहुनाई करनेवाला, भलाई का
चाहनेवाला, संयमी, न्यायी, पवित्र
और जितेन्द्रिय हो;
9 और विश्वासयोग्य वचन पर जो
धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे; कि
[illegible]† दे सके;
और विवादियों का मुँह भी बन्द कर
सके।

[illegible]

10 क्योंकि बहुत से अनुशासनहीन
लोग, निरंकुश बकवादी और धोखा
देनेवाले हैं; विशेष करके खतनावालों
में से।
11 इनका मुँह बन्द करना चाहिए:
ये लोग नीच कमाई के लिये अनुचित
बातें सिखाकर घर के घर बिगाड़ देते
हैं।
12 उन्हीं में से एक जन ने जो उन्हीं
का भविष्यद्वक्ता है, कहा है, "क्रेती
लोग सदा झूठे, दुष्ट पशु और आलसी
पेटू होते हैं।"
13 यह गवाही सच है, इसलिए उन्हें
कड़ाई से चेतावनी दिया कर, कि वे
विश्वास में पक्के हो जाएँ।
14 यहूदियों की कथा कहानियों और
उन मनुष्यों की आज्ञाओं पर मन न
लगाएँ, जो सत्य से भटक जाते हैं।
15 शुद्ध लोगों के लिये सब वस्तुएँ
शुद्ध हैं, पर अशुद्ध और अविश्वासियों
के लिये कुछ भी शुद्ध नहीं वरन् उनकी
बुद्धि और विवेक दोनों अशुद्ध हैं।
16 वे कहते हैं, कि हम परमेश्वर
को जानते हैं *[illegible]*‡,
क्योंकि वे घृणित और आज्ञा न
माननेवाले हैं और किसी अच्छे काम
के योग्य नहीं।

2

[illegible]

1 पर तू, ऐसी बातें कहा कर जो खरे
सिद्धान्त के योग्य हैं।
2 अर्थात् वृद्ध पुरुष सचेत और
गम्भीर और संयमी हों, और उनका
विश्वास और प्रेम और धीरज पक्का
हो।
3 इसी प्रकार बूढ़ी स्त्रियों का चाल
चलन भक्तियुक्त लोगों के समान हो,
वे दोष लगानेवाली और पियक्कड़
नहीं; पर अच्छी बातें सिखानेवाली
हों।
4 *[illegible]**, कि
अपने पतियों और बच्चों से प्रेम रखें;
5 और संयमी, पतिव्रता, घर का
कारबार करनेवाली, भली और अपने-
अपने पति के अधीन रहनेवाली हों,
ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न
होने पाए।
6 ऐसे ही जवान पुरुषों को भी
समझाया कर, कि संयमी हों।
7 सब बातों में अपने आपको भले
कामों का नमूना बना; तेरे उपदेश में
सफाई, गम्भीरता
8 और ऐसी खराई पाई जाए, कि
कोई उसे बुरा न कह सके; जिससे

† **1:9** *[illegible]*: अर्थात् सुसमाचार की खरी शिक्षा। इसका मतलब हैं कि वह इसे पकड़कर स्थिर रहें, उनके विरोध में जो इसे खीच कर दूर कर सकता हैं। ‡ **1:16** *[illegible]*: उनका आचरण इस तरह का दिखता हैं कि उन्हें उनके साथ कोई वास्तविक रिश्ता नहीं हैं। * **2:4** *[illegible]*: इसका मतलब हैं, उन्हें उनको निर्देश देना चाहिए कि उनकी इच्छा और भावना अच्छी तरह से नियमित होनी चाहिए।

विरोधी हम पर कोई दोष लगाने का अवसर न पाकर लज्जित हों।

9 दासों को समझा, कि अपने-अपने स्वामी के अधीन रहें, और सब बातों में उन्हें प्रसन्न रखें, और उलटकर जवाब न दें;

10 चोरी चालाकी न करें; पर सब प्रकार से पूरे विश्वासी निकलें, कि वे सब बातों में हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की शोभा बढ़ा दें।

11 क्योंकि *[illegible]*[†]।

12 और हमें चिताता है, कि हम *[illegible]*[‡] इस युग में संयम और धार्मिकता से और भक्ति से जीवन बिताएँ;

13 और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की प्रतीक्षा करते रहें।

14 जिसने अपने आपको हमारे लिये दे दिया, कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हो। ***([illegible]. 19:5, [illegible]. 4:20, [illegible]. 7:6, [illegible]. 14:2, [illegible]. 72:14, [illegible]. 130:8, [illegible]. 37:23)***

15 पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह और समझा और सिखाता रह। कोई तुझे तुच्छ न जानने पाए।

3

[illegible]

1 लोगों को सुधि दिला, कि हाकिमों और अधिकारियों के अधीन रहें, और उनकी आज्ञा मानें, और हर एक अच्छे काम के लिये तैयार रहें,

2 *[illegible]*[*]; झगड़ालू न हों; पर कोमल स्वभाव के हों, और सब मनुष्यों के साथ बड़ी नम्रता के साथ रहें।

3 क्योंकि हम भी पहले, निर्बुद्धि और आज्ञा न माननेवाले, और भ्रम में पड़े हुए, और विभिन्न प्रकार की अभिलाषाओं और सुख-विलास के दासत्व में थे, और बैर-भाव, और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे, और घृणित थे, और एक दूसरे से बैर रखते थे।

4 पर जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की भलाई, और मनुष्यों पर उसका प्रेम प्रकट हुआ

5 तो उसने हमारा उद्धार किया और *[illegible]*[†], पर अपनी दया के अनुसार, नये जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।

6 जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उण्डेला। ***([illegible]. 2:28)***

7 जिससे *[illegible]*[‡], अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।

---

† **2:11** *[illegible]:* इसका मतलब है कि उद्धार की योजना सभी जातियों पर प्रकट की गई हैं कि वे उद्धार पा सके। ‡ **2:12** *[illegible]:* इस जीवन की अनुचित इच्छा, धन, भोग-विलास, सम्मान की चाह को दर्शाता है। * **3:2** *[illegible]:* हम किसी से किसी और के बारे में कुछ न कहें, जो उन्हें चोट पहुँचाए। † **3:5** *[illegible]:* यह सुसमाचार का एक महान और मौलिक सिद्धान्त है कि मनुष्यों के अच्छे काम आत्मा के धार्मिकता में कोई हिस्सेदारी नहीं होती हैं। ‡ **3:7** *[illegible]:* हम अपने कामों के द्वारा नहीं, परन्तु उनके अनुग्रह और दया के द्वारा।

8 यह बात सच है, और मैं चाहता
हूँ, कि तू इन बातों के विषय में दृढ़ता
से बोले इसलिए कि जिन्होंने परमेश्वर
पर विश्वास किया है, वे भले-भले
कामों में लगे रहने का ध्यान रखें। ये
बातें भली, और मनुष्यों के लाभ की हैं।

[illegible]

9 पर मूर्खता के विवादों, और
वंशावलियों, और बैर विरोध, और उन
झगड़ों से, जो व्यवस्था के विषय में हों
बचा रह; क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ
हैं।
10 किसी पाखण्डी को एक दो बार
समझा बुझाकर उससे अलग रह।
11 यह जानकर कि ऐसा मनुष्य
भटक गया है, और अपने आपको दोषी
ठहराकर पाप करता रहता है।

[illegible]

12 जब मैं तेरे पास अरतिमास
या तुखिकुस को भेजूँ, तो मेरे पास
निकुपुलिस आने का यत्न करना:
क्योंकि मैंने वहीं जाड़ा काटने का
निश्चय किया है।
13 जेनास व्यवस्थापक और
अपुल्लोस को यत्न करके आगे पहुँचा
दे, और देख, कि उन्हें किसी वस्तु की
घटी न होने पाए।
14 हमारे लोग भी आवश्यकताओं
को पूरा करने के लिये अच्छे कामों में
लगे रहना सीखें ताकि निष्फल न रहें।

[illegible]

15 मेरे सब साथियों का तुझे
नमस्कार और जो विश्वास के कारण
हम से प्रेम रखते हैं, उनको नमस्कार।
तुम सब पर अनुग्रह होता रहे।

फिलेमोन के नाम प्रेरित पौलुस की पत्री

[illegible]

इस पत्र का लेखक पौलुस था (फिले. 1:1)। इस पत्र में पौलुस फिलेमोन से कहता है कि वह उनेसिमुस को उसके पास फिर से भेज रहा है तथा कुलु. 4:9 में उनेसिमुस तुखिकुस के साथ कुलुस्से जा रहा था कि तुखिकुस फिलेमोन को पौलुस का पत्र दे। यह एक रोचक बात है कि पौलुस ने यह पत्र अपने हाथ से लिखा है कि इसका महत्त्व प्रकट हो।

[illegible]

लगभग ई.स. 60

फिलेमोन को यह पत्र लिखते समय पौलुस रोम के कारागार में बन्दी था।

[illegible]

पौलुस ने यह पत्र फिलेमोन की तथा अरखिप्पुस की आवासीय कलीसिया को तथा बहन अफफिया को लिखा था। पत्र की विषयवस्तु से प्रकट होता है कि यह पत्र मुख्यतः फिलेमोन के लिए था।

[illegible]

इस पत्र को लिखने में पौलुस का उद्देश्य यह था कि उनेसिमुस को उसका स्वामी फिर से अपना ले (उनेसिमुस फिलेमोन का दास था जो उसके पास से चोरी करके भाग गया था) और उसे दण्ड न दे। (10-12,17)। इसके अतिरिक्त पौलुस चाहता था कि फिलेमोन उसे दास के रूप में नहीं "एक प्रिय भाई" के रूप में अपना ले। (15-16)। उनेसिमुस अब भी फिलेमोन की सम्पदा था और पौलुस उसके लिए मार्ग बनाना चाहता था कि फिलेमोन उसे सहर्ष ग्रहण कर ले। पौलुस के प्रचार द्वारा उनेसिमुस ने मसीह को ग्रहण कर लिया था (फिले.10)।

[illegible]

छुटकारा

रूपरेखा

1. अभिवादन — 1:1-3
2. आभारोक्ति — 1:4-7
3. उनेसिमुस के लिए मध्यस्थता — 1:8-22
4. अन्तिम वचन — 1:23-25

[illegible]

1 पौलुस की ओर से जो *[illegible]*[*] है, और भाई
तीमुथियुस की ओर से हमारे प्रिय
सहकर्मी फिलेमोन,
2 और बहन *[illegible]*[†], और
हमारे साथी योद्धा अरखिप्पुस और
फिलेमोन के घर की कलीसिया के
नाम।
3 हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और
शान्ति तुम्हें मिलती रहे।

[illegible]

4 मैं सदा परमेश्वर का धन्यवाद
करता हूँ; और अपनी प्रार्थनाओं में भी
तुझे स्मरण करता हूँ।
5 क्योंकि मैं तेरे उस प्रेम और
विश्वास की चर्चा सुनकर, जो प्रभु
यीशु पर और सब पवित्र लोगों के साथ
है।
6 मैं प्रार्थना करता हूँ कि, विश्वास
में तुम्हारी सहभागिता हर अच्छी
बात के ज्ञान के लिए प्रभावी हो जो
मसीह में हमारे पास है।
7 क्योंकि हे भाई, मुझे तेरे प्रेम से
बहुत आनन्द और शान्ति मिली है,

---

* **1:1** *[illegible]*: यीशु मसीह के कारण में रोम में एक कैदी के रूप में। † **1:2** *[illegible]*: सम्भवत: फिलेमोन की पत्नी थी।

इसलिए, कि तेरे द्वारा पवित्र लोगों के
मन हरे भरे हो गए हैं।

[illegible]

8 इसलिए यद्यपि मुझे मसीह में
बड़ा साहस है, कि जो बात ठीक है,
उसकी आज्ञा तुझे दूँ।
9 तो भी मुझ बूढ़े पौलुस को जो अब
मसीह यीशु के लिये कैदी हूँ, यह और
भी भला जान पड़ा कि प्रेम से विनती
करूँ।
10 मैं अपने बच्चे उनेसिमुस के लिये
जो मुझसे मेरी कैद में जन्मा है तुझ से
विनती करता हूँ।
11 वह तो पहले तेरे कुछ काम का न
था, पर अब तेरे और मेरे दोनों के बड़े
काम का है।
12 उसी को अर्थात् जो मेरे हृदय का
टुकड़ा है, मैंने उसे तेरे पास लौटा दिया
है।
13 उसे मैं अपने ही पास रखना
चाहता था कि वह तेरी ओर से इस
कैद में जो सुसमाचार के कारण है, मेरी
सेवा करे।
14 पर मैंने तेरी इच्छा बिना कुछ
भी करना न चाहा कि तेरा यह उपकार
दबाव से नहीं पर आनन्द से हो।
15 क्योंकि क्या जाने वह तुझ से
कुछ दिन तक के लिये इसी कारण
अलग हुआ कि सदैव तेरे निकट रहे।
16 परन्तु अब से दास के समान नहीं,
वरन् दास से भी उत्तम, अर्थात् भाई के
समान रहे जो मेरा तो विशेष प्रिय है
ही, पर अब शरीर में और प्रभु में भी,
तेरा भी विशेष प्रिय हो।

[illegible]

17 यदि तू मुझे अपना सहभागी
समझता है, तो उसे इस प्रकार ग्रहण
कर जैसे मुझे।
18 और [illegible]
[illegible]‡, या उस पर तेरा कुछ
आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले।
19 मैं पौलुस अपने हाथ से लिखता
हूँ, कि मैं आप भर दूँगा; और इसके
कहने की कुछ आवश्यकता नहीं, कि
मेरा कर्ज जो तुझ पर है वह तू ही है।
20 हे भाई, यह आनन्द मुझे प्रभु में
तेरी ओर से मिले, मसीह में मेरे जी को
हरा भरा कर दे।
21 मैं तेरे आज्ञाकारी होने का भरोसा
रखकर, तुझे लिखता हूँ और यह
जानता हूँ, कि जो कुछ मैं कहता हूँ,
तू उससे कहीं बढ़कर करेगा।
22 और यह भी, कि मेरे लिये ठहरने
की जगह तैयार रख; मुझे आशा है, कि
तुम्हारी प्रार्थनाओं के द्वारा मैं तुम्हें दे
दिया जाऊँगा।

[illegible]

23 इपफ्रास जो मसीह यीशु में मेरे
साथ कैदी है
24 और मरकुस और अरिस्तर्खुस
और देमास और लूका जो मेरे सहकर्मी
हैं; इनका तुझे नमस्कार।
25 हमारे प्रभु यीशु मसीह का
अनुग्रह तुम्हारी आत्मा पर होता रहे।
आमीन।

---

‡ **1:18** [illegible]: चाहे तुम्हारे पास से भागने के द्वारा, या जिस काम को वह करने के लिए तैयार हुआ था उस काम से मिली असफलता के द्वारा।

इब्रानियों के नाम पत्री

[illegible]

इब्रानियों के पत्र का लेखक एक रहस्य है। कुछ विद्वान पौलुस को इसका लेखक मानते हैं परन्तु इसका लेखक अज्ञात ही है। अन्य कोई भी पुस्तक ऐसी नहीं है जो विश्वासियों के लिये ऐसी सुन्दरता से मसीह को प्रधान पुरोहित दर्शाए। वह हारून के पुरोहित होने से भी श्रेष्ठ है और वही परमेश्वर प्रदत्त विधान और भविष्यद्वक्ताओं की पूर्ति है। यह पुस्तक मसीह को हमारे विश्वास का कर्ता एवं सिद्ध करनेवाला दर्शाती है (इब्रा. 12:2)।

[illegible]

लगभग ई.स. 64 - 70

इस पत्र का लेखन स्थान यरूशलेम था- यीशु के स्वर्गारोहण के बाद और इस्राएल के मन्दिर के ध्वंस होने से पूर्व।

[illegible]

यह पत्र मुख्यतः उन यहूदियों को लिखा गया था जिन्होंने मसीह को ग्रहण कर लिया था। वे पुराने नियम के ज्ञाता थे परन्तु वे परीक्षा में थे कि पुनः यहूदी मत में चले जायें या शुभ सन्देश को यहूदी विधि का बना दें। एक सुझाव यह भी है कि ये लोग "अधिक संख्या में पुरोहित थे जिन्होंने मसीही विश्वास को अपनाया था" (प्रेरि. 6:7)।

[illegible]

इस पत्र के लेखक ने अपने श्रोतागणों को उत्साहित किया कि वे स्थानीय यहूदी शिक्षाओं को त्याग कर यीशु से स्वामिभक्ति निभाएँ तथा प्रकट करें कि मसीह यीशु श्रेष्ठ है, परमेश्वर का पुत्र स्वर्गदूतों से, पुरोहितों से, पुराने नियम के अगुओं से या अन्य किसी भी धर्म से श्रेष्ठ है। क्रूस पर मरकर और फिर जीवित होकर यीशु विश्वासियों का उद्धार एवं अनन्त जीवन को सुनिश्चित करता है। हमारे पापों के लिए मसीह का बलिदान सिद्ध एवं परिपूर्ण था। विश्वास परमेश्वर को ग्रहणयोग्य है। हम परमेश्वर की आज्ञाओं को मानकर अपना विश्वास प्रकट करते हैं।

[illegible]

मसीह की श्रेष्ठता

रूपरेखा

1. मसीह यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ — 1:1-2:18
2. यीशु इस्राएल के विधान एवं पुरानी वाचा से श्रेष्ठ है — 3:1-10:18
3. विश्वासयोग्य ठहरने तथा कष्ट सहन करने की बुलाहट — 10:19-12:29
4. अन्तिम उद्‍बोधन एवं नमस्कार — 13:1-25

[illegible]

1 पूर्व युग में परमेश्वर ने पूर्वजों से
थोड़ा-थोड़ा करके और भाँति-भाँति से
भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें की,
2 पर इन अन्तिम दिनों में हम से
अपने पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उसने
सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और
उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि भी रची
है। ***(1 [illegible]. 8:6, [illegible]. 1:3)***
3 वह उसकी महिमा का प्रकाश,
और उसके तत्व की छाप है, और सब
वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन
से सम्भालता है: वह पापों को धोकर
ऊँचे स्थानों पर महामहिमन् के दाहिने
जा बैठा।

4 और *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰*[*], जितना
उसने उनसे बड़े पद का वारिस होकर
उत्तम नाम पाया।

⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰

5 क्योंकि स्वर्गदूतों में से उसने कब
किसी से कहा,

"तू मेरा पुत्र है;
आज मैं ही ने तुझे जन्माया है?"
और फिर यह,
"मैं उसका पिता होऊँगा,
और वह मेरा पुत्र होगा?" ***(2 ⍰⍰⍰. 7:14, 1 ⍰⍰⍰. 17:13, ⍰⍰. 2:7)***

6 और जब पहलौठे को जगत में
फिर लाता है, तो कहता है, "परमेश्वर
के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत् करें।"
(⍰⍰⍰⍰. 32:43, 1 ⍰⍰. 3:22)
7 और स्वर्गदूतों के विषय में यह
कहता है,

"वह अपने दूतों को पवन,
और अपने सेवकों को धधकती आग बनाता है।" ***(⍰⍰. 104:4)***

8 परन्तु पुत्र के विषय में कहता है,

"हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा,
तेरे राज्य का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है।
9 तूने धार्मिकता से प्रेम और अधर्म से बैर रखा;
इस कारण परमेश्वर, तेरे परमेश्वर, ने
तेरे साथियों से बढ़कर हर्षरूपी तेल से तेरा अभिषेक किया।" ***(⍰⍰. 45:7)***
10 और यह कि, "हे प्रभु, आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली,
और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है। ***(⍰⍰. 102:25, ⍰⍰⍰⍰. 1:1)***
11 *⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰*[†]; परन्तु तू बना रहेगा और
वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएँगे।
12 और तू उन्हें चादर के समान लपेटेगा,
और वे वस्त्र के समान बदल जाएँगे:
पर तू वही है
और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।" ***(⍰⍰⍰⍰⍰. 13:8, ⍰⍰. 102:25,26)***
13 और स्वर्गदूतों में से उसने किस से कब कहा,
"तू मेरे दाहिने बैठ,
जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों के नीचे की चौकी न कर दूँ?" ***(⍰⍰⍰⍰⍰ 22:44, ⍰⍰. 110:1)***

14 क्या वे सब परमेश्वर की सेवा टहल
करनेवाली आत्माएँ नहीं; जो उद्धार
पानेवालों के लिये सेवा करने को भेजी
जाती हैं? ***(⍰⍰. 103:20,21)***

2

⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰

1 इस कारण चाहिए, कि हम उन
बातों पर जो हमने सुनी हैं अधिक
ध्यान दें, ऐसा न हो कि बहक कर उनसे
दूर चले जाएँ।
2 क्योंकि जो वचन स्वर्गदूतों के
द्वारा कहा गया था, जब वह स्थिर रहा
और हर एक अपराध और आज्ञा न
मानने का ठीक-ठीक बदला मिला।

---

[*] **1:4** *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰:* स्वर्गदूतों और अधिकारियों और शक्तियों को उनके वश में कर दिया गया और उसके ऊपर बहुत ऊँचा किया गया। [†] **1:11** *⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰:* अर्थात्, आकाश और पृथ्वी। वे समाप्त हो जाएँगे; या वे नष्ट किया जाएगा। [*] **2:3** *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰:* दण्ड से बचे रहने का कौन सा रास्ता हैं, यदि हमें इस महान उद्धार से उपेक्षित होकर पीड़ित होना पड़े, और उसके उद्धार देने के प्रस्ताव को न लें।

3 तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से उपेक्षा करके *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]**? जिसकी चर्चा पहले-पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ।

4 और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, और अद्भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ्य के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बाँटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।

5 उसने उस आनेवाले जगत को जिसकी चर्चा हम कर रहे हैं, स्वर्गदूतों के अधीन न किया।

6 वरन् किसी ने कहीं, यह गवाही दी है,

“मनुष्य क्या है, कि तू उसकी सुधि लेता है?

या मनुष्य का पुत्र क्या है, कि तू उस पर दृष्टि करता है?

7 *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*†;

तूने उस पर महिमा और आदर का मुकुट रखा और उसे अपने हाथों के कामों पर अधिकार दिया।

8 तूने सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया।”

इसलिए जबकि उसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, तो उसने कुछ भी रख न छोड़ा, जो उसके अधीन न हो। पर हम अब तक सब कुछ उसके अधीन नहीं देखते। ***([illegible]. 8:6, 1 [illegible]. 15:27)***

9 पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुःख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहने हुए देखते हैं; ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से वह हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे।

10 क्योंकि जिसके लिये सब कुछ है, और जिसके द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुँचाए, तो उनके उद्धार के कर्ता को दुःख उठाने के द्वारा सिद्ध करे।

11 क्योंकि पवित्र करनेवाला और जो पवित्र किए जाते हैं, सब एक ही मूल से हैं, अर्थात् परमेश्वर, इसी कारण वह उन्हें भाई कहने से नहीं लजाता।

12 पर वह कहता है,

“मैं तेरा नाम अपने भाइयों को सुनाऊँगा,

सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊँगा।” ***([illegible]. 22:22)***

13 और फिर यह,

“मैं उस पर भरोसा रखूँगा।” और फिर यह,

“देख, मैं उन बच्चों सहित जो परमेश्वर ने मुझे दिए।” ***([illegible]. 8:17-18, [illegible]. 12:2)***

14 इसलिए जबकि बच्चे माँस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया; ताकि *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*‡, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे, ***([illegible]. 8:3, [illegible]. 2:15)***

15 और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फँसे थे, उन्हें छुड़ा ले।

16 क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं वरन् अब्राहम के वंश को सम्भालता है। ***([illegible]. 3:29, [illegible]. 41:8-10)***

---

† **2:7** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* अर्थात् परमेश्वर ने मनुष्य को स्वर्गदूतों से कुछ ही कम बनाया, परन्तु फिर भी परमेश्वर ने उन्हें उनके बराबर का स्थान दिया है। ‡ **2:14** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* शैतान इस संसार में मृत्यु का कारण था। मृत्यु का प्रारम्भ शैतान के कारण हुआ।

17 इस कारण उसको चाहिए था,
कि सब बातों में अपने भाइयों के
समान बने; जिससे वह उन बातों में
जो परमेश्वर से सम्बंध रखती हैं, एक
दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक
बने ताकि लोगों के पापों के लिये
प्रायश्चित करे।
18 क्योंकि जब उसने परीक्षा की
दशा में दुःख उठाया, तो वह उनकी
भी सहायता कर सकता है, जिनकी
परीक्षा होती है।

3

[illegible]

1 इसलिए, हे पवित्र भाइयों, तुम
जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस
प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे
हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो।
2 जो अपने नियुक्त करनेवाले के
लिये विश्वासयोग्य था, जैसा मूसा भी
परमेश्वर के सारे घर में था।
3 क्योंकि यीशु मूसा से इतना
बढ़कर महिमा के योग्य समझा गया
है, जितना कि घर का बनानेवाला घर
से बढ़कर आदर रखता है।
4 क्योंकि हर एक घर का कोई न कोई
बनानेवाला होता है, *[illegible]*
*[illegible]** ।
5 मूसा तो परमेश्वर के सारे घर में
सेवक के समान विश्वासयोग्य रहा,
कि जिन बातों का वर्णन होनेवाला था,
उनकी गवाही दे। ***([illegible]. 12:7)***
6 *[illegible]*
[illegible]
[illegible]†, और उसका घर हम हैं, यदि हम
साहस पर, और अपनी आशा के गर्व
पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।

[illegible]

7 इसलिए जैसा पवित्र आत्मा
कहता है,
"यदि आज तुम उसका शब्द सुनो,
8 तो अपने मन को कठोर न करो,
जैसा कि क्रोध दिलाने के समय और
परीक्षा के दिन जंगल में किया था।
([illegible]. 17:7, [illegible]. 20:2,5,13)
9 जहाँ तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे जाँचकर
परखा
और चालीस वर्ष तक मेरे काम देखे।
10 इस कारण मैं उस समय के लोगों से
क्रोधित रहा,
और कहा, 'इनके मन सदा भटकते
रहते हैं,
और इन्होंने मेरे मार्गों को नहीं
पहचाना।'
11 तब मैंने क्रोध में आकर शपथ खाई,
'वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न
पाएँगे।' " ***([illegible]. 14:21-23, [illegible]. 1:34,35)***
12 हे भाइयों, चौकस रहो, कि तुम
में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न
हो, जो जीवित परमेश्वर से दूर हटा
ले जाए।
13 वरन् जिस दिन तक आज का दिन
कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को
समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से
कोई जन पाप के छल में आकर कठोर
हो जाए।
14 क्योंकि हम *[illegible]*
[illegible]‡, यदि हम

---

* **3:4** *[illegible]*: यह स्पष्ट हैं कि हर घर को बनानेवाला कोई न कोई होता हैं, और समान रूप से स्पष्ट है कि परमेश्वर सब कुछ को बनानेवाला हैं। † **3:6** *[illegible]*: परमेश्वर का पूरा घराना या परिवार के लिए वह एक ही सम्बंध बनाता हैं जो एक परिवार में एक पुत्र और उत्तराधिकारी, घर के लिए करता है। ‡ **3:14** *[illegible]*: हम आत्मिक रूप से उद्धारकर्ता से मिले हुए हैं। हम उसके साथ एक हो जाते हैं। हम उसकी आत्मा और उसके अंश का भाग ले लेते हैं।

अपने प्रथम भरोसे पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।

15 जैसा कहा जाता है,

“यदि आज तुम उसका शब्द सुनो,
तो अपने मनों को कठोर न करो, जैसा कि क्रोध दिलाने के समय किया था।”

16 भला किन लोगों ने सुनकर भी क्रोध दिलाया? क्या उन सब ने नहीं जो मूसा के द्वारा मिस्र से निकले थे?

17 और वह चालीस वर्ष तक किन लोगों से क्रोधित रहा? क्या उन्हीं से नहीं, जिन्होंने पाप किया, और उनके शव जंगल में पड़े रहे? ***(⍰⍰⍰. 14:29)***

18 और उसने किन से शपथ खाई, कि तुम मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाओगे: केवल उनसे जिन्होंने आज्ञा न मानी? ***(⍰⍰. 106:24-26)***

19 इस प्रकार हम देखते हैं, कि वे अविश्वास के कारण प्रवेश न कर सके।

4

⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰

1 इसलिए जबकि *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰** अब तक है, तो हमें डरना चाहिए; ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन उससे वंचित रह जाए।

2 क्योंकि हमें उन्हीं के समान सुसमाचार सुनाया गया है, पर सुने हुए वचन से उन्हें कुछ लाभ न हुआ; क्योंकि सुननेवालों के मन में विश्वास के साथ नहीं बैठा।

3 और हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस विश्राम में प्रवेश करते हैं; जैसा उसने कहा,

“मैंने अपने क्रोध में शपथ खाई,
कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएँगे।”

यद्यपि जगत की उत्पत्ति के समय से उसके काम हो चुके थे।

4 क्योंकि सातवें दिन के विषय में उसने कहीं ऐसा कहा है,

“परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कामों को निपटा करके विश्राम किया।”

5 और इस जगह फिर यह कहता है,

“वे मेरे विश्राम में प्रवेश न करने पाएँगे।”

6 तो जब यह बात बाकी है कि कितने और हैं जो उस विश्राम में प्रवेश करें, और इस्राएलियों को, जिन्हें उसका सुसमाचार पहले सुनाया गया, उन्होंने आज्ञा न मानने के कारण उसमें प्रवेश न किया।

7 तो फिर वह किसी विशेष दिन को ठहराकर इतने दिन के बाद दाऊद की पुस्तक में उसे ‘आज का दिन’ कहता है, जैसे पहले कहा गया,

“यदि आज तुम उसका शब्द सुनो,
तो अपने मनों को कठोर न करो।”
(⍰⍰. 95:7-8)

8 और यदि यहोशू उन्हें विश्राम में प्रवेश करा लेता, तो उसके बाद दूसरे दिन की चर्चा न होती। ***(⍰⍰⍰⍰. 31:7, ⍰⍰⍰. 22:4)***

9 इसलिए जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिये सब्त का विश्राम बाकी है।

10 क्योंकि जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उसने भी परमेश्वर के समान अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया है। ***(⍰⍰⍰⍰⍰. 14:13, ⍰⍰⍰⍰. 2:2)***

11 इसलिए हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें, ऐसा न हो, कि कोई जन उनके समान आज्ञा न मानकर गिर पड़े। ***(⍰⍰⍰⍰⍰. 4:1, 2 ⍰⍰. 1:10,11)***

---

* **4:1** *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰:* परमेश्वर का विश्राम, संसार का विश्राम जहाँ वह निवास करता हैं। इसे “उसका” विश्राम कहा जाता हैं, क्योंकि यह वही है जो वह आनन्द लेता है।

12 क्योंकि *[illegible]*[†]
जीवित, प्रबल, और हर एक दोधारी
तलवार से भी बहुत तेज है, प्राण,
आत्मा को, गाँठ-गाँठ, और गूदे-गूदे
को अलग करके, आर-पार छेदता है;
और मन की भावनाओं और विचारों
को जाँचता है। ***([illegible]. 23:29,
[illegible]. 55:11)***
13 और सृष्टि की कोई वस्तु
परमेश्वर से छिपी नहीं है वरन् जिसे
हमें लेखा देना है, उसकी आँखों के
सामने सब वस्तुएँ खुली और प्रगट हैं।

[illegible]

14 इसलिए, जब हमारा ऐसा बड़ा
महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया
है, अर्थात् परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो
आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता
से थामे रहें।
15 *[illegible]*[‡]; वरन् वह सब
बातों में हमारे समान परखा तो गया,
तो भी निष्पाप निकला।
16 इसलिए आओ, हम अनुग्रह के
सिंहासन के निकट साहस बाँधकर
चलें, कि हम पर दया हो, और वह
अनुग्रह पाएँ, जो आवश्यकता के
समय हमारी सहायता करे।

5

[illegible]

1 क्योंकि हर एक महायाजक
मनुष्यों में से लिया जाता है, और
मनुष्यों ही के लिये उन बातों के विषय
में जो परमेश्वर से सम्बंध रखती
हैं, ठहराया जाता है: कि भेंट और
पापबलि चढ़ाया करे।
2 और वह अज्ञानियों, और भूले
भटकों के साथ नर्मी से व्यवहार कर
सकता है इसलिए कि वह आप भी
निर्बलता से घिरा है।
3 और इसलिए उसे चाहिए, कि
जैसे लोगों के लिये, वैसे ही अपने लिये
भी पापबलि चढ़ाया करे। ***([illegible].
16:6)***
4 और यह आदर का पद कोई अपने
आप से नहीं लेता, जब तक कि हारून
के समान परमेश्वर की ओर से ठहराया
न जाए। ***([illegible]. 28:1)***

[illegible]

5 वैसे ही मसीह ने भी महायाजक
बनने की महिमा अपने आप से नहीं
ली, पर उसको उसी ने दी, जिसने उससे
कहा था,

"तू मेरा पुत्र है,

आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।" ***([illegible].
2:7)***

6 इसी प्रकार वह दूसरी जगह में भी
कहता है,

"तू मलिकिसिदक की रीति पर

सदा के लिये याजक है।"

7 यीशु ने अपनी देह में रहने के दिनों
में ऊँचे शब्द से पुकार पुकारकर, और
आँसू बहा-बहाकर उससे जो उसको
मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएँ और
विनती की और भक्ति के कारण उसकी
सुनी गई।
8 और पुत्र होने पर भी, उसने दुःख
उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी।
9 और सिद्ध बनकर, अपने सब
आज्ञा माननेवालों के लिये सदाकाल

[†] **4:12** *[illegible]*: परमेश्वर के वचन की खोज, मर्मज्ञ से बचकर कोई भाग नहीं रह सकता है। उस सत्य में यह दिखाने की शक्ति है कि मनुष्य क्या है। [‡] **4:15** *[illegible]*: हमारे पास वह एक हैं जो हमारे कष्टों में सहानुभूति रखने के लिये बहुत ही योग्य हैं, इसलिए हम परीक्षाओं में सहायता और आश्रय के लिये देख सकते हैं।

के उद्धार का कारण हो गया। *([illegible]. 45:17)*

10 और उसे परमेश्वर की ओर से मलिकिसिदक की रीति पर महायाजक का पद मिला। *([illegible]. 2:10, [illegible]. 110:4)*

[illegible]

11 इसके विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, जिनका समझाना भी कठिन है; इसलिए कि तुम ऊँचा सुनने लगे हो।

12 समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तो भी यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? तुम तो ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए।

13 क्योंकि *[illegible]** को तो धार्मिकता के वचन की पहचान नहीं होती, क्योंकि वह बच्चा है।

14 पर अन्न सयानों के लिये है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ अभ्यास करते-करते, भले बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं।

6

[illegible]

1 इसलिए आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर, हम सिद्धता की ओर बढ़ते जाएँ, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने,

2 और बपतिस्मा और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अनन्त न्याय की शिक्षारूपी नींव, फिर से न डालें।

3 और यदि परमेश्वर चाहे, तो हम यही करेंगे।

4 क्योंकि जिन्होंने एक बार ज्योति पाई है, और जो स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं,

5 और *[illegible]** ।

6 यदि वे भटक जाएँ; तो उन्हें मन फिराव के लिये फिर नया बनाना अनहोना है; क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रगट में उस पर कलंक लगाते हैं।

7 क्योंकि जो भूमि वर्षा के पानी को जो उस पर बार बार पड़ता है, पी पीकर जिन लोगों के लिये वह जोती-बोई जाती है, उनके काम का साग-पात उपजाती है, वह परमेश्वर से आशीष पाती है।

8 पर यदि वह झाड़ी और ऊँटकटारे उगाती है, तो निकम्मी और श्रापित होने पर है, और उसका अन्त जलाया जाना है। *([illegible]. 15:6)*

9 पर हे प्रियों यद्यपि हम ये बातें कहते हैं तो भी तुम्हारे विषय में हम इससे अच्छी और उद्धारवाली बातों का भरोसा करते हैं।

10 क्योंकि परमेश्वर अन्यायी नहीं, कि तुम्हारे काम, और उस प्रेम को भूल जाए, जो तुम ने उसके नाम के लिये इस रीति से दिखाया, कि पवित्र लोगों की सेवा की, और कर भी रहे हो।

11 पर हम बहुत चाहते हैं, कि तुम में से हर एक जन अन्त तक पूरी आशा के लिये ऐसा ही प्रयत्न करता रहे।

12 ताकि तुम आलसी न हो

---

* **5:13** *[illegible]:* बच्चों के भोजन का ज़िक्र करते है जिसका अर्थ है कि वे अन्न को बड़े लोगों की तरह ठोस भोजन ग्रहण करने में सक्षम नहीं हैं। * **6:5** *[illegible] .... [illegible]:* यहाँ पर अर्थ हैं कि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई का महामहिम अनुभव किया था; उन्होंने देखा और उसकी अच्छाई का आनन्द लिया था।

जाओ; वरन् उनका अनुकरण करो, जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं।

[illegible] [illegible]

13 और *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*[†] जबकि शपथ खाने के लिये किसी को अपने से बड़ा न पाया, तो अपनी ही शपथ खाकर कहा,

14 "मैं सचमुच तुझे बहुत आशीष दूँगा, और तेरी सन्तान को बढ़ाता जाऊँगा।" ***([illegible]. 22:17)***

15 और इस रीति से उसने धीरज धरकर प्रतिज्ञा की हुई बात प्राप्त की।

16 मनुष्य तो अपने से किसी बड़े की शपथ खाया करते हैं और उनके हर एक विवाद का फैसला शपथ से पक्का होता है। ***([illegible]. 22:11)***

17 इसलिए जब परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों पर और भी साफ रीति से प्रगट करना चाहा, कि उसकी मनसा बदल नहीं सकती तो शपथ को बीच में लाया।

18 ताकि दो बे-बदल बातों के द्वारा जिनके विषय में परमेश्वर का झूठा ठहरना अनहोना है, हमारा दृढ़ता से ढाढ़स बन्ध जाए, जो शरण लेने को इसलिए दौड़े हैं, कि उस आशा को जो सामने रखी हुई है प्राप्त करें। ***([illegible]. 23:19, 1 [illegible]. 15:29)***

19 *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*[‡], और परदे के भीतर तक पहुँचता है। ***([illegible]. 23:19, 1 [illegible]. 2:13)***

20 जहाँ यीशु ने मलिकिसिदक की रीति पर सदाकाल का महायाजक बनकर, हमारे लिये अगुआ के रूप में प्रवेश किया है।

7

[illegible] [illegible]

1 यह *[illegible]*[*] शालेम का राजा, *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*[†], जब अब्राहम राजाओं को मारकर लौटा जाता था, तो इसी ने उससे भेंट करके उसे आशीष दी,

2 इसी को अब्राहम ने सब वस्तुओं का दसवाँ अंश भी दिया। यह पहले अपने नाम के अर्थ के अनुसार, धार्मिकता का राजा और फिर शालेम अर्थात् शान्ति का राजा है।

3 जिसका न पिता, न माता, न वंशावली है, जिसके न दिनों का आदि है और न जीवन का अन्त है; परन्तु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहरकर वह सदा के लिए याजक बना रहता है।

4 अब इस पर ध्यान करो कि *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*[‡] जिसको कुलपति अब्राहम ने अच्छे से अच्छे माल की लूट का दसवाँ अंश दिया।

5 लेवी की सन्तान में से जो याजक का पद पाते हैं, उन्हें आज्ञा मिली है, कि लोगों, अर्थात् अपने भाइयों से, चाहे वे अब्राहम ही की देह से क्यों न जन्मे हों, व्यवस्था के अनुसार दसवाँ अंश लें। ***([illegible]. 18:21)***

6 पर इसने, जो उनकी वंशावली में का भी न था अब्राहम से दसवाँ अंश

---

† **6:13** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* कि वह उसे आशीष देगा, और उसके वंश को आकाश के तारे के रूप में बढ़ाएगा। (उत्प 22: 16-17) ‡ **6:19** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* जो काम लंगर जहाज के लिये करता है वही काम आशा आत्मा के लिये पूरा करती हैं। यह इसे स्थिर और सुरक्षित बनाता है। * **7:1** *[illegible]:* इस नाम का अर्थ "धर्म का राजा" है - यह दो शब्दों से मिलकर, "राजा और धर्मी" से बना हैं। † **7:1** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]* सर्वदा याजक बना रहता है ‡ **7:4** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* प्रेरित का मलिकिसिदक की प्रतिष्ठा और गरिमा की बढ़ाई करने का लक्ष्य था।

लिया और जिसे प्रतिज्ञाएँ मिली थीं
उसे आशीष दी।
7 और उसमें संदेह नहीं, कि छोटा
बड़े से आशीष पाता है।
8 और यहाँ तो मरनहार मनुष्य
दसवाँ अंश लेते हैं पर वहाँ वही लेता
है, जिसकी गवाही दी जाती है, कि वह
जीवित है।
9 तो हम यह भी कह सकते हैं, कि
लेवी ने भी, जो दसवाँ अंश लेता है,
अब्राहम के द्वारा दसवाँ अंश दिया।
10 क्योंकि जिस समय
मलिकिसिदक ने उसके पिता से भेंट
की, उस समय यह अपने पिता की देह
में था। ***([illegible]. 14:18-20)***

[illegible]

11 तब यदि लेवीय याजकपद के
द्वारा सिद्धि हो सकती है (जिसके सहारे
से लोगों को व्यवस्था मिली थी) तो
फिर क्या आवश्यकता थी, कि दूसरा
याजक मलिकिसिदक की रीति पर
खड़ा हो, और हारून की रीति का न
कहलाए?
12 क्योंकि जब याजक का पद बदला
जाता है तो व्यवस्था का भी बदलना
अवश्य है।
13 क्योंकि जिसके विषय में ये बातें
कही जाती हैं, वह दूसरे गोत्र का है,
जिसमें से किसी ने वेदी की सेवा नहीं
की।
14 तो प्रगट है, कि हमारा प्रभु यहूदा
के गोत्र में से उदय हुआ है और इस
गोत्र के विषय में मूसा ने याजकपद की
कुछ चर्चा नहीं की। ***([illegible]. 49:10,
[illegible]. 11:1)***
15 हमारा दावा और भी स्पष्टता से
प्रकट हो जाता है, जब मलिकिसिदक
के समान एक और ऐसा याजक उत्पन्न
होनेवाला था।
16 जो शारीरिक आज्ञा की व्यवस्था
के अनुसार नहीं, पर अविनाशी जीवन
की सामर्थ्य के अनुसार नियुक्त हो।
17 क्योंकि उसके विषय में यह
गवाही दी गई है,
"तू मलिकिसिदक की रीति पर
युगानुयुग याजक है।"
18 इस प्रकार, पहली आज्ञा निर्बल;
और निष्फल होने के कारण लोप हो
गई।
19 (इसलिए कि *[illegible]*§) और उसके स्थान पर एक ऐसी
उत्तम आशा रखी गई है जिसके द्वारा
हम परमेश्वर के समीप जा सकते हैं।

[illegible]

20 और इसलिए मसीह की नियुक्ति
बिना शपथ नहीं हुई।
21 क्योंकि वे तो बिना शपथ याजक
ठहराए गए पर यह शपथ के साथ
उसकी ओर से नियुक्त किया गया
जिसने उसके विषय में कहा,
"प्रभु ने शपथ खाई, और वह उससे
फिर न पछताएगा,
कि तू युगानुयुग याजक है।"
22 इस कारण यीशु एक उत्तम वाचा का
जामिन ठहरा।
23 वे तो बहुत से याजक बनते आए,
इसका कारण यह था कि मृत्यु उन्हें
रहने नहीं देती थी।
24 पर यह युगानुयुग रहता है; इस
कारण उसका याजकपद अटल है।
25 इसलिए जो उसके द्वारा
परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका
पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि
वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा
जीवित है। ***(1 [illegible]. 2:1,2, 1
[illegible]. 2:5)***

§ **7:19** *[illegible]:* यह किसी बात को सिद्ध प्रस्तुत नहीं करती हैं, यह वह नहीं करती है जो पापियों के लिये करना वांछनीय था।

26 क्योंकि ऐसा ही महायाजक
हमारे योग्य था, जो पवित्र, और
निष्कपट और निर्मल, और पापियों से
अलग, और स्वर्ग से भी ऊँचा किया
हुआ हो।
27 और उन महायाजकों के समान
उसे आवश्यक नहीं कि प्रतिदिन पहले
अपने पापों और फिर लोगों के पापों
के लिये बलिदान चढ़ाए; क्योंकि उसने
अपने आपको बलिदान चढ़ाकर उसे
एक ही बार निपटा दिया। ***([illegible]. 16:6, [illegible]. 10:10-14)***
28 क्योंकि व्यवस्था तो निर्बल
मनुष्यों को महायाजक नियुक्त करती
है; परन्तु उस शपथ का वचन जो
व्यवस्था के बाद खाई गई, उस पुत्र
को नियुक्त करता है जो युगानुयुग के
लिये सिद्ध किया गया है।

8

[illegible]

1 अब जो बातें हम कह रहे हैं, उनमें
से सबसे बड़ी बात यह है, कि हमारा
ऐसा महायाजक है, *[illegible]**। ***([illegible]. 110:1, [illegible]. 10:12)***
2 और पवित्रस्थान और उस सच्चे
तम्बू का सेवक हुआ, जिसे किसी
मनुष्य ने नहीं, वरन् प्रभु ने खड़ा किया
था।
3 क्योंकि हर एक महायाजक भेंट,
और बलिदान चढ़ाने के लिये ठहराया
जाता है, इस कारण अवश्य है, कि
इसके पास भी कुछ चढ़ाने के लिये हो।
4 और यदि मसीह पृथ्वी पर होता
तो कभी याजक न होता, इसलिए कि
पृथ्वी पर व्यवस्था के अनुसार भेंट
चढ़ानेवाले तो हैं।
5 जो *[illegible]*† की सेवा करते हैं,
जैसे जब मूसा तम्बू बनाने पर था,
तो उसे यह चेतावनी मिली, "देख जो
नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया
था, उसके अनुसार सब कुछ बनाना।"
([illegible]. 25:40)
6 पर उन याजकों से बढ़कर सेवा
यीशु को मिली, क्योंकि वह और भी
उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो
और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बाँधी
गई है।

[illegible]

7 क्योंकि यदि वह पहली वाचा
निर्दोष होती, तो दूसरी के लिये अवसर
न ढूँढ़ा जाता।
8 पर परमेश्वर लोगों पर दोष
लगाकर कहता है,
"प्रभु कहता है, देखो वे दिन आते हैं,
कि मैं इस्राएल के घराने के साथ, और
यहूदा के घराने के साथ, नई
वाचा बाँधूँगा
9 यह उस वाचा के समान न होगी, जो
मैंने उनके पूर्वजों के साथ उस
समय बाँधी थी,
जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र
देश से निकाल लाया,
क्योंकि वे मेरी वाचा पर स्थिर न रहे,
और मैंने उनकी सुधि न ली; प्रभु यही
कहता है।
10 फिर प्रभु कहता है,
कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद
इस्राएल के घराने के साथ
बाँधूँगा, वह यह है,

* **8:1** *[illegible]:* दाहिना हाथ प्रमुख सम्मान की स्थान के रूप में माना जाता था, और जब यह कहा जाता हैं कि मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ में है, जिसका अर्थ है वह ब्रह्मांड में सर्वोच्च सम्मान से ऊँचा किया गया। † **8:5** *[illegible]:* अर्थात्, तम्बू में जहाँ उन्होंने सेवा की वहाँ वास्तविक और तात्त्विक वस्तुओं की छाया मात्र थी।

कि मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों
में डालूँगा,
और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा,
और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा,
और वे मेरे लोग ठहरेंगे।
11 और हर एक अपने देशवाले को
और अपने भाई को यह शिक्षा न देगा,
कि तू प्रभु को पहचान
क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान
लेंगे।
12 क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में
दयावन्त होऊँगा,
और उनके पापों को फिर स्मरण न
करूँगा।”
13 नई वाचा की स्थापना से उसने
प्रथम वाचा को पुराना ठहराया, और
जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती
है उसका मिट जाना अनिवार्य है।
(▯▯▯▯▯. 31:31-34)

9

▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯

1 उस पहली *▯▯▯▯** में भी सेवा के
नियम थे; और ऐसा पवित्रस्थान था
जो इस जगत का था।
2 अर्थात् एक तम्बू बनाया गया,
पहले तम्बू में दीवट, और मेज,
और भेंट की रोटियाँ थीं; और वह
पवित्रस्थान कहलाता है। ***(▯▯▯▯▯.
25:23-30, ▯▯▯▯▯. 26:1-30)***
3 और दूसरे परदे के पीछे वह तम्बू
था, जो परमपवित्र स्थान कहलाता है।
(▯▯▯▯▯. 26:31-33)
4 उसमें सोने की धूपदानी, और
चारों ओर सोने से मढ़ा हुआ वाचा का
सन्दूक और इसमें मन्ना से भरा हुआ
सोने का मर्तबान और हारून की छड़ी
जिसमें फूल फल आ गए थे और वाचा
की पटियाँ थीं। ***(▯▯▯▯▯. 16:33,
▯▯▯▯▯. 25:10-16, ▯▯▯▯▯.
30:1-6, ▯▯▯. 17:8-10, ▯▯▯▯.
10:3,5)***
5 उसके ऊपर दोनों *▯▯▯▯▯▯
▯▯▯▯*† थे, जो प्रायश्चित के ढक्कन
पर छाया किए हुए थे: इन्हीं का एक-
एक करके वर्णन करने का अभी अवसर
नहीं है। ***(▯▯▯▯▯. 25:18-22)***

*▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯
▯▯▯▯▯▯▯*

6 ये वस्तुएँ इस रीति से तैयार हो
चुकीं, उस पहले तम्बू में तो याजक हर
समय प्रवेश करके सेवा के काम सम्पन्न
करते हैं, ***(▯▯▯▯. 27:21)***
7 पर दूसरे में केवल महायाजक वर्ष
भर में एक ही बार जाता है; और
बिना लहू लिये नहीं जाता; जिसे वह
अपने लिये और लोगों की भूल चूक के
लिये चढ़ाता है। ***(▯▯▯▯▯. 30:10,
▯▯▯▯▯. 16:2)***
8 इससे पवित्र आत्मा यही दिखाता
है, कि जब तक पहला तम्बू खड़ा है,
तब तक पवित्रस्थान का मार्ग प्रगट
नहीं हुआ।
9 और यह तम्बू तो वर्तमान समय के
लिये एक दृष्टान्त है; जिसमें ऐसी भेंट
और बलिदान चढ़ाए जाते हैं, जिनसे
आराधना करनेवालों के विवेक सिद्ध
नहीं हो सकते।
10 इसलिए कि वे केवल खाने-पीने
की वस्तुओं, और भाँति-भाँति के स्नान
विधि के आधार पर शारीरिक नियम
हैं, जो सुधार के समय तक के लिये
नियुक्त किए गए हैं।

▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯

11 परन्तु जब मसीह आनेवाली
अच्छी-अच्छी वस्तुओं का
महायाजक होकर आया, तो उसने और

---

* **9:1** *▯▯▯▯:* प्रेरित 7:8 की टिप्पणी देखें। † **9:5** *▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯:* सन्दूक पर दो करूब थे, इस तरह से पलक पर रखा गया था कि उनके चेहरे एक दूसरे की ओर अंदरूनी दिखती थी, तेजोमय यहाँ पर “करूब” के लिये इस्तेमाल किया गया हैं, छवि का वैभव या भव्यता को दर्शाता हैं।

भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर जो
हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात्
सृष्टि का नहीं।
12 और बकरों और बछड़ों के लहू
के द्वारा नहीं, पर अपने ही लहू के
द्वारा एक ही बार पवित्रस्थान में प्रवेश
किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त
किया।
13 क्योंकि जब बकरों और बैलों का
लहू और बछिया की राख अपवित्र
लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की
शुद्धता के लिये पवित्र करती है।
(?????. 16:14-16, ?????. 16:3, ???. 19:9,17-19)
14 तो मसीह का लहू जिसने अपने
आपको सनातन आत्मा के द्वारा
परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया,
तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से
क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवित
परमेश्वर की सेवा करो।
15 और इसी कारण वह नई वाचा
का *????????*‡ है, ताकि उस मृत्यु
के द्वारा जो पहली वाचा के समय के
अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई
है, बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार
अनन्त विरासत को प्राप्त करें।
16 क्योंकि जहाँ वाचा बाँधी गई है
वहाँ वाचा बाँधनेवाले की मृत्यु का
समझ लेना भी अवश्य है।
17 क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर
पक्की होती है, और जब तक वाचा
बाँधनेवाला जीवित रहता है, तब तक
वाचा काम की नहीं होती।
18 इसलिए पहली वाचा भी बिना
लहू के नहीं बाँधी गई।
19 क्योंकि जब मूसा सब लोगों को
व्यवस्था की हर एक आज्ञा सुना चुका,
तो उसने बछड़ों और बकरों का लहू
लेकर, पानी और लाल ऊन, और जूफा
के साथ, उस पुस्तक पर और सब लोगों
पर छिड़क दिया। ***(?????. 14:4 ???. 19:6)***
20 और कहा, "यह उस वाचा का लहू
है, जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हारे
लिये दी है।" ***(?????. 24:8)***
21 और इसी रीति से उसने तम्बू
और सेवा के सारे सामान पर लहू
छिड़का। ***(?????. 8:15, ?????. 8:19)***
22 और व्यवस्था के अनुसार प्रायः
सब वस्तुएँ लहू के द्वारा शुद्ध की जाती
हैं; और बिना लहू बहाए क्षमा नहीं
होती। ***(?????. 17:11)***

???? ?? ??????? ??????? ???—??????

23 इसलिए अवश्य है, कि स्वर्ग में
की वस्तुओं के प्रतिरूप इन बलिदानों
के द्वारा शुद्ध किए जाएँ; पर स्वर्ग में
की वस्तुएँ आप इनसे उत्तम बलिदानों
के द्वारा शुद्ध की जातीं।
24 क्योंकि मसीह ने उस हाथ
के बनाए हुए पवित्रस्थान में जो
सच्चे पवित्रस्थान का नमूना है, प्रवेश
नहीं किया, पर स्वर्ग ही में प्रवेश
किया, *???? ?????? ???? ?? ????????? ?? ?????? ?????? ??*§।
25 यह नहीं कि वह अपने
आपको बार बार चढ़ाए, जैसा कि
महायाजक प्रतिवर्ष दूसरे का लहू लिये
पवित्रस्थान में प्रवेश किया करता है।
26 नहीं तो जगत की उत्पत्ति से
लेकर उसको बार बार दुःख उठाना
पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह
एक बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही
बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे।

‡ **9:15** *????????:* 1 तीमुथियुस 2:5 की टिप्पणी देखें § **9:24** *???? ?????? ???? ?? ????????? ?? ?????? ?????? ??:* मसीह स्वर्ग में हमारी ओर से स्वयं परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित होता है।

27 और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है। ***(2 □□□□. 5:10, □□□. 12:14)***

28 वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उसकी प्रतीक्षा करते हैं, उनके उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा। ***(1 □□. 2:24, □□□□. 2:13)***

10

□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□

1 क्योंकि *□□□□□□□□□*[*] जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रतिवर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आनेवालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती।

2 नहीं तो उनका चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिए कि जब सेवा करनेवाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उनका विवेक उन्हें पापी न ठहराता।

3 परन्तु उनके द्वारा प्रतिवर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है।

4 *□□□□□□□□ □□□□□□□ □□, □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□*[†]।

□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□

5 इसी कारण मसीह जगत में आते समय कहता है,

“बलिदान और भेंट तूने न चाही,
पर मेरे लिये एक देह तैयार की।
6 होमबलियों और पापबलियों से तू
प्रसन्न नहीं हुआ।
7 तब मैंने कहा, ‘देख, मैं आ गया हूँ,
(पवित्रशास्त्र में मेरे विषय में
लिखा हुआ है)
ताकि हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी
करूँ।’ ”

8 ऊपर तो वह कहता है, “न तूने बलिदान और भेंट और होमबलियों और पापबलियों को चाहा, और न उनसे प्रसन्न हुआ,” यद्यपि ये बलिदान तो व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं।

9 फिर यह भी कहता है, “देख, मैं आ गया हूँ, ताकि तेरी इच्छा पूरी करूँ,” अतः वह पहले को हटा देता है, ताकि दूसरे को स्थापित करे।

10 उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं। ***(□□□□□. 10:14)***

11 और हर एक याजक तो खड़े होकर प्रतिदिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते; बार बार चढ़ाता है। ***(□□□□□. 29:38,39)***

12 पर यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिये चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।

13 और उसी समय से इसकी प्रतीक्षा कर रहा है, कि उसके बैरी उसके पाँवों के नीचे की चौकी बनें। ***(□□. 110:1)***

14 क्योंकि उसने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिये सिद्ध कर दिया है।

15 और पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता है; क्योंकि उसने पहले कहा था

16 “प्रभु कहता है; कि जो वाचा मैं

---

[*] **10:1** *□□□□□□□□□:* मत्ती 5:17 की टिप्पणी देखें। [†] **10:4** *□□□□□□□□ □□□□□□□ □□, □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□:* यहाँ पर यह संदर्भ बलिदान के लिये हैं जो प्रायश्चित के महान दिन पर किए जाते थे, एक पशु का लहू बहाकर कभी आत्मा शुद्ध नहीं किया जा सकता है।

उन दिनों के बाद उनसे बाँधूँगा वह यह
है कि
मैं अपनी व्यवस्थाओं को उनके हृदय
पर लिखूँगा
और मैं उनके विवेक में डालूँगा।"
17 (फिर वह यह कहता है,) "मैं उनके
पापों को,
और उनके अधर्म के कामों को फिर
कभी स्मरण न करूँगा।"
([illegible]. 8:12, [illegible]. 31:34)

18 और जब इनकी क्षमा हो गई है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

19 इसलिए हे भाइयों, जबकि हमें यीशु के लहू के द्वारा उस नये और जीविते मार्ग से पवित्रस्थान में प्रवेश करने का साहस हो गया है,

20 जो उसने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिये अभिषेक किया है,

21 और इसलिए कि हमारा ऐसा महान याजक है, जो परमेश्वर के घर का अधिकारी है।

22 तो आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*‡। ***([illegible]. 5:26, 1 [illegible]. 3:21, [illegible]. 36:25)***

23 और अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें; क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह विश्वासयोग्य है।

24 और प्रेम, और भले कामों में उकसाने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें।

25 और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो।

26 क्योंकि सच्चाई की पहचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं।

27 हाँ, दण्ड की एक भयानक उम्मीद और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। ***([illegible]. 26:11)***

28 जबकि मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है। ***([illegible]. 17:6, [illegible]. 19:15)***

29 तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा, और वाचा के लहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना हैं, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया। ***([illegible]. 12:25)***

30 क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने कहा, "पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूँगा।" और फिर यह, कि "प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा।" ***([illegible]. 32:35,36, [illegible]. 135:14)***

31 जीविते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।

32 परन्तु उन पहले दिनों को स्मरण करो, जिनमें तुम ज्योति पाकर दुःखों के बड़े संघर्ष में स्थिर रहे।

33 कुछ तो यह, कि तुम निन्दा, और क्लेश सहते हुए तमाशा बने, और कुछ यह, कि तुम उनके सहभागी हुए जिनकी दुर्दशा की जाती थी।

‡ **10:22** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* अटूट विश्वास के साथ प्रार्थना और स्तुति में, परमेश्वर में विश्वास की परिपूर्णता के साथ, जो सन्देह के लिये कोई जगह नहीं छोड़ता।

34 क्योंकि तुम कैदियों के दुःख में भी दुःखी हुए, और अपनी सम्पत्ति भी आनन्द से लुटने दी; यह जानकर, कि तुम्हारे पास एक और भी उत्तम और सर्वदा ठहरनेवाली सम्पत्ति है।

35 इसलिए, अपना साहस न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है।

36 क्योंकि तुम्हें धीरज रखना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ।

37 “क्योंकि अब बहुत ही थोड़ा समय
रह गया है
जबकि आनेवाला आएगा, और देर न
करेगा।

38 और मेरा धर्मी जन विश्वास से
जीवित रहेगा,
और यदि वह पीछे हट जाए तो मेरा
मन उससे प्रसन्न न होगा।”
([illegible]. 2:4, [illegible]. 3:11)

39 पर हम हटनेवाले नहीं, कि नाश हो जाएँ पर विश्वास करनेवाले हैं, कि प्राणों को बचाएँ।

11

[illegible] [illegible] [illegible]

1 अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।

2 क्योंकि इसी के विषय में पूर्वजों की अच्छी गवाही दी गई।

3 विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो। ***([illegible]. 1:1, [illegible]. 1:3, [illegible]. 33:6-9)***

4 विश्वास ही से हाबिल ने कैन से उत्तम बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाया; और उसी के द्वारा उसके धर्मी होने की गवाही भी दी गई: क्योंकि परमेश्वर ने उसकी भेंटों के विषय में गवाही दी; और उसी के द्वारा वह मरने पर भी अब तक बातें करता है। ***([illegible]. 4:3-5)***

5 विश्वास ही से हनोक उठा लिया गया, कि मृत्यु को न देखे, और उसका पता नहीं मिला; क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था, और उसके उठाए जाने से पहले उसकी यह गवाही दी गई थी, कि उसने परमेश्वर को प्रसन्न किया है। ***([illegible]. 5:21-24)***

6 और *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]**, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।

7 विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चेतावनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिये जहाज बनाया, और उसके द्वारा उसने संसार को दोषी ठहराया; और उस धार्मिकता का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है। ***([illegible]. 6:13-22, [illegible]. 7:1)***

8 विश्वास ही से अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे विरासत में लेनेवाला था, और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूँ; तो भी निकल गया। ***([illegible]. 12:1)***

9 विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में जैसे पराए देश में परदेशी रहकर इसहाक और याकूब समेत जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस

* **11:6** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* वह मनुष्य के साथ प्रसन्न नहीं हो सकता जिसे उसमें भरोसा नहीं हैं, जो उसकी घोषणाओं और प्रतिज्ञाओं की सच्चाई पर सन्देह करता हैं।

थे, तम्बुओं में वास किया। ***(?????. 26:3, ?????. 35:12, ?????. 35:27)***
10 क्योंकि वह उस स्थिर नींव वाले नगर की प्रतीक्षा करता था, जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है।
11 विश्वास से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ्य पाई; क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करनेवाले को सच्चा जाना था। ***(?????. 17:19, ?????. 18:11-14, ?????. 21:2)***
12 इस कारण एक ही जन से जो मरा हुआ सा था, आकाश के तारों और समुद्र तट के रेत के समान, अनगिनत वंश उत्पन्न हुआ। ***(?????. 15:5, ?????. 2:12)***
13 ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ नहीं पाईं; पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया, कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं। ***(?????. 23:4, 1 ???. 29:15)***
14 जो ऐसी-ऐसी बातें कहते हैं, वे प्रगट करते हैं, कि स्वदेश की खोज में हैं।
15 और जिस देश से वे निकल आए थे, यदि उसकी सुधि करते तो उन्हें लौट जाने का अवसर था।
16 पर वे एक उत्तम अर्थात् स्वर्गीय देश के अभिलाषी हैं, इसलिए परमेश्वर उनका परमेश्वर कहलाने में नहीं लजाता, क्योंकि उसने उनके लिये एक नगर तैयार किया है। ***(??????. 3:6, ??????. 3:15)***
17 विश्वास ही से अब्राहम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना था। ***(?????. 22:1-10)***
18 और जिससे यह कहा गया था, “इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा,” वह अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। ***(?????. 21:12)***
19 क्योंकि उसने मान लिया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि उसे मरे हुओं में से जिलाए, इस प्रकार उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला।
20 विश्वास ही से इसहाक ने याकूब और एसाव को आनेवाली बातों के विषय में आशीष दी। ***(?????. 27:27-40)***
21 विश्वास ही से याकूब ने मरते समय यूसुफ के दोनों पुत्रों में से एक-एक को आशीष दी, और अपनी लाठी के सिरे पर सहारा लेकर दण्डवत् किया। ***(?????. 47:31, ?????. 48:15,16)***
22 विश्वास ही से यूसुफ ने, जब वह मरने पर था, तो इस्राएल की सन्तान के निकल जाने की चर्चा की, और अपनी हड्डियों के विषय में आज्ञा दी। ***(?????. 50:24,25, ??????. 13:19)***
23 विश्वास ही से मूसा के माता पिता ने उसको, उत्पन्न होने के बाद तीन महीने तक छिपा रखा; क्योंकि उन्होंने देखा, कि बालक सुन्दर है, और वे राजा की आज्ञा से न डरे। ***(??????. 1:22, ??????. 2:2)***
24 विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फ़िरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया। ***(??????. 2:11)***
25 इसलिए कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुःख भोगना और भी उत्तम लगा।
26 और *????? ?? ?????*[†] निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से बड़ा धन

† **11:26** *????? ?? ?????:* इसका मतलब यह है कि या तो वह अपने विश्वास के लिए निन्दा सहने को तैयार था कि मसीह आएगा।

समझा क्योंकि उसकी आँखें फल पाने
की ओर लगी थीं। ***(1 [illegible]. 4:14,***
[illegible] 5:12)
27 विश्वास ही से राजा के क्रोध से
न डरकर उसने मिस्र को छोड़ दिया,
क्योंकि वह अनदेखे को मानो देखता
हुआ दृढ़ रहा। ***([illegible]. 2:15,***
[illegible]. 10:28,29)
28 विश्वास ही से उसने फसह
और लहू छिड़कने की विधि मानी,
कि पहिलौठों का नाश करनेवाला
इस्राएलियों पर हाथ न डाले।
([illegible]. 12:21-29)
29 विश्वास ही से वे लाल समुद्र के
पार ऐसे उतर गए, जैसे सूखी भूमि पर
से; और जब मिस्रियों ने वैसा ही करना
चाहा, तो सब डूब मरे। ***([illegible].***
14:21-31)
30 विश्वास ही से यरीहो की
शहरपनाह, जब सात दिन तक उसका
चक्कर लगा चुके तो वह गिर पड़ी।
([illegible]. 106:9-11, [illegible]. 6:12-21)
31 विश्वास ही से राहाब वेश्या
आज्ञा न माननेवालों के साथ नाश
नहीं हुई; इसलिए कि उसने भेदियों को
कुशल से रखा था। ***([illegible]. 2:25,***
[illegible]. 2:11,12, [illegible]. 6:21-25)
32 अब और क्या कहूँ? क्योंकि
समय नहीं रहा, कि गिदोन का,
और बाराक और शिमशोन का, और
यिफतह का, और दाऊद का और
शमूएल का, और भविष्यद्वक्ताओं का
वर्णन करूँ।
33 इन्होंने विश्वास ही के द्वारा
राज्य जीते; धार्मिकता के काम किए;
प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ प्राप्त कीं, सिंहों
के मुँह बन्द किए,
34 आग की ज्वाला को ठंडा किया;
तलवार की धार से बच निकले,
निर्बलता में बलवन्त हुए; लड़ाई में
वीर निकले; विदेशियों की फौजों को
मार भगाया।
35 स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को फिर
जीवित पाया; कितने तो मार खाते-
खाते मर गए; और छुटकारा न चाहा;
इसलिए कि उत्तम पुनरुत्थान के भागी
हों।
36 दूसरे लोग तो उपहास में उड़ाए
जाने; और कोड़े खाने; वरन् बाँधे जाने;
और कैद में पड़ने के द्वारा परखे गए।
37 पथराव किए गए; आरे से चीरे
गए; उनकी परीक्षा की गई; तलवार
से मारे गए; वे कंगाली में और क्लेश
में और दुःख भोगते हुए भेड़ों और
बकरियों की खालें ओढ़े हुए, इधर-उधर
मारे-मारे फिरे।
38 और जंगलों, और पहाड़ों, और
गुफाओं में, और पृथ्वी की दरारों में
भटकते फिरे। संसार उनके योग्य न
था।
39 विश्वास ही के द्वारा इन सब के
विषय में अच्छी गवाही दी गई, तो भी
उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली।
40 क्योंकि *[illegible]*‡, कि वे हमारे
बिना सिद्धता को न पहुँचें।

12

[illegible]

1 इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा
बड़ा बादल हमको घेरे हुए है, तो
आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और
उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह
दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से
दौड़ें।

---

‡ **11:40** *[illegible]:* कुछ उत्तम बात देने के लिये पहले से ही निर्धारित की हैं अर्थात्, परमेश्वर ने उन्हें जिसका उन्हें किसी को एहसास नहीं था।

* **12:2** *[illegible]:* वह विश्वास का या परमेश्वर में भरोसा का प्रथम और अन्तिम उदाहरण हैं।

2 और *[illegible]** यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुःख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। ***(1 [illegible]. 2:23,24, [illegible]. 2:13,14)***

[illegible]

3 इसलिए उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया कि तुम निराश होकर साहस न छोड़ दो।
4 तुम ने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की, कि तुम्हारा लहू बहा हो।
5 और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो:

“हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान,
और जब वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़।
6 क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसको अनुशासित भी करता है;
और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको ताड़ना भी देता है।”

7 तुम दुःख को अनुशासन समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? ***([illegible]. 3:11,12, [illegible]. 8:5, 2 [illegible]. 7:14)***
8 यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे!
9 फिर जबकि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हमने उनका आदर किया, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन न रहें जिससे हम जीवित रहें।
10 वे तो अपनी-अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर यह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएँ।

[illegible]

11 और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तो भी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धार्मिकता का प्रतिफल मिलता है।
12 इसलिए ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो। ***([illegible]. 35:3)***
13 और अपने पाँवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ, कि लँगड़ा भटक न जाए, पर भला चंगा हो जाए। ***([illegible]. 4:26)***
14 सबसे मेल मिलाप रखो, और उस *[illegible]*†। ***(1 [illegible]. 3:11, [illegible]. 34:14)***
15 और ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएँ। ***(2 [illegible]. 1:8, [illegible]. 29:18)***
16 ऐसा न हो, कि कोई जन व्यभिचारी, या एसाव के समान अधर्मी हो, जिसने एक बार के भोजन के बदले अपने पहलौठे होने का पद

† **12:14** *[illegible]*: अपनी अभिलाषाओं से संघर्ष और युद्ध की भावना को मानने के बजाय, पवित्र होने के लिये अपना उद्देश्य बनाओ।

बेच डाला। ***([illegible]. 3:5, [illegible].***
25:31-34)
[17] तुम जानते तो हो, कि बाद में जब
उसने आशीष पानी चाही, तो अयोग्य
गिना गया, और आँसू बहा बहाकर
खोजने पर भी मन फिराव का अवसर
उसे न मिला।
[18] तुम तो उस पहाड़ के पास जो
छुआ जा सकता था और आग से
प्रज्वलित था, और काली घटा, और
अंधेरा, और आँधी के पास।
[19] और तुरही की ध्वनि, और
बोलनेवाले के ऐसे शब्द के पास नहीं
आए, जिसके सुननेवालों ने विनती
की, कि अब हम से और बातें न
की जाएँ। ***([illegible]. 20:18-21,***
[illegible]. 5:23,25)
[20] क्योंकि वे उस आज्ञा को न सह
सके "यदि कोई पशु भी पहाड़ को छूए,
तो पथराव किया जाए।" ***([illegible].***
19:12-13)
[21] और वह दर्शन ऐसा डरावना था,
कि मूसा ने कहा, "मैं बहुत डरता और
काँपता हूँ।" ***([illegible]. 9:19)***
[22] पर तुम सिय्योन के पहाड़ के
पास, और जीविते परमेश्वर के नगर
स्वर्गीय यरूशलेम के पास और लाखों
स्वर्गदूतों,
[23] और उन पहिलौठों की साधारण
सभा और कलीसिया जिनके नाम स्वर्ग
में लिखे हुए हैं और सब के न्यायी
परमेश्वर के पास, और सिद्ध किए हुए
धर्मियों की आत्माओं, ***([illegible]. 50:6,***
[illegible]. 1:12)
[24] और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु,
और छिड़काव के उस लहू के पास आए
हो, जो हाबिल के लहू से उत्तम बातें
कहता है।
[25] सावधान रहो, और उस
कहनेवाले से मुँह न फेरो, क्योंकि
वे लोग जब पृथ्वी पर के चेतावनी
देनेवाले से मुँह मोड़कर न बच सके,
तो हम स्वर्ग पर से चेतावनी देनेवाले
से मुँह मोड़कर कैसे बच सकेंगे?
[26] उस समय तो उसके शब्द ने
पृथ्वी को हिला दिया पर अब उसने
यह प्रतिज्ञा की है, "एक बार फिर मैं
केवल पृथ्वी को नहीं, वरन् आकाश को
भी हिला दूँगा।" ***([illegible]. 2:6,***
[illegible]. 5:4, [illegible]. 68:8)
[27] और यह वाक्य 'एक बार फिर'
इस बात को प्रगट करता है, कि जो
वस्तुएँ हिलाई जाती हैं, वे सृजी हुई
वस्तुएँ होने के कारण टल जाएँगी;
ताकि जो वस्तुएँ हिलाई नहीं जातीं,
वे अटल बनी रहें। ***([illegible] 2:6)***
[28] *[illegible]*[‡], उस
अनुग्रह को हाथ से न जाने दें, जिसके
द्वारा हम भक्ति, और भय सहित,
परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते
हैं जिससे वह प्रसन्न होता है।
[29] क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म
करनेवाली आग है। ***([illegible]. 4:24,***
[illegible]. 9:3, [illegible]. 33:14)

13

[illegible]

[1] भाईचारे का प्रेम बना रहे।
[2] अतिथि-सत्कार करना न भूलना,
क्योंकि इसके द्वारा कितनों ने अनजाने
में स्वर्गदूतों का आदर-सत्कार किया
है। ***(1 [illegible]. 4:9)***
[3] *[illegible]*[*], कि मानो उनके साथ तुम भी कैद

‡ **12:28** *[illegible]:* हम उस राज्य से सम्बंध रखते हैं जो स्थायी और अपरिवर्तनीय है। जिसका अर्थ हैं, छुटकारा देनेवाले का राज्य जिसका अन्त कभी न होगा।

* **13:3** *[illegible]:* वह सभी जो बन्दी हैं, चाहे युद्ध के कैदी, जो जाँच के लिये हिरासत में नजरबन्द हैं, जो लोग धर्म के खातिर कैद में हैं, या वे दासत्व के लिये पकड़े गए हैं।

हो; और जिनके साथ बुरा बर्ताव किया जाता है, उनकी भी यह समझकर सुधि लिया करो, कि हमारी भी देह है।

4 विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और विवाह बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।

5 तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर संतोष किया करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, "मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।" ***([illegible]. 37:25, [illegible]. 31:8, [illegible]. 1:5)***

6 इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं, "प्रभु, मेरा सहायक है; मैं न डरूँगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?" ***([illegible]. 118:6, [illegible]. 27:1)***

7 जो तुम्हारे अगुए थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उनके चाल-चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो।

8 यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है। ***([illegible]. 90: 2, [illegible]. 1:8, [illegible]. 41:4)***

9 नाना प्रकार के और ऊपरी उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उन खाने की वस्तुओं से जिनसे काम रखनेवालों को कुछ लाभ न हुआ।

10 हमारी एक ऐसी वेदी है, जिस पर से खाने का अधिकार उन लोगों को नहीं, जो तम्बू की सेवा करते हैं।

11 क्योंकि जिन पशुओं का लहू महायाजक पापबलि के लिये पवित्रस्थान में ले जाता है, उनकी देह छावनी के बाहर जलाई जाती है।

12 इसी कारण, यीशु ने भी लोगों को अपने ही लहू के द्वारा पवित्र करने के लिये फाटक के बाहर दुःख उठाया।

13 इसलिए, आओ उसकी निन्दा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें। ***([illegible] 6:22)***

14 क्योंकि यहाँ हमारा कोई स्थिर रहनेवाला नगर नहीं, वरन् हम एक आनेवाले नगर की खोज में हैं।

15 इसलिए हम उसके द्वारा *[illegible] [illegible]*†, अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाया करें। ***([illegible]. 50:14, [illegible]. 50:23, [illegible] 14:2)***

16 पर भलाई करना, और उदारता न भूलो; क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है।

[illegible] [illegible] [illegible]

17 अपने अगुओं की मानो; और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं। ***(1 [illegible]. 5:12,13, [illegible]. 20:28)***

18 हमारे लिये प्रार्थना करते रहो, क्योंकि हमें भरोसा है, कि हमारा विवेक शुद्ध है; और हम सब बातों में अच्छी चाल चलना चाहते हैं।

19 प्रार्थना करने के लिये मैं तुम्हें और भी उत्साहित करता हूँ, ताकि मैं शीघ्र तुम्हारे पास फिर आ सकूँ।

[illegible]

20 अब *[illegible] [illegible]*‡ जो हमारे प्रभु यीशु

---

† **13:15** *[illegible] [illegible]:* पापों से मुक्ति के सभी दया के लिए। ‡ **13:20** *[illegible] [illegible]:* "शान्ति" शब्द हर प्रकार की आशीष या प्रसन्नता को दर्शाता हैं, यह शान्ति उन सभी का विरोध करता है जो मन में परेशानी या मुसीबत डालता हैं।

को जो भेड़ों का महान रखवाला है
सनातन वाचा के लहू के गुण से मरे
हुओं में से जिलाकर ले आया, ***(□□□. 10:11, □□□□□□. 2:24, □□□. 15:33)***

21 तुम्हें हर एक भली बात में सिद्ध
करे, जिससे तुम उसकी इच्छा पूरी
करो, और जो कुछ उसको भाता है, उसे
यीशु मसीह के द्वारा हम में पूरा करे,
उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे।
आमीन।

22 हे भाइयों मैं तुम से विनती करता
हूँ, कि इन उपदेश की बातों को सह लो;
क्योंकि मैंने तुम्हें बहुत संक्षेप में लिखा
है।

23 तुम यह जान लो कि तीमुथियुस
हमारा भाई छूट गया है और यदि वह
शीघ्र आ गया, तो मैं उसके साथ तुम
से भेंट करूँगा।

24 अपने सब अगुओं और सब
पवित्र लोगों को नमस्कार कहो।
इतालियावाले तुम्हें नमस्कार कहते
हैं।

25 तुम सब पर अनुग्रह होता रहे।
आमीन।

याकूब की पत्री

[illegible]

इस पत्र का लेखक याकूब है (1:1)। वह मसीह यीशु का भाई और यरूशलेम की कलीसिया का एक प्रमुख अगुआ था। याकूब के अतिरिक्त मसीह यीशु के और भी भाई थे। याकूब सम्भवतः सबसे बड़ा था क्योंकि मत्ती 13:55 की सूची में उसका नाम सबसे पहले आता है। आरम्भ में वह यीशु में विश्वास नहीं करता था। उसने उसे चुनौती भी दी थी और उसके सेवाकार्य को गलत समझा था (यूह. 7:2-5)। बाद में वह कलीसिया में एक श्रेष्ठ अगुआ हुआ।

वह उन विशिष्ट वर्गों में था जिन्हें यीशु ने अपने पुनरूत्थान के बाद दर्शन दिया था (1 कुरि. 15:7)। पौलुस उसे कलीसिया का “खम्भा” कहता है (गला. 2:9)।

[illegible]

लगभग ई.स. 40 - 50

सन् 50 की यरूशलेम सभा से और सन् 70 में मन्दिर के ध्वंस होने से पूर्व।

[illegible]

सम्भवतः यहूदिया और सामरिया में तितर-बितर यहूदी जिन्होंने मसीह को ग्रहण कर लिया था तथापि, याकूब के अभिवादन के अनुसार, “उन बारह गोत्रों को जो तितर-बितर होकर रहते थे” इन वाक्यों से याकूब के मूल श्रोतागण की प्रबल सम्भावना व्यक्त होती हैं।

[illegible]

याकूब का प्रधान उद्देश्य याकू. 1:2-4 से विदित होता है। आरम्भिक शब्दों में याकूब अपने पाठकों से कहता है, “जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।” इससे स्पष्ट होता है कि याकूब का लक्षित समुदाय अनेक प्रकार के कष्टों में था। याकूब ने इस पत्र के प्राप्तिकर्ताओं से आग्रह किया कि वे परमेश्वर से बुद्धि माँगे (1:5) कि परीक्षाओं में भी उन्हें आनन्द प्राप्त हो। याकूब के पत्र के प्राप्तिकर्ताओं में से कुछ विश्वास से भटक गये थे। याकूब ने उन्हें चेतावनी दी कि संसार से मित्रता करना परमेश्वर से बैर रखना है (4:4)। याकूब ने उन्हें परामर्श दिया कि वे दीन बनें जिससे कि परमेश्वर उन्हें प्रतिष्ठित करे। उसकी शिक्षा थी कि परमेश्वर के समक्ष दीन होना बुद्धि का मार्ग है (4:8-10)।

[illegible]

सच्चा विश्वास

रूपरेखा

1. सच्चे धर्म के विषय याकूब के निर्देश — 1:1-27
2. सच्चा विश्वास भले कामों से प्रकट होता है — 2:1-3:12
3. सच्चा बुद्धि परमेश्वर से प्राप्त होता है — 3:13-5:20

[illegible]

1 परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह
के दास याकूब की ओर से उन बारहों
गोत्रों को जो तितर-बितर होकर रहते
हैं नमस्कार पहुँचे।

[illegible]

2 हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना
प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो *[illegible]**,

* **1:2** *[illegible]*: इसे आनन्द की एक बात के रूप में समझो, एक ऐसी बात जिससे आपको खुशी मिलनी चाहिए।

3 यह जानकर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।

4 पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे।

5 पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से माँगो, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उसको दी जाएगी।

6 पर विश्वास से माँगे, और कुछ *[illegible]*[†] जो हवा से बहती और उछलती है।

7 ऐसा मनुष्य यह न समझे, कि मुझे प्रभु से कुछ मिलेगा,

8 वह व्यक्ति दुचित्ता है, और अपनी सारी बातों में चंचल है।

[illegible]

9 दीन भाई अपने ऊँचे पद पर घमण्ड करे।

10 और धनवान अपनी नीच दशा पर; क्योंकि वह घास के फूल की तरह मिट जाएगा।

11 क्योंकि सूर्य उदय होते ही कड़ी धूप पड़ती है और घास को सुखा देती है, और उसका फूल झड़ जाता है, और उसकी शोभा मिटती जाती है; उसी प्रकार धनवान भी अपने कार्यों के मध्य में ही लोप हो जाएँगे। ***([illegible]. 102:11, [illegible]. 40:7,8)***

[illegible]

12 धन्य है वह मनुष्य, जो परीक्षा में स्थिर रहता है; क्योंकि वह खरा निकलकर जीवन का वह मुकुट पाएगा, जिसकी प्रतिज्ञा प्रभु ने अपने प्रेम करनेवालों को दी है।

13 जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।

14 परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा में खिंचकर, और फँसकर परीक्षा में पड़ता है।

15 फिर अभिलाषा गर्भवती होकर पाप को जनती है और पाप बढ़ जाता है तो मृत्यु को उत्पन्न करता है।

16 हे मेरे प्रिय भाइयों, धोखा न खाओ।

17 क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न ही वह परछाई के समान बदलता है।

18 उसने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया, ताकि हम उसकी सृष्टि किए हुए प्राणियों के बीच पहले फल के समान हो।

[illegible]

19 हे मेरे प्रिय भाइयों, यह बात तुम जान लो, हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में धीर और क्रोध में धीमा हो।

20 क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धार्मिकता का निर्वाह नहीं कर सकता है।

21 इसलिए सारी मलिनता और बैर-भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।

[†] **1:6** *[illegible]*: समुद्र की लहर में कोई स्थिरता नहीं होती हैं। वह हवा की हर एक दिशा पर निर्भर है, और वह किसी भी तरफ झोंक या फेंक दी जाती हैं।

22 परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*‡ जो अपने आपको धोखा देते हैं।

23 क्योंकि जो कोई वचन का सुननेवाला हो, और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुँह दर्पण में देखता है।

24 इसलिए कि वह अपने आपको देखकर चला जाता, और तुरन्त भूल जाता है कि वह कैसा था।

25 पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं, पर वैसा ही काम करता है।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

26 यदि कोई अपने आपको भक्त समझे, और अपनी जीभ पर लगाम न दे, पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उसकी भक्ति व्यर्थ है। ***([illegible]. 34:13, [illegible]. 141:3)***

27 हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें, और अपने आपको संसार से निष्कलंक रखें।

2

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 हे मेरे भाइयों, हमारे *[illegible] [illegible]** यीशु मसीह का विश्वास तुम में पक्षपात के साथ न हो। ***([illegible]. 34:19, [illegible]. 24:7-10)***

2 क्योंकि यदि एक पुरुष सोने के छल्ले और सुन्दर वस्त्र पहने हुए तुम्हारी सभा में आए और एक कंगाल भी मैले कुचैले कपड़े पहने हुए आए।

3 और तुम उस सुन्दर वस्त्रवाले पर ध्यान केन्द्रित करके कहो, "तू यहाँ अच्छी जगह बैठ," और उस कंगाल से कहो, "तू वहाँ खड़ा रह," या "मेरे पाँवों के पास बैठ।"

4 तो क्या तुम ने आपस में भेद भाव न किया और कुविचार से न्याय करनेवाले न ठहरे?

5 हे मेरे प्रिय भाइयों सुनो; *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*† कि वह विश्वास में धनी, और उस राज्य के अधिकारी हों, जिसकी प्रतिज्ञा उसने उनसे की है जो उससे प्रेम रखते हैं?

6 पर तुम ने उस कंगाल का अपमान किया। क्या धनी लोग तुम पर अत्याचार नहीं करते और क्या वे ही तुम्हें कचहरियों में घसीट-घसीट कर नहीं ले जाते?

7 क्या वे उस उत्तम नाम की निन्दा नहीं करते जिसके तुम कहलाए जाते हो?

8 तो भी यदि तुम पवित्रशास्त्र के इस वचन के अनुसार, "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख," सचमुच उस राज व्यवस्था को पूरी करते हो, तो अच्छा करते हो। ***([illegible]. 19:18)***

9 पर यदि तुम पक्षपात करते हो, तो पाप करते हो; और व्यवस्था तुम्हें अपराधी ठहराती है। ***([illegible]. 19:15)***

10 क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था

‡ **1:22** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* सुसमाचार केवल सुनो ही नहीं इसका पालन भी करो।
* **2:1** *[illegible] [illegible]:* वह जो स्वयं महिमायुक्त हैं, और जो महिमा के साथ चलता हैं।
† **2:5** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* परमेश्वर ने हर एक को अच्छे प्रयोजन से "राज्य के वारिस" होने के लिये चुना हैं अब अपेक्षा के साथ व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए, जैसा कि यह प्रेरितों के समय में होता था।

का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा।

11 इसलिए कि जिसने यह कहा, "तू व्यभिचार न करना" उसी ने यह भी कहा, "तू हत्या न करना" इसलिए यदि तूने व्यभिचार तो नहीं किया, पर हत्या की तो भी तू व्यवस्था का उल्लंघन करनेवाला ठहरा। ***([illegible]. 20:13,14, [illegible]. 5:17,18)***

12 तुम उन लोगों के समान वचन बोलो, और काम भी करो, जिनका न्याय स्वतंत्रता की व्यवस्था के अनुसार होगा।

13 क्योंकि जिसने दया नहीं की, उसका न्याय बिना दया के होगा। दया न्याय पर जयवन्त होती है।

[illegible]

14 हे मेरे भाइयों, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है पर वह कर्म न करता हो, तो उससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है?

15 यदि कोई भाई या बहन नंगे उघाड़े हों, और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी हो,

16 और तुम में से कोई उनसे कहे, "शान्ति से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो," पर जो वस्तुएँ देह के लिये आवश्यक हैं वह उन्हें न दे, तो क्या लाभ?

17 वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है।

18 वरन् कोई कह सकता है, "तुझे विश्वास है, और मैं कर्म करता हूँ।" तू अपना विश्वास मुझे कर्म बिना दिखा; और मैं अपना विश्वास अपने कर्मों के द्वारा तुझे दिखाऊँगा।

19 तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है; तू अच्छा करता है; दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं।

20 पर हे निकम्मे मनुष्य क्या तू यह भी नहीं जानता, कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है?

21 जब हमारे पिता अब्राहम ने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर चढ़ाया, तो क्या वह कर्मों से धार्मिक न ठहरा था? ***([illegible]. 22:9)***

22 तूने देख लिया कि विश्वास ने उसके कामों के साथ मिलकर प्रभाव डाला है और कर्मों से विश्वास सिद्ध हुआ।

23 और पवित्रशास्त्र का यह वचन पूरा हुआ, "अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिये धार्मिकता गिनी गई," और वह परमेश्वर का मित्र कहलाया। ***([illegible]. 15:6)***

24 तुम ने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, वरन् कर्मों से भी धर्मी ठहरता है।

25 *[illegible]*‡? ***([illegible]. 11:31)***

26 जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।

3

[illegible]

1 हे मेरे भाइयों, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि तुम जानते

‡ **2:25** *[illegible] .... [illegible]:* वह काम जो उन्होंने किया वह उसकी विश्वास की सार्वजनिक अभिव्यक्ति थी, जिससे वह धार्मिक ठहराई गई।

हो, कि हम उपदेशकों का और भी
सख्ती से न्याय किया जाएगा।
2 इसलिए कि [illegible]
[illegible]* जो कोई वचन
में नहीं चूकता, वही तो [illegible]
[illegible]† है; और सारी देह पर भी
लगाम लगा सकता है।
3 जब हम अपने वश में करने के
लिये घोड़ों के मुँह में लगाम लगाते हैं,
तो हम उनकी सारी देह को भी घुमा
सकते हैं।
4 देखो, जहाज भी, यद्यपि ऐसे बड़े
होते हैं, और प्रचण्ड वायु से चलाए
जाते हैं, तो भी एक छोटी सी पतवार
के द्वारा माँझी की इच्छा के अनुसार
घुमाए जाते हैं।
5 वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा
अंग है और बड़ी-बड़ी डींगे मारती है;
देखो कैसे, थोड़ी सी आग से कितने बड़े
वन में आग लग जाती है।
6 जीभ भी एक आग है; जीभ हमारे
अंगों में अधर्म का एक लोक है और
सारी देह पर कलंक लगाती है, और
भवचक्र में आग लगा देती है और नरक
कुण्ड की आग से जलती रहती है।
7 क्योंकि हर प्रकार के वन-पशु,
पक्षी, और रेंगनेवाले जन्तु और
जलचर तो मनुष्यजाति के वश में हो
सकते हैं और हो भी गए हैं।
8 पर जीभ को मनुष्यों में से कोई
वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी
बला है जो कभी रुकती ही नहीं; वह
प्राणनाशक विष से भरी हुई है। ***([illegible]. 140:3)***
9 इसी से हम प्रभु और पिता की
स्तुति करते हैं; और इसी से मनुष्यों को
जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए
हैं श्राप देते हैं।
10 एक ही मुँह से स्तुति और श्राप
दोनों निकलते हैं। हे मेरे भाइयों, ऐसा
नहीं होना चाहिए।
11 क्या सोते के एक ही मुँह से मीठा
और खारा जल दोनों निकलते हैं?
12 हे मेरे भाइयों, क्या अंजीर के पेड़
में जैतून, या दाख की लता में अंजीर
लग सकते हैं? वैसे ही खारे सोते से
मीठा पानी नहीं निकल सकता।

[illegible]

13 तुम में ज्ञानवान और समझदार
कौन है? जो ऐसा हो वह अपने
कामों को अच्छे चाल-चलन से उस
[illegible]‡।
14 पर यदि तुम अपने-अपने मन
में कड़वी ईर्ष्या और स्वार्थ रखते हो,
तो डींग न मारना और न ही सत्य के
विरुद्ध झूठ बोलना।
15 यह ज्ञान वह नहीं, जो ऊपर
से उतरता है वरन् सांसारिक, और
शारीरिक, और शैतानी है।
16 इसलिए कि जहाँ ईर्ष्या और
विरोध होता है, वहाँ बखेड़ा और हर
प्रकार का दुष्कर्म भी होता है।
17 पर जो ज्ञान ऊपर से आता है
वह पहले तो पवित्र होता है फिर
मिलनसार, कोमल और मृदुभाव और
दया, और अच्छे फलों से लदा हुआ
और पक्षपात और कपटरहित होता है।
18 और मिलाप करानेवालों के लिये
धार्मिकता का फल शान्ति के साथ
बोया जाता है। ***([illegible]. 32:17)***

* **3:2** *[illegible]:* यहाँ पर वह शब्द अपमान को प्रस्तुत करता हैं, जिसका मतलब गिर जाना हैं। † **3:2** *[illegible]:* यदि एक मनुष्य अपनी जीभ को नियंत्रित कर सकता हैं, तो उनका खुद पर पूरा प्रभुत्व है। ‡ **3:13** *[illegible]:* सच्चा ज्ञान हमेशा कोमल, मृदु और नम्र होता हैं।

4

[illegible]

1 तुम में लड़ाइयाँ और झगड़े कहाँ
से आते है? क्या उन सुख-विलासों से
नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते-भिड़ते
हैं?
2 तुम लालसा रखते हो, और तुम्हें
मिलता नहीं; तुम हत्या और डाह
करते हो, और कुछ प्राप्त नहीं कर
सकते; तुम झगड़ते और लड़ते हो;
तुम्हें इसलिए नहीं मिलता, कि माँगते
नहीं।
3 तुम माँगते हो और पाते नहीं,
इसलिए कि बुरी इच्छा से माँगते हो,
ताकि अपने भोग-विलास में उड़ा दो।
4 हे *[illegible]**, क्या
तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता
करनी परमेश्वर से बैर करना है?
इसलिए जो कोई संसार का मित्र
होना चाहता है, वह अपने आपको
परमेश्वर का बैरी बनाता है। ***(1 [illegible]. 2:15,16)***
5 क्या तुम यह समझते हो, कि
पवित्रशास्त्र व्यर्थ कहता है? "जिस
पवित्र आत्मा को उसने हमारे भीतर
बसाया है, क्या वह ऐसी लालसा
करता है, जिसका प्रतिफल डाह हो"?
6 वह तो और भी अनुग्रह देता है;
इस कारण यह लिखा है, "परमेश्वर
अभिमानियों से विरोध करता है, पर
नम्रों पर अनुग्रह करता है।"
7 इसलिए परमेश्वर के अधीन हो
जाओ; और *[illegible]*†, तो वह तुम्हारे पास से भाग
निकलेगा।
8 परमेश्वर के निकट आओ, तो वह
भी तुम्हारे निकट आएगा: हे पापियों,
अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते
लोगों अपने हृदय को पवित्र करो।
([illegible]. 1:3, [illegible]. 3:7)
9 दुःखी हो, और शोक करो, और
रोओ, तुम्हारी हँसी शोक में और
तुम्हारा आनन्द उदासी में बदल जाए।
10 प्रभु के सामने नम्र बनो, तो
वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा। ***([illegible]. 147:6)***
11 हे भाइयों, एक दूसरे की निन्दा न
करो, जो अपने भाई की निन्दा करता
है, या *[illegible]*‡,
वह व्यवस्था की निन्दा करता है, और
व्यवस्था पर दोष लगाता है, तो तू
व्यवस्था पर चलनेवाला नहीं, पर उस
पर न्यायाधीश ठहरा।
12 व्यवस्था देनेवाला और
न्यायाधीश तो एक ही है, जिसे बचाने
और नाश करने की सामर्थ्य है; पर
तू कौन है, जो अपने पड़ोसी पर दोष
लगाता है?

[illegible]

13 तुम जो यह कहते हो, "आज या
कल हम किसी और नगर में जाकर
वहाँ एक वर्ष बिताएँगे, और व्यापार
करके लाभ उठाएँगे।"
14 और यह नहीं जानते कि कल
क्या होगा। सुन तो लो, तुम्हारा
जीवन है ही क्या? तुम तो मानो धुंध
के समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती
है, फिर लोप हो जाती है। ***([illegible]. 27:1)***
15 इसके विपरीत तुम्हें यह कहना
चाहिए, "यदि प्रभु चाहे तो हम

---

* **4:4** *[illegible]:* यह शब्द उन लोगों को दर्शाने के लिये उपयोग किया गया हैं जो परमेश्वर के प्रति विश्वासघाती हैं। † **4:7** *[illegible]:* जब आप सब बातों में परमेश्वर के अधीन रहेंगे, तब आप किसी भी बात में शैतान के अधीन नहीं रहेंगे। किसी भी तरीके से वह आपको सम्पर्क करे आप उसका सामना और विरोध करो। ‡ **4:11** *[illegible]:* दोष यहाँ पर दूसरों को बदनाम करने को निर्दिष्ट करता हैं – उनके कामों के विरुद्ध, उनके इरादों के विरुद्ध, उनके जीने के तरीकों के विरुद्ध, उनके परिवारों के विरुद्ध, इत्यादि

जीवित रहेंगे, और यह या वह काम
भी करेंगे।”
16 पर अब तुम अपनी डींग मारने
पर घमण्ड करते हो; ऐसा सब घमण्ड
बुरा होता है।
17 इसलिए जो कोई भलाई करना
जानता है और नहीं करता, उसके लिये
यह पाप है।

5

⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰

1 हे धनवानों सुन तो लो; तुम
अपने आनेवाले क्लेशों पर चिल्ला
चिल्लाकर रोओ।
2 तुम्हारा धन बिगड़ गया और
तुम्हारे वस्त्रों को कीड़े खा गए।
3 तुम्हारे सोने-चाँदी में काई लग
गई है; और *⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰*
⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰[*], और आग के समान
तुम्हारा माँस खा जाएगी: तुम ने
अन्तिम युग में धन बटोरा है।
4 देखो, जिन मजदूरों ने तुम्हारे
खेत काटे, उनकी मजदूरी जो तुम ने
उन्हें नहीं दी; चिल्ला रही है, और
लवनेवालों की दुहाई, सेनाओं के प्रभु
के कानों तक पहुँच गई है। ***(⍰⍰⍰⍰⍰. 19:13)***
5 तुम पृथ्वी पर भोग-विलास में लगे
रहे और बड़ा ही सुख भोगा; तुम ने
इस वध के दिन के लिये अपने हृदय
का पालन-पोषण करके मोटा ताजा
किया।
6 तुम ने धर्मी को दोषी ठहराकर
मार डाला; वह तुम्हारा सामना नहीं
करता।

⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰

7 इसलिए हे भाइयों, प्रभु के
आगमन तक धीरज धरो, जैसे, किसान
पृथ्वी के बहुमूल्य फल की आशा
रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा
होने तक धीरज धरता है। ***(⍰⍰⍰⍰. 11:14)***
8 तुम भी *⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰*[†], और अपने
हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का
आगमन निकट है।
9 हे भाइयों, एक दूसरे पर दोष
न लगाओ ताकि तुम दोषी न ठहरो,
देखो, न्यायाधीश द्वार पर खड़ा है।
10 हे भाइयों, जिन भविष्यद्वक्ताओं
ने प्रभु के नाम से बातें कीं, उन्हें दुःख
उठाने और धीरज धरने का एक आदर्श
समझो।
11 देखो, हम धीरज धरनेवालों को
धन्य कहते हैं। तुम ने अय्यूब के धीरज
के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु
की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ
उसे भी जान लिया है, जिससे प्रभु की
अत्यन्त करुणा और दया प्रगट होती
है।
12 पर हे मेरे भाइयों, सबसे श्रेष्ठ
बात यह है, कि शपथ न खाना; न स्वर्ग
की न पृथ्वी की, न किसी और वस्तु की,
पर तुम्हारी बातचीत हाँ की हाँ, और
नहीं की नहीं हो, कि तुम दण्ड के योग्य
न ठहरो।

⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰

13 यदि तुम में कोई दुःखी हो तो वह
प्रार्थना करे; यदि आनन्दित हो, तो वह
स्तुति के भजन गाए।
14 यदि तुम में कोई रोगी हो, तो
कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और
वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मलकर
उसके लिये प्रार्थना करें।

---

* **5:3** *⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰:* अर्थात्, जंग या मलिनीकिरण तुम्हारे विरुद्ध गवाही देंगी कि धन जिस तरह से इस्तेमाल होना चाहिए था उस तरह से इस्तेमाल नहीं किया गया। † **5:8** *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰:* जैसे किसान धीरज रखते हैं। जैसे वह उचित समय में बारिश आने की उम्मीद करते हैं, इस प्रकार आप भी परीक्षणों से छुटकारे की आशा रख सकते हो।

15 और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा
रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको
उठाकर खड़ा करेगा; यदि उसने पाप
भी किए हों, तो परमेश्वर उसको क्षमा
करेगा।
16 इसलिए तुम आपस में एक दूसरे
के सामने अपने-अपने पापों को मान
लो; और एक दूसरे के लिये प्रार्थना
करो, जिससे चंगे हो जाओ; धर्मी जन
की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो
सकता है।
17 *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*
[illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible][‡]; कि बारिश न
बरसे; और साढ़े तीन वर्ष तक भूमि पर
बारिश नहीं हुई। ***(1 [illegible]. 17:1)***
18 फिर उसने प्रार्थना की, तो
आकाश से वर्षा हुई, और भूमि
फलवन्त हुई। ***(1 [illegible]. 18:42-
45)***
19 हे मेरे भाइयों, यदि तुम में कोई
सत्य के मार्ग से भटक जाए, और कोई
उसको फेर लाए।
20 तो वह यह जान ले, कि जो कोई
किसी भटके हुए पापी को फेर लाएगा,
वह एक प्राण को मृत्यु से बचाएगा,
और अनेक पापों पर परदा डालेगा।
([illegible]. 10:12)

---

‡ **5:17** *[illegible] .... [illegible] [illegible]:* प्रेरित कहते हैं कि वह अन्य मनुष्यों की तरह एक ही प्रकृतिक झुकाव और निर्बलताओं के साथ वह एकमात्र मनुष्य ही था, और वह इसलिए उनके मामले एक है इसलिए प्रार्थना करने के लिये सभी को प्रोत्साहित करना चाहिए।

पतरस की पहली पत्री

[illegible]

प्रारंभिक पद से प्रकट होता है कि इस पत्र का लेखक पतरस है, "पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का प्रेरित है।" वह स्वयं को "मसीह यीशु का प्रेरित" कहता है (1 पत. 1:1)। उस पत्र के द्वारा बार बार मसीह यीशु के कष्टों की चर्चा करने (2:21-24; 3:18; 4:1; 5:1) से प्रकट होता है कि दु:खी दास का वह रूप उसकी स्मृति में छप गया था। वह मरकुस को अपना "पुत्र" कहता है (5:13), उस युवक एवं उसके परिवार के प्रति (प्रेरि. 12:12) वह अपना प्रेम प्रकट करता है। इन सब तथ्यों से स्पष्ट होता है कि प्रेरित पतरस ही इस पत्र का लेखक है।

[illegible]

लगभग ई.स. 60 - 64

5:13 में लेखक बेबीलोन की कलीसिया की ओर से अभिवादन भेज रहा है।

[illegible]

पतरस ने यह पत्र एशिया माइनर के विभिन्न स्थानों में वास करनेवाले मसीही विश्वासियों को लिखा था। सम्भवत: इस पत्र के प्राप्तिकर्ताओं में यहूदी एवं अन्यजाति विश्वासी दोनों थे।

[illegible]

पतरस इस पत्र को लिखने का उद्देश्य प्रकट करता है: विश्वास के कारण सताए जा रहे विश्वासियों को प्रोत्साहित करना। वह उन्हें पूर्णत: आश्वस्त करना चाहता था कि मसीही विश्वास में ही परमेश्वर का अनुग्रह पाया जाता है, अत: इस विश्वास का त्याग नहीं करना चाहिये। जैसा 1 पत. 5:12 में लिखा है, "मैंने...संक्षेप में लिखकर तुम्हें समझाया है और यह गवाही दी है कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही है, इसी में स्थिर रहो।" इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि उसके पाठकों में यह सताव व्यापक था। पतरस के प्रथम पत्र से प्रकट होता है कि सम्पूर्ण एशिया माइनर में मसीही विश्वासियों को सताया जा रहा था।

[illegible]

कष्ट सहनेवालों को उत्तर देना

रूपरेखा

1. अभिवादन — 1:1, 2
2. परमेश्वर के अनुग्रह के लिए उसका गुणगान — 1:3-12
3. पवित्र जीवन जीने का प्रबोधन — 1:13-5:12
4. अन्तिम नमस्कार — 5:13, 14

[illegible]

1 पतरस की ओर से जो यीशु मसीह
का प्रेरित है, उन परदेशियों के नाम,
जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदूकिया,
आसिया, और बितूनिया में तितर-
बितर होकर रहते हैं।
2 और [illegible]*।
तुम्हें अत्यन्त अनुग्रह और शान्ति
मिलती रहे।

[illegible]

3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के
परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो,
जिसने यीशु मसीह को मरे हुओं में से

* **1:2** [illegible], ... [illegible]: इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर सभी घटनाओं को जो घटित होती हैं, उसे पहले से ही जानता हैं, और दिखाता हैं कि उन लोगों को दूसरे की तुलना में उन्हें क्यों चुना।

जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया,

4 अर्थात् एक अविनाशी और निर्मल, और अजर विरासत के लिये जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है,

5 जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ्य से, *▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯*† उस उद्धार के लिये, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है, की जाती है।

6 इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अब कुछ दिन तक नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दुःख में हो,

7 और यह इसलिए है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, महिमा, और आदर का कारण ठहरे। ***(▯▯▯▯▯. 23:10, ▯▯. 66:10, ▯▯▯. 48:10, ▯▯▯▯. 1:12)***

8 उससे तुम बिन देखे प्रेम रखते हो, और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो, जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है,

9 और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो।

▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯

10 इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत ढूँढ़-ढाँढ़ और जाँच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वाणी की थी।

11 उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था, और पहले ही से मसीह के दुःखों की और उनके बाद होनेवाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था। ***(2 ▯▯. 1:21, ▯▯▯. 52:13-14, ▯▯▯▯ 24:25-27)***

12 उन पर यह प्रगट किया गया कि वे अपनी नहीं वरन् तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गया, तुम्हें सुसमाचार सुनाया, और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं।

▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯

13 इस कारण अपनी-अपनी बुद्धि की कमर बाँधकर, और सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखो, जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलनेवाला है।

14 और आज्ञाकारी बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश्य न बनो।

15 पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो।

16 क्योंकि लिखा है, “*▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯, ▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯*‡।” ***(▯▯▯▯▯. 11:44, ▯▯▯▯▯. 19:2, ▯▯▯▯▯. 20:7)***

17 और जबकि तुम, ‘हे पिता’ कहकर उससे प्रार्थना करते हो, जो बिना पक्षपात हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है, तो अपने परदेशी होने

† **1:5** *▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯:* अर्थात्, वह सामर्थ्य के परिश्रम मात्र के द्वारा हमें नहीं रखता हैं, परन्तु वह हमारे मनों में विश्वास भी पैदा करता हैं। ‡ **1:16** *▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯, ▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯:* आज्ञा की नींव यह हैं कि वे परमेश्वर ने कहा कि वे उनके लोगों के रूप में हैं, और क्योंकि वे परमेश्वर की प्रजा हैं इसलिए उन्हें परमेश्वर के जैसे पवित्र बनना चाहिए।

का समय भय से बिताओ। ***(2 □□□. 19:7, □□. 28:4, □□□. 59:18, □□□□□. 3:19, □□□□□. 17:10)***
18 क्योंकि तुम जानते हो कि
तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो
पूर्वजों से चला आता है उससे तुम्हारा
छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान
वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ, ***(□□. 49:7-8, □□□. 1:4, □□□. 52:3)***
19 पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने
अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा
हुआ।
20 मसीह को जगत की सृष्टि से
पहले चुना गया था, पर अब इस
अन्तिम युग में तुम्हारे लिये प्रगट
हुआ।
21 जो उसके द्वारा उस परमेश्वर पर
विश्वास करते हो, जिसने उसे मरे हुओं
में से जिलाया, और महिमा दी कि
तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर
पर हो।
22 अतः जबकि तुम ने भाईचारे के
निष्कपट प्रेम के निमित्त सत्य के मानने
से अपने मनों को पवित्र किया है, तो
तन-मन लगाकर एक दूसरे से अधिक
प्रेम रखो।
23 क्योंकि तुम ने नाशवान नहीं
पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के
जीवित और सदा ठहरनेवाले वचन के
द्वारा नया जन्म पाया है।
24 क्योंकि "हर एक प्राणी घास के
समान है, और उसकी सारी शोभा घास
के फूल के समान है:

घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है।

25 परन्तु *□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□*§।"
और यह ही सुसमाचार का वचन है
जो तुम्हें सुनाया गया था। ***(□□□□ 16:17, 1 □□□. 1:1, □□□. 40:8)***

2

□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□

1 इसलिए सब प्रकार का बैर-भाव,
छल, कपट, डाह और बदनामी को दूर
करके,
2 नये जन्मे हुए बच्चों के समान
*□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□**, ताकि उसके द्वारा
उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ,
3 क्योंकि तुम ने प्रभु की भलाई का
स्वाद चख लिया है। ***(□□. 34:8)***
4 उसके पास आकर, जिसे मनुष्यों ने
तो निकम्मा ठहराया, परन्तु परमेश्वर
के निकट चुना हुआ, और बहुमूल्य
जीविता पत्थर है।
5 तुम भी आप जीविते पत्थरों के
समान आत्मिक घर बनते जाते हो,
जिससे याजकों का पवित्र समाज
बनकर, ऐसे आत्मिक बलिदान
चढ़ाओ, जो यीशु मसीह के द्वारा
परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हो।
6 इस कारण पवित्रशास्त्र में भी
लिखा है,

"देखो, मैं सिय्योन में कोने के सिरे का चुना हुआ
और बहुमूल्य पत्थर धरता हूँ:
और जो कोई उस पर विश्वास करेगा,
वह किसी रीति से लज्जित नहीं होगा।" (यशा. 28:16)

7 अतः तुम्हारे लिये जो विश्वास
करते हो, वह तो बहुमूल्य है, पर जो
विश्वास नहीं करते उनके लिये,

---

§ **1:25** *□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□:* संसार की सभी क्रांतियों और प्राकृतिक वस्तुओं की लुप्त होती गौरव और मनुष्यों की नाश होती सामर्थ्य के बीच, परमेश्वर की सच्चाई, बिना किसी प्रभाव के सदा स्थिर रहता हैं। * **2:2** *□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□:* वचन का निर्मल दूध, जो बिना झूठ और चापलूसी के हैं।

“जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने
निकम्मा ठहराया था,
वही कोने का सिरा हो गया,”
([illegible]. 118:22, [illegible]. 2:34,35)
8 और,
“*[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*
और ठोकर खाने की चट्टान हो गया है,”
क्योंकि वे तो वचन को न मानकर
ठोकर खाते हैं और इसी के लिये वे
ठहराए भी गए थे। ***(1 [illegible]. 1:23, [illegible]. 8:14,15)***
9 पर तुम एक चुना हुआ वंश, और
राज-पदधारी, याजकों का समाज,
और पवित्र लोग, और परमेश्वर की
निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने
तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्भुत
ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट
करो। ***([illegible]. 19:5,6, [illegible]. 7:6, [illegible]. 14:2, [illegible]. 9:2)***
10 तुम पहले तो कुछ भी नहीं थे,
पर अब परमेश्वर की प्रजा हो;
तुम पर दया नहीं हुई थी
पर अब तुम पर दया हुई है। ***([illegible] 1:10, [illegible] 2:23)***

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

11 हे प्रियों मैं तुम से विनती करता
हूँ कि तुम अपने आपको परदेशी
और यात्री जानकर उन सांसारिक
अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध
करती हैं, बचे रहो। ***([illegible]. 5:24, 1 [illegible]. 4:2)***
12 अन्यजातियों में तुम्हारा चाल-
चलन भला हो; इसलिए कि जिन-
जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर
बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों
को देखकर उन्हीं के कारण कृपादृष्टि
के दिन परमेश्वर की महिमा करें।
([illegible] 5:16, [illegible]. 2:7-8)

[illegible] [illegible] [illegible]

13 प्रभु के लिये मनुष्यों के ठहराए
हुए हर एक प्रबन्ध के अधीन रहो,
राजा के इसलिए कि वह सब पर प्रधान
है,
14 और राज्यपालों के, क्योंकि वे
कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों
की प्रशंसा के लिये उसके भेजे हुए हैं।
15 क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह
है, कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि
लोगों की अज्ञानता की बातों को बन्द
कर दो।
16 *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*† पर अपनी इस स्वतंत्रता
को बुराई के लिये आड़ न बनाओ,
परन्तु अपने आपको परमेश्वर के दास
समझकर चलो।
17 सब का आदर करो, भाइयों से
प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा
का सम्मान करो। ***([illegible]. 24:21, [illegible]. 12:10)***

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

18 हे सेवकों, हर प्रकार के भय के
साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो,
न केवल भलों और नम्रों के, पर कुटिलों
के भी।
19 क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का
विचार करके अन्याय से दुःख उठाता
हुआ क्लेश सहता है, तो यह सुहावना
है।
20 क्योंकि यदि तुम ने अपराध
करके घूँसे खाए और धीरज धरा, तो
उसमें क्या बड़ाई की बात है? पर यदि
भला काम करके दुःख उठाते हो और
धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को
भाता है।
21 और तुम इसी के लिये बुलाए
भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे
लिये दुःख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे

† **2:16** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* अर्थात्, वे अपने आपको स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में समझते थे, जैसे स्वतंत्रता का अधिकार हो।

गया है कि तुम भी उसके पद-चिन्ह पर
चलो।
22 न तो उसने पाप किया,
और न उसके मुँह से छल की कोई
बात निकली। *([illegible]. 53:9,
2 [illegible]. 5:21)*
23 वह गाली सुनकर गाली नहीं देता
था, और दुःख उठाकर किसी को भी
धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको
सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था।
([illegible]. 53:7, 1 [illegible]. 4:19)
24 *[illegible]*[‡] क्रूस पर
चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये
मर करके धार्मिकता के लिये जीवन
बिताएँ। उसी के मार खाने से तुम
चंगे हुए। *([illegible]. 53:4-5,12, [illegible].
3:13)*
25 क्योंकि तुम पहले भटकी हुई भेड़ों
के समान थे, पर अब अपने प्राणों के
रखवाले और चरवाहे के पास फिर लौट
आ गए हो। *([illegible]. 53:6, [illegible].
34:5-6)*

3

[illegible]

1 हे पत्नियों, तुम भी अपने पति के
अधीन रहो। इसलिए कि यदि इनमें से
कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों,
2 तो भी तुम्हारे भय सहित पवित्र
चाल-चलन को देखकर बिना वचन के
अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन के
द्वारा खिंच जाएँ।
3 और *[illegible]*[*], अर्थात् बाल
गूँथने, और सोने के गहने, या भाँति-
भाँति के कपड़े पहनना।
4 वरन् तुम्हारा छिपा हुआ और
गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की
दीनता की अविनाशी सजावट से
सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की
दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है।
5 और पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियाँ
भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं,
अपने आपको इसी रीति से संवारती
और अपने-अपने पति के अधीन रहती
थीं।
6 जैसे सारा अब्राहम की आज्ञा
मानती थी और उसे स्वामी कहती थी।
अतः तुम भी यदि भलाई करो और
किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो
तो उसकी बेटियाँ ठहरोगी।

[illegible]

7 वैसे ही हे पतियों, तुम भी
बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन
निर्वाह करो और स्त्री को *[illegible]*[†] जानकर उसका आदर करो,
यह समझकर कि हम दोनों जीवन के
वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी
प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ।

[illegible]

8 अतः सब के सब एक मन और
दयालु और भाईचारे के प्रेम रखनेवाले,
और करुणामय, और नम्र बनो।
9 बुराई के बदले बुराई मत करो और
न गाली के बदले गाली दो; पर इसके
विपरीत आशीष ही दो: क्योंकि तुम
आशीष के वारिस होने के लिये बुलाए
गए हो।
10 क्योंकि
"जो कोई जीवन की इच्छा रखता है,
और अच्छे दिन देखना चाहता है,

---

‡ **2:24** *[illegible]:* प्रभु यीशु से इस तरह से व्यवहार किया गया जैसे कि वह एक पापी था, ताकि हमारे साथ ऐसा व्यवहार किया जाए जैसे कि हमने पाप नहीं किया हो जैसे कि हम धर्मी है। * **3:3** *[illegible]:* यह उनके लिए मुख्य या सिद्धान्तिक बात न हो; उनका मन इन बातों पर न लगे। † **3:7** *[illegible]:* यह इसलिए किया जाता है क्योंकि यह शरीर मिट्टी के जैसा निर्बल और कमजोर पात्र हैं जो आसानी से टूट जाता हैं।

वह अपनी जीभ को बुराई से,
और अपने होठों को छल की बातें करने
से रोके रहे।
11 वह बुराई का साथ छोड़े, और
भलाई ही करे;
वह मेल मिलाप को ढूँढ़े, और उसके
यत्न में रहे।
12 क्योंकि प्रभु की आँखें धर्मियों पर
लगी रहती हैं,
और *[illegible]*‡,
परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के विमुख
रहता है।" ***([illegible]. 34:15,16, [illegible]. 9:31, [illegible]. 15:29)***

[illegible]

13 यदि तुम भलाई करने में उत्तेजित
रहो तो तुम्हारी बुराई करनेवाला फिर
कौन है?
14 यदि तुम धार्मिकता के कारण
दुःख भी उठाओ, तो धन्य हो; पर उनके
डराने से मत डरो, और न घबराओ,
15 पर मसीह को प्रभु जानकर
अपने-अपने मन में पवित्र समझो,
और जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के
विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने
के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता
और भय के साथ;
16 और विवेक भी शुद्ध रखो,
इसलिए कि जिन बातों के विषय में
तुम्हारी बदनामी होती है उनके विषय
में वे, जो मसीह में तुम्हारे अच्छे चाल-
चलन का अपमान करते हैं, लज्जित
हों।
17 क्योंकि यदि परमेश्वर की यही
इच्छा हो कि तुम भलाई करने के
कारण दुःख उठाओ, तो यह बुराई करने
के कारण दुःख उठाने से उत्तम है।

[illegible]

18 इसलिए कि मसीह ने भी, अर्थात्
अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के
कारण एक बार दुःख उठाया, ताकि हमें
परमेश्वर के पास पहुँचाए; वह शरीर
के भाव से तो मारा गया, पर आत्मा के
भाव से जिलाया गया।
19 उसी में उसने जाकर कैदी
आत्माओं को भी प्रचार किया।
20 जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा
न मानी जब परमेश्वर नूह के दिनों
में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह
जहाज बन रहा था, जिसमें बैठकर
कुछ लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के
द्वारा बच गए।
21 और उसी पानी का दृष्टान्त भी,
अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी
उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है;
उससे शरीर के मैल को दूर करने का
अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से
परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ
है।
22 वह स्वर्ग पर जाकर परमेश्वर
के दाहिनी ओर विराजमान है; और
स्वर्गदूतों, अधिकारियों और शक्तियों
को उसके अधीन किया गया है। ***([illegible]. 1:20,21, [illegible]. 110:1)***

4

[illegible]

1 इसलिए जबकि मसीह ने शरीर
में होकर दुःख उठाया तो तुम भी उसी
मनसा को हथियार के समान धारण
करो, क्योंकि जिसने शरीर में दुःख
उठाया, वह पाप से छूट गया,
2 ताकि भविष्य में अपना
शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों की
अभिलाषाओं के अनुसार नहीं वरन्

‡ **3:12** *[illegible]:* वह उनकी प्रार्थनाएँ सुनाता हैं। क्योंकि परमेश्वर प्रार्थना सुननेवाला हैं, इसलिए हम उसके पास जाने के लिए और अपनी इच्छाओं को बताने के लिए हर समय स्वतंत्र हैं।

परमेश्वर की इच्छा के अनुसार
व्यतीत करो।
3 क्योंकि अन्यजातियों की इच्छा
के अनुसार काम करने, और लुचपन
की बुरी अभिलाषाओं, मतवालापन,
लीलाक्रीड़ा, पियक्कड़पन, और
घृणित मूर्तिपूजा में जहाँ तक हमने
पहले से समय गँवाया, वही बहुत
हुआ।
4 इससे वे अचम्भा करते हैं, कि तुम
ऐसे भारी लुचपन में उनका साथ नहीं
देते, और इसलिए वे बुरा-भला कहते
हैं।
5 पर वे उसको जो जीवितों और
मरे हुओं का न्याय करने को तैयार हैं,
[illegible][*]। ***(2 [illegible]. 4:1)***
6 क्योंकि मरे हुओं को भी सुसमाचार
इसलिए सुनाया गया, कि शरीर में तो
मनुष्यों के अनुसार उनका न्याय हुआ,
पर आत्मा में वे परमेश्वर के अनुसार
जीवित रहें।

[illegible]

7 सब बातों का अन्त तुरन्त
होनेवाला है; इसलिए संयमी होकर
प्रार्थना के लिये सचेत रहो। ***([illegible]. 5:8, [illegible]. 6:18)***
8 सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक
दूसरे से अधिक प्रेम रखो; क्योंकि
[illegible][†]। ***([illegible]. 10:12)***
9 बिना कुड़कुड़ाए एक दूसरे का
अतिथि-सत्कार करो।
10 जिसको जो वरदान मिला है,
वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के
अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान
एक दूसरे की सेवा में लगाए।
11 यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले
मानो परमेश्वर का वचन है; यदि कोई
सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो
परमेश्वर देता है; जिससे सब बातों
में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की
महिमा प्रगट हो। महिमा और सामर्थ्य
युगानुयुग उसी की है। आमीन।

[illegible]

12 हे प्रियों, जो दुःख रूपी अग्नि
तुम्हारे परखने के लिये तुम में भड़की
है, इससे यह समझकर अचम्भा न करो
कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही
है।
13 पर जैसे-जैसे *[illegible]*[‡], जिससे उसकी महिमा
के प्रगट होते समय भी तुम आनन्दित
और मगन हो।
14 फिर यदि मसीह के नाम के लिये
तुम्हारी निन्दा की जाती है, तो धन्य
हो; क्योंकि महिमा की आत्मा, जो
परमेश्वर की आत्मा है, तुम पर छाया
करती है। ***([illegible] 5:11-12)***
15 तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या
चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में
हाथ डालने के कारण दुःख न पाए।
16 पर यदि मसीही होने के कारण
दुःख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस
बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।
17 क्योंकि वह समय आ पहुँचा है,
कि पहले परमेश्वर के लोगों का न्याय
किया जाए, और जबकि न्याय का
आरम्भ हम ही से होगा तो उनका
क्या अन्त होगा जो परमेश्वर के
सुसमाचार को नहीं मानते? ***([illegible].***

---

* **4:5** *[illegible]:* अर्थात्, वे यह काम दण्ड से मुक्ति के लिए न करें। वे इस छोटी सी गलती के लिए दोषी हैं और उन्हें इसके लिए परमेश्वर को उत्तर देना होगा। † **4:8** *[illegible]:* दूसरों से प्रेम करना कई सारी बुराइयों को उनमें ढाँप देता या छिपा देता हैं, जिसे आप ध्यान नहीं देंगे। ‡ **4:13** *[illegible]:* अर्थात्, एक ही कारण के लिए वह दुःख को सह रहें हैं और दण्डित किए जाते हैं।

12:24,25, [illegible]. 25:29, [illegible]. 9:6)

18 और

“यदि धर्मी व्यक्ति ही कठिनता से उद्धार पाएगा,
तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना?” ***([illegible]. 11:31)***

19 इसलिए जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुःख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए, अपने-अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें।

5

[illegible] [illegible] [illegible]

1 तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उनके समान प्राचीन और मसीह के दुःखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूँ।

2 कि परमेश्वर के उस झुण्ड की, जो तुम्हारे बीच में है रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं, पर मन लगाकर।

3 जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन् झुण्ड के लिये आदर्श बनो।

4 और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुर्झाने का नहीं।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

5 हे नवयुवकों, तुम भी वृद्ध पुरुषों के अधीन रहो, वरन् तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बाँधे रहो, क्योंकि

“परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है,
परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।”

6 इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे *[illegible] [illegible] [illegible]**, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए।

7 अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है।

8 *[illegible] [illegible]*†, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किसको फाड़ खाए।

9 विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो, कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही दुःख भुगत रहे हैं।

10 अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और *[illegible] [illegible]*‡।

11 उसी का साम्राज्य युगानुयुग रहे। आमीन।

[illegible] [illegible]

12 मैंने सिलवानुस के हाथ, जिसे मैं विश्वासयोग्य भाई समझता हूँ, संक्षेप में लिखकर तुम्हें समझाया है, और यह गवाही दी है कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही है, इसी में स्थिर रहो।

13 जो बाबेल में तुम्हारे समान चुने हुए लोग हैं, वह और मेरा पुत्र मरकुस तुम्हें नमस्कार कहते हैं।

14 प्रेम से चुम्बन लेकर एक दूसरे को नमस्कार करो।

* **5:6** *[illegible] [illegible] [illegible]:* एक छोटा स्थान या पद लेने के लिए तैयार रहो, इस प्रकार, जैसे वह स्थान आपके लिए है। जो आप से सम्बंधित नहीं हैं उसके लिए अहंकार मत करो। † **5:8** *[illegible] [illegible]:* इसका मतलब हैं कि शैतान के चाल और शक्ति के विरुद्ध हम अपने आपकी रखवाली करें। ‡ **5:10** *[illegible] [illegible]:* परीक्षाओं के माध्यम से, दुःख की प्रवृत्ति हमें मजबूत बनाने के लिए है।

तुम सब को जो मसीह में हो शान्ति मिलती रहे।

पतरस की दूसरी पत्री

[illegible]

इस पत्र का लेखक भी प्रेरित पतरस है 2 पतरस 1:1 और 3:1 में वह इसका स्पष्टीकरण भी करता है और इस पत्र का लेखक यीशु के रूपान्तरण का गवाह होने का दावा करता था (1:16-18)। शुभ सन्देश वृत्तान्तों के अनुसार पतरस उन तीन शिष्यों में एक था जो रूपान्तरण के समय यीशु के साथ थे। (अन्य दो शिष्य, याकूब और यूहन्ना थे।) इस पत्र का लेखक यह भी कहता है कि वह शहीद होनेवाला है (1:14)। यूह. 21:18-19 में यीशु ने भविष्यद्वाणी कर दी थी कि पतरस बन्दी बनाये जाने के बाद शहीद होगा।

[illegible]

लगभग ई.स. 65 - 68

सम्भवतः रोम से लिखा गया था जहाँ प्रेरित अपने अन्तिम दिन गिन रहा था।

[illegible]

उसके पाठक सम्भवतः वे ही थे जिन्हें उसने प्रथम पत्र लिखा था- उत्तरी एशिया माइनर के विश्वासी।

[illegible]

पतरस ने मसीही विश्वास का आधार स्मरण करवाने के लिए यह पत्र लिखा था (1:12-13, 16-21)। और प्रेरितीय परम्परा की पुष्टि हेतु विश्वासियों की भावी पीढ़ी के निर्देशन हेतु भी (1:15)। पतरस ने यह पत्र इसलिए लिखा कि वह जानता था कि समय कम है और परमेश्वर के लोग अनेक संकटों में हैं (1:13-14, 2:1-3)। पतरस ने आगामी झूठे शिक्षकों के विरुद्ध अपने पाठकों को चेतावनी दी थी (2:1-22) क्योंकि वे प्रभु के शीघ्र पुनः आगमन का इन्कार करते थे (3:3-4)।

[illegible]

झूठे शिक्षकों के खिलाफ चेतावनी

रूपरेखा

1. अभिवादन — 1:1, 2
2. मसीही सद्‌गुणों का विकास — 1:3-11
3. पतरस के सन्देश का उद्देश्य — 1:12-21
4. झूठे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी — 2:1-22
5. मसीह का पुनः आगमन — 3:1-16
6. उपसंहार — 3:17, 18

[illegible]

1 शमौन पतरस की ओर से जो
यीशु मसीह का दास और प्रेरित है,
उन लोगों के नाम जिन्होंने हमारे
परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह
की धार्मिकता से हमारे जैसा बहुमूल्य
विश्वास प्राप्त किया है।
2 *[illegible]**
तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए।

[illegible]

3 क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ्य
ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से
सम्बंध रखता है, हमें उसी की पहचान
के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी
ही महिमा और सद्‌गुण के अनुसार
बुलाया है।
4 जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य
और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं
ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट
से छूटकर जो संसार में बुरी

* **1:2** *[illegible] .... [illegible]:* अनुग्रह और शान्ति हमारे लिए भरपूर मात्रा में हैं या बहुतायत से हम पर प्रदत्त होने की उम्मीद की जा सकती है, यदि हमें परमेश्वर की और उद्धारकर्ता का सच्चा ज्ञान है।

अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय
स्वभाव के सहभागी हो जाओ।
5 और इसी कारण तुम सब प्रकार
का यत्न करके, अपने विश्वास पर
सद्गुण, और सद्गुण पर समझ,
6 और समझ पर संयम, और संयम
पर धीरज, और धीरज पर भक्ति,
7 और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति,
और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते
जाओ।
8 क्योंकि यदि ये बातें तुम में
वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें
हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में
निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।
9 क्योंकि जिसमें ये बातें नहीं, *[illegible]*[†], और अपने पूर्वकाली पापों से
धुलकर शुद्ध होने को भूल बैठा है।
10 इस कारण हे भाइयों, अपने
बुलाए जाने, और चुन लिये जाने को
सिद्ध करने का भली भाँति यत्न करते
जाओ, क्योंकि यदि ऐसा करोगे, तो
कभी भी ठोकर न खाओगे;
11 वरन् इस रीति से तुम हमारे प्रभु
और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त
राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने
पाओगे।

[illegible]

12 इसलिए यद्यपि तुम ये बातें
जानते हो, और जो सत्य वचन तुम्हें
मिला है, उसमें बने रहते हो, तो भी
मैं तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाने को
सर्वदा तैयार रहूँगा।
13 और मैं यह अपने लिये उचित
समझता हूँ, कि जब तक मैं इस डेरे
में हूँ, तब तक तुम्हें सुधि दिलाकर
उभारता रहूँ।
14 क्योंकि यह जानता हूँ, कि मसीह
के वचन के अनुसार मेरे डेरे के गिराए
जाने का समय शीघ्र आनेवाला है,
जैसा कि हमारे प्रभु यीशु मसीह ने मुझ
पर प्रकट किया है।
15 इसलिए मैं ऐसा यत्न करूँगा,
कि मेरे संसार से जाने के बाद तुम इन
सब बातों को सर्वदा स्मरण कर सको।

[illegible]

16 क्योंकि जब हमने तुम्हें अपने
प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य का, और
आगमन का समाचार दिया था तो
वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का
अनुकरण नहीं किया था वरन् हमने
आप ही उसके प्रताप को देखा था।
17 कि उसने परमेश्वर पिता से
आदर, और महिमा पाई जब उस
प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई
"यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न
हूँ।" ***([illegible]. 2:7, [illegible]. 42:1)***
18 और जब हम उसके साथ पवित्र
पहाड़ पर थे, तो स्वर्ग से यही वाणी
आते सुनी।
19 और हमारे पास जो
भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस
घटना से दृढ़ ठहरा है और तुम यह
अच्छा करते हो, कि जो यह समझकर
उस पर ध्यान करते हो, कि वह एक
दीया है, जो अंधियारे स्थान में उस
समय तक प्रकाश देता रहता है जब
तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा
तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे।
20 पर पहले यह जान लो कि
पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी
किसी की अपने ही विचारधारा के
आधार पर पूर्ण नहीं होती।
21 क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी
मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर
भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे
जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

† **1:9** *[illegible]*: मतलब आँखें बन्द करना, जैसे वह एक जो स्पष्ट नहीं देख सकता और "पास दृष्टिवाला" हैं।

2

[illegible] [illegible]

1 जिस प्रकार उन लोगों में झूठे भविष्यद्वक्ता थे उसी प्रकार तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे, जो नाश करनेवाले पाखण्ड का उद्‍घाटन छिप छिपकर करेंगे और उस प्रभु का जिसने उन्हें मोल लिया है इन्कार करेंगे और अपने आपको शीघ्र विनाश में डाल देंगे।

2 और बहुत सारे उनके समान लुचपन करेंगे, जिनके कारण सत्य के मार्ग की निन्दा की जाएगी। ***([illegible]. 2:24, [illegible]. 36:22)***

3 और वे लोभ के लिये बातें गढ़कर तुम्हें अपने लाभ का कारण बनाएँगे, और जो दण्ड की आज्ञा उन पर पहले से हो चुकी है, उसके आने में कुछ भी देर नहीं, और उनका विनाश उँघता नहीं।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

4 क्योंकि जब *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]**, पर नरक में भेजकर अंधेरे कुण्डों में डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें।

5 और प्राचीन युग के संसार को भी न छोड़ा, वरन् भक्तिहीन संसार पर महा जल-प्रलय भेजकर धार्मिकता के प्रचारक नूह समेत आठ व्यक्तियों को बचा लिया; ***([illegible]. 6:5-8, [illegible]. 7:23)***

6 और सदोम और गमोरा के नगरों को विनाश का ऐसा दण्ड दिया, कि उन्हें भस्म करके राख में मिला दिया ताकि वे आनेवाले भक्तिहीन लोगों की शिक्षा के लिये एक दृष्टान्त बनें ***([illegible]. 1:7, [illegible]. 19:24)***

7 और धर्मी लूत को जो अधर्मियों के अशुद्ध चाल-चलन से बहुत दुःखी था छुटकारा दिया। ***([illegible]. 19:12-15)***

8 (क्योंकि वह धर्मी उनके बीच में रहते हुए, और उनके अधर्म के कामों को देख देखकर, और सुन सुनकर, हर दिन अपने सच्चे मन को पीड़ित करता था)।

9 तो प्रभु के भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है।

10 विशेष करके उन्हें जो अशुद्ध अभिलाषाओं के पीछे शरीर के अनुसार चलते, और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं

वे ढीठ, और हठी हैं, और ऊँचे पदवालों को बुरा-भला कहने से नहीं डरते।

11 तो भी स्वर्गदूत जो शक्ति और सामर्थ्य में उनसे बड़े हैं, प्रभु के सामने उन्हें बुरा-भला कहकर दोष नहीं लगाते।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

12 पर ये लोग निर्बुद्धि पशुओं ही के तुल्य हैं, जो पकड़े जाने और नाश होने के लिये उत्पन्न हुए हैं; और जिन बातों को जानते ही नहीं, उनके विषय में औरों को बुरा-भला कहते हैं, वे अपनी सड़ाहट में आप ही सड़ जाएँगे।

13 औरों का बुरा करने के बदले उन्हीं का बुरा होगा; उन्हें दिन दोपहर सुख-विलास करना भला लगता है; यह कलंक और दोष है जब वे तुम्हारे साथ खाते पीते हैं, तो अपनी ओर से प्रेम भोज करके भोग-विलास करते हैं।

* **2:4** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*: यदि परमेश्वर ने उन्हें इतने गम्भीर रूप से दण्ड दिया हों, तो झूठे शिक्षक इससे भागने की आशा नहीं रख सकते।

14 उनकी [illegible]
[illegible][†], और
वे पाप किए बिना रुक नहीं सकते; वे
चंचल मनवालों को फुसला लेते हैं;
उनके मन को लोभ करने का अभ्यास
हो गया है, वे सन्ताप की सन्तान हैं।
15 वे सीधे मार्ग को छोड़कर भटक
गए हैं, और बओर के पुत्र बिलाम के
मार्ग पर हो लिए हैं; जिसने अधर्म
की मजदूरी को प्रिय जाना; ***([illegible]. 22:5-7)***
16 पर उसके अपराध के विषय में
उलाहना दिया गया, यहाँ तक कि
अबोल गदही ने मनुष्य की बोली से
उस भविष्यद्वक्ता को उसके बावलेपन
से रोका। ***([illegible]. 22:26-31)***
17 ये लोग सूखे कुएँ, और आँधी
के उड़ाए हुए बादल हैं, उनके लिये
अनन्त अंधकार ठहराया गया है।

[illegible]

18 वे व्यर्थ घमण्ड की बातें कर करके
लुचपन के कामों के द्वारा, उन लोगों
को शारीरिक अभिलाषाओं में फँसा
लेते हैं, जो भटके हुओं में से अभी
निकल ही रहे हैं।
19 वे उन्हें स्वतंत्र होने की प्रतिज्ञा
तो देते हैं, पर आप ही सड़ाहट के दास
हैं, क्योंकि जो व्यक्ति जिससे हार गया
है, वह उसका दास बन जाता है।
20 और जब वे प्रभु और उद्धारकर्ता
यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार
की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच
निकले, और फिर उनमें फँसकर हार
गए, तो उनकी पिछली दशा पहली से
भी बुरी हो गई है।
21 क्योंकि धार्मिकता के मार्ग का
न जानना ही उनके लिये इससे भला
होता, कि उसे जानकर, उस पवित्र
आज्ञा से फिर जाते, जो उन्हें सौंपी गई
थी।
22 उन पर यह कहावत ठीक बैठती
है, कि कुत्ता अपनी छाँट की ओर और
नहलाई हुई सूअरनी कीचड़ में लोटने
के लिये फिर चली जाती है। ***([illegible]. 26:11)***

3

[illegible]

1 हे प्रियों, अब मैं तुम्हें यह दूसरी
पत्री लिखता हूँ, और दोनों में सुधि
दिलाकर तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता
हूँ,
2 कि तुम उन बातों को, जो पवित्र
भविष्यद्वक्ताओं ने पहले से कही हैं
और प्रभु, और उद्धारकर्ता की उस
आज्ञा को स्मरण करो, जो तुम्हारे
प्रेरितों के द्वारा दी गई थी।
3 और यह पहले जान लो,
कि अन्तिम दिनों में हँसी-उपहास
करनेवाले आएँगे, जो अपनी ही
अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे।
4 और कहेंगे, "उसके आने की
प्रतिज्ञा कहाँ गई? क्योंकि जब से
पूर्वज सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है,
जैसा सृष्टि के आरम्भ से था।"
5 वे तो जान बूझकर यह भूल गए,
कि परमेश्वर के वचन के द्वारा से
आकाश प्राचीनकाल से विद्यमान है
और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल
में स्थिर है ***([illegible]. 1:6-9)***
6 इन्हीं के द्वारा उस युग का जगत
जल में डूबकर नाश हो गया। ***([illegible]. 7:11-21)***
7 पर वर्तमानकाल के आकाश और
पृथ्वी [illegible][*]
इसलिए रखे हैं, कि जलाए जाएँ; और

---

† **2:14** *[illegible]:* "बसा हुआ" यह शब्द गलत अभिलाषा से भरें होने को दर्शाने के लिए उपयोग्य किया है, जिसने उनके मन पर पूर्ण रूप से अधिकार कर लिया हैं। * **3:7** *[illegible]:* केवल परमेश्वर की इच्छा पर निर्भर होना। उन्हें सिर्फ आज्ञा देना हैं और सभी नष्ट हो जाएगा।

वह भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और
नाश होने के दिन तक ऐसे ही रखे
रहेंगे।

8 हे प्रियों, यह एक बात तुम से
छिपी न रहे, कि प्रभु के यहाँ एक दिन
हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष
एक दिन के बराबर हैं। ***([illegible]. 90:4)***
9 *[illegible]*
[illegible][†],
जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर
तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और
नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन्
यह कि सब को मन फिराव का अवसर
मिले। ***([illegible]. 2:3-4)***
10 परन्तु *[illegible]*[‡] चोर के
समान आ जाएगा, उस दिन आकाश
बड़े शोर के साथ जाता रहेगा, और
तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल
जाएँगे, और पृथ्वी और उसके कामों
का न्याय होगा।
11 तो जबकि ये सब वस्तुएँ, इस
रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें
पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे
मनुष्य होना चाहिए,
12 और परमेश्वर के उस दिन की
प्रतीक्षा किस रीति से करनी चाहिए
और उसके जल्द आने के लिये कैसा
यत्न करना चाहिए; जिसके कारण
आकाश आग से पिघल जाएँगे, और
आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर
गल जाएँगे। ***([illegible]. 34:4)***
13 पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार
हम एक नये आकाश और नई पृथ्वी
की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता
वास करेगी। ***([illegible]. 60:21, [illegible]. 65:17, [illegible]. 66:22, [illegible]. 21:1,27)***

[illegible]

14 इसलिए, हे प्रियों, जबकि तुम
इन बातों की आस देखते हो तो यत्न
करो कि तुम शान्ति से उसके सामने
निष्कलंक और निर्दोष ठहरो।
15 और हमारे प्रभु के धीरज को
उद्धार समझो, जैसा हमारे प्रिय भाई
पौलुस ने भी उस ज्ञान के अनुसार जो
उसे मिला, तुम्हें लिखा है।
16 वैसे ही उसने अपनी सब पत्रियों
में भी इन बातों की चर्चा की है जिनमें
कितनी बातें ऐसी हैं, जिनका समझना
कठिन है, और अनपढ़ और चंचल
लोग उनके अर्थों को भी पवित्रशास्त्र
की अन्य बातों के समान खींच तानकर
अपने ही नाश का कारण बनाते हैं।
17 इसलिए हे प्रियों तुम लोग
पहले ही से इन बातों को जानकर
चौकस रहो, ताकि अधर्मियों के भ्रम
में फँसकर अपनी स्थिरता को हाथ से
कहीं खो न दो।
18 पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता
यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में
बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी
हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।

---

† **3:9** *[illegible]:* अर्थात्, यह अनुमान नहीं लगाया जाना चाहिए कि वह असफल हो जाएगा क्योंकि उनकी प्रतिज्ञा पूरी होने में अधिक समय के लिये देर हो गई हैं। ‡ **3:10** *[illegible]:* अर्थात्, वह दिन जिसमें वह प्रकट हो जाएगा, वह उनका दिन कहा जाता हैं, क्योंकि तब वह सभी के न्यायाधीश के रूप में भव्य और प्रमुख उद्देश्य होगा।

यूहन्ना की पहली पत्री

[illegible]

इस पत्र में लेखक की पहचान प्रकट नहीं है परन्तु कलीसिया की दृढ़, अटल तथा आरम्भिक गवाही है कि इसका लेखक यीशु का शिष्य, प्रेरित यूहन्ना था (लूका 6:13,14)। यद्यपि इन पत्रों में यूहन्ना का नाम नहीं है, फिर भी तीन विश्वसनीय संकेत उसे ही लेखक दर्शाते हैं। पहला, आरम्भिक दूसरी शताब्दी के लेखक उसे इसका लेखक बताते हैं। दूसरा इस पत्री की शब्दावली एवं लेखन शैली वैसी ही है जैसी यूहन्ना द्वारा लिखे गये शुभ सन्देश की। तीसरा, प्रेरित लिखता है कि उसने यीशु को देखा और उसका स्पर्श भी किया है जो इस प्रेरित के बारे में एक तथ्य है (1 यूह. 1:1-4; 4:14)।

[illegible]

लगभग ई.स. 85 - 95

यूहन्ना ने अपने जीवन के अंतिम समय में इफिसुस से यह पत्र लिखा था। उसने अपनी अधिकांश वृद्धावस्था वहीं व्यतीत की थी।

[illegible]

इस पत्र में यूहन्ना के पाठकों को स्पष्ट नहीं किया गया है। तथापि पत्र की विषयवस्तु से प्रकट होता है कि उसने विश्वासियों ही को यह पत्र लिखा था (1 यूह. 1:3-4; 2:12-14)। सम्भव है कि यह पत्र अनेक स्थानों में पवित्र जनों के लिए था। सामान्यत: सब स्थानों के विश्वासियों को 2:1, "हे मेरे बालकों"।

[illegible]

यूहन्ना ने मसीही सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए यह पत्र लिखा था कि हमारा आनन्द पूरा हो जाये और हम पाप से बचाए जायें, उद्धार का विश्वास दिलाने के लिए और विश्वासियों को मसीह की व्यक्तिगत सहभागिता में लाने के लिए। यूहन्ना विशेष करके झूठे शिक्षकों की चर्चा करता है जो कलीसिया से अलग हो गये थे तथा विश्वासियों को शुभ सन्देश के सत्य से पथभ्रष्ट कर रहे थे।

[illegible]

परमेश्वर के साथ संगती

रूपरेखा

1. देहधारण का सत्य — 1:1-4
2. सहभागिता — 1:5-2:17
3. भ्रम को पहचानना — 2:18-27
4. वर्तमान में पवित्र जीवन की प्रेरणा — 2:28-3:10
5. विश्वास का आधार प्रेम — 3:11-24
6. झूठी शिक्षाओं को पहचानना — 4:1-6
7. पवित्रता के लिए आवश्यक — 4:7-5:21

[illegible]

1 उस जीवन के वचन के विषय में
[illegible]*, जिसे हमने सुना,
और जिसे अपनी आँखों से देखा, वरन्
जिसे हमने ध्यान से देखा और हाथों से
छुआ।

2 (यह जीवन प्रगट हुआ, और हमने
उसे देखा, और उसकी गवाही देते
हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का
समाचार देते हैं जो पिता के साथ था
और हम पर प्रगट हुआ)।

3 जो कुछ हमने देखा और सुना
है उसका समाचार तुम्हें भी देते
हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे

---

* **1:1** [illegible]: यहाँ पर प्रभु यीशु मसीह को संदर्भित करता हैं, या वह "वचन" जो देहधारी हुआ।

साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।
4 और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं, कि *???????? ????? ????*
?? ???† ।

???????? ?? ???
????????

5 जो समाचार हमने उससे सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है; कि परमेश्वर ज्योति है और *????? ???*
?? ??????? ????‡ ।
6 यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अंधकार में चलें, तो हम झूठ बोलते हैं और सत्य पर नहीं चलते।
7 पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं और उसके पुत्र यीशु मसीह का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। ***(??. 2:5)***
8 यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं और हम में सत्य नहीं।
9 यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। ***(??. 32:5, ???. 28:13)***
10 यदि हम कहें कि हमने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है।

2

????? ????? ?????

1 मेरे प्रिय बालकों, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी यीशु मसीह।
2 और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है: और केवल हमारे ही नहीं, वरन् सारे जगत के पापों का भी।

????????? ?? ????????

3 यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, तो इससे हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं।
4 जो कोई यह कहता है, "मैं उसे जान गया हूँ," और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है; और उसमें सत्य नहीं।
5 पर जो कोई उसके वचन पर चले, उसमें सचमुच *???????? ???*
*????? ????? ??? ??** । हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उसमें हैं।
6 जो कोई यह कहता है, कि मैं उसमें बना रहता हूँ, उसे चाहिए कि वह स्वयं भी वैसे ही चले जैसे यीशु मसीह चलता था।

???? ????? ???

7 हे प्रियों, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिखता, पर वही पुरानी आज्ञा जो आरम्भ से तुम्हें मिली है; यह पुरानी आज्ञा वह वचन है, जिसे तुम ने सुना है।
8 फिर भी मैं तुम्हें नई आज्ञा लिखता हूँ; और यह तो उसमें और तुम में सच्ची ठहरती है; क्योंकि अंधकार

† **1:4** *???????? ?????? ???? ?? ???:* उनका आनन्द पूरा हो जाता यदि उन्हें परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ संगति मिलती क्योंकि उनका वास्तविक आनन्द उनके उद्धारकर्ता से मिल सकता था। ‡ **1:5** *????? ??? ?? ?????? ?????:* यहाँ पर यह अभिव्यक्ति परमेश्वर के लिये सन्दर्भित किया गया हैं कि वह एकदम पूर्ण हैं और उनमें कुछ भी अपूर्ण नहीं है * **2:5** *???????? ?? ??????* *????? ??? ??:* यदि सच्चा प्रेम हृदय में हैं, तो यह जीवन में हमारे साथ चलेगा या यह कि प्रेम और आज्ञाकारिता उसी का भाग हैं।

मिटता जा रहा है और सत्य की
ज्योति अभी चमकने लगी है।
9 जो कोई यह कहता है, कि मैं
ज्योति में हूँ; और अपने भाई से बैर
रखता है, वह अब तक अंधकार ही में
है।
10 जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता
है, वह ज्योति में रहता है, और ठोकर
नहीं खा सकता।
11 पर जो कोई अपने भाई से बैर
रखता है, वह अंधकार में है, और
[illegible][†]; और नहीं
जानता, कि कहाँ जाता है, क्योंकि
अंधकार ने उसकी आँखें अंधी कर दी
हैं।

[illegible]

12 हे बालकों, मैं तुम्हें इसलिए
लिखता हूँ, कि उसके नाम से तुम्हारे
पाप क्षमा हुए। ***([illegible]. 25:11)***
13 हे पिताओं, मैं तुम्हें इसलिए
लिखता हूँ, कि जो आदि से है, तुम उसे
जानते हो। हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिए
लिखता हूँ, कि तुम ने उस दुष्ट पर जय
पाई है: हे बालकों, मैंने तुम्हें इसलिए
लिखा है, कि तुम पिता को जान गए
हो।
14 हे पिताओं, मैंने तुम्हें इसलिए
लिखा है, कि जो आदि से है तुम उसे
जान गए हो। हे जवानों, मैंने तुम्हें
इसलिए लिखा है, कि तुम बलवन्त हो,
और परमेश्वर का वचन तुम में बना
रहता है, और तुम ने उस दुष्ट पर जय
पाई है।

[illegible]

15 तुम न तो संसार से और न संसार
की वस्तुओं से प्रेम रखो यदि कोई
संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता
का प्रेम नहीं है।
16 क्योंकि जो कुछ संसार में है,
अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और
आँखों की अभिलाषा और जीविका का
घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं,
परन्तु संसार ही की ओर से है। ***([illegible].
13:14, [illegible]. 27:20)***
17 संसार और उसकी अभिलाषाएँ
दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर
की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा
बना रहेगा।

[illegible]

18 हे लड़कों, यह अन्तिम समय है,
और जैसा तुम ने सुना है, कि मसीह का
विरोधी आनेवाला है, उसके अनुसार
अब भी बहुत से मसीह के विरोधी
उठे हैं; इससे हम जानते हैं, कि यह
अन्तिम समय है।
19 वे निकले तो हम में से ही, परन्तु
हम में से न थे; क्योंकि यदि वे हम में से
होते, तो हमारे साथ रहते, पर निकल
इसलिए गए ताकि यह प्रगट हो कि वे
सब हम में से नहीं हैं।
20 और तुम्हारा तो उस पवित्र से
अभिषेक हुआ है, और तुम सब सत्य
जानते हो।
21 मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा,
कि तुम सत्य को नहीं जानते, पर
इसलिए, कि तुम उसे जानते हो, और
इसलिए कि कोई झूठ, सत्य की ओर
से नहीं।
22 झूठा कौन है? वह, जो यीशु के
मसीह होने का इन्कार करता है; और
मसीह का विरोधी वही है, जो पिता का
और पुत्र का इन्कार करता है।

[†] **2:11** *[illegible]:* वह उनके जैसा हैं जो अंधकार में चलता हैं, और वह जो साफ तौर पर कोई आपत्ति नहीं देखता।

23 जो कोई पुत्र का इन्कार करता है उसके पास पिता भी नहीं: जो पुत्र को मान लेता है, उसके पास पिता भी है।

24 जो कुछ तुम ने आरम्भ से सुना है वही तुम में बना रहे; जो तुम ने आरम्भ से सुना है, यदि वह तुम में बना रहे, तो तुम भी पुत्र में, और पिता में बने रहोगे।

[illegible]

25 और जिसकी उसने हम से प्रतिज्ञा की वह अनन्त जीवन है।

26 मैंने ये बातें तुम्हें उनके विषय में लिखी हैं, जो तुम्हें भरमाते हैं।

27 और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उसकी ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं, कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठा नहीं और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो। ***([illegible]. 14:26)***

[illegible]

28 अतः हे बालकों, उसमें बने रहो; कि जब वह प्रगट हो, तो हमें साहस हो, और हम उसके आने पर उसके सामने लज्जित न हों।

29 यदि तुम जानते हो, कि वह धर्मी है, तो यह भी जानते हो, कि जो कोई धार्मिकता का काम करता है, वह उससे जन्मा है।

3

1 देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ, और हम हैं भी; इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना।

2 हे प्रियों, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब यीशु मसीह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि हम उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।

3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आपको वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।

[illegible]

4 जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; और पाप तो व्यवस्था का विरोध है।

5 और तुम जानते हो, कि यीशु मसीह इसलिए प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए; और उसमें कोई पाप नहीं। (यूह. 1:29)

6 जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता: जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है, और न उसको जाना है।

7 प्रिय बालकों, किसी के भरमाने में न आना; जो धार्मिकता का काम करता है, वही उसके समान धर्मी है।

8 जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे।

9 जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है: और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि वह परमेश्वर से जन्मा है।

10 इसी से परमेश्वर की सन्तान, और शैतान की सन्तान जाने जाते हैं; जो कोई धार्मिकता नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और न वह जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता।

[illegible]

11 क्योंकि जो समाचार तुम ने आरम्भ से सुना, वह यह है, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें।

12 और कैन के समान न बनें, जो उस दुष्ट से था, और जिसने अपने भाई की हत्या की। और उसकी हत्या किस कारण की? इसलिए कि उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम धार्मिक थे। ***([illegible]. 38: 20)***

13 हे भाइयों, यदि संसार तुम से बैर करता है तो अचम्भा न करना।

14 हम जानते हैं, कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुँचे हैं; क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं। जो प्रेम नहीं रखता, वह मृत्यु की दशा में रहता है।

15 जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता।

16 हमने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए।

17 पर जिस किसी के पास संसार की सम्पत्ति हो और वह अपने भाई को जरूरत में देखकर उस पर तरस न खाना चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम कैसे बना रह सकता है? ***([illegible]. 15:7,8)***

18 हे मेरे प्रिय बालकों, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।

[illegible]

19 इसी से हम जानेंगे, कि हम सत्य के हैं; और जिस बात में हमारा मन हमें दोष देगा, उस विषय में हम उसके सामने अपने मन को आश्वस्त कर सकेंगे।

20 क्योंकि *[illegible]*[*]; और सब कुछ जानता है।

21 हे प्रियों, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के सामने साहस होता है।

22 और जो कुछ हम माँगते हैं, वह हमें उससे मिलता है; क्योंकि हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं; और जो उसे भाता है वही करते हैं।

23 और उसकी आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और जैसा उसने हमें आज्ञा दी है उसी के अनुसार आपस में प्रेम रखें।

24 और जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानता है, वह उसमें, और परमेश्वर उनमें बना रहता है: और इसी से, अर्थात् उस पवित्र आत्मा से जो उसने हमें दिया है, हम जानते हैं, कि वह हम में बना रहता है।

4

[illegible]

1 हे प्रियों, *[illegible]*[*]: वरन् आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।

2 परमेश्वर का आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो, कि जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है।

---

[*] **3:20** *[illegible]:* वह हमारे सब पापों को जानता हैं जो हम लोग विवेकपूर्ण करते हैं, और उनके सभी पापों को स्पष्ट रूप से जो हम करते हैं देखता हैं। वह इससे भी अधिक जानता है। वह सभी पापों को जानता हैं जिसे हम भूल गए हैं। [*] **4:1** *[illegible]:* हर एक पर विश्वास मत करो जो पवित्र आत्मा के प्रभाव के अधीन होने को जाहिर करते हैं।

3 और जो कोई आत्मा यीशु को नहीं
मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं
है; यही मसीह के विरोधी की आत्मा
है; जिसकी चर्चा तुम सुन चुके हो, कि
वह आनेवाला है और अब भी जगत में
है।
4 हे प्रिय बालकों, तुम परमेश्वर के
हो और उन आत्माओं पर जय पाई है;
क्योंकि जो तुम में है, वह उससे जो
संसार में है, बड़ा है।
5 वे आत्माएँ संसार की हैं, इस
कारण वे संसार की बातें बोलती हैं,
और संसार उनकी सुनता है।
6 हम परमेश्वर के हैं। जो परमेश्वर
को जानता है, वह हमारी सुनता है;
जो परमेश्वर को नहीं जानता वह
हमारी नहीं सुनता; इसी प्रकार हम
सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा
को पहचान लेते हैं।

[illegible]

7 हे प्रियों, हम आपस में प्रेम रखें;
क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है और जो
कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से
जन्मा है और परमेश्वर को जानता है।
8 जो प्रेम नहीं रखता वह परमेश्वर
को नहीं जानता है, क्योंकि परमेश्वर
प्रेम है।
9 जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है,
वह इससे प्रगट हुआ कि परमेश्वर ने
अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा
है कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ।
10 प्रेम इसमें नहीं कि हमने
परमेश्वर से प्रेम किया पर इसमें है,
कि उसने हम से प्रेम किया और हमारे
पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र
को भेजा।
11 हे प्रियों, जब परमेश्वर ने हम से
ऐसा प्रेम किया, तो हमको भी आपस
में प्रेम रखना चाहिए।

[illegible]

12 *[illegible]*†; यदि हम आपस
में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना
रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध
होता है।
13 इसी से हम जानते हैं, कि हम
उसमें बने रहते हैं, और वह हम में;
क्योंकि उसने अपनी आत्मा में से हमें
दिया है।
14 और हमने देख भी लिया और
गवाही देते हैं कि पिता ने पुत्र को
जगत का उद्धारकर्ता होने के लिए
भेजा है।
15 जो कोई यह मान लेता है, कि
यीशु परमेश्वर का पुत्र है परमेश्वर
उसमें बना रहता है, और वह परमेश्वर
में।
16 और जो प्रेम परमेश्वर हम से
रखता है, उसको हम जान गए, और
हमें उस पर विश्वास है। परमेश्वर
प्रेम है; जो प्रेम में बना रहता है
वह परमेश्वर में बना रहता है; और
परमेश्वर उसमें बना रहता है।
17 इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि
हमें न्याय के दिन साहस हो; क्योंकि
जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी
हैं।
18 *[illegible]*‡, वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर
कर देता है, क्योंकि भय का सम्बंध
दण्ड से होता है, और जो भय करता
है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।

---

† **4:12** *[illegible]*: यह संदर्भित करता हैं, वह वास्तव में कभी भी नश्वर आँखों के द्वारा नहीं देखा गया। ‡ **4:18** *[illegible]*: प्रेम एक मनोवेग नहीं हैं जो भय पैदा करता हैं, यदि मनुष्य को परमेश्वर के लिये सम्पूर्ण प्रेम हैं, तो उन्हें किसी भी बात का भय नहीं होगा।

19 हम इसलिए प्रेम करते हैं,
क्योंकि पहले उसने हम से प्रेम किया।
20 यदि कोई कहे, “मैं परमेश्वर से
प्रेम रखता हूँ,” और अपने भाई से बैर
रखे; तो वह झूठा है; क्योंकि जो अपने
भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं
रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे
उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता।
21 और उससे हमें यह आज्ञा मिली
है, कि जो कोई अपने परमेश्वर से प्रेम
रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम
रखे।

5

[illegible]
1 *[illegible]*
[illegible][*] और जो कोई उत्पन्न करनेवाले से
प्रेम रखता है, वह उससे भी प्रेम रखता
है, जो उससे उत्पन्न हुआ है।
2 जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं,
और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो
इसी से हम यह जान लेते हैं, कि हम
परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं।
3 क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यह
है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें;
और उसकी आज्ञाएँ बोझदायक नहीं।
([illegible] 11:30)
4 क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से
उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय
प्राप्त करता है, और वह विजय जिससे
संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा
विश्वास है।
5 संसार पर जय पानेवाला कौन
है? केवल वह जिसका विश्वास है, कि
यीशु, परमेश्वर का पुत्र है।

[illegible]

6 यह वही है, जो पानी और लहू के
द्वारा आया था; अर्थात् यीशु मसीह:
वह न केवल पानी के द्वारा, वरन् पानी
और लहू दोनों के द्वारा आया था।
7 और यह आत्मा है जो गवाही देता
है, क्योंकि आत्मा सत्य है।
8 और गवाही देनेवाले तीन हैं;
आत्मा, पानी, और लहू; और तीनों
एक ही बात पर सहमत हैं।
9 जब हम मनुष्यों की गवाही मान
लेते हैं, तो परमेश्वर की गवाही तो
उससे बढ़कर है; और *[illegible]*
[illegible][†] यह है, कि उसने अपने पुत्र
के विषय में गवाही दी है।
10 जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास
करता है, वह अपने ही में गवाही
रखता है; जिसने परमेश्वर पर
विश्वास नहीं किया, उसने उसे झूठा
ठहराया; क्योंकि उसने उस गवाही पर
विश्वास नहीं किया, जो परमेश्वर ने
अपने पुत्र के विषय में दी है।

[illegible]
11 और वह गवाही यह है, कि
परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया
है और यह जीवन उसके पुत्र में है।
12 जिसके पास पुत्र है, उसके पास
जीवन है; और जिसके पास परमेश्वर
का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी
नहीं है।
13 मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के
नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए
लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त
जीवन तुम्हारा है।

[illegible]
14 और हमें उसके सामने जो साहस
होता है, वह यह है; कि *[illegible]*

---

* **5:1** *[illegible]*: यह संदर्भित करता हैं कि “यीशु ही मसीह हैं” विश्वास या सच्चाई से ग्रहण और उचित अर्थों में करना चाहिए, प्रमाण प्रस्तुत करने के क्रम में कि कोई भी परमेश्वर से जन्मा हैं। † **5:9** *[illegible]*: बहुत अधिक विश्वासयोग्य हैं; परमेश्वर मनुष्यों की तुलना में अधिक सत्य और बुद्धिमान और अच्छा है।

[illegible]‡, तो हमारी सुनता है।
15 और जब हम जानते हैं, कि जो
कुछ हम माँगते हैं वह हमारी सुनता
है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ
हमने उससे माँगा, वह पाया है।
16 यदि कोई अपने भाई को ऐसा
पाप करते देखे, जिसका फल मृत्यु न
हो, तो विनती करे, और परमेश्वर उसे
उनके लिये, जिन्होंने ऐसा पाप किया
है जिसका फल मृत्यु न हो, जीवन
देगा। पाप ऐसा भी होता है जिसका
फल मृत्यु है इसके विषय में मैं विनती
करने के लिये नहीं कहता।
17 सब प्रकार का अधर्म तो पाप है,
परन्तु ऐसा पाप भी है, जिसका फल
मृत्यु नहीं।

[illegible]

18 हम जानते हैं, कि जो कोई
परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप
नहीं करता; पर जो परमेश्वर से उत्पन्न
हुआ, उसे वह बचाए रखता है: और
वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।
19 हम जानते हैं, कि हम परमेश्वर
से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश
में पड़ा है।
20 और यह भी जानते हैं, कि
परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उसने
हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे
को पहचानें, और हम उसमें जो सत्य
है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में
रहते हैं। सच्चा परमेश्वर और अनन्त
जीवन यही है।
21 हे बालकों, अपने आपको मूरतों
से बचाए रखो।

---

‡ **5:14** *[illegible]*: यह सभी प्रार्थना में उचित और आवश्यक सीमित हैं, परमेश्वर ने ऐसा कुछ भी देने की प्रतिज्ञा उसकी इच्छा के विपरीत नहीं किया हैं।

यूहन्ना की दूसरी पत्री

[illegible]

इस पत्र का लेखक प्रेरित यूहन्ना है। 2 यूहन्ना में वह स्वयं को एक “प्राचीन” कहता है। इस पत्र का शीर्षक “यूहन्ना का दूसरा पत्र” है। यह पत्र तीन की श्रृंखला में दूसरा है जो यूहन्ना के नाम से है। इस दूसरे पत्र का लक्ष्य वे झूठे शिक्षक हैं जो यूहन्ना की कलीसियाओं में भ्रमण करते हुए प्रचार कर रहे थे। उनका लक्ष्य था अपने अनुयायी बनाकर अपने उद्देश्य के निमित्त मसीही अतिथि-सत्कार का अनुचित लाभ उठाएँ।

[illegible]

लगभग ई.स. 85 - 95

लेखन स्थान सम्भवतः इफिसुस था।

[illegible]

यह पत्र जिस कलीसिया को लिखा गया था उसे यूहन्ना “चुनी हुई महिला और उसके बच्चों के नाम” कहता है।

[illegible]

यूहन्ना ने यह पत्र लिखकर “उस महिला एवं उसके बच्चों” के प्रति अपनी निष्ठा दर्शाई है और उसे प्रोत्साहित किया है कि प्रेम में रहते हुए वे प्रभु की आज्ञाओं को मानें। वह उन्हें झूठे शिक्षकों से सावधान करता है और उन्हें बताता है कि वह अति शीघ्र उनसे भेंट करेगा। यूहन्ना उसकी “बहन” को भी नमस्कार कहता है।

[illegible]

विश्वासियों का विवेक

रूपरेखा

1. अभिवादन — 1:1-3
2. प्रेम में सत्य का निर्वाहन करना — 1:4-11
3. अन्तिम नमस्कार — 1:12,13

[illegible]

1 मुझ प्राचीन की ओर से उस चुनी
हुई महिला और उसके बच्चों के नाम
जिनसे मैं सच्चा प्रेम रखता हूँ, और
केवल मैं ही नहीं, वरन् वह सब भी प्रेम
रखते हैं, जो सच्चाई को जानते हैं।
2 वह सत्य *[illegible]**, और सर्वदा हमारे साथ
अटल रहेगा;
3 परमेश्वर पिता, और पिता के पुत्र
यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह, दया,
और शान्ति हमारे साथ सत्य और प्रेम
सहित रहेंगे।

[illegible]

4 मैं बहुत आनन्दित हुआ, कि मैंने
तेरे कुछ बच्चों को उस आज्ञा के
अनुसार, जो हमें पिता की ओर से
मिली थी, सत्य पर चलते हुए पाया।
5 अब हे महिला, मैं तुझे कोई नई
आज्ञा नहीं, पर वही जो आरम्भ से
हमारे पास है, लिखता हूँ; और तुझ से
विनती करता हूँ, कि हम एक दूसरे से
प्रेम रखें।
6 और प्रेम यह है कि हम उसकी
आज्ञाओं के अनुसार चलें: यह वही
आज्ञा है, जो तुम ने आरम्भ से सुनी है
और तुम्हें इस पर चलना भी चाहिए।

[illegible]

7 क्योंकि बहुत से ऐसे भरमानेवाले
जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं
मानते, कि यीशु मसीह शरीर में होकर

---

* **1:2** *[illegible]*: सुसमाचार की सच्चाई जिसे हमने अपना लिया हैं। सत्य कहा जा सकता है कि विश्वास रखनेवालों के हृदय में एक स्थायी निवास के लिये ले लिया गया है।

आया; भरमानेवाला और मसीह का
विरोधी यही है।
8 अपने विषय में चौकस रहो; कि
जो परिश्रम हम सब ने किया है,
उसको तुम न खोना, वरन् उसका पूरा
प्रतिफल पाओ।
9 जो कोई आगे बढ़ जाता है, और
मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता,
[illegible][†]।
जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता
है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र
भी।
10 यदि कोई तुम्हारे पास आए, और
यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने
दो, और न नमस्कार करो।
11 क्योंकि जो कोई ऐसे जन को
नमस्कार करता है, वह उसके बुरे कामों
में सहभागी होता है।

[illegible]

12 मुझे बहुत सी बातें तुम्हें लिखनी
हैं, पर कागज और स्याही से लिखना
नहीं चाहता; पर आशा है, कि मैं
तुम्हारे पास आऊँ, और सम्मुख होकर
बातचीत करूँ: जिससे हमारा आनन्द
पूरा हो। ***(1 [illegible]. 1:4, 3 [illegible]. 1:13)***
13 तेरी चुनी हुई बहन के बच्चे तुझे
नमस्कार करते हैं।

[†] **1:9** *[illegible]:* उसके पास परमेश्वर के सत्य का ज्ञान या मसीह के सम्मानीय सत्य की शिक्षा नहीं हैं।

यूहन्ना की तीसरी पत्री

[illegible]

यूहन्ना के ये तीनों पत्र निश्चय ही एक लेखक की कृति हैं और अधिकांश विद्वानों का कहना है कि वह प्रेरित यूहन्ना है। यूहन्ना स्वयं को “प्राचीन” कहता है, कलीसिया में उसके स्थान और उसकी आयु के कारण। उसका आरम्भ, अन्त एवं शैली तथा दृष्टिकोण यूहन्ना के दूसरे पत्र से इतने अधिक मिलते-जुलते हैं कि संदेह ही नहीं होता कि दोनों पत्र एक ही लेखक ने न लिखे हों।

[illegible]

लगभग ई.स. 85 - 95

यूहन्ना ने एशिया माइनर के इफिसुस नगर से यह पत्र लिखा था।

[illegible]

यूहन्ना का तीसरा पत्र गयुस के नाम था। स्पष्ट है कि गयुस किसी कलीसिया का एक विशिष्ट अगुआ था जिसे यूहन्ना जानता था। गयुस अतिथि-सत्कार के लिए जाना जाता था।

[illegible]

स्थानीय कलीसिया की अगुआई में आत्म प्रतिष्ठा एवं अभिमान के विरुद्ध सावधान करना, गयुस के प्रशंसनीय आचरण का गुणगान करना कि वह सत्य के उपदेशकों की आवश्यकताओं को अपने से अधिक स्थान देता था (पद. 5-8)। दियुत्रिफेस के घृणित आचरण को दोषी ठहराना क्योंकि वह मसीह के प्रयोजन के समक्ष अपने को बड़ा बनाता था (पद. 9)। दिमेत्रियुस को सराहना कि वह एक भ्रमणशील उपदेशक एवं इस पत्र का वाहक है (पद. 12)। अपने पाठकों को सूचित करना कि वह शीघ्र ही उनके पास आएगा (पद. 14)।

[illegible]

विश्वासियों का अतिथि-सत्कार

रूपरेखा

1. प्रस्तावना — 1:1-4
2. भ्रमणशील सेवकों का अतिथि-सत्कार — 1:5-8
3. बुराई नहीं भलाई का अनुकरण करना — 1:9-12
4. उपसंहार — 1:13-15

[illegible]

1 मुझ प्राचीन की ओर से उस प्रिय
गयुस के नाम, जिससे मैं सच्चा प्रेम
रखता हूँ।
2 हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है; कि
जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है,
वैसे ही तू सब बातों में उन्नति करे, और
भला चंगा रहे।
3 क्योंकि जब भाइयों ने आकर,
*[illegible]**,
जिस पर तू सचमुच चलता है, तो मैं
बहुत ही आनन्दित हुआ।
4 मुझे इससे बढ़कर और कोई
आनन्द नहीं, कि मैं सुनूँ, कि मेरे बच्चे
सत्य पर चलते हैं।

[illegible]

5 हे प्रिय, जब भी तू भाइयों के लिए
कार्य करे और अजनबियों के लिए भी
तो विश्वासयोग्यता के साथ कर।
6 उन्होंने कलीसिया के सामने तेरे
प्रेम की गवाही दी थी। यदि तू उन्हें
उस प्रकार विदा करेगा जिस प्रकार
[illegible]† तो अच्छा करेगा।

---

* **1:3** *[illegible]:* यह कि तुम सत्य का अनुसरण लगातार करते हो, संसार में प्रचुर मात्रा में त्रुटि और बहुत से झूठे शिक्षक होते हुए भी उन तथ्यों के साथ रहें। † **1:6** *[illegible]:* मतलब हैं, उनके जैसा बनना जो परमेश्वर की सेवा करते हैं या उनके जैसे बनना जो उनके वचन के शिक्षक हैं।

7 क्योंकि वे उस नाम के लिये निकले
हैं, और अन्यजातियों से कुछ नहीं
लेते।
8 इसलिए ऐसों का स्वागत करना
चाहिए, जिससे हम भी सत्य के पक्ष
में उनके सहकर्मी हों।

[illegible]

9 मैंने कलीसिया को कुछ लिखा था;
पर दियुत्रिफेस जो उनमें बड़ा बनना
चाहता है, हमें ग्रहण नहीं करता।
10 इसलिए यदि मैं आऊँगा, तो
उसके कामों की जो वह करता है सुधि
दिलाऊँगा, कि वह हमारे विषय में
बुरी-बुरी बातें बकता है; और इस पर
भी सन्तोष न करके स्वयं ही भाइयों
को ग्रहण नहीं करता, और उन्हें जो
ग्रहण करना चाहते हैं, मना करता है
और कलीसिया से निकाल देता है।
11 हे प्रिय, बुराई के नहीं, पर भलाई
के अनुयायी हो। *[illegible]*
[illegible]‡, वह परमेश्वर की ओर से है; पर
जो बुराई करता है, उसने परमेश्वर को
नहीं देखा।
12 दिमेत्रियुस के विषय में सब ने
वरन् सत्य ने भी आप ही गवाही दी:
और हम भी गवाही देते हैं, और तू
जानता है, कि हमारी गवाही सच्ची
है।

[illegible]

13 मुझे तुझको बहुत कुछ लिखना
तो था; पर स्याही और कलम से
लिखना नहीं चाहता।
14 पर मुझे आशा है कि तुझ से शीघ्र
भेंट करूँगा: तब हम आमने-सामने
बातचीत करेंगे:
15 तुझे शान्ति मिलती रहे। यहाँ के
मित्र तुझे नमस्कार करते हैं वहाँ के
मित्रों के नाम ले लेकर नमस्कार कह
देना। ***(2 [illegible]. 1:12)***

---

‡ **1:11** *[illegible]:* परमेश्वर हमेशा अच्छा करता हैं, पता चलता हैं कि वह परमेश्वर से मेल खाता हैं।

यहूदा की पत्री

[illegible]

लेखक स्वयं को यहूदा कहता है, “जो यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई है” (1:1)। यहूदा सम्भवतः यूह. 14:22 में व्यक्त यीशु के शिष्यों में से एक था। उसे सामान्यतः यीशु का भाई भी माना जाता है। वह पहले अविश्वासी था (यूह. 7:5)। परन्तु आगे चलकर वह यीशु के स्वर्गारोहण (प्रेरि. 1:14) में अपनी माता और अन्य शिष्यों के साथ अटारी में था।

[illegible]

लगभग ई.स. 60 - 80

इस पत्र के लेखन स्थान को सिकन्दरिया से रोम तक माना जाता है।

[illegible]

यह सामान्य उक्ति, “उन बुलाये हुओं के नाम जो परमेश्वर पिता में प्रिय और यीशु मसीह के लिए सुरक्षित हैं,” सब विश्वासियों के संदर्भ में प्रतीत होता है परन्तु झूठे शिष्यों के लिए उसके सन्देश का परीक्षण करने पर प्रकट होता है कि वह किसी एक समूह की अपेक्षा सब झूठे शिक्षकों के बारे में कह रहा है।

[illegible]

यहूदा ने यह पत्र कलीसिया को स्मरण कराने के लिए लिखा कि वे लगातार सतर्क रहकर विश्वास में दृढ़ हों और झूठी शिक्षाओं का विरोध करें। उसने सब विश्वासियों को प्रेरित करने के लिए लिखा था। वह चाहता था कि वे झूठी शिक्षाओं के संकट को पहचानें और स्वयं एवं अन्य विश्वासियों को बचाएं तथा जो पथभ्रष्ट हो गये हैं उन्हें लौटा लाएँ। यहूदा अभक्त शिक्षकों के विरुद्ध लिख रहा था क्योंकि उनकी शिक्षा थी कि परमेश्वर के दण्ड की चिन्ता किए बिना वे जैसा चाहें वैसा जीवन जीएँ।

[illegible]

विश्वास के लिए संघर्ष करना

रूपरेखा

1. प्रस्तावना — 1:1, 2
2. झूठे शिक्षकों का वर्णन एवं अन्त — 1:3-16
3. मसीह के विश्वासियों को प्रोत्साहन — 1:17-25

[illegible]

1 यहूदा की ओर से जो यीशु मसीह
का दास और याकूब का भाई है, उन
बुलाए हुओं के नाम जो परमेश्वर
पिता में प्रिय और यीशु मसीह के लिये
सुरक्षित हैं।

[illegible]

2 दया और शान्ति और प्रेम तुम्हें
बहुतायत से प्राप्त होता रहे।

3 हे प्रियों, जब मैं तुम्हें उस उद्धार के
विषय में लिखने में अत्यन्त परिश्रम
से प्रयत्न कर रहा था, जिसमें हम
सब सहभागी हैं; तो मैंने तुम्हें यह
समझाना आवश्यक जाना कि उस
विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो
पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा
गया था।

4 क्योंकि कितने ऐसे मनुष्य चुपके
से हम में आ मिले हैं, *[illegible]**: ये भक्तिहीन हैं, और हमारे
परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में

* **1:4** *[illegible]*: परमेश्वर हमेशा अच्छा करता हैं, पता चलता हैं कि वह परमेश्वर से मेल खाता हैं।

बदल डालते है, और हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु यीशु मसीह का इन्कार करते हैं।

5 यद्यपि तुम सब बात एक बार जान चुके हो, तो भी मैं तुम्हें इस बात की सुधि दिलाना चाहता हूँ, कि प्रभु ने एक कुल को मिस्र देश से छुड़ाने के बाद विश्वास न लानेवालों को नाश कर दिया। ***(⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 3:16-19, ⍰⍰⍰. 14:22,23,30)***

6 फिर जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा वरन् अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अंधकार में जो सनातन के लिये है बन्धनों में रखा है।

7 जिस रीति से सदोम और गमोरा और उनके आस-पास के नगर, जो इनके समान व्यभिचारी हो गए थे और पराए शरीर के पीछे लग गए थे आग के अनन्त दण्ड में पड़कर दृष्टान्त ठहरे हैं। ***(⍰⍰⍰⍰. 19:4-25, ⍰⍰⍰⍰. 29:23, 2 ⍰⍰. 2:6)***

8 उसी रीति से ये स्वप्नदर्शी भी *⍰⍰⍰⍰-⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰*†, और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं; और ऊँचे पदवालों को बुरा-भला कहते हैं।

9 परन्तु प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने, जब शैतान से मूसा के शव के विषय में वाद-विवाद किया, तो उसको बुरा-भला कहकर दोष लगाने का साहस न किया; पर यह कहा, "प्रभु तुझे डाँटे।"

10 पर ये लोग जिन बातों को नहीं जानते, उनको बुरा-भला कहते हैं; पर जिन बातों को अचेतन पशुओं के समान स्वभाव ही से जानते हैं, उनमें अपने आपको नाश करते हैं।

11 उन पर हाय! कि वे कैन के समान चाल चले, और मजदूरी के लिये बिलाम के समान भ्रष्ट हो गए हैं और कोरह के समान विरोध करके नाश हुए हैं। ***(⍰⍰⍰⍰. 4:3-8, ⍰⍰⍰. 16:19-35, ⍰⍰⍰. 22:7, 2 ⍰⍰. 2:15, 1 ⍰⍰⍰. 3:12, ⍰⍰⍰. 24:12-14)***

12 यह तुम्हारे प्रेम-भोजों में तुम्हारे साथ खाते-पीते, समुद्र में छिपी हुई चट्टान सरीखे हैं, और बेधड़क अपना ही पेट भरनेवाले रखवाले हैं; वे निर्जल बादल हैं; जिन्हें हवा उड़ा ले जाती है; पतझड़ के निष्फल पेड़ हैं, जो दो बार मर चुके हैं; और जड़ से उखड़ गए हैं; ***(2 ⍰⍰. 2:17, ⍰⍰⍰. 4:14, ⍰⍰⍰. 15:4-6)***

13 ये समुद्र के प्रचण्ड हिलकोरे हैं, जो अपनी लज्जा का फेन उछालते हैं। ये डाँवाडोल तारे हैं, जिनके लिये सदाकाल तक घोर अंधकार रखा गया है। ***(⍰⍰⍰. 57:20)***

14 और हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था, इनके विषय में यह भविष्यद्वाणी की, "देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया। ***(⍰⍰⍰⍰. 33:2, 2 ⍰⍰⍰⍰⍰. 1:7,8)***

15 कि सब का न्याय करे, और सब भक्तिहीनों को उनके अभक्ति के सब कामों के विषय में जो उन्होंने भक्तिहीन होकर किए हैं, और उन सब कठोर बातों के विषय में जो भक्तिहीन पापियों ने उसके विरोध में कही हैं, दोषी ठहराए।"

16 ये तो असंतुष्ट, कुड़कुड़ानेवाले, और अपनी अभिलाषाओं के अनुसार चलनेवाले हैं; और अपने मुँह से घमण्ड की बातें बोलते हैं; और वे लाभ के लिये मुँह देखी बड़ाई किया करते हैं।

⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰

† **1:8** *⍰⍰⍰⍰-⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰:* अपने आपको अशुद्ध करना; भ्रष्ट इच्छाओं और भूख की अतिभोग के लिये अपने आपको दे देना।

17 पर हे प्रियों, तुम उन बातों
को स्मरण रखो; जो हमारे प्रभु यीशु
मसीह के प्रेरित पहले कह चुके हैं।
18 वे तुम से कहा करते थे, “पिछले
दिनों में ऐसे उपहास करनेवाले होंगे,
जो अपनी अभक्ति की अभिलाषाओं
के अनुसार चलेंगे।”
19 ये तो वे हैं, जो फूट डालते हैं; ये
शारीरिक लोग हैं, जिनमें आत्मा नहीं।
20 पर हे प्रियों तुम अपने अति
पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते
हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते
हुए,
21 अपने आपको परमेश्वर के प्रेम
में बनाए रखो; और अनन्त जीवन के
लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया
की आशा देखते रहो।
22 और उन पर जो शंका में हैं दया
करो।
23 और बहुतों को आग में से
झपटकर निकालो, और बहुतों पर भय
के साथ दया करो; वरन् उस वस्त्र से भी
घृणा करो जो शरीर के द्वारा कलंकित
हो गया है।

[illegible]

24 अब [illegible]
[illegible]‡, और
अपनी महिमा की भरपूरी के सामने
मगन और निर्दोष करके खड़ा कर
सकता है।
25 उस एकमात्र परमेश्वर के लिए,
हमारे उद्धारकर्ता की महिमा, गौरव,
पराक्रम और अधिकार, हमारे प्रभु
यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन
काल से है, अब भी हो और युगानुयुग
रहे। आमीन।

‡ **1:24** *[illegible]*: “ठोकर खाने से बचा सकता हैं” इस वाक्यांश का अर्थ हैं पाप में गिरने से रक्षा करना, प्रलोभन में फँसने से बचाना।

यूहन्ना का प्रकाशितवाक्य

[illegible]

प्रेरित यूहन्ना कहता है कि परमेश्वर के स्वर्गदूत ने उससे जो कहा वह उसने लिख लिया है। कलीसिया के प्रारंभिक लेखकों जैसे शहीद जस्टिन, आइरेनियस, हिप्पोलीतस, टर्टूलियन, सिकन्दरिया का क्लेमेंस तथा म्यूरितोरिअन आदि सब प्रेरित यूहन्ना ही को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का लेखक मानते थे। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक “रहस्योद्घाटन” के रूप में लिखी गई थी- एक प्रकार का यहूदी साहित्य जिसमें उत्पीड़ितों को आशा बंधाने को प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। (परमेश्वर की अन्तिम विजय)

[illegible]

लगभग सन् 95 - 96 के मध्य

यूहन्ना कहता है कि वह ऐजियन समुद्र के मध्य एक द्वीप, पतमुस में था जब उसे यह भविष्यद्वाणी दी गई थी। (प्रका. 1:9)

[illegible]

यूहन्ना लिखता है कि यह भविष्यद्वाणी उसे आसिया की सात कलीसियाओं के लिए दी गई थी। (प्रका. 14)

[illegible]

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का उद्देश्य है कि मसीह यीशु (1:1) और उसके सामर्थ्य को दर्शाना तथा उसके सेवकों को शीघ्र घटने वाली बातों का पूर्व ज्ञान प्रदान करना। यह अन्तिम चेतावनी है कि संसार का अन्त निश्चित है और न्याय टल नहीं सकता। इससे हमें स्वर्ग की एक झलक देखने को मिलती है और उन सब लोगों की अपेक्षित महिमा भी दिखाई देती है जिन्होंने अपने वस्त्र श्वेत रखे हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें उस महाक्लेश के दृश्य का दर्शन करवाती है और उसके सब अनर्थ का भी और उस अन्तिम आग का भी प्रका. प्रदान करती है जो अनन्तकाल के लिए अविश्वासियों के लिए है। इस पुस्तक में शैतान का पतन उसके स्वर्गदूतों का विनाश भी प्रकट किया गया है।

[illegible]

अनावरण

रूपरेखा

1. मसीह का प्रकाशन और यीशु की गवाही — 1:1-8
2. जो बातें तूने देखी हैं — 1:9-20
3. सात स्थानीय कलीसियाएँ — 2:1-3:22
4. जो घटनाएँ होनेवाली हैं — 4:1-22:5
5. प्रभु की अन्तिम चेतावनी और प्रेरित की अन्तिम प्रार्थना — 22:6-21

[illegible]

1 यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य, जो उसे परमेश्वर ने इसलिए दिया कि अपने दासों को वे बातें, जिनका शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए: और उसने अपने स्वर्गदूत को भेजकर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया, ***([illegible]. 22:6)***
2 जिसने परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह की गवाही, अर्थात् जो कुछ उसने देखा था उसकी गवाही दी।
3 धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी के वचन को पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं और इसमें लिखी हुई बातों को मानते हैं, क्योंकि समय निकट है।

[illegible]

4 यूहन्ना की ओर से आसिया की
सात कलीसियाओं के नाम: उसकी
ओर से जो है, और जो था, और जो
आनेवाला है; और उन सात आत्माओं
की ओर से, जो उसके सिंहासन के
सामने हैं,
5 *[illegible],*
[illegible][*]
और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में
पहलौठा, और पृथ्वी के राजाओं का
अधिपति है, तुम्हें अनुग्रह और शान्ति
मिलती रहे। जो हम से प्रेम रखता है,
और जिसने अपने लहू के द्वारा हमें
पापों से छुड़ाया है। ***([illegible]. 1:8)***
6 और हमें एक राज्य और अपने
पिता परमेश्वर के लिये याजक भी बना
दिया; उसी की महिमा और पराक्रम
युगानुयुग रहे। आमीन। ***([illegible].***
19:6, [illegible]. 61:6)
7 देखो, वह बादलों के साथ
आनेवाला है; और हर एक आँख उसे
देखेगी, वरन् जिन्होंने उसे बेधा था,
वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे
कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हाँ।
आमीन। ***([illegible]. 12:10)***
8 प्रभु परमेश्वर, जो है, और जो
था, और जो आनेवाला है; जो
सर्वशक्तिमान है: यह कहता है, "मैं ही
[illegible][†] हूँ।" ***([illegible].***
22:13, [illegible]. 41:4, [illegible]. 44:6)

[illegible]

9 मैं यूहन्ना, जो तुम्हारा भाई, और
यीशु के क्लेश, और राज्य, और धीरज
में तुम्हारा सहभागी हूँ, परमेश्वर के
वचन, और यीशु की गवाही के कारण
पतमुस नामक टापू में था।
10 *[illegible]*[‡], और अपने पीछे तुरही
का सा बड़ा शब्द यह कहते सुना,
11 **"जो कुछ तू देखता है,**
उसे पुस्तक में लिखकर सातों
कलीसियाओं के पास भेज दे,
अर्थात् इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन,
थुआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया
और लौदीकिया को।"
12 तब मैंने उसे जो मुझसे बोल रहा
था; देखने के लिये अपना मुँह फेरा;
और पीछे घूमकर मैंने सोने की सात
दीवटें देखीं;
13 और उन दीवटों के बीच में मनुष्य
के पुत्र सदृश्य एक पुरुष को देखा, जो
पाँवों तक का वस्त्र पहने, और छाती
पर सोने का कमरबन्द बाँधे हुए था।
([illegible]. 7:13, [illegible]. 1:26)
14 उसके सिर और बाल श्वेत ऊन
वरन् हिम के समान उज्जवल थे; और
उसकी आँखें आग की ज्वाला के समान
थीं। ***([illegible]. 7:9, [illegible]. 10:6)***
15 उसके पाँव उत्तम पीतल के
समान थे जो मानो भट्ठी में तपाए गए
हों; और उसका शब्द बहुत जल के
शब्द के समान था। ***([illegible]. 1:7,***
[illegible]. 43:2)
16 वह अपने दाहिने हाथ में सात
तारे लिए हुए था, और उसके मुख से
तेज दोधारी तलवार निकलती थी;
और उसका मुँह ऐसा प्रज्वलित था,
जैसा सूर्य कड़ी धूप के समय चमकता
है। ***([illegible] 17:2, [illegible].***
19:15)

* **1:5** *[illegible]:* वह विश्वासयोग्य हैं अर्थात् उसकी गवाही पर पूर्ण भरोसा किया जा सकता है। † **1:8** *[illegible]:* ये यूनानी वर्णमाला के प्रथम और अन्तिम अक्षर हैं, और प्रथम और अन्तिम का भाव प्रकट करते हैं। ‡ **1:10** *[illegible]:* "आत्मा" शब्द या तो पवित्र आत्मा को दर्शाने के लिए उल्लेख किया गया हैं, या पवित्र आत्मा द्वारा उत्पन्न मन की स्थिति है। § **1:17** *[illegible]:* जैसे मैं मर चुका था; भावना और चेतना से वंचित।

17 जब मैंने उसे देखा, तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]§ और उसने मुझ पर अपना दाहिना हाथ रखकर यह कहा, "मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम हूँ, और जीवित भी मैं हूँ,*([illegible]. 44:6, [illegible]. 8:17)*

18 मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीविता हूँ; और मृत्यु और अधोलोक की कुँजियाँ मेरे ही पास हैं।*([illegible]. 6:9, [illegible]. 14:9)*

19 "इसलिए जो बातें तूने देखीं हैं और जो बातें हो रही हैं; और जो इसके बाद होनेवाली हैं, उन सब को लिख ले।"

20 अर्थात् उन सात तारों का भेद जिन्हें तूने मेरे दाहिने हाथ में देखा था, और उन सात सोने की दीवटों का भेद: वे सात तारे सातों कलीसियाओं के स्वर्गदूत हैं, और वे सात दीवट सात कलीसियाएँ हैं।

2

[illegible] - [illegible] [illegible]

1 "इफिसुस की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख:

"जो सातों तारे अपने दाहिने हाथ में लिए हुए है, और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता है, वह यह कहता है:

2 मैं तेरे काम, और तेरे परिश्रम, और तेरे धीरज को जानता हूँ; और यह भी कि तू बुरे लोगों को तो देख नहीं सकता; और जो अपने आपको प्रेरित कहते हैं, और हैं नहीं, उन्हें तूने परखकर झूठा पाया।

3 और तू धीरज धरता है, और मेरे नाम के लिये दुःख उठाते-उठाते थका नहीं।

4 पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है कि तूने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया है।

5 इसलिए*[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]**, और मन फिरा और पहले के समान काम कर; और यदि तू मन न फिराएगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उसके स्थान से हटा दूँगा।

6 पर हाँ, तुझ में यह बात तो है, कि तू नीकुलइयों के कामों से घृणा करता है, जिनसे मैं भी घृणा करता हूँ।*([illegible]. 139:21)*

7 जिसके कान हों, वह सुन ले कि पवित्र आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है:*[illegible] [illegible] [illegible]*†, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूँगा।*([illegible]. 2:11)*

[illegible] - [illegible] [illegible] [illegible]

8 "स्मुरना की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख: "जो प्रथम और अन्तिम है; जो मर गया था और अब जीवित हो गया है, वह यह कहता है:*([illegible]. 1:17-18)*

9 "मैं तेरे क्लेश और दरिद्रता को जानता हूँ (परन्तु तू धनी है); और जो लोग अपने आपको यहूदी कहते हैं और हैं नहीं, पर शैतान का आराधनालय हैं, उनकी निन्दा को भी जानता हूँ।

10 जो दुःख तुझको झेलने होंगे, उनसे मत डर: क्योंकि, शैतान तुम में से कुछ को जेलखाने में डालने पर

* **2:5** *[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* तुम जिस परिस्थिति में पहले कभी थे उसे स्मरण करो। † **2:7** *[illegible] [illegible] [illegible]:* उसके लिए जो जय प्राप्त करें या जो विजेता है।

है ताकि तुम परखे जाओ; और तुम्हें दस दिन तक क्लेश उठाना होगा। प्राण देने तक विश्वासयोग्य रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूँगा।*([illegible]. 1:12)*

11 **जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय पाए, उसको दूसरी मृत्यु से हानि न पहुँचेगी।**

[illegible] - [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

12 **"पिरगमुन की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख:**

"जिसके पास तेज दोधारी तलवार है, वह यह कहता है:

13 **"मैं यह तो जानता हूँ, कि तू वहाँ रहता है जहाँ शैतान का सिंहासन है, और मेरे नाम पर स्थिर रहता है; और मुझ पर विश्वास करने से उन दिनों में भी पीछे नहीं हटा जिनमें मेरा विश्वासयोग्य साक्षी अन्तिपास, तुम्हारे बीच उस स्थान पर मारा गया जहाँ शैतान रहता है।**

14 **पर मुझे तेरे विरुद्ध कुछ बातें कहनी हैं, क्योंकि तेरे यहाँ कुछ तो ऐसे हैं, जो*[illegible] [illegible] [illegible]*‡को मानते हैं, जिसने बालाक को इस्राएलियों के आगे ठोकर का कारण रखना सिखाया, कि वे मूर्तियों पर चढ़ाई गई वस्तुएँ खाएँ, और व्यभिचार करें।*(2 [illegible]. 2:15, [illegible]. 31:16)***

15 **वैसे ही तेरे यहाँ कुछ तो ऐसे हैं, जो नीकुलइयों की शिक्षा को मानते हैं।**

16 **अतः मन फिरा, नहीं तो मैं तेरे पास शीघ्र ही आकर, अपने मुख की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा।*([illegible]. 2:5)***

17 **जिसके कान हों, वह सुन ले कि पवित्र आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है; जो जय पाए, उसको मैं गुप्त मन्ना में से दूँगा, और उसे एक श्वेत पत्थर भी दूँगा; और उस पत्थर पर एक नाम लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पानेवाले के सिवाय और कोई न जानेगा।*([illegible]. 2:7)***

[illegible] - [illegible] [illegible]

18 **"थुआतीरा की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख:**

"परमेश्वर का पुत्र जिसकी आँखें आग की ज्वाला के समान, और जिसके पाँव उत्तम पीतल के समान हैं, वह यह कहता है:*([illegible]. 10:6)*

19 **मैं तेरे कामों, और प्रेम, और विश्वास, और सेवा, और धीरज को जानता हूँ, और यह भी कि तेरे पिछले काम पहले से बढ़कर हैं।**

20 **पर मुझे तेरे विरुद्ध यह कहना है, कि तू उस स्त्री ईजेबेल को रहने देता है जो अपने आपको भविष्यद्वक्तिन कहती है, और मेरे दासों को व्यभिचार करने, और मूर्तियों के आगे चढ़ाई गई वस्तुएँ खाना सिखाकर भरमाती है।*([illegible]. 2:14)***

21 **मैंने उसको मन फिराने के लिये अवसर दिया, पर वह अपने व्यभिचार से मन फिराना नहीं चाहती।**

22 **देख, मैं उसे रोगशैय्या पर डालता हूँ; और जो उसके साथ व्यभिचार करते हैं यदि वे भी उसके से कामों से मन न फिराएँगे तो उन्हें बड़े क्लेश में डालूँगा।**

23 **मैं उसके बच्चों को मार डालूँगा; और तब सब कलीसियाएँ जान लेंगी कि हृदय और मन का परखनेवाला**

‡ **2:14** *[illegible] [illegible] [illegible]:* अर्थात् वही शिक्षाएँ बिलाम ने दी थी अतः वे बिलाम के साथ रखने योग्य थे।

मैं ही हूँ, और मैं तुम में से हर एक
को उसके कामों के अनुसार बदला
दूँगा।(*[illegible]. 7:9*)
24 पर तुम थुआतीरा के बाकी
लोगों से, जितने इस शिक्षा को
नहीं मानते, और उन बातों को
जिन्हें *[illegible]*§ नहीं जानते, यह कहता
हूँ, कि मैं तुम पर और बोझ न डालूँगा।
25 पर हाँ, जो तुम्हारे पास है उसको
मेरे आने तक थामे रहो।
26 जो जय पाए, और मेरे कामों के
अनुसार अन्त तक करता रहे, 'मैं उसे
जाति-जाति के लोगों पर अधिकार
दूँगा।
27 और वह लोहे का राजदण्ड लिये
हुए उन पर राज्य करेगा, जिस प्रकार
कुम्हार के मिट्टी के बर्तन चकनाचूर हो
जाते हैं: मैंने भी ऐसा ही अधिकार
अपने पिता से पाया है।
28 और मैं उसे भोर का तारा दूँगा।
29 जिसके कान हों, वह सुन ले कि
आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता
है।

3

[illegible] - [illegible]

1 "सरदीस की कलीसिया के
स्वर्गदूत को लिख:

"जिसके पास परमेश्वर की सात
आत्माएँ और सात तारे हैं, यह कहता
है कि मैं तेरे कामों को जानता हूँ, कि
तू जीवित तो कहलाता है, पर है मरा
हुआ।
2 जागृत हो, और उन वस्तुओं को
जो बाकी रह गई हैं, और जो मिटने
को हैं, उन्हें दृढ़ कर; क्योंकि मैंने तेरे
किसी काम को अपने परमेश्वर के
निकट पूरा नहीं पाया।
3 इसलिए स्मरण कर, कि तूने किस
रीति से शिक्षा प्राप्त की और सुनी थी,
और उसमें बना रह, और मन फिरा:
और यदि तू जागृत न रहेगा तो *[illegible]** और तू
कदापि न जान सकेगा, कि मैं किस
घड़ी तुझ पर आ पड़ूँगा।
4 पर हाँ, सरदीस में तेरे यहाँ कुछ
ऐसे लोग हैं, जिन्होंने अपने-अपने
वस्त्र अशुद्ध नहीं किए, वे श्वेत वस्त्र
पहने हुए मेरे साथ घूमेंगे, क्योंकि वे
इस योग्य हैं।
5 जो जय पाए, उसे इसी प्रकार
श्वेत वस्त्र पहनाया जाएगा, और मैं
उसका नाम जीवन की पुस्तक में से
किसी रीति से न काटूँगा, पर उसका
नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों
के सामने मान लूँगा।(*[illegible].
21:27*)
6 जिसके कान हों, वह सुन ले कि
आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता
है।

[illegible] - [illegible]

7 "फिलदिलफिया की कलीसिया
के स्वर्गदूत को यह लिख:

"जो पवित्र और सत्य है, और जो
दाऊद की कुंजी रखता है, *[illegible]*† और बन्द किए हुए को
कोई खोल नहीं सकता, वह यह
कहता है,(*[illegible]. 12:14, [illegible].
22:22*)

---

§ **2:24** *[illegible]*: शैतान की रहस्यमय युक्ति और योजना। गहरी बातें जो उन लोगों की दृष्टि से छिपी हैं – वे बातों जो अब तक प्रकट नहीं हुई हैं। * **3:3** *[illegible]*: अचानक और अनापेक्षित तरीके से। † **3:7** *[illegible]*: कि उनके राज्य में वह किसी के प्रवेश या बहिष्कार के सम्बंध में पूर्ण नियंत्रण रखता है।

8 मैं तेरे कामों को जानता हूँ। देख,
मैंने तेरे सामने एक द्वार खोल रखा है,
जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता; तेरी
सामर्थ्य थोड़ी सी तो है, फिर भी तूने
मेरे वचन का पालन किया है और मेरे
नाम का इन्कार नहीं किया।
9 देख, मैं *[illegible]* ‡को तेरे वश में
कर दूँगा जो यहूदी बन बैठे हैं, पर हैं
नहीं, वरन् झूठ बोलते हैं—मैं ऐसा
करूँगा, कि वे आकर तेरे चरणों में
दण्डवत् करेंगे, और यह जान लेंगे,
कि मैंने तुझ से प्रेम रखा है।
10 तूने मेरे धीरज के वचन को थामा
है, इसलिए मैं भी तुझे परीक्षा के
उस समय बचा रखूँगा, जो पृथ्वी पर
रहनेवालों के परखने के लिये सारे
संसार पर आनेवाला है।
11 मैं शीघ्र ही आनेवाला हूँ; जो
कुछ तेरे पास है उसे थामे रह, कि कोई
तेरा मुकुट छीन न ले।
12 जो जय पाए, उसे मैं अपने
परमेश्वर के मन्दिर में एक खम्भा
बनाऊँगा; और वह फिर कभी बाहर
न निकलेगा; और मैं अपने परमेश्वर
का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर
अर्थात् नये यरूशलेम का नाम, जो
मेरे परमेश्वर के पास से स्वर्ग पर से
उतरनेवाला है और अपना नया नाम
उस पर लिखूँगा। ***([illegible]. 21:2, [illegible]. 65:15, [illegible]. 48:35)***
13 जिसके कान हों, वह सुन ले कि
आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता
है।

[illegible] - [illegible]

14 "लौदीकिया की कलीसिया के
स्वर्गदूत को यह लिख:
"जो आमीन, और विश्वासयोग्य,
और सच्चा गवाह है, और परमेश्वर
की सृष्टि का मूल कारण है, वह यह
कहता है:
15 "मैं तेरे कामों को जानता हूँ कि
तू न तो ठंडा है और न गर्म; भला होता
कि तू ठंडा या गर्म होता।
16 इसलिए कि तू गुनगुना है, और
न ठंडा है और न गर्म, मैं तुझे अपने
मुँह से उगलने पर हूँ।
17 तू जो कहता है, कि मैं धनी
हूँ, और धनवान हो गया हूँ, और
मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं, और
यह नहीं जानता, कि तू अभागा और
तुच्छ और कंगाल और अंधा, और
नंगा है, ***([illegible] 12:8)***
18 इसलिए मैं तुझे सम्मति देता हूँ,
कि आग में ताया हुआ सोना मुझसे
मोल ले, कि धनी हो जाए; और श्वेत
वस्त्र ले ले कि पहनकर तुझे अपने
नंगेपन की लज्जा न हो; और अपनी
आँखों में लगाने के लिये सुरमा ले कि
तू देखने लगे।
19 मैं जिन जिनसे प्रेम रखता हूँ,
उन सब को उलाहना और ताड़ना देता
हूँ, इसलिए उत्साही हो, और मन
फिरा। ***([illegible]. 3:12)***
20 देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ
खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द
सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके
पास भीतर आकर उसके साथ भोजन
करूँगा, और वह मेरे साथ।
21 जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ
अपने सिंहासन पर बैठाऊँगा, जैसा
मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ
उसके सिंहासन पर बैठ गया।

‡ **3:9** *[illegible]*: इसका अर्थ यह है कि, हालांकि वे यहूदियों से आए थे, और यहूदी होने का बहुत घमण्ड करते थे, परन्तु वे वास्तव में शैतान के प्रभाव के अधीन थे।

22 **जिसके कान हों वह सुन ले कि
आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता
है।”**

4

[illegible]

1 इन बातों के बाद जो मैंने दृष्टि
की, तो क्या देखता हूँ कि स्वर्ग में एक
द्वार खुला हुआ है; और जिसको मैंने
पहले तुरही के से शब्द से अपने साथ
बातें करते सुना था, वही कहता है,
**“यहाँ ऊपर आ जा, और मैं वे बातें
तुझे दिखाऊँगा, जिनका इन बातों के
बाद पूरा होना अवश्य है।”** ***([illegible]. 22:6)***
2 तुरन्त मैं आत्मा में आ गया; और
क्या देखता हूँ कि एक सिंहासन स्वर्ग
में रखा है, और उस सिंहासन पर कोई
बैठा है। ***(1 [illegible]. 22:19)***
3 और जो उस पर बैठा है, वह यशब
और माणिक्य जैसा दिखाई पड़ता है,
और उस सिंहासन के चारों ओर मरकत
के समान एक मेघधनुष दिखाई देता
है। ***([illegible]. 1:28)***
4 उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस
सिंहासन है; और इन सिंहासनों पर
चौबीस प्राचीन श्वेत वस्त्र पहने हुए
बैठे हैं, और उनके सिरों पर सोने के
मुकुट हैं। ***([illegible]. 11:16)***

[illegible]

5 *[illegible]*[*] और सिंहासन के सामने आग
के सात दीपक जल रहे हैं, वे परमेश्वर
की सात आत्माएँ हैं, ***([illegible]. 4:2)***
6 और उस सिंहासन के सामने मानो
बिल्लौर के *[illegible]*[†],

और सिंहासन के बीच में और
सिंहासन के चारों ओर चार प्राणी हैं,
जिनके आगे-पीछे आँखें ही आँखें हैं।
([illegible]. 10:12)
7 पहला प्राणी सिंह के समान है,
और दूसरा प्राणी बछड़े के समान है,
तीसरे प्राणी का मुँह मनुष्य के समान
है, और चौथा प्राणी उड़ते हुए उकाब
के समान है। ***([illegible]. 1:10, [illegible]. 10:14)***
8 और चारों प्राणियों के छः छः
पंख हैं, और चारों ओर, और भीतर
आँखें ही आँखें हैं; और वे रात-दिन
बिना विश्राम लिए यह कहते रहते हैं,
([illegible]. 6:2,3)

“पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर,
सर्वशक्तिमान,
जो था, और जो है, और जो आनेवाला
है।”

9 और जब वे प्राणी उसकी जो
सिंहासन पर बैठा है, और जो
युगानुयुग जीविता है, महिमा और
आदर और धन्यवाद करेंगे। ***([illegible]. 12:7)***
10 तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर
बैठनेवाले के सामने गिर पड़ेंगे, और
उसे जो युगानुयुग जीविता है प्रणाम
करेंगे; *[illegible]*[‡] यह कहते
हुए डाल देंगे, ***([illegible]. 47:8)***

11 “हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही
महिमा,
और आदर, और सामर्थ्य के योग्य है;
क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएँ सृजीं और

---

[*] **4:5** *[illegible]:* उसके गौरव और महिमा को व्यक्त करता हैं जो उस पर बैठा है, [†] **4:6** *[illegible]:* अर्थात्, वह शीशे की तरह पारदर्शी था। यह पूरी तरह से साफ था। [‡] **4:10** *[illegible]:* उन्हें ताज पहने हुए दिखाया गया है अर्थात् जयवन्त और राजाओं के रूप में, और दर्शाया गया है कि वे अपने-अपने मुकुट उसके पाँव में डाल रहे है, यह इस बात का प्रतीक है कि उनकी विजय का श्रेय उसी को जाता है।

तेरी ही इच्छा से, वे अस्तित्व में थीं
और सृजी गईं।”

5

[illegible]?

1 और जो सिंहासन पर बैठा था, मैंने
उसके दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखी,
जो भीतर और बाहर लिखी हुई थी,
और वह सात मुहर लगाकर बन्द की
गई थी। ***([illegible]. 2:9-10)***
2 फिर मैंने एक बलवन्त स्वर्गदूत को
देखा जो ऊँचे शब्द से यह प्रचार करता
था “इस पुस्तक के खोलने और उसकी
मुहरें तोड़ने के योग्य कौन है?”
3 *[illegible]**, न पृथ्वी
पर, *[illegible]*†।
4 तब मैं फूट फूटकर रोने लगा,
क्योंकि उस पुस्तक के खोलने, या उस
पर दृष्टि करने के योग्य कोई न मिला।
5 इस पर उन प्राचीनों में से एक ने
मुझसे कहा, “मत रो; देख, यहूदा के
गोत्र का वह सिंह, जो दाऊद का मूल
है, उस पुस्तक को खोलने और उसकी
सातों मुहरें तोड़ने के लिये जयवन्त
हुआ है।” ***([illegible]. 49:9, [illegible]. 11:1, [illegible]. 11:10)***
6 तब मैंने उस सिंहासन और चारों
प्राणियों और उन प्राचीनों के बीच में,
मानो एक वध किया हुआ मेम्ना खड़ा
देखा; उसके सात सींग और सात आँखें
थीं; ये परमेश्वर की सातों आत्माएँ हैं,
जो सारी पृथ्वी पर भेजी गई हैं। ***([illegible]. 4:10)***
7 उसने आकर उसके दाहिने हाथ से
जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक
ले ली, ***([illegible]. 5:1)***
8 जब उसने पुस्तक ले ली, तो वे
चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस
मेम्ने के सामने गिर पड़े; और हर एक
के हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए
सोने के कटोरे थे, ये तो पवित्र लोगों
की प्रार्थनाएँ हैं। ***([illegible]. 5:14, [illegible]. 19:4)***
9 और वे यह नया गीत गाने लगे,

“तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी
मुहरें खोलने के योग्य है;
क्योंकि तूने वध होकर अपने लहू से
हर एक कुल, और भाषा, और
लोग, और जाति में से
परमेश्वर के लिये लोगों को मोल
लिया है। ***([illegible]. 5:12)***
10 “और उन्हें हमारे परमेश्वर के
लिये एक राज्य और याजक
बनाया;
और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।”
([illegible]. 1:6)

[illegible]

11 जब मैंने देखा, तो उस सिंहासन
और उन प्राणियों और उन प्राचीनों
के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का
शब्द सुना, जिनकी गिनती लाखों और
करोड़ों की थी। ***([illegible]. 7:10)***
12 और वे ऊँचे शब्द से कहते थे,
“वध किया हुआ मेम्ना ही सामर्थ्य,
और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और
आदर, और महिमा, और *[illegible]*‡।” ***([illegible]. 5:9)***
13 फिर मैंने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर,
और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब

* **5:3** *[illegible]:* इसका अभिप्राय यह हैं कि स्वर्ग में ऐसा कोई नहीं था – जो उसे खोल सकता था - विशेषकर यह सृजित प्राणियों की ओर इशारा करता हैं। † **5:3** *[illegible] .... [illegible]:* यह उनकी शक्ति से परे नहीं था कि केवल पुस्तक को देखें जो इस तथ्य से स्पष्ट है कि यूहन्ना स्वयं उस पुस्तक को उसके हाथ में देख रहा था जो उस सिंहासन पर बैठा था। ‡ **5:12** *[illegible]:* यहाँ अर्थ है कि वह योग्य था कि उसे इन सब बातों का श्रेय प्राप्त हो।

रची हुई वस्तुओं को, और सब कुछ
को जो उनमें हैं, यह कहते सुना, “जो
सिंहासन पर बैठा है, उसकी, और मेम्ने
की स्तुति, और आदर, और महिमा,
और राज्य, युगानुयुग रहे।”
14 और चारों प्राणियों ने आमीन
कहा, और प्राचीनों ने गिरकर दण्डवत्
किया।

6

[illegible]

1 फिर मैंने देखा कि *[illegible]*[*]; और उन चारों प्राणियों में से
एक का गर्जन के समान शब्द सुना,
“आ।”
2 मैंने दृष्टि की, और एक श्वेत
घोड़ा है, और उसका सवार धनुष लिए
हुए है: और उसे एक मुकुट दिया गया,
और वह जय करता हुआ निकला कि
और भी जय प्राप्त करे।

[illegible]

3 जब उसने दूसरी मुहर खोली, तो
मैंने दूसरे प्राणी को यह कहते सुना,
“आ।”
4 फिर एक और घोड़ा निकला, जो
लाल रंग का था; उसके सवार को यह
अधिकार दिया गया कि पृथ्वी पर से
मेल उठा ले, ताकि लोग एक दूसरे का
वध करें; और उसे एक बड़ी तलवार दी
गई।

[illegible]

5 जब उसने तीसरी मुहर खोली, तो
मैंने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना,
“आ।” और मैंने दृष्टि की, और एक
काला घोड़ा है; और उसके सवार के
हाथ में एक तराजू है। ***([illegible]. 6:2,3 [illegible]. 6:6)***
6 और मैंने उन चारों प्राणियों के बीच
में से एक शब्द यह कहते सुना, “दीनार
का सेर भर गेहूँ, और दीनार का तीन
सेर जौ, पर तेल, और दाखरस की हानि
न करना।”

[illegible]

7 और जब उसने चौथी मुहर खोली,
तो मैंने चौथे प्राणी का शब्द यह कहते
सुना, “आ।”
8 मैंने दृष्टि की, और एक पीला
घोड़ा है; और उसके सवार का नाम
मृत्यु है; और अधोलोक उसके पीछे-
पीछे है और उन्हें पृथ्वी की एक चौथाई
पर यह अधिकार दिया गया, कि
तलवार, और अकाल, और मरी, और
पृथ्वी के वन-पशुओं के द्वारा लोगों को
मार डालें। ***([illegible]. 15:2,3)***

[illegible]

9 जब उसने पाँचवी मुहर खोली, तो
मैंने वेदी के नीचे उनके प्राणों को देखा,
जो परमेश्वर के वचन के कारण, और
उस गवाही के कारण जो उन्होंने दी
थी, वध किए गए थे।
10 और उन्होंने बड़े शब्द से
पुकारकर कहा, “हे प्रभु, हे पवित्र, और
सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और
पृथ्वी के रहनेवालों से हमारे लहू का
पलटा कब तक न लेगा?” ***([illegible]. 16:5,6)***
11 और उनमें से हर एक को श्वेत
वस्त्र दिया गया, और उनसे कहा गया,
कि और थोड़ी देर तक विश्राम करो,
जब तक कि तुम्हारे संगी दास और
भाई जो तुम्हारे समान वध होनेवाले
हैं, उनकी भी गिनती पूरी न हो ले।

[illegible]

12 जब उसने छठवीं मुहर खोली,
तो मैंने देखा कि एक बड़ा *[illegible]*

---

[*] **6:1** *[illegible]:* यह प्रथम या बाहरी मुहर थी, और उसके खोले जाने से पुस्तक का कुछ भाग खुला की पड़ा जाए। [†] **6:12** *[illegible]:* भूकम्प, बहुत बड़ी उथल-पुथल या पृथ्वी पर परिवर्तनों को दर्शाता हैं।

[illegible]; और सूर्य कम्बल के समान
काला, और पूरा चन्द्रमा लहू के समान
हो गया। ***([illegible]. 2:10)***
13 और आकाश के तारे पृथ्वी पर
ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आँधी से
हिलकर अंजीर के पेड़ में से कच्चे फल
झड़ते हैं। ***([illegible]. 8:10, [illegible] 24:29)***
14 आकाश ऐसा सरक गया, जैसा
पत्र लपेटने से सरक जाता है; और
हर एक पहाड़, और टापू, अपने-
अपने स्थान से टल गया। ***([illegible]. 16:20, [illegible]. 34:4)***
15 पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और
सरदार, और धनवान और सामर्थी
लोग, और हर एक दास, और हर
एक स्वतंत्र, पहाड़ों की गुफाओं और
चट्टानों में जा छिपे; ***([illegible]. 2:10, [illegible]. 2:19)***
16 और पहाड़ों, और चट्टानों से
कहने लगे, "हम पर गिर पड़ो; और
हमें उसके मुँह से जो सिंहासन पर बैठा
है और मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो;
([illegible] 23:30)
17 क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक
दिन आ पहुँचा है, अब कौन ठहर
सकता है?" ***([illegible]. 3:2, [illegible]. 2:11, [illegible]. 1:6, [illegible]. 1:14,15, [illegible]. 3:2)***

7

[illegible]

1 इसके बाद मैंने पृथ्वी के चारों
कोनों पर चार स्वर्गदूत खड़े देखे, वे
पृथ्वी की चारों हवाओं को थामे हुए थे
ताकि पृथ्वी, या समुद्र, या किसी पेड़
पर, हवा न चले। ***([illegible]. 7:2, [illegible]. 6:5)***
2 फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को
जीवित परमेश्वर की मुहर लिए हुए
पूरब से ऊपर की ओर आते देखा; उसने
उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें पृथ्वी
और समुद्र की हानि करने का अधिकार
दिया गया था, ऊँचे शब्द से पुकारकर
कहा,
3 "जब तक हम अपने परमेश्वर के
दासों के माथे पर मुहर न लगा दें, तब
तक पृथ्वी और समुद्र और पेड़ों को
हानि न पहुँचाना।" ***([illegible]. 9:4)***

[illegible] 1,44,000 [illegible]

4 और जिन पर मुहर दी गई, मैंने
उनकी गिनती सुनी, कि इस्राएल की
सन्तानों के सब गोत्रों में से एक लाख
चौवालीस हजार पर मुहर दी गई:
5 यहूदा के गोत्र में से बारह हजार
पर मुहर दी गई, रूबेन के गोत्र में से
बारह हजार पर, गाद के गोत्र में से
बारह हजार पर,
6 आशेर के गोत्र में से बारह हजार
पर, नप्ताली के गोत्र में से बारह हजार
पर; मनश्शे के गोत्र में से बारह हजार
पर,
7 शमौन के गोत्र में से बारह हजार
पर, लेवी के गोत्र में से बारह हजार पर,
इस्साकार के गोत्र में से बारह हजार
पर,
8 जबूलून के गोत्र में से बारह हजार
पर, यूसुफ के गोत्र में से बारह हजार
पर, और बिन्यामीन के गोत्र में से बारह
हजार पर मुहर दी गई।

[illegible]

9 इसके बाद मैंने दृष्टि की, और हर
एक जाति, और कुल, और लोग और
भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे
कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र
पहने और अपने हाथों में खजूर की
डालियाँ लिये हुए सिंहासन के सामने
और मेम्ने के सामने खड़ी है;
10 और बड़े शब्द से पुकारकर कहती
है, "*[illegible]*

[illegible] [illegible][*], जो सिंहासन पर
बैठा है, और मेम्ने का जय जयकार
हो।" ***([illegible]. 19:1, [illegible]. 3:8)***
11 और सारे स्वर्गदूत, उस सिंहासन
और प्राचीनों और चारों प्राणियों के
चारों ओर खड़े हैं, फिर वे सिंहासन
के सामने मुँह के बल गिर पड़े और
परमेश्वर को दण्डवत् करके कहा,
12 "*[illegible]*[†], हमारे परमेश्वर की
स्तुति, महिमा, ज्ञान, धन्यवाद, आदर,
सामर्थ्य, और शक्ति युगानुयुग बनी
रहें। आमीन।"
13 इस पर प्राचीनों में से एक ने
मुझसे कहा, "ये श्वेत वस्त्र पहने हुए
कौन हैं? और कहाँ से आए हैं?"
14 मैंने उससे कहा, "हे स्वामी, तू ही
जानता है।" उसने मुझसे कहा, "ये वे
हैं, जो उस महाक्लेश में से निकलकर
आए हैं; इन्होंने अपने-अपने वस्त्र
मेम्ने के लहू में धोकर श्वेत किए हैं।
([illegible]. 22:14)
15 "इसी कारण वे परमेश्वर के
सिंहासन के सामने हैं,
और उसके मन्दिर में दिन-रात उसकी
सेवा करते हैं;
और जो सिंहासन पर बैठा है, वह
उनके ऊपर अपना तम्बू
तानेगा। ***([illegible]. 22:3, [illegible]. 134:1,2)***
16 "वे फिर भूखे और प्यासे न होंगे;
और न उन पर धूप, न कोई तपन
पड़ेगी।
17 क्योंकि मेम्ना जो सिंहासन के बीच
में है, उनकी रखवाली करेगा;
और उन्हें जीवनरूपी जल के सोतों के
पास ले जाया करेगा,
और परमेश्वर उनकी आँखों से सब
आँसू पोंछ डालेगा।" ***([illegible]. 23:1, [illegible]. 23:2, [illegible]. 25:8)***

8

[illegible] [illegible]—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 जब उसने सातवीं मुहर खोली,
तो *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*[*]।
2 और मैंने उन सातों स्वर्गदूतों को
जो परमेश्वर के सामने खड़े रहते हैं,
देखा, और उन्हें सात तुरहियां दी गईं।
3 फिर एक और स्वर्गदूत सोने का
धूपदान लिये हुए आया, और वेदी के
निकट खड़ा हुआ; और उसको बहुत
धूप दिया गया कि सब पवित्र लोगों की
प्रार्थनाओं के साथ सोने की उस वेदी
पर, जो सिंहासन के सामने है चढ़ाएँ।
([illegible]. 5:8)
4 और उस धूप का धुआँ पवित्र
लोगों की प्रार्थनाओं सहित स्वर्गदूत
के हाथ से परमेश्वर के सामने पहुँच
गया। ***([illegible]. 141:2)***
5 तब स्वर्गदूत ने धूपदान लेकर
उसमें वेदी की आग भरी, और पृथ्वी
पर डाल दी, और गर्जन और शब्द
और बिजलियाँ और भूकम्प होने लगे।
([illegible]. 4:5)
6 और वे सातों स्वर्गदूत जिनके पास
सात तुरहियां थीं, फूँकने को तैयार
हुए।

[illegible] [illegible]

7 पहले स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी, और
लहू से मिले हुए ओले और आग उत्पन्न
हुई, और पृथ्वी पर डाली गई; और एक

---

[*] **7:10** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* जिसका अर्थ हैं, पाप और मृत्यु से उद्धार, अनन्तकाल की आग के दण्ड से बचाव, पवित्र स्वर्ग में प्रवेश – उस शब्द से जो भी अभिप्राय व्यक्त होता है उस पर विजय परमेश्वर से है। [†] **7:12** *[illegible]:* "आमीन" शब्द जो कुछ कहा गया है उसकी सच्चाई की पुष्टि करता है। [*] **8:1** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* इसका अर्थ हैं, इस मुहर के खुलते समय, आवाज, गर्जन, आँधी के बजाय, जैसा की उम्मीद थी वहाँ पर भयंकर सन्नाटा था।

तिहाई पृथ्वी जल गई, और एक तिहाई
पेड़ जल गई, और सब हरी घास भी
जल गई। ***([illegible]. 38:22)***

[illegible] [illegible]

8 दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी, तो
मानो आग के समान जलता हुआ एक
बड़ा पहाड़ समुद्र में डाला गया; और
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]†, ***([illegible]. 7:17, [illegible].
51:25)***
9 और समुद्र की एक तिहाई सृजी
हुई वस्तुएँ जो सजीव थीं मर गईं, और
एक तिहाई जहाज नाश हो गए।

[illegible] [illegible]

10 तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी,
और एक बड़ा तारा जो मशाल के
समान जलता था, स्वर्ग से टूटा, और
नदियों की एक तिहाई पर, और पानी
के सोतों पर आ पड़ा। ***([illegible].
6:13)***
11 उस तारे का नाम नागदौना है,
और एक तिहाई पानी नागदौना जैसा
कड़वा हो गया, और बहुत से मनुष्य
उस पानी के कड़वे हो जाने से मर गए।
([illegible]. 9:15)

[illegible] [illegible]

12 चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी,
और सूर्य की एक तिहाई, और चाँद की
एक तिहाई और तारों की एक तिहाई
पर आपत्ति आई, यहाँ तक कि उनका
एक तिहाई अंग अंधेरा हो गया और
दिन की एक तिहाई में उजाला न
रहा, और वैसे ही रात में भी। ***([illegible].
13:10, [illegible]. 2:10)***
13 जब मैंने फिर देखा, तो आकाश
के बीच में एक उकाब को उड़ते और
ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, "उन तीन
स्वर्गदूतों की तुरही के शब्दों के कारण
जिनका फूँकना अभी बाकी है, पृथ्वी के
रहनेवालों पर *[illegible], [illegible], [illegible]*‡!"

9

[illegible] [illegible]

1 जब पाँचवें स्वर्गदूत ने तुरही
फूँकी, तो मैंने स्वर्ग से पृथ्वी पर
एक तारा गिरता हुआ देखा, और उसे
अथाह कुण्ड की कुँजी दी गई।
2 उसने अथाह कुण्ड को खोला,
और कुण्ड में से बड़ी भट्टी के समान
धुआँ उठा, और कुण्ड के धुएँ से सूर्य
और वायु अंधकारमय हो गए। ***([illegible].
2:10, [illegible]. 2:30)***
3 उस धुएँ में से पृथ्वी पर टिड्डियाँ
निकलीं, और उन्हें पृथ्वी के बिच्छुओं
के समान शक्ति दी गई। ***([illegible].
9:5)***
4 उनसे कहा गया कि न पृथ्वी की
घास को, न किसी हरियाली को, न
किसी पेड़ को हानि पहुँचाए, केवल उन
मनुष्यों को हानि पहुँचाए जिनके माथे
पर परमेश्वर की मुहर नहीं है। ***([illegible].
9:4)***
5 और उन्हें लोगों को मार डालने
का तो नहीं, पर पाँच महीने तक लोगों
को पीड़ा देने का अधिकार दिया गया;
और उनकी पीड़ा ऐसी थी, जैसे बिच्छू
के डंक मारने से मनुष्य को होती है।
6 उन दिनों में मनुष्य *[illegible] [illegible]*
*[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]**;
और मरने की लालसा करेंगे, और मृत्यु
उनसे भागेगी। ***([illegible]. 3:21,
[illegible]. 8:3)***

† **8:8** *[illegible]:* लहू के सदृश्य, लहू के जैसा लाल हो गया। ‡ **8:13** *[illegible], [illegible], [illegible]:* अर्थात्, वहाँ महान शोक होगा, यह बहुत बड़ा और भयंकर आपदाओं का संकेत करता है। * **9:6** *[illegible]:* यह ऐसी अवस्था हैं जिसमें विपत्ति ऐसी होगी कि लोग मृत्यु माँगेंगे कि उन्हें राहत मिले, और जहाँ वे उत्सुकता से उस समय की बाट देखेंगे जब वे मृत्यु के द्वारा कष्टों से स्वतंत्र हो सकते हैं।

7 उन टिड्डियों के आकार लड़ाई के लिये तैयार किए हुए घोड़ों के जैसे थे, और उनके सिरों पर मानो सोने के मुकुट थे; और उनके मुँह मनुष्यों के जैसे थे। ***([illegible]. 2:4)***

8 उनके बाल *[illegible] [illegible] [illegible]*† जैसे, और दाँत सिंहों के दाँत जैसे थे।

9 वे लोहे की जैसी झिलम पहने थे, और उनके पंखों का शब्द ऐसा था जैसा रथों और बहुत से घोड़ों का जो लड़ाई में दौड़ते हों। ***([illegible]. 1:6)***

10 उनकी पूँछ बिच्छुओं की जैसी थीं, और उनमें डंक थे, और उन्हें पाँच महीने तक मनुष्यों को दुःख पहुँचाने की जो शक्ति मिली थी, वह उनकी पूँछों में थी।

11 अथाह कुण्ड का दूत उन पर राजा था, उसका नाम इब्रानी में अबद्दोन, और यूनानी में अपुल्लयोन है।

12 पहली विपत्ति बीत चुकी, अब इसके बाद दो विपत्तियाँ और आनेवाली हैं।

[illegible] [illegible]

13 जब छठवें स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी तो जो सोने की वेदी परमेश्वर के सामने है उसके सींगों में से मैंने ऐसा शब्द सुना,

14 मानो कोई छठवें स्वर्गदूत से, जिसके पास तुरही थी कह रहा है, "उन चार स्वर्गदूतों को जो बड़ी नदी फरात के पास बंधे हुए हैं, खोल दे।"

15 और वे चारों दूत खोल दिए गए जो उस घड़ी, और दिन, और महीने, और वर्ष के लिये मनुष्यों की एक तिहाई के मार डालने को तैयार किए गए थे।

16 उनकी फौज के सवारों की गिनती बीस करोड़ थी; मैंने उनकी गिनती सुनी।

17 और मुझे इस दर्शन में घोड़े और उनके ऐसे सवार दिखाई दिए, जिनकी झिलमें आग, धूम्रकान्त, और गन्धक की जैसी थीं, और उन घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों के समान थे: और उनके मुँह से आग, धुआँ, और गन्धक निकलते थे।

18 इन तीनों महामारियों; अर्थात् आग, धुएँ, गन्धक से, जो उसके मुँह से निकलते थे, मनुष्यों की एक तिहाई मार डाली गई।

19 क्योंकि उन *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*‡; इसलिए कि उनकी पूँछे साँपों की जैसी थीं, और उन पूँछों के सिर भी थे, और इन्हीं से वे पीड़ा पहुँचाते थे।

20 बाकी मनुष्यों ने जो उन महामारियों से न मरे थे, अपने हाथों के कामों से मन न फिराया, कि दुष्टात्माओं की, और सोने, चाँदी, पीतल, पत्थर, और काठ की मूर्तियों की पूजा न करें, जो न देख, न सुन, न चल सकती हैं। ***(1 [illegible]. 34:25)***

21 और जो खून, और टोना, और व्यभिचार, और चोरियाँ, उन्होंने की थीं, उनसे मन न फिराया।

10

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

---

† **9:8** *[illegible] [illegible] [illegible]:* लम्बे बाल; आमतौर पर इस तरह के बाल पुरुष नहीं रखते, परन्तु स्त्रियाँ रखती हैं। ‡ **9:19** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], ... [illegible] [illegible]:* अर्थात्, आग, धुआँ, और गन्धक जो उनके मुँह से बाहर निकलती हैं। * **10:1** *[illegible] [illegible]:* उसने सात स्वर्गदूतों को पहले देखा था जिन्होंने तुरहियां फूँकी थी प्रका. 8:2, उसने छः स्वर्गदूतों को सफलता पूर्वक तुरही फूँकते हुए देखा था, अब वह एक और स्वर्गदूत को देखता हैं, जो उन सबसे अलग हैं।

1 फिर मैंने एक और *[illegible]** को बादल ओढ़े हुए स्वर्ग से उतरते देखा; और उसके सिर पर मेघधनुष था, और उसका मुँह सूर्य के समान और उसके पाँव आग के खम्भे के समान थे;

2 और उसके हाथ में एक छोटी सी खुली हुई पुस्तक थी। उसने अपना दाहिना पाँव समुद्र पर, और बायाँ पृथ्वी पर रखा;

3 और ऐसे बड़े शब्द से चिल्लाया, जैसा सिंह गरजता है; और जब वह चिल्लाया तो गर्जन के सात शब्द सुनाई दिए।

4 जब सातों गर्जन के शब्द सुनाई दे चुके, तो मैं लिखने पर था, और मैंने स्वर्ग से यह शब्द सुना, "जो बातें गर्जन के उन सात शब्दों से सुनी हैं, उन्हें *[illegible]*†, और मत लिख।" ***([illegible]. 8:26, [illegible]. 12:4)***

5 जिस स्वर्गदूत को मैंने समुद्र और पृथ्वी पर खड़े देखा था; उसने अपना दाहिना हाथ स्वर्ग की ओर उठाया ***([illegible]. 32:40)***

6 और उसकी शपथ खाकर जो युगानुयुग जीवित है, और जिसने स्वर्ग को और जो कुछ उसमें है, और पृथ्वी को और जो कुछ उस पर है, और समुद्र को और जो कुछ उसमें है सृजा है उसी की शपथ खाकर कहा कि "अब और देर न होगी।" ***([illegible]. 4:11)***

7 वरन् सातवें स्वर्गदूत के शब्द देने के दिनों में, जब वह तुरही फूँकने पर होगा, तो *[illegible]*‡, जिसका सुसमाचार उसने अपने दास भविष्यद्वक्ताओं को दिया था। ***([illegible]. 3:7, [illegible]. 3:3)***

8 जिस शब्द करनेवाले को मैंने स्वर्ग से बोलते सुना था, वह फिर मेरे साथ बातें करने लगा, "जा, जो स्वर्गदूत समुद्र और पृथ्वी पर खड़ा है, उसके हाथ में की खुली हुई पुस्तक ले ले।"

9 और मैंने स्वर्गदूत के पास जाकर कहा, "यह छोटी पुस्तक मुझे दे।" और उसने मुझसे कहा, "ले, इसे खा ले; यह तेरा पेट कड़वा तो करेगी, पर तेरे मुँह में मधु जैसी मीठी लगेगी।" ***([illegible]. 3:1-3)***

10 अतः मैं वह छोटी पुस्तक उस स्वर्गदूत के हाथ से लेकर खा गया। वह मेरे मुँह में मधु जैसी मीठी तो लगी, पर जब मैं उसे खा गया, तो मेरा पेट कड़वा हो गया।

11 तब मुझसे यह कहा गया, "तुझे बहुत से लोगों, जातियों, भाषाओं, और राजाओं के विषय में फिर भविष्यद्वाणी करनी होगी।"

11

[illegible]

1 फिर मुझे नापने के लिये एक *[illegible]** दिया गया, और किसी ने कहा, "उठ, परमेश्वर के मन्दिर और वेदी, और उसमें भजन करनेवालों को नाप ले। ***([illegible]. 2:1)***

2 पर मन्दिर के बाहर का आँगन छोड़ दे; उसे मत नाप क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है, और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगी।

3 और मैं अपने दो गवाहों को यह अधिकार दूँगा कि टाट ओढ़े हुए

† **10:4** *[illegible]:* अर्थ यहाँ हैं, वह उन बातों को न लिखें, परन्तु उन्होंने जो सुना हैं वह अपने मन में ही रखें, जैसे की मानो उस पर मुहर लगा दी गई है जिसे तोड़ना मना है। ‡ **10:7** *[illegible]:* इसका मतलब यहाँ हैं, परमेश्वर का उद्देश्य या सच्चाई जो छुपा हुआ था, और इससे पहले मनुष्यों को नहीं बताया गया था। * **11:1** *[illegible]:* यह घास के सदृश्य जोड़ों वाली डण्डी का एक पौधा होता था जो गीली भूमि में उगता था।

एक हजार दो सौ साठ दिन तक भविष्यद्वाणी करें।”
4 ये वे ही जैतून के दो पेड़ और दो
दीवट हैं *[illegible]*[†]। *([illegible]. 4:3)*
5 और यदि कोई उनको हानि
पहुँचाना चाहता है, तो उनके मुँह से आग निकलकर उनके बैरियों को भस्म करती है, और यदि कोई उनको हानि पहुँचाना चाहेगा, तो अवश्य इसी रीति से मार डाला जाएगा। *([illegible]. 5:14)*
6 उन्हें अधिकार है कि आकाश को
बन्द करें, कि उनकी भविष्यद्वाणी के दिनों में मेंह न बरसे, और उन्हें सब पानी पर अधिकार है, कि उसे लहू बनाएँ, और जब जब चाहें तब-तब पृथ्वी पर हर प्रकार की विपत्ति लाएँ।
7 जब वे अपनी गवाही दे चुकेंगे,
तो वह पशु जो अथाह कुण्ड में से निकलेगा, उनसे लड़कर उन्हें जीतेगा और उन्हें मार डालेगा। *([illegible]. 13:7)*
8 और उनके शव उस बड़े नगर के
चौक में पड़े रहेंगे, जो आत्मिक रीति से सदोम और मिस्र कहलाता है, जहाँ उनका प्रभु भी क्रूस पर चढ़ाया गया था।
9 और सब लोगों, कुलों, भाषाओं,
और जातियों में से लोग उनके शवों को साढ़े तीन दिन तक देखते रहेंगे, और उनके शवों को कब्र में रखने न देंगे।
10 और पृथ्वी के रहनेवाले उनके
मरने से आनन्दित और मगन होंगे, और एक दूसरे के पास भेंट भेजेंगे, क्योंकि इन दोनों भविष्यद्वक्ताओं ने पृथ्वी के रहनेवालों को सताया था।
11 परन्तु साढ़े तीन दिन के बाद
परमेश्वर की ओर से जीवन का श्वास उनमें पैठ गया; और वे अपने पाँवों के बल खड़े हो गए, और उनके देखनेवालों पर बड़ा भय छा गया।
12 और उन्हें स्वर्ग से एक बड़ा शब्द
सुनाई दिया, “यहाँ ऊपर आओ!” यह सुन वे बादल पर सवार होकर अपने बैरियों के देखते-देखते स्वर्ग पर चढ़ गए।
13 फिर उसी घड़ी एक बड़ा भूकम्प
हुआ, और नगर का दसवाँ भाग गिर पड़ा; और उस भूकम्प से सात हजार मनुष्य मर गए और शेष डर गए, और स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा की। *([illegible]. 14:7)*
14 दूसरी विपत्ति बीत चुकी; तब,
तीसरी विपत्ति शीघ्र आनेवाली है।

[illegible]

15 जब सातवें स्वर्गदूत ने तुरही
फूँकी, तो स्वर्ग में इस विषय के बड़े-बड़े शब्द होने लगे: “जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया और वह युगानुयुग राज्य करेगा।” *([illegible]. 7:27, [illegible]. 14:9)*
16 और चौबीसों प्राचीन जो
परमेश्वर के सामने अपने-अपने सिंहासन पर बैठे थे, मुँह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करके,
17 यह कहने लगे,
“हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, *[illegible]*[‡],
हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि
तूने अपनी बड़ी सामर्थ्य को काम में लाकर राज्य किया है।
([illegible]. 1:8)

[†] **11:4** *[illegible]:* ये वे दो अभिषिक्त प्राणी हो सकते है जो सम्पूर्ण पृथ्वी के प्रभु के सामने खड़े रहते हैं। उनका उत्तरदायित्व था कि वे परमेश्वर की उपस्थिति में, उसकी आँखों के सामने सेवा करते रहते थे। [‡] **11:17** *[illegible]:* पृथ्वी पर जितनी भी घटनाएँ होती हैं, वह हमेशा एक ही जैसा रहता है। वह पिछले समय में जैसा था अब भी वह वैसे ही है; वह अभी जैसा है वह हमेशा ऐसे ही रहेगा।

18 अन्यजातियों ने क्रोध किया, और
तेरा प्रकोप आ पड़ा
और वह समय आ पहुँचा है कि मरे
हुओं का न्याय किया जाए,
और तेरे दास भविष्यद्वक्ताओं और
पवित्र लोगों को
और उन छोटे-बड़ों को जो तेरे नाम से
डरते हैं, बदला दिया जाए,
और पृथ्वी के बिगाड़नेवाले नाश किए
जाएँ।" ***([illegible]. 19:5)***
19 और परमेश्वर का जो मन्दिर
स्वर्ग में है, वह खोला गया, और उसके
मन्दिर में उसकी वाचा का सन्दूक
दिखाई दिया, बिजलियाँ, शब्द, गर्जन
और भूकम्प हुए, और बड़े ओले पड़े।
([illegible]. 15:5)

12

[illegible]

1 फिर स्वर्ग पर एक बड़ा *[illegible]*[*]
दिखाई दिया, अर्थात् एक स्त्री जो सूर्य
ओढ़े हुए थी, और चाँद उसके पाँवों
तले था, और उसके सिर पर बारह तारों
का मुकुट था;
2 वह गर्भवती हुई, और चिल्लाती
थी; क्योंकि प्रसव की पीड़ा उसे लगी
थी; क्योंकि वह बच्चा जनने की पीड़ा
में थी।
3 एक और चिन्ह स्वर्ग में दिखाई
दिया, एक बड़ा लाल अजगर था
जिसके सात सिर और दस सींग थे,
और उसके सिरों पर सात राजमुकुट थे।
4 और उसकी पूँछ ने आकाश के
तारों की एक तिहाई को खींचकर पृथ्वी
पर डाल दिया, और वह अजगर उस
स्त्री के सामने जो जच्चा थी, खड़ा
हुआ, कि जब वह बच्चा जने तो उसके
बच्चे को निगल जाए।
5 और वह बेटा जनी जो लोहे का
राजदण्ड लिए हुए, सब जातियों पर
राज्य करने पर था, और उसका बच्चा
परमेश्वर के पास, और उसके सिंहासन
के पास उठाकर पहुँचा दिया गया।
6 और वह स्त्री उस जंगल को भाग
गई, जहाँ परमेश्वर की ओर से उसके
लिये एक जगह तैयार की गई थी कि
वहाँ वह एक हजार दो सौ साठ दिन
तक पाली जाए। (प्रका. 12:14)

[illegible]

7 फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई,
मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर
से लड़ने को निकले; और अजगर और
उसके दूत उससे लड़े,
8 परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग
में उनके लिये फिर जगह न रही।
([illegible]. 12:11)
9 और वह बड़ा अजगर अर्थात्
[illegible][†], जो शैतान
कहलाता है, और सारे संसार का
भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया
गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा
दिए गए। ***([illegible]. 12:31)***
10 फिर मैंने स्वर्ग पर से यह बड़ा
शब्द आते हुए सुना, "अब हमारे
परमेश्वर का उद्धार, सामर्थ्य, राज्य,
और उसके मसीह का अधिकार प्रगट
हुआ है; क्योंकि हमारे भाइयों पर
दोष लगानेवाला, जो रात-दिन हमारे
परमेश्वर के सामने उन पर दोष
लगाया करता था, गिरा दिया गया।
([illegible]. 11:15)
11 और वे मेम्ने के लहू के कारण,
और अपनी गवाही के वचन के कारण,
उस पर जयवन्त हुए, क्योंकि उन्होंने

---

* **12:1** *[illegible]:* इस प्रकार अनावृत स्वर्गिक संसार में उसने परमेश्वर की उपस्थिति में एक प्रभावशाली एवं अद्भुत चिन्ह देखा जिसकी वह अब व्याख्या करना आरम्भ करते है। † **12:9** *[illegible]:* यह बिना सन्देह उस साँप को दर्शाता हैं जिसने हव्वा को धोखा दिया था।

अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहाँ तक कि मृत्यु भी सह ली।

12 इस कारण, हे स्वर्गों, और उनमें रहनेवालों मगन हो; हे पृथ्वी, और समुद्र, तुम पर हाय! क्योंकि शैतान बड़े क्रोध के साथ तुम्हारे पास उतर आया है; क्योंकि जानता है कि उसका थोड़ा ही समय और बाकी है।” ***([illegible]. 8:13)***

[illegible] [illegible] [illegible]

13 जब अजगर ने देखा, कि मैं पृथ्वी पर गिरा दिया गया हूँ, तो उस स्त्री को जो बेटा जनी थी, सताया।

14 पर उस स्त्री को बड़े उकाब के दो पंख दिए गए, कि साँप के सामने से उड़कर जंगल में उस जगह पहुँच जाए, जहाँ वह एक समय, और समयों, और आधे समय तक पाली जाए।

15 और साँप ने उस स्त्री के पीछे अपने मुँह से नदी के समान पानी बहाया कि उसे इस नदी से बहा दे।

16 परन्तु *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*‡, और अपना मुँह खोलकर उस नदी को जो अजगर ने अपने मुँह से बहाई थी, पी लिया।

17 तब अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष सन्तान से जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया।

18 और वह समुद्र के रेत पर जा खड़ा हुआ।

13

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे। उसके सींगों पर दस राजमुकुट, और उसके सिरों पर परमेश्वर की निन्दा के नाम लिखे हुए थे। ***([illegible]. 7:3, [illegible]. 12:3)***

2 जो पशु मैंने देखा, वह चीते के समान था; और उसके पाँव भालू के समान, और मुँह सिंह के समान था। और उस अजगर ने अपनी सामर्थ्य, और अपना सिंहासन, और बड़ा अधिकार, उसे दे दिया।

3 मैंने उसके सिरों में से एक पर ऐसा भारी घाव लगा देखा, मानो वह मरने पर है; फिर उसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया, और सारी पृथ्वी के लोग उस पशु के पीछे-पीछे अचम्भा करते हुए चले।

4 उन्होंने अजगर की पूजा की, क्योंकि उसने पशु को अपना अधिकार दे दिया था, और यह कहकर पशु की पूजा की, “इस पशु के समान कौन है? कौन इससे लड़ सकता है?”

5 बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिये उसे एक मुँह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक काम करने का अधिकार दिया गया।

6 और उसने परमेश्वर की निन्दा करने के लिये मुँह खोला, कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात् स्वर्ग के रहनेवालों की निन्दा करे।

7 उसे यह अधिकार दिया गया, कि पवित्र लोगों से लड़े, और उन पर जय पाए, और उसे हर एक कुल, लोग, भाषा, और जाति पर अधिकार दिया गया। ***([illegible]. 7:21)***

8 पृथ्वी के वे सब रहनेवाले जिनके नाम उस मेम्ने की *[illegible] [illegible]*

‡ **12:16** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* पृथ्वी स्त्री के साथ उसके संकटकाल में सहानुभूति रखती हुई प्रतीत होती है, और उसे बचाने के लिए हस्तक्षेप करती हैं। * **13:8** *[illegible] [illegible] [illegible]:* कहने का अभिप्राय यह है कि प्रभु यीशु अपने पास एक पुस्तक रखता हैं जिसमें उन सभी का नाम दर्ज हैं जो अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे।

*[illegible]** में लिखे नहीं गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे।

9 जिसके कान हों वह सुने।

10 जिसको कैद में पड़ना है, वह कैद में
पड़ेगा,
जो तलवार से मारेगा, अवश्य है कि
वह तलवार से मारा जाएगा।
पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास
इसी में है। ***([illegible]. 14:12)***

[illegible]

11 फिर मैंने एक और पशु को पृथ्वी में से निकलते हुए देखा, उसके मेम्ने के समान दो सींग थे; और वह अजगर के समान बोलता था।

12 यह उस पहले पशु का सारा अधिकार उसके सामने काम में लाता था, और पृथ्वी और उसके रहनेवालों से उस पहले पशु की, जिसका प्राणघातक घाव अच्छा हो गया था, पूजा कराता था।

13 वह बड़े-बड़े चिन्ह दिखाता था, यहाँ तक कि मनुष्यों के सामने स्वर्ग से पृथ्वी पर आग बरसा देता था। ***(1 [illegible]. 18:24-29)***

14 उन चिन्हों के कारण जिन्हें उस पशु के सामने दिखाने का अधिकार उसे दिया गया था; वह पृथ्वी के रहनेवालों को इस प्रकार भरमाता था, कि पृथ्वी के रहनेवालों से कहता था कि जिस पशु को तलवार लगी थी, वह जी गया है, उसकी मूर्ति बनाओ।

15 और उसे उस पशु की मूर्ति में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, कि पशु की मूर्ति बोलने लगे; और जितने लोग उस पशु की मूर्ति की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले। ***([illegible]. 3:5,6)***

16 और उसने छोटे-बड़े, धनी-कंगाल, स्वतंत्र-दास सब के दाहिने हाथ या उनके माथे पर एक-एक छाप करा दी,

17 कि उसको छोड़ जिस पर छाप अर्थात् उस पशु का नाम, या उसके नाम का अंक हो, और अन्य कोई *[illegible]-[illegible]*† न कर सके।

18 ज्ञान इसी में है: जिसे बुद्धि हो, वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है, और उसका अंक छः सौ छियासठ है।

14

[illegible] 1,44,000 [illegible]

1 फिर मैंने दृष्टि की, और देखो, वह मेम्ना सिय्योन पहाड़ पर खड़ा है, और उसके साथ एक लाख चौवालीस हजार जन हैं, जिनके माथे पर उसका और उसके पिता का नाम लिखा हुआ है।

2 और स्वर्ग से मुझे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, जो *[illegible]**, और जो शब्द मैंने सुना वह ऐसा था, मानो वीणा बजानेवाले वीणा बजाते हों। ***([illegible]. 43:2)***

3 और वे सिंहासन के सामने और चारों प्राणियों और प्राचीनों के सामने मानो, एक नया गीत गा रहे थे, और उन एक लाख चौवालीस हजार जनों को छोड़, जो पृथ्वी पर से मोल लिए गए थे, कोई वह गीत न सीख सकता था।

---

† **13:17** *[illegible]-[illegible]:* इसका अर्थ है कि उसकी अनुमति बिना के कोई भी “लेन-देन” नहीं कर सकता हैं; और यह स्पष्ट हैं कि “लेन-देन” निर्धारण करने का यह अधिकार किसके के हाथ में है कि किसे लेन-देन करने दे अर्थात् उसे संसार की धन-सम्पति पर सम्पूर्ण नियंत्रण प्राप्त हैं। * **14:2** *[illegible] .... [illegible]:* सागर या एक शक्तिशाली जल-प्रताप के तुल्य। अर्थात्, वह इतना तीव्र था कि स्वर्ग से पृथ्वी पर सुना जा सकता था।

4 ये वे हैं, जो स्त्रियों के साथ अशुद्ध नहीं हुए, पर कुँवारे हैं; ये वे ही हैं, कि जहाँ कहीं मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं; ये तो परमेश्वर और मेम्ने के निमित्त पहले फल होने के लिये मनुष्यों में से मोल लिए गए हैं।

5 और उनके मुँह से कभी झूठ न निकला था, वे निर्दोष हैं।

▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯

6 फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा जिसके पास पृथ्वी पर के रहनेवालों की हर एक जाति, कुल, भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था।

7 और उसने बड़े शब्द से कहा, “परमेश्वर से डरो, और उसकी महिमा करो, क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है; और उसकी आराधना करो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए।” ***(▯▯▯. 9:6, ▯▯▯▯▯. 4:11)***

8 फिर इसके बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, “गिर पड़ा, वह बड़ा बाबेल गिर पड़ा जिसने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है।” ***(▯▯▯. 21:9, ▯▯▯▯▯. 51:7)***

9 फिर इनके बाद एक और तीसरा स्वर्गदूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ आया, “जो कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले,

10 तो वह परमेश्वर के प्रकोप की मदिरा जो बिना मिलावट के, उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेम्ने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा। ***(▯▯▯. 51:17)***

11 और उनकी पीड़ा का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात-दिन चैन न मिलेगा।”

12 पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं।

13 और मैंने स्वर्ग से यह शब्द सुना, “लिख: जो मृतक प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं।” आत्मा कहता है, “हाँ, क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएँगे, और उनके कार्य उनके साथ हो लेते हैं।”

▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯

14 मैंने दृष्टि की, और देखो, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सदृश्य कोई बैठा है, जिसके सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में उत्तम हँसुआ है। ***(▯▯▯▯. 10:16)***

15 फिर एक और स्वर्गदूत ने मन्दिर में से निकलकर, उससे जो बादल पर बैठा था, बड़े शब्द से पुकारकर कहा, “अपना हँसुआ लगाकर लवनी कर, क्योंकि लवने का समय आ पहुँचा है, इसलिए कि *▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯*† पक चुकी है।”

16 अतः जो बादल पर बैठा था, उसने पृथ्वी पर अपना हँसुआ लगाया, और पृथ्वी की लवनी की गई।

17 फिर एक और स्वर्गदूत उस मन्दिर में से निकला, जो स्वर्ग में है, और उसके पास भी उत्तम हँसुआ था।

18 फिर एक और स्वर्गदूत, जिसे आग पर अधिकार था, वेदी में से निकला, और जिसके पास उत्तम

---

† **14:15** *▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯:* इसका अभिप्राय यह कि उद्धारकर्ता उस समय एक महान और महिमामय फसल काटेगा।

हँसुआ था, उससे ऊँचे शब्द से कहा, "अपना उत्तम हँसुआ लगाकर पृथ्वी की दाखलता के गुच्छे काट ले; क्योंकि उसकी दाख पक चुकी है।"
19 तब उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हँसुआ लगाया, और पृथ्वी की दाखलता का फल काटकर, अपने परमेश्वर के प्रकोप के बड़े *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰*‡ में डाल दिया।
20 और नगर के बाहर उस रसकुण्ड में दाख रौंदे गए, और रसकुण्ड में से इतना लहू निकला कि घोड़ों की लगामों तक पहुँचा, और सौ कोस तक बह गया। ***(⍰⍰⍰. 63:3)***

15

⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰

1 फिर मैंने स्वर्ग में एक और बड़ा और अद्भुत चिन्ह देखा, अर्थात् सात स्वर्गदूत जिनके पास सातों अन्तिम विपत्तियाँ थीं, क्योंकि उनके हो जाने पर परमेश्वर के प्रकोप का अन्त है।
2 और मैंने आग से मिले हुए काँच के जैसा एक समुद्र देखा, और जो लोग उस पशु पर और उसकी मूर्ति पर, और उसके नाम के अंक पर जयवन्त हुए थे, उन्हें उस काँच के समुद्र के निकट परमेश्वर की वीणाओं को लिए हुए खड़े देखा।
3 और वे परमेश्वर के दास *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰**, और मेम्ने का गीत गा गाकर कहते थे,
"हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर,
तेरे कार्य महान, और अद्भुत हैं,
हे युग-युग के राजा,
तेरी चाल ठीक और सच्ची है।" ***(⍰⍰. 111:2, ⍰⍰. 139:14, ⍰⍰. 145:17)***
4 "हे प्रभु,
कौन तुझ से न डरेगा? और तेरे नाम की महिमा न करेगा?
क्योंकि केवल तू ही पवित्र है,
और सारी जातियाँ आकर तेरे सामने दण्डवत् करेंगी,
क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो गए हैं।" ***(⍰⍰. 86:9, ⍰⍰⍰⍰⍰⍰. 10:7, ⍰⍰⍰. 1:11)***
5 इसके बाद मैंने देखा, कि स्वर्ग में *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰*† का मन्दिर खोला गया,
6 और वे सातों स्वर्गदूत जिनके पास सातों विपत्तियाँ थीं, मलमल के शुद्ध और चमकदार वस्त्र पहने और छाती पर सोने की पट्टियाँ बाँधे हुए मन्दिर से निकले।
7 तब उन चारों प्राणियों में से एक ने उन सात स्वर्गदूतों को परमेश्वर के, जो युगानुयुग जीविता है, प्रकोप से भरे हुए सात सोने के कटोरे दिए।
8 और परमेश्वर की महिमा, और उसकी सामर्थ्य के कारण मन्दिर *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰*‡ और जब तक उन सातों स्वर्गदूतों की सातों विपत्तियाँ समाप्त न हुई, तब तक कोई मन्दिर में न जा सका। ***(⍰⍰⍰. 6:4)***

16

⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰

1 फिर मैंने मन्दिर में किसी को ऊँचे शब्द से उन सातों स्वर्गदूतों से

---

‡ **14:19** *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰:* अर्थात्, रसकुण्ड जहाँ अंगूर को कुचला जाता हैं, और यहाँ रस प्रतीक स्वरूप काम में लिया गया हैं जो दर्शाता है कि अन्तिम दिन दुष्टों का नाश किया जाएगा। * **15:3** *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰:* धन्यवाद और स्तुति का एक गीत, जैसा मूसा ने इब्रानी लोगों को मिस्र के दासत्व से छुटकारा पाने के बाद सिखाया था। † **15:5** *⍰⍰⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰⍰⍰⍰:* उसे "साक्षी का तम्बू" कहा जाता था, क्योंकि वह लोगों के बीच परमेश्वर की उपस्थिति का एक प्रमाण या साक्षी था, अर्थात्, वह परमेश्वर की उपस्थिति का स्मरण करता था। ‡ **15:8** *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰ ⍰⍰⍰:* मन्दिर में परमेश्वर की उपस्थिति का सामान्य प्रतीक था।

यह कहते सुना, "जाओ, परमेश्‍वर के
प्रकोप के सातों कटोरों को पृथ्वी पर
उण्डेल दो।"
2 अतः पहले स्वर्गदूत ने जाकर
अपना कटोरा पृथ्वी पर उण्डेल दिया।
और उन मनुष्यों के जिन पर पशु की
छाप थी, और जो उसकी मूर्ति की
पूजा करते थे, एक प्रकार का बुरा और
दुःखदाई फोड़ा निकला। ***([illegible]. 16:11)***

[illegible]

3 दूसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा
समुद्र पर उण्डेल दिया और वह मरे हुए
के लहू जैसा बन गया, और समुद्र में का
हर एक जीवधारी मर गया। ***([illegible]. 8:8)***

[illegible]

4 तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा
नदियों, और पानी के सोतों पर उण्डेल
दिया, और वे लहू बन गए।
5 और मैंने पानी के स्वर्गदूत को यह
कहते सुना,

"हे पवित्र, जो है, और जो था, तू
न्यायी है और तूने यह न्याय
किया। ***([illegible]. 11:17)***
6 क्योंकि उन्होंने पवित्र लोगों, और
भविष्यद्वक्ताओं का लहू
बहाया था,
और तूने *[illegible]*[*];
क्योंकि वे इसी योग्य हैं।"
7 फिर मैंने वेदी से यह शब्द सुना,
"हाँ, हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्‍वर,
तेरे निर्णय ठीक और सच्चे हैं।" ***([illegible]. 119:137, [illegible]. 19:9)***

[illegible]

8 चौथे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा
सूर्य पर उण्डेल दिया, और उसे मनुष्यों
को आग से झुलसा देने का अधिकार
दिया गया।
9 मनुष्य बड़ी तपन से झुलस गए,
और परमेश्‍वर के नाम की जिसे इन
विपत्तियों पर अधिकार है, निन्दा की
और उन्होंने न मन फिराया और न
[illegible][†] की।

[illegible]

10 पाँचवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा
उस पशु के सिंहासन पर उण्डेल दिया
और उसके राज्य पर अंधेरा छा गया;
और लोग पीड़ा के मारे अपनी-अपनी
जीभ चबाने लगे, ***([illegible] 13:42)***
11 और अपनी पीड़ाओं और फोड़ों
के कारण स्वर्ग के परमेश्‍वर की निन्दा
की; पर अपने-अपने कामों से मन न
फिराया।

[illegible]

12 छठवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा
महानदी फरात पर उण्डेल दिया और
उसका पानी सूख गया कि पूर्व दिशा के
राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो जाए।
([illegible]. 44:27)
13 और मैंने उस अजगर के मुँह
से, और उस पशु के मुँह से और
उस झूठे भविष्यद्वक्ता के मुँह से तीन
अशुद्ध आत्माओं को मेंढकों के रूप में
निकलते देखा।
14 ये *[illegible]*[‡]
दुष्टात्माएँ हैं, जो सारे संसार के
राजाओं के पास निकलकर इसलिए
जाती हैं, कि उन्हें सर्वशक्तिमान
परमेश्‍वर के उस बड़े दिन की लड़ाई के
लिये इकट्ठा करें।
15 **"देख, मैं चोर के समान आता
हूँ; धन्य वह है, जो जागता रहता है,**

---

[*] **16:6** *[illegible]:* नदियों और झरनों को लहू में बदलकर, प्रका. 16:4.लहू इतनी बहुतायत से बहाया गया कि उनके पीनेवाले पानी के साथ मिल गया। [†] **16:9** *[illegible]:* पाप से मन फिराकर आज्ञाकारिता के जीवन द्वारा उसे सम्मानित करना। [‡] **16:14** *[illegible]:* उनके कार्य चमत्कार प्रतीत होंगे; अर्थात्, ऐसे आश्चर्य के काम जिन्हें संसार देखकर भ्रमित होगा की वे चमत्कार हैं।

**और अपने वस्त्र कि सावधानी करता
है कि नंगा न फिरे, और लोग उसका
नंगापन न देखें।"**
16 और उन्होंने राजाओं को उस
जगह इकट्ठा किया, जो इब्रानी में हर-
मगिदोन कहलाता है।

[illegible] [illegible]

17 और सातवें स्वर्गदूत ने अपना
कटोरा हवा पर उण्डेल दिया, और
मन्दिर के सिंहासन से यह बड़ा शब्द
हुआ, "हो चुका।"
18 फिर बिजलियाँ, और शब्द, और
गर्जन हुए, और एक ऐसा बड़ा भूकम्प
हुआ, कि जब से मनुष्य की उत्पत्ति
पृथ्वी पर हुई, तब से ऐसा बड़ा भूकम्प
कभी न हुआ था। ***([illegible] 24:21)***
19 इससे उस बड़े नगर के तीन टुकड़े
हो गए, और जाति-जाति के नगर
गिर पड़े, और बड़े बाबेल का स्मरण
परमेश्वर के यहाँ हुआ, कि वह अपने
क्रोध की जलजलाहट की मदिरा उसे
पिलाए।
20 और हर एक टापू अपनी जगह
से टल गया, और पहाड़ों का पता न
लगा।
21 और आकाश से मनुष्यों पर मन-
मन भर के बड़े ओले गिरे, और इसलिए
कि यह विपत्ति बहुत ही भारी थी,
लोगों ने ओलों की विपत्ति के कारण
परमेश्वर की निन्दा की।

17

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 जिन सात स्वर्गदूतों के पास वे
सात कटोरे थे, उनमें से एक ने आकर
मुझसे यह कहा, "इधर आ, मैं तुझे उस
बड़ी वेश्या का दण्ड दिखाऊँ, जो बहुत
से पानी पर बैठी है।
2 जिसके साथ पृथ्वी के राजाओं
ने व्यभिचार किया, और पृथ्वी के
रहनेवाले उसके व्यभिचार की मदिरा
से मतवाले हो गए थे।"
3 तब वह मुझे पवित्र आत्मा में
जंगल को ले गया, और मैंने लाल रंग
के पशु पर जो निन्दा के नामों से भरा
हुआ था और जिसके सात सिर और दस
सींग थे, एक स्त्री को बैठे हुए देखा।
4 यह स्त्री बैंगनी, और लाल रंग
के कपड़े पहने थी, और सोने और
बहुमूल्य मणियों और मोतियों से सजी
हुई थी, और उसके हाथ में एक सोने का
कटोरा था जो घृणित वस्तुओं से और
उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से
भरा हुआ था।
5 और उसके माथे पर यह नाम
लिखा था, "भेद – बड़ा बाबेल पृथ्वी
की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की
माता।" ***([illegible]. 19:2)***
6 और मैंने उस स्त्री को पवित्र लोगों
के लहू और यीशु के गवाहों के लहू पीने
से मतवाली देखा; और उसे देखकर मैं
चकित हो गया।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

7 उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "तू
क्यों चकित हुआ? मैं इस स्त्री, और
उस पशु का, जिस पर वह सवार है, और
जिसके सात सिर और दस सींग हैं, तुझे
भेद बताता हूँ।
8 जो पशु तूने देखा है, यह पहले
तो था, पर अब नहीं है, और अथाह
कुण्ड से निकलकर विनाश में पड़ेगा,
और पृथ्वी के रहनेवाले जिनके नाम
जगत की उत्पत्ति के समय से जीवन
की पुस्तक में लिखे नहीं गए, इस पशु
की यह दशा देखकर कि पहले था,
और अब नहीं; और फिर आ जाएगा,
अचम्भा करेंगे। ***([illegible]. 17:11)***

9 यह समझने के लिए एक ज्ञानी मन आवश्यक है: वे सातों सिर *[illegible] [illegible]** हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है।

10 और वे सात राजा भी हैं, पाँच तो हो चुके हैं, और एक अभी है; और एक अब तक आया नहीं, और जब आएगा तो कुछ समय तक उसका रहना भी अवश्य है।

11 जो पशु पहले था, *[illegible] [illegible] [illegible]*†, वह आप आठवाँ है; और उन सातों में से एक है, और वह विनाश में पड़ेगा।

12 जो दस सींग तूने देखे वे दस राजा हैं; जिन्होंने अब तक राज्य नहीं पाया; पर उस पशु के साथ घड़ी भर के लिये राजाओं के समान अधिकार पाएँगे। ***([illegible]. 7:24)***

13 ये सब एक मन होंगे, और वे अपनी-अपनी सामर्थ्य और अधिकार उस पशु को देंगे।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

14 "ये मेम्ने से लड़ेंगे, और मेम्ना उन पर जय पाएगा; क्योंकि *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]*‡, और जो बुलाए हुए, चुने हुए और विश्वासयोग्य हैं, उसके साथ हैं, वे भी जय पाएँगे।"

15 फिर उसने मुझसे कहा, "जो पानी तूने देखे, जिन पर वेश्या बैठी है, वे लोग, भीड़, जातियाँ, और भाषाएँ हैं।

16 और जो दस सींग तूने देखे, वे और पशु उस वेश्या से बैर रखेंगे, और उसे लाचार और नंगी कर देंगे; और उसका माँस खा जाएँगे, और उसे आग में जला देंगे।

17 क्योंकि परमेश्वर उनके मन में यह डालेगा कि वे उसकी मनसा पूरी करें; और जब तक परमेश्वर के वचन पूरे न हो लें, तब तक एक मन होकर अपना-अपना राज्य पशु को दे दें।

18 और वह स्त्री, जिसे तूने देखा है वह बड़ा नगर है, जो पृथ्वी के राजाओं पर राज्य करता है।"

18

[illegible] [illegible] [illegible]

1 इसके बाद मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसको बड़ा अधिकार प्राप्त था; और पृथ्वी उसके तेज से प्रकाशित हो उठी।

2 उसने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा,

"गिर गया, बड़ा बाबेल गिर गया है!
और दुष्टात्माओं का निवास,
और हर एक अशुद्ध आत्मा का अड्डा, और हर एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का अड्डा हो गया। ***([illegible]. 13:21, [illegible]. 50:39, [illegible]. 51:37)***

3 क्योंकि उसके व्यभिचार के भयानक मदिरा के कारण सब जातियाँ गिर गई हैं,
और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है;
और पृथ्वी के व्यापारी उसके सुख-विलास की बहुतायत के कारण धनवान हुए हैं।" ***([illegible]. 51:7)***

4 फिर मैंने स्वर्ग से एक और शब्द सुना,

---

* **17:9** *[illegible] [illegible]:* सात पहाड़ वाले नगर रोम को दर्शाता हैं। † **17:11** *[illegible] [illegible] [illegible]:* अर्थात्, एक शक्ति जो पहले महा शक्ति थी और अब समाप्त हो गई है अत: उसके लिए कहा जा सकता हैं कि वह विलोप हो गई हैं। ‡ **17:14** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* उसे सम्पूर्ण पृथ्वी पर सर्वोच्च अधिकार प्राप्त है और सब राजा तथा प्रभु उसके नियंत्रण में हैं। * **18:4** *[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:* ताकि वे उसके पापों में भाग न ले और उसके आनेवाले विनाश में भागी होने से बच जाएँ।

"हे मेरे लोगों, *[illegible]*[*] कि तुम उसके पापों में
भागी न हो,
और उसकी विपत्तियों में से कोई
तुम पर आ न पड़े; ***([illegible]. 52:11, [illegible]. 50:8, [illegible]. 51:45)***
5 क्योंकि उसके पापों का ढेर स्वर्ग तक
पहुँच गया है,
और उसके अधर्म परमेश्वर को स्मरण
आए हैं।
6 जैसा उसने तुम्हें दिया है, वैसा ही
उसको दो,
और उसके कामों के अनुसार उसे *[illegible]*[†],
जिस कटोरे में उसने भर दिया था उसी
में उसके लिये दो गुणा भर दो।
([illegible]. 137:8)
7 जितनी उसने अपनी बड़ाई की और
सुख-विलास किया;
उतनी उसको पीड़ा, और शोक दो;
क्योंकि वह अपने मन में कहती है, 'मैं
रानी हो बैठी हूँ, विधवा नहीं;
और शोक में कभी न पड़ूँगी।'
8 इस कारण एक ही दिन में उस पर
विपत्तियाँ आ पड़ेंगी,
अर्थात् मृत्यु, और शोक, और अकाल;
और वह आग में भस्म कर दी
जाएगी,
क्योंकि उसका न्यायी प्रभु परमेश्वर
शक्तिमान है। ***([illegible]. 50:31)***

[illegible]

9 "और पृथ्वी के राजा जिन्होंने
उसके साथ व्यभिचार, और सुख-
विलास किया, जब उसके जलने
का धुआँ देखेंगे, तो उसके लिये
रोएँगे, और छाती पीटेंगे। ***([illegible]. 50:46)***
10 और उसकी पीड़ा के डर के मारे
वे बड़ी दूर खड़े होकर कहेंगे,
'हे बड़े नगर, बाबेल! हे दृढ़ नगर,
हाय! हाय!
घड़ी ही भर में तुझे दण्ड मिल गया है।'
([illegible]. 51:8-9)
11 "और पृथ्वी के व्यापारी उसके
लिये रोएँगे और विलाप करेंगे, क्योंकि
अब कोई उनका माल मोल न लेगा
12 अर्थात् सोना, चाँदी, रत्न, मोती,
मलमल, बैंगनी, रेशमी, लाल रंग
के कपड़े, हर प्रकार का सुगन्धित
काठ, हाथी दाँत की हर प्रकार की
वस्तुएँ, बहुमूल्य काठ, पीतल, लोहे
और संगमरमर की सब भाँति के पात्र,
13 और दालचीनी, मसाले, धूप,
गन्धरस, लोबान, मदिरा, तेल, मैदा,
गेहूँ, गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ, घोड़े,
रथ, और दास, और मनुष्यों के प्राण।
14 अब तेरे मनभावने फल तेरे पास
से जाते रहे; और सुख-विलास और
वैभव की वस्तुएँ तुझ से दूर हुई हैं, और
वे फिर कदापि न मिलेंगी।
15 इन वस्तुओं के व्यापारी जो
उसके द्वारा धनवान हो गए थे, उसकी
पीड़ा के डर के मारे दूर खड़े होंगे, और
रोते और विलाप करते हुए कहेंगे,
16 'हाय! हाय! यह बड़ा नगर जो
मलमल, बैंगनी, लाल रंग के
कपड़े पहने था,
और सोने, रत्नों और मोतियों से सजा
था;
17 घड़ी ही भर में उसका ऐसा भारी धन
नाश हो गया।'
"और हर एक माँझी, और
जलयात्री, और मल्लाह, और जितने
समुद्र से कमाते हैं, सब दूर खड़े हुए,
18 और उसके जलने का धुआँ देखते
हुए पुकारकर कहेंगे, 'कौन सा नगर

[†] **18:6** *[illegible]:* अर्थात् उसने मनुष्यों को जो कष्ट दिए है उसका दो गुना बदला उसे दिया जाएगा।

इस बड़े नगर के समान है?’ ***([illegible]. 51:37)***

19 और *[illegible]*[‡], और रोते हुए और विलाप करते हुए चिल्ला चिल्लाकर कहेंगे,

‘हाय! हाय! यह बड़ा नगर जिसकी
सम्पत्ति के द्वारा समुद्र के सब
जहाज वाले धनी हो गए थे,
घड़ी ही भर में उजड़ गया।’ ***([illegible]. 27:30)***

20 हे स्वर्ग, और हे पवित्र लोगों,
और प्रेरितों, और भविष्यद्वक्ताओं, उस
पर आनन्द करो,
क्योंकि परमेश्वर ने न्याय करके उससे
तुम्हारा पलटा लिया है।”

[illegible]

21 फिर एक बलवन्त स्वर्गदूत ने बड़ी चक्की के पाट के समान एक पत्थर उठाया, और यह कहकर समुद्र में फेंक दिया,

“बड़ा नगर बाबेल ऐसे ही बड़े बल से
गिराया जाएगा,
और फिर कभी उसका पता न मिलेगा।
([illegible]. 51:63,64, [illegible]. 26:21)

22 वीणा बजानेवालों, गायकों, बंसी
बजानेवालों, और तुरही
फूँकनेवालों का शब्द फिर
कभी तुझ में सुनाई न देगा,
और किसी उद्यम का कोई कारीगर भी
फिर कभी तुझ में न मिलेगा;
और चक्की के चलने का शब्द
फिर कभी तुझ में सुनाई न
देगा; ***([illegible]. 24:8, [illegible]. 26:13)***

23 और दीया का उजाला फिर कभी
तुझ में न चमकेगा
और दूल्हे और दुल्हन का शब्द फिर
कभी तुझ में सुनाई न देगा;
क्योंकि तेरे व्यापारी पृथ्वी के प्रधान थे,
और तेरे टोने से सब जातियाँ भरमाई
गईं थीं। ***([illegible]. 7:34, [illegible]. 16:9)***

24 और भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र
लोगों,
और पृथ्वी पर सब मरे हुओं का
लहू उसी में पाया गया।”
([illegible]. 51:49)

19

[illegible]

1 इसके बाद मैंने स्वर्ग में मानो *[illegible]*[*] को ऊँचे शब्द से यह कहते सुना,

“हालेलूय्याह! उद्धार, और महिमा,
और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर
ही का है।

2 क्योंकि उसके निर्णय सच्चे और ठीक
हैं,
इसलिए कि उसने उस बड़ी वेश्या का
जो अपने व्यभिचार से पृथ्वी
को भ्रष्ट करती थी,
न्याय किया, और उससे अपने दासों
के लहू का पलटा लिया है।”
([illegible]. 32:43)

3 फिर दूसरी बार उन्होंने कहा,

“हालेलूय्याह! उसके जलने का धुआँ
युगानुयुग उठता रहेगा।”
([illegible]. 106:48)

4 और चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् किया; जो सिंहासन पर बैठा था, और कहा, “आमीन! हालेलूय्याह!”

5 और सिंहासन में से एक शब्द निकला,

‡ **18:19** *[illegible]:* शोक और विलाप की एक सामान्य अभिव्यक्ति।

* **19:1** *[illegible]:* सिंहासन के सामने आराधकों की आवाज।

“हे हमारे परमेश्वर से सब डरनेवाले
दासों,
क्या छोटे, क्या बड़े; तुम सब उसकी
स्तुति करो।” *([illegible]. 135:1)*
6 फिर मैंने बड़ी भीड़ के जैसा और
बहुत जल के जैसा शब्द, और गर्जनों
के जैसा बड़ा शब्द सुना
“हालेलूय्याह!
इसलिए कि प्रभु हमारा परमेश्वर,
सर्वशक्तिमान राज्य करता
है। *([illegible]. 99:1, [illegible]. 93:1)*
7 आओ, हम आनन्दित और मगन हों,
और उसकी स्तुति करें,
क्योंकि *[illegible]*† आ
पहुँचा है,
और उसकी दुल्हन ने अपने आपको
तैयार कर लिया है।
8 उसको शुद्ध और चमकदार महीन
मलमल पहनने को दिया
गया,”
क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ
पवित्र लोगों के धार्मिक काम
है।
9 तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, “यह
लिख, कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के
विवाह के भोज में बुलाए गए हैं।” फिर
उसने मुझसे कहा, “ये वचन परमेश्वर
के सत्य वचन हैं।”
10 तब मैं उसको दण्डवत् करने के
लिये *[illegible]*‡।
उसने मुझसे कहा, “ऐसा मत कर, मैं
तेरा और तेरे भाइयों का संगी दास
हूँ, जो यीशु की गवाही देने पर स्थिर
हैं। परमेश्वर ही को दण्डवत् कर।”
क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यद्वाणी
की आत्मा है।

[illegible]

11 फिर मैंने स्वर्ग को खुला हुआ
देखा, और देखता हूँ कि एक श्वेत
घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो
विश्वासयोग्य, और सत्य कहलाता है;
और वह धार्मिकता के साथ न्याय और
लड़ाई करता है। *([illegible]. 96:13)*
12 उसकी आँखें आग की ज्वाला हैं,
और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट
हैं। और उसका एक नाम उस पर लिखा
हुआ है, जिसे उसको छोड़ और कोई
नहीं जानता। *([illegible]. 19:16)*
13 वह लहू में डुबोया हुआ वस्त्र
पहने है, और उसका नाम ‘परमेश्वर का
वचन’ है।
14 और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों
पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल
पहने हुए उसके पीछे-पीछे है।
15 जाति-जाति को मारने के लिये
उसके मुँह से एक चोखी तलवार
निकलती है, और वह लोहे का
राजदण्ड लिए हुए उन पर राज्य
करेगा, और वह सर्वशक्तिमान
परमेश्वर के भयानक प्रकोप की
जलजलाहट की मदिरा के कुण्ड में
दाख रौंदेगा। *([illegible]. 2:27)*
16 और उसके वस्त्र और जाँघ पर
यह नाम लिखा है: “राजाओं का राजा
और प्रभुओं का प्रभु।” *(1 [illegible]. 6:15)*

[illegible]

17 फिर मैंने एक स्वर्गदूत को सूर्य
पर खड़े हुए देखा, और उसने बड़े
शब्द से पुकारकर आकाश के बीच में
से उड़नेवाले सब पक्षियों से कहा,

† **19:7** *[illegible]:* कलीसिया और परमेश्वर का सम्बंध, प्रायः विवाह के रूपक द्वारा दर्शाया जाता है। इसका अर्थ है कि कलीसिया को अब विजयी और मगन होना है जैसे की वह अपने महिमामय सिर एवं प्रभु के साथ हमेशा के लिए एक हो गई हैं। ‡ **19:10** *[illegible]:* यूहन्ना उस स्वर्गिक दूत की महिमा और उस सत्य से जिसका प्रका. उसने किया था, अभिभूत हो गया था और अपनी उमड़ती हुई भावना के कारण वह उसके पाँवों पर गिर पड़ा।

"आओ, परमेश्वर के बड़े भोज के लिये
इकट्ठे हो जाओ, ***([illegible]. 39:19,20)***
18 जिससे तुम राजाओं का माँस,
और सरदारों का माँस, और शक्तिमान
पुरुषों का माँस, और घोड़ों का और
उनके सवारों का माँस, और क्या
स्वतंत्र क्या दास, क्या छोटे क्या बड़े,
सब लोगों का माँस खाओ।"
19 फिर मैंने उस पशु और पृथ्वी के
राजाओं और उनकी सेनाओं को उस
घोड़े के सवार, और उसकी सेना से
लड़ने के लिये इकट्ठे देखा।
20 और *[illegible]*§, जिसने उसके सामने
ऐसे चिन्ह दिखाए थे, जिनके द्वारा
उसने उनको भरमाया, जिन पर उस
पशु की छाप थी, और जो उसकी मूर्ति
की पूजा करते थे। ये दोनों जीते जी
उस आग की झील में, जो गन्धक
से जलती है, डाले गए। ***([illegible]. 20:20)***
21 और शेष लोग उस घोड़े के
सवार की तलवार से, जो उसके मुँह से
निकलती थी, मार डाले गए; और सब
पक्षी उनके माँस से तृप्त हो गए।

20

[illegible] 1000 [illegible]

1 फिर मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग
से उतरते देखा; *[illegible]**, और
एक बड़ी जंजीर थी।
2 और उसने उस अजगर, अर्थात्
पुराने साँप को, जो शैतान है; पकड़कर
हजार वर्ष के लिये बाँध दिया,
([illegible]. 12:9)
3 और उसे अथाह कुण्ड में डालकर
बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर
दी, कि वह हजार वर्ष के पूरे होने
तक जाति-जाति के लोगों को फिर
न भरमाए। इसके बाद अवश्य है कि
थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए।

[illegible] 1,000 [illegible]

4 फिर मैंने सिंहासन देखे, और
उन पर लोग बैठ गए, और उनको
न्याय करने का अधिकार दिया गया।
और उनकी आत्माओं को भी देखा,
जिनके सिर यीशु की गवाही देने और
परमेश्वर के *[illegible]*† काटे
गए थे, और जिन्होंने न उस पशु की,
और न उसकी मूर्ति की पूजा की थी,
और न उसकी छाप अपने माथे और
हाथों पर ली थी। वे जीवित होकर
मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य
करते रहे। ***([illegible]. 7:22)***
5 जब तक ये हजार वर्ष पूरे न हुए
तब तक शेष मरे हुए न जी उठे। यह
तो पहला पुनरुत्थान है।
6 धन्य और पवित्र वह है, जो इस
पहले पुनरुत्थान का भागी है, ऐसों पर
दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं,
पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक
होंगे, और उसके साथ हजार वर्ष तक
राज्य करेंगे।

[illegible]

7 जब हजार वर्ष पूरे हो चुकेंगे तो
शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा।
8 और उन जातियों को जो पृथ्वी
के चारों ओर होंगी, अर्थात् गोग और
मागोग को जिनकी गिनती समुद्र की

§ **19:20** *[illegible]:* अर्थात्, वह आग की झील में फेकने के लिए जीवित पकड़ा गया था। * **20:1** *[illegible]:* यह तथ्य कि उसके पास अधोलोक की कुँजी थी प्रकट करता है कि वह शैतान को बाँध सकता है और अधोलोक उसके लिए कारावास होगा। † **20:4** *[illegible]:* जिन्होंने पशु को दण्डवत् नहीं किया था, जो सच्चे धर्म के सिद्धान्तों के विश्वासयोग्य बने रहें, और उन्हें विश्वास से भटकाने के प्रयासों का उन्होंने विरोध किया था।

रेत के बराबर होगी, भरमाकर लड़ाई के लिये इकट्ठा करने को निकलेगा।

9 और वे सारी पृथ्वी पर फैल जाएँगी और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लेंगी और आग स्वर्ग से उतरकर उन्हें भस्म करेगी। ***([illegible]. 39:6)***

10 और उनका भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा; और वे रात-दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे। ***([illegible] 25:46)***

[illegible]

11 फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको जो उस पर बैठा हुआ है, देखा, जिसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली। ***([illegible] 25:31, [illegible]. 47:8)***

12 फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् *[illegible]*‡; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया। ***([illegible]. 7:10)***

13 और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उनमें थे दे दिया; और उनमें से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया।

14 और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए। यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है।

15 और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया। ***([illegible]. 3:36, 1 [illegible]. 5:11,12)***

21

[illegible]

1 फिर मैंने नये आकाश और नई पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। ***([illegible]. 66:22)***

2 फिर मैंने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हन के समान थी, जो अपने दुल्हे के लिये श्रृंगार किए हो।

3 फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, "देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा। ***([illegible]. 26:11,12, [illegible]. 37:27)***

4 और *[illegible]**; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।" ***([illegible]. 25:8)***

5 और जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, "*[illegible]*†।" फिर उसने कहा, "लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वासयोग्य और सत्य हैं।" ***([illegible]. 42:9)***

‡ **20:12** *[illegible]:* अध्याय 13:8 की टिप्पणी देखें

* **21:4** *[illegible]:* यह उस धन्य अवस्था की एक विशेषता है कि वहाँ एक भी आँसू न बहेगा।

† **21:5** *[illegible]:* पाप और मृत्यु के राज्य करने की जो अवस्था थी तब बदल जाएगी।

6 फिर उसने मुझसे कहा, “ये बातें पूरी हो गई हैं। मैं अल्फा और ओमेगा, आदि और अन्त हूँ। मैं प्यासे को जीवन के जल के सोते में से सेंत-मेंत पिलाऊँगा।

7 जो जय पाए, वही उन वस्तुओं का वारिस होगा; और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा, और वह मेरा पुत्र होगा।

8 परन्तु डरपोकों, अविश्वासियों, घिनौनों, हत्यारों, व्यभिचारियों, टोन्हों, मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।” ***(▯▯▯. 5:5, 1 ▯▯▯▯. 6:9,10)***

▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯

9 फिर जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात अन्तिम विपत्तियों से भरे हुए सात कटोरे थे, उनमें से एक मेरे पास आया, और मेरे साथ बातें करके कहा, “इधर आ, मैं तुझे दुल्हन अर्थात् मेम्ने की पत्नी दिखाऊँगा।”

▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯

10 और वह मुझे आत्मा में, एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया।

11 परमेश्वर की महिमा उसमें थी, और उसकी ज्योति बहुत ही बहुमूल्य पत्थर, अर्थात् बिल्लौर के समान यशब की तरह स्वच्छ थी।

12 और उसकी शहरपनाह बड़ी ऊँची थी, और उसके बारह फाटक और फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे; और उन फाटकों पर इस्राएलियों के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे।

13 पूर्व की ओर तीन फाटक, उत्तर की ओर तीन फाटक, दक्षिण की ओर तीन फाटक, और पश्चिम की ओर तीन फाटक थे।

14 और नगर की शहरपनाह की बारह नीवें थीं, और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के बारह नाम लिखे थे।

15 जो मेरे साथ बातें कर रहा था, उसके पास नगर और उसके फाटकों और उसकी शहरपनाह को नापने के लिये एक सोने का गज था। ***(▯▯. 2:1)***

16 वह नगर वर्गाकार बसा हुआ था और उसकी लम्बाई, चौड़ाई के बराबर थी, और उसने उस गज से नगर को नापा, तो साढ़े सात सौ कोस का निकला: उसकी लम्बाई, और चौड़ाई, और ऊँचाई बराबर थी।

17 और उसने उसकी शहरपनाह को मनुष्य के, अर्थात् स्वर्गदूत के नाप से नापा, तो एक सौ चौवालीस हाथ निकली।

18 उसकी शहरपनाह यशब की बनी थी, और नगर ऐसे शुद्ध सोने का था, जो स्वच्छ काँच के समान हो।

19 उस नगर की नीवें हर प्रकार के बहुमूल्य पत्थरों से संवारी हुई थीं, पहली नींव यशब की, दूसरी नीलमणि की, तीसरी लालड़ी की, चौथी मरकत की, ***(▯▯▯. 54:11,12)***

20 पाँचवी गोमेदक की, छठवीं माणिक्य की, सातवीं पीतमणि की, आठवीं पेरोज की, नौवीं पुखराज की, दसवीं लहसनिए की, ग्यारहवीं धूम्रकान्त की, बारहवीं याकूत की थी।

21 और बारहों फाटक, बारह मोतियों के थे; एक-एक फाटक, एक-एक मोती का बना था। और नगर की सड़क स्वच्छ काँच के समान शुद्ध सोने की थी।

▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯

22 मैंने उसमें कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, और मेम्ना उसका मन्दिर हैं।

23 और उस नगर में सूर्य और चाँद
के उजियाले की आवश्यकता नहीं,
क्योंकि परमेश्वर के तेज से उसमें
उजियाला हो रहा है, और मेम्ना
उसका दीपक है। ***([illegible]. 60:19)***
24 जाति-जाति के लोग उसकी
ज्योति में चले-फिरेंगे, और पृथ्वी के
राजा अपने-अपने तेज का सामान
उसमें लाएँगे।
25 उसके फाटक दिन को कभी बन्द
न होंगे, और रात वहाँ न होगी।
([illegible]. 60:11, [illegible]. 14:7)
26 और लोग जाति-जाति के तेज
और वैभव का सामान उसमें लाएँगे।
27 और उसमें कोई अपवित्र वस्तु
या घृणित काम करनेवाला, या झूठ
का गढ़नेवाला, किसी रीति से प्रवेश न
करेगा; पर केवल वे लोग जिनके नाम
मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।
([illegible]. 52:1)

22

[illegible]-[illegible] [illegible] [illegible]

1 फिर उसने मुझे बिल्लौर के समान
झलकती हुई, *[illegible]*[*] दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने
के सिंहासन से निकलकर,
2 उस नगर की सड़क के बीचों बीच
बहती थी। नदी के इस पार और उस
पार जीवन का पेड़ था; उसमें बारह
प्रकार के फल लगते थे, और वह हर
महीने फलता था; और उस पेड़ के
पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते
थे। ***([illegible]. 47:7)***
3 फिर श्राप न होगा, और परमेश्वर
और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में
होगा, और उसके दास उसकी सेवा
करेंगे। ***([illegible]. 14:11)***
4 *[illegible]*[†],
और उसका नाम उनके माथों पर लिखा
हुआ होगा।
5 और फिर रात न होगी, और
उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले
की आवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु
परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, और
वे युगानुयुग राज्य करेंगे। ***([illegible].
60:19, [illegible]. 7:27)***

[illegible]

6 फिर उसने मुझसे कहा, "ये बातें
विश्वासयोग्य और सत्य हैं। और प्रभु
ने, जो भविष्यद्वक्ताओं की आत्माओं
का परमेश्वर है, अपने स्वर्गदूत को
इसलिए भेजा कि अपने दासों को वे
बातें, जिनका शीघ्र पूरा होना अवश्य
है दिखाए।" ***([illegible]. 1:1)***
7 **"और देख, मैं शीघ्र आनेवाला
हूँ; धन्य है वह, जो इस पुस्तक की
भविष्यद्वाणी की बातें मानता है।"**
8 मैं वही यूहन्ना हूँ, जो ये बातें
सुनता, और देखता था। और जब मैंने
सुना और देखा, तो जो स्वर्गदूत मुझे
ये बातें दिखाता था, मैं उसके पाँवों पर
दण्डवत् करने के लिये गिर पड़ा।
9 पर उसने मुझसे कहा, "देख, ऐसा
मत कर; क्योंकि मैं तेरा और तेरे भाई
भविष्यद्वक्ताओं और इस पुस्तक की
बातों के माननेवालों का संगी दास हूँ,
परमेश्वर ही की आराधना कर।"
10 फिर उसने मुझसे कहा, "इस
पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातों को
बन्द मत कर; क्योंकि समय निकट है।
11 जो अन्याय करता है, वह
अन्याय ही करता रहे; और जो मलिन
है, वह मलिन बना रहे; और जो धर्मी

* **22:1** *[illegible]:* इस वाक्यांश "जीवन के जल" का मतलब है रुके हुए पानी की तुलना में जीवित या बहता हुआ जल जैसा सोता या झरना। † **22:4** *[illegible]:* वे उसकी उपस्थिति में लगातार रहेंगे, और उन्हें उसकी महिमा के लगातार दर्शन की अनुमति मिल जाएगी।

है, वह धर्मी बना रहे; और जो पवित्र
है, वह पवित्र बना रहे।”

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

12 **“देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ;
और हर एक के काम के अनुसार
बदला देने के लिये प्रतिफल मेरे पास
है।**(*[illegible] 16:27)*
13 **मैं अल्फा और ओमेगा, पहला
और अन्तिम, आदि और अन्त
हूँ।”***([illegible]. 44:6, [illegible]. 48:12)*
14 **“धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो
लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़
के पास आने का अधिकार मिलेगा,
और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश
करेंगे।
15 *[illegible] [illegible]*‡, टोन्हें,
व्यभिचारी, हत्यारे, मूर्तिपूजक,
हर एक झूठ का चाहनेवाला और
गढ़नेवाला बाहर रहेगा।
16 “मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत
को इसलिए भेजा, कि तुम्हारे आगे
कलीसियाओं के विषय में इन बातों
की गवाही दे। मैं दाऊद का मूल और
वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा
हूँ।”***([illegible]. 11:1)*

17 और आत्मा, और दुल्हन दोनों
कहती हैं, “आ!” और सुननेवाला भी
कहे, “आ!” और जो प्यासा हो, वह
आए और जो कोई चाहे वह जीवन का
जल सेंत-मेंत ले। ***([illegible]. 55:1)***

[illegible]

18 मैं हर एक को, जो इस पुस्तक
की भविष्यद्वाणी की बातें सुनता है,
गवाही देता हूँ: यदि कोई मनुष्य
इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर
उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में
लिखी हैं, उस पर बढ़ाएगा। ***([illegible].
12:32)***
19 और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी
की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल
डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़
और पवित्र नगर में से, जिसका वर्णन
इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल
देगा। ***([illegible]. 69:28, [illegible]. 4:2)***
20 जो इन बातों की गवाही देता
है, वह यह कहता है, **“हाँ, मैं शीघ्र
आनेवाला हूँ।”** आमीन। हे प्रभु यीशु
आ!
21 प्रभु यीशु का अनुग्रह पवित्र
लोगों के साथ रहे। आमीन।

‡ **22:15** *[illegible] [illegible]:* दुष्ट, भ्रष्ट, घिनौना, इस तरह के स्वभाव के लिये कुत्ता शब्द का प्रयोग होता हैं, यहूदियों के बीच इसे एक अशुद्ध पशु माना जाता हैं।